प्रकाशक,
विहारीलाल कठनेरा
प्रोप्राईटर—हिन्दी जैनसाहित्यप्रसारक कार्यालय;
हीराबाग पो० गिरगाँव-बम्बई।



मुद्रक,
मंगेश नारायण कुलकर्णी
कर्नाटक प्रेस, नं० ४३४ ठाकुरद्वार रोड मुंबई.

# निवेदन।

यह महान् ग्रंथ हमने स्व० पंडित-प्रवर टोडरमलजीकृत भाषा-वचनिका सहित ही छपाया है। संस्कृत टीका इसमें इस लिए नहीं दी कि वह 'माणिकचन्द्र ग्रंथमाला'में मूलसहित छप चुकी है। कुछ लोगोंकी राय है कि पुरानी भाषाके ग्रंथ वर्तमान हिन्दीमें परिवर्तित कर दिये जाने चाहिये; परन्तु हमें भाषाकारके गौरवकी रक्षा करना इष्ट था; अतएव हमने उसका परिवर्तन कराना उचित नहीं समझा।

हमारी बड़ी इच्छा थी कि इसके यंत्र-भागको ग्रंथके साथ ही लगा दिया जाता; परन्तु कुछ ऐसे कारण उपस्थित हो गये जिनसे तत्काल यंत्रोंका तैयार करवाना कठिन हो गया। यंत्रोंके तैयार करानेमें कुछ विलम्ब अवश्य होगा; परन्तु तैयार होते ही उन्हें हम सब ग्राहकोंके पास पोष्ट द्वारा भेज देंगे। हम उन सज्जनोंसे प्रार्थना करते हैं कि जिन जिनके पास यह ग्रंथ पहुँचे वे एक कार्ड द्वारा अपना पता लिख भेजनेकी कृपा करें।

इसका सम्पादन तथा संशोधन-कार्य श्रीयुत पं० मनोहरलालजी शास्त्रीने किया है। हमें जहाँ तक विश्वास है पंडितजीने अपनी जिम्मेवरीका ध्यान रख कर ही इस कार्यका सम्पादन किया है; और इस लिए दृष्टि-दोषकी साधारण भूलोंको छोड़ कर सैद्धान्तिक भूलोंका रहना बहुत कम संभव है। अतःपर भी कोई भूल रह गई हो तो उसका संशोधन कर हमें भी उसकी सूचना देनेकी कृपा करें; जिससे दूसरी आवृत्तिमें उसके संशोधनका ध्यान रक्खा जाये।

उदयलाल काशलीवाल

# हमारी छपाई पुस्तकें।

**रत्नकरंडश्रावकाचार**—स्व० पं० सदासुखजीकृत भाषाटीकासहित। श्रावकाचारसम्बन्धी भाषा-टीकाके जितने ग्रंथ इस समय मिलते हैं, उन सबसे यह बहुत बड़ा ग्रन्थ है। यह खुले पत्रोंमें, जाड़े कागज पर, मोटे टाईपमें बड़ी सुन्दरतासे छपाया गया है। पृष्ठ संख्या ५७५ के लगभग है। मूल्य पाँच रुपया।

**पुण्यास्रव**—इसमें मनोरंजक और धार्मिक भावोंसे परिपूर्ण कोई ५६ छोटी-मोटी कथायें हैं। हमने अब यह दूसरी बार छपाया है। पृष्ठसंख्या ३४० के लगभग। मूल्य तीन रुपया।

**भक्तामर कथा**—( मंत्र-यंत्र-सहित ) यह ग्रन्थ स्वर्गीय ब्रह्मचारी रायमल्लके बनाये भक्तामरके आधार पर बड़ी सीधी-साधी हिन्दी-भाषामें छपाया गया है। अन्तमें मंत्र, ऋद्धि और उनकी साधनविधि तथा अड़तालीस यंत्र भी दिये गये हैं। मूल्य कपड़ेकी जिल्दका एक रुपया छह आने, सादी जिल्दका एक रुपया।

**चन्द्रप्रभचरित**—महाकवि—श्रीवीरनन्दी आचार्यकृत, संस्कृत जैन काव्योंमें यह उच्च कोटीका काव्य है। इसमें आठवें तीर्थंकर श्रीचंद्रप्रभ भगवानका पवित्र चरित वर्णन किया गया है। मूल्य कपड़ेकी जिल्द सवा रुपया; साधी जिल्द एक रुपया।

**नेमिपुराण**—यह ब्रह्मचारी नेमिदत्तके संस्कृत नेमिपुराणका हिन्दी अनुवाद है। इसमें बावीसवें तीर्थंकर नेमिनाथ भगवानका पवित्र चरित है। मूल्य कपड़ेकी जिल्द सवा दो रुपया, सादी जिल्द दो रुपया।

**सम्यक्त्वकौमुदी**—यह भी कथाका एक सुन्दर ग्रन्थ है। इसमें सम्यक्त्वके प्राप्त करनेवाले, राजा उदितोदय, सुयोधन, अर्हद्दास, चन्दनश्री, विष्णुश्री, नागश्री, पद्मलता, कनकलता और विद्युल्लताकी आठ कथायें हैं। मूल्य कपड़ेकी जि० एक रुपया छःआने, सादी जि० एक रुपया दो आने।

**सुदर्शनचरित**—यह सकलकीर्तिकृत संस्कृत सुदर्शन चरितका हिन्दी अनुवाद है। सुदर्शन बड़ा दृढ़-निश्चयी था, कामी स्त्रियोंने उसके साथ अनेक प्रकारकी बुरी चेष्टायें कीं उसे शीलधर्मसे गिरानेका खूब ही प्रयत्न किया परंतु सुदर्शन अपने शीलधर्म पर सुमेरुसा अचल-अडिग बना रहा। मूल्य नौ आने।

**नागकुमारचरित**—षट्भाषा कवि चक्रवर्ती मल्लिषेण सूरिके संस्कृत ग्रंथका अनुवाद। मूल्य छः आने।

**यशोधरचरित**। महाकवि वादिराज सूरिके एक सुन्दर संस्कृतकाव्यका हिन्दी अनुवाद। इसमें यशोधरका सुन्दर चरित वर्णन किया गया है। पुस्तक करुण-रससे भरी हुई है। पढ़ते पढ़ते हृदय भर आता है। मूल्य मात्र चार आना।

**पवनदूत (काव्य)** कालिदासके मेघदूतके समान रचा गया है, हिन्दी भाषामें है। कीमत चार आना।

**श्रेणिकचरितसार**। ब्रह्मचारी नेमिदत्तके संस्कृत श्रेणिककथासारका यह अनुवाद है। मूल्य तीन आने।

**अकलंकचरित**। इसमें अकलंक-स्तोत्र और उसका भावार्थ तथा हिन्दी पद्यानुवाद भी शामिल कर दिया है। मूल्य तीन आने।

**सुकुमालचरितसार**। इसके बनानेवाले ब्रह्मचारी नेमिदत्त हैं। उन्हींके ग्रन्थका यह अनुवाद है। मूल्य डेढ़ आना।

**पंचास्तिकाय-समयसार**। मूलग्रन्थके बनानेवाले भगवान कुन्दकुन्दाचार्य हैं। उस पर स्व० पं० हीरानन्दजीने दोहा, चौपाई, कवित्त, सवैया आदिमें छन्दोबद्ध टीका लिखी है। कीमत एक रुपया।

**चौबीसठाणा-चर्चा**—यह गोम्मटसारके आधार पर लिखी गई है। इसमें चौवीस दण्डक भी शामिल कर दिये हैं। मूल्य आठ आने।

**छहढाला—(सार्थ)** स्व० पं० दौलत रामजी कृत। ब्र० शीतलप्रसादजीकृत अर्थसहित है। तीन आने।

**नियमपोथी**—इसे भी ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीने संग्रह किया है। मूल्य आधा आना।

**हिन्दी-भक्तामर**—यह संस्कृत भक्तामरका खड़ी बोलीकी कवितामें सुन्दर अनुवाद है। मूल्य सवा आना।

**हिन्दी-कल्याणमन्दिर**। भक्तामरके समान यह भी खड़ी बोलीकी कवितामें संस्कृत कल्याण मंदिरका अनुवाद है। मूल्य एक आना।

**कर्मदहन-विधान**। इसमें कर्मदहन पूजा आदि सब छपे हैं। मूल्य पाँच आने।



भाषाटीकाकार पंडितवर
टोडरमल्लजी लिखित

# भूमिका



इस शास्त्रकी संस्कृत टीका पूर्वैं भई है तथापि तहां संस्कृत गणितादिकका ज्ञानविना प्रवेश होइ सकता नाहीं। तातैं स्तोक ज्ञानवालोंकें त्रिलोकके स्वरूपका ज्ञान होंनेके अर्थि तिसही अर्थकों भाषा करि लिखिए है। याविषैं मेरा कर्तव्य इतना हीं है जो क्षयोपशमके अनुसारि तिस शास्त्रका अर्थकों जानि धर्मानुरागतैं औरानिके जाननेके आर्थि जैसें कोऊ मुखतैं अक्षर उच्चारि करि देशभाषारूप व्याख्यान करै तैसें मैं हस्ततैं अक्षरनिकी स्थापना करि लिखोंगा। बहुरि छंदनिका जोडना नवीन युक्ति अलंकारादिकका प्रगट करना इत्यादि नवीन ग्रंथकारकनिके कार्य हैं ते तौ मोतैं वनैं ही नाहीं। तातैं ग्रंथका कर्तापना मेरैं है नाहीं। इहां कोऊ कहै तुम तौ अमूर्तीक आत्मा हौ तुम करि लिखनेका कार्य कैसें वनैंगा। ताका समाधान। मैं जु हों आत्मद्रव्य सो अनंत गुण पर्यायनिका पुंज हों तिनि विषैं श्रुतज्ञान अर धर्मानुराग अर शक्तिपना इन मेरे पर्यायनिके निमित्ततैं लिखनेरूप कार्य वनैं है। तातैं कारणविषैं कार्यका उपचार करि मैं लिखोंगा। ऐसा व्यवहार मात्र वचन जानना। निश्चय विचारतैं मैं मेरे ज्ञानादि भावनिहीका कर्ता हौं। लिखनेका कर्ता मैं नाहीं हौं। बहुरि प्रश्न। इनकैं निमित्त नैमित्तिक संबंध कैसैं होइ है सो कहौ ? तहां कहिए हैं। मेरा ज्ञान स्वभाव है सो ज्ञानावरणके निमित्ततैं हीन होइ मतिश्रुत पर्यायरूप भया है। तहां मतिज्ञान करि शास्त्रके अक्षरनिका जाननां भया। बहुरि मोहके उदयतैं मेरे औपाधिक भाव रागादिक पाईए है। तहां प्रशस्तराग करि मेरे ऐसी इच्छा भई जो शास्त्रका अर्थ भाषारूप अक्षरनि करि लिखिए तौ इस क्षेत्रकालविषैं मंद बुद्धि घने हैं तिनका भी कल्याण होइ। अर इस कार्यकों करतैं अप्रशस्त भावके अभाव करि किछू धर्म प्रवृत्ति होनेतैं मेरा भी कल्यान होइ। तातैं जैसैं ताका लिखना वनैं सो करना। बहुरि प्रदेशनिकों चलावनेरूप शक्तिपनां मेरे पाईए है। तहां तिस इच्छाके वशतैं जैसैं तिस कार्यकी सिद्धि होइ। तैसैं मैं मेरे प्रदेशनिकों चंचल करौं हौं। ऐसैं इतने पर्याय तौ मेरैं होइ हैं। बहुरि पुद्गल द्रव्य भी सक्रिय है। अर शरीर है सो पुद्गलपरमाणूनिका पिंड है। अर नामकर्मके निमित्ततैं शरीरकें अर मेरैं एक बंधान है। तातैं मेरे प्रदेश चंचल होंनेतैं तिनकी साथि हस्तादिक शरीरके अंग भी चंचल हो हैं। बहुरि हस्तादि अंगकरि प्रेरे हुए लेखनी आदि पुद्गल स्कंध हैं ते जैसे अक्षर लिखे जांय तैसे क्रियावान् होइ प्रवर्तैं। तब अक्षरनिका आकार पत्रादि विषैं स्थापन हो है। ऐसैं यहु निमित्त नैमित्तिक संबंध जाननां। ऐसैं ही

अन्यकार्यनि विषैं भी यथासंभव निमित्त नैमित्तिक संबंध जानने। यथार्थ आपा परका भेद विज्ञान हो है। सो इहां लिखनेका कार्य विषैं मेरे ज्ञानादि पर्याय कारण भए। बहुरि व्यवहार विषैं कारण कार्यकें संबंध जानि परस्पर उपचार करिए है। तातैं व्यवहार करि जैसैं घटका कर्ता कुंभकार कहिए है तैसैं मोकौं लिखनेका कर्तापना जाननां। निश्चय करि लिखना आदि कार्य हैं ते पुद्गलके हैं मेरे नाहीं। तातैं इस शास्त्रविषैं कर्तापनेकों लीएं अहंकार मेरैं नाहीं है। बहुरि इहां कोई पूछै है कि इस कार्य होंने विषैं अपना अर अन्य जीवनिका कल्यानके अर्थि तुमारै इच्छा भई सो कल्यान तौ धर्म साधनतैं होइ सो इस शास्त्रविषैं कोई निश्चय व्यवहाररूप धर्मका तौ निरूपण है नाहीं। या विषैं तौ क्षेत्रादिकका प्रमाण वा स्थाननिका आकार वा नारकादि जीवनिका आयु काय इत्यादि निरूपण है ताकरि धर्म साधना कैसैं होइ? ताका उत्तर। मोक्षके कारण सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र धर्म हैं। तहां सम्यक्त प्रथम धर्म है सो सम्यक्तकी प्राप्ति संशय दूरि भएं होइ। सो त्रिलोकका स्वरूप जानें अधो मध्य ऊर्द्ध विषैं जे जे जीव जिन स्थाननि विषैं जैसैं जैसैं पाईए हैं वा जैसी जैसी लोक विषैं रचना है सो सर्व जानैं तब संदेह न रहै। बहुरि अन्यवादी लोकका स्वरूप कल्पित वर्णन करैं हैं। लोकका कर्ता ईश्वरकों वा ब्रह्माकों बतावैं हैं बहुरि लोकका स्वरूप पुरुषाकार कहै है। बहुरि लोक रचना विषैं काछिवाकी पीठि ऊपर आठ हस्ती बतावैं हैं। शेषनागकों बतावैं हैं ता ऊपर पृथ्वी बतावैं हैं। ताका प्रमाण तुच्छ कहैं हैं। ताविषैं सात द्वीप सात समुद्र कहैं हैं। तहां जंबूद्वीप विषैं नवखंड औरनिविषैं सात खंड बतावैं हैं। बहुरि जंबूद्वीपके बीचि मेरुगिरि कहैं हैं। ताकी दशौंदिशानि विषैं दश दिक्पालनिकी नगरी बतावैं हैं। तहां यमकी नगरी विषैं चउवीस नरक कुंड बतावैं हैं। तहां जीव मरि करि जाय है। तब उनका न्याय करना कहैं हैं। बहुरि अन्न जल अग्न्यादिककी नगरी कहैं हैं। बहुरि ज्योतिर्लोक विषैं ऋषिनिका वा भक्तनिका स्थान कहैं है। बहुरि उपरि वैकुंठ धाम बतावैं हैं। इत्यादि रचनाके विशेष उनके शास्त्रनि विषैं लिखे हैं। सो जिनमत विषैं कह्या त्रिलोकका जानैं ते अन्यमतका कह्या लोकका वा पुन्य पाप रूप आश्रव बंधके फल नर्क स्वर्गादि कहे तिनका विशेषकौं जानैं वा तिनके अभावतैं संवर निर्जरा होइ ताका फल मोक्ष हो है। ताका स्थानादि विशेषकों जानें तौ तत्त्व श्रद्धान विषैं संशय रहै नाहीं तब सम्यक श्रद्धान दृढ होइ। बहुरि दूसरा सम्यग्ज्ञान धर्म है सो इस शास्त्रका अभ्यास करनेतैं मिथ्यात्वकी वा कषायनिकी या हिंसादि पापनिकी वृद्धि न हो है, हानि ही हो है। तातैं याका अभ्यास आप ही सम्यग्ज्ञान रूप है। बहुरि तीसरा सम्यक चारित्र धर्म है सो सराग वीतराग भेदकों लीएं है सो अशुभ प्रवृत्ति छूटि शुभ प्रवृत्ति भएं सराग चारित्र हो हैं। सो इस शास्त्रतैं अशुभका फल नरकादिक जानैं। शुभका फल स्वर्गादिक जानैं तौ हिंसादि पापकों छोडि व्रतादि शुभ विषैं प्रवर्तैं। बहुरि राग द्वेष जातैं उपजैं ऐसा विचार दूरि भएं वीतराग चारित्र हो है। सो लोकका स्वरूपका विचार करतैं किछू इस पर्याय संबधी प्रयोजन नाहीं। अर विना प्रयोजन राग द्वेष काहेकों उपजै तातैं वीतराग भाव स्वयमेव ही होइ। इहां कोऊ कहै इतनां विकल्प लीएं वीतरागता कैसैं रहै? ताका उत्तर। जड भएं

वेकल्प दूरि होइ। ज्ञानका स्वरूप तौ सविकल्प ही है। काहू ज्ञेयकों जानैंहीगा तातैं ज्ञेय जाननेकै विकल्पतैं वीतरागताका अभाव न हो है। जिसतैं राग द्वेष उपजै ऐसे विकल्पनितैं वीतरागताका अभाव हो है। ऐसैं इस शास्त्रतैं सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र धर्मकी प्राप्ति हो है। तिसतैं जीवका कल्याण हो है। तातैं याकों लिखनेकी इच्छा भई है। ऐसैं इहां प्रश्न उत्तरका प्रयोजन यहु है। इस शास्त्रके अभ्यासकों कार्यकारी जानि याका पढना वाचना सीखनां सुननां इत्यादि अभ्यास विषैं तत्पर रहना योग्य है। बहुरि इहां कोऊ कहै तुह्मारी बुद्धि तौ हीन है ऐसे गंभीर शास्त्रकी टीका कैसैं करोगे। ताका उत्तर। मूल शास्त्र कर्तातैं टीकाकारकी बुद्धि हीन होय ही है। परंतु सर्व टीकाकार अपनी बुद्धि अनुसार टीका करैं हैं तैसैं मैं भी अपनी बुद्धि अनुसार टीका करोंगा। बहुरि कोऊ कहै कहीं चूकोगे तौ दोष लागैगा। ताका उत्तर। जैसैं यत्नाचारी मुनिकै प्रमत्त योग विना हिंसा होतैं भी दोष नाहीं लागै है तैसैं जिन आज्ञाकों प्रमाण करनहाराकै विपरीत अभिप्राय विना कोऊ सूक्ष्म अर्थ विषैं अन्यथापना होतैं भी दोष नाहीं लागै है। ऐसैं विचार करि टीकाका प्रारंभ करौं हों। इस श्रीमत् त्रिलोकसार नाम शास्त्रके सूत्र नेमिचंद्रनामा सिद्धांत चक्रवर्ती करि विरचित हैं। तिनकी संस्कृत टीकाका अनुसार लेइ इस भाषा टीका विषैं अर्थ लिखोंगा। कहीं कोई अर्थ न भासैगा ताकों न लिखोंगा। कहीं समझनेके अर्थि बधाय करि लिखोंगा। ऐसैं यहु टीका बनेगी ता विषैं जहां चूक जानों तहां बुध जन संवारि शुद्ध करियो। छद्मस्थकै ज्ञान सावर्ण हो है तातैं चूक भी परै। जैसैं जाकों थोरा सूझै अर वह कहीं विषम मार्ग विषै स्खलित होइ तौ बहुत सूझनेवाला वाकी हास्य न करै। दयालु होइ तिस अर्थकों शुद्ध ही करैगे। बहुरि बाल स्वभावी हास्य करौ तौ करौ। प्रयोजन वाला तौ क्रिया करैहीगा। उनके भयतैं अपना कार्य करनां छोरैं नाहीं। ऐसे विचारतैं इस टीका करने विषैं मेरैं उत्साह ही वर्तै है। अब इस शास्त्रके वक्ता श्रोता कैसे चहिए सो कहिए हैं। प्रथम तौ जिन वचनके श्रद्धानी होंहिं। जो श्रद्धानी न होंहिं तौ प्रत्यक्ष अनुमानतैं अगोचर त्रिलोकका स्वरूप ताकों सत्य कैसैं जानैं। बहुरि धर्म बुद्धि होंहिं। जो धर्म बुद्धि न होंहिं तौ शारीरक प्रयोजन तौ यामें किछू है नाहीं काहेकों या विषैं लगैं। अर जो पांडित्य प्रगट करनेकों लागैं तौ कषाय भावतैं उलटा बुरा हो है। बहुरि गणितादि ज्ञान सहित होइ जो ऐसे न होइ तौ इस ग्रंथका अर्थ पर्याय न भासै। बहुरि प्रश्न उत्तर करिकैं कथनका निर्णय करि तत्त्वज्ञान दृढ करनेहीका अभिप्राय जिनके होइ कोई वादादिकका अभिप्राय न होइ ऐसे होंहिं। जो ऐसैं न होइ तौ ग्रंथ अभ्यासका फल उपयोग निर्मल करना ताकों न पावैं। बहुरि क्षमा संतोष न्याय प्रवृत्ति आदि गुण सहित होंहिं। जो ऐसे न होंहिं तौ शोभा न पावैं। इत्यादि गुण सहित वक्ता श्रोता जाननें। बहुरि कोऊ कहै इस शास्त्रकी प्रमाणता कैसैं करिए। ताका समाधान। संभवद्बाधक प्रमाणके अभावतैं याकों प्रमाण करिए। जिस अर्थका निषेध करण हारो कोई प्रमाण संभवता होइ ताका नाम संभवद्बाधक प्रमाण है। सो इस शास्त्र विषैं जो व्याख्यान है सो कोई प्रमाण करि विरुद्ध न भासै है। तातैं याका प्रमाण कीजिए है। बहुरि प्रश्न जो कीया कि प्रमाणता किस प्रमाण करि होइ।

ताका उत्तर—जो अर्थ प्रत्यक्ष अनुमान गोचर होइ ताकौं तौ प्रत्यक्ष अनुमान करि प्रमाण करनां। बहुरि जो प्रत्यक्ष अनुमानतैं अगोचर होइ ताकों आगम प्रमाण करि मानना। कोऊ कहै हैं कि अन्यमतके आगम अप्रमाण तुम्हारा आगम प्रमाण ऐसा कैसैं मानिए ? ताका उत्तर। आगम विर्षै केई अर्थ प्रत्यक्ष अनुमान गोचर हैं केई अगोचर हैं। तहां प्रत्यक्ष अनुमान गोचर अर्थ करि आगमकी परीक्षा करनी। जिस मतके आगम विर्षै प्रत्यक्ष अनुमान गोचर ही अर्थ विरुद्ध भासै तौ तिसका कह्या अगोचर अर्थ कैसैं प्रमाण करिए। अर जिस मतका आगम विर्षै प्रत्यक्ष अनुमान गोचर अर्थ सत्य ही कहै भासै तौ तिसका कह्या अगोचर अर्थ भी सत्य ही होसी सो ऐसैं परीक्षा कीएं अन्यमतके आगम अप्रमाण जैनमतके प्रमाण प्रतिभासैं हैं। सो यहू शास्त्र जैनमतका आगम है तातैं प्रमाण है। या प्रकार इस शास्त्रकों फलदायक जानि वक्ता श्रोताका लक्षण युक्त होइ वांचो सुनो अर प्रमाणीक जानि याका श्रद्धान करो। याके अभ्यासतैं तत्त्व श्रद्धानी होइ तत्त्वज्ञानकों वधाइ रागादिककों घटाइ मोक्षमार्गी होऊ। बहुरि तिस साधनतैं तुम्हारें निरुपाधि आत्मस्वभावकी सिद्धि है लक्षण जाका ऐसा सिद्ध अवस्था प्रगट होऊ।



# त्रिलोकसारकी विषयसूची।

## भवनाधिकार ॥ २ ॥



## व्यंतरलोकका अधिकार ॥ ३ ॥



## ज्योतिर्लोकाधिकार ॥ ४ ॥

## वैमानिक लोकका वर्णन ॥ ५ ॥



## मनुष्य तिर्यग्लोकका अधिकार ॥ ६ ॥

इति विषयसूची समाप्त।

# त्रिलोकसारका परिशिष्ट ।

अब इस ग्रंथके अर्थ जाननेकों गणितका ज्ञान अवश्य चाहिए । जातैं यहु करणानुयोग-रूप शास्त्र है, या विर्षे जहां तहां गणितका प्रयोजन पाईए है । तातैं पहलैं गणित शास्त्रनिका अभ्यास करनां । सर्व शास्त्रनिका ज्ञान होनेंकों कारणभूत दोय विद्या हैं । एक अक्षरविद्या एक अंकविद्या । सो व्याकरणादि करि अक्षर ज्ञान भए अर गणितशास्त्रनि करि अंकज्ञान भए अन्य शास्त्रनिका अभ्यास सुगम हो हैं । पहले श्रीऋषभदेवजी एक पुत्रीकों अक्षरविद्या एक पुत्रीकों अंकविद्या सिखाई । सो दोऊ ही विद्या कार्यकारी हैं । तहां जे तुच्छबुद्धी व्याकरणादि ज्ञानरहित हैं तिनके अर्थि यहु भाषा रचना करी । अब इस विर्षे जे जीव गणितज्ञानरहित हैं तिनके अर्थि इहां प्रयोजनमात्र शास्त्रोक्त गणित विधान वर्णन करिए हैं । बहुरि अन्य शास्त्रनितैं विशेष जाननां । तहां एकादिक गणनां अर तिनके अंक मांडनेका विधान प्रवृत्ति विर्षे प्रसिद्ध है सो सीखलेनां । बहुरि प्रवृत्ति विर्षे पहले अंकका नाम इकवाई दूसरे अंकका नाम दाहाकी तृतीयादि अंकनिका नाम सैंकडा हजार दशहजार लाख दशलाख कोडि कहिए है । संस्कृत विर्षे इनका नाम एक दश शत सहस्र अयुत लक्ष दशलक्ष कोटि ऐसे नाम हैं । बहुरि याके उपरि दशकोडी शतकोडि सहस्रकोडि इत्यादि नाम जोडिलैनें । बहुरि अंकनिकी वांईं तरफसौं गति है । तातैं इकवाईका अंक लिख ताके पीछैं पीछैं दाहाकी आदिकके अंक लिखनें । जैसैं दोयसैं छप्पन लिखनें होइ तहां इकवाईका छका लिखना ताके पीछैं दाहाकीका पांचा अर ताके पीछैं सैंकड़ाका दूवा लिखनां । बहुरि तहां छक्काकों पहला अंक कहिए पांचकों दूसरा अंक कहिए दूवाकों अंतका अंक कहिए ऐसैं परिपाटी जाननी । बहुरि परिकर्माष्टककों सीखना । सो संकलन १ व्यवकलन १ गुणकार १ भागहार १ वर्ग १ वर्गमूल १ घन १ घनमूल इनकों परिकर्माष्टक कहिए है । तहां प्रवृत्ति विर्षे जाका नाम जोड देनां है ताका नाम इहां संकलन जाननां । जाकों जोडिए ताका नाम धनराशि कहिए, जाविर्षे जोडिए सो मूलराशि जाननां । सो मूलराशिकैं धनराशितैं अधिक कहिए । बहुरि मूल राशिके उपरि धनराशि लिखिए जैसैं पांच अधिक पिचाणवै ऐसैं लिखिए ९५ तहां मूलराशि धनराशिके अंकानिकों यथास्थान जोडिए । इकवाईका अंक दाहाकीका अंक विर्षे दाहकीका ऐसे क्रमतैं जोडिए जो इकवाई आदिकके अंक जोडैं अधिक प्रमाण आवै तौ तहां इकवाईका अंक मांडि दाहकी आदिकका अंक अवशेष रहै ताकों दाहकी आदिकके अंकनि विर्षे जोडि दीजिए । याका नाम प्रवृत्ति विर्षे हाथिलागा कहिए है । इहां उदाहरण । जैसैं दोयसैं छप्पनविर्षे चौरासी जोडना होइ तहां इकवाईके अंक छह च्यारि जोडैं दश भए तहां इकवाईकी जायगा बिंदी मांडि अवशेष एका अर दाहकी के अंक पंच आठ जोडैं चौदह भए सो एकाके पीछे दाहकाकी जायगा चौका लिखि अवशेष एका अर दोय जोडैं तीन भए सो ताके पीछैं सैकडाकी जायगा लिखनां । ऐसैं इनका जोड़ तीनसै चालीस ३४० भया । अथवा दूसरी तरफसैं जोडिए तौ सैकड़ाकी

जायगा दूवा मांडि दाहकीके अंक पांच आठ जोडें तेरह भए सो दाहकीकी जायगा तीया लिखि एक सैकडा विषैं जोडें ऐसा भया ३३। बहुरि इकवाईका छह च्यारि जोडें दश होइ तहां इकवाईकी जायगा विंदी लिखि एक दाहकीका अंक विषैं जोडें ऐसा ३४० भया। या प्रकार औरनिकाभी संकलन जाननां। बहुरि व्यकलन नाम राशि विषैं घटावनेका है प्रवृत्ति विषैं याका नाम बाकीका काढना है। तहां जाकौं घटाई ताका नाम ऋण राशि है। जाविषैं घटाईए ताका नाम धनराशि है वा मूलराशि है। तिस ऋणराशि करि मूलराशिकों हीन वा सोधित इत्यादि कहिए। सो मूलराशिके उपरि ऋणराशिकों लिखि ताके आगैं पूछड़ीकासा आकार विंदी सहित करिए जैसैं दोय घाटि दोयसै ऐसैं लिखिए २०० अथवा मूलराशिके आगैं ऐसैं — सहनानी करि आगैं ऋणराशी लिखिए। जैसैं ताहीकौं ऐसैं लिखिए २००—२ अथवा मूलराशिके नीचैं विंदी लिखि ताके नीचैं ऋणराशि लिखिए जैसें ताहीकौं ऐसैं लिखिए २०० बहुरि अन्यत् प्रकार भी लिखना हो है। तहां मूलराशिके अंकनिमेंस्यौं धनराशिके अंक यथास्थान क्रमतैं घटाईए इकवाईके अंकनिमेंस्यौं इकवाईके अंक दाहकीके अंकनिमेंस्यौं दाहकीके अंक ऐसैं क्रमतैं घटाईए। बहुरि जो इकवाई आदिका अंक मूल राशितैं ऋणराशिका अधिक होइ तौ मूलराशिका दाहकी आदि अंकमेंस्यौं एक घटाइ इकवाई आदि अंकविषैं दश जोडि तामें ऋणराशिका अंक घटाईए। इहां उदाहरण—जैसैं तीनसै चालीसमेंस्यौं चौरासी घटावना होइ तहां इकवाईकी जायगा मूलराशिकी विंदीमें ऋणराशिका चौका घटै नाहीं तातैं दाहकीका अंक मूलराशिका चौकामें एक घटाइ इकवाई विषैं दशकरि तामें च्यारि घटाए छह रहे सो इकवाईकी जायगा लिखे। बहुरि दाहकीका अंक मूल राशिका तीया रह्या तातैं ऋणराशिका आठका अंक बधता सो घटै नाहीं तातैं मूलराशिका सैकड़ाका तीनका अंकमेंस्यौं एक घटाइ दाहकीका तीया विषैं दश जोडें तेरह भए तामें ऋणराशिका आठा घटाएं पांच रहे सो दाहकीकी जायगा लिख्या। बहुरि मूलराशिका सैकड़ाका अंक दूवा रह्या तामें घटाने योग्य ऋणराशिका अंक सैकडाका कोई नाहीं तातैं सैकड़ाकी जायगा दूवा लिख्या ऐसैं अवशेष बाकी दोयसै छप्पन रहे २५६। अथवा ऐसैं ही अंतादि अंकनिस्यौं विधान करिए तोभी इतनां ही प्रमाण आवै है। जैसैं मूलराशिका सैकड़ाका अंक तीया तामें ऋणराशिका सैकड़ा कोऊ घट्या नाहीं तातैं तीया रह्या। बहुरि इसही मूलराशिका चौकातैं ऋणराशिका आठा घटै नाहीं तातैं सैकड़ाका तीयामें एक घटाय तहाँ दूवा करनां। तिसकी दशदाहकी चौकेमें मिलाए चौदह होय तामें आठ घटाए छह रहे तब ऐसा भया २६ बहुरि इकवाई विषैं मूलराशिकी बिंदी विषैं च्यारि घटै नाहीं तातैं दाहकीका छक्कामें एक घटाय तहां पांचा करनां ताका दश बिंदीमें मिलाए दश ही भए तामें च्यारि घटाए छह रहे ऐसैं कीएं २५६ दोयसै छप्पन ही प्रमाण आवै है। ऐसैं ही अन्यत्र भी विधान जाननां। बहुरि गुणनेका नाम गुणाकार हैं। जैसैं प्रवृत्ति विषैं रुपैयानिके टके फलाईए हैं। बहुरि एकादिककी पाटिनिकी पद्धति है सो गुणनरूप जाननी जैसैं पचीस आठ दोयसै, ऐसा कह्या तहां पचीसकौं आठकरि गुणें दोयसै हो हैं। ऐसैं अर्थ जाननां। तहां जाकौं गुणिए ताका नाम गुण्य है।

जाकरि गुणिए ताका नाम गुणक वा गुणाकार है। वहुरि गुण्य हूवा राशिका नाम गुणित वा हत वा घ्न इत्यादि जाननें। सो गुण्य आगैं गुणककौं लिखिए जैसें चौसठि गुणां एकसो अठाईसकों ऐसें लिखिए १२८।६४ अत्र गुणनेका विधान कहिए हैं। गुणकारके अंकनिकरि पहलैं गुण्यका अंत अंककौं गुणिए तहां गुणकारका इकवाईका अंक करि गुणें अंक आवै तिन विषैं इकवाईका अंककौं तिस अंत अंकके उपरि लिखिए। दाहकी आदिके अंक आवै तौ ताके पीछैं पीछैं लिखिए। वहुरि जो गुणकारका अंक दाहकीका होइ तौ तिसकरि तिस गुण्यका अंत अंककों तैसें ही गुणिए तहां पूर्वै इकवाईका अंक आया था ताके पीछैं तिसकों लिखिए। वा पूर्वैं तहां अंक होइ तौ जोड़ दीजिए। वहुरि ऐसैं ही गुणकारके सैकड़ा आदि अंक होंइ तौ तिनकरि क्रमतैं गुणि जो प्रमाण आवै ताकौं पीछैं पीछैं लिखिए वा जोडिए। ऐसैं अंत अंकका गुणन किया। वहुरि जो गुण्यके अनेक अंक होइ तौ तैसैं ही उपांत आदि अंकनिकों क्रमतैं तहां गुणैं इकवाईका अंक आवैं सो तौ पूर्व इकवाईका अंक लिख्या था ताके आगैं लिखिए अर अन्य अंक आवैं तिनकों पूर्व अंकनि विषैं अनुक्रमतैं जोडते जाइए। ऐसैं कीएं जो प्रमाण आवै सो गुण्य हूवा राशि जाननां। इंहां उदाहरण। जैसैं एकसो अठाईसकों चौंसठि करि गुणना तहां प्रथम गुण्यका एकाकों चौंसठि करि गुणिए तहां गुणकारका चौका करि गुणें च्यारि भया सो एका उपरि लिख्या छक्का करि गुणें छह भया सो ताके पीछैं लिख्या तव ऐसा भया ६४ १२८। वहुरि गुण्यका उपांत अंक दूवा ताकों चौंसठि करि गुणिए। तहां चौका करि गुणें वतीस होइ तहां दूवा तौ पूर्व अंकनिके आगैं लिख्या अर हाथिलगे तीन सो पूर्व अंकनि विषैं जोड्या। वहुरि छक्का करि गुणें अठतालीस होइ सो पूर्व अंकनि विषैं जोडिए तव ऐसा भया ८१९२ १२८ ऐसैं गुण्य हूवा प्रमाण इक्यासीसै वाणवै भया। ऐसैं ही अन्यत्र जाननां। वहुरि अन्य विधान कहिए हैं। गुणाकारके अंकनि करि गुण्यके प्रथम अंककों गुणें जो प्रमाण आवै सो जुदा लिखिए अर गुण्यका द्वितीय अंककों गुणें जो प्रमाण आवैं ताके आगें एक विंदी देइ जुदा लिखिए ऐसैं ही क्रमतैं गुण्यका चतुर्थादि अंकनिकों गुणें जो जो प्रमाण आवै ताके आगैं च्यारि आदि विंदी देइ जुदे जुदे लिखिए। वहुरि तिन सवनिकों जोडिए जो प्रमाण आवै सो गुण्य हूवा राशि जाननां। जैसैं चौसठि करि एकसौ अठाईसकों गुणनां तहां गुण्यका आठाकों गुणें पांचसैं वारह भए सो लिख्या अर दूवाकों गुणें आगैं एक विंदी दीएं वारहसै असी भए सो लिख्या अर एकाकों गुणें आगैं दोय विंदी दीए चौसठिसै होई इनकों जोडें ५१२ १२८० ६४०० सोइ इक्यासीसै वाणवैं आवैं हैं। अथवा यंत्रविधान करि गुणन हो है सो जेते गुण्यके अंक होंइ तितनी पंक्तिनि विषैं जेते गुणकारके अंक होंइ तितने तितने कोठे करनें। वहुरि तिन कोठानिकों ड्योढे चीरिए वहुरि गुणकारके प्रथमादि अंकनि करि गुण्यका प्रथम अंककों गुणें जो जो अंक आवै तिनकों प्रथम पंक्तिके प्रथमादि कोठेनिविषैं लिखिए। तहां गुणें जो एक ही अंक आवै तौ जो कोठा ड्योढा चीराथा ताका उपरिम भागविषैं विंदी अर नीचला भागविषैं अंक लिखिए अर जो दोय

अंक आवै तौ दाहकीका अंक उपरिम भाग विषै इकवाईका अंक द्वितीय भाग विषैं लिखिए। बहुरि ऐसैंही गुणकारके प्रथमादि अंकनि करि गुण्यके द्वितीयादि अंकनिकों गुणि द्वितीयादि पंक्तिनि विषैं लिखनें। बहुरि तिस यंत्रका ड्योढा जोड दीजिए जो प्रमाण आवै सो गुणित राशि जाननां। उदाहरण—जैसैं एक अठाईसकों चौसठि करि गुणना होइ तहां ऐसा यंत्र करिए। बहुरि याकौं ऐसैं ड्योढा चीरिए........बहुरि याविषैं छक्का चौका करि गुण्यका प्रथम अंक एकको गुणि प्रथम पंक्ति विषैं द्वितीय अंक दूवाकों गुणि तृतीय पंक्ति विषैं लिखने........ बहुरि इनका ड्योढा जोड दीजिए तब दूवाका दूवा लिख्या अर आठ तीन आठकों जोडें उगणीस ताका पीछैं नांवां लिख्या हाथ एकलागा सो अर च्यारि दोय च्यारि जोडें ग्यारह भए ताका ताके पीछैं एका लिख्या बहुरि हाथि लागा एक अर एका छक्का जोडें आठ भया सो वाके पीछैं लिख्या ऐसैं इक्यासीसै वाणवै प्रमाण आवै हैं। अथवा संभेदन करि गुणन हो हैं। तहां जैसैं सुगम गुणन होय तैसैं गुण्यका वा गुणकारका खंडकरि जुदे जुदे तिन खंडनिकों गुणि जोड दीजिए। उदाहरण। जैसें एकसौ अठाईसकों चौंसठि करि गुणना होइ तहां चौसठिकों दोय खंड कीये साठि अर च्यारि तहां साठि करि गुणें छिहंतरिसै असी होइ अर च्यारि करि गुणें पांचसैं बारह होइ, बहुरि ताकों सोलह करि गुणें इक्यासीसै वाणवै ही होइ। बहुरि जहां गुण्यगुणकार बहुत होइ तहां परस्पर गुणन करना। जैसें च्यारि सोलह चौंसठि दोय ऐसें च्यारि राशि ४।१६।६४।२ गुण्य गुणकार हैं। इनकों परस्पर गुणिए तहां च्यारिकों सोलह करि गुणें चौंसठि बहुरि याकों चोंसठि करि गुणें च्यारि हजार छिनवै याकों दोयकरि गुणें इक्यासीसै वाणवै। अथवा गुण्य गुणकारनि विषैं काहूका गुणकार रूप संभेदन करिए। काहूकों किसी करि गुणि लिख दीजिए पीछैं तिनकों परस्पर गुणिए। जैसें तिन गुण्य गुणकारनि विषैं चौसठिका संभेदन करि च्यारि गुणा सोलह लिख्या। बहुरि पूर्वैं च्यारिका अंक था ताकों इस च्यारिका अंक करि गुणैं सोलह भए। ऐसैं कीएं ऐसा १६।१६।१६।२ राशि भया इनकों परस्पर गुणें भी इक्यासीसै वाणवै होइ। ऐसैं विधान जांनना। संभेदनादि करनेका प्रयोजन इस शास्त्र विषैं आवैगा तिसतैं इहां स्वरूप दिखाया है। ऐसैं वा अन्य प्रकार भी गुणन विधान जानना। बहुरि इहां इतना जाननां गुण्यगुणकार विषैं कोई राशि विषैं एक घटाईए वा वधाईए तो अन्य राशि एक ही होइ तौ तितनेही घटैं वधैं। अर अन्य राशि बहुत होइ तौ तिनकों परस्पर गुणें जितने होइ तितने घटैं वधैं। जैसैं चौसठि करि एकसौ अठाईसकों गुणें इक्यासीसै वाणवै होइ अर जो चौंसठिमेंस्यों एक घटाईए वधाईए तौ तिस प्रमाणमेंस्यौं एकसौं अठाईस घटै वधै। अर एकसौ अठाइसमेंस्यों एक घटाए वधाए चौंसठि घटै वधै। बहुरि जैसें च्यारि सोलह चौसठि दोय ऐसैं गुण्य गुणकार होइ तिनकों परस्पर गुणें इक्यासीसै वाणवै होइ। बहुरि जो सोलहमें एक घटाए वधाए अन्य राशि च्यारि चौंसठि दोय इनकों परस्पर गुणें जितने होंइ तितने घटैं वधैं। बहुरि एक घटाए वधाए जेता प्रमाण घटै वधै तहां आधा आदि वा दोय आदि घटाए वधाए तिस प्रमाणतैं आधा आदि

वा दूणां आदि प्रमाण घटै वधै ऐसा जाननां। ऐसैं और भी विशेष अनेक प्रकार हैं। ते यथा-संभव जानने। बहुरि भाग देइ प्रमाण ल्यावनेका नाम भागहार है। जैसैं प्रवृत्ति विषैं टकानिके रुपैये फलाइए। बहुरि राशिके वट करनेकी पद्धति है। सो भाग हार रूप जाननी। जैसैं दोयसैंका आठ वट कीए पचीस कह्या तहां दोयसैंकों आठका भाग हार जानना अर जाकों भाग दीजिए ताका नाम भाज्य है वा हार्य्य है। जाका भाग दीजिए ताका नाम भाजक वा हार वा भागहार इत्यादि कहिए हैं। बहुरि भाग दीए राशिका नाम भक्त वा भाजित इत्यादि कहिए। बहुरि लिखनेमैं भाज्यकों ऊपर लिखिए भाजककों ताके नीचें लिखिए। जैसैं इक्यासीसै वाणवैंका चौंसठिवां भागकों ऐसैं लिखिए ८१९२/६४। अब याका विधान कहिए हैं—भाज्य राशिके अंतादिक जेते अंकनिकरि भाजक राशितैं प्रमाण वधता होइ तितने अंकरूप राशिकों भाजकका भाग दीजिए। बहुरि जिस अंक करि भाजककों गुणें जाकों भाग दीया था तामैं घटाइ अवशेष तहां लिख दीजिए अर वह पाया अंक जुदा लिखिए। बहुरि जेतैं भाज्यके अंक रहे तिनके अंतादि अंकनिकों तैसैं ही भाग देइ जो अंक आवै ताकों तिस पाया अंकके आगैं लिखिए। ऐसैंही यावत्सर्व भाज्यके अंक निःशेष होइ तावत् विधान करै तहां पाए अंक-निकरि जो प्रमाण आवै सो तहां भाग दीए जो राशि भया ताका नाम लब्धराशि है ताकर प्रमाण जानना। इहां उदाहरण। इक्यासीसै वाणवैंकों चौसठिका भाग दीया ८१९२/६४ तव याकों दोय आदि अंक करि गुणें तौ वहुत प्रमाण होइ तातैं एक करि गुणें चौसठि हूवा ताकों इक्यासीमैं घटाय तहां सतरह लिख्या अर पाया अंक एका जुदा बहुरि वह राशि ऐसा १७९२ भया तहां आदि तीन अङ्क करि एकसौ गुण्या भाज-कतैं वधता प्रमाण होइ ताकों चौसठिका भाग दीजिए १७९२/६४ तव तीन आदिकरि ताकों गुणें जो वधता प्रमाण होइ तातैं भाजककों दोय करि गुणें एकसो अठाईस होय सो घटाए तहां इक्या-वन रह्या सो लिख्या अर पाया अंक दूवा तिस एकाके आगैं लिख्या। बहुरि वह राशि ऐसा ५१२ भया ताकों चौंसठिका भाग दीजिए ५१२/६४ तहां ताकों आठ गुणा कीएं पांचसै वारह होइ सो भाज्यमैंस्यौं घटाए राशि निःशेप होइ अर पाया अंक आठ तिस दूवाके आगैं लिख्या ऐसैं पाया अंकनिकरि लब्धराशि एकसौ अठाईस होइ ऐसैं ही अन्यत्र जाननां। बहुरि जहां भाग टूटि जाय भाजककों किसी अंक करि गुणें भाज्यके अंक आये पहलें ही अंक निःशेप होइ जाय तहां अंक घटनेतैं भाग टूट्या कहिए सो जहां भाग टूटै तहां पाया अंकके आगैं विंदी लिखि बहुरि तैसैं विधान करना। जैसैं छह हजार च्यारिसै चोईसकों आठका भाग दीया ६४२४/८ तहां चौसठिकों आठका भागदीएं आठ पाया सो आठकों आठकरि गुणें चौंसठि होइ सो चौसठिमैं घटाएं निःशेप भया तहां पाया अंक आठके आगें विंदी लिखि बहुरि चौईसकों आठका भाग दीएं तीया पाया सो लिख्या तव लब्धराशिका प्रमाण आठसै तीन आया। ऐसैं ही अन्यत्र जाननां। बहुरि कहीं भाग देते भाज्यराशि निःशेप न होइ कि अवशेप रहिजाय तहां लब्धराशि प्रमाणके आगैं अवशेपकों भागहारकर भाग लिख देना। जैसैं इक्यासीसै चौराणवैकों चौंसठिका भाग दीया ८१९४/६४ तहां

पूर्वोक्त प्रकार एकसौ अठाईस लब्धिराशि भया। अर भाज्य विषैं दोय रहे ताकों चौंसठिका भाग तिसके आगैं लिखना $१२८ \frac{२}{६४}$ ऐसैं ही अन्यत्र जाननां। वहुरि कहीं सुगम करनेके अर्थि अपवर्तन करि भाग देना भाज्यकों भाग दीए जो प्रमाण आवै सो तौ भाज्य लिखना अर तिसही प्रमाणका भाजककों भाग दीजिए जो प्रमाण आवै सो भाजक लिखना। ऐसैं समप्रमाण करि भाज्यभाजककों अल्प करिए ताका नाम अपवर्तन है। जैसैं इक्यासीसे चौराणवैकों चौंसठिका भाग होइ तहां दोयका अपवर्तन संभवै है। जातैं इक्यासीसै चौराणवैकों दोयका भाग दीए भाज्यराशि च्यारि हजार सत्याणवै भया, अर चौंसठिकों दोयका भाग दीएं भाजकराशि वत्तीस भया $\frac{४०९७}{३२}$ तहां पूर्वोक्त विधान कीए लब्धराशि एकसौ अठाईस अर एकका वत्तीसवां भाग आया सोई पूर्वें प्रमाण आया था तहां दोयका चौंसठिवां भाग अधिक कह्या था। अर इहां दोय करि अपवर्तन करनेतें एकका वत्तीसवां भाग कह्या सो दोऊनिका एकार्थ है। ऐसैं ही अन्यत्र जाननां। वहुरि कहीं भाज्यराशि वा भाजकराशि विषैं गुण्यगुणाकार होइ तहां जिसका जिसकरि अपवर्तन संभवै तिसका तिस ही करि, अपवर्तन करनां। जैसैं चौंसठि सत्ताईस पांच तीन इनकों परस्पर गुणें जो होइ सो तौ भाज्यराशि अर तीन नव सत्रहकों परस्पर गुणें जो होइ सो भाजकराशि $\frac{६४ \cdot २७ \cdot ५ \cdot ३}{३ \cdot ९ \cdot १७}$ तहां भाज्यका तीन अर भाजककों तीनका अपवर्तन कीए दोऊ जायगा तीनका अभाव भया अर भाज्यका सताईस अर भाजक नव इहां नवकरि अपवर्तन कीएं सताईसकी जायगा तीया भया नवकी जायगा एका भया। ऐसैं करते ए भया $\frac{६४ \cdot ३ \cdot ५}{१ \cdot १७}$ इहां गुणन कीए भाज्य नौसै साठि भाजक सत्रह होइ $\frac{९६०}{१७}$ अथवा भाजकका तीन अर नवका अभाव होइ तहां ऐसा होइ $\frac{६४ \cdot ५ \cdot ३}{१ \cdot १७}$ तहां भी गुणन कीएं पूर्वोक्त भाज्य भाजक होइ $\frac{९६०}{१७}$ तहां पूर्वोक्त विधान करि लब्धराशिका छप्पन अर आठका सत्रह्वां भाग आवै है $५६ \frac{८}{१७}$ ऐसैं अनेक प्रकार अपवर्तन हो हैं सो यथा संभव जानना। वहुरि कहीं सुगमता होनेके अर्थि भाज्य भाजक राशि विषैं दोऊ जायगा समान प्रमाण करि गुणनादि कीजिए जैसैं पूर्वोक्त राशि ऐसा $\frac{६४ \cdot २७ \cdot ५ \cdot ३}{३ \cdot ९ \cdot १७}$ इहां भाज्यका पांचकों दोयकरि गुणि दश कीजिए। अर भाजकका तीयाकों दोय करि गुणि छह कीजिए। तव ऐसा होय $\frac{६४ \cdot २७ \cdot १० \cdot ३}{६ \cdot ९ \cdot १७}$ वहुरि भाजकका छह नवकों परस्पर गुणें चौवन होइ अर भाज्य सताईस इनका अपवर्तन कीए भाजक विषै छह नवकी जायगा दूवा भया अर भाज्य विषै सताईसका अभाव भया तव $\frac{६४ \cdot १० \cdot ३}{२ \cdot १७}$ ऐसा भया। वहुरि इहां चौंसठि भाज्य विषैं है ताकों भाजक विषैं दोय है ताकरि अपवर्तन कीएं भाज्य विषैं चौंसठिकी जायगा वत्तीस रह्या अर भाजक विषैं दोयका अभाव भया तव ऐसा भया $\frac{३२ \cdot १० \cdot ३}{१७}$ इनकों परस्पर गुणें नौसै साठिकों सत्रह भाग आया $\frac{९६०}{१७}$ ऐसैं ही अन्यत्र जहां जैसा विधान संभवै तहां तैसा जानना। इस शास्त्र विषैं अपवर्तनादिकका प्रयोजन आवैगा तातैं इनका स्वरूप दिखाया है। वहुरि समान रूप दोय प्रमाणनिका परस्पर गुणना ताका नाम वर्ग है। जैसैं प्रवृत्ति विषैं समान लंवाई चौडाईका मुकसर १ करिए है। वहुरि वड़ा एकानिकी पाटी सो वर्ग रूप है। जैसें पचीस पचीस छसैं पचीसां कह्या तहां पचीसका वर्ग छसै पचीस जानना। ऐसैं ही अन्यत्र जानना। ऐसैं समान दोय राशिनिका परस्पर गुणनेका नाम वर्ग है वा

करि है। बहुरि वर्ग कीए जो प्रमाण आवै ताकों वर्गित कहिए तहां एक राशि मांडि ताके आगैं दूसरा राशि लिखिए। जैसें चौसठिके वर्गकों ऐसैं लिखिए ६४।६४ अब याका विधान कहिए हैं—जो गुणाकार विषैं विधान कह्या सोई वर्ग करने विषैं विधान जानना जातैं दोय राशि समान लिख्या तिन विषैं एक राशि गुण्य अर एक राशि गुणकार स्थापि तहां गुणकार करि गुण्यकों गुणैं जो प्रमाण आवै सोई वर्गित राशिका प्रमाण जानना। जैसें चौंसठिकों चौसठि करि गुणें च्यारि हजार छिनवैं ४०९६ सोई चौंसठिका वर्ग जाननां। बहुरि इतना जाननां। वर्ग राशिके गुणकार वा भागहार वर्गरूप ही हो है जैसें च्यारि हाथ लंबा च्यारि हाथ चौडा क्षेत्र तहां च्यारिका वर्ग सोलह हाथ मुकसर क्षेत्र भया। अब याके अंगुल करने सो एक हाथके चौईस अंगुल हो हैं तातैं चौईस करि गुणना। सो वह सोलह प्रमाण वर्ग रूप है तातैं याका गुणाकार चौईस सो भी वर्गरूप ही जाननां। तातैं चौइसका वर्ग कीएं पांचसैं छिहत्तरि होइ ताकरि सोलहकों गुणैं। १६।५७६ तिस क्षेत्रका नव हजार दोयसैं सोलह अंगुल हो हैं। बहुरि जो इतने अंगुल प्रमाण क्षेत्रके हाथनिका प्रमाण करनां होइ तहां चौईसका वर्ग पांचसैं छहं-तरि ताका भाग दीएं ९२१६/५७६ लब्धराशि मात्र तिस क्षेत्रके सोलह हाथ हो हैं। ऐसैं ही अन्यत्र जाननां। बहुरि समानरूप तीन राशिनिका परस्पर गुणना ताका नाम घन है। जैसें प्रवृत्ति विषैं समान लंबाई चौडाई ऊंचाई विषैं मुकस्सर करिए। तहां च्यारिका घन ऐसा करिए तहां च्यारिकों तीन जायगा मांडि परस्पर गुणें चौंसठि होइ सो च्यारिका घन है। ऐसैं ही अन्यत्र जाननां। तहां तीनों राशि बरोबरि लिखिए। जैसें चौंसठिका घनकों ऐसैं ६४।६४।६४ लिखिए। अब याका विधान कहिए है। जो गुणकार विषैं विधान कह्या सोई घन करने विषैं विधान जाननां। जातैं तीन राशि समान लिख्या तिन विषैं एक राशि गुण्य अर दूसरा राशि गुणकार स्थापि तहां गुणकार करि गुण्यकों गुणिकरि बहुरि गुणें जो प्रमाण भया ताकों गुण्य स्थापनां अर तीसरा राशिकों गुणाकार स्थापनां तहां गुण्यकों गुणकार करि गुणें जो प्रमाण होइ सोई तहां घन राशिका प्रमाण जाननां। जैसें चौसठिका घन करनां तहां चौस-ठिकों चौंसठि करि गुणें च्यारि हजार छिनवैं होइ। बहुरि इनकों चौंसठि करि गुणें दोय लाख बासठि हजार एकसौ चवालीस होइ सोई चौसठिका घन जाननां २६२१४४ बहुरि इतना जानना। घन राशिके गुणाकार भागहार घनरूप ही होइ। जैसें च्यारि धनुप लंबा च्यारि धनुप चौड़ा च्यारि धनुप ऊंचा क्षेत्रका क्षेत्रफल कीया तब चौंसठि धनुप हूवा। याके हाथ-निका प्रमाण करनां तहां एक धनुपके च्यारि हाथ होइ तहां च्यारि करि गुणना। परंतु वह राशि घनरूप है तातैं याका गुणकार च्यारि सो भी घनरूप जाननां। सो च्यारिका घन कीएं चौंसठि होइ तिस करि ताकों गुणें ६४।६४। च्यारि हजार छिनवैं हाथ होइ। बहुरि च्यारि हजार छिनवैं हाथ प्रमाण घनक्षेत्रके धनुप करने तहां च्यारिका भाग देनां परंतु वह राशि घनरूप है तातैं वाके भागहार भी घनरूप होइ तातैं च्यारिका घन चौसठि करि ताकों भाग दीएं। ४०९६/६४ लब्ध राशि चौंसठि धनुप होइ। ऐसैंही अन्यत्र जाननां। बहुरि जो राशि जाका

वर्ग कीएं होइ तिसका सो वर्गमूल जाननां। जातैं दोयसै छप्पन हैं सो सोलहका वर्ग है। अब याका विधान कहिए हैं। जिस राशिका वर्गमूल करना होइ तिस, राशिके पहला अंक विषम दूजा सम तीजा विषम चौथा सम ऐसैं जे अंक होइं तिन उपरि विषम समकी ऊभी आडी लीककी सहनानी करनी जैसैं च्यारि हजार छिनवैंके अंकनिकी ऐसी ४०९६ सहनानी कीजिए। बहुरि तिन विषैं अंतका विषम अंक विषैं अथवा जो अंत विषम न होइ तौ अंतका सम अर उपांत विषम इन दोऊ अंकनि विषैं कृति छोडिए। कृति छोडना कहा? जिस अंकका वर्ग उस प्रमाणतैं बधता होइ तिस अंकका वर्ग करि उस प्रमाणमेंस्यों घटाय दीजिए। बहुरि जाका वर्ग कीया था तिस अंककों जुदा लिखिए बहुरि घटाइए पीछैं जे अंक रहे तिनके आगैं सम अंक होइ तिन करि जो प्रमाण भया ताकों जो अंक जुदा लिख्या था तातैं दूणा प्रमाणका भाग दीजिए जो लब्धि अंक होई ताकों तिस जुदा लिख्या अंकके आगैं लिखिए अर तिस अंक करि जाका भाग दीया था ताकों गुणें जो प्रमाण आया सो जाकों भाग दीया था तामें घटाय अवशेष तहां लिखिए। बहुरि अवशेष रहे अंक अर ताके आगैं विषम अंक होइ तिन विषैं जो वह लब्ध अंक आया था ताका वर्ग कीएं जो प्रमाण होइ सो घटाइ दीजिए अवशेष तहां लिखिए। बहुरि अवशेष रहे अंक अर तिनके आगैं सम अंकनितैं दूणा प्रमाणका भाग दीजिए। जो लब्ध अंक होइ ताकों जुदे लिखे अंकनिके आगैं लिखिए तिस अंक करि भागहारकों गुणें जो प्रमाण होइ सो भाज्यमें स्यों घटाय अवशेष तहां लिखनां। बहुरि अवशेष अंक सहित तिनके आगैं विषम अंक होइ ताविषैं लब्ध अंकका वर्ग घटावनां। बहुरि पूर्ववत् विधान यावत् राशि निःशेष न होय तावत् करना। ऐसैं करते जुदे लिखे अंकरूप वर्गमूलका प्रमाण जाननां। इहां उदाहरण। जैसैं च्यारि हजार छिनवैका वर्ग-मूल काढना होइ तहां ताके च्यारि अंकनिके उपरि विषम समकी ऐसैं ४०९६ सहनानी करि बहुरि इहां अंत अंक विषम नाहीं तातैं दोय अंक ग्रहे चालीस प्रमाण है। तहां सतादिकका वर्ग तौ बहुत होइ तातैं छहका वर्ग छत्तीस तामें घटाए च्यारि रहे सो च्यालीस एका जायगा लिख्या तब ऐसा ४९६ छका सूं जुदा लिख्या। बहुरि अवशेष अंक चौका अर ताके आगैं सम अंक नौवां इनकों ग्रहें गुणचास ताकों जुदा लिख्या अंक छका तिसतैं दूणा प्रमाण बारह ताका भाग दीएं च्यारि पाए सो छकाके आगैं लिखै ६४ अर च्यारि करि बारहकों गुणें अठतालीससों गुणचासमेंस्यों घटाएं एका रह्या सो तहां लिख्या तब ऐसा १६ भया। बहुरि अवशेष अंक एका रह्या आगैं छका तिन करि सोलह तामें पाया अंक चौका ताका वर्ग सोलह घटाए राशि निःशेष भया। जैसैं जुदे लिखें अंकनि करि च्यारि हजार छिनवैका वर्गमूल चौंसठि। बहुरि दूसरा उदाहरण। जैसैं पैंसठि हजार पांचसै छत्तीसका वर्गमूल करना तहां ऐसा ६५५३६ सहनानी करि इहां अंतका छका विषम है तातैं यामें दोयका वर्ग घटाएं दोय रहे। अर दूवा जुदा लिख्या बहुरि अवशेष सहित आगिला सम पचीस तामें जुदा अंकतैं दूणा च्यारिका भाग दीएं छह पावै परंतु आगैं विषम सहित अंकनि विषैं इस पाया अंक याका वर्ग

घटावनेका निर्वाह नाहीं तातैं पांच पाया ताकरि च्यारिकों गुणें वीस घटाए तहां पांच रहे। बहुरि पाया अंक पांचा तिस दूवाके आगें लिख्या । बहुरि इस पांचाका वर्ग पच्चीस ताकों तिस अवशेष सहित आगिला सम पचावन तामें घटाएं तहां तीस रहे। बहुरि जुदा लिख्या पच्चीसतैं दूणा पचास ताका भाग तिस अवशेष सहित आगिला सम तीनसै तीन ताकों दीए छह पाया तिस करि पचासकों गुणें तीनिसै भए सो घटाएं तहां तीन अवशेष रह्या। बहुरि पाया अंक छक्का सो जुदा तिस पांचके आगैं लिख्या बहुरि याका वर्ग छत्तीसकों तिस अवशेष सहित विषम छत्तीस विषैं घटाएं राशि निःशेष होइ । ऐसैं पूर्वोक्त प्रमाणका वर्गमूलके जुदे अंक लिखे तिन करि दोयसै छप्पन हो है। बहुरि जिस राशिका वर्गमूल कीएं वह राशि निःशेष होइ तहां अवशेष रहैं ताका अंक करि पूर्वोक्त विधान करिए । जैसें सत्रहका वर्गमूल करना तहां ऐसा लिखि १७ इहां अंत विषमके अभावतैं दोऊ अंकनि विषैं च्यारिका वर्ग सोलह घटाएं तहां एक रह्या अर च्यारि जुदा लिख्या । बहुरि तिस एककों जुदा लिख्या अंकतैं दूणा प्रमाण आठका भाग दीएं अष्टमांश पावै । परंतु आगैं इस पायाकी वर्ग छोडनेका निर्वाह नहीं तातैं किंचित् ऊन अष्टमांश अधिक च्यारि तिसका वर्गमूल जाननां । सामन्यपने किंचित् ऊनकों न गिनिए तौ अष्टमांस अधिक च्यारि हो हैं। तातैं सत्रहका वर्गमूल किंचित् ऊन जाननां। बहुरि इतना जाननां। जिस राशिका जो वर्गमूल होइ तिस राशिका सो तौ प्रथम वर्गमूल कहिए। अर प्रथम वर्गमूलका जो वर्गमूल होइ ताकों तिसही राशिका द्वितीय वर्गमूल कहिए ऐसैं द्वितीयादि वर्गमूलनिकों तृतीयादि वर्गमूल कहिए हैं। जैसैं पैंसठि हजार पांचसै छत्तीसका प्रथममूल दोयसै छप्पण द्वितीयमूल सोला तृतीयमूल च्यारि चतुर्थमूल दोय जाननां। ऐसैं वर्गमूल कह्या। बहुरि जो राशि जिसका घन कीएं होइ तिस राशिका सो घनमूल जाननां। प्रवृत्ति विषैं याकी प्रगटता थोरी है जैसैं चौंसठि च्यारिका घन कीएं होइ तातैं चौंसठिका घनमूल च्यारि है । अब याका विधान कहिए है। जिस राशिका घनमूल करना होइ तिसका प्रथम अंक घनस्थान दूजा तीजा अघनस्थान ऐसैं एक घनस्थान दोय अघनस्थान तिनकी सहनानी ऊभी आडी लीक अंकनिके ऊपरि करनी । जैसैं एक कोडि सडसठि लाख सततरि हजार दोयसै सोलाका घनमूल काढना होइ तहां पहलें ऐसैं सहनानी करनी १६७७७२१६ बहुरि अंतका घन अंक विषैं वा अंतका घन अंक न होइ तौ अंत अर उपांत दोय अंकनि विषैं उपांत भी घन अंक न होइ तो अंतादिक तीन अंकनि विषैं जाका घन कीए उन अंकरूप प्रमाणतैं वधता प्रमाण न होय तिस अंककों घनका जो प्रमाण सो घटाईए अवशेष तहां लिखिए । अर तिस अंककों जुदा लिखिए। बहुरि तिस अवशेष सहित अगला अघन अंकरूप प्रमाणकों जुदा स्थाप्या अंकका वर्ग करि तिससें तिगुणे प्रमाणका भाग देनां जो लब्ध अंक होइ ताकों तिस जुदा स्थाप्या अंकके आगैं लिखनां अर इस अंकतैं गुण्य हूवा भागहारकों भाज्य विषैं घटाइ अवशेष तहां लिखनां। बहुरि इस अवशेष सहित अगला अघन अंकरूप प्रमाण विषैं तिस लब्ध अंकका वर्ग करि ताकों पूर्व पंक्ति विषैं लिखे अंकनि करि गुणि ताकों तिगुणा कीएं जो प्रमाण आवै

सो घटाइ अवशेष तहां लिखनां । बहुरि इस अवशेष सहित अगला अघन अंकरूप प्रमाण विषैं तिस लब्ध अंकका वर्ग करि ताकों पूर्व पंक्ति विषैं लिखे । लिखे अंकनि करि गुणि ताकों तिगुणा कीएं जो प्रमाण आवै सो घटाइ अवशेष तहां लिखनां । बहुरि इस अवशेष सहित अगला घन अंकरूप प्रमाण विषैं तिस ही लब्ध अंकका घन कीएं जो प्रमाण होइ सो घटाय अवशेष लिखनां । बहुरि इस अवशेष सहित अगिला अघन अंकरूप प्रमाणकों जे जुदे पंक्ति विषै अंक लिखे थे तिनका वर्गकों तिगुणा करैं जो प्रमाण होइ ताका भाग देनां । तहां जैसैं पूर्ववत् घटावनेका निर्वाह होइ तैसैं संभवता लब्ध अंक पूर्वैं जुदे लिखे अंकनिके आगैं लिखनां । अर इस अंक करि भागहारकों गुणें भाज्यमें घटाय अवशेष लिखनां । बहुरि पूर्ववत् घटावनेका विधान करनां । ऐसैं यावत् राशि निःशेष होइ तावत् करनां । तहां जो जुदे पंक्ति विषैं अंक लिखे तिस प्रमाणरूप घनमूल जाननां । इहां उदाहरण । जैसैं पूर्वोक्त राशि ऐसा १६७७७२१६ इहां उपांत अंक घन हैं तातैं दोय अंकरूप प्रमाण सोलह विषैं तीन आदिकका घन तौ बहुत होइ तातैं दोयका घन आठ घटाए तहां अवशेष आठ लिखे अर मूल अंक दूवा जुदा लिखा बहुरि अवशेष सहित अगला अघन सित्यासी ८७ ताकों जुदा स्थाप्या । दूवांका वर्ग च्यारि ताकों तिगुणा कीएं बारह ताका भाग दीए सात पावै परंतु आगैं घटावनेके विधानका निर्वाह नाहीं तातैं पांच पाए सो जुदा लिख्या दूवाके आगैं लिख्या । या करि बारहको गुणें साठि भए तहां अवशेष सत्ताईस रहे इस सहित अगिला अघन दोयसै सतहत्तरि २७७ तामें पाया अंक पांच ताका वर्ग पचीस ताकों पूर्व अंक दूवातैं गुणें पचास ताकरि तिगुणां ड्योढसैं घटाए तहां अवशेष एकसौ सत्ताईस रहे इस सहित अगिला घन बारहसै सतहत्तरि १२७७ तामें पाया अंक पांचका घन एकसो पचीस घटाएं अवशेष ग्यारहसै बावन रहे । इस सहित अगिला घन बारहसै सतहत्तरि १२७७ ग्यारह हजार पांचसै बाईस ११५२२ याकों जुदा पंक्ति विषैं अंकरूप प्रमाण पचीस ताका वर्ग छसै पचीस ताकों तिगुणा कीएं अठारहसै पिचहत्तरि ताका भाग दीए जैसैं अगिला विधान निर्वाह होइ तैसैं छह पाए याकरि भागहारकों गुणें ग्यारह दोयसै पचास सो भाज्य विषैं घटाए तहां दोयसै बहत्तरि अवशेष रहे । बहुरि तिस सहित अगिला अघन दोय हजार सातसै इकईस २७२१ यामें पाया अंक छका ताका वर्ग छत्तीस ताकों पूर्व अंक पचीसतैं गुणें नवसै ताका तिगुणां दोय हजार सातसै घटाएं अवशेष इकईस रहे । बहुरि इस सहित अगिला घन दोयसै सोलह २१६ तामें पाया अंक छहका घन दोयसै सोलह घटाएं राशि निःशेष होइ । ऐसैं जुदी पंक्ति विषैं लिखे अंकनिका प्रमाणरूप दोयसै छप्पन हूवा सोई एक कोडि सतसठि लाख सतहत्तरि हजार दोयसै सोलहका घनमूल जाननां । ऐसैं ही अन्यत्र जाननां । बहुरि घनमूल कीए जहां राशि निःशेष न होय तहां अवशेषके अंश करि तहां पूर्वोक्त विधान करना । जैसैं नवका घनमूल दोय आवै एक अवशेष रहै । ताकों दूवाका वर्ग तिगुणां भाग दीएं । एकका बारहवां भाग आवै परंतु अगले विधानका निर्वाह नाहीं तातैं तहां किंचित् ऊन जाननां ऐसैं नवका घनमूल

किंचित् ऊन एकका बारह्वां भाग अधिक दोय जाननां । ऐसैं परिकर्माष्टकका वर्णन कीया। अब भिन्न परिकर्माष्टक कहिए है। अंशहाररूप गणनाका नाम भिन्न गणित है। तहां जेते अंश होइ तिनका नाम अंश कहिए वा लव कहिए अर जेथवां अंश होइ तिनका नाम हार कहिए वा हर कहिए वा छेद कहिए। जैसैं पांच छठा भाग कह्या तहां पांचका नाम अंश है वा लव है। अर छहका नाम हार है वा हर है वा छेद है। इहां पांचका छह भाग विषैं एक भागका नाम पांच छठा भाग जाननां। अथवा एकका छह भाग करिए तामें पांच भाग होइ ताका नाम पांच छठा भाग जाननां दोऊनिका अर्थ एक है। बहुरि अंशकौं उपरि लिखि ताके नीचैं हार लिखिए जैसे पांच छठा भागकौं ऐसैं लिखिए $\frac{५}{६}$ अत्र इनका संकलनादि करनेका विधान कहिए हैं। तहां भिन्न संकलन व्यवकलनके विधान विषैं भागजाति प्रभागजाति भागानुबंध भागापवाह ऐसैं च्यारि प्रकार हैं। तिन विषैं इहां विशेष प्रयोजनभूत जानि समछेद विधान करि संकलन व्यवकलन कहिए हैं। अनेक राशिनिके जैसैं छेद समान होइ तैसैं विधान करनां सो समछेद विधान जाननां। तहां अनेक राशिनके जुदे जुदे अंश हार लिखि तिन विषैं एक एक राशिके अंश हारनिकौं अन्य राशिनके हारनिकरि गुणिए। तहां छेदनिका परस्पर गुणन होनेतैं सवनिके छेद समान होइ। बहुरि जो संकलन करनां होइतौ एक राशिके अंशनि विषैं अन्य राशिके अंशनिकौं जोड दीजिए। अर व्यवकलन करना होइ तौ महत राशिके अंशनि विषैं अन्य राशिनिके अंश घटाइ दीजिए। इहां उदाहरण। जैसैं पंद्रह आठवां भाग अर च्यारि तीसरा भाग दोय छठा भाग इनका संकलन करनां $\frac{१५}{८}+\frac{४}{३}+\frac{२}{६}$ तहां पंद्रहकौं अन्य राशिके हार तीन अर छह तिन करि गुणि दोयसै सत्तरि होय अर च्यारिकौं अन्य राशिनिके हार आठ छह तिनि करि गुणें एक सौ बाणवै होइ अर दोयकौं अन्य राशिनिके हार आठ तीन तिन करि गुणें अठतालीस होइ। बहुरि आठ तीन छह हारनिकौं परस्पर गुणें सर्वत्र एकसौ चवालीस भया। ऐसैं समान छेद लीएं तीनौं राशि ऐसैं $\frac{२७०}{१४४}+\frac{१९२}{१४४}+\frac{४८}{१४४}$ बहुरि तीनौं राशिके अंश जोडैं पांचसै दश होइ। अर छेद समान है तातैं पांचसै दशकौं एकसौ चवालीसका भाग दीजिए इतना जोड तिन तीनौं राशिका हो है सो तीन अर अठहत्तरि एकसौ चवालीसवां भाग इतना प्रमाण आया। इहां छह करि अपवर्तन कीए अठहत्तरिकी जायगा तेरह भया अर एकसो चवालीसकी जायगा चौईस भया. ऐसैं तीन अर तेरह चौईसवां भाग $३\frac{१३}{२४}$ इतना तिनका जोड आया। बहुरि जैसैं पंद्रह आठवां भाग विषैं च्यारि तीसरा भाग दोय छठा भाग घटावना होय तहां पूर्ववत् समछेद करि, महतराशी $\frac{२७०}{१४४}|\frac{१९२}{१४४}|\frac{४८}{१४४}$ के दोयसै सत्तरि अंशनि विषैं एकसौ बाणवै अर अठतालीस घटाए तीस रहे। अर भाग हार एकसौ चवालीसका है ही $\frac{३०}{१४४}$ तहां छहकरि अपवर्तन कीएं पांच चौईसवां भाग प्रमाण अवशेष रह्या $\frac{५}{२४}$ ऐसैं ही अन्यत्र जानना। बहुरि कहीं अन्य प्रकार भी समान छेद होइ तौ अन्य प्रकार समछेद करिलेंने। जैसैं च्यारि तीसरा भाग विषैं दोय छठा भाग जोडना होइ $\frac{४}{३}\frac{२}{६}$ तहां तीन हारनिकौं दूणा कीए छह हार होय तब दोऊनिके समान छेद होइ। तातैं तीन हारनिकौं अर याके च्यारि अंशनिकौं

दूणा करि तहां आठ छठा भाग मिल्या $\frac{8}{6}|\frac{2}{6}$ यां विषैं दोय छठा भाग मिल्याए दश छठा भाग तिनका जोड भया। याका दोय करि अपवर्तन कीएं पांच तीसरा भाग प्रमाण हो हैं। अथवा छह हारनिकों आधा कीएं तीन हार होइ तब समान छेद होइ तातैं छह हारनिकों अर याके दोय अंशनिकों आधा करि तहां एकका तीसरा भाग लिख्या $\frac{1}{3}|\frac{4}{3}$ याकों च्यारि तीसरा भाग विषैं मिलाएं पांच तीसरा भाग मात्र प्रमाण आया। बहुरि हजार चवालीसवां भाग विषैं दोयसै बाईसवां भाग पच्चीस ग्यारहवां भाग घटावना होय $\frac{1000}{44}|\frac{200}{22}|\frac{25}{11}$ तहां बाईसकों दूणा कीए ग्यारह, ग्यारहकों चौगुणा कीएं समान छेद होइ। तातैं दोयसै अंश अर बाईस हार इनके दूणे कीए च्यारिसै चवालीस भाग भए अर पच्चीस अंश ग्यारह हार इनकों चौगुणे करिए सब चवालीस भाग भए $\frac{1000}{44}|\frac{400}{44}|\frac{100}{44}$ बहुरि च्यारिसै अर सब जोडें पांचसै भए सो हजारमें घटाएं अवशेष राशि पांचसै चवालीसवां भाग हो है। ऐसैं ही अन्यत्र जाननां। इहां इतनां जाननां। अंश अर हार इन दोऊनिकों समान प्रमाण करि गुणें समानका भाग दीएं जेतेका तेताही प्रमाण रहै है। जैसैं जो पंद्रह आठवां भागका प्रमाण सोई दोयसै सत्तरि एकसौ चवालीसवां भागका प्रमाण है। दोऊ जायगा अष्टमांश करि हीन दोय प्रमाण हैं। इहां अंश अर हारनि विषैं दोऊनि विषैं अठारहका गुणाकार वा भागहार है। बहुरि समान छेद करनेका प्रयोजन यहु है सो समान छेद भए पीछैं समानरूप अंश होइ जाय तहां पीछैं अंशनिकों अंशनि विषैं मिलावना होइ तौ जोड दीजे। घटावना होइ तौ घटा दीजे। बहुरि जहां कोई राशिकैं हार न होय तहां हारका प्रमाण एक कल्पना। जातैं ऐसा कह्या है 'कल्पो हरो रूपमहारराशेः' जैसैं दश अर पांच तृतीय भागका समछेद करनां होइ तहां दशके नीचैं एकका हार लिखना $\frac{10}{1}|\frac{5}{3}$ बहुरि पूर्वोक्त विधान कीएं तिनका जोड पैंतीस तृतीय भाग आया। अर दश विषैं पांच तृतीय भाग घटाएं अवशेष पच्चीस तृतीय भाग प्रमाण आवै है। बहुरि जहां ऐसी राशि गुणकारादि विधान विषैं होइ तहां पहलें ऐसैं विधान करि पीछैं गुणनादि करनां। जैसैं गुणकारादि विषैं कोई राशि एकका सोलह्वां भाग अधिक पंद्रह प्रमाण होइ तहां समछेद विधानतैं पंद्रह विषैं एकका सोलहवां भाग जोडें दोयसै इकतालीसका सोलह्वां भाग हो हैं सो तहां स्थापि गुणनादि करनां। बहुरि भिन्न गुणकार विषैं गुण्य गुणकारकों अंशनिका अंशनि कारि अर हारनिका हारनि कारि गुणन करनां। जैसैं पंद्रह आठवां भागका पांच तृतीय भाग कारि गुणनां होइ $\frac{15}{8}\times\frac{5}{3}$ तहां पंद्रह अंशनिकों पांच अंश कारि गुणें पिचहत्तरि अंश होइ अर आठ हारकों तीन हार करि गुणें चौईस हार होइ ऐसैं तिनका गुणन कीएं पिचहत्तरि चौईसवां भाग आया। बहुरि एक हजारकों दोय तृतीय भाग तीन दशवां भाग कारि गुणनां होइ तहां एक हजारकैं भाग हार नाहीं हैं तातैं तहां एक भागहार कल्पि $\frac{1000}{1}|\frac{2}{3}|\frac{3}{10}$ तहां अंशनिकों अंशनिकारि हारनिकों हारनि कारि परस्पर गुणन कीए छह हजारका तीसवां भाग आया दोयसै है। बहुरि एकका तृतीय भागकों एकका अष्ट भाग कारि गुणना होइ तहां पूर्वोक्त विधानतैं एकका चौईसवां भाग प्रमाण आवै है। इहां इतनां जाननां एकतैं हीन कारि गुणन कीएं गुण्य राशिका प्रमाणतैं घटता प्रमाण

आवै है। बहुरि जैसैं एकका चौथा भाग अधिक वीसकों पांच करि गुणनां होइ तहां समछेद विधानतैं वीस विषैं एकका चौथा भाग जोडें इक्यासीका चौथा भाग भया अर पांचके भाग हार नाहीं है। तहां एक भाग हार कल्पि पूर्ववत् गुणन कीएं च्यारिसै पांचका चौथा भाग प्रमाण हो हैं। ऐसैं ही अन्यत्र जाननां। बहुरि भिन्न भाग हार विषैं भाज्यके अंश हार होंइ तिनकों तौ तैसैं ही रखिए अर भाजकके अंश हार होंहि तिनकों पलटि दीजिए। अंशनिकों हार कीजिए अर हारनिकों अंश कीजिए। ऐसैं स्थापि अंशनिकों अंशनि करि अर हारनिकों हारनि करि गुणिए यों करते जो प्रमाण आवै सो लब्ध राशि जाननां। जैसैं पिचहत्तरि चौईसवां भागकों पांच तृतीय भागका भाग देना ७५/२४ । ५/३ तहां भाजकके पांच अंशनिकों हार कीजिए अर तीन हारनिकों अंश कीजिए ७५/२४ । ३/५ बहुरि अंशनिकों अंशनि करि अर हारनिकों हारनि करि गुणन कीजिए तब दोयसै पचीसकों एक सौ वीसका भाग आया। तहां पंद्रह करि अपवर्तन कीएं पंद्रह आठवां भाग प्रमाण लब्धराशि आवै है। बहुरि दोयसैकों दोय तिहाई अर तीन दशव भागका भाग देनां २०० । २/३ । ३/१० तहां पूर्ववत् दोऊ भाजकनिके अंशहारानिकों पलटनां अर दोय सैके हार हैं नाहीं तातैं तहां एक हार कल्पनां २००/१ । ३/२ । १०/३ ऐसैं स्थापि अंशनिका अंशनि करि हारनिका हारनि करि गुणन कीए छए हजारका छठा भाग आया सो एक हजार लब्धि राशि जाननां। बहुरि जैसैं एकका चौईसवां भागकों एकका आठवां भागका देनां १/२४ । १/८ तहां पूर्ववत् भाजकके अंशहार पलटि १/२४ । ८/१ गुणन कीएं आठका चौईसवां भाग हो है। बहुरि इहां आठ करि अपवर्तन कीएं एकका तृतीय भाग मात्र लब्धराशि हो है। इहां इतनां जाननां एकतैं घाटिका भाग दीएं भाज्य राशितैं लब्धराशिका प्रमाण वहुत आवै है। बहुरि जैसैं दोयसैकों सात सोलह्वां भाग अधिक सोलहका भाग देनां होइ तहां दोयसैके नीचैं भागहार नाहीं तातैं तहां एक भागहार कल्पना अर सात सोलह्वां भागकों सोलह विषैं समछेद विधानतैं जोड़ें दोयसै तरैसठिका सोलह्वां भाग भया सो लिखनां २००/१ । २६३/१६ बहुरि भाजकके अंशहार पलटि पूर्ववत् गुणन कीएं बत्तीससेंकों दोयसै तरेसठिका भाग आया सो लब्धराशि जाननां। ऐसैं ही अन्यत्र जाननां। बहुरि भिन्नवर्ग विषैं जेतेका वर्ग करनां होइ ताका अंश अर हार दोऊ दोय जायगा मांडि गुणकारवत् अंशनिकों अंशनिकरि हारनिकों हारनि करि गुणन करनां जैसैं पचीस छठा भागका वर्ग करना तहां तिस प्रमाण दोय राशि मांडि २५/६ । २५/६ अंशनिकों अंशनिकरि हारनिकों हारनि करि गुणन कीएं छसै पचीसका छत्तीसवां भाग भया ताका तेरह छत्तीसवां भाग अधिक सतरह प्रमाण वर्ग भया १७ । १३/३६ बहुरि एकका आठवां भागका वर्ग करना १/८ । १/८ तहां पूर्ववत् विधान कीएं ताका वर्ग एकका चौसठिवां भाग हो है। बहुरि दोयका आठवां भाग अधिक तीनका वर्ग करनां तहां समछेद करि तिनकों जोड़ें छतीसका आठवां भाग भया ताका पूर्ववत् विधान कीएं छसै छिंहतरिका चौसठिवां भाग भया ऐसैं ही अन्यत्र जाननां। बहुरि भिन्न घनविषैं जेतेका घन करना होइ ताका अंश अर हार दोऊ तीन जायगा स्थापि गुणकारवत् अंशनिकों अंशनिकरि हारनिकों हारनि करि गुणन करनां। जैसैं पचीसका चौथाईका घन करनां होइ त

तीह प्रमाण तीन राशि स्थापि २५/४।२५/४।२५/४ अंशानिकों अंशानिकरि हारनिकों हारनिकरि गुणें पंद्रह हजार छसै पच्चीसका चौसठिवां भाग प्रमाण घनराशि हो है। १५६२५/६४ बहुरि एकका आठवां भागका घन कीएं १/८।१/८।१/८ पूर्ववत् विधानतैं एकका पांचसै बारव्हां भागमात्र १/५१२ घनराशि हो हैं। बहुरि चतुर्थ भाग अधिक दोयका घन करनां। तहां समच्छेद करि जोडें नवका चतुर्थ भाग भया ताका पूर्ववत् घन कीएं ९/४।९/४।९/४ सातसै गुणतीसका चौसठिवां भाग मात्र ताका घन भया। ऐसैं ही अन्यत्र जाननां। बहुरि भिन्न वर्गमूल विषैं जाका वर्गमूल करना होइ ताके अंशनिका वर्गमूल काढें जो प्रमाण आवै सो तौ ताके वर्ग मूलविषैं अंश जाननां। अर हारनिका वर्गमूल काढें जो प्रमाण आवै सो तहां हार जाननां। इहां भी वर्गमूल काढनेविषै विषम समकी सहनानी करि अंत विषम विषैं वर्ग घटावनां इत्यादि पूर्वैं विधान कह्या सोई जाननां। जैसें छसै पच्चीसका छतीसवां भागका ६२५/३६ वर्गमूल करना तहां पूर्ववत् विधान कीएं छसै पच्चीस अंशनिका वर्गमूल पचीस सो तौ अंश अर छतीसका वर्गमूल छह सो हार ऐसैं ताका वर्गमूल पच्चीस छठा भाग मात्र २५/६ आवै है। बहुरि जहां राशि निःशेप न होय तहां अवशेपके अंश करने जैसैं दोयसैका छठा भागका वर्गमूल करना होइ तो पूर्वोक्त विधानतैं दोयसैका वर्गमूल चौदह अर किंचिदून च्यारिका अठाईसवां भागमात्र आवै है। तहां अपवर्तन कीएं एकका सातवां भाग मात्र भया १४।१/७ इहां समच्छेद करि जोडें किंचिदून निन्याणवैका सातवां भाग मात्र आया सो ९९/७ तौ अंश जाननां अर छहका वर्गमूल किंचिदून दोय अर दोयका चौथा भाग आवै है। इहां भी अपवर्तन करि अर समछेदतैं जोडें पांचका दोय भाग मात्र आवै है सो हार जाननां ५/२ अर इहां निन्याणवैका पांच अर सात दोऊ हार भए तातैं तिनकों परस्पर गुणें पैंतीस तौ हार हूवा अर भागहारका भागहार राशिका गुणकार होइ इस न्याय करि निन्याणवैकों दोय करि गुणें एक सौ अठयाणवै अंश हूवा। ऐसैं तिस रशिका वर्गमूल किंचित ऊन एकसो अठ्याणवैका पैंतीसवां भागमात्र हो है। १९८/३५ ऐसैं ही अन्यत्र जाननां। बहुरि भिन्न घनमूल विषैं जाका घनमूल काढना होइ ताके अंशनिका घनमूल कीए जो प्रमाण आवै सो तो ताके घनमूलके अंश अर हारनिका घनमूल कीए जो प्रमाण आवै सो तहां हार जाननें। इहां भी घनमूल काढनेका विधान पूर्वैं जैसैं घन अघनकी सहनानी करि अंत घनस्थानतैं घन घटावनां आदि विधान कह्या था सोई जाननां। इहां उदाहरण—जैसें च्यारि हजार छिनवैंका सताईसवां भागका घनमूल काढना होइ ४०९६/२७ तहां पूर्वोक्त विधानतैं च्यारि हजार छिनवै अंशनिका घनमूल काढें सोलह आए सो तो अंश अर सत्ताईसका घनमूल काढें तीन हार भए ऐसैं ताका घनमूल सोलहका तृतीय भागमात्र आया १६/३ बहुरि जहां राशि निःशेप न होइ तहां अवशेष विषैं अंश कल्पनां जैसैं वर्गमूल विषैं कही थी तैसैं इहां यथा संभव करनां। या प्रकार भिन्न परि कर्माष्टक जानंना॥ अब शून्य परिकर्माष्टक कहिए हैं। इहां बिंदीका संकलनादि जाननां तहां संकलन विषैं अंक अर बिंदीका जोड दीएं अंक ही रहै कछू वधै नाहीं। जैसैं पचावन विषैं दश जोड़े एकस्थानीय पांचा विषैं बिंदी जोडें पांच ही रह्या अर दशस्थानीय पांचा अर एका जोड़ें छह भया ऐसैं पैसठि हो हैं। अर बिंदी विषैं बिंदी जोडें बिंदी ही रहै

जैसैं दश विषै वीस जोडिए तहां एकस्थानीय विंदीविषैं विंदी जोडें विंदी होइ । अर दशस्थानीय एक अर दोय जोडें तीन होइ ऐसैं तिनका जोड तीस हो है । बहुरि व्यवकलन विषैं अंक विषैं विंदी घटाएं अंक ही रहै । कछु घटै नाहीं जैसैं पैंसठि विषैं दश घटाएं एकस्थानीय पांचा विषैं विंदी घटैं पांच ही रह्या अर दशस्थानीय छका विषैं एक घटैं पांचा भया ऐसैं अवशेष पचावन रहैं हैं । बहुरि विंदी विषैं विंदी घटाएं विंदी रहै है । जैसें तीस विषैं दश घटाएं एकस्थानीय विंदी विषैं विंदी घटाएं विंदी रहै । अर दशस्थानीय तीन विषैं एक घटाएं दूवा रह्या अवशेष बीस रहैं हैं । बहुरि गुणाकार विषैं विंदीकौं अंक करि वा अंककौं विंदी करि गुणें विंदी ही हो है । जैसैं पचासकौं पांचकरि गुणना ५०।५। तहां गुण्यका अंत अंक पांचताकौं गुणाकार पांच करि गुणें पचीस भया अर ताके आगैं विंदीकौं पांचकरि गुणें विंदी भई ऐसैं दोयसै पचास भया । अथवा जैसैं पांचकौं वीस करि गुणना ५ २० तहां दूवा करि पांचकौं गुणें दश भया अर आगैं विंदी करि पांचकौं गुणें विंदी भई ऐसैं एक सौ हूवा । बहुरि विंदीकौं विंदीकरि गुणें विंदी ही होइ । जैसैं वीसकौं तीस करि गुण्या तहां दूवाकौं तीस करि गुणें साठि हूवा । अर विंदीकौं गुणें विंदी भई सो आगैं लिखी ऐसैं छहसै भया । बहुरि गुण्यराशि अर गुणकार राशिनिके आगैं विंदी होइ तौ तिन सर्व विंदीनकौं मिलाय करि आगैं लिखिए अर जे अवशेष गुण्य गुणकारनिके अंक रहैं तिनकौं परस्पर गुणें जो प्रमाण आवै ताकौं तिन विंदीनिके पीछैं लिखिए। ऐसैं गुणित राशि आवैं हैं । जैसैं वीस अर पांचसै इनका गुणंन करनां २०×५०० तहां दोऊ राशिकी एक दोय विंदी मिलाएं तीन विंदी भई सो आगैं लिखी । अर दूवा पांचकौं परस्पर गुणें दशभया सो तिनके पीछैं लिख्या ऐसैं गुणित राशि दश हजार प्रमाण आया । बहुरि जैसैं आठ अर दोयसै अर पंद्रह लाख परस्पर गुणन करना ८×२००×१५००००० तहां इनकी विंदी मिलाए सात विंदी भई सो आगैं लिखीं अर अंकनिकौं परस्पर गुणें दोयसै चालीस हूवा सो पीछैं लिख्या । ऐसैं दोयसै चालीस कोडि प्रमाण गुणित राशि हो है । ऐसैं ही अन्यत्र जाननां। बहुरि भागहारविषैं विंदीकौं अंकका भाग दीएं विंदी ही होइ । जैसैं पचासकौं पांचका भाग दीया ५०/५ तहां भाज्य राशिका पांचकौं पांचका भाग दीएं एका पाया सो लिख्या बहुरि ताके आगैं विंदीकौं पांचका भाग दीएं विंदी होइ सो लिखी ऐसैं लब्ध राशि दश आवै है । बहुरि अंककौं केवल विंदीका भाग दीएं अवक्तव्य प्रमाण है । जातैं एकतैं घटता प्रमाणका भाग दीएं लब्धराशि भाज्य राशितैं वधता होइ सो एकका लाखवां भागका भाग दीएं लब्धराशि भाज्य राशितैं लाख गुणा होइ । एककौं कोडिवां भागका भाग दीएं कोडि गुणा होइ । ऐसैं भाग हार घटतैं लब्धराशि वधता होता जाय । जहां विंदीका भाग दीया तहां भागहार अवक्तव्यपनें घटता भया तहां लब्धराशिका प्रमाण अवक्तव्य हो हैं । याकौं खहर कहिए । ख कहिए विंदी सो है हर कहिए भागहार जाका ऐसा यहु राशितैं इतना कहिए । बहुरि विंदीकौं विंदीका भाग दीएं विंदी ही आवै है ताका उदाहरण आगैं वर्गमूल घनमूलके कथनविषैं लिख्या है सो जाननां बहुरि जहां भाज्य वा भागहार राशिके आगैं विंदी होय तहां जेती विंदी भागहारके आगैं होय

तितनी विंदीनका अपवर्तन करनां । जैसैं बारह हजारकों आठसैका भाग होइ १२०००/८०० तहां दोय विंदीनिका अपवर्तन कीएं एकसौ वीसकौं आठका भाग रह्या तहां लब्ध राशि पंद्रह आवै है ऐसैं ही अन्यत्र जाननां । वहुरि वर्ग अर घनविषैं गुणकारवत् विधान जाननां । जातैं दोय जायगा समान राशि मांडि परस्पर गुणन कीएं वर्ग हो है । तीन जायगा राशि मांडि परस्पर गुणन किएं घन होइ है । जैसैं दोयसै एकका वर्ग चालीस हजार च्यारसै एक हो है, वहुरि एकसौ एकका घन दशलाख तीस हजार तीनसै एक हो है । वहुरि जिस राशिके आगें विंदी होय तिस राशिका वर्ग करना होय तौ अंकनिका वर्ग करि आगैं जेती विंदीं थीं तिनतैं तिगुना विंदी लिख देंनीं । जैसैं दोयसैका वर्ग करना होय तहां दोयका वर्ग च्यारि लिखि आगैं दोयतैं दूणी च्यारि विंदी लिखनी अर तिनका घन करना होय तौ दोयका घन आठ लिखि आगें दोयतैं तिगुनी छह विंदी लिखनी । ऐसैं ही अन्यत्र जाननां । वहुरि वर्गमूल अर घनमूल विषैं पूर्वैं जैसैं सहनानी करि वर्गमूल घनमूल काढनेका विधान कह्या था सोई जाननां । इहां जहां विंदीकों अंकका भाग आवै तहां विंदी लिखि दैनी । जैसैं चालीस हजार च्यारिसै एकका वर्गमूल काढना होइ तह ४०४०१ अंतविषम चौकाका मूल दोय लिख्या ताके आगैं सम विंदी ताकौं पाया अंक दोय ताकौं दूणा करि चौकाका भाग दीएं विंदी पाई वहुरि इस विंदीका वर्ग विंदी ताकों च्यारिमें घटाएं कछु न घट्या वहुरि अवशेष चौका सहित अगिला सम चालीस ताकौं जुदी पंक्ति विषैं वीस थे तिनतैं दूणें, चालीसका भाग दीएं एका पाया वहुरि अवशेष एका रह्या तिस विषैं एकका वर्ग एक घटाएं राशि निःशेष भया । ऐसैं ताका वर्गमूल दोयसै एक हो है । वहुरि जैसैं दसलाख तीस हजार तीनसै एकका घनमूल काढना १०३०३०१ तहां अंतघन एकका घनमूल एका लिखि एका दूरि कीया आगें घनविंदी ताकौं पाया अंक एकाका वर्गतैं तिगुणा तीन ताका भाग दीएं विंदी पाई सो तिस एकाके आगैं लिखी वहुरि ताके आगैं अघन ही तींया ताविषैं पाई जो विंदी ताकों पूर्वैं एका था ताकरि गुणें विंदी भई ताकों तिगुणा किएं भी विंदी रही ताकों घटाएं भी तहां तीन ही रह्या । वहुरि इस अवशेष सहित आगैं घन तीस ताविषैं पाई विंदी ताका घन भी विंदी सो घटाएं तीस ही रह्या । वहुरि इस सहित अगिला अघन तीनसै तीन ताकों जुदी पंक्ति विषैं दश थे तिनका वर्ग करि तिगुणा कीएं तीनसै हूवा ताका भाग दीएं एका आया सो दशके आगैं लिख्या । अवशेष तहां तीन रह्या । वहुरि इस अवशेष सहित अगिला अघन तीस तामैं पाया अंक एकाकों पूर्व पंक्ति विषैं तिष्टते दश करि गुणि तिगुणा कीएं तीस होय सो घटाएं तहां किछू न रह्या । वहुरि ताके आगैं घन एक ताविषैं पाया अंक एकका घन एक घटाएं राशि निःशेष भया । ऐसैं ताका घनमूल एकसो एक आवै है । वहुरि जिस राशिका वर्गमूल वा घनमूल कीएं राशिके अंक तौ निःशेष होय जायं और विंदी ही रहि जाय तौ तहां वर्गमूल विषैं तौ जेती विंदी अवशेष रहैं तातैं आधी विंदी जुदी पंक्तिनिके आगैं लिखनी अर घनमूल विषैं तिहाई विंदी लिखनी । इहां उदाहरण । जैसैं—चालीस हजारका वर्गमूल काढना होइ तहां वर्गमूल काढें दोय पाया । अर च्यारि निःशेष हूवा । तहां आगैं च्यारि विंदी थीं ताकी आधी दोय विंद

दूवा आगैं लिखनीं । ऐसैं दोयसै वर्गमूल आया । वहुरि सत्ताईस हजारका घनमूल काढनां होइ तहां घनमूल काढें तीया- पाया अर सत्ताईस निःशेप हूवा । आगैं तीन विंदी थीं ताकी तिहाई एक विंदी तीयाके आगैं लिखनी ऐसैं घनमूल तीस आया सो पूर्व विधानतें भी ऐसैं ही सिद्ध हो है । परंतु सुगमताके अर्थि एक यहु भी विधान कह्या है। ऐसैं ही अन्यत्र जाननां । या प्रकार सून्य परिकर्माष्टक कह्यौ ॥

वहुरि अज्ञात राशि आदि जाननेके अनेक विधान गणित ग्रंथ विषैं हैं सो इहां विशेप प्रयोजन न जानि न कह्या । वहुरि त्रैराशिकका स्वरूप इस शास्त्र विषैं प्रयोजन भूत जानि कहिए हैं । तहां प्रमाण फल इच्छा ए तीन राशि जाननैं । जिस प्रमाण करि जो फल निपजैं सो तौ प्रमाण राशि अर फल राशि हैं । वहुरि जितनी अपनी इच्छा होइ ताका नाम इच्छा राशि है। इहां प्रमाण राशि इच्छा राशिकी तौ एक जाति है । अर फल राशिकी अन्य जाति है । सो ऐसैं ए तीन राशि स्थापि तिन विषैं फल राशिकौं इच्छाराशि करि गुणिए वहुरि ताकौं प्रमाण राशिका भाग दीजिए जो प्रमाण आवै सो इहां लब्ध प्रमाण जाननां । फल राशिकी अर इस लब्ध राशिकी एक जाति जाननी । इहां उदाहरण । जैसैं च्यारि हाथके छिनवै अंगुल होयं तौ दश हाथके केते अंगुल होयं । ऐसैं त्रैराशिक किया। इहां प्रमाण राशि हाथ च्यारि अर अर फल राशि अंगुल छिनवै अर इच्छा राशि हाथ दश । तहां दशकौं छिनवै करि गुणि च्यारिका भाग दीएं दोयसै चालीस अंगुल लब्ध राशि भया । वहुरि जैसैं तिहाई अधिक पंद्रह रुपैयानिका सवा पचीस मण अन्न आवैं तौ आध पाव दश रुपैयोंका केता आवै इहां भिन्न गणित आश्रयतैं अंशनिकौं जोडें प्रमाण राशि छियालीसका तीसरा भाग फल राशि एकसौ एकका चौथा भाग इच्छा राशि इक्यासीका आठवां भाग प्र. $\frac{४६}{३}$। फ. $\frac{१०१}{४}$। इ. $\frac{८१}{८}$ इहां भिन्न गणित विधानतैं फलकौं इच्छा करि गुणें आठ हजार एकसौ इक्यासीका वत्तीसवां भाग भया याकौं प्रमाणका भाग दीएं चौईस हजार पांचसै तियालीसकौं चौदहसै वहत्तरिका भाग आया । ताका सोलह अर किंचिदून दोय तिण मात्र प्रमाण आया । ऐसैं ही अन्यत्र जाननां । वहुरि जहां जिस राशिका प्रमाण वधै फल थोरा होइ प्रमाण घटैं फल वहुत होइ तहां व्यस्त त्रैराशिक हो है। इहां प्रमाण राशिकौं फल करि गुणि इच्छाका भाग दीएं लब्ध राशिका प्रमाण हो है । जैसैं जिस वस्तुका दोय वरस पुराणीका सौ रुपैया आवै तो दश वरस पुराणीका केता रुपैया आवै । इहां प्रमाण राशि दोयकौं फल राशि सौ करि गुणि इच्छा राशि दशका भाग दीएं वीस रुपैया आवै सो लब्ध-राशि जाननां । ऐसैं ही अन्यत्र जाननां । वहुरि पांच राशि सतराशि आदि विषैं प्रमाणराशि संवंधी दोय तीन आदि राशि होय सो तो एक तरफ नीचैं नीचैं लिखिए अर वाहीके नीचैं फल राशि लिखिए । अर इच्छा राशिसम्वन्धी दोय तीन आदि राशि होइ सो दूसरी तरफ लिखिए । वहुरि प्रमाणका फल राशि होइ ताकौं इच्छा राशिकी तरफ लिखि दोऊ तरफ जे राशि होइं तिनका जुदा परस्पर गुणन करि वहुत प्रमाणकौं स्तोक प्रमाणका

भाग दीएं जो प्रमाण आवै सो इच्छा राशिका फलभूत लब्धराशि जाननां । इहां उदाहरण । जैसैं एक मास विषै सौ रुपैयोंका दोय रुपये व्याज आवै तौ पांच मासविषै दोयसै पैंसठि रुपैयोंका कितना व्याज आवैं । ऐसैं पंचराशिक भया । तहां एक अर सौ तौ प्रमाण राशि ताकौं एक तरफ लिखै अर ताके नीचैं दोय फलराशि लिखै अर पांच दोयसै पैंसठि इच्छाराशि सो एक तरफ लिखै । १००/२ । ५/२६५ बहुरि फलराशिकौं तहांतैं दूसरी इच्छाकी तरफ लिखैं ऐसा १/१०० । २/५/२६५ बहुरि परस्पर दोऊनिकौं जुदे जुदे गुणें एक तरफ सौ. भये एक तरफ छब्बीससै पचास भए । बहुरि बहुत राशिकौं तुच्छ राशिका भाग दीएं साढा छब्बीस रुपैया आए सोई इच्छा राशिका फलभूत लब्धराशि जाननां । बहुरि जो प्रमाणादि अंश अर हाररूप होइ तौ तहां पूर्ववत् फल राशिकौं पलटि पीछैं दोऊ तरफके हारनिकौं परस्पर पलटि दीजिए । बहुरि दोऊ तरफके जुदे जुदे हार अंश होहिं तिनौं परस्पर करि गुणि बहुत राशिकौं अल्पराशिका भाग दीएं। लब्ध राशिका प्रमाण आवै है । इहां उदाहरण । जैसें—सवामास विषै साढासात रुपैयोंका आधा रुपैया व्याज आवै तौ साढा छह महीना विषै सवावारह रुपैयांका केता व्याज आवै । इहां भिन्न गणिततैं अंश अंशनिकौं मिलाएं प्रमाणराशि पांचका चौथा भाग अर पंद्रहका दूजा भाग भया फलराशि एकका दूजा भाग है इच्छा राशि तेरहका दूजा भाग अर गुणचासका चौथा भाग भया । सो ऐसैं लिखि ५/४ । १५/२ । १/२ । १३/२ । ४९/४ फलराशिकौं पलटि हारनिकौं पलटैं ऐसा भया ४/५ । १५/४ । २ । १३/४ । ४९/२ । १ बहुरि अंश हारनिका गुणन कीएं एक तरफ तौ बारहसै १२००/१ । ५०९६/४ आए । एकतरफ पांच हजार छिनवै आया । बहुरि बहुत राशिकौं अल्प राशिका भाग दीएं किंचित ऊन सवा च्यारि रुपैया लब्धराशि आया ऊनका प्रमाण एकका तीनसै भाग कीजैं तामें एक भागमात्र जाननां । ऐसैंही अन्यत्र जाननां । बहुरि इसही विधानतैं सप्तराशिक नवराशिक एकादशराशिक हो है । सो इहां विशेष प्रयोजन न जानि नाहीं लिखें हैं । बहुरि मिश्रक व्यवहारका विशेष प्रयोजन इहां नाहीं लिख्या हैं । कहीं प्रयोजन आवैगा तो तहां हीं वर्णन लिखैंगे ॥

बहुरि श्रेढी व्यवहार लिखिए है । जहां अनेक राशिनि विषैं समानरूप वधता व घटता प्रमाण होइ अथवा गुणकार होइ तहां श्रेढी व्यवहार गणितका विधान हो है । जैसैं आदि विषैं पांच अर स्थान प्रति च्यारि च्यारि वधता वा घटता होइ अथवा च्यारिका गुणाकार होइ । ऐसैं दशस्थान होइ तहां आदि श्रेढी व्यवहार गणितका विधान हो है तहां संज्ञा कहिए हैं । जो आदि विषैं प्रमाण होइ ताका नाम आदि हैं वा मुख है वा प्रभव है । बहुरि अंत विषैं प्रमाण होइ ताका नाम अंत है वा भूमि है । बहुरि स्थान स्थान प्रति जितना वधै वा घटै ताका नाम चय है वा उत्तर है । बहुरि जो स्थान स्थान प्रति गुणकार होय तौ जेतेका गुणकार होय ताका नाम उत्तर है वा गुण है । बहुरि चयकरि वधता वा घटता अथवा गुणकाररूप जेते राशिरूप स्थान होइ ताका नाम पद है वा गच्छ है । बहुरि सर्व स्थाननिके जोड़का नाम सर्वधन है वा पदधन है । बहुरि चयनिकौं जुदे राशि आदि स्थान प्रमाण सर्व स्थान स्थापि तिनकें जोड़का नाम आदि धन है । बहुरि सर्व चयनिकौं जोड़ें जो प्रमाण होय

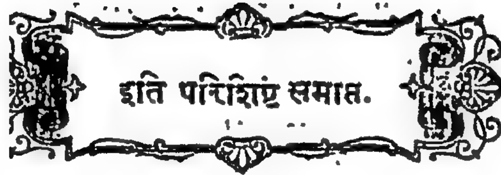
ताका नाम चयधन है वा उतरधन है। बहुरि मध्यस्थान विषैं जेता प्रमाण होइ ताका नाम मध्यधन है। इत्यादि ऐसैं संज्ञा जाननी। बहुरि अनेक प्रमाण जाननेके साधनभूत करणसूत्र गणित शास्त्रनि विषैं कहे हैं तहां जानने। अर इस शास्त्र विषैं जाका प्रयोजन आवैगा ताका करणसूत्र इस शास्त्र ही विषैं लिखे हैं। तातैं जहां प्रयोजन आवै तहां हीं तिनकों जानि लैंने। बहुरि क्षेत्र व्यवहार कहिए है। इस शास्त्र विषैं क्षेत्रका अधिकार है तातैं क्षेत्रव्यवहारका ज्ञान अवसि चाहिए। तहां प्रथम संज्ञा कहिए है। लंबाई चौडाई उचाई इन तीनां विषैं जहां एक ही की विवक्षा होइ दोयकी न होइ तहां सूची क्षेत्र कहिए। बहुरि जहां दोयकी विवक्षा होइ एककी न होइ तहां प्रतरक्षेत्र कहिए वा वर्गरूप क्षेत्र कहिए। बहुरि जहां तीनांकी विवक्षा होइ तहां खात क्षेत्र कहिए वा घन क्षेत्र कहिए। ऐसैं तीन प्रकार क्षेत्र कह्या। तिनमें सूची क्षेत्र विषैं तौ आकारादि विशेष वा क्षेत्रफलादिक विशेष हैं नाहीं। जेता लंबाईका प्रमाण सोई तिस सूची क्षेत्रका प्रमाण है। जैसैं—पचीस हाथ डोरि कहिए। बहुरि प्रतर क्षेत्र विषैं आकार विशेष है सो कहिए है। तीन च्यारि कूणें जिनमें पाईए तिन क्षेत्रनिका क्रमतैं त्रिकोण चतुःकोण नाम जानने। बहुरि एक कोणतैं दूसरा कौंण पर्यंत जेता क्षेत्र होइ ताका नाम भुजा है सो त्रिकोण क्षेत्रविषै तीन भुजा हो हैं तातैं ताका नाम त्रिभुज भी कहिए। चतुःकोण विषैं च्यारि भुजा हैं तातैं ताका नाम चतुर्भुज भी कहिए। बहुरि इन भुजानि विषैं काहूका नाम भुज वा काहूका नाम कोटि भी कहिए है। जैसैं त्रिभुज क्षेत्र विषैं एक भुजाकों कोटि कहिए दोय भुजानिकों भुज कहिए। चतुर्भुज क्षेत्र विषै सन्मुख दोय भुजानिका नाम कोटि कहिए। अवशेष दोय भुजानिका नाम भुजा कहिए। बहुरि इन त्रिभुज आदि क्षेत्रनिका तिस्र चतुस्र आदि भी नाम है। भाषा विषैं तिकूंटा चौकोर इत्यादि नाम हैं। बहुरि ए त्रिभुजादिक क्षेत्र अनेक प्रकार हैं। तहां जिस त्रिभुज क्षेत्रकें दोय भुजा सूधी एक ठेढी ऐसी........ होय ताकों जाति त्रिभुज कहिए। तहां जो यहु टेढी भुजा है ताका नाम कर्ण है वा श्रुति है। जैसैं पांच हाथ ऊंचा वांसके उपरितैं सूत्र लगाय तिस वांसतैं सात हाथ परैं पृथ्वी विषैं सूत्र स्थाप्या तिस सूत्रका जेता प्रमाण ताका नाम कर्ण जाननां। बहुरि जहां एक भुज सूधी दोय डेढी होय तहां........सिंघाडाकासा ऐसा त्रिभुज क्षेत्र होइ। याका मध्यतैं दोय भाग करिए सो दोय जाति त्रिभुज होइ जाय। बहुरि इन तीनों भुजानि विषैं समान प्रमाण होइ वा अधिक हीन होइ तौ तहां सम विषम संज्ञा यथासंभव जाननां। बहुरि चतुर्भुज क्षेत्र विषैं जहां समान प्रमाण लीएं च्यारौं भुज ऐसैं होइ........ताका नाम सम चतुर्भुज कहिए। बहुरि लंबाई चौडाई विषैं एकका प्रमाण हीन एकका अधिक ऐसा........होइ ताका नाम आयत चतुरस्र कहिए। बहुरि जहां च्यारौं भुजानि विषैं काहूका प्रमाण हीन काहूका अधिक ऐसैं........होइ ताका नाम विषम चतुर्भुज है। बहुरि जिस क्षेत्रके पांच कूणे छह कूंणे आदि होइ ताका नाम पंचकोण षटकोण कहिए। भाषाविषैं पंच पहलू छह पहलू इत्यादि नाम हैं। तहां पंच कोणादि क्षेत्रनि विषैं सम प्रमाण भएं समसंज्ञा विषम प्रमाण भएं विषम संज्ञा इत्यादि संज्ञा जाननी। इन क्षेत्र-

निके गिरदका जो प्रमाण ताका नाम परिधि है। बहुरि जहां गोलाकार लिये क्षेत्र ऐसा होइ ० ताका नाम वृत्त क्षेत्र वा गोलक्षेत्र कहिए। तिस क्षेत्र विषै वीचमें जेता प्रमाण ताका नाम वृत्त विष्कंभ है वा विस्तार है वा व्यास है। बहुरि इसके गिरदका जेता प्रमाण होइ ताका नाम परिधि है। बहुरि जो गोलक्षेत्रके चौगिरदा गोलक्षेत्र ऐसा० होइ तहां याके अभ्यंतर तटतैं वाह्य-तटपर्यंत जेता प्रमाण होइ ताका नाम वलय व्यास है। बहुरि अभ्यंतर दोऊ तटनिके वीचि जेता प्रमाण होइ ताका नाम अभ्यंतर सूची व्यास है। अर वाह्य दोऊ तटनिके वीचि जेता अंतराल ताका नाम वाह्य सूची व्यास है। बहुरि अभ्यंतर तटके गिरदका जो प्रमाण ताका नाम अभ्यंतर परिधि है। वाह्य तटका गिरदका जो प्रमाण ताका नाम वाह्य परिधि है। इत्यादि संज्ञा जाननी। बहुरि जो धनुषके आकार ऐसा........क्षेत्र होइ ताका नाम धनुषाकार क्षेत्र कहिए वा चापक्षेत्र कहिए तिसक्षेत्र विषैं जो सूधा प्रत्यंचावत् लंवाईका प्रमाण ताका नाम जीवा है वा ज्या है। बहुरि तिस जीवाकी एक तरफतैं लगाय दूजी तरफ धनुषकी पीठिवत् आधा गोल क्षेत्रकी परिधि रूप गिरदका प्रमाण ताका नाम धनुःपृष्ट है। बहुरि तिस जीवाकी मध्यतैं लगता धनुःपृष्टका मध्यवर्त्तपर्यंत वाणवत् सूधा क्षेत्र ताका प्रमाणका नाम वाण है। बहुरि जो जीवाकी चौडाई बहुत होय तौ तिस जीवाकी छोटा तटतैं वड़ातट दोऊ तरफ जितनां जितनां वधता होइ ताका नाम चूलिका है। बहुरि वड़ा तटतैं छोटा तटपर्यंत जेता परिधिका प्रमाणरूप धनुः पृष्ट रूप होय ताका नाम पार्श्वभुजा है। इत्यादि संज्ञा जाननी। बहुरि अन्य अनेक आकार लीएं क्षेत्र हैं तिनका स्वरूप संज्ञादिक गणित शास्त्रनि विषैं क्षेत्रव्यवहार विषैं कह्या है वा इस शास्त्र विषैं जाका वर्णन होइगा ताका तहांही स्वरूप संज्ञादिक लिखेंगे ते जाननें। बहुरि ऐसैं जे ए क्षेत्र हैं तिनिका विवक्षित योजनादिरूप चौडा लंवा खंड कल्पना करि प्रमाण कीजिए ताका नाम क्षेत्र फल है। प्रवृत्ति विषैं याका नाम मुकसर करना कहिए हैं। जैसैं च्यारि हाथ लंवा पांच हाथ चौडा क्षेत्र ताका क्षेत्रफल वीसहाथ हूवा। तहां ऐसा भाव जाननां। तिसक्षेत्रके एक हाथ लंवा एक हाथ चौडा ऐसे खंड कीजिए तौ वीस होइ। ऐसैं ही अन्यत्र जाननां। ऐसैं प्रतर क्षेत्रका स्वरूप संज्ञादिक कहे ॥ अव घन क्षेत्रका कहिए है। जहां ऊंचाई तथा ओंडाई भी होइ तहां घन क्षेत्रहो हैं ऊंचाई ओंडाईका भाव एक है। नीचेतैं ऊपरकी विवक्षा होइ तौ ऊंचाई कहिए। ऊपर तैं नीचेकी विवक्षा होइ तौ ओंडाई कहिए। सो याका नामा वेध है वा खात है वा उच्चत्व है इत्यादि नाम हैं। बहुरि जो याका क्षेत्रफल करिएं ताका नाम खात फल वा घन फल जानना। इहां विवक्षित चौडा लंवा ऊंचा खंड कल्पना करि प्रमाण कीजिए। जैसैं च्यारि हाथ लंवा च्यारि हाथ चौडा पांच हाथ ऊंचा क्षेत्रका खात फल अस्सी हाथ होइ तहां ऐसा भाव जाननां। एकहाथ लंवा एक हाथ चौडा एक हाथ ऊंचा ऐसैं खंड कीजिए तौ अस्सी होइ। बहुरि जो समभूमि उपरि अन्नादिकका राशि करिए ताका क्षेत्रफलकों सूची फल कहिए है। बहुरि कोई गिंदडीके आकारि क्षेत्र होई कोई वावडीके आकार होइ इत्यादि घनरूप विषै भी अनेक आकार पाईए है। ऐसैं ही और भी संज्ञा स्वरूप जाननां। बहुरि जो क्षेत्र अनेक आकार लीएं होइ तिसक्षेत्र विषैं

संभवते जुदे जुदे आकार कल्पना करले। जैसें ऐसा........आकार रूप क्षेत्र विषैं एक चतुर्भुज एक त्रिभुज........ऐसें दोय खंड कल्पने वहुरि तिन खंडनिके जुदे जुदे क्षेत्रफल करि जोडें तिसका क्षेत्रफल हो है। वहुरि कहीं त्रिभुज क्षेत्र विषैं अनेक प्रकार खंड कल्पना करि तिनके क्षेत्रफल करि जोडि तिस क्षेत्रका क्षेत्रफल कहिये है। ऐसें क्षेत्र व्यवहार विषैं केती इक संज्ञा वा तिनका स्वरूप इहां कह्या वहुरि इन विषैं किसीका प्रमाण जानि किसीका प्रमाण जाननेंके अर्थि करणसूत्र हो हैं। जैसें त्रिभुजक्षेत्र विषैं भुजकोटि कहि करण जाननेकौं करणसूत्र कहिए। वा गोल क्षेत्रविषैं व्यास कहि परिधि जाननेकौं करणसूत्र कहिए सर्व विधि क्षेत्रनि विषैं प्रमाण जानि क्षेत्र फल जाननेंकौं करणसूत्र कहिए। सो करणसूत्र गणित शास्त्रनि विषैं कहे हैं। अर इस शास्त्र विषैं जिनका प्रयोजन पाईए है ते करणसूत्र इस ही शास्त्र विषैं भी कहे हैं। सो जहां वर्णन होइगा तहां तिनकौं जाननें। ऐसें क्षेत्र व्यवहार कह्या। या प्रकार कछू गणित वर्णन इहां लौकिक गणित अपेक्षा कीया ॥

वहुरि अलौकिक गणित अपेक्षा अलौकिक गणितनिकी संदृष्टि वा संकलनादिककी संदृष्टिका वर्णन गोमट्टसार शास्त्रकी भाषा टीका विषैं संदृष्टि अधिकार कीया है तहां लिखी है सो तहांतैं जाननी। उहां विशेष प्रयोजन जानि विशेष लिखी है। इहां स्तोक प्रयोजन जानि स्तोकसा वर्णन लिखिए है। तहां अलौकिक गणित लिखनेमें ऐसी संदृष्टि जाननी। सामान्यपनैं संख्यातकी ऐसी....असंख्यातकी ऐसी....अनंतकी ऐसी ख। विशेषपनैं जघन्य संख्यात दोय ताकी ऐसी २ मध्यम संख्यातकी अनेक प्रकार उत्कृष्ट संख्यातकी ऐसी १५ अथवा ऐसी १६। इहां जघन्य परीतासंख्यात विषैं एक घटावनेकी ऊपर सहनानी है ऐसैं ही अन्यत्र जानना। वहुरि जघन्य परीता संख्यातकी ऐसी १६ मध्य परीतासंख्यातकी नाना प्रकार उत्कृष्ट परीता संख्यातकी ऐसी २ जघन्य युक्तासंख्यातकी ऐसी २ यहू ही आवलीकी सहनानी हैं। मध्य युक्तासंख्यातकी नाना प्रकार उत्कृष्ट युक्तासंख्यातकी ४ जघन्य असंख्यातासंख्यातकी ऐसी ४ सोई प्रतरावलीकी सहनानी हैं। मध्य असंख्यातासंख्यात विषै आठ उपमा प्रमाण पाईए है। तिन विषैं पल्यकी ऐसी प सागरकी ऐसी सा सूच्यंगुलकी ऐसी २ प्रतरांगुलकी ऐसी ४ घनांगुलकी ऐसी ६ जगच्छ्रेणीकी ऐसी—जगत्प्रतरकी ऐसी=घनलोककी ऐसी ≡ वहुरि इहां ही जगच्छ्रेणीकौं सातका भाग दीएं श्रेणीरूप राजू हो है ताकी ऐसी 9 जगत्प्रतरकौं गुणचासका भाग दीएं प्रतर राजू हो है ताकी ऐसी ४९ घनलोककौं तीनसै तियालीसका भाग दीएं घनरूप राजू हो है ताकी ऐसी ३४३ वहुरि अन्य भेदनिकी अनेक प्रकार उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातकी ऐसी २५५ अथवा ऐसी २५६ वहुरि जघन्य परीतानंतकी ऐसी २५६ मध्य परीतानंतकी नाना प्रकार उत्कृष्ट परीतानंतकी ऐसी ज ज अ जघन्य युक्तानंतकी ऐसी ज जु अ मध्य युक्तानंतकी नाना प्रकार उत्कृष्ट युक्तानंतकी ऐसी ज जु अ व जघन्य अनंतानंतकी ज जु अ व मध्य अनंतानंत विषैं जीव राशिकी ऐसी १६ इहां भी संसारी जीव राशिकी ऐसी १३ सिद्ध राशिकी ऐसी ३ पुद्गल राशिकी ऐसी१६ ख अन्य भेदनिकी यथा योग्य अनेक प्रकार उत्कृष्ट अनंतानंतकी केवलज्ञान प्रमाणरूप ताकी ऐसी (के) ऐसैं अलौकिक

गणित विषैं संदृष्टि जाननी। बहुरि इनके संकलनादि विषै जैसैं लौकिक गणित विषै लिखनेका विधान कह्या तैसैं ही इहां जाननां। जैसैं पंच अधिक हजार ऐसैं लिखिए १००५ तैसैं ही सूच्यंगुल अधिक जगछ्रेणीकों ऐसैं लिखिए २। बहुरि जैसैं पांच गुणा हजार ऐसैं १०००।५ लिखिए तैसैं ही असंख्यात गुणा लोक ऐसैं लिखिए ≡ 9 इत्यादि जाननां। बहुरि राशि ऊपर किंचित् मिलावनां होइ तहां उपरि ऊभी लीक करि दीजिए। जैसैं किंचित् अधिक लोककी संदृष्टि ऐसी ≡ बहुरि राशि विषैं किंचित् घटावना होइ तहां आगैं आडी लीक करि दीजिए। जैसैं किंचिदून जीव राशिकी संदृष्टि ऐसी १६— बहुरि गुणकारादि विषैं जैसैं लौकिक गणित विषैं वर्णन किया है तैसैं ही जाननां। विशेष इतनां इहां जैसा जहां संभवै तैसा तहां अलौकिक संदृष्टि रूप प्रमाण जाननां। बहुरि कहीं अक्षरादि रूप सहनानी है। जैसैं अर्द्धच्छेदनिकी संदृष्टि ऐसी (छे) बहुरि अन्य अनेक प्रकार लौकिक संदृष्टि जाननी। ऐसैं अलौकिक गणित विषैं सरूप दिखाया सो इस शास्त्रविषैं जहां प्रयोजन आवैगा तहां लिखन होगा सो जाननां॥



श्रीमन्नेमिचंद्राचार्यविरचित

# त्रिलोकसार

## पंडितवर श्रीटोडरमल्लकृत हिंदीभाषाटीका सहित।



दोहा—त्रिभुवनसार अपारगुन, ज्ञायक नायकसंत।
त्रिभुवनहितकारी नमों, श्री अरहंत महंत॥ १॥
तीनभवनके मुकुट मनि, गुन अनंतमय शुद्ध।
नमों सिद्ध परमातमा, वीतराग अविरुद्ध॥ २॥
तीनभुवनथिति जानिके, आप आपमय होय।
परतें भये विरक्त अति, नमों महामुनि सोय॥ ३॥
तीनभुवन मंदिर विषै, अर्थ प्रकासन हार।
जैनवचनदीपक नमों, ज्ञानकरन गुनधार॥ ४॥
तीनभुवनमहिं जे लसैं, चैत्यचैत्यग्रहसार।
ते सब वंदौं भावजुत, सुभकारन सुखकार॥ ५॥
ऐसें मंगलरूप सब, तिनके वंदे पांय।
अब किछु रचना कहत हौं, नानाविधि सुखदाय॥ ६॥

अथ मंगलाचरण करि श्रीमत् त्रिलोकसार नाम शास्त्रकी भाषाटीका करिए हैं। अब संस्कृत-टीका अनुसार लिए मूलशास्त्रका अर्थ लिखिए हैं।

कवित्त—तीनभुवन शशि जिनपतिकों अति भक्तिभावतें करि नति सार,
ग्रंथ त्रिलोकसारकी टीका परकासों विधितें सुखकार।
किंचिन्मात्र ज्ञानके धारी भव्य जीव जे हैं रुचिधार,
तिनके संबोधनकों कारण ऐसा जानहु भव्यविचार॥ १॥

अडिल्ल—अकलंकादिक सूरि भूरि गुणमंत हैं, अतुलधर्मके धारक जगि जयवंत हैं।
जिनमततें विपरीत कुमतमत वादधर, वादिसमूह नमाए जैन उद्योतकर॥ २॥
जातें सर्व बुधनिकों विस्मयकारिणी, जाकी भई प्रवृत्ति महागुन धारिणी।
दोष रहत जिनमतसों दूरि करो सदा, सघनकुमतितम पुंज बहुरि होइ न कदा॥३॥

---

१ यहांसे आगे "इस शास्त्रकी संस्कृतटीका पूर्व" इत्यादि पाठ परिशिष्टमें लगाया जायगा। पाठक-गण वहां ही देख लें।

ऐसें संस्कृत टीकाकार मंगलाचरण कहैं हैं। श्रीमान् वहुरि काहूकरि हण्या न जाइ वहुरि प्रतिमान जो मर्यादारूप प्रमाण ताकरि रहत वहुरि प्रतिपक्षी कर्मकरि रहत वहुरि इंद्रियसहायकरि रहित वहुरि इंद्रियवत् अनुक्रमतें जाननेतैं रहत ऐसा जो केवलज्ञानरूपी तीसरा नेत्र ताकरि अवलोके हैं सकल पदार्थनिका समूह जिहिं ऐसा, वहुरि संसारदुःखतैं राखे हैं देवेंद्रनरेंद्र मुनींद्रनिका समूह जिहिं ऐसा, वहुरि तीर्थंकर प्रकृतिरूप पुण्यकी महिमाका अवलंवनतें उत्पन्न भया है समवसरण आठ प्रातिहार्य चौंतीस अतिशय आदि बहिरंग लक्ष्मीकी विशेप जाकें ऐसा, वहुरि निर्मूल कीए हैं अठारह दोष जानें ऐसा, वहुरि सर्वांगपनें करि आलिंगनरूप करी है अनंत चतुष्टयादिक गुण समूहरूप अंतरंग लक्ष्मी ताकरि प्रकट किया है परमात्मस्वरूप प्रभाव जानैं ऐसा जो श्रीवर्धमान नामा तीर्थंकर देव तींह तो सर्व भाषामई दिव्यध्वनि करि जाका अर्थ किया है। वहुरि सात ऋद्धिनिकरि संपूर्ण जो गोतमस्वामी समस्त विद्याका परमईश्वर केवली तींह जाका शब्दरचनाका विशेष रच्या है। वहुरि तिस अर्थका ज्ञान अर कवित्वादि विज्ञानकरि संयुक्त वहुरि पापतें भयभीत ऐसो जु गुरु तिनकी परंपराका अनुक्रमतेंकरि विच्छेदरहित प्रवृत्तिरूप है। वहुरि सूत्रका अर्थ अन्यथा होइ नष्ट न भया है तातैं केवल ज्ञानहीके समान है-ऐसा जु करणानुयोग नामा परमागम ताहि कालके अनुसार संक्षेपरूपकरि निरुपण करनेका है अभिलाप जाका ऐसा जो भगवान नेमिचंद्र नामा सैद्धांतदेव चारि अनुयोगरूपी चारि समुद्रनिका पारगामी सो चामुंडरायके संवोधनेका मिसकरि समस्त शिष्यजननिके संवोधनेके अर्थि त्रिलोकसार नामा ग्रंथकों रचतासंता ताकी आदिविषैं प्रथम ही निर्विघ्नपनैं शास्त्रकी समाप्तता होइ इत्यादि फलसमूहकौं विचार विशिष्ट जो अपना इष्टदेवता ताहि स्तवै है;—

**वलगोविंदसिहामणिकिरणकलावरुणचरणणहकिरणं।**
**विमलयरणेमिचंदं तिहुवणचंदं णमंसामि ॥ १ ॥**

वलगोविन्दशिखामणिकिरणकलापारुणचरणनखकिरणम्।
विमलतरनेमिचंद्रं त्रिभुवनचंद्रं नमस्यामि ॥ १ ॥

**अर्थ**—कहिये हैं। **नमस्यामि** कहिए नमस्कार करौं हौं। किसहिं नमस्कार करौ हौं। **विमलतरनेमिचंद्रं** विगत कहिए विनष्ट भया है मल कहिए द्रव्यभाव भेदकौं लिए आत्माके गुणका घातक कर्म वा शरीरका मल धातु जातैं सो विमल जानना। वहुरि आप विशुद्धताका जु उदय ताकी परम उत्कृष्टताकों प्राप्त होतसंता अन्य जे आपकौं आश्रित भए भव्य जीव तिनिके भी कर्ममलके दूरि करनेकों कारण हैं तातैं अतिसय करि विमल है सो विमलतर जानना। इस विशेषणकर अपाय अतिशय प्रगट किया। अपाय नाम नासका है सो इंद्रादिक भी जाके नाश करनेकौं समर्थ नाहीं ऐसे कर्ममलका नाश किया ऐसा अतिशय भगवंतविषैं ही है। ऐसा इस विशेषणका अभिप्राय है। वहुरि नेमिनाथ नामा वावीसवां तीर्थंकर परमदेव सो नेमिचंद्र जानना। विमलतर जो नेमिचंद्र ताहि नमस्कार करौं हौं। कैसा है विमलतर नेमिचंद्र। **त्रिभुवनचंद्रं** त्रिभुवन कहिये तीन लोक तिनका चंद्र कहिए चंद्रमावत् प्रकास करनहारा है। **भावार्थ**—तीन लोकके

स्वरूपका उपदेस दाता है वा तीन लोकके स्वरूपका ज्ञाता है। इस विशेषणकर वाक् अतिशय वा प्राप्ति अतिशय प्रगट किया है। तहां वाक् नाम वानीका है, सो गणधर इंद्रादिकनिके वचनतैं अगोचर ऐसा तीन लोकका स्वरूप वानीकरि कहिये हैं ऐसा वाक् अतिशय भगवंत विषैं है। बहुरि प्राप्ति नाम लाभका है सो गणधर इंद्रादिकके ज्ञानतैं अगोचर ऐसा तीन लोकका ज्ञायक केवल ज्ञानका लाभ भया है ऐसा प्राप्ति अतिशय भगवंतविषैं है। बहुरि 'त्रिभुवनचंद्रं' ऐसा विशेषण इस अवसर विषैं योग्य है जातैं तीन लोकके स्वरूपका निरूपण विषैं किया है उद्यम जानैं ऐसा जो आचार्य ताकैं शब्द ज्योतिकरि वा ज्ञानज्योतिकरि तीन लोकके स्वरूपका प्रकाशककों ही नमस्कार करना योग्य ही है। बहुरि कैसा है विमलतर नेमिचंद्र। **वलगोविंदशिखामणिकिरणकलापारुण-चरणनखकिरणं** वलगोविंद कहिए अपने चरणकमलकों नमस्कार करते जे वलभद्र नारायण तिनका शिखामणि कहिए मुकुटका अग्रभागविषैं लागा हुआ पद्मरागमणि ताकी जु किरणकलाप कहिये प्रभातका सूर्यवत् किरणनिका समूह ताकरि अरुण कहिए अतिरक्त भया है चरणनखकिरण कहिए चरणकमलके नखनिकी किरणनिका पुंज जाका ऐसा है। इस विशेषणकर भगवंतका पूजा अतिशय और अतिशयनिका सहचारी प्रगट किया। पूजा नाम पूजनेका है सो जिनको लोकविषैं पूज्य मानिए हैं ऐसे वलभद्र नारायण तेऊ भगवंतके चरणकमलकों पूजैं हैं ऐसा पूजा अतिशय भगवंतविषैं है। इहां प्रासंगिक श्लोक कहिए हैं "अपाय" इत्यादि। याका अर्थ—अपायप्राप्ति वाक् पूजारूप अतिशय बहुरि निरालंब विहार वा स्थिति वा आहारादिक विना शरीरकी प्रवृत्ति इत्यादिक ये प्रगट जिनदेवके अतिशय हैं। अथवा अन्य अर्थ कहिए हैं 'नमस्यामि' कहिए नमों हौं। काहि "विमलतरनेमिचंद्रं" नेमि ऐसा नाम चक्रधुरा जो पद्माकी धुर ताका है। सो जैसें चक्रधरा रथके चलनेकों कारण है तैसें धर्मरथके प्रवर्त्तनेकों कारण हैं तातैं नेमि कहिए। बहुरि चंदयति कहिए तीन लोकके भव्य जीवनिके नेत्र अर मनकों आल्हाद करै है तातैं चंद्र कहिए। **भावार्थ—** इंद्रादिककैं भी न संभवै ऐसा जो रूप अतिशय ताकरि संयुक्त हैं। नेमि अर सोई चंद्र सो नेमिचंद्र. अर विमलतर कहिए अतिशयकर निर्मल ऐसो जो नेमिचंद्र सो विमलतर नेमिचंद्र कहिए। अथवा नयति कहिए यथार्थ पदार्थ ताकौं जानैं ऐसा जु नेमि कहिए ज्ञान बहुरि विगत भया है मल कहिए अज्ञान जातैं सो विमल अतिशय कर विमल होइ सो विमलतर कहिए। विमलतर जो नेमि सो विमलतर नेमि सकल विमल केवलज्ञान जानना। तिह करि संयुक्त जो चंद्र कहिए आल्हादकारी सो विमलतर नेमिचंद्र कहिए। अथवा विमलतराः कहिए रत्नत्रयकर पवित्र भया है आत्मा जिनका ऐसे जु आचार्यादिक तेई भए नेमि कहिए नक्षत्र तिनका चंद्र कहिए जैसें नक्षत्रनिका स्वामी चंद्रमा है तैसें जो स्वामी सो विमलतर नेमिचंद्र कहिए। ऐसें विमलतर नेमिचंद्र जो अंतका वर्द्धमान तीर्थंकर देव वा चौवीस तीर्थंकरनिका समुदाय ताहि नमौं हौं। कैसा है। त्रिभुवनचंद्र त्रिभुवन कहिए तीन लोकविषैं तिष्ठता विनयवान् तिनका चंद्रमावत् अज्ञान अंधकार नाश करै हैं ऐसा है। बहुरि कैसा है।

'वलगोविंद' इत्यादि, जंबूद्वीपका परिवर्तनरूप जो पराक्रम सामर्थ्य सो वल अथवा प्रतींद्रादिक देवनिका सैन्य सो वल वा अतिमनोहर रूप सो वल जाके पाइए ताकौं वल कहिए। यहां

प्रासंगिक श्लोक " बलं " इत्यादि है। याका **अर्थ**—शक्ति अर सैन्य अर स्थूलपनौं अर रूप इनका नाम बल है सो यहु वल शब्द नपुसंकलिंगी है बहुरि बल वीर्य अर दैत्य अर काक अर वलवान् इनका नाम वल है। सो यहु बल शब्द पुरुषलिंगी है सो यहां वलशब्द करि शक्ति सैन्य रूप—ए तीन अर्थ ग्रहे। बहुरि गां कहिए स्वर्ग ताहि विंदति कहिए पालै सो गोविंद देवनिका इंद्र जानना। बल अर सोई गोविंद सो वलगोविंद ताकी शिखामणिकी किरणनिका समूहकरि अरुण भए हैं चरणनिके नखनिका किरण जाकी ऐसा है। **भावार्थ**—भक्तिके समूहतैं नम्रीभूत भए इंद्रादिक समस्त देव तिनिकी मुकुटमणिकी किरणनिकी पंक्तिकरि रक्त किया है चरणके नखनिकी किरण जाकी ऐसे भगवंत हैं। अथवा अन्य अर्थ कहैं हैं। नमस्यामि कहिए नमौं हौं। कांहि ? विमलतरनेमिचंद्रं पचीसमलरहित सम्यक्ततें युक्त हैं वा विशुद्धज्ञानकरि पूर्ण है वा अतीचार रहत मनोज्ञ चारित्र करि पवित्र भया है तातैं विमलतर कहिए। विमलतर जो नेमिचंद्र नामा आचार्य सो विमलतर नेमि-चंद्र कहिए ताहि नमौं हौं। ऐसें चामुंडराय अपने गुरुकों नमस्कारपूर्वक इस शास्त्रकौं प्रारंभै है। कैसा है। 'त्रिभुवनचंद्रं' तीनलोकके जीवनकैं चंद्रमासमान धर्मरूपी अमृतके श्रवनेतैं चंद्रमा समान है। अथवा चंद्र सोनां तिंह समान आदर करने योग्य है। बहुरि कैसा है। " बल " इत्यादि, बल कहिए बहत्तरि नियोगकी प्रवृत्तिरूप पराक्रम वा हस्ती आदि सैन्य जाके पाइए ऐसा चामुंडराय बहुरि गां कहिए पृथ्वी ताहि विंदति कहिए पालै ऐसा गोविंद कहिए राचमल्लदेव राजा इन दोउनिकी मुकुटमणिकी किरणनिका समूह करि लाल किया हैं चरणनिके नखनिकी किरण जाकी ऐसा है। ऐसें प्रथमसूत्रका अर्थ जानना ॥ १ ॥

आगैं पहली दूसरी जो दोय गाथा तिनकरि किया जो जिन अर जिनबिंब अर जिनमंदिर-नकौं नमस्कार तींहकरि अर्हंत सिद्ध आचार्य बहुश्रुत साधु जिनवच जिनधर्म जिनबिंब जिनमंदिर—ए जो नवदेवता तिनकौं नमस्कार करता संता इस ग्रंथविषैं पांच अधिकार हैं ताकी सूचना करता संता गाथा कहै हैं;—

**भवणव्वितरजोइसविमाणणरतिरियलोयजिणभवणे।**
**सव्वामरिंदणरवइसंपूजियवंदिए वंदे ॥ २ ॥**

भवनव्यंतरज्योतिर्विमाननरतिर्यग्लोकजिनभवनानि।
सर्वामरेंद्रनरपतिसंपूजितवंदितानि वंदे ॥ २ ॥

**अर्थ**—भवनवासीनिके भवन बहुरि व्यंतरनिके स्थान बहुरि ज्योतिष्कानिके विमान बहुरि मानुषोत्तरके अभ्यंतर मनुष्यलोक, बाह्य तिर्यचलोक इनविषैं जे जिनभवन हैं सर्व देवेंद्र अर नरपति राजा तिनकरि पूजनीक हैं अर वंदनीक हैं तिनकौं मैं वंदौं हौं। इस ही क्रमतैं इस ग्रंथविषैं भव-नवासी व्यंतर जोतिषी वैमानिक मनुष्य तिर्यंच लोकका वर्णनरूप पांच अधिकार जानने। बहुरि पहले जो ( भूमिकामें ) मान आदिकका वा लोकादिकका वा नारकनिका वर्णन किया है सो प्रसंग पाइ किया है ॥ २ ॥

आगें तिन जिनमंदिरनिका आधारभूत लोक सो कहां है ऐसी आशंका होत संतैं सूत्र कहैं हैं;—

सव्वागासमणंतं तस्स य वहुमज्झदेसभागम्हि ।
लोगोसंखपदेसो जगसेढिघणप्पमाणो हु ॥ ३ ॥
सर्वाकाशमनंतं तस्य च वहुमध्यदेशभागे ।
लोकोऽसंख्यप्रदेशो जगच्छ्रेणिघनप्रमाणो हि ॥ ३ ॥

**अर्थ**—सर्व आकास अनंत प्रदेसी है ताका वहुमध्यप्रदेसभागे, वहवः कहिए अतिसयरूप वा रचनारूप असंख्याते जे आकासके मध्यप्रदेश सोई भाग कहिए आकाशका खंड तिंह विपैं लोक है अथवा वहु कहिए आठ जे गऊका स्तनके आकारि आकाशके मध्यप्रदेश ते हैं मध्यदेशविपैं जाके ऐसे खंडविपैं लोक है । लोकके प्रदेश समरूप गिणती लिए हैं तातैं मध्यविपैं एक प्रदेश होइ नांहीं तातैं दोय प्रदेश मध्य कहनें । अर लोक घनरूप है तातैं दोय प्रदेशनिका घनरूप क्षेत्र आठ प्रदेश प्रमाण होइ तातैं आठ हैं मध्यप्रदेश जाकें ऐसा लोक कह्या है । जैसें सौ हाथ चौडा सातसै हाथ लंवा चौदासै हाथ ऊंचा क्षेत्रविपैं मध्यवर्ती आठ हाथ ही होय तैसें जानना । सो लोक असंख्यात प्रदेशी है सो आगें जाका स्वरूप कहिए हैं ऐसी जो जगच्छ्रेणी ताका जु घन तींह प्रमाण जानना ॥ ३ ॥

आगें लोकके स्वरूपका अन्यथा श्रद्धान दूरि करनेकौं कहैं हैं;—

लोगो अकिट्टिमो खलु अणाइणिहणो सहावणिव्वत्तो ।
जीवाजीवेहिं फुढो सव्वागासवयवो णिच्चो ॥ ४ ॥
लोकः अकृत्रिमः खलु अनादिनिधनः स्वभावनिर्वृत्तः ।
जीवाजीवैः स्फुटः सर्वाकाशावयवः नित्यः ॥ ४ ॥

**अर्थ**—लोकका तो अधिकार था ही वहुरि लोक शब्दका ग्रहण किया है सो लोककौं वारंवार कहि शून्यवादीके दूषनेके अर्थ लोक है ऐसा कह्या है । इस विशेषण करि लोकका अभावकौं मानें है जो शून्यवादी ताका निराकरण किया । कैसा है लोक । अकृत्रिमः कहिए काहूकरि किया नांहीं है । इस विशेपण करि लोकका ईश्वरकौं कर्ता मानें है ताका निराकरण किया । वहुरि कैसा है । अनादिनिधनः कहिए आदि अंतकरि रहित है । इस विशेपण करि जो सृष्टि संहार मानै है ताका निराकरण किया । वहुरि कैसा है । स्वभावनिर्वृत्तः कहिए सहज स्वभावतें निष्पन्न है । इस विशेषण करि परमाणुनिकरि लोकका आरंभ हो है ऐसे माननेका निराकरण किया है । वहुरि कैसा है ? जीवाजीवैः स्फुटः कहिए जीव अजीव द्रव्यनिकरि भर्या है। इस विशेपणकरि मायामई लोककौं मानै है ताका निराकरण किया। वहुरि कैसा है। सर्वाकाशावयवः कहिए सर्व आकाशका अंग है । इस विशेपणकरि अलोकाकाशका अभाव मानैं है ताका निराकरण किया । वहुरि कैसा है । नित्यः कहिए सास्वत है । इस विशेपणकरि लोककौं क्षणिक मानैं ऐसा क्षणकमतका निराकरण किया । इतना कथनकरि लोक्यते कहिए जाविपैं पट्द्रव्य देखिए सो लोक ऐसें पट् द्रव्यका समुदायकौं लोकपना कह्या है ॥ ४ ॥

आगें तिस पट् द्रव्यका समुदायका आधारभूत आकाशकैं लोकपना कहिए हैं;—

धम्माधम्मागासा गदिरागदि जीवपोग्गलाणं च ।
जावत्तावल्लोगो आयासमदो परमणंतं ॥ ५ ॥

धर्माधर्माकाशा गतिरागतिः जीवपुद्गलयोः च ।
यावत्तावल्लोक आकाशं अतः परमनंतम् ॥ ५ ॥

**अर्थ**—धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्य आकाशद्रव्य अर जीव पुद्गलनिका गमनागमन अर चकारतें कालाणू जे ते आकाशकों अभिव्यापक होइ वर्तें तितनें आकाशकौं लोक कहिए, याके परैं अलोकाकाश है सो अनंत है संख्यातादिरूप नाहीं है ॥ ५ ॥

आगें अन्यवादीनिकरि कल्पना किया हुवा लोकका आकार ताके निराकरण करनेकौं कहैं हैं;—

उब्भियदलेक्कमुरवद्धयसंचयसण्णिहो हवे लोगो ।
अद्धुदयो मुरवसमो चोद्दसरज्जूदओ सव्वो ॥ ६ ॥

उद्भूतदलैकमुरजध्वजसंचयसन्निभो भवेत् लोकः ।
अर्धोदयः मुरजसमः चतुर्दशरज्जूदयः सर्वः ॥ ६ ॥

**अर्थ**—ऊभी करी हुई आधी मृदंग सहित ऐसा ज्योढ मृदंगके आकारि लोक है। कोऊ जानैंगा जैसें मृदंग वीचिमें सून्य है तैसें लोक भी शून्य होगा तहां कहै हैं कि ध्वजानिका जु समूह ताके समान मध्यविषैं भरितावस्था लिएं लोक है। तहां अर्धमृदंगका उदयसमान अधोलोक अर एक मृदंगका उदयसमान ऊर्ध्वलोक मिलि सव लोक चौदह राजू ऊंचा जानना ॥ ६ ॥

आगें प्रसंग पाइ राजूके स्वरूपकी प्रतीतिके अर्थ सूत्र कहैं हैं;—

जगसेढिसत्तभागो रज्जू सेढीवि पल्लछेदाणं ।
होदि असंखेज्जदिमप्पमाणविंदंगुलाण हदी ॥ ७ ॥

जगच्छ्रेणिसप्तमभागः रज्जुः श्रेणिरपि पल्यच्छेदानाम् ।
भवति असंख्येयप्रमाणवृंदांगुलानां हतिः ॥ ७ ॥

**अर्थ**—अंकसंदृष्टि दिखावनेके द्वारि गाथाका अर्थ वर्णिए हैं। जगच्छ्रेणीका सातवां भाग प्रमाण रज्जु है। ऐसे अंकसंदृष्टिकर जैसें जगच्छ्रेणीका प्रमाण वादालकरि गुण्या हुवा एकट्ठी प्रमाण ताकौं सातका भागदिएं एक भाग प्रमाण रज्जु होइ १८=४२=$\frac{\text{-}}{७}$ बहुरि जगच्छ्रेणी कहा सो कहिए हैं। पल्यके जेते अर्धच्छेद हैं तिनकौं असंख्यातका भाग दिएं एक भागविषैं जो प्रमाण आवै तितनें घनांगुल मांडि तिनकौं परस्पर गुणें जगच्छ्रेणी हो है। अंक संदृष्टिकरि जैसें पल्यका प्रमाण सोलह ताके अर्धच्छेद चारि ताकौं असंख्यातकी सहनानी दोय ताका भाग दिएं पाया दोय तहां घनांगुलका प्रमाण पणट्ठी करि गुण्या हुवा वादाल प्रमाण इनकौं दोय जायगा मांडि परस्पर गुणें वादालकरि गुणित एकट्ठी प्रमाण जगच्छ्रेणी हो है ॥ ७ ॥

आगें घनांगुलका स्वरूपकी प्रतीतिके अर्थ कहै हैं;—

पल्लछिदिमेत्तपल्लाणण्णोण्णहदीए अंगुलं सूई ।
तव्वग्गघणा कमसो पदरघणंगुल समक्खादो ॥ ८ ॥

पल्यच्छेदमात्रपल्यानामन्योन्यहत्या अंगुलं सूची ।
तद्वर्गघनौ क्रमशः प्रतरघनांगुले समाख्याते ॥ ८ ॥

**अर्थ**—पल्यके जेते अर्धच्छेद होंहि तिनतें पल्य मांडि तिनकों परस्पर गुणें सूच्यंगुल हो है। जैसें पल्यका प्रमाण सोल्ह ताके अर्धच्छेद चारि सो चारि जायगा सोला सोला मांडि इनकों परस्पर गुणें ६५५३६ होइ सोई सूच्यंगुलका प्रमाण जानना। वहुरि सूच्यंगुलका जो वर्ग सो प्रतरांगुल जानना। जैसें पण्णट्ठीका वर्ग वादाल होइ सो प्रतरांगुल है। वहुरि सूच्यंगुलका घन घनांगुल जानना। जैसे पण्णट्ठीका घन है सो पण्णट्ठी करि गुणा हुवा जो वादाल तिह प्रमाण हो है सो घनांगुल होय। ऐसें क्रमतें कहे हैं। इहां एकट्ठी आदिक वा अर्धच्छेद आदि जे कहे हैं तिनका स्वरूप आगे कहिएगा सो जानना ॥ ८ ॥

आगें मानकी प्रतीतिके अर्थ प्रक्रिया कहैं हैं;—

**माणं दुविहं लोगिग लोगुत्तरमेत्थ लोगिगं छद्धा ।**
**माणुम्माणामाणं गणिपडितप्पडिपमाणमिदि ॥ ९ ॥**

मानं द्विविधं लौकिकं लोकोत्तरमत्र लौकिकं पोढा ।
मानोन्मानावमानं गणिप्रतितत्प्रतिप्रमाणमिति ॥ ९ ॥

**अर्थ**—मान दोय प्रकार है लौकिक मान अर लोकोत्तरमान। इहां लौकिकमान छह प्रकार है—मान, उन्मान, अवमान, गणिमान, प्रतिमान, तत्प्रतिमान, ऐसें जानना ॥ ९ ॥

आगें इन छहोंनिकी दृष्टांतपूर्वक उतपत्ति कहैं हैं;—

**पत्थतुलचुलयएगप्पहुदी गुंजातुरंगमोल्लादी ।**
**दव्वं खित्तं कालो भावो लोगुत्तरं चदुधा ॥ १० ॥**

प्रस्थतुलाचुलकैकप्रभृति गुंजातुरंगमूल्यादि ।
द्रव्यं क्षेत्रं कालो भावो लोकोत्तरं चतुर्धा ॥ १० ॥

**अर्थ**—प्रस्थ जो माणी इत्यादिककों मान कहिए जैसें पाई माणी इत्यादिक करि अन्नादिकका प्रमाण करिए। वहुरि तुला जो ताखड़ी इत्यादिककों उन्मान कहिए। जैसें ताखडीकरि तौलि प्रमाण करिए। चुलुक जो चळू इत्यादिककों अवमान कहिए, जैसें चळू प्रमाण जल है इत्यादिक कहिए। वहुरि एक इत्यादिककों गणिमान कहिए, जैसें एक दोय तीन आदि गणना करि प्रमाण करिए। वहुरि गुंजा जो चिरमटी इत्यादिककों प्रतिमान कहिए, जैसें रत्ती मासा इत्यादि प्रमाण करिए। वहुरि तुरंगमोलि जो घोडेका मोल इत्यादिककों तत्प्रतिमान कहिए, जैसें अवयवादिक देखि घोड़ेका मोल करिए। ऐसें लौकिकमान जानना ॥ वहुरिलोकोत्तरमानके भेद अब कहिए हैं। द्रव्य क्षेत्र काल भाव—ऐसें लोकोत्तरमान चारि प्रकार है ॥१०॥

आगें तिन चारोंकी क्रमतें जघन्य उत्कृष्टकी प्रतीतिके अर्थ चारि गाथा कहैं हैं;—

**परमाणु सयलदव्वं एगपदेसो य सव्वमागासं ।**
**इगिसमय सव्वकालो सुहुमणिगोदेसु पुण्णेसु ॥ ११ ॥**

परमाणुः सकलद्रव्यं एकप्रदेशः च सर्वमाकाशम् ।
एकसमयः सर्वकालः सूक्ष्मनिगोदेषु अपूर्णेषु ॥ ११ ॥

अर्थ—द्रव्यमानविषैं जघन्य एक परमाणु उत्कृष्ट सर्व द्रव्यसमूह, क्षेत्रमानविषैं जघन्य एक प्रदेश उत्कृष्ट सर्व आकास, कालमानविषैं जघन्य एकसमय उत्कृष्ट सर्वकाल, भावमानविषैं जघन्य सूक्ष्मनिगोदिया लब्धिअपर्याप्तककै पर्यायनामा ज्ञान जानना॥ ११ ॥

**णाणं जिणेसु य कमा अवरवरं मज्झिमं अणेयविहं ।**
**दव्वं दुविहं संखा उवमपमा उवम अट्ठविहं ॥ १२ ॥**

ज्ञानं जिनेषु च क्रमात् अवरं वरं मध्यमं अनेकविधम् ।
द्रव्यं द्विविधं संख्या उपमाप्रमा उपममष्टविधम् ॥ १२ ॥

अर्थ—बहुरि उत्कृष्ट भावमान जिनेंद्रविषैं केवलज्ञान—ऐसैं क्रमतैं जघन्य उत्कृष्टमान हैं। बहुरि मध्यममान अनेक प्रकार है, तहां भी द्रव्यमान दोय प्रकार है—संख्याप्रमाण, उपमाप्रमाण। तहां उपमाप्रमाण आठ प्रकार है। थोरा कहना होय सो पहलैं कहिए इस न्यायकरि जैसैं क्रमतैं मान कह्या था तैसैं स्वरूपवर्णनविषैं अनुक्रम छोडि उपमाप्रमाणके भेद कहिए हैं। जो उपमा आठ प्रकार है ॥ १२ ॥

बहुरि कारणस्वरूप पहलैं जानैं कार्यका स्वरूप जानिए इस न्यायकरि उपमाकौं भी छोडैं हैं;—

**तं उवरि भणिस्सामो संखेज्जमसंखणंतमिदि तिविहं ।**
**संखंतिछदु तिविहं परित्तजुत्तंति दुगवारं ॥ १३ ॥**

तां उपरि भणिष्यामः संख्येयं असंख्यं अनंतमिति त्रिविधम् ।
संख्यं अंतिमद्विकं त्रिविधं परीतं युक्तं इति द्विकवारम् ॥ १३ ॥

अर्थ—तिस उपमा प्रमाणकौं आगैं कहेंगे बहुरि अवशेष भेद कहिए हैं—संख्यात, असंख्यात, अनंत ऐसैं तीन प्रकार संख्यामान है। तहां अंतका दोय जो असंख्यात अर अनंत सो तीन प्रकार है—परीत, युक्त, द्विकवार। भावार्थ—संख्यात तौ एकप्रकार ही है बहुरि असंख्यात तीन प्रकार है—परीतासंख्यात, युक्तासंख्यात, असंख्यातासंख्यात। बहुरि अनंत हू तीन प्रकार है—परीतानंत, युक्तानंत, अनंतानंत। ऐसैं सात भेद भए ॥ १३ ॥

**ते अवर मज्झ जेट्ठं तिविहा संखेज्जजाणणिमित्तं ।**
**अणवत्थ सलागा पडिमहासला चारि कुंडाणि ॥ १४ ॥**

तानि अवरं मध्यं ज्येष्ठं त्रिविधा संख्येयज्ञाननिमित्तम् ।
अनवस्था शलाका प्रतिमहाशला चत्वारि कुंडानि ॥ १४ ॥

अर्थ—ते सातौं ही स्थान जघन्य मध्यम उत्कृष्ट भेद करि तीन तीन प्रकार हैं। ऐसैं इकवीस भेद भए। तहां संख्यात ज्ञानके अर्थ अनवस्था, शलाका, प्रतिशलाका, महाशलाका ऐसैं च्यारि कुंड कल्पना करि जानने ॥ १४ ॥

आगें इन च्यारौं कुंडनिका व्यासादिककी प्रतीतिके अर्थ कहैं हैं;—

**जोयणलक्खं वासो सहस्समुस्सेहमेत्थ सव्वेसिं।**
**दुप्पहुदिसरिसवेहिं अणवत्था पूरयेदव्वा ॥ १५ ॥**

योजनलक्षं व्यासः सहस्रमुत्सेधः अत्र सर्वेषाम्।
द्विप्रभृतिसर्षपैः अनवस्था पूरयितव्या ॥ १५ ॥

**अर्थ**—लाख योजन प्रमाण व्यास अर हजार योजन प्रमाण उत्सेध तिन कुंडनिका जानना। कुंड गोल हैं। तहां वीचितें चौडाईका नाम व्यास है, उंडाईका नाम उत्सेध है बहुरि तिन कुंडनविषैं दोय आदि जे सरसों तिनकरि अनवस्था नामा कुंड भरणा ॥ १५ ॥

दोय आदि सरसों कहे सो कहा इस संदेहको दूरि करता संता सूत्र कहै हैं;—

**एयादीया गणणा वीयादीया हवंति संखेज्जा।**
**तीयादीणं णियमा कदित्ति सण्णा मुणेदव्वा ॥ १६ ॥**

एकादिका गणना द्वयादिकाः भवंति संख्याताः।
त्र्यादीनां नियमात् कृतिरिति संज्ञा मंतव्या ॥ १६ ॥

**अर्थ**—एककौं आदि देकरि तौ गणना है गिनती एकतैं लगाय करिए हैं। बहुरि दोयकौं आदि देकरि संख्यात हैं, जघन्य संख्यातका प्रमाण दोय है। बहुरि तीन आदिकनिकी कृति ऐसी संज्ञा नियमकरि है। जाकी कृतिविषैं वर्गमूलकौं घटाय अवशेष रहै ताका वर्ग किए वधै सो कृति कहिए, जैसैं तीन विषै संभवता वर्गमूल एककौं घटाएं अवशेष दोय रहै ताका वर्ग कीएं च्यारि होय ऐसैं वृद्धिकौं पावै। बहुरि एक अर दोयविषै कृतिका लक्षण न संभवै है। तहां एककै तो कृतिपणौं संभवै ही नाहीं जातैं एकमें एक घटाएं शून्य होइ जाइ। बहुरि दोयकैं अवक्तव्य कृति पणौं है जातैं दोयमें संभवता वर्गमूल घटाएं एक अवशेष रहै ताका वर्ग कीए एक ही होय किछू वधै नांही। तातैं तीन आदिक विषै ही कृतिका लक्षण संभवनेतैं कृति पणौं कह्यौ ॥ १६ ॥

आगें कह्या जो लक्षयोजन व्यासकौं लीएं कुंड ताका समस्त क्षेत्रफल जाननेकौं कहै हैं;—

**वासो तिगुणो परिही वासचउत्थाहदो दु खेत्तफलं।**
**खेत्तफलं वेहगुणं खादफलं होइ सव्वत्थ ॥ १७ ॥**

व्यासस्त्रिगुणः परिधिः व्यासचतुर्थाहतस्तु क्षेत्रफलम्।
क्षेत्रफलं वेधगुणं खातफलं भवति सर्वत्र ॥ १७ ॥

**अर्थ**—व्यासके प्रमाणकौं तिगुणा कीएं परिधिका प्रमाण होइ, गोलक्षेत्रका गिरदका जो प्रमाण सो परिधि कहिए। सो इहां लक्ष योजनका व्यास है ताकौं तिगुणा कीएं तीन लाख योजन परिधिका प्रमाण भया। बहुरि व्यासकी जु चौथाई ताकरि परिधिकौं गुणें क्षेत्रफल होई। सो इहां व्यासकी चौथाई लाख योजनकौं गुणें क्षेत्रफल होई। एक एक योजनका लंबा चौड़ा खंड कीएं इतने होंहि। बहुरि क्षेत्रफलकौं वेध जो उंडाईका प्रमाण ताकरि गुणें खातफल हो है। सर्वत्र ऐसा विधान जानना। सो इहां कह्या जो क्षेत्रफल ताकौं हजार योजन उंडाई करि गुणे खातफल होई। एक एक योजनका लंबा चौंडा ओंडा खंड कीएं इतनें होंहि सो खातफल इतना भया ३ ल

ल × × १००० यो। इहां तीन लक्षकी सहनानी ऐसी ३ ल, लक्षकी चौथाईकी ऐसी ¼ ल, हजारकी ऐसी १००० इनकी चौथाईतै परिधिकौं गुणें क्षेत्रफल कह्या सो ताका विधानरूप वासनाका वर्णन संस्कृत टीकातैं जानना ॥ १७ ॥

आगें स्थूल खातफलविषें जे प्रमाण योजन कहे तिनका व्यवहार योजन करता संता सूत्र कहै हैं;—

थूलफलं ववहारं जोयणमवि सरिसवं च कादव्वं।
चउरस्ससरिसवा ते णवसोडस भाजिदा वट्टं ॥ १८ ॥

स्थूलफलं व्यवहारं योजनमपि सर्षपश्च कर्तव्यः।
चतुरस्त्रसर्षपास्ते नवषोडश भाजिता वृत्तम् ॥ १८ ॥

अर्थ—तारतम्य विना स्थूलपनैं करि जो क्षेत्रफल होइ सो स्थूलफल कहिए। सूक्ष्म परिधिकरि सूक्ष्म क्षेत्रफल हो है सो ताका विधान आगैं वर्णन होईगा। इहां स्थूल क्षेत्रफलकी अपेक्षा ही वर्णन है सो इहां स्थूल क्षेत्रफलविषै प्रमाण योजन इतने हैं—३ ल ¼, १०००। तहां एक प्रमाणयोजनके पांचसै व्यवहार योजन होइ तौ इतने योजननिका कितनें व्यवहार योजन होइ ऐसें त्रैराशिक विधिकरि इनके व्यवहार योजन करनें। तहां अंगुल तीन प्रकार है—उत्सेधांगुल, प्रमाणांगुल, आत्मांगुल। तहां उत्सेधांगुलतैं जहां योजनका प्रमाण होइ सो व्यवहार योजन जानना, बहुरि प्रमाणांगुलतैं योजनका प्रमाण होय सो प्रमाणयोजन जानना। सो उत्सेधांगुलतैं प्रमाणांगुल पांचसै गुणा है तातैं योजनविषैं भी पांचसै हीका गुणकार कह्या। बहुरि अपि शब्दतैं त्रैराशिकविधिकरि ही एक योजनके च्यारिकोश, एक कोशके दोय हजार धनुष, एक धनुषके च्यारि हाथ, एक हाथका अंगुल चौबीस १, ४, २०००, ४, २४, इनकौं परस्पर गुणें एक योजनके सात लाख अडसठि हजार अंगुल भए, ते करनें। बहुरि एक अंगुलका आठ यव, एक यवका आठ सरसौं करनें सो घनराशिके गुणकार वा भागहार घनरूप ही होइ, जैसे एक हाथ लंबा चौडा क्षेत्र होई ताकी अंगुल करिए तब एक हाथकी चौईस अंगुल। सो इहां चौईसका घनकीएं जो प्रमाण होइ तितना एक अंगुल लंबा चौडा ऊंडा खंड होइ तैसैं इहां भी जो ए गुणकाररूप राशि कह्या तिनका घन करना सो घन करनेके अर्थ तीन तीन जायगा मांडि परस्पर गुणन करना। तहां क्षेत्रफल ऐसा ३ ल। ¼। १००० याके गुणकार ऐसे ५००, ५००, ५०००, ७६८०००, ७६८०००, ७६८०००, ८, ८, ८, ८, ८, ८, इनकौं परस्पर गुणें चौकोर सरसोंका प्रमाण होइ, इनकौं नवका सोल्हां भाग $\frac{9}{16}$ दिएं वृत्त जो गोल सरसोंका प्रमाण होइ। सो "हारस्य हारो गुणकोंशराशेः" इस वचनतैं भागहारका भागहार सो राशिका गुणकार होइ। जैसैं हजारकौं सौका चौथा भागका भाग दैना होइ तहां हजारकौं च्यारिकरि गुणिए अर सौका भाग दीजिए सो इहां नवका सोल्हां भागका भाग है सो पूर्वोक्त राशिकौं सोला गुणांकरि नवका भाग दैनां तातैं सोला भी गुणकार ही भया। ऐसैं करतैं सर्व गुण्य गुणकार ऐसा भया ३०००००, १०००००, १०००, ५००, ५००, ५००, ७६८०००, ७६८०००, ७६८०००, ८, ८, ८, ८, ८, ८,

१६ इनकौं परस्पर गुणनां अर याके नीचे चारिका अर नवका भागहार देना ४, ९। तहां गुणाकारके अंकनिविषैं जहां आठका अंक था तहां दोयकरि विरलन करि आठकी जायगा तीन दूवा मांडिए २, २, २, जातैं इनकौं परस्पर गुणें भी आठ ही हो है। बहुरि इनि तीनौं दूवानिकरि तीन जायगा पांचसै माड्या था तिनकौं गुणें तीन जायगा हजार हजार हुवा, हर एक आठका गुणाकारका लोप हुवा तब ऐसा हुवा ३०००००, १०००००, १०००, १०००, १०००, ७६८०००, ७६८०००, ७६८०००, ८, ८, ८, ८, ८, १६। बहुरि इन विषैं जे इकतीस विंदी हैं तिनकौं तौ जुदी काढिए अर एकका गुणकारतैं किछू वधै नांहीं तातैं एक जहां होइ ताका लोप करिए तब ऐसा होइ ३, ७६८, ७६८, ७६८, ८, ८, ८, ८, ८, १६, विंदी ३१। बहुरि इन विषै एक आठका अंककौं दोयकरि फेरि विरलन करि तहां जे तीन दूवा भए तिन करि आठका जे तीन अंक तिनकौं गुणें आठका अंककी तीन जायगा सोलह सोलहका अंक होइ अर एक आठका अंकका लोप होइ अर एक सोलहका अंक गुणकारविषैं था ही। ऐसैं चारि जायगा सोलहके अंक भए १६, १६, १६, १६। इनकौं परस्पर गुणें पणट्ठी होइ। पैंसठि हजार पांचसै छत्तीसकौं पणट्ठी कहिए हैं। तब ऐसा भया ३, ७६८, ७६८, ८, ६५५३६, विंदी ३१। बहुरि तीन जायगा सातसैं अडसठिका अंक था तिनकी जायगा दोयसै छप्पन्न अर तीनका अंक करना, जातैं दोयसैं छप्पनकौं तीन करि गुणें सातसैं अडसठि होइ। बहुरि तीन जायगा दोयसै छप्पन लिखे तिन विषै दोय जायगाके दोयसै छप्पनकौं परस्पर गुणें पणट्ठी होइ अर एक आगैं पणट्ठी थी, इन दोउनिकौं परस्पर गुणें बादाल होइ। चारिसै गुणतीस कोडि गुणचास लाख सतसठि हजार दोयसै छिनवैकौं बादाल कहिए। ताकी सहनानी ऐसी ४२=। ऐसैं करते ऐसा भया ३, २५६, ३, ३, ३, ८, ४२=, विंदी ३१। बहुरि दोय जायगा तीनका अंक है तिनकौं परस्परगुणें नव होइ। बहुरि एक जायगा आठका अंक है ताकौं भागहारविषैं चारिका अंक था तीहकरि अपवर्तन कीए आठ की जायगा दोयका अंक भया तीहकरि नवकौं गुणैं अठार भए, तब ऐसा २५६, ३, ३, १८ ४२=, ३१ विंदी। बहुरि दोय जायगा तीनका अंक है तिनकौं परस्पर गुणें नव भए, ताकौं भागहारविषैं नवका अंक था ताकरि अपवर्तन कीए लोप भया। ऐसैं करतैं ऐसा भया ४२=, २५६, १८, विंदी ३१। या प्रकार बादालकौं दोयसै छप्पन अर अठारहकरि गुणि आगैं इकतीस विंदी दीजिए। इतना सर्व गोल सरसौंनिकरि सो कुंड भरिए हैं॥ १८॥

आगैं नवका सोलह्वां भागका भाग दीएं गोल होइ इसका वासनारूप निपज्या खातफलकौं कहैं हैं;—

**वासद्धघणं दलियं णवगुणियं गोलयस्स घणगणियं।**
**सव्वेसिंपि घणाणं फलत्तिभागप्पिया सूई॥ १९॥**

व्यासार्द्धघनः दलितः नवगुणितः गोलकस्य घनगणितम्।
सर्वेषामपि घनानां फलत्रिभागात्मिका सूची॥ १९॥

**अर्थ**—जितना व्यास होइ ताके आधाका घन करिए बहुरि ताकौं आधा करिये। बहुरि नव करि गुणिए ऐसैं करतैं गोल वस्तुका घनफल होइ। तहां विवक्षित व्यास एक ताका आधाका

घन ( $\frac{1}{2}$ $\frac{1}{2}$ $\frac{1}{2}$ ) कीएं एकका आठवां भाग भया याकौं आधा किएं एकका सोल्हां भाग भया, याकौं नवगुणा कीएं नवका सोल्हां भाग भया। ऐसैं करि नवका सोल्हां भागका भाग चौकोरकौं दीएं गोल वस्तुका घनरूप फल जाननां। बहुरि सर्वही घनक्षेत्रनिका फलकै तीसरैं भाग प्रमाण सूचीफल हो है। इहां सूचीफल नाम शिखाफलका जाननां। पृथ्वीकै ऊपरि भींति इत्यादिकका सहारा विना आकाश विषैं अन्नादिकका जो राशि करिए अथवा खाडा इत्यादिक भरि करि तहां पीछैं ताकै ऊपरि जो आकाश विषै अन्नादिकका राशि करिए सो राशि जितनें आकाशकौं रोकै तिसका नाम सूचीक्षेत्र वा शिखाक्षेत्र कहिए। ताका घनरूप क्षेत्र कहिए। ताका घनरूप क्षेत्रफलका प्रमाण करना सो सूचीफल वा शिखाफल कहिए। बहुरि नवका सोल्हां भागका भाग दीएं गोल कैसैं होइ ताकी वासनाका विधान संस्कृत टीकातैं जानना। बहुरि तहां नवका सोल्हां भाग प्रमाण चौकोर सरसौंका एक गोल सरसौं भएं पूर्वोक्त प्रमाण चौकोर सरसौंनिका कितनां गोल सरसौं होइ ऐसैं त्रैराशिक विधान करि नवका सोल्हां भागका भाग दीया है। बहुरि त्रिभुज क्षेत्र चतुर्भुज क्षेत्र वृत्तक्षेत्र इनका 'मुह भूमी जोगदले' इत्यादि सूत्र करि। बहुरि 'भुज कोटि' इत्यादि सूत्र करि। बहुरि 'वासो तिगुणो परिही' इत्यादि सूत्रकरि अनुक्रमतैं क्षेत्रफलकौं अणाइ ताकौं तीनका भाग दीएँ जो जो प्रमाण आवैं सो सो तिस तिस क्षेत्रका सूचीफल जानना। जातैं क्षेत्रफल तौ उचाई विषै समानता अपेक्षा भया। इहां सूचीफल विषै उचाई क्रमहीन तीखी हैं। तातैं तीसरे भागि सूचीफल कह्या है॥ १९॥

आगैं तिस कुंडका स्थूल क्षेत्रफलविषै जेते सरसौं माए तिस राशिकौं कहै हैं:—

**वादालं सोलसकदिसंगुणिदं दुगुणणवसमब्भत्थं।**
**इगितीससुण्णसहियं सरिसवमाणं हवे पढमे॥ २०॥**

वादालं पोडशकृतिसंगुणितं द्विगुणनवसमभ्यस्तम्।
एकत्रिंशत्शून्यसहितं सर्षपमानं भवेत् प्रथमे॥ २०॥

**अर्थ**—वादाल ४२=कौं सोल्हका वर्ग दोयसै छप्पन तीहकरि गुणिए बहुरि ताकौं दूणा नव अठारह तीह करि गुणिए बहुरि आगैं इकतीस विंदी करि संयुक्त करिए। इतनां सरसौंनिका प्रमाण प्रथम कुंड विषै हो हैं। सो वर्णन पूर्वैं कीया ही था। ॥ २०॥

आगैं ऐसैं कीएं कहा प्रमाण होइ सो कहै हैं;—

**विधुणिधिणगणवरविणभणिधिणयणवलद्धिणिधिखराहत्थी।**
**इगितीससुण्णसहिया जंबूए लद्धसिद्धत्था॥ २१॥**

विधुनिधिनगनवरविनभोनिधिनयनवलब्धिनिधिखरहस्तिनः।
एकत्रिंशच्छून्यसहिताः जंबौ लब्धसिद्धार्थाः॥ २१॥

**अर्थ**—यहां पदार्थनिके नामतैं तिन पदार्थनिकी जो संख्या तिस संख्यारूप अंकका ग्रहण करना। सो विधु जो चंद्रमा सो एक बहुरि निधि नव बहुरि नग जो पर्वत सो सात बहुरि नवका अंक बहुरि रवि जो सूर्य सो राशि अपेक्षा बारह बहुरि नभ शून्य बहुरि निधि नव बहुरि नयन

दोय वहुरि वल जो बलिभद्र सो नव वहुरि ऋद्धि नव वहुरि निधि नव वहुरि खर छह वहुरि हस्ती जो दिग्गज सो आठ इनकी संख्याके तैं क्रमतैं अंक लिखनें वहुरि आगैं इकतीस शून्य सहित करनैं। ऐसे अंकनि करि जो प्रमाण होइ तितना जंबूद्वीप समान जो कुंड तीह विषैं लब्ध सिद्धार्थाः जो प्राप्त भए विवक्षित सरसौं ते जानने। १९७९१२०९२९९९६८०००००००००००००
०००००००००००००००००० ॥ २१ ॥

आगैं सर्व जे कुंड तिनका सिद्ध भया जो शिखाफल ताकौं कहै हैं;—

**परिणाहेक्कारसमं भागं परिणाहछट्ठभागस्स ।**
**वग्गेण गुणं णियमा सिहाफलं सव्वकुंडाणं ॥ २२ ॥**

परिणाहैकादश भागः परिणाहषष्टभागस्य ।
वर्गेण गुणं नियमात् शिखाफलं सर्वकुंडानाम् ॥ २२ ॥

**अर्थ**—परिधिका ग्यारह्वां भाग ताकौं परिधिका छठा भागका वर्गकरि गुणि नियमतैं सर्व अनवस्थादिकुंडनिका शिखाफल हो है। इहां परिधि तीन लाख योजन ताकौं ग्यारहका भाग दीएं जो प्रमाण होइ ताकौं परिधि तीन लाख योजनका छठा भाग पचास हजार योजन ताका वर्ग करि तीह स्यौं गुणिए जो प्रमाण होइ सो इहां कुंडका शिखाफल जानना। आगैं इस सिद्ध फलकी वासना कैसैं सो कहै हैं। व्यासतैं तिगुणी परिधि याकौं व्यासकी चौथाईतैं गुणें कुंडका क्षेत्रफल ऐसा ( ३ ल। $\frac{१}{४}$ ल ) वहुरि इस कुंडकै उपरि आकाशविषैं करी हुई राशि ताकी उंचाई परिधिकै ग्यारवैं भागि प्रमाण होइ तीह करि गुणें ऐसा भया ( ३ । $\frac{१}{४}$ ल $\frac{३}{११}$ ल ) वहुरि 'फल त्रिभाग प्पिया सूई' इस सूत्र करि क्षेत्रफलका तीसरा भाग प्रमाण सूचीफल होइ तातैं याकौं तीनका भाग देना वहुरि भाज्यविषैं जहां तीन लाख लिख्या ताकौं इस तीनका भागहार करि अपवर्त्तन कीएं तीन लाखकी जायगा एक लाख हूवा। वहुरि भागहार विषैं जो च्यारिका अंक था ताकौं दोय करि विरलन कीएं च्यारिकी जायगा दोय वार दोयका अंक भया वहुरि गाथाका अनुक्रमकै अर्थि उपरि भाज्य विषैं जहां एक एक लाखका अंक था ताकौं तिगुणा करि तीन तीन लाख कीए अर नीचैं जो दोयवार दोयका अंक थे तिनकौं तिगुणा करि छह कीए। ऐसैं करतैं ऐसा ( $\frac{३}{११}$ । $\frac{३}{६}$ ल $\frac{३}{६}$ ल ) भया। इहांतैं आचार्यनें परिधिका, ग्यारह्वां भागकौं परिधिका छठा भागका वर्ग करि गुणें क्षेत्रफल होइ ऐसा कह्या है। ऐसैं क्षेत्रफल करि वहुरि इनका पूर्वोक्त प्रकार व्यवहार योजन अंगुल यव सरसौं गोल सरसौं करनें॥ २२ ॥

आगैं कौन कौनका वेध जो ढेरकी उचाईका प्रमाण सो परिधिकै ग्यारहैं भाग प्रमाण हो है;—

**तिलसरिसववल्लाढइ-चणयतसिकुलत्थरायमासादि ।**
**परिणाहेक्कारसमो वेहो जदि गयणगो रासी ॥ २३ ॥**

तिलसर्पपवल्लाढकीचणकातसिकुलत्थराजमापादेः ।
परिध्येकादशमो वेधो यदि गगनगो राशिः ॥ २३ ॥

**अर्थ**—तिल अर सरसौं अर वल्ल अर अरहड अर चणें अर अतसि अर कुलत्थ अर राजमाष-उड़द इत्यादिक वस्तुनिका राशि सो जो गगनगत कहिये आकाशकौं प्राप्त होइ तौ ताका वेध परिधिकै ग्यारहैं भाग प्रमाण होइ।

भावार्थ—तिल सरसों आदिक ले वस्तु तिनका ढेर होइ तौ तिस ढेरका मूल विषै जितना परिधिका प्रमाण होइ ताकै ग्यारहैं भागि सो ढेर ऊँचा होइ। जैसे कहीं पृथ्वी उपरि तिलनिकी राशि है तिस राशिका पृथ्वी विषै गिरदरूप परिधिका प्रमाण ग्यारह हाथ हैं तौ सो वह राशि पृथ्वी तैं एक हाथ पर्यंत ऊंचा आकाश विषै होइ॥ २३ ॥

आगैं कुंडनिकै उपरि सिखाऊं भरनें करि तिस शिखा विषैं जितनां गोल सरसोंका प्रमाण आया ताकौं कहै हैं;—

**वेरूवतदियपंचमवग्गं अट्ठारसेहिं संगुणियं।**
**तेत्तीससुण्णजुत्तं हरभजिदं जंबुदीवसिहा॥ २४॥**

द्विरूपतृतीयपंचमवर्गः अष्टादशैः संगुणितः।
त्रयस्त्रिंशच्छून्ययुक्तः हरभक्तः जंबूद्वीपशिखा॥ २४॥

**अर्थ**—आगैं कहिए है द्विरूपवर्ग धारा ताका तीसरा वर्गस्थान तौ दोयसैं छप्पन अर पांचमां वर्गस्थान बादाल इनकौं परस्पर गुणि बहुरि अठारह करि गुणिए। बहुरि तिनकैं आगैं तेतीस बिंदी दीजिए बहुरि इस प्रमाणकौं हर कहिए रुद्र ग्यारह हैं तातैं इहां हर सब्द करि ग्यारह जाननें सो ग्यारहका भाग दैनां। ऐसैं करतें जंबूद्वीप समान जो कुंड ताकैं उपरि कीया जु ढेर ताका शिखा फल जो तिसविषै गोल सरसोंका प्रमाण होइ सो जाननां॥ २४॥

आगैं ऐसैं करतैं जे अंक सिद्ध भए तिनकौं क्रम तैं कहै हैं;—

**इगिसगणवणवदुगणभणभट्ठचउपणचउक्कपणसोलं।**
**सोलसछत्तीसजुदं हरहिदचउरो य पढमसिहा॥ २५॥**

एकसप्तनवनवद्विकनभोनभोष्टचतुःपंचचतुष्कपंचषोडश।
षोडशषट्त्रिंशद्युतं हरहितचतुष्कं च प्रथमशिखा॥ २५॥

**अर्थ**—एक सात नव दोय बिंदी बिंदी आठ च्यारि पांच च्यारि पांच सोलह अर आगैं सोलह जायगा छतीस अर च्यारिका ग्यारवां भाग इतनैं अंक लिखें जो प्रमाण होइ तितनें प्रथम अनवस्था कुंडकी शिखाविषै सरसौंनिका प्रमाणरूप फल जाननां। १७९९२००८४५४५१६-३६३६३६३६३६३६३६३६३६३६३६३६३६३६३६३६ $\frac{४}{११}$॥२५॥

आगैं कुंडका क्षेत्रफल अर शिखाका क्षेत्रफल मिलाइ करि कहै हैं;—

**वासद्धकदी तिगुणा वेहगुणेकारसहिदवासगुणा।**
**एयारसपविभत्ता इच्छिदकुंडाणमुभयफलं॥ २६॥**

व्यासार्धकृतिः त्रिगुणा वेधगुणैकादशसहितव्यासगुणा।
एकादशप्रविभक्ता इच्छितकुंडानामुभयफलम्॥ २६॥

**अर्थ**—व्यासका जो आधा प्रमाण ताका वर्ग कीएं जो प्रमाण होइ ताकौं तिगुणा करिए बहुरि वेध जो कुंडकी उंडाई ताका प्रमाण करिये ग्यारहकों गुणें जो प्रमाण होइ तीह सहित जो व्यासका प्रमाण ताकरि गुणिए। ऐसैं करतैं जो प्रमाण होइ ताकौं ग्यारहका भाग दीजिए। तब विवक्षित कुंडनिका कुंडफल अर शिखाफलके मिलावने रूप उभय फल हो हैं। सो प्रथम कुंड विषैं व्यास लक्ष योजन ताका आधा ऐसा ( १ ल ÷ २ ) ताका वर्ग ऐसा (१ ल ÷ २, १ ल ÷ २) बहुरि याकौं तिगुणा कीए ऐसा होइ ($\frac{१}{२}$ल $\frac{१}{२}$ल ३) बहुरि याकौं वेध जो कुंडकी उंडाई हजार योजन ताकौं ग्यारह हजार भए। तिनकौं व्यासका प्रमाण लक्ष योजन विषैं जोडें ऐसा भया १११००० तीह करि गुणे ऐसा $\frac{१}{२}$ल, $\frac{१}{२}$ल, ३, १११००० भया याकौं ग्यारहका भाग दीएं अनवस्था कुंडका उभयफल ऐसा भया ( $\frac{१}{२}$ल, $\frac{१}{२}$ल, $\frac{३}{११}$ १११००० ) सोई कहिए है वासो तिगुणो 'परिही' इत्यादि सूत्र करि कुंडका खात फल ऐसा ( ३ ल $\frac{१}{४}$ ल ) याकौं परिधिका ग्यारहां भाग करि गुणें तीनका भाग दीएं सूचीफल ऐसा हो है ( ३ ल $\frac{१}{४}$ ल $\frac{३}{११}$ ल ÷ ३) बहुरि कुंडका खात फल अर सूची फल दोऊ मिलावनां तहां गाथाका अनुसार करि पूर्वोक्त दोऊ राशिनिकौं तीन करि भेदिए जहां तीनका अंक लिखाथा तहां तौ एक का अंक करिए अर आगैं तीनका गुणकार करिए तब ते दोऊ राशि ऐसे होइ (खातफल $\frac{१}{१}$ल, $\frac{१}{४}$ल ३।१०००। सूचीफल $\frac{१}{१}$ ल $\frac{१}{४}$ $\frac{३}{११}$ ल ÷ ३) बहुरि अब इन दोऊनिकौं जोडनें तहां सूचीफल विषै तीनका ही भाग हार जांनि अपवर्त्तन करि दोऊनिका लोप करिए। बहुरि भिन्नगणितकै अनुसारि समछेद विधान करिए तहां लकारका लकार अर अंकका अंक समान देखि सूचीफल विषै आधिक रह्या जो एक लाखका ग्यारहां भाग खातफल विषै अधिक रह्या एक हजार ताकौं ग्यारह करि समछेद कीएं ग्यारह हजारका ग्यारहां भाग भया ताकौं मिलाए एक लाख ग्यारह हजारका ग्यारहवां भाग मात्र गुणकार कीएं उभय फल ऐसा होई ($\frac{१}{२}$ल $\frac{१}{२}$ल३ $\frac{१११०००}{११}$) इसकौं देखि 'वासद्ध कदी' इत्यादि करण सूत्र आचार्यनैं कुंडनिका उभय फल करनैंका कह्या। बहुरि कह्या जु यह प्रमाण योजनरूप क्षेत्रफल ताके पूर्वोक्त प्रकार करि व्यवहार योजन अंगुल यव सरसौं गोलसरसों करनें ॥ २६ ॥

ऐसें करते जो राशि होइ ताकौं कहै हैं;--

**वादालमट्ठघणइगिहीणसहस्साहदं एगारहिदं।**
**इगितीससुण्णसहियं जंबूदीवुभयसिद्धत्था ॥ २७ ॥**

वादलमष्टघनैकहीनसहस्राहतं एकादशहितम्।
एकत्रिंशच्छून्यसहितं जंबूद्वीपोभयसिद्धार्थाः ॥ २७ ॥

**अर्थ**—वादाल ४२=कों आठका घन पांच सै बारह तींह करि गुणिये बहुरि एक घाट हजार (९९९) करि गुणिए ग्यारहका भाग दीजिए आगैं इकतीस सून्य सहित करिए ऐसैं करतैं जंबूद्वीप समान कुंड अर ताकी शिखाका क्षेत्रफल विषै सरसौंका प्रमाणरूप सिद्ध भए अर्थ जाननें। ४२=५१२।९९९।३१ शून्य ॥ २७ ॥

आगैं ऐसैं करतैं जे अंक भए तिनकौं कहे हैं ;—

**इगि णव णव सगिगिगिदुगणवतिण्णडचउपणेक्कतिगिछक्कं ।**
**पण्णरछत्तीसजुदं हरहिदचउरो य पढमुभयं ॥ २८ ॥**

एक नव नव सप्तैकैकद्विकनवत्रिअष्टचतुःपंचैकत्र्येकषट्कम् ।
पंचदशषट्त्रिंशद्युतं हरहितचतुष्कं च प्रथमोभयम् ॥ २८ ॥

अर्थ—एक नव नव सात एक एक दोय नव तीन आठ च्यारि पांच एक तीन एक छह अर पंद्रह जायगा छतीस अर हरहित चतुष्क कहिए च्यारिका ग्यारहवां भाग इतनैं अंकनि करि जो प्रमाण होइ तितनैं प्रथम अनवस्था कुंडविषै सिखाऊ भरें सरसौंनिका प्रमाणरूप उभय फल हो हैं। १९९७११२९३८४५१३१६३६३६३६३६३६३६३६३६३६३६३६३६३६३६३६ $\frac{४}{११}$ ॥ २८ ॥

आगैं दुप्पहुदिसरसवेहिं अणवच्छा पूरयेदव्वा ऐसा पूर्वै सूत्र कहि ताका प्रसंग था प्रसंगका का प्रसंग पाइ यह सर्व वर्णन करि जाका अधिकार था तिस प्रकृतकौं कथन विषै जोड़ै हैं;—

**पुण्णा सइमणवत्था इदि एगं खिव सलागकुंडम्हि ।**
**तं मज्झिमसिद्धत्थे मदिए देवो व घित्तूणं ॥ २९ ॥**

पूर्णा सकृदनवस्था इत्येकां क्षिप शलाकाकुंडे ।
तन्मध्यसिद्धार्थान् मत्या देवो वा गृहीत्वा ॥ २९ ॥

**अर्थ**—सकृत् कहिए एक वार अनवस्था कुंड पूर्ण किया भन्या तव एक सरसौं शलाका नामा दूसरा कुंड विषैं क्षेपी। वहुरि तिस अनवस्था कुंडके मध्यवर्ती जे सर्व सिद्धार्थ कहिए सरसौं तिनकौं मति कहिए बुद्धिका विचार तीह करि ग्रहण करै अथवा देव ग्रहण करै ॥ २९ ॥

बहुरि ग्रहण करि कहा करत भया सो कहैं हैं;—

**दीवसमुद्दे दिण्णे एक्केक्के परिसमप्पदे जत्थ ।**
**तो हिट्ठिमदीउवही कयगत्तो तेहिं भरिदव्वो ॥ ३० ॥**

द्वीपसमुद्रे दत्ते एकैकस्मिन् परिसमाप्यते यत्र ।
ततः अधस्तनद्वीपोदधिषु कृतगर्तस्तैः भर्तव्यः ॥ ३० ॥

**अर्थ**—एक एक द्वीप विषैं वा समुद्र विषै एक एक सरसौं दीजिये यौं करतां जहां द्वीप वा समुद्र विषै सरसौं दीएं समाप्त होइ तींह द्वीप वा समुद्रस्यौं लगाय पहली जे भये द्वीप वा समुद्र जंबूद्वीप पर्यंत तिन सवनिका प्रमाणकै समान अर पूर्वोक्त वेध हजार योजनका उंडा ऐसा कुंड करना। सो कुंड तिन पूर्वोक्त प्रकार गोल सरसोंनिकरि भरनां ॥ ३० ॥

आगैं यहु कीया जो दूसरा अनवस्था कुंड ताका क्षेत्रफल ल्यावनैंका उपाय भूत जो गच्छ ताकौं कहै हैं;—

**बिदिये पढमं कुंडं गच्छो तादिए दु पढमबिदियदुगं ।**
**इदि सव्वपुव्वगच्छा तहिं तहिं सरिसवा सज्झा ॥ ३१ ॥**

द्वितीये प्रथमं कुंडं गच्छः तृतीये तु प्रथमद्वितीयद्विकम्।
इति सर्वपूर्वगच्छाः तैः तैः सर्पपाः साध्याः ॥ ३१ ॥

**अर्थ**—दूसरा कुंड विषैं माए हूए सरसौंनिका प्रमाण ल्यावनैंकै अर्थि पहला अनवस्था कुंड विषै जेते सरसौं भरे गए तीह प्रमाण गछ जाननां। बहुरि तीसरा कुंड विषै सरसौंनिका प्रमाण ल्यावनैंकैं अर्थि पहला दूसरा अनवस्था कुंड विषै जेते सरसौं भरे गए तींह प्रमाण गछ जाननां। ऐसैंही चौथा आदि अनवस्था कुंडनि विषै सरसौंनिका प्रमाण ल्यावनैंकैं अर्थि सर्व पहला पहला प्रथम द्वितीय तृतीयादि अनवस्था कुंडनि विषै जेते जेते सरसौं भरे गए तींह प्रमाण गछ जाननां। बहुरि तिन गछनिका प्रमाण करि सरसौंका प्रमाण साधनां। तींह तींह गछका प्रमाणकौं ग्रहि करि आगैं कहिएगा जो 'रूऊणाहियपद' इत्यादि करण सूत्र तींह करि सूची व्यासका प्रमाणकों ल्याइ तिनका सूची व्यासका प्रमाणकौं ल्याइ तिनका सूची व्यास प्रमाण तिन द्वितीयादि कुंडनिका व्यासका प्रमाण जांनि। बहुरि पीछैं 'वासो तिगुणो परिही' इत्यादि पूर्वैं करण सूत्र कहे तिन करि तिस तिस कुंड विषैं सरसौंनिका प्रमाण शिखासहित साधनां। इहां सन्मुख दोऊ तटनि विषै बीचिका जेता अंतराल ताका नाम सूचीन्यास जाननां ॥ ३१ ॥

आगैं तिस कीया हूवा दूसरा अनवस्था कुंडकौं भरें कहा हो है सो कहैं हैं;—

**विदिए वारे पुण्णं अणवट्ठिदमिदि सलागकुंडम्हि।**
**पुणरपि णिक्खिविदव्वा अवरेगा सरिसवाण सला ॥ ३२ ॥**

द्वितीये वारे पूर्णे अनवस्थितमिति शलाकाकुंडे।
पुनरपि निक्षेप्तव्या अवरैका सर्पपाणां शलाका ॥ ३२ ॥

**अर्थ**—दूसरी बार किया जो अनवस्थित कुंड सो तिन सरसौंहीनि करि पूर्ण कीया तब शलाका कुंड विषै और एक दूसरी सरसौं नांखणी ॥ ३२ ॥

आगैं ऐसैं कीएं भी कहा सो कहे हैं:—

**एवं सलागभरणे रूवं णिक्खिवदु पडिसलागम्हि।**
**रित्तीकदेवि भरिदे अवरेगं पडिसलागम्हि ॥ ३३ ॥**

एवं शलाकाभरणे रूपं निक्षिपतु प्रतिशलाकायाम्।
रिक्तीकृतेपि भृते अपरैकं प्रतिशलाकायाम् ३३ ॥

**अर्थ**—ऐसैंही वधता वधता व्यासकै लिएं हजार योजनके उंडे, अनवस्था कुंड एक एक करि भरिए। तव एक एक सरसौं शलाका कुंड विषै नांखते जाईए। तहां अनवस्था कुंडके सरसौं-निका ग्रहण करि जिस द्वीप वा समुद्रकी सूचीन्यास समान अनवस्था कुंड कीया तिस द्वीप वा समुद्रतैं अगले द्वीप वा समुद्रनि विषै एक एक सरसौं गेरते जाईए जहां समाप्त होइ तहां तै लगाय जंबूद्वीपपर्यंत सर्व द्वीप समुद्रनिकै समान नवीन अनवस्था कुंड करि भरिए एक सरसौं शलाका कुंड विषै गेरिए बहुरि पूर्वोक्त प्रकारही कार्य करनां। ऐसैंही करतैं करतैं पहला अनवस्था कुंड विषै जेता सरसौंनिका प्रमाण कह्या था तितनें अनवस्था कुंड भएं शलाका कुंड भरै तब एक सरसौं

प्रतिशलाका कुंड विषैं गेरिए। बहुरि तिस शलाका कुंडकौं रीता करि पूर्वोक्त प्रकार करि ही बधता बधता व्यासकौं लीएं अनवस्था कुंड करि करि भरिए तब एक सरसौं शलाका कुंड विषैं गेरिए। ऐसैं करतैं करतैं दूसरी बार भी शलाका कुंड भरैं तब एक सरसौं और प्रतिशलाका कुंड विषै निक्षेपण करनां। ऐसैंही एक एक बार शलाकाकुंडकौं रीता करि करि भरिए तब तब एक एक सरसौं प्रतिशलाकाकुंड विषैं नांखते जाइए॥ ३३॥

आगैं ऐसैं भरें भी कहा सो कहैं हैं:—

एवं सावि य पुण्णा एगं णिक्खिव महासलागम्हि।
एसावि कमा भरिदा चत्तारि भरंति तक्काले॥ ३४॥

एवं सापि च पूर्णा एकं निक्षिप महाशलाकायाम्।
एषापि क्रमाद्भृता चत्वारि ध्रियंते तत्काले॥ ३४॥

अर्थ—ऐसैंही करतैं पहला अनवस्था कुंड विषैं जेते सरसौं भरे गए थे तिस प्रमाणका वर्गके समान अनवस्था कुंड भरैं प्रतिशलाका कुंड भी भऱ्या जाय तब एक सरसौं महाशलाका नाना कुंड विषै नांखिए। बहुरि तिस प्रतिशलाका कुंडकौं भरि ताकरि पूर्वोक्त प्रकार अनवस्था कुंडनिके भरणें करि तौ शलाका कुंडकौं अर शलाका कुंडनिके भरणें करि प्रतिशलाका कुंडकौं एक एक बार भरि एक एक सरसौं महाशलाका कुंड विषै गेरते जाइये। ऐसैं करतैं जब महाशलाका कुंड भी भऱ्या जाय तीह काल विषै च्यारयौं ही कुंड भरिये है। पहला अनवस्था कुंड विषैं जेते सरसौं भरे गए थे तिस प्रमाणका घन ताके समान अनवस्था कुंड भए महाशलाका कुंडका भरण हो है। सो ए सर्व अनवस्थाकुंड बधता बधता व्यास प्रमाणकौं लीएं हैं। जातैं अनवस्था कुंडके सरसौं ग्रहण करि आगले आगले द्वीप वा समुद्र विषै एक एक सरसौं दीए जिस द्वीप वा समुद्र विषै ते सरसौं समाप्त होइ तिस ही द्वीप वा समुद्रका सूची व्यासके समान नवीन कीया हूवा अनवस्था-कुंडका व्यास हो हैं। यातैं ही याका नाम अनवस्थित कुंड है। ऊंडाई सर्व कुंडनिकी हजार योजन हीकी जाननी॥ ३४॥

आगैं इतनैं भरनें करि कहा सो कहै हैं:—

चरिमणवट्ठिदकुंडे सिद्धत्था जेत्तिया पमाणं तं।
अवरपरीतमसंखं रूऊणे जेट्ठ संखेज्जं॥ ३५॥

चरमानवस्थितकुंडे सिद्धार्थाः यावंति प्रमाणं तत्।
अवरपरीतमसंख्यं रूपोने ज्येष्ठं संख्येयम्॥ ३५॥

अर्थ—तहां अंतका जो अनवस्थित कुंड तीह विषै जेते प्रमाणकौं धरैं सिद्धार्थाः कहिये सिखा सहित सरसौं भरे गए तीह प्रमाण जघन्य परीतासंख्यात जाननां। यामैं रूप कहिए येक घटाएं उत्कृष्ट संख्यात जाननां॥ ३५॥

आगैं इसहीकौं धरि असंख्यात अनंतकी उत्पत्तिको भेद वा भेदनिके भेद तिनकौं सोलह गाथानि करि कहै हैं:—

**अवरपरित्तस्सुवरिं एगादीवड्ढिदे हवे मज्झं।**
**अवरपरित्तं विरलिय तमेव दादूण संगुणिदे ॥ ३६ ॥**

अवरपरीतस्योपरि एकादिवर्द्धिते भवेन्मध्यम्।
अवरपरीतं विरलय्य तदेव दत्वा संगुणिते ॥ ३६ ॥

**अर्थ**—जघन्य परीतासंख्यातकै उपरि एकादि वधाएं मध्य परीतासंख्यात होइ बहुरि जघन्य परीतासंख्यातकौं एक एक करि विरलन करि रूप प्रति तिस ही जघन्य परीतासंख्यातकौं देइ परस्पर गुणन करिए। जैसैं च्यारिकौं विरलन करिए तब च्यारि जायगा एक एक मांडिए। १।१।१।१। बहुरि रूप प्रति च्यारिकौं दीजिये तब एक एककी जायगा च्यारि च्यारि लिखिए ४।४।४।४। अब इनका परस्पर गुणन करिए तब दोयसैं छप्पन होइ ऐसैंही इहां विधान जाननां ॥३६॥

सो ऐसैं गुणनकीएं कहा सो कहै हैं:—

**अवरं जुत्तमसंखं आवलिसरिसं तमेव रूऊणं।**
**परिमिदवरमावलिकिदि दुगवारवरं विरूव जुत्तवरं ॥ ३७ ॥**

अवरं युक्तमसंखं आवलिसदृशं तदेव रूपोनम्।
परिमितवरं आवलिकृतिर्द्विकवारावरं विरूपं युक्तवरम् ॥ ३७ ॥

**अर्थ**—पूर्वोक्त विधान कीएं जघन्य युक्तासंख्यात होइ यहु ही आवली समान हैं। जातैं जघन्य युक्तासंख्यात समयनिका समूहकौं आवली कहिए हैं। सोई यहु एक घाटि हूवा उत्कृष्ट परीतासंख्यात जाननां। बहुरि आवली जो जघन्य युक्तासंख्यात ताकी जु कृति कहिए वर्ग कीऐं जो प्रमाण होइ सो जघन्य असंख्यातासंख्यात हैं। सोई जो घाटि होइ तौ उत्कृष्ट युक्तासंख्यात हो हैं ॥ ३७ ॥

**अवरे सलागविरलणदिज्जे विदियं तु विरलिदूण तहिं।**
**दिज्जं दाऊण हदे सलागदो रूवमवणिज्जं ॥ ३८ ॥**

अवरे शलाकाविरलनदेये द्वितीयं तु विरलय्य तस्मिन्।
देयं दत्त्वा हते शलाकातः रूपमपनेतव्यम् ॥ ३८ ॥

**अर्थ**—जघन्य असंख्यातासंख्यातकौं शलाका विरलन दीयमान रूप करि तीन प्रकार करिए तहां दूसरा विरलन राशिकौं विरलन करि तीह एक एक विरलित विषै एक एक दीयमान राशिकौं देइ परस्पर गुणन करिए ऐसैं करतैं शलाका राशितैं रूप काढि लीजिये।

**भावार्थ**—जघन्य असंख्यातासंख्यातके समान तीन राशि करिए। शलाकाराशि, विरलन-राशि, देयराशि तहां विरलनराशिकौं एक एक करि जुदा जुदा वखेरि दीजिए, बहुरि तिस एक एक जायगा देयराशिकौं दे जाईएं तहां तिनि देयराशिनिकौं परस्पर गुणिए। ऐसैं विधान करिकैं शलाका राशिमैंस्यौं एक घटाय दीजिए। जैसैं च्यारि प्रमाणकौं लीएं शलाका विरलन देय तीन राशि करिए तहां विरलन राशिकौं एक एक करि लिखिये। १।१।१।१। बहुरि एक एक प्रति देयराशिकौं दीजिए।

४।४।४।४ । इनकौं परस्पर गुणिए तब दोयसैं छप्पन्न होइ । ऐसैं विधान करि शलाका राशिका प्रमाण च्यारि था तामैं एक घटाइ दीजिए । ऐसैंही इहां विधान जाननां ॥ ३८ ॥

**तत्थुप्पण्णं विरलिय तमेव दाऊण संगुणं किच्चा ।**
**अवणय पुणरवि रूवं पुव्विल्लसलागरासीदो ॥ ३९ ॥**

तत्रोत्पन्नं विरलय्य तदेव दत्वा संगुणं कृत्वा ।
अपनयेत् पुनरपि रूपं पूर्वतनशलाकाराशितः ॥ ३९ ॥

**अर्थ**—जहां परस्पर गुणन कीएं भया था जो राशि ताकौं विरलन करि रूप प्रति सोई देय करि परस्पर गुणन करि पूर्वशलाका राशितैं बहुरि एक घटावनां ।

**भावार्थ**—पूर्वैं परस्पर गुणन कीएं जो राशि भया तीह प्रमाण विरलनराशि वा देयराशि करिए । विरलनराशिकौं एक एक करि बखेरिए । बहुरि एक एक जायगा एक एक देयराशि दीजिए । बहुरि तिनि देय राशिनिकौं परस्पर गुणिए । ऐसैं विधान करि पूर्वैं जो शलाकाराशि था तामैं एक पहलैं घटाया था अब एक और घटावनां । जैसैं पूर्वैं परस्पर गुणन कीएं दोयसैं छप्पन हूवा तिनकौं विरलन करिए दोयसैं छप्पन जायगा एक एक लिखिए । बहुरि एक एक की जायगा दोयसैं छप्पन होय तामैं एक आगैं घटाया था अब एक और घटावनां । ऐसैं हीं इहां विधान जाननां ॥ ३९ ॥

**एवं सलागरासिं णिट्ठाविय तत्थतणमहारासिं ।**
**किच्चा तिप्पडि विरलणदिज्जादी कुणदि पुव्व व ॥ ४० ॥**

एवं शलाकाराशिं निष्ठाप्य तत्रतनमहाराशिम् ।
कृत्वा त्रिःप्रति विरलनदेयादि करोति पूर्वं व ॥ ४० ॥

**अर्थ**—याही प्रकार एक एक संगुणन कीएं जो जो प्रमाण होइ तींह तींह प्रमाण विरलन देय राशि करि पूर्वोक्त प्रकार संगुणन करि करि एक एक रूप पूर्वोक्त शलाका राशिमैं घटावतैं घटावतैं शलाकाराशिकौं निष्ठापन करि पूर्ण करि तहां निपज्या जो अंत विषैं परस्पर गुणन कीएं महाराशि तीह महाराशिप्रमाण शलाका विरलन देय राशि करि पूर्वोक्त प्रकार एक एक बार विरलन देय करि परस्पर गुणें एक एक शलाका राशिमैं स्यौं घटावतैं घटावतैं दूसरा शलाका राशिका निष्ठापन होइ समाप्तपनां होइ। तहां अंत विषैं जो परस्पर गुणन कीएं प्रमाण होइ तीह प्रमाण शलाका विरलन देय राशि करि पूर्वोक्त प्रकार एक एक बार विरलन देय करि परस्पर गुणें एक एक शलाका राशिमैंस्यौं घटावतैं घटावतैं तीसरा शलाका राशिका समाप्तपनां होय। ऐसैं शलाकात्रयका निष्ठापनकौं करैं ॥ ४० ॥

**एवं विदियसलागे तदियसलागे च णिट्ठिदे तत्थ ।**
**जं मज्झासंखेज्जं तहिमेदे पक्खिवेदव्वा ॥ ४१ ॥**

एवं द्वितीयशलाकायां तृतीयशलाकायां च निष्ठितायां तत्र ।
यत् मध्यासंख्यातं तस्मिन् एते प्रक्षेप्तव्याः ॥ ४१ ॥

**अर्थ**—या प्रकार दूसरी शलाका बहुरि तीसरी शलाकाकौं निष्ठापनरूप होत संतैं तहां जो मध्य असंख्यातासंख्यातरूप प्रमाण भया तींह प्रमाण विषै ए आगैं कहिए जु हैं राशि ते प्रक्षेपण करनें मिलावनें जोड़नें ॥ ४१ ॥

धम्माधम्मिगिजीवगलोगागासप्पदेसपत्तेया।
तत्तो असंखगुणिदा पदिट्ठिदा छप्पि रासीओ ॥ ४२ ॥

धर्माधर्मैकजीवकलोकाकाशप्रदेशप्रत्येकाः।
ततः असंख्यगुणिता प्रतिष्ठिताः षडपि राशयः ॥ ४२ ॥

**अर्थ**—धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्य एक जीवद्रव्य लोकाकाश इन च्यारयौंनिका प्रदेशनिका प्रमाण बहुरि अप्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पति जीवनिका प्रमाण तिस लोकाकाशके प्रदेशनितैं असंख्यात गुणां। बहुरि तातैं भी प्रतिष्ठित प्रत्येक वनस्पती जीवनिका प्रमाण असंख्यात लोक गुणां ए छहौं राशि पूर्वोक्त मध्य असंख्यातासंख्यातरूप प्रमाण विषै मिलाइ दीजिए ॥ ४२ ॥

तं कयतिप्पडिरासिं विरलादिं करिय पढमविदियसलं।
तादियं च परिसमाणिय पुव्वं वा तत्थ दायव्वा ॥ ४३ ॥

तं कृतत्रिःप्रतिराशिं विरलादिं कृत्वा प्रथमद्वितीयशलाम्।
तृतीयां च परिसमाप्य पूर्वं वा तत्र दातव्याः ॥ ४३ ॥

**अर्थ**—तिनकौं मिलाएं जो मध्यम असंख्यातासंख्यातरूप प्रमाण भया तींह प्रमाण त्रिः प्रतिराशिं कहिए शलाका आदि तीन राशि करि बहुरि विरलादिं कृत्वा कहिए विरलन देय करि परस्पर गुणें शलाका राशिमें एक एक घटाइ प्रथम शलाका राशिकौं समाप्त करि बहुरि तहां जो प्रमाण होइ तीह प्रमाण पूर्वोक्त प्रकार शलाकादि करि द्वितीय शलाका राशिकौं समाप्त करि बहुरि तहां जो प्रमाण होइ तीह प्रमाण शलाकादि करि पूर्वोक्त प्रकार तृतीय शलाका राशिकौं निष्ठापन करि तहां जो प्रमाण होइ तीह विषै ए राशि दैनें मिलावनें ॥ ४३ ॥

कप्पठिदिबंधपच्चयरसबंधज्झवसिदा असंखगुणा।
जोगुक्कस्सविभागप्पडिच्छिदा विदियपक्खेवा ॥ ४४ ॥

कल्पस्थितिबंधप्रत्ययरसबंधाध्यवसिता असंख्यगुणाः।
योगोत्कृष्टाविभागप्रतिच्छेदाः द्वितीयप्रक्षेपाः ॥ ४४ ॥

**अर्थ**—उत्सर्पिणी अवसर्पिणी मिलिकरि भया जु कल्पकाल ताके समयनिका प्रमाण संख्यात पल्यमात्र। बहुरि तातैं स्थिति बंधाध्यवसायस्थान असंख्यात लोक गुणां, बहुरि तातैं योगका उत्कृष्ट अविभाग प्रतिच्छेद असंख्यात लोक गुणां ए च्यारि राशि दूसरा प्रक्षेप जाननें। दूसरी बार ए च्यारि राशि मिलावनें ॥ ४४ ॥

तं रासिं पुव्वं वा तिप्पडि विरलादिकरणमेत्थ किदे।
अवरपरित्तमणंतं रूऊणमसंखसंखवरं ॥ ४५ ॥

तं राशिं पूर्वे वा त्रिःप्रति विरलादिकरणं अत्र कृते ।
अवरपरीतमनंतं रूपोनमसंख्यासंख्यवरम् ॥ ४५ ॥

**अर्थ**—तिन च्यार्यौं राशिकौं मिलाएं जो प्रमाण भया ताकौं पूर्वोक्त प्रकार त्रिः प्रति कृत्वा कहिये शलाकादिरूप करि बहुरि विरलन आदिका करनां ताकौं करिए अर तीन शलाकानिका निष्ठापन करिए । ऐसें करतैं जो प्रमाण होइ सो जघन्य परीतानंत जानना । सो जो एक घाटि होइ तौ उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात जाननां ॥ ४५ ॥

**अवरपरित्तं विरलिय दाऊणेदं परोपरं गुणिदे ।**
**अवरं जुत्तमणंतं अभव्वसममेत्थ रूऊणे ॥ ४६ ॥**

अवरपरीतं विरलयित्वा दत्त्वा इदं परस्परं गुणिते ।
अवरं युक्तमनंतं अभव्यसमं अत्र रूपोने ॥ ४६ ॥

**अर्थ**—बहुरि जघन्य परीतानंतकौं एक एक करि विरलन करि रूप प्रति तिसही जघन्य परीतानंतकौं देइ तिस राशिकौं परस्पर गुणें जो प्रमाण होइ सो जघन्य युक्तानंत जाननां । सो यहु अभव्य सम है ॥ अभव्य जीवनिका इतनां प्रमाण है । यामैं एक घटावतैं संतैं ॥ ४६ ॥

**जेट्ठपरित्ताणंतं वग्गे गहिदे जहण्णजुत्तस्स ।**
**अवरमणंताणंतं रूऊणे जुत्तणंतवरं ॥ ४७ ॥**

ज्येष्ठपरीतानंतं वर्गे गृहीते जघन्ययुक्तस्य ।
अवरं अनंतानंतं रूपोने युक्तानंतवरम् ॥ ४७ ॥

**अर्थ**—उत्कृष्ट परीतानंत होइ । बहुरि जघन्य युक्तानंतका वर्ग ग्रहण कीएं जघन्य अनंतानंत होइ । जघन्य युक्तानंतकौं जघन्य युक्तानंत करि गुणें जघन्य अनंतानंत हो हैं । यामैं एक घटाएं उत्कृष्ट युक्तानंत हो है ॥ ४७ ॥

**अवराणंताणंतं तिप्पडि रासिं करित्त विरलादिं ।**
**तिसलागं च समाणिय लद्धेदे पक्खिवेदव्वा ॥ ४८ ॥**

अवरानंतानंतं त्रिःप्रतिराशिं कृत्वा विरलनादि ।
त्रिशलाकां च समाप्य लब्धे एते प्रक्षेप्तव्याः ॥ ४८ ॥

**अर्थ**—बहुरि जघन्य अनंतानंतरूप राशिकौं पूर्वोक्त प्रकार त्रिः प्रतिं कृत्वा कहिए शलाकादि रूप करि बहुरि विरलन आदिक क्रमतैं प्रथम शलाका द्वितीय शलाका तृतीय शलाकाकौं पूर्वोक्त प्रकार समाप्त करि इहां जो मध्य अनंतानंतरूप लब्ध प्रमाण भया तामैं ए राशि प्रक्षेपनें मिलावनें ॥४८॥

**सिद्धा णिगोदसाहियवणप्फदिपोग्गलपमा अणंतगुणा ।**
**काल अलोगागासं छच्चेदेणतपक्खेवा ॥ ४९ ॥**

सिद्धा निगोदसाधिकवनस्पतिपुद्गलप्रमा अनंतगुणाः ।
काल अलोकाकाशं षट् चैते अनंतप्रक्षेपाः ॥ ४९ ॥

अर्थ—सिद्ध राशि जीव राशिके अनंतवैं भागि प्रमाण। बहुरि तातैं अनंतगुणां पृथ्वी कायिकादिक च्यार। बहुरि प्रत्येक वनस्पति बहुरि त्रसराशि अर तीनि विना संसारी राशि प्रमाण निगोद जीवनिका प्रमाणरूप निगोदराशि। बहुरि यातैं प्रत्येक वनस्पतीका प्रमाण अधिक कीएं वनस्पती राशि। बहुरि जीव राशितैं अनंत गुणा पुद्गलराशि। बहुरि तातैं अनंतगुणां कालके समयनिका प्रमाणरूप कालराशि। तातैं अनंतगुणां प्रदेश प्रमाणरूप अलोकाकाश राशि ए छह राशि अनंतरूप प्रक्षेप हैं। इन छहौंनिका प्रमाणकौं पूर्वोक्त प्रमाण विषै मिलाईए॥ ४९॥

तं तिण्णिवारवग्गिदसंवग्गं करिय तत्थ दायव्वा।
धम्माधम्मागुरुलघुगुणाविभागप्पडिच्छेदा॥ ५०॥
तं त्रिवारवर्गितसंवर्गं कृत्वा तत्र दातव्याः।
धर्माधर्मागुरुलघुगुणाविभागप्रतिच्छेदाः॥ ५०॥

अर्थ—तिन छहौं राशिकौं मिलाएं जो राशि भया ताकौं तीन वार वर्गित संवर्ग रूप करि विरलनादिक विधानतैं गुणनादि करि प्रथम द्वितीय तृतीय शलाकाकौं पूर्वोक्त प्रकार समाप्त करि तहां जो प्रमाण भया तिस राशि विषै धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्यका अगुरु लघुगुणका अविभाग प्रतिछेदनिका प्रमाण दैनां मिलावनां॥ ५०॥

लद्धं तिवार वग्गिदसंवग्गं करिय केवले णाणे।
अवणिय तं पुण खित्ते तमणंताणंतमुक्कस्सं॥ ५१॥
लब्धं त्रिवारं वर्गितसंवर्गं कृत्वा केवलज्ञाने।
अपनीय तं पुनः क्षिप्ते तमनंतानंतमुत्कृष्टम्॥ ५१॥

अर्थ—मिलाएं जो लब्ध राशि भया ताकौं तीन वार वर्गित संवर्ग करि, भावार्थ—यहु जो पूर्वोक्त प्रकार विरलनादिक विधान अर तीन शलाकाकौं निष्टापन करि जो प्रमाण होइ ताकौं केवलज्ञानका अविभाग प्रतिछेदनिका प्रमाणमैंस्यौं घटाइ बहुरि ज्यूंका त्यूं सो प्रमाण केवलज्ञान विषै मिलाइ दीएं जो राशि केवलज्ञान मात्र होइ ताकौं उत्कृष्ट अनंतानंत जानहु।

भावार्थ—पूर्वोक्त क्रिया करतैं भी केवलज्ञान समान प्रमाण न भया तातैं पूर्वोक्त प्रमाण केवलज्ञानमैंस्यैं घटाइ ज्यूंका त्यूं मिलाय केवलज्ञानके समान उत्कृष्ट अनंतानंत कह्या। ऐसैं इकईस भेद संख्यामानके जाननें॥ ५१॥

आगैं श्रुतज्ञानादिकका विषयरूप स्थानकौं निरूपण करैं हैं:—

जावदियं पच्चक्खं जुगवं सुदओहिकेवलाण हवे।
तावदियं संखेज्जमसंखमणंतं कमा जाणे॥ ५२॥
यावत्कं प्रत्यक्षं युगपत् श्रुतावधिकेवलानां भवेत्।
तावत्कं संख्येयमसंख्यमनंतं क्रमात् जानीहि॥ ५२॥

अर्थ—यावन्मात्र विषय युगपत् प्रत्यक्ष श्रुत अवधि केवलज्ञानके होंहि तावन्मात्र संख्यात असंख्यात अनंत क्रमतैं जानऊ॥

**भावार्थ**—श्रुतज्ञानका संख्यात, अवधिका असंख्यात, केवलका अनंत प्रमाणकौं लीएं युगपत् प्रत्यक्ष प्रति भासनेंरूप विषय जाननां ॥ ५२ ॥

आगैं चौदह धारानिके नाम कहै हैं:—

**धारेत्थ सव्वसमकादिघणमाउगइदरवेकदीविंदं ।**
**तस्स घणाघणमादी अंतं ठाणं च सव्वत्थ ॥ ५३ ॥**

धाराः अत्र सर्वसमकृतिघनमातृकेतरद्विकृतिवृंदम् ।
तस्य घनाघनमादि अंतं स्थानं च सर्वत्र ॥ ५३ ॥

**अर्थ**—धारा हैं ते इस शास्त्रविषैं निरूपिए हैं। सर्वधारा, समधारा, कृतिधारा, घनधारा, कृतिमातृकधारा, घनमातृकधारा, बहुरि समादिक धारातैं प्रतिपक्षी विषमधारा, अकृतिधारा, अघनधारा, अकृतिमातृकधारा, अघनमातृकधारा, जाननी। बहुरि द्विरूप वर्गधारा, द्विरूपघनधारा, द्विरूपघनाघनधारा, ऐसैं ए चौदह धारा हैं। इनके आदि अर अंत अर स्थान भेद हैं ते सर्वत्र धारानिविषैं कहिए है ॥ ५३ ॥

आगैं सर्वधाराके स्वरूपकूं निरूपण करैं हैं:—

**उत्तेव सव्वधारा पुव्वं एगादिगा हवेज्ज जदिं ।**
**सेसा समादिधारा तत्थुप्पण्णेति जाणाहि ॥ ५४ ॥**

उक्तैव सर्वधारा पूर्वं एकादिका भवेत् यदि ।
शेषाः समादिधाराः तत्रोत्पन्ना इति जानीहि ॥ ५४ ॥

**अर्थ**—कही सोई सर्व धारा है। जो पूर्वैं एकादिक होइ तौ।

**भावार्थ**—संख्यातादिक केवलज्ञान पर्यन्त जे सर्व संख्याके स्थान ते सर्व धारामयी हैं॥ विशेष इतनां तहां दोयतैं लगाय कथन कीया था, इहां एक तैं लगाय एक एक वधता केवलज्ञानपर्यंत सर्व धाराके स्थान जाननें। इस सर्व धाराके स्थान अंक संदृष्टि करि ऐसैं हैं। १,२,३,४,५,६,७,८,९,१०,११,१२,१३,१४,१५। केवलज्ञान १६। इहां अंकसंदृष्टि करि केवलज्ञानरूप उत्कृष्ट अनंतानंतका प्रमाण सोलह जाननां। बहुरि अवशेष समधारा आदि धारा हैं ते तिस सर्व धाराही तैं उत्पन्न ऐसा तू जांनि जातैं जे सर्व इस विषै गर्भित हैं ॥ ५४ ॥

आगैं समधाराकौं कहैं हैं:—

**वेयादि विउत्तरिया केवलपज्जंतया समा धारा।**
**सव्वत्थ अवरमवरं रूऊणुक्कस्समुक्कस्सं ॥ ५५ ॥**

द्वयादि द्व्युत्तरिका केवलपर्यंतका समा धारा।
सर्वत्र अवरमवरं रूपोनोत्कृष्टं उत्कृष्टम् ॥ ५५ ॥

**अर्थ**—दोयकौं आदि देकरि दोय दोय वधते रूप केवलज्ञान पर्यंत समधारा कही हैं। सर्वत्र संख्यातादि संख्यामानके भेद पूर्वैं कहे तिनविषै सर्वधारा विषै तिष्ठता ऐसा जो जघन्य भेद सो तो इहां जघन्य जाननां। बहुरि सर्व धाराकौं प्राप्त ऐसो एक घाटि उत्कृष्ट भेद सो इहां उत्कृष्ट

जाननां। जैसैं संख्यातका जघन्यभेद दोय असंख्यातका अंक संदृष्टि अपेक्षा सोलह सो समसंख्यारूप है। तातैं तिनका जघन्य जो सर्वधारा विषै है सोई इस धारा विषै जाननां। बहुरि संख्यातका उत्कृष्ट अंकसंदृष्टि अपेक्षा पंद्रह असंख्यातका दोयसैं पचावन सो ए विषम संख्यारूप हैं। सो इस धारा विषै बनैं नाहीं तातैं तिनमैं एक घटाएं चौदह वा दोयसैं चौवन रहैं सो इस धारा विषै संख्यातादिकका उत्कृष्ट जाननां। ऐसैं भावार्थ जाननां। अंकसंदृष्टि करि याके स्थान ऐसैं २,४,६, ८,१०,१२,१४, केवलज्ञान १६ ॥ ५५ ॥

आगैं विषम धारा कहिए हैं:—

**एगादि बिउत्तरिया विसमा रूऊणकेवलवसाणा।**
**रूवजुदमवरमवरं वरं वरं होदि सव्वत्थ ॥ ५६ ॥**

एकादि द्व्युत्तरा विषमा रूपोनकेवलावसाना।
रूपयुतमवरमवरं वरं वरं भवति सर्वत्र ॥ ५६ ॥

अर्थ—एककौं आदि देकरि दोय बधतारूप विषम धारा हैं सो एक घाटि केवलज्ञान पर्यंत जाननां। जातैं केवलज्ञानके अविभाग प्रतिछेदनिका प्रमाण समसंख्यारूप हैं। तामैं एक घटाएं विषमधाराका अंत होइ। बहुरि सर्व धाराकौं प्राप्त भये जो संख्यातादिक भेद तिनका जघन्य भेद विषै एक मिलाएं इहां तिनका जघन्य भेद होइ। बहुरि तहां जो उत्कृष्ट भेद है सोई इहां उत्कृष्ट भेद होइ। जैसैं संख्यातका जघन्य भेद दोय। असंख्यातका जघन्य भेद अंक संदृष्टि अपेक्षा सोलह। ते ए समधारारूप हैं सो इस धारा विषै बनैं नाहीं। तातैं इन विषैं एक मिलाएं तीन वा सत्रह होइ सो इस धारा विषै संख्यात असंख्यातका जघन्य भेद जाननां। बहुरि उत्कृष्ट भेद अंकसंदृष्टि अपेक्षा संख्यातका पंद्रह असंख्यातका दोयसैं पचावन सो ए विषमरूप हैं। सो इस धारा विषै बनैं नाही हैं तातैं तहां जो संख्यातादिकका उत्कृष्ट भेद कह्या सोई इस धारा विषै संख्यातादिकका उत्कृष्ट भेद जाननां। ऐसा इहां अर्थ जाननां। इस विषम धाराके स्थान अक संदृष्टि विषै ऐसैं हैं। १,३,५,७,९,११,१३, एक घाटि केवलज्ञान १५ ॥ ५६ ॥

आगैं समधारा विषमधाराके स्थाननिका प्रमाण बहुरि ताके ल्यावनेंका विधानकौं कहै हैं:—

**केवलणाणस्सद्धं ठाणं समविसमधारयाण हवे।**
**आदी अंते सुद्धे वड्ढिहिदे इगिजुदे ठाणा ॥ ५७ ॥**

केवलज्ञानस्यार्धं स्थानं समविषमधारयोर्भवेत्।
आदौ अंते शुद्धे वृद्धिहृते एकयुते स्थानानि ॥ ५७ ॥

अर्थ—केवलज्ञानका जु प्रमाण ताका आधा स्थान समधारा अर विषमधारा विषै जाननैं। तहां स्थान ल्यावनैंका विधानविषै करणसूत्र आदौ अंते सुद्धे इत्यादि जाननां। आदिका स्थान अर अंतका स्थान इनकौं शुद्ध करिए जाका अधिक प्रमाण होइ तामैं हीन प्रमाणकौं घटाइ अवशेष राखिए। बहुरि वृद्धि जो स्थान स्थान प्रति जेती जेती वधती होइ ताका भाग दीजिए। जो लब्ध होइ ता विषै एक मिलाय दीजै यों करतां जो प्रमाण आवै सोई स्थाननिकौं प्रमाण जाननां। सो

इहां अंक संदृष्टि अपेक्षा समधाराविपै आदिस्थान दोय अंतस्थान सोल्ह तहां सोल्ह मैं दोय घटाएं रहे चौदह याकौं स्थान स्थान प्रति वृद्धिका प्रमाण दोयका भाग दीएं पाए सात यामैं एक मिलाएं पाए आठ, सो आठ समधाराके स्थान हैं। बहुरि विपमधारा विपै आदि स्थान एक अंतस्थान पंद्रह आदिकौं अंतमैं घटाएं अवशेप चौदह वृद्धि दोयका भाग दीएं सात तामैं एक मिलाएं आठ स्थान जाननें। ऐसै ही जहां समान प्रमाणकौं लीएं स्थान स्थान प्रति चय वधती होइ तहां स्थानकनिका प्रमाण ल्यावनैंकौं करणसूत्र जाननां ॥ ५७ ॥

आगैं कृतिधाराकौं कहैं हैं:—

इगि चादि केवलंतं कदी पदं तप्पदं कदी अवरं।
इगिहीणतप्पदकदी हेट्ठिममुक्कस्स सव्वत्थ ॥ ५८ ॥
एकं चत्वार्यादिः केवलांता कृतिः पदं तत्पदं कृतिः अवरं।
एकहीनतत्पदकृतिः अधस्तनमुत्कृष्टं सर्वत्र ॥ ५८ ॥

**अर्थ**—एक च्यारि इत्यादि केवलज्ञानपर्यंत कृतिधारा हो हैं। एक आदि एक एक वधता केवज्ञानका प्रथम वर्गमूल पर्यंत जे वर्गमूल तिनका वर्ग कीएं जो जो राशि होइ सो सो इस धाराके स्थान जाननें। सो वर्गमूलनिका प्रमाण केवलज्ञानका प्रथम वर्गमूल प्रमाण जाननां। तितने ही इस धाराके स्थान हैं। बहुरि इस धारा विपैं संख्यातकौं आदिदै करि संख्याके भेद तिनका जघन्यभेद तौ वर्गस्थान स्वरूप ही है। बहुरि संख्यातादिकनिका जो जघन्य भेद ताका वर्गमूलमैं स्यौं एक घटाय अवशेप रहै ताका वर्ग कीएं जो प्रमाण होइ सो इस धारा विपै तिस संख्या भेदके अधस्तनवर्ती जो संख्यातादिक तिनिका उत्कृष्टपनां जाननां। उदाहरण। जैसैं अंकसंदृष्टि अपेक्षा जघन्य असंख्यातका प्रमाण सोल्ह सो तौ च्यारिका वर्गस्थानरूप है ही। बहुरि सोल्हका वर्गमूल च्यारि तामैं एक घटाएं तीन रहे ताका वर्ग कीएं नव भए सो असंख्यातकै नीचैं जो पहलैं भेद संख्यात सो इस धाराविपै संख्यातका उत्कृष्ट नव ही हैं। यद्यपि दसकौं आदि दै करि पंद्रह पर्यंत संख्यात हीके भेद हैं तथापि ते भेद इस धारा विपैं संभवै नहीं। तातैं इहां उत्कृष्ट नव ही कह्या। ऐसैं ही अन्यत्र भी जाननां। अंकसंदृष्टिविपै याके स्थान ऐसे १,४,९, केवलज्ञान १६। इहां एकका वर्ग एक सो प्रथम स्थान दोयका वर्ग च्यारि सो दूसरा स्थान तीनका वर्ग नव सो तीसरा स्थान केवलज्ञानका वर्गमूल अंकसंदृष्टि करि च्यारि ताका वर्ग सोल्ह सो अंतस्थान जाननां ॥ ५८ ॥

आगैं अकृतिधारा कहिए हैं:—

दुप्पहुदि रूववज्जिदकेवलणाणावसाणमकदीए।
सेसाविही विसमं वा सपदूणं केवलं ठाणं ॥ ५९ ॥
द्विप्रभृति रूपवर्जितकेवलज्ञानावसानमकृतौ।
शेपविधिः विषमा वा स्वपदोनं केवलं स्थानम् ॥ ५९ ॥

**अर्थ**—दोयकौं आदि दे करि एक घाटि केवलज्ञानपर्यंत अकृतिधारा है। बहुरि या विषै अवशेष विधान संख्यातादिकका जघन्य उत्कृष्टपनां सो विषम धारावत् जाननां। जघन्य भेद विषै एक मिलाएं इहां जघन्यभेद होइ। उत्कृष्ट भेद जो है सोई इहां है। जातैं इस धाराविषै वर्गरूप स्थानकनिका रहितपनां है। बहुरि इस धाराके सर्व स्थान केवलज्ञानका प्रथम मूल करि हीन ऐसा केवलज्ञान प्रमाण जाननां। अंकसंदृष्टि विषै याके स्थान ऐसें हैं। २,३,५,६,७,८,१०,११,१२,१३,१४, एक घाटि केवल १५। इहां सर्व धाराके स्थानकनि विषै कृतिधाराके स्थान दूरि करि अवशेष अकृतिधाराके स्थान कहे हैं॥ ५९॥

आगैं घनधारा कहिए हैं:—

**इगिअडपहुदिं केवलदलमूलस्सुवरि चडिदठाणजुदे।**
**तग्घणमंतं विंदे ठाणं आसण्णघणमूलं॥ ६०॥**

एकाष्टप्रभृति केवलदलमूलस्योपरि चटितस्थानयुते।
तद्घनमंतं वृंदे स्थानं आसन्नघनमूलम्॥ ६०॥

**अर्थ**—एक आठकौं आदि दे करि १,८,२७ अंत घन स्थान जाईये।

**भावार्थ**—एकका घन एक सो याका प्रथम स्थान दोयका घन आठ सो याका दूसरा स्थान तीनका घन सताईस सो याका तीसरा स्थान ऐसैं अनंत घनस्थान जाइ करि केवलज्ञानका आधा प्रमाण है सो घनस्थानरूपही है। ताका जो घनमूल ताकै उपरि चढितस्थान कहिए, उपरि उपरि प्राप्त भए जो घनमूलके स्थान तिनकी संख्या तिस घनमूल विषै मिलाएं जो प्रमाण होइ सो इहां आसन्न घनमूल कहिए ताका घन कीएं जो प्रमाण होइ सोई इस धाराका अंतस्थान जाननां। जातैं आसन्न घन तैं एक अधिकका भी घन ग्रहें केवलज्ञानतैं अधिक प्रमाण होइ जाइ सो है नाहीं। इस कथनकौं अंकसंदृष्टि करि दिखाईए है। जैसैं केवलज्ञानका प्रमाण पणट्ठी ६५५३६ ताका आधा ऐसा ३२७६८। सो यहु घनस्थानरूप हैं। याका घनमूल बतीस। ३२। ताकै उपरि घनमूल स्थान ऐसे ३३,३४,३५,३६,३७,३८,३९,४०। ए आठ स्थान बत्तीस मैं मिलाएं चालीस हूवा याकौं इहां आसन्न घनमूल कहिए। याका घन ६४०००। सोही इस धाराका अंतस्थान है। जातैं आसन्न घनमूल तैं एक अधिक इकतालीस ४१। ताका भी घन ग्रहें अडसठि हजार नौसैं इकईस होय सो केवलज्ञानतैं अधिक राशि उपजै तातैं आसन्न घनमूलका जु घन ६४००० सोई घनधाराका अंतस्थान है। इसकौं आसन्नघन कहिए है। याका घनमूलकौं आसन्न घनमूल कहिए है। बहुरि इस धाराके सर्वस्थान केवलज्ञानके आसन्न घनमूल प्रमाण जाननें॥६०॥

आगैं केवलज्ञानका अर्द्धप्रमाण घनधारास्वरूप कैसें जानिएं, ताका व्यवस्थानकौं पूर्व आधा सूत्र करि दिखावता संता उत्तर आधासूत्र करि अघनधाराकौं कहैं हैं:—

**समकादिसल विकदीए दलिदे घणमेत्थ विसमगे तुरिए।**
**अघणस्स दु सव्वं वा विघणपदं केवलं ठाणं॥ ६१॥**

समकृतिशला द्विकृतौ दलिते घनः अत्र विषमके तुरिये ।
अघनस्य तु सर्वं वा विघनपदं केवलं स्थानम् ॥ ६१ ॥

**अर्थ**—द्विरूप वर्गधारा विषै जिस वर्गस्थानरूप राशिकी वर्गशलाका सम होइ, दोय च्यारि इत्यादिरूप होइ तिस राशिका आधा प्रमाण घनरूप होइ ही होइ । दोयका वर्ग तैं लगाय पूर्वपूर्वका वर्ग करतैं जेतीवार होइ तितनां ही ताकी राशि सोलह ताकी वर्गशलाका दोय सो समरूप है ताका आधा प्रमाण आठ सो दोयका घनरूप हैं । बहुरि राशि पणट्ठी ताकी वर्गशलाका च्यारि सो समरूप है, ताका आधा प्रमाण बत्तीस हजार सातसैं सडसठि सो बत्तीसका घनरूप है । ऐसें ही एकट्ठी आदि विषै भी जांनि लेनां । बहुरि इस ही द्विरूप वर्गधारा विषै जिस राशिकी विषमरूप वर्गशलाका होइ तिस राशिका चौथा भाग घनराशिरूप हो है । जैसें द्विरूप वर्गधाराविषै राशि च्यारि ताकी वर्गशलाका एक है सो विषमरूप है । याका चौथा भाग एक सो एकका घनरूप है। ऐसें ही बादालादिक विषैं भी जानना । ऐसें कह्या जु न्याय तीह करि केवलज्ञानकी वर्गशलाका समरूप ही हैं, तातैं तीह केवलज्ञानका आधा प्रमाण घनस्थानरूप है ऐसा सिद्ध भया । बहुरि केवलज्ञानकी वर्गशलाका समरूप हैं ऐसा कैसें जानिए? तहां कहिए हैं । जो केवलज्ञानकी वर्गशलाकारूप राशि भी द्विरूप वर्गधारा ही विषै उत्पन्न है, द्विरूप वर्गधारा विषै जो राशि है सो समरूप ही है । बहुरि प्रश्न, जो केवलज्ञानकी वर्गशलाका द्विरूप वर्गधारा विषै ही हैं ऐसा कैसें जानिए? तहां कहिए हैं जो 'अवरा खाइयलद्धी वग्गसलागा तदो सगद्धछिदी' ऐसा सूत्र आगैं कहिएगा, तिस सूत्र करि केवलज्ञानकी वर्गशलाका द्विरूप वर्गधारा विषै ही कहिएगी । बहुरि अब घनधारा कहिए है । अघनधाराके स्थान आदि प्रक्रिया सर्वधारावत् जाननी । इतनां विशेष, विघनपदं कहिए जो धनधाराविषै जे जे स्थान हैं ते ते धारा विषै नांही हैं और सर्वस्थान सर्व धारावत् जाननें । बहुरि काकका नेत्रका गोलक जैसें एक ही नेत्र विषै पाईए, तैसें जे सर्व धाराके स्थान हैं तिन विषै जो स्थान घनरूप है सो अघनरूप नांहीं, अघनरूप है सो घनरूप नांहीं, तातैं इस धारा के सर्व स्थान घनस्थानकनिका प्रमाण रहित केवलज्ञान समान हैं । अंकसंदृष्टि विषै याके स्थान ऐसें हैं २,३,४,५,६,७,८,९,१०,११,१२,१३,१४,१५,१६ ॥ ६१ ॥

आगैं वर्गमातृक धाराकौं कहे हैं:—

**इह वग्गमाउआए सव्वगधारव्व चरिमरासी दु ।**
**पढमं केवलमूलं तट्ठाणं चावि तच्चेव ॥ ६२ ॥**

इह वर्गमातृकायां सर्वकधारा इव चरमराशिस्तु ।
प्रथमं केवलमूलं तत्स्थानं चापि तदेव ॥ ६२ ॥

**अर्थ**—इस वर्गमातृक धारा विषै सर्वधारावत् स्थानादिककी प्रक्रिया जाननी, विशेष इतना याका अंतस्थान केवलज्ञानका प्रथम मूल जाननां । जातैं वर्गके उपजावनेंकौं समर्थ ऐसें संख्या विशेष इस धारा विषै पाईए तातैं याका नाम वर्गमातृक धारा है । सो एकतैं लगाय केवलज्ञानका प्रथम मूलपर्यंत सबनिका वर्ग होइ सकै है; ताकै उपरि एक भी बधतीका वर्ग कीजिए

तौ केवलज्ञानतैं उलंघि प्रमाण होइ सो है नाहीं, जैसें केवल ज्ञानका प्रमाण सोलह ताका वर्गमूल च्यांरि तहां पर्यंत तौ वर्ग होइ अर उपरि पांचका वर्ग करिए तौ केवलज्ञान तैं अधिक प्रमाण होइ जाय। तातैं याका अंतस्थान केवलज्ञानका प्रथम मूलही कह्या। इस धाराके सर्व स्थानक तितनें हीं केवलज्ञानका प्रथम मूल प्रमाण ही जाननां। अंक संदृष्टि विषै याके स्थान ऐसें १,२,३, केवल प्रथममूल ४ ॥ ६२ ॥

आगैं अवर्गमातृक धाराकौं कहैं हैं:—

**अकदीमाउअ आदी केवलमूलं सरूवमंतं तु।**
**केवलमणेय मज्झं मूलूणं केवलं ठाणं ॥ ६३ ॥**

अकृतिमातृकाया आदिः केवलमूलं स्वरूपमंतं तु।
केवलमनेकं मध्यं मूलोनं केवलं स्थानम् ॥ ६३ ॥

**अर्थ**—अकृतिमातृक धाराका प्रथम स्थान केवलज्ञानका प्रथम मूल एक करि सहित जाननां। जातैं केवलज्ञानका प्रथम मूल पर्यंत तौ सर्व अंक वर्गमूल रूप पाइए हैं, सबनिका वर्ग होइसकै है। बहुरि जिनका वर्ग कीएं केवलज्ञानतैं अधिक प्रमाण होइ जाइ तिनका ग्रहण इस धारा विषै हैं, तातैं याका प्रथम स्थान एक अधिक केवलज्ञानका प्रथम मूल कह्या। बहुरि अंत स्थान याका केवलज्ञान है, मध्यस्थान अनेक प्रकार हैं। इस धाराके सर्व स्थान केवलज्ञानका प्रथममूल रहित केवलज्ञान प्रमाण जाननें। अंकसंदृष्टि विषै याके स्थान ऐसें हैं, ५,६,७,८,९, १०,११,१२,१३,१४,१५,१६। इहां केवल ज्ञानका प्रमाण सोलह ताका प्रथम वर्गमूल च्यारि तातैं एक अधिकतैं लगाय स्थान कहे हैं ॥ ६३ ॥

आगैं घनमातृक धाराकौं कहैं हैं:—

**घणमाउगस्स सव्वगधारं वा सव्वपच्छिमो रासी।**
**आसण्णविंदमूलं तमेव ठाणं विजाणाहि ॥ ६४ ॥**

घनमातृकायाः सर्वकधारा इव सर्वपश्चिमो राशिः।
आसन्नवृंदमूलं तदेव स्थानं विजानीहि ॥ ६४ ॥

**अथ**—घनमातृक धाराकी स्थानादिककी प्रक्रिया सर्वधारावत् जाननीं, इतनां विशेष याका सर्व पश्चिम राशि कहिए अंतका स्थान सो केवलज्ञानका आसन्न घनमूल प्रमाण ही जाननें। इहां जिनका घन होइ ऐसें घनमूलरूप संख्या विशेष ग्रहे हैं सो केवलज्ञानका आसन्न घनमूल पर्यंत तौ सबनिका घन होइ सकै है अर यातैं एक अधिकका भी जो घन कीजिए तौ केवलज्ञानतैं अधिक प्रमाण होइ जाय तातैं एक आदि केवलज्ञानका आसन्न घनमूलपर्यंत याके स्थान कहे हैं। अंक संदृष्टि करि याके स्थान ऐसें हैं, १,२,३,४,५,६,७,८,९,१०,११,१२,१३, १४,१५,१६,१७,१८,१९,२०,२१,२२,२३,२४,२५,२६,२७,२८,२९,३०,३१,३२,३३, ३४,३५,३६,३७,३८,३९,४०। इहां केवलज्ञानका प्रमाणपणट्ठी, ६५५३६ कह्या, ताका आसन्न घन चौसठि हजार ६४०००, ताका प्रथममूल चालीस ४० सो अंतस्थान जाननां ॥६४॥

आगैं अघनमातृक धारा कहिए हैं:—

**तं रूवसहिदमादी केवलमवसाणमघणमाउस्स ।**
**आसण्णघणपदूणं केवलणाणं हवे ठाणं ॥ ६५ ॥**

तत् रूपसहितं आदिः केवलमवसानमघनमातृकायाः ।
आसन्नघनपदोनं केवलज्ञानं भवेत् स्थानम् ॥ ६५ ॥

**अर्थ**—इहां जिनका घन कीएं केवल ज्ञानतैं अधिक प्रमाण होइ जाइ ऐसे संख्यात विशेपनिका ग्रहण है । सो घनमातृक धाराका जो अंतका स्थान सो रूपसहित कहिए, एक अधिक होइ तौ इस अघन मातृकधाराका प्रथम स्थान होइ, इहां तैं लगाय केवल ज्ञानपर्यंत सर्व स्थान इस धारा विपै जाननें । याके सर्व स्थान केवलज्ञानका आसन्न घनमूलरहित केवलज्ञान प्रमाण जाननें । अंक संदृष्टि विपै याके स्थान ऐसे ४१,४२,४३, इत्यादि अंतस्थान ६५= । इहां घन मातृकका अंतस्थान चालीस, तामैं एक अधिक कीएं याका आदि स्थान इकतालीस, अंतस्थान केवल ज्ञान सो पणट्ठी प्रमाण । याके सर्व स्थान केवलज्ञान पणट्ठी प्रमाण. ६५५३६, तामैं आसन्न घन चौसठि हजारका मूल चालीस घटाएं पैंसठि हजार च्यारिसैं छिनवै ६५४९६ जाननें ॥ ६५ ॥

आगैं द्विरूप वर्गधाराकौं सात गाथानि करि कहैं हैं:—

**वेरूववग्गधारा चउ सोलस विसदसहियछप्पणं ।**
**पण्णट्ठी वादालं एकट्ठं पुव्वपुव्वकदी ॥ ६६ ॥**

द्विरूपवर्गधारा चत्वार. पोडश द्विशतसहितपट्पंचाशत् ।
पण्णट्ठी द्वाचत्वारिंशत् एकाष्टी पूर्वपूर्वकृतिः ॥ ६६ ॥

**अर्थ**—द्विरूप वर्गधारा कहिए है । दोयका वर्ग तैं लगाय पूर्व पूर्व स्थानककौं वर्ग कीएं उत्तर उत्तरस्थान इस धारा विपै हो हैं, तातैं याका नाम द्विरूप वर्गधारा है । तहां याका आदिस्थान दोयका वर्ग च्यारि ४, ताका वर्ग दूसरा स्थान सोलह १६, ताका वर्ग तीसरा स्थान दोय सैं सहित छप्पन २५६, ताका वर्ग चौथास्थान पणट्ठी, पणट्ठी कहा? 'पण्णट्ठी पंचसया छत्तीसा' पैंसठि अर पांचसै छत्तीस इन अंकनितैं पणट्ठी प्रमाण हो है, ६५५३६ याकी संदृष्टि ऐसी । बहुरि ताका वर्ग पांचवां स्थान वादाल । वादाल कहा ? 'वादालं चउणउदीछउणउदी विहत्तरीय छउणउदी' वियालीस, चौराणवै, छिनवै, बहत्तरि, छिनवै इन अंकनि करि वादाल हो है । ४२९४९६७२९६ याकी संदृष्टि ऐसी ( ४२= ) । बहुरि याका वर्ग छठा स्थान एकट्ठी । एकट्ठी कहा ? 'एकट्ठं च चय छसत्तय च चय सुण्ण सत्त तियसत्ता । सुण्णं णव पण पंचय एक्कं छक्केक्कगोय छक्कं च । एक, आठ, च्यारि, च्यारि, छह, सात, च्यारि, च्यारि, शून्य, सात, तीन, सात, शून्य, नव, पंच, पंच, एक, छह, एक, छह इन अंकनि करि एकट्ठी हो है । १८४४६७४४०७३७० ९५५१६१६ । याकी संदृष्टि ऐसी ( १८= ) ॥ ६६ ॥

ऐसेंही पूर्व पूर्व स्थानकका वर्ग कीएं उत्तर उत्तर स्थान हो हैं:—

**तो संखठाणगमणे वग्गसलागद्धछेदपढमपदं ।**
**अवरपरित्तासंखं आवलि पदरावली य हवे ॥ ६७ ॥**

ततः संख्यस्थानगमने वर्गशलाकार्धच्छेदप्रथमपदम्।
अवरपरीतासंख्यं आवलिः प्रतरावली च भवेत्॥ ६७॥

**अर्थ**—तातैं पूर्वपूर्वका वर्ग करतैं संख्यात स्थान गए जघन्य परीतासंख्यातका वर्गशलाका राशि उपजै हैं। दोयका वर्ग तैं लगाय जेती वार वर्ग कीए जो राशि उपजै तिस राशिका तितनां वर्गशलाका राशिक हो है। जैसें सोलहकी वर्ग शलाका दोय, जातैं दोयका वर्ग च्यारि अर च्यारिका वर्ग सोलह, ऐसें दोय वार वर्ग भए सोलह राशि हो हैं, ऐसें ही अन्यत्र जाननां। बहुरि तातैं संख्यात स्थान गएं जघन्य परीतासंख्यातकी अर्द्धछेद राशि हो हैं। जिस राशिकों जेती वार आधा कीएं एक अवशेष रहैं तिस राशिके तितने अर्द्धछेद जाननें। जैसें सोलहके अर्द्धछेद च्यारि हैं। जातैं एक वार सोलहकौं आधा कीएं आठ होइ, दूसरी वार च्यारि होइ, तीसरी वार दोय होइ, चौथी वार एक होइ, ऐसैंही अन्यत्र भी जाननां। बहुरि तातैं परैं संख्यात स्थान गएं जघन्य परीतासंख्यातका प्रथम मूल हो हैं। राशिका एक वार वर्गमूल कीजिए सो प्रथम मूल कहिए, जैसें सोलहका प्रथम मूल च्यारि हो हैं, ऐसेंही अन्यत्र भी जाननां। बहुरि तिस प्रथम मूलका एक वार वर्ग कीएं जघन्य परीतासंख्यात राशि उपजै हैं। बहुरि तातैं परैं संख्यात स्थान जाइ जघन्य जुक्तासंख्यात प्रमाण आवली उपजै हैं। इहां 'उपज्जदि जो रासी' इत्यादिक सूत्र आगैं कहेंगे तिस करि आवलीकी वर्गशलाकादिकका इस धारा विषै निषेध जाननां। इहां संख्यात स्थान जाइ करि आवली उपजै है। ऐसा कह्या सो कैसैं है? तहां कहिए हैं। देय राशिकैं उपरि विरलन रूप करी जो राशि, ताके जेते अर्धच्छेद होंहि तितनें वर्गस्थान जाइ करि विवक्षित राशि उपजै है। जैसें देयराशि च्यारि ताकैं उपरि विरलन राशि च्यारिके अर्द्ध छेद दोइ, सो दोय वार वर्गस्थान गएं विवक्षित दोयसै छप्पन हो है। जातैं च्यारिका वर्ग सोलह सोलहका वर्ग दोयसैं छप्पन हो है। सोई च्यारिका विरलन करि एक एक जायगा च्यारि च्यारि दीएं, ४,४,४,४ परस्पर गुणें दोय सै छप्पन हो हैं। तैसैंही यहां देय राशि जघन्य परीतासंख्यातके अर्द्धच्छेद संख्यात, सो संख्याते स्थान गएं ही विवक्षित राशि आवली उपजै हैं। बहुरि तिस आवलीका एक वार वर्ग भएं प्रतरावली हो है॥ ६७॥

**गमिय असंखं ठाणं वग्गसलद्धच्छिदी य पढमपदं।**
**पल्लं च सूइअंगुल पदरं जगसेढिघणमूलं॥ ६८॥**

गत्वा असंख्यं स्थानं वर्गशलार्द्धच्छिदिश्च प्रथमपदम्।
पल्यं च सूच्यंगुलं प्रतरं जगच्छ्रेणिघनमूलम्॥ ६८॥

**अर्थ**—तातैं परैं असंख्यात स्थान जाइ अद्धापल्यका वर्गशलाका राशि उपजै है, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका अर्द्धच्छेद राशि हो है, तातैं असंख्यात स्थान जाय ताहीका प्रथम मूल हो है। ताका एक वार वर्ग कीएं अद्धापल्य हो है। बहुरि तातैं परैं असंख्यात स्थान जाय सूच्यंगुल उपजै हैं, जातैं विरलनरूप राशिका अर्द्धच्छेद प्रमाण वर्गस्थान गएं विवक्षित राशि होइ सो यहां सूच्यंगुलका प्रमाण विषै देयराशि पल्य है। विरलन राशि पल्यका अर्द्धच्छेद हैं सो पल्यके अर्द्धच्छेदके अर्द्ध-

च्छेद असंख्याते हैं। तातैं पल्यके उपरि असंख्यात वर्गस्थान भएं सूच्यंगुल होइ ऐसा कह्या है। इहां भी उपज्जदि जो रासी इत्यादि सूत्रका अभिप्राय करि विरलनदेयका अनुक्रम करि यह राशि भया है। तातैं याके वर्गशलाका अर्द्धच्छेद राशि इस धारा विषै नाहीं कहे हैं। बहुरि तिस सूच्यंगुलका एक बार वर्ग भएं प्रतरांगुल उपजै हैं। बहुरि तातैं असंख्यात स्थान जाइ करि जगच्छ्रेणीका घनमूल हो उपजे है। जाका घन कीएं जगच्छ्रेणी होइ ऐसी प्रमाण हो हैं॥ ६८॥

तिविह जहण्णाणंतं वग्गसलादलछिदी सगादिपदं।
जीवो पोग्गल कालो सेढीआगास तप्पदरं॥ ६९॥

त्रिविधं जघन्यानंतं वर्गशलादलच्छेदाः स्वकादिपदम्।
जीवः पुद्गलः कालः श्रेण्याकाशं तत्प्रतरम्॥ ६९॥

अर्थ—तातैं असंख्यात स्थान जाइ जघन्य परीतानंतका वर्गशलाका राशि उपजे हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका अर्द्धच्छेद राशि उपजे हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका प्रथम मूल उपजे है। ताका एक बार वर्ग भएं जघन्य परीतानंत हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ जघन्य युक्तानंत उपजे है। जातैं देय राशिके उपरि विरलन राशिके अर्द्धच्छेद प्रमाण वर्गस्थान भएं विवक्षित राशि हो है, सो इहां देयराशि जघन्यपरीतानंत है ताके उपरि विरलन राशि जघन्य परीतानंत ताके अर्द्धच्छेद असंख्यात हैं, सो इतने ही वर्गस्थान भएं जघन्य युक्तानंत हो हैं। इहां भी पूर्वोक्त प्रकार वर्गशलाकादिकका निषेध जाननां। बहुरि तिस जघन्य युक्तानंतका एक बार वर्ग भएं जघन्य अनंतानंत हो है। बहुरि तातैं अनंतस्थान जाइ जीवराशि प्रमाणकी वर्गशलाका हो हैं, तातैं अनंतस्थान जाइ ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं, तातैं अनंतस्थान जाइ ताहीका प्रथम मूल हो है, ताका एक बार वर्ग भएं जीवराशिका प्रमाण उपजे है। इस गाथा विषै वर्गशलाकादिकनिका उपलक्षण करि कथन है तातैं इस जीवराशितैं परैं पुद्गलादिक जो जो राशि कहिए है तिनका जीवराशि विषैं जैसें कह्या तैसें वर्गशलाकादि जाननें। बहुरि तिस जीवराशितैं अनंतस्थान जाइ पुद्गलराशिका प्रमाण उपजै हैं, तातैं अनंतस्थान जाइ श्रेणी आकाश निपजे है। सर्व आकाशका लंबा प्रदेशनिकी पंक्तिका जु प्रमाण सो श्रेणी आकाश कहिए। बहुरि ताका एक बार वर्ग भएं प्रतराकाश उपजै हैं। सर्व आकाशका लंबा वा चौड़ा प्रदेशनिका जु प्रमाण सो प्रतराकाश कहिए। इहां उंचाई न लीन्ही॥६९॥

धम्माधम्मागुरुलघु इगिजीवागुरुलघुस्स होंति तदो।
सुहमणिअपुण्णणाणे अवरे अविभागपडिछेदा॥ ७०॥

धर्माधर्मागुरुलघ्वोरेकजीवागुरुलघ्वोः भवंति ततः।
सूक्ष्मनिगोदापूर्णज्ञाने अवरे अविभागप्रतिच्छेदाः॥ ७०॥

अर्थ—बहुरि तातैं अनंतस्थान जाइ धर्म द्रव्य, अधर्मद्रव्यके अगुरुलघुगुणके अविभागप्रतिच्छेदनिका प्रमाण हो हैं। जाका विभाग न होइ ऐसा जु कोई शक्तिका अंश ताकौं अविभागप्रतिच्छेद कहिए है। बहुरि तातैं अनंतस्थान जाइ सूक्ष्मनिगोद लब्धि अपर्याप्तक जीवकै जो जघन्य पर्यायनामा श्रुतज्ञान है ताके अविभाग प्रतिच्छेदनिका प्रमाण हो है॥ ७०॥

अवरा खाइयलद्धी वग्गसलागा तदो सगद्धछिदी।
अडसगछप्पणतुरियं तदियं विदियादिमूलं च ॥ ७१ ॥
अवरा क्षायिकलब्धिः वर्गशलाका ततः स्वकार्धच्छिदिः।
अष्टसतषट्पंचतुरीयं तृतीयं द्वितीयादिमूलं च ॥ ७१ ॥

अर्थ—बहुरि तातैं अनंत वर्गस्थान जाइ तिर्यंच गति विषै असंयत सम्यग्दृष्टीकै क्षायिक सम्यक्त्वरूप जो लब्धि ताके अविभाग प्रतिच्छेदनिका प्रमाण हो है। बहुरि तातैं अनंत वर्गस्थान जाइ केवलज्ञानकी वर्गशलाका हो है, तातैं अनंत वर्गस्थान जाइ ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं, तातैं अनंतवर्गस्थान जाइ ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं, तातैं अनंतस्थान जाइ ताहीकां अष्टम मूल हो हैं। ताका एक वार वर्ग भए ताहीका सप्तम मूल हो है, ताका एक बार वर्ग भए ताहीका षष्टम मूल हो है, ताका एक बार वर्ग भएं ताहीका पंचम मूल हो है, ताका एक वार वर्ग भएं ताहीका चतुर्थ मूल हो है, ताका एक वार वर्ग भएं ताहीका तृतीय मूल हो है। ताका एक वर्ग भएं ताहीका द्वितीय मूल हो है, ताका एक बार वर्ग भएं ताहीका प्रथम मूल हो है, राशिका वर्गमूलकौं प्रथम मूल कहिए, प्रथम मूलके वर्गमूलकौं द्वितीय मूल कहिए, द्वितीयमूलके वर्गमूलकौं तृतीयमूल कहिए, तृतीयमूलके वर्गमूलकौं चतुर्थ मूल कहिए ऐसैंही पंचमादि मूल जाननें। जैसें एकट्ठीका प्रथममूल बादाल, द्वितीयमूल पणट्ठी, तृतीयमूल दोयसैं छप्पन, चतुर्थमूल सोलह, पंचममूल च्यारि, षष्टममूल दोय ऐसें ही अन्यत्र जाननां ॥ ७१ ॥

सइमादिमूलवग्गे केवलमंतं पमाणजेट्ठमिणं।
वरखइयलद्धिणामं सगवग्गसला हवे ठाणं ॥ ७२ ॥
सकृदादिमूलवर्गे केवलमंतं प्रमाणजेष्ठमिदम्।
वरंक्षायिकलब्धिनाम स्वकवर्गशला भवेत् स्थानम् ॥ ७२ ॥

अर्थ—तिस केवल ज्ञानके प्रथम वर्गमूलका सकृत् कहिए एक वार वर्ग भएं केवलज्ञानके अविभाग प्रतिच्छेदनिका प्रमाण हो हैं। एतावन्मात्रही द्विरूप वर्गधारा विषैं अंतस्थान हो हैं॥ यह ही उत्कृष्ट प्रमाण है—यहही उत्कृष्ट क्षायिक लब्धि नाम है। बहुरि इस द्विरूप वर्गधाराके सर्वस्थान केवल ज्ञानकी वर्गशलाका प्रमाण हैं ॥ ७२ ॥

आगैं द्विरूप वर्गधारादिक तीन धारा विषैं सर्वत्र विशेषरहित वर्गशलाकादिककी प्राप्ति विषैं नियम है सो कहै हैं:—

उप्पज्जदि जो रासी विरलणदिज्जक्कमेण तस्सेत्थ।
वग्गसलद्धच्छेदा धारातिदए ण जायंते ॥ ७३ ॥
उत्पद्यते यः राशिः विरलनदेयक्रमेण तस्यात्र।
वर्गशलार्धच्छेदा धारात्रितये न जायंते ॥ ७३ ॥

अर्थ—जिस धारा विषैं विरलन देयका अनुक्रम करि जो जो राशिका वर्गशलाका अर्द्ध-च्छेद तिसही धारा विषैं न होइ, अन्य धारा विषैं होइ, ऐसी यह नियमरूप व्याप्ति सो द्विरूप वर्ग

धारादिक तीनों धाराविषै जाननी। अंकसंदृष्टि करि उदाहरण, जैसें विरलन राशि पल्यकी सहनानी सोलह ताका विरलन करि एक एककी जायगा देयराशि भी सोलह सोलह मांडि परस्पर गुणन कीए एकट्ठी प्रमाण होइ, सो एकट्ठी प्रमाण द्विरूप वर्गधाराविषै पाईए है ताके अर्द्धच्छेद चौसठि (६४) अर वर्गशलाका छह (६) ते ए दोऊ राशि द्विरूप वर्गधारा विषै न पाईए हैं, ऐसेंही अन्यत्र भी जाननां ॥ ७३ ॥

आगैं तीन धारानि विषै उपरि उपरि राशि विषै अर्द्धच्छेदनिका प्रमाणकौं कहै हैं:—

**वग्गादुवरिमवग्गे दुगुणा दुगुणा हवंति अद्धछिदी।**
**धारातय सट्ठाणे तिगुणा तिगुणा परट्ठाणे ॥ ७४ ॥**

वर्गादुपरिमवर्गे द्विगुणा द्विगुणा भवंति अर्धच्छेदाः।
धारात्रये स्वस्थाने त्रिगुणाः त्रिगुणाः परस्थाने ॥ ७४ ॥

**अर्थ**—वर्गतें उपरिके वर्गस्थान विषैं दूणें दूणें अर्द्धच्छेद हो हैं। तीनों धारा विषैं स्वस्थान विषै तो ऐसें है। बहुरि परस्थान विषै तिगुणा तिगुणा अर्द्धच्छेद हैं। ऐसा यहु नियमरूप व्याप्ति सो द्विरूप वर्गधारादिक तीनों धारानि विषै जाननी। सो द्विरूप वर्गधारा विषै अंक संदृष्टि अपनी बुद्धितैं जाननी। तथापि उदाहरण कहिये है, तहां निज धाराहीकी अपेक्षा जहां होइ तहां स्वस्थान कहिए, परधाराकी अपेक्षा जहां होइ तहां परस्थान कहिए सो द्विरूप वर्गधारा विषै स्वस्थान अपेक्षा प्रथमस्थान च्यारि ताकै अर्द्धच्छेद दोय हैं। ताकैं उपरि वर्गस्थान सोलह ताके अर्द्धच्छेद च्यारि हैं, सो दोयतैं दूणे भए। बहुरि तीसरा स्थान दोयसैं छप्पन ताके अर्द्धच्छेद आठ हैं ते च्यारितैं दूणें भए। ऐसेही नीचलै स्थानतैं उपरिके स्थान विषै स्वस्थान अपेक्षा दूणें दूणें अर्द्धच्छेद जाननें। बहुरि परस्थान अपेक्षा द्विरूप वर्गधाराका प्रथम स्थान च्यारि ताके अर्द्धच्छेद दोय हैं। बहुरि द्विरूप घनधारा विषै दूसरा स्थान चौसठि ताकै अर्द्धच्छेद छह हैं, ते दोयतैं तिगुणे भए। बहुरि द्विरूप वर्गधारा विषै द्वितीयस्थान सोलह ताके अर्द्धच्छेद च्यारि हैं अर द्विरूप घनधारा विषै ताकै उपरि तृतीय स्थान च्यारि हजार छिनवै ताकै अर्द्धच्छेद बारह हैं ते च्यारितैं तिगुणें भए। ऐसेंही नीचले स्थानतैं उपरि स्थान विषै परस्थान अपेक्षा तिगुणे तिगुणे अर्द्धच्छेद जानने ॥ ७४ ॥

आगैं वर्गशलाकादिकनिका आधिक्यादिककें संभवनेका विधान कहै हैं:—

**वग्गसला रूवहिया सपदे पर सम सवग्गसलमेत्तं।**
**दुगमाहदमद्धछिदी तम्मेत्तदुगे गुणे रासी ॥ ७५ ॥**

वर्गशला रूपाधिकाः स्वपदे परस्मिन् समाः स्ववर्गशलामत्राम्।
द्विकमाहतमर्धच्छेदाः तन्मात्रद्विके गुणे राशिः ॥ ७५ ॥

**अर्थ**—वर्ग शलाका है सो स्वस्थान विषै एक अधिक होइ बहुरि परस्थान विषै अपनैं समान होइ। इहां उदाहरण स्वस्थान अपेक्षा, जैसें च्यारिकी वर्गशलाका एक, ताकै उपरि सोलह की दोय, ताकै उपरि दोयसै छप्पनकी तीन, ऐसें एक एक स्थान प्रति एक एक अधिक वर्ग-

शलाका जाननी, बहुरि परस्थान विषैं जैसें द्विरूप वर्गधारा विषै प्रथम स्थानकी एक वर्गशलाका है तैसेंही द्विरूप घनधाराका प्रथम स्थान आठ ताकी एक वर्गशलाका है। बहुरि जैसें द्विरूप वर्गधाराविषै द्वितीय स्थान सोलहकी दोय वर्गशलाका हैं तैसेंही द्विरूप घनधारा विषै द्वितीय स्थान चौसठि ताकी दोय वर्गशलाका हैं। ऐसें परस्थान अपेक्षा स्वसमान वर्गशलाका जाननी। बहुरि अपनी वर्गशलाका जेता प्रमाण तितनां दूवा मांडि परस्पर गुणें अर्द्धच्छेद होंहि। जैसें दोयसैं छप्पनकी वर्गशलाका तीन सो तीन जायगा दूवा मांडि २।२।२ परस्पर गुणें आठ होइ सोई दोयसैं छप्पनके आठ अर्द्धच्छेद हैं। ऐसें अन्यत्र भी जाननां। सो यहु नियम द्विरूप वर्गधारा ही विषैं तौ पाईए है। बहुरि द्विरूप घनधारा अर द्विरूप घनाघनधाराविषै नियम ऐसा नाहीं है। बहुरि राशिके जेते अर्द्धच्छेद होंहि तितनें दूवे मांडि परस्पर गुणें राशि हो हैं। जैंसे दोयसै छप्पनके अर्द्धच्छेद आठ सो आठ जायगा दोयका अंक माडि ( २,२,२,२,२,२,२,२, ) परस्पर गुणें दोयसैं छप्पन हो हैं। ऐसेंही अन्यत्र जाननां, सो यहु नियम तीनों धारा विषै जाननां ॥ ७५ ॥

आगैं वर्गशलाका अर अर्द्धच्छेद इनका स्वरूप कहै हैं:—

**वग्गिदवारा वग्गसलागा रासिस्स अद्धछेदस्स।**
**अद्धिदवारा वा खलु दलवारा होंति अद्धछिदी ॥ ७६ ॥**

वर्गितवारा वर्गशलाका राशेः अर्द्धच्छेदस्य।
अर्धितवारा वा खलु दलवारा भवंति अर्धच्छेदाः ॥ ७६ ॥

**अर्थ**—राशिका जो वर्गितवार कहिए दोयका वर्गतैं लगाय पूर्व पूर्वका जेतीवार वर्ग कीएं जो राशि ताका तितनां वर्गशलाका राशि जाननां। जैसें च्यारिकी वर्गशलाका एक जातैं एका वार वर्ग कीएं च्यारि हो हैं। पणट्ठीकी च्यारि जातैं दोयका वर्ग च्यारि, ताका वर्ग सोलह, ताका वर्ग दोयसै छप्पन, ताका वर्ग पणट्ठी। ऐसें च्यारिवार वर्ग भएं पणट्ठी हो हैं। ऐसें ही जाननी। यहु नियम तीनों धारा विषै हैं। विशेष इतनां द्विरूप घनधारा विषै दोयका घनतैं लगाय अर द्विरूप घनाघनधारा विषै दोयका घनतैं लगाय पूर्व पूर्वका वर्ग जेतीवार कीएं राशि होइ तितनी ताकी वर्गशलाका जाननी। अथवा राशिके जेते अर्द्धच्छेद होंहि तिन अर्द्धच्छेदनिके जेते अर्द्धच्छेद होंहि तितनी तिस राशिकी वर्गशलाका जाननी। जैसे दोयसै छप्पनके अर्द्धच्छेद आठ, आठके अर्द्धच्छेद तीन सो दोयसैं छप्पनकी तीनही वर्गशलाका जाननीं। सो यहु नियम द्विरूप वर्गधारा विषै ही है। बहुरी राशिका दलवार कहिए जितनी वार राशिको आधा आधा करतैं एक रहिजाय तितनां तिस राशिका अर्द्धच्छेद जानना। जैसें दोयसैं छप्पनका आधा, एकसौ अठाईस, ताका आधा चौसठि, ताका आधा बत्तीस, ताका आधा सोलह, ताका आधा आठ, ताका आधा च्यार, ताका आधा दोय, ताका आधा एक। ऐसे आठ वार आधा आधा भया। तातैं दोयसैं छप्पनके आठ अर्द्धच्छेद है। ऐसेंही अन्यत्र भी जाननां, सो यहु नियम तीनों धारा विषै हैं ॥ ७६ ॥

आगैं छह गाथानि करि द्विरूप घनधारा कौं कहे हैं:—

**वेरूववींदधारा अड चउसट्ठी चडित्तु संखपदे ।**
**आवलिघनमावलिया कदिविंदं चावि जायेज्ज ॥७७॥**

द्विरूपवृंदधारा अष्ट चतुःषष्टिः चटित्वा संख्यपदानि ।
आवलिघन आवल्याः कृतिवृंदं चापि जायेत ॥ ७७ ॥

**अर्थ**—द्विरूप वर्गधारा विषै जो जो राशि वर्गरूप है तिनि राशिनिका जु घनरूप राशि तिनकी जो धारा सो द्विरूप घनधारा है । सो याका प्रथम स्थान आठ है, जातैं दोयका घन आठ है । बहुरि याका वर्ग द्वितीयस्थान चौसठि जातैं च्यारिका घन चौसठि ही है । बहुरियाका वर्ग तृतियस्थान च्यारि हजार छिनवै, जातैं सोलहका घन च्यारिहजार छिनवै हो हैं । ऐसें ही पूर्व पूर्व स्थानरूप राशिका वर्ग करतैं उत्तर उत्तर स्थान होइ, संख्यात स्थान जाइ जघन्य परीतासंख्यातका घन हो हैं । बहुरि देयराशिकैं उपरि विरलन राशिका अर्द्धच्छेद प्रमाण वर्गस्थान गएं यहु राशि हो हैं, सो जघन्य परीतासंख्यातके अर्द्धच्छेद संख्यात ही हैं । तातैं जघन्य परीतासंख्यातका घनतैं संख्यात जाइ आवलीका घन उपजै हैं । ताका एक वार वर्ग भएं आवलीका वर्गका घन हो हैं॥७७॥

**पल्लघणं विंदंगुलजगसेढीलोयपदरजीवघणं ।**
**तत्तो पढमं मूलं सव्वागासं च जाणेज्जो ॥ ७८ ॥**

पल्यघनं वृंदांगुलजगच्छ्रेणीलोकप्रतरजीवघनम् ।
ततः प्रथमं मूलं सर्वाकाशं च जानीहि ॥ ७८ ॥

**अर्थ**—तातैं असंख्यात स्थान जाइ पल्यकी वर्गशलाकाका घन हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ पल्यका अर्द्धच्छेद राशिका घन हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ पल्यका प्रथममूलका घन हो हैं । ताका एकवार वर्ग भएं पल्यका घन हो हैं । बहुरि तातैं असंख्यात स्थान जाइ घनांगुल हो हैं । इहां 'उपज्जदि जो रासी' इत्यादिक सूत्र करि घनांगुलकी वर्ग शलाकादिकका अभाव इस धारा विषै जाननां । बहुरि तातैं असंख्यात स्थान जाइ जगच्छ्रेणी उपजै है । इहां भी उपज्जदि जो रासी इत्यादिक सूत्रके अभिप्राय करि जगच्छ्रेणीकी वर्गशलाकादिकका अभाव इस धारा विषै जाननां । बहुरि ताका एकवार वर्ग कीएं जगत्प्रतर उपजै है, तातैं अनंतस्थान जाइ जीवराशिकी वर्गशलाकाका घन हो हैं, तातैं अनंतस्थान जाइ जीवराशिका अर्द्धच्छेद राशिका घन हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ जीवराशिका प्रथममूलका घन हो है, ताका एकवार वर्ग भएं जीवराशिका घन हो हैं । बहुरि उपज्जदि जो रासी इत्यादिक सूत्रका अभिप्राय करि सर्व आकाशकी वर्गशलाकादिकनिका तौ अभाव है, तातैं जीवराशितैं अनंतस्थान जाइ सर्वाकाशका प्रथम मूल हो हैं । ताका वर्ग भएं सर्वआकाश हो है । लंबा, चौड़ा, ऊँचा ऐसा सर्व घनरूप आकाशके प्रदेशनिका प्रमाण हो हैं ॥ ७८ ॥

**संखमसंखमणंतं वग्गट्ठाणं कमेण गंतूण ।**
**संखासंखाणंताणुप्पत्ती होदि सव्वत्थ ॥ ७९ ॥**

संख्यमसंख्यमनंतं वर्गस्थानं क्रमेण गत्वा ।
संख्यासंख्यानंतानामुत्पत्तिः भवति सर्वत्र ॥ ७९ ॥

**अर्थ**—जघन्य असंख्यातासंख्यातरूप राशि पर्यंत तौ संख्यात वर्गस्थान जाइ करि, बहुरि तातैं उपरि जघन्य अनंतानंतरूप राशि पर्यंत असंख्यात वर्ग स्थान जाय करि, बहुरि तातैं उपरि केवलज्ञान पर्यंत अनंतवर्गस्थान जाइ करि यथासंख्य क्रमतैं संख्यात वा असंख्यात वा अनंतानंत रूप राशि उपजै हैं सर्वत्र तीनौं धारा विषैं जाननां । भावार्थ-संख्यातरूप राशिकी उत्पत्ति विषै पूर्वस्थानतैं संख्यात वर्गस्थान जाइ करि राशिकी उत्पत्ति कहिए । बहुरि ऐसें ही असंख्यात वा अनंतरूप राशिकी उत्पत्ति विषै पूर्वस्थानतैं असंख्यात वा अनंत वर्गस्थान जाइ करि उपजनां कहिए। परन्तु इतना विशेष है, जो देय राशितैं उपरि विरलन राशिका अर्द्धच्छेद मात्र वर्गस्थान गएं राशि हो हैं, तातैं जघन्य असंख्यातासंख्यात पर्यंत असंख्यातरूप राशि विषै भी संख्यात वर्गस्थान जाइ करि ही राशिका उपजनां कहिए वा जघन्य अनंतानंत पर्यंत अनंतरूप राशि विषै भी असंख्यात वर्गस्थान जाइ करि ही राशिका उपजनां कहिए ॥ ७९ ॥

**जत्थुद्देसे जायदि जो जो रासी विरूवधाराए ।**
**घणरूवे तद्देसे उप्पज्जदि तस्स तस्स घणो ॥ ८० ॥**

यत्रोद्देशे जायते यो यो राशिः द्विरूपधारायां ।
घनरूपे तद्देशे उत्पद्यते तस्य तस्य घनः ॥ ८० ॥

**अर्थ**—जिस उद्देश विषै, द्विरूप वर्गधारा विषै जो जो वर्गरूप राशि होइ तिस उद्देश विषै, द्विरूप घनधारा विषै तिस तिस राशिका घन उपजै है । जैसें द्विरूप वर्गधारा विषै दोयका वर्ग च्यारि थे इहां दोयका घन आठ है, तहां च्यारिका वर्ग सोल्ह थे इहां ताका घन चौसठि जाननां । ऐसें जो जो राशि द्विरूप वर्गधारा विषै कही है तिनका इहां सर्वका घन जाननां ॥८०॥

**एवमणंतं ठाणं णिरंतरं गमिय केवलस्सेव ।**
**विदियपदविंदमंतं विदियादिममूलगुणिदसमं ॥ ८१ ॥**

एवमनंतं स्थानं निरंतरं गत्वा केवलस्यैव ।
द्वितीयपदवृंदमंतो द्वितीयादिममूलगुणितसमः ॥ ८१ ॥

**अर्थ**—ऐसें सर्वाकाशकै उपरि अनंत वर्गस्थान निरंतर जाइ केवल ज्ञानका द्वितीय मूलका घन हो हैं । सोई इस द्विरूप घनधाराका अंत स्थान है, सो कितनां है ? द्वितीय मूल अर प्रथम मूल कौं परस्पर गुणें जो प्रमाण होइ ताहि समान है । जैसें पणट्ठीका प्रथम मूल दोयसै छप्पन, द्वितीय मूल सोल्ह, इनकों परस्पर गुणें च्यारि हजार छिनवै होइ सोई पणट्ठीका द्वितीय मूल सोल्ह ताका घन भी च्यारि हजार छिनवै ही होइ ऐसें ही इहां जाननां ॥ ८१ ॥

यह ही अंत स्थान कैसें है सो कहे हैं:—

**चरिमस्स दुचरिमस्स य णेव घणं केवलव्वदिक्कमदो ।**
**तम्हा विरूवहीणा सगवग्गसला हवे ठाणं ॥ ८२ ॥**

चरमस्य द्विचरमस्य च नैव घनः केवलव्यतिक्रमतः ।
तस्मात् द्विरूपहीना स्वकवर्गशला भवेत् स्थानम् ॥८२॥

**अर्थ**—द्विरूप वर्गधाराका चरम राशि केवलज्ञान अर द्विचरम राशि केवल ज्ञानका प्रथम मूल, तिनके घनका इहां ग्रहण नांही हैं । काहे तैं, जो इनके घनका ग्रहण करिए तौ केवल ज्ञानतैं अधिक प्रमाण होइ जाइ । बहुरि इस द्विरूप घनधाराके सर्व स्थान दोय घाटि केवल ज्ञानकी वर्ग-शलाका प्रमाण जाननें । इहां अंक संदृष्टि भी जाननीं । जैसैं केवल ज्ञानका प्रमाण पणट्ठी ताका घन वा ताके प्रथम मूल दोयसैं छप्पनका घन करिए तौ पणट्ठीतैं अधिक प्रमाण होइ जाइ तातैं न ग्रहण करनां ॥ ८२ ॥

आगैं अब द्विरूप घनधाराकौं आठ गाथानि करि कहै हैं:—

**तं जाण विरूवगयं घणाघणं अट्ठविंदतव्वग्गं ।**
**लोगो गुणगारसला वग्गसलद्धच्छिदादिपदं ॥ ८३ ॥**
तं जानीहि द्विरूपगतं घनाघनं अष्टवृंदतद्वर्गम् ।
लोको गुणकारशला वर्गशलार्धच्छेदादिपदम् ॥ ८३ ॥
**तेउक्काइयजीवा वग्गसलागत्तयं च कायठिदी ।**
**वग्गसलादित्तिदयं ओहिणिवद्धं वरं खेत्तं ॥ ८४ ॥**
तैजस्कायिकजीवा वर्गशलाकात्रयं च कायस्थितिः ।
वर्गशलादित्रितयं अवधिनिबद्धं वरं क्षेत्रम् ॥ ८४ ॥

**अर्थ**—द्विरूप वर्गधारा विषै जो जो राशि वर्ग रूप हैं ताका घनाघन इस द्विरूप घना-घन धारा विषै हैं । घनका जु घन ताकौं घनाघन कहिए । कैसें सो कहैं हैं । याका प्रथम स्थान आठका घन जो पांचसै बारह सो जाननां, जातैं दोयका घनाघन इतनां हो हैं । बहुरि ताका वर्ग दोय लाख बासठिहजार एक सौ चवालीस ( २६२१४४ ) सो याका दूसरास्थान जाननां जातैं च्यारिका घनाघन इतनां हो हैं । ऐसैंही पूर्व पूर्व स्थानकका वर्ग कीएं उत्तर उत्तरस्थान होइ सो इस क्रमतैं असंख्यात स्थान जाइ लोकाकाशके प्रदेशनिका प्रमाणरूप लोक उपजै हैं । याकी वर्गशलाकादिक इस धारा विषै नाहीं हैं तातैं न कहे । बहुरि तातैं असंख्यात स्थान जाइ तेज-स्कायिक जीवराशिकी संख्याका ल्यावनैंकै अर्थि लोकका परस्पर जेतीवार गुणन होइ तीह प्रमाण रूप गुणकारशलाका उपजै है । तातैं असंख्यात स्थान जाइ तेजस्कायिक जीवराशिकी वर्गशलाका हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका अर्द्धच्छेद हो है, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका प्रथममूल हो हैं । ताकौं एकवार वर्गरूप कीएं तेजस्कायिक जीवराशिकी संख्या उपजै है । इहां तेजस्कायिक जीवराशिका गुणकार शलाकादिकनिकै वर्गशलाकादिकनितैं संख्या अल्प है ताकी व्यवस्थिति दिखावनैं पूर्वक प्रमाण ल्याईए हैं । जगच्छ्रेणिका घनप्रमाण जो लोकका प्रदेशनिका राशि ताकौं शलाका विरलन देयरूप तीनप्रकार करि स्थापिए, तहां लोकप्रमाण विरलन राशिकौं तौ एक एक रूप करि जुदा जुदा बखेरिये । बहुरि एक एक प्रति लोकप्रमाण देयराशि देइ

जाईए। बहुरि ऐसें ए भए लोकप्रमाण लोक तिनकौं परस्पर गुणिए। ऐसें करि जो वह लोक-प्रमाण शलाकाराशि था तामैं एक घटाइए, ऐसें परस्पर गुणतें जो महाराशि भया ताकी गुणकार शलाका तौ एक भई जातें एकवार परस्पर गुणन भया है। बहुरि वर्गशलाका पल्यकै असंख्यातवैं भाग प्रमाण भई। जातैं देयराशिकी वर्गशलाका, अर विरलन राशिके अर्द्धच्छेद इन दोऊनिकों मिलाएं वर्गशलाकाका प्रमाण हो हैं। इहां अंकसंदृष्टि कहिए हैं। लोककी सहनानी च्यारि ४, ताकौं शलाका विरलन देयरूप स्थापिए (श. ४, वि. ४, दे. ४) तहां विरलन राशिकौं विरलिए १,१,१,१ रूप प्रति देयराशिकौं दीजिए, ४,४,४,४ परस्पर गुणें दोयसैं छप्पन भए, तहां एकवार गुणन भया तातैं गुणकारशलाका एक। बहुरि देयराशि च्यारिकी वर्गशलाका एक, विरलन राशि च्यारिके अर्द्धच्छेद दोय मिलि करि दोयसै छप्पनकी तीन वर्गशलाका भई। बहुरि देयराशिका अर्द्धच्छेद दोय तिनि करि विरलनराशि च्यारिकौं गुणें दोयसैं छप्पनके आठ अर्द्धच्छेद भए, ऐसें जानना। बहुरि जैसें अंकसंदृष्टि विषै दोयसै छप्पन भए तैसें परस्पर गुणें जो महाराशि भया ताकौं विरलन राशि अर देय राशि रूप स्थापिए। तहां विरलन राशिका विरलन करि अर रूप प्रति देय राशिकौं देइ परस्पर गुणि जो लोकप्रमाण शलाका राशि था तामैं एक और घटाईए, तहां पस्पर गुणें जो महाराशि भया ताकी गुणकार शलाका दोय जातैं दूसरी वार गुणन भया। वहुरि वर्ग शलाका अर अर्द्धच्छेदतैं आलाप करि असंख्यात लोक प्रमाण हैं तथापि वर्गशलाका-नितैं अर्द्धच्छेद असंख्यात लोक गुणें हैं। वहुरि इस ही क्रमतैं परस्पर गुणनतैं जो जो महाराशि होइ तीह प्रमाण विरलनराशि. देय राशि स्थापि विरलन राशिका विरलन करि रूप प्रति देय राशिकौं देइ परस्पर गुणन करि एक एक शलाका राशिमैं घटावतैं घटावतैं जहां लोक प्रमाण शलाका राशि समाप्त भए तहां परस्पर गुणन तैं जो महाराशि भया ताकी गुणकार शलाका तौ लोकप्रमाण हो हैं। जातैं लोकप्रमाण वार गुणकार भया। वहुरि वर्गशलाका अर अर्द्धच्छेदतैं पूर्वोक्त प्रकार हीन अधिक हैं तथापि आलापतैं असंख्यात लोक प्रमाण कहिए। ऐसें पहिली वार स्थापन कीया जो शलाका राशि ताका निष्ठापन जो समाप्तपनां सो भया। बहुरि तहां परस्पर गुणें जो महाराशि भया ताकौं शलाका, विरलन, देय रूप तीन प्रकार स्थापिए। वहुरि जैसें प्रथम शलाकाका निष्ठापन कीया, तैसेंही अनुक्रमतैं दूसरी वार स्थापन करी जु यह शलाका ताका निष्ठापन करनां। वहुरि तहां परस्पर गुणन तैं जो महाराशि होइ तीह प्रमाण शलाका, विरलन, देय राशि स्थापि पूर्वोक्त प्रकार करि ही तीसरी वार स्थापन करी जु यह शलाका राशि ताका निष्ठापन करनां। वहुरि तहां परस्पर गुणें जो महाराशि भया तीह प्रमाण शलाका, विरलन, देय राशि स्थापि, पूर्वोक्त प्रकार करि जो चौथी वार इहां शलाका राशिका प्रमाण था तामैं पूर्वैं तीन शलाकाका प्रमाण घटाइ अवशेष शलाकाका प्रमाणकों सामान्यपनें आधी शलाका कही ताका निष्ठापन करनां। ऐसें साढा तीन वार शलाका निष्ठापन भएं अग्निकायिक जीवनिका प्रमाण हो हैं। ऐसैं विगतनौं तेजस्कायिक जीव राशिका गुणकार शलाकादिककै वर्गशलाकादिक नतैं अल्प संख्या दिखावनैं पूर्वक प्रमाण वर्णन कीयां। बहुरि तींह तेजस्कायिक जीव राशितैं असंख्यात स्थान

जाइ कायस्थितिकी वर्गशलाका हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका प्रथम मूल हो हैं, ताका एक वार वर्ग भएं कायस्थितिका प्रमाण हो हैं। सो कहा? अन्यकायतैं आय करि अग्निकायिकविषै कोई जीव उपज्या, सो उत्कृष्टपनैं यावत् काल अग्निकायिकपणां छोडि अन्य काय विषै न उपजै तहांही अवस्थित रहै, अग्निकायहीके पर्याय धर्या करै, तिसकालके समयनिका प्रमाण सो इहां कालस्थितिका प्रमाण जाननां। बहुरि तातैं असंख्यात स्थान जाइ अवधिक्षेत्रकी वर्गशलाका हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका प्रथम मूल हो हैं, ताकौं एक वार वर्गरूप कीएं सर्वावधिका विषयभूत उत्कृष्ट क्षेत्रके प्रदेशनिका प्रमाण हो हैं. यद्यपि अवधि रूपीहीकौं जानें अर रूपी पदार्थ लोक विषै ही है। तथापि शक्ति अपेक्षा असंख्यात लोक प्रमाण क्षेत्र कह्या है॥ ८३।८४ ॥

**वग्गसलागत्तिदयं तत्तो ठिदिबंधपच्चयट्ठाणा।**
**वग्गसलादीरसबंधज्झवसाणाण ठाणाणि ॥ ८५ ॥**

वर्गशलाकात्रितयं ततः स्थितिबंधप्रत्ययस्थानानि।
वर्गशलादिरसबंधाध्यवसानां स्थानानि ॥ ८५ ॥

**अर्थ**—तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका प्रथम मूल हो है, ताका एकवार वर्ग कीएं ज्ञानावरणादिकर्मनिका स्थितिबंधकौं कारणभूत जे कषाय परिणाम तिनके स्थानकनिका प्रमाण हो हैं। बहुरि तातैं असंख्यात स्थान जाइ अनुभाग-बंधाध्यवसाय स्थानकी वर्ग शलाका हो है, तातैं असंख्यात स्थान जाइ तहांके अर्द्धच्छे हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ तहांके अर्द्धच्छेद हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका प्रथम मूल हो है, ताकौं एक वार वर्ग कीएं ज्ञानावणादि कर्मनिका तीव्रादि शक्तिकौं लीएं रसबध जो अनुभागबंध ताको कारण भूत कषाय परिणामनिके स्थानकनिका प्रमाण हो है ॥ ८५ ॥

**वग्गसलागप्पहुदी णिगोदजीवाण कायवरसंखा।**
**वग्गसलागादितयं णिगोदकायट्ठिदी होदि ॥ ८६ ॥**

वर्गशलाकाप्रभृति निगोदजीवानां कायवरसंख्या।
वर्गशलाकादित्रयं निगोदकायस्थितिर्भवति ॥ ८६ ॥

**अर्थ**—तातैं असंख्यात स्थान जाइ निगोद शरीर संख्याकी वर्ग शलाका हो हैं, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका प्रथम मूल हो है, ताकौं एक वार वर्ग रूप किएं निगोद जीवनिके सर्व शरीर तिनकी उत्कृष्ट संख्या हो हैं,। नियत जे अनंत संख्याकों धरें जीव तिनकौं गां कहिए क्षेत्र ताहि ददाति कहिए देव सो निगोद कर्म कहिए तीह संयुक्त जे जीव ते निगोद जींव कहिए, तिनके साधारण शरीर जेते लोकविषै उत्कृष्टपनैं होंहि तिनकी संख्या ऐसी जाननी। बहुरि तातैं असंख्यात स्थान जाइ निगोद कायस्थितिकी वर्गशलाका हो है, तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं तातैं असंख्यात स्थान जाइ ताहीका प्रथम मूल हो हैं, ताकों एकवार वर्गरूप कीएं निगोद कायस्थिति हो है। सो यहां निगोद कायस्थिति ऐसा कहनें करि एक जीवका

निगोद विषै उत्कृष्ट रहनेका काल न ग्रहण करनां । जातैं एकजीव इतरनिगोदविषै उत्कृष्ट रहै तौ अढाई पुद्गल परावर्त्तन काल पर्यंत रहै सो काल अनंत है। तौ कहा ग्रहण करनां ? निगोद शरीररूप परिणए जे पुद्गल ते तीह शरीररूप आकारकौं यावत्काल उत्कृष्ट पनैं छाड़ै नांहीं सो काल इहां ग्रहण करनां ॥ ८६ ॥

तत्तो असंखलोग कदिठाणे चडिय वग्गसलतिदयं ।
दिस्संति सव्वजेट्ठा जोगस्सविभागपडिछेदा ॥ ८७ ॥
ततो असंख्यलोकं कृतिस्थानं चटित्वा वर्गशलात्रितयम् ।
दृश्यंते सर्वज्येष्ठा योगस्याविभागप्रतिच्छेदाः ॥ ८७ ॥

**अर्थ**—बहुरि तीह निगोद काय स्थितितैं उपरि असंख्यात लोक प्रमाण वर्गस्थान चढ़िकरि सर्वोत्कृष्ट योगके उत्कृष्ट अविभाग प्रतिछेदनिकी वर्गशलाका हो हैं, तातैं असंख्यात लोक प्रमाण वर्गस्थान चढ़िकरि ताहीके अर्द्धच्छेद हो हैं, तातैं असंख्यात लोकमात्र कृतिस्थान चढ़िकरि ताहीका प्रथम मूल हो हैं, ताकों एकवार वर्गरूप कीएं सर्वोत्कृष्ट योगके उत्कृष्ट अविभाग प्रतिछेदनिका प्रमाण हो हैं। कर्म आकर्षण करनेकी शक्ति सो योग कहिए, ताके अविभाग प्रतिछेद कहिए जिनका विभाग न होइ ऐसे सूक्ष्म अंश तिनका प्रमाण हो है ॥ ८७ ॥

जो जो रासी दिस्सदि विरूववग्गे सगिट्ठठाणम्हि ।
तट्ठाणे तस्सरिसा घणाघणे णवणवुद्दिट्ठा ॥ ८८ ॥
यो यो राशिः दृश्यते द्विरूपवर्गे स्वकेष्टस्थाने ।
तत्स्थाने तत्सदृशा घनाघने नव नव उद्दिष्टाः ॥ ८८ ॥

**अर्थ**—द्विरूप वर्गधारा विषै अपनां इष्ट स्थान जो विवक्षित स्थान तीह विषै जो जो राशि वर्गरूप दीसै हैं, तीह स्थान विषै इहां द्विरूप घनाघन धारा विषैं द्विरूप वर्गधाराका स्थानके समान राशि नव नववार परस्पर गुणें राशि हो हैं ऐसा कह्या है। जैसें द्विरूप वर्गधारा विषैं राशि विषैं द्वितीय स्थान च्यारिका वर्ग सोलह इहां च्यारिकौं नववार मांडि (४,४,४,४,४,४,४,४,४) इनकों परस्पर गुणें दोय लाख बासठि हजार एक सो चवालीस होइ, सो इस धारा विषै द्वितीय स्थान जाननां। ऐसें ही सर्व द्विरूप वर्गधाराके स्थानक वर्गरूप हैं तिनकों नववार परस्पर गुणें द्विरूप घनाघन धाराके स्थान हो हैं ऐसा जाननां ॥ ८८ ॥

चडिदूणेवमणंतं ठाणं केवलचउत्थपदविंदं ।
सगवग्गगुणं चरिमं तुरियादिपदाहदेण समं ॥ ८९ ॥
चटित्वैवमनंतं स्थानं केवलचतुर्थपदवृंदम् ।
स्वकवर्गगुणश्चरमः तुरीयादिपदाहतेन समः ॥ ८९ ॥

**अर्थ**—तीह योगका उत्कृष्ट अविभाग प्रतिछेद स्थानतैं अनंत वर्ग स्थान चढि करि केवलज्ञानका चौथा मूल ताका घनकों इस चौथा मूलका घनका वर्ग करि गुणें जो प्रमाण होइ सोई इस धाराका अंतस्थान जाननां। सो यहु चौथा मूल अर प्रथम मूलकौं गुणें जो प्रमाण होइ तीह

समान जाननां। याकों अंकसंदृष्टि करि कहिए है। जैसें केवल ज्ञान पणट्ठी प्रमाण(६५-५३६) ताका चौथा वर्गमूल दोय (२) ताका घन आठ (८) ताकों इस घनका वर्ग चौसठि करि गुणें पांचसैं बारा होइ (५१२) सोई पणट्ठीका चौथा मूल दोय (२) अर प्रथम मूल दोयसैं छप्पन (२५६) इनकों परस्पर गुणें भी पांच सौ बारा होय (५१२) ऐसें यहु अंत स्थान जाननां ॥ ८९ ॥

औरनिके अंत स्थानपनां कैसें न संभवै सो कहै हैं:—

**चरिमादिचउक्कस्स य घणाघणा एत्थ णेव संभवदि।**
**हेदू भणिदो तम्हा ठाणं चउहीणवग्गसला ॥ ९० ॥**

चरमादिचतुष्कस्य च घनाघना अत्र नैव संभवंति।
हेतुः भणितः तस्मात् स्थानं चतुर्हीनवर्गशलम् ॥ ९० ॥

अर्थ—केवलज्ञानादिक नीचैके द्विरूप वर्गधारा विषै कहे च्यारि स्थान केवलज्ञान १ ताका प्रथम मूल १, द्वितीय मूल १, तृतीय मूल १ इन च्यारोंका घनाघन इस द्विरूप घनाघन धारा विषै न संभवै है। जो इनका घनाघन करिए तौ केवल ज्ञानतैं अधिक प्रमाण होइ। अंकसंदृष्टि करि जैसें केवल ज्ञान पणट्ठी प्रमाण (६५५३६) ताका प्रथम मूल दोयसैं छप्पन (२५६) द्वितीय मूल सोलह (१६) तृतीय मूल च्यारि (४) इनके घनका घन करिए तौ पणट्ठीतैं अधिक प्रमाण होइ जाइ, तातैं इस द्विरूप घनाघन धाराके सर्वस्थानकनिका प्रमाण च्यारि घाटि केवलज्ञानकी वर्गशलाका प्रमाण जानैं ॥ ९० ॥

आगें कहीं जु ए धारा तिनका संहार कहे हैं:—

**ववहारुवजोग्गाणं धाराणं दरिसिदं दिसामेत्तं।**
**वित्थरदो वित्थररुइसिस्सा जाणंतु परियम्मे ॥ ९१ ॥**

व्यवहारोपयोग्यानां धाराणां दर्शितं दिशामात्रम्।
विस्तरतो विस्तररुचिशिष्या जानंतु परिकर्मणि ॥ ९१ ॥

अर्थ—संख्या व्यवहारकों उपयोगी ऐसे जु धारा तिनका स्वरूप इहां दिशा मात्र दिखाया। जैसें कोऊ अंगुली करि पूर्वादिक दिसाकौं दिखावै तैसें इहां अति संक्षेप धारानिका स्वरूप दिखाया है। जे विस्तार विषै रुचिके धारक शिष्य हैं, ते विस्तार तैं बृहत्धारा परिकर्मा नामा शास्त्र विषै धारानिका स्वरूपकौं जानहु ॥ ९१ ॥ ऐसें संख्याप्रमाण समाप्त भया।

अथ संख्याप्रमाणके विशेषभूत ऐसी जु चौदह धारा तिनकूं सविस्तर दिखाइ अब विवक्षित जो उपमा प्रमाणका अष्टक ताकौं निरूपण करैं हैं:—

**पल्लो सायर सूई पदरो य घणंगुलो य जगसेढी।**
**लोयपदरो य लोगो उवमपमा एवमट्ठविहा ॥ ९२ ॥**

पल्यं सागरः सूची प्रतरं च घनांगुलं च जगच्छ्रेणी।
लोकप्रतरश्च लोकः उपमाप्रमा एवमष्टविधा ॥ ९२ ॥

अर्थ—पल्य १, सागर २, सूच्यंगुल ३, प्रतरांगुल ४, घनांगुल ५, जगच्छ्रेणी ६ जगत्प्रतर ७, घनलोक ८ ऐसे उपमा प्रमाण आठ प्रकार हैं॥ ९२॥

आगैं इन विषैं पल्यका भेदकौं अपनां अपनां विषयका निर्णय पूर्वक कहै हैं:—

ववहारुद्धारद्धापल्ला तिण्णेव होंति णायव्वा।
संखा दीवसमुद्दा कम्मट्ठिदि वण्णिदा जेहिं॥ ९३॥

व्यवहारोद्धाराद्धापल्यानि त्रीण्येव भवंति ज्ञातव्यानि।
संख्या द्वीपसमुद्राः कर्मस्थितयो वर्णिता यैः॥ ९३॥

अर्थ—व्यवहार पल्य १, उद्धारपल्य २, अद्धापल्य, ३, ऐसें पल्य तीन प्रकार ही हैं ऐसा जाननां। जिन तीन प्रकार पल्यनिकरि क्रमतैं संख्या अर द्वीप समुद्र अर कर्मस्थिति आदि वर्णन कीए हैं। तहां व्यवहार पल्य करि तौ रोमनिकी संख्या वर्णिए हैं, अर उद्धारपल्यकरि द्वीप समुद्रनिकी संख्या वर्णिए हैं, अर अद्धापल्य करि कर्मकी स्थिति वर्णिए हैं, आदि शब्दतैं और भी यथासंभव जाननां॥ ९३॥

आगैं पल्यके जाननेकौं विधान कहै हैं:—

सत्तमजम्मावीणं सत्तदिणब्भंतरम्हि गहिदेहिं।
सण्णट्ठं सण्णिचिदं भरिदं वालग्गकोडीहिं॥ ९४॥

सप्तमजन्मावीनां सप्तदिनाभ्यंतरे गृहीतैः।
संनष्टं संनिचितं भरितं वालाग्रकोटिभिः॥ ९४॥

अर्थ—सातवां जन्म जुक्त ऐसे जु ऊरणें गाडर तिनके जन्मतैं सात दिन मांही ग्रहे जु रोम तिनके अग्रभाग रूप खंड तिनके कोडिनिकरि संयुक्त किया बहुत संचयरूप किया भऱ्या॥ ९४॥

ऐसा कह्या सो कहै हैं:—

जं जोयणवित्थिण्णं तत्तिउणं परिरयेण सविसेसं।
तं जोयणमुव्विद्धं पल्लं पलिदोवमं णाम॥ ९५॥

यत् योजनविस्तीर्णं तत्त्रिगुणं परिधिना सविशेषम्।
तत् योजनमुद्विद्धं पल्यं पलितोपमं नाम॥ ९५॥

अर्थ— जो एक योजन प्रमाण तौ विस्तीर्ण कहिए चौडा, बहुरि तातैं तिगुणा परिधि करि सविशेप।

भावार्थ— जो सूक्ष्म परिधिकी अपेक्षा चौडाईतैं तिगुणां किछू अधिक परिधिकी प्रमाण करि संजुक्त, बहुरि एक योजन उंडा ऐसा जु कुंड सो रोमनि करि भऱ्या तीह विषै जो रोमनिका प्रमाण ताकौं पल्योपम कहिए वा पलितोपम कहिए॥ ९५॥

आगैं परिधिका सविशेष ऐसा विशेषण कह्या ताके जाननेंकौं सूक्ष्म परिधि करनैंका करणसूत्र कहै हैं:—

विक्खंभवग्गदहगुणकरणी वट्टस्स परिरयो होदि।
विक्खंभचउब्भागे परिरयगुणिदे हवे गणियं॥ ९६॥

विष्कंभवर्गदशगुणकरणिः वृत्तस्य परिधिः भवति ।
विष्कंभचतुर्भागे परिधिगुणिते भवेत् गणितम् ॥ ९६ ॥

**अर्थ**—विष्कम्भ कहिए चौड़ाईका प्रमाण तीहका वर्ग करिए, ताकौं दसगुणां करिए ऐसें करतैं जो प्रमाण होइ सो वृत्त जो गोल क्षेत्र ताका करणिरूप परिधि जाननां । जिस राशिका जहां वर्गमूल ग्रहण करनां होइ तिस राशिका तहां करणि ऐसी संज्ञा जाननी । वहुरि गिरद भ्रमण विषैं जेता प्रमाण होइ सो सूक्ष्म परिधि जाननां । जो तारतम्यरूप परिधि होइ सो सूक्ष्म परिधि कहिए । सो इहां कुंडका विष्कम्भ एक योजन है । विष्कम्भ १ ताका वर्ग कीएं भी एक योजन ही होइ, ताकौं दशगुणा कीएं दश योजन होइ सो इतनां करणि राशि भया, सो याका इहां वर्गमूल ग्रहण करणां । सो दश योजनका वर्गमूल तीन योजन अर एक योजनका छठा भाग इतनां भय ( $३\frac{१}{६}$ ) याकों समछेद करि जोडें उगणीसका छठा भाग भया ( $\frac{१९}{६}$ ) ऐसें इस कुंडका सूक्ष्म परिधिका प्रमाण हो हैं । वहुरि परिधिकौं विष्कम्भका चौथा भागतैं गुणें क्षेत्रफल होइ सो इहां विष्कम्भ एक योजन ताका चौथा भाग $\frac{१}{४}$ करि गुणें उगणींसकौं चौईसका भाग दीजिये इतना क्षेत्रफल भया ( $\frac{१९}{२४}$ )। वहुरि याकौं वेध जो उंडाई एक योजन प्रमाण तीह करि गुणें भी तितनां ही भया ( $\frac{१९}{२४}$ )। ऐसें इस कुंडका घनरूप समस्त सूक्ष्म क्षेत्रफल उगणींसका चौवीसमां भाग प्रमाण जाननां । वहुरि यहु कह्या जो प्रमाण योजनरूप सूक्ष्म क्षेत्रफल ताके व्यवहार योजनादिक करनें कैसें ? सो कहै हैं । एक प्रमाणयोजन रूप क्षेत्र ताका पांचसैं व्यवहारयोजन होइ तौ उगणीस प्रमाण योजनका चौवीसवां भागकौं कितने व्यवहार योजन होइ ऐसें त्रैराशिक करनां, तहां घनराशिके गुणकार अर भागहार घनरूप ही होइ तातैं तिन प्रमाण योजननिके भागनिकौं पांचसैका घन करि गुणिए तातैं पांचसैंकौं तीन जायगा लिखिए । वहुरि ऐसेंही एक व्यवहारयोजनके सात लाख अडसठिहजार अंगुल, एक अंगुलके आठ यव, एक यवके आठ तिल, एक तिलकी आठ लीख, एक लीखके आठ कर्मभूमियांके रोम, एक कर्मभूमियांके रोमके आठ जघन्य भोगभूमियांके रोम, एक जघन्य भोग भूमियांके रोमके आठ मध्यम भोग भूमियांके रोम, एक मध्यम भोगभूमियांके रोमके आठ उत्कृष्ट भोग भूमियांके रोम, सो इनका त्रैराशिक करि घनरूप राशि है तातैं इन सवनिकौं तीन तीन वार मांडि परस्पर गुणिए ( $\frac{१९}{२४}$, ५००,५००,५००,७६८०००,७६८०००, ७६८०००८,८,८,८,८,८,८,८,८,८,८,८,८,८,८,८,८,८,८,८,८ इन सवनिकौं परस्पर गुणिए वहुरि इहां विष्कम्भके वर्गतैं दशगुणां करणिरूप परिधिका प्रमाण कैसें होइ सो वासनाका विधान संस्कृत टीकातैं जाननां ॥ ९६ ॥

आगैं परस्पर गुणें जो सिद्ध भया अंक ताकौं कहैं हैं:—

**एक्कट्ठी पण्णट्ठी उणवीसट्ठारसेहिं संगुणिदा ।**
**विगुणणवसुण्णसहिया पल्लस्स दु रोमपरिसंखा ॥ ९७ ॥**

एकाष्टी पंचषष्टी एकोनविंशाष्टादशैः संगुणिता ।
द्विगुणनवशून्यसहिता पल्यस्य तु रोमपरिसंख्या ॥ ९७ ॥

अर्थ—एकट्ठी (१८४४६७४४०७३७०९५५१६१६) वहुरि पणट्ठी (६५५३६) वहुरि उगणीस (१९) वहुरि अठारह (१८) इनकौं परस्पर गुणें जे अंक होंहिं तिनकौं आगैं द्विगुण नवशून्य जो अठारह विंदी तिन करि संयुक्त करिए यह पल्तिोपमके रोमनिकी संख्या जाननीं (१८=६५=१९,१८, विंदी १८) ॥ ९७ ॥

आगैं परस्पर गुणें जो प्रमाणरूप फल ताकौं दिखावै हैं:—

**वटलवणरोचगोनगनजरनगंकाससघधमपरकधरं।**
**विगुणणवसुण्णसहिदं पल्लस्सदु रोमपरिसंखा ॥ ९८ ॥**

वट....................................................।
द्विगुणनवशून्यसहितं पल्यस्य तु रोमपरिसंख्या ॥ ९८ ॥

अर्थ—इहां अक्षर संज्ञातैं अंक जाननें। ताका उक्तं च सूत्र–'कटपयपुरस्थवर्णैर्नव नव पंचाष्टकल्पितैः क्रमशः। स्वरञनशून्यं संख्या मात्रोपरिमाक्षरं त्याज्यं॥ याका अर्थ—ककारादिक नव, अर टकारादिक नव, अर पकारादिक पांच, अर यकारादिक आठ। इन अक्षरनि विषै क्रमतैं जेथवां अक्षर होइ सो तहां अंक जाननां। वहुरि अकारादिक स्वर अर ञकार, नकार ए जहां होइ तहां विंदी जाननां। वहुरि अक्षरनिकै जो मात्रा होइ अथवा कोई संजोगी अक्षर होइ तौ ताका किछू प्रयोजन न ग्रहण करनां। सो इस सूत्र करि इहां व कहिए च्यारि जातैं यकारतैं वकार चौथा अक्षर है। वहुरि ट कहिए एक जातैं टकार पहला अक्षर है। वहुरि ल कहिए तीन जातैं यकारतैं लकार तीसरा अक्षर है। वहुरि व कहिए च्यारि जातैं यकार तैं वकार चौथा अक्षर हैं। वहुरि ण कहिए पांच जातौं टकारतैं णकार पांचवां अक्षर है। ऐसें ही क्रमतैं रोचगो नगनजर नगंकास ससघ ध मपर कधरंनि इन अक्षरकरि दोय, छह, तीन, विंदी, तीन, एक, सात, सात, सात, च्यारि, नव, पांच, एक, दोय, एक, नव दोयके अंक जाननें। वहुरि आगैं द्विगुण नव शून्य कहिए अठारह विंदीनि करि सहित करिए। ऐसें जो प्रमाण होइ सो पल्यके रोमानिकी संख्या जाननी। (४१३४५२६३०३०८२०३१७७७४९५१२१९२००००००००००००००००००) ॥ ९८ ॥

आगैं व्यवहार पल्यके समयकौं दिखावैं हैं:—

**वस्ससदे वस्ससदे एक्केक्के अवहिदम्हि जो कालो।**
**तक्कालसमयसंखा णेया ववहारपल्लस्स ॥ ९९ ॥**

वर्षशते वर्षशते एकैकस्मिन् अपहृते यः कालः।
तत्कालसमयसंख्या ज्ञेया व्यवहारपल्यस्य ॥ ९९ ॥

अर्थ—एक सौ वर्ष, एक सौ वर्ष गएं एक एक रोम तिन रोमनिमैंस्यौं ग्रहण करिए। ऐसें ग्रहण करतैं सर्व रोम समाप्त जितने काल करि होइ तावन्मात्र कालके जेते समय सो व्यवहार पल्यके समयनिकी संख्या होइ सो एक रोमका ग्रहण विषै सौवर्ष होइ, तौ पूर्वोक्त प्रमाण सर्व रोमके ग्रहण विषै केते वर्ष होइ ऐसें त्रैराशिक करि वहुरि एक वर्षके तीनसैं साठि दिन, एक

दिनके तीस मुहूर्त्त, एक मुहूर्त्तके तीन हजार सातसैं तहेत्तरि उश्वास, एक उश्वासकी संख्यात आवली, एक आवलीके जघन्य युक्तासंख्यात प्रमाण समय कीएं जेता समयनिका प्रमाण होइ तितनां व्यवहार पल्यका काल है ॥ ९९ ॥

आगैं उद्धार पल्यके कालकौं दिखावैं हैं :—

ववहारेयं रोमं छिण्णमसंखेज्जवाससमयेहिं ।
उद्धारे ते रोमा तक्कालो तत्तियो चेव ॥ १०० ॥
व्यवहारैको रोमः छिन्नो असंख्येयवर्षसमयैः ।
उद्धारे तानि रोमाणि तत्कालः तावान् चैव ॥ १०० ॥

**अर्थ**—व्यवहार पल्य विषै जे रोम कहे तिन विषै एक एक रोम असंख्यात वर्षके समयनिकै समान खंड रूप कीजिए । **भावार्थ**—असंख्यात वर्षनिके जेते समय होहिं तितनें तितनें एक एक रोमके खंड करिए यों करतैं जेते रोम खंड होहिं तत्र ते रोम उद्धार पल्यके हो हैं। बहुरि तिन रोमनिका अपहरण करणेका काल तितनां ही उद्धार पल्यका रोमनिकैं समान ही जाननां । भावार्थ—जेते रोम खंड भए तिन विषै एक एक समय विषै एक एक रोम खंडकौं ग्रहण करतैं करतैं सर्व रोमखंड समाप्त जेते काल करि होई तितनां उद्धार पल्यका काल जाननां ॥ १०० ॥

आगैं अद्धापल्यकौं निर्देश करैं हैं:—

उद्धारेयं रोमं छिण्णमसंखेज्जवाससमयेहिं ।
अद्धारे ते रोमा तत्तियमेत्तो य तक्कालो ॥ १०१ ॥
उद्धारैकं रोमं छिन्नमसंख्येयवर्षसमयैः ।
अद्धारे तानि रोमाणि तावन्मात्रश्च तत्कालः ॥ १०१ ॥

**अर्थ**— उद्धार पल्य विषै कहे जु रोम तिन विषै एक एक रोम असंख्यात वर्षके जेते समय होंहि तिनकै समान खंड रूप करिए ते रोम अद्धार पल्यके हों हि तिनके अपहरण करणेका काल तावन्मात्र जानना, । एकएक समय विषै एक एक रोमकौं ग्रहण करतैं जेतैं कालकरि सर्व रोम समाप्त होंहि तितनां काल अद्धार पल्यका हैं । इहां कोऊ प्रश्न करै कि इहां असंख्यात वर्ष कहे सो कैसा असंख्यात है ? ताका समाधान—मध्यम असंख्यात का कोऊ भेद है, मध्यमके भेद घनें ते जुदे जुदे संज्ञादिक रूप वचन करि कहे न जाइ वा परोक्ष ज्ञानी जीवनि करि जुदा जुदा तिनका संज्ञा प्रमाणादिक जान्या न जाइ, तातैं सामान्यपनैं असंख्यातका नाम कह्या, यथासंभव जानि लेनां । लोक विषैं भी जहां निर्णय न होइ तहां सामान्यवचन कहिए हैं जैसें देवदत्तके लाखां धन पाईए हैं, तहां यहु आया जो हजारोंतैं अधिक अर कोड्योंतैं हीन केतायक लाख प्रमाण धन है, तैसें इहां भी संख्याततैं अधिक अनंततैं हीन यथासंभव असंख्यात प्रमाण जाननां । अथवा द्विरूप वर्गधारादिक विषै अल्प बहुत्वका वर्णन करि हीन अधिकपनौं जांनि स्थूलपनैं प्रमाणका ज्ञान करनां । सूक्ष्म तारतम्य प्रत्यक्ष ज्ञानी प्रमाण जानैं हैं । ऐसेंही अन्यत्र भी जहां सामान्यपनैं संख्यात, असंख्यात, अनंत कहिए तहां यथासंभवपनां जानि लेनां ॥ १०१ ॥

आगैं सागरोपमका स्वरूपकौं सूचैं हैं:—

एदोसिं पल्लाणं कोडाकोडी हवेज्ज दसगुणिदा ।
तं सागरोवमस्स दु हवेज्ज एक्कस्स परिमाणं ॥ १०२ ॥
एतयोः पल्ययोः कोटीकोटी भवेत् दशगुणिता ।
तत् सागरोपमस्य तु भवेत् एकस्य परिमाणम् ॥ १०२ ॥

**अर्थ**—ए जु उद्धार पल्य अर अद्धापल्य तिनका दशगुणां कोड़ाकोड़ि जो होइ तौ सो विवक्षित पल्यकौं विवक्षित एक सागरका प्रमाण होइ। भावार्थ—दश कोड़ाकोड़ी पल्यका एक उद्धार सागर हो हैं। बहुरि दश कोड़ाकोड़ि अद्धापल्याका एक अद्धासागर हो है ॥ १०२ ॥

आगैं याकौं सागरोपम कह्या सो सागर नाम समुद्रका है सो लवण समुद्रकी उपमा दिखाई, इस सागरोपम संज्ञाकौं सार्थक दिखावनेंके अर्थि कहै हैं:—

लवणंवुहिसुहुमफले चउरस्से एकजोयणस्सेव ।
सुहुमफलेणवहरिदे वट्टं मूलं सहस्सवेहगुणं ॥ १०३ ॥
लवणांबुधिसूक्ष्मफले चतुरस्रे एकयोजनस्यैव ।
सूक्ष्मफलेनापहृते वृत्तं मूलं सहस्रवेधगुणम् ॥ १०३ ॥

**अर्थ**—प्रथम लवणसमुद्रका क्षेत्रफल करनैंकौं ऐसा करण सूत्र जाननां। 'अंताइ सूइ जोगं रुंदद्धगुणित्तु दुप्पडिं किचा। तिगुणं हदे करणिगुणं वादर सुहुमं फलं वलए ॥ १ ॥ ऐसा सूत्र आगैं आवैगा। याका अर्थ—अंतकी सूची अर आदिकी सूचीकौं जोडि रुंद्रका आधा प्रमाण करि गुणन करैं जो होइ ताकौं दोय जायगा स्थापिए, एक जायगा तिगुणा करिए तब गोलक्षेत्र विषे बादर क्षेत्रफल होइ। बहुरि दशकरणि गुणां करिए। दश करणि कहा ? भया जो प्रमाण ताका वर्ग करि ताकौं दश गुणां करिए ऐसैं करतैं करणिरूप फल होइ, याका वर्गमूल प्रमाण सूक्ष्म क्षेत्रफल जाननां। सो इहां लवण समुद्रकी अंतसूचीका प्रमाण पांच लक्ष योजन ( ५ ल ) अर आदिसूची का प्रमाण एक लक्ष योजन ( १ ल ) मिलाएं छह लाख भए ( ६ ल ), ताकौं रुंद्र जो व्यास ताका प्रमाण दोय लाख योजन ताका आधा लक्ष तीह करि गुणिए ( ६ लल ), इनकौं दोइ जायगा स्थापिए ( ६ लल, ६ लल ) एक जायगा तिगुणां करें ( १८ लल ) बादर क्षेत्रफल होइ। एक जायगा दश करणि करि गुणें ( ६ लल, ६ लल १० ) करणिरूप सूक्ष्म क्षेत्रफल होइ। याका वर्गमूलमात्र लवण समुद्रका सूक्ष्म क्षेत्रफल भया, एक एक योजनका लंबा, चौड़ा, चौकोर खंड लवण समुद्रके इतनें होहि। इहां इस प्रकार करि लवण समुद्रका सूक्ष्म क्षेत्र फल कैसें होइ सो ताकी वासनाका कथन संस्कृत टीकातैं जाननां। बहुरि एक योजन प्रमाण गोलकुंडका सूक्ष्म क्षेत्रफल ऐसा ( १० $\frac{१}{४}$, $\frac{१}{४}$, ) जातैं एक योजनका वर्ग एक ताकौं दश गुणां कीएं करणिरूप परिधि ऐसा होइ १०, ताकौं व्यासकी चौथाई $\frac{१}{४}$ का वर्ग करि गुणें करणिरूप सूक्ष्मके क्षेत्रफल ऐसा ( १०, $\frac{१}{१६}$ ) इतनां करणिरूप सूक्ष्म क्षेत्रफलका एक योजन प्रमाण गोल कुंड एक होइ तौ लवण समुद्रका करणिरूप सूक्ष्म क्षेत्रफल

विषै केते कुंड होंहि, ऐसा त्रैराशिक करिए, तहां प्रमाण राशि ऐसा ( १० ३/४।३/४ फल राशि १, इच्छाराशि ऐसा ( ६ लल, ६ लल, १० ) इच्छाकौं फल करि गुणि प्रमाणका भाग दीएं दशका गुणकार वा भागहारका अपवर्त्तन कीएं लब्धराशि ऐसा होइ ( ६ लल, ३/४ ६ लल ३/४ )। बहुरि ' हारस्य हारो गुणकोंशराशेः ' इस वचनतैं भागहारका, भागहार राशिका गुणकार होइ सो यहां भागहार एक, ताका भागहार च्यारि है सो राशिका गुणकार भया तब ऐसा भया ( २४- लल, २४ लल ) ऐसें वर्गरूप शलाका होहैं, याका वर्गमूल ग्रहण करिए तब एक लाख गुणां चौवीस लाख हूवा ( २४ लल ) याकौं लवण समुद्रकी उंडाई हजार योजन प्रमाण करि गुणें सर्व कुंडनिका प्रमाण ऐसा भया ( २४ लल १००० ) ॥ १०३ ॥

आगैं अन्यगुणकारकौं दिखावैं हैं:—

**रोमहदं छक्केसजलोस्सेगे पण्णुवीससमयात्ति ।**
**संपादं करिय हिदे केसेहिं सागरुप्पत्ती ॥ १०४ ॥**

रोमहतं षट्केशजलोत्सेके पंचविंशसमया इति ।
संपातं कृत्वा हिते केशैः सागरोत्पत्तिः ॥ १०४ ॥

**अर्थ**—बहुरि व्यवहार पल्यकैं रोम च्यारि, एक आदि अंकरूप तिनकी सहनानी ऐसी ( ४१= ) बहुरि तिनि तैं असंख्यात गुणें उद्धार पल्यके रोम तिनकी सहनानी ऐसी ( ४१=g ) बहुरि अद्धापल्यके रोम तीह स्यौंभी असंख्यात गुणें तिनकी सहनानी ऐसी ( ४१=gg ) इहां असंख्यातकी सहनानी ऐसी g जाननीं, सो एक कुंडमैं इतनें रोम पाईए तौ पूर्वोक्त प्रमाण कुंडनि विषै केते रोम पाईए ऐसें त्रैराशिक करि पूर्वोक्त कुंडनिके प्रमाणको रोमनिके प्रमाण करि गुणिन करे लवण समुद्र विषै कल्पित किए सर्व कुंड तिन विषै रोमनिका प्रमाण होइ ( २४ लल १०००, ४१=gg बहुरि छह रोम जितनां क्षेत्र रोंकैं, तितनें क्षेत्रका जलकौं काढतैं पचीस समय होइ तौ पूर्वोक्त प्रमाण रोमनिका क्षेत्र संबंधी जलकौं उतसिंचन करतैं केते समय हों हिं, ऐसें त्रैराशिक करनां । तहां प्रमाण राशि छह रोम ( ६ ), फलराशि पचीस समय ( २५ ), इच्छाराशि सर्व रोम ( २४ , लल १०००४१=gg ) इहां इच्छा राशि विषै चौवीसको प्रमाण राशि छह करि अपवर्त्तन कीएं, अर फल करि इच्छा राशिकौं गुणें लब्ध राशि ऐसा ( २५,४, लल १०००,४१=gg ) बहुरि पल्यके समय पूर्वोक्त इतनें ( ४१=gg ) होइ तौ इतनैं समयनिके केते पल्य होइ तहां ऐसा ( ४१=gg ) प्रमाणका अपवर्त्तन कीएं पचीस, अर लाख गुणां च्यारि लाख अर हजार इनकौं परस्पर गुणें दशकोडाकोडि भया सो इतने पल्य भएं एक सागरकी उत्पत्ति हो है ॥ १०४ ॥

आगैं द्विरूप वर्गधाराविषैं सागरोपमकी उत्पत्ति नांहीं तातैं सागरोपमके अर्द्धच्छेदकों जनावता संता सूत्र कहै हैः—

**गुणयारद्धच्छेदा गुणिज्जमाणस्स अद्धछेदजुदा ।**
**लद्धस्सद्धच्छेदा अहियस्स छेदणा णत्थि ॥ १०५ ॥**

गुणकारार्धच्छेदा गुण्यमानस्यार्धच्छेदयुताः ।
लब्धस्यार्धच्छेदा अधिकस्य छेदना नास्ति ॥ १०५ ॥

अर्थ—गुणकारके जेते अर्द्धच्छेद होंहि ते गुण्यमानराशिके अर्द्धछेदनिकरि जोडिए तब लब्धिराशिके अर्द्धछेद होंहि । जैसें गुणकार आठ गुण्य सोलह सो गुणकार करि गुण्यकों गुणें लब्धराशि एकसो अट्ठाईस तहां गुणकार आठके अर्द्धछेद तीन अर गुण्य सोलहके अर्द्धछेद च्यारि ४ इन दोऊनिकों जोडें लब्धराशि एकसो अट्ठाईसके अर्द्धछेद सात हों हि । तैसें इहां भी गुणकार दश कोडाकोडि अर गुण्य पल्य सो गुणकार करि गुण्यकों गुणें सागर होइ तहां गुणकार दश कोडाकोडिके अर्द्धछेद संख्यात ते गुण्य जो पल्य ताके अर्द्धछेदनि करि जोडें लब्धराशि सागर ताके अर्द्धछेद हो हैं । बहुरि जातें अधिककी छेदना नाहीं है । तातें सागरोपमकी वर्गशलाका नाहीं है । भावार्थ.—गुणयारद्धच्छेदा इत्यादि सूत्र करि गुण्यके अर्द्धछेदनि विषैं गुणकारके अर्द्धछेद जोडें तहां जो गुणकारके अर्द्धछेद जोडे तिनकों अधिक छेद कहिये तिन अधिक छेदनिके अर्द्धछेद हों हि परंतु प्रयोजन नाहीं। तातें ऐसा कह्या कि अधिक छेदानिके अर्द्धछेद नाहीं । प्रयोजन तौ यहु है जो राशिके जेते अर्द्धछेद हों हि तिन अर्द्धछेदनिके जेते अर्द्धछेद हों हि तावन्मात्र वर्गशलाका होइ । सो तौ यहां प्रयोजन है नांहीं जातैं यहु राशि वर्गरूप नांही है तातें सागरोपमकी वर्गशलाकाका अभाव जाननां ॥ १०५ ॥

आगैं गुण्यगुणकारके अर्द्धछेदनिका स्वरूप दिखावतैं प्रसंग पाइ भाज्य भाजकके भी अर्द्धछेदनिका स्वरूपको दिखावैं हैं.—

**भज्जस्सद्धच्छेदा हारद्धच्छेदणाहिं परिहीणा ।**
**अद्धच्छेदसलागा लद्धस्स हवंति सव्वत्थ ॥ १०६ ॥**

भाज्यस्यार्धच्छेदा हारार्धच्छेदनाभिः परिहीनाः ।
अर्धच्छेदशलाका लब्धस्य भवंति सर्वत्र ॥ १०६ ॥

अर्थ—भाज्यके जेते अर्द्धछेद हों हिं ते हार जो भाजक ताके अर्द्धछेदनिकरि हीन करिए तब लब्धराशिकी अर्द्धछेदशलाका सर्वत्र होइ । अंक संदृष्टि विषैं जैसें भाज्य चौंसठि ६४ हार च्यारि ४ हारका भाग भाज्यकों दीएं लब्धराशी सोलह १६ । तहां भाज्य चौंसठिके अर्द्धछेद छह ६ ते भाजक च्यारिके अर्द्धछेद दोय तिन करि हीन किएं अवशेष लब्धराशि सोलहके अर्द्धछेद च्यारि जाननें । ऐसें ही अन्यत्र भी जाननां ॥ १०६ ॥

आगैं सूच्यंगुलके अर्द्धछेदकों दिखावता सूत्र कहैं हैं:—

**विरलिज्जमाणरासिं दिण्णस्सद्धच्छिदीहिं संगुणिदे ।**
**अद्धच्छेदा होंति हु सव्वत्थुप्पण्णरासिस्स ॥ १०७ ॥**

विरल्यमानराशौ देयस्यार्धच्छिदिभिः संगुणिते ।
अर्धच्छेदा भवंति हि सर्वत्रोत्पन्नराशेः ॥ १०७ ॥

**अर्थ**—विरलनमान जो राशि ताकों देय राशिके अर्द्धछेदन करि गुणें उत्पन्न राशिके अर्द्धछेद सर्वत्र होंहि। जैसें विरलन राशि च्यारि, देय राशि सोलह, तहां विरलन राशिका विरलन करि देयराशिकों रूप प्रति देइ १६।१६।१६।१६। परस्पर गुणें पणट्टी ६५५३६ प्रमाण होइ तहां विरलन राशि च्यारि ताकों देयराशि सोलहके अर्द्धच्छेद च्यारि तिन करि गुणें उत्पन्न राशि जो पणट्ठी ताके अर्द्धच्छेद सोलह हो हैं। तैसें इहां विरलनराशि पल्यके अर्द्धच्छेद तिनकों देयराशि पल्य ताके अर्द्धच्छेदनि करि गुणें उत्पन्नराशिके अर्द्धच्छेद पल्यके अर्द्धच्छेदनिका वर्गप्रमाण हो है॥१०७॥

आगें सूच्यंगुलकी वर्गशलाकाकों दिखावता सूत्र कहें हैं:—

**विरलिदरासिच्छेदा दिण्णद्धच्छेदछेदसंमिलिदा।**
**वग्गसलागपमाणं होंति समुप्पण्णरासिस्स॥ १०८॥**

विरलितराशिच्छेदा देयार्धच्छेदछेदसंमिलिताः।
वर्गशलाकाप्रमाणं भवंति समुत्पन्नराशेः॥ १०८॥

**अर्थ**—विरलन राशिके जेते अर्द्धच्छेद होंहिं ते देयराशिके अर्द्धच्छेदनिके अर्द्धच्छेदनि करि मिलाईए जोडिए। तब विरलनदेयका क्रम करि उत्पन्न भया जो राशि ताकी वर्गशलाका प्रमाण होइ। जैसें विरलनराशि च्यारि ताके अर्द्धच्छेद दोय बहुरि देयराशि सोलहके अर्द्धच्छेद च्यारि ताके अर्द्धच्छेद दोय इनकों मिलाएं उत्पन्नराशि जो पणट्ठी ताकी वर्गशलाकाका प्रमाण च्यारि होइ। तैसें इहां विरलनराशि पल्यके अर्द्धच्छेद ताके अर्द्धच्छेद पल्यकी वर्गशलाका प्रमाण बहुरि देयराशि पल्य ताके अर्द्धच्छेदनिके अर्द्धच्छेद भी पल्यकी वर्गशलाकातैं दूणी हो हैं। बहुरि—**वग्गादुपरिमवग्गे दुगुणा दुगुणा हवंति अद्धछिद्दी**। इस पूर्वोक्त सूत्रके न्याय कर सूच्यंगुलके अर्द्धच्छेदनतैं दूणे प्रतरांगुलके अर्द्धच्छेद हो हैं। बहुरि—**वग्गसला रूवहिया**—इस पूर्वोक्त सूत्रके न्याय करि सूच्यंगुलकी वर्गशलाकातैं एक अधिक प्रतरांगुलकी वर्गशलाका हो है। बहुरि द्विरूप वर्गधाराविषैं उत्पन्न जो सूच्यंगुल सो जिस स्थानविषैं उपजैं है तिसहीके समान स्थान-विषैं द्विरूप घनधाराविषैं घनांगुल उपजैं हैं तातैं '**तिगुणा तिगुणा परट्ठाणे**'—इस पूर्वोक्त सूत्रके न्याय करि सूच्यंगुलके अर्द्धच्छेदनितैं तिगुणें घनांगुलके अर्द्धच्छेद हो हैं। बहुरि '**सपदे पर सम**'—इस पूर्वोक्त न्यायकरि सूच्यंगुलकी वर्गशलाकाके समान ही घनांगुलकी वर्गशलाका है। बहुरि 'विरलज्जमाणरासिं' इत्यादि सूत्रके न्याय करि विरलनमानराशि पल्यका अर्द्धच्छदनिका असंख्यातवां भाग ताकों देयराशि घनांगुलके अर्द्धच्छेदनि करि गुणें उत्पन्नराशि जगच्छ्रेणी ताके अर्द्धच्छेद हो हैं॥ १०८॥

आगें जगच्छ्रेणीकी वर्गशलाका दिखावनैंकौं सूत्र कहें हैं:—

**दुगुणपरीतासंखेणवहरिदद्धारपल्लवग्गसला।**
**विंदंगुलवग्गसलासहिया सेढिस्स वग्गसला॥ १०९॥**

द्विगुणपरीतासंख्येनापहृताद्धारपल्यवर्गशलाः।
वृंदांगुलवर्गशलासहिता श्रेण्या वर्गशलाः॥ १०९॥

**अर्थ**—दूणा जघन्यपरीतासंख्यात करि भाजित जो अद्धारपल्यकी वर्गशलाका सो घनगुंलकी वर्गशलाकासहित जगच्छ्रेणीकी वर्गशलाका हो हैं।

भावार्थ—पल्यकी वर्गशलाकाकों जघन्य परीतासंख्याततैं दूणे प्रमाणका भाग दीएं जो प्रमाण होइ ताकौं घनांगुलकी वर्गशलाकासहित जोडिए तब जगच्छ्रेणीकी वर्गशलाकाका प्रमाण हो है। इहां दूणां जघन्यपरीतासंख्यातका भाग कैसैं दीया सो कहिए हैं। अद्धापल्यका अर्द्धच्छेद राशिके अर्द्धच्छेदपल्यकी वर्गशलाका प्रमाण है। बहुरि पल्यका अर्द्धच्छेदराशिका प्रथम वर्गमूलके अर्द्धच्छेद-पल्यकी वर्गशलाकाके अर्द्धप्रमाण है। बहुरि ताहीका द्वितीय मूलके अर्द्धच्छेद तातैं आधे हैं। तृतीय मूलके तातैं आधे हैं ऐसैं वर्गमूल वर्गमूल प्रति आधे आधे अर्द्धछेद तावत् करने यावत् पल्यका अर्द्धच्छेद-राशिके नीचैं जघन्य परीतासंख्यातका अर्द्धच्छेद एक अधिक प्रमाण वर्गमूलपर्य्यंत जाइ अंत विषैं जो वर्गमूल होइ ताके दूणां जघन्यपरीतासंख्यात करि भाजित अद्धापल्यकी वर्गशलाका प्रमाण अर्द्धच्छेद होंहि। इहांतैं उपरि उपरि वर्ग कीएं जैसैं दूणे दूणे अर्द्धच्छेद होंहि तैसैं उपरि तैं नीचैं नीचैं वर्गमूलनि विषैं आधे आधे अर्द्धच्छेद होंहि। इस युक्ति करि जघन्यपरीतासंख्यातका अर्द्धच्छेद एक अधिकप्रमाण वर्गमूलके अर्धच्छेद इतने भये। एक अधिक जघन्य परीतासंख्यात प्रमाण दूवा मांडि परस्पर गुणें दूणां जघन्य परीतासंख्यात होइ ताका भाग अद्धारपल्यकी वर्गशलाकाकों दीएं जो प्रमाण होइ तितने भए। भावार्थ—जगच्छ्रेणीविषैं विरलनराशि पल्यके अर्द्धच्छेदनिके असंख्यातवैं भागि कह्या सो पल्यकी अर्द्धच्छेदराशिके नीचैं जघन्यपरीतासंख्यातका एक अधिक अर्द्धच्छेद प्रमाण जे पल्यके अर्द्धच्छेदनिके वर्गमूल तिन विषैं अंतके वर्गमूलका प्रमाण जानना। ताके अर्द्धच्छेद दूणां जघन्यप-रीतासंख्यातका भाग पल्यकी वर्गशलाकाकों दीएं जो प्रमाण होइ तितना भया। बहुरि '**दिण्णद्ध-छेदछेदसम्मिलिदा**' इस वचन करि देयराशि घनांगुल ताके अर्द्धच्छेदनिके अर्द्धच्छेद जो घनांगुलकी वर्गशलाका सो तिन विषैं जोडिए मिलाइए ऐसैं करतैं उत्पन्न राशि जो जगच्छ्रेणी ताकी वर्गशला-काका प्रमाण हो हैं ऐसैं मनविषैं विचारि '**दुगुणपरीतासंखे**'—इत्यादि सूत्र आचार्यनें कह्या है। बहुरि '**वग्गादुवरिमवग्गे**' इत्यादि सूत्रके न्याय करि जगच्छ्रेणीके अर्द्धच्छेदनितैं दूणे जगत्प्रतरके अर्द्धच्छेद हैं। बहुरि '**वग्गसला रूवहिया**'—इत्यादि सूत्रके न्याय करि जगच्छ्रेणीकी वर्ग शलाकातैं एक अधिक जगत्प्रतरकी वर्गशलाका हैं। बहुरि '**तिगुणा तिगुणा परिट्ठाणे**'–इस सूत्रके न्याय करि जगच्छ्रेणीके अर्द्धच्छेदनितैं तिगुणे घनलोकके अर्द्धच्छेद हैं। बहुरि '**सपदे परसम**' इस सूत्रके न्याय करि जगच्छ्रेणीकी वर्गशलाकाके समान ही घनलोककी वर्गशलाका है ॥ १०९ ॥

आगैं '**तम्मेतदुगे गुणे रासी**' इस सूत्र करि जितना अर्द्धच्छेदनिका प्रमाण होइ तितना दूवा मांडि परस्पर गुणें राशि होइ। इहां जो साधिक अर्द्धच्छेद होइ तौ कैसैं होइ सो कहैं हैं:—

**विरलिदरासीदो पुण जेत्तियमेत्ताणि अहियरूवाणि।**
**तेसिं अण्णोण्णहदी गुणगारो लद्धरासिस्स ॥ ११० ॥**

विरलितराशितः पुनः यावन्मात्राणि अधिकरूपाणि।
तेषां अन्योन्यहतिः गुणकारो लब्धराशेः ॥ ११० ॥

अर्थ—विरलनरूप राशितैं यावन्मात्र अधिक रूप होइ तिन अधिक रूप प्रमाण दोयके अंक मांडि परस्पर गुणें जो प्रमाण होइ तितना लब्धराशिका गुणाकार जानना। जैसैं सागरके अर्द्ध-

च्छेदनिका प्रमाण संख्यात अधिक पल्यका अर्द्धच्छेद प्रमाण हैं। तहां पल्यके अर्द्धच्छेदनिकौं तौ विरलनरूपराशि कहिये। अर ताके उपरि संख्याते अर्द्धच्छेद तिनकौं अधिक रूप कहिये। तहां अधिक रूप प्रमाण दोयका अंक मांडि परस्पर गुणें दश कोडाकोडि प्रमाण सो विरलनराशि प्रमाण दोयका अंक मांडि परस्पर गुणें भया जो पल्य प्रमाण लब्धराशि ताका गुणाकार जाननां। तहां पल्यप्रमाण गुण्यकौं दश कोडाकोडि प्रमाण गुणकार करि गुणें सागरोपम हो है। अंक संदृष्टि विषैं जैसें सागरके अर्द्धच्छेद सात तहां विरलनराशि तौ पल्यका अर्द्धच्छेद च्यारि ताके उपरि अधिक रूप तीनसो तीन जायगा दोयका अंक मांडि परस्पर गुणें आठ भया सो विरलनराशिप्रमाण दूवे मांडि परस्पर गुणें भया जो पल्यका प्रमाण सोलह लब्धराशि ताका गुणकार हो हैं। तहां सोलहकौं आठ करि गुणें सागरोपमका प्रमाण एकसौ अठाईस हो हैं। ऐसैं ही अन्यत्र भी जानना।

**भावार्थ**—इहां ऐसा है कि जैसें केतेइक अर्द्धच्छेदनि विषैं केतेइक अर्द्धच्छेद मिलाएं तहां मिलाए अर्द्धच्छेदनिकौं अर्द्ध एकरूप कहे तैसें तिन मिलाए अर्द्धच्छेद प्रमाण दूवा मांडि परस्पर गुणें जो राशि होइ सो मूल अर्द्धच्छेद प्रमाण दूवा मांडि परस्पर गुणें जो लब्धराशि होइ तिस विषैं जोड़ने योग्य न हो हैं गुणकाररूप हो हैं॥ ११०॥

आगैं प्रसंगपाइ हीन अर्द्धच्छेदनिका कहा सो कहैं हैं:—

**विरलिदरासीदो पुण जेत्तियमेत्ताणि हीणरूवाणि।**
**तेसिं अण्णोण्णहदी हारो उप्पण्णरासिस्स॥ १११॥**

विरलितराशितः पुनः यावन्मात्राणि हीनरूपाणि।
तेषामन्योन्यहतिः हार उत्पन्नराशेः॥ १११॥

**अर्थ**—विरलनरूपराशितैं यावन्मात्र हीनरूप होइ तिन हीन रूप प्रमाण दूवे मांडि परस्पर गुणें जो प्रमाण होइ सो उत्पन्नराशि जो लब्धराशि ताका भागहार होइ। अंक संदृष्टि विषैं याका उदाहण ऐसा। जैसें पणट्ठी ६५५३६ के अर्द्धच्छेद सोलह तिन तैं च्यारि घाटि अर्द्धच्छेद च्यारि हजार छिनवैके हो हैं। तहां पणट्ठीके अर्द्धच्छेदनिकौं विरलित राशि कहिए, अर घाटि जे च्यारि अर्द्धच्छेद तिनकौं हीनरूप कहिए। सो हीनरूपप्रमाण दूवा मांडि २।२।२।२। परस्पर गुणें सोलह भए। सोई विरलनराशिप्रमाण दूवा मांडि परस्पर गुणें भया जो पणट्ठी ६५५२६ प्रमाण लब्धराशि ताका भागहार हो है। तहां भाज्य पणट्ठी ६५५३६ कौं भागराशि सोलहका भाग दीएं इष्टराशि च्यारि हजार छिनवै हो है।

**भावार्थ**—अर्द्धच्छेदनि विषैं केतेइक अर्द्धच्छेद घटाए तिन घटाए अर्द्धच्छेदनिकौं हीनरूप कहिए। सो हीनरूप प्रमाण दूवा मांडि परस्पर गुणें जो राशि होइ सो सर्व अर्द्धच्छेद प्रमाण दूवा मांडि परस्पर गुणें जो राशि होइ ताका भागहार हो है। भाग दीएं जो राशि आवै सोई घटाएं पीछैं अवशेष अर्द्धच्छेद रहे तिनि प्रमाण दूवे मांडि परस्पर गुणें राशि हो है ऐसा जाननां॥ १११॥

आगैं उत्तर कहिए जो प्रकरण ताकी पातनिका रूप गाथाकौं कहैं हैं:—

**जगसेढीए वग्गो जगपदरं होदि तग्घणो लोगो।**
**इदि बोहियसंखाणस्सेत्तो पगदं परूवेमो॥ ११२॥**

जगच्छ्रेण्या वर्गः जगत्प्रतरो भवति तद्घनो लोकः।
इति बोधितसंख्यानस्य इतः प्रकृतं प्ररूपयामः॥ ११२॥

**अर्थ**—आठ प्रकार उपमा प्रमाण विषैं पल्य और सागरका तौ वर्णन कीया ही। बहुरि सूच्यंगुल प्रतरांगुल घनांगुल जगच्छ्रेणीका वर्णन पूर्वैं ही जगच्छ्रेणीका घनप्रमाण लोक है इस कथनका प्रसंग पाइ वर्णन कीया था। बहुरि जगच्छ्रेणीका वर्ग सो जगत्प्रतर है। बहुरि तिस जगच्छ्रेणीका घन सो घनलोक है। तहां पल्यके समयनिका प्रमाण सो तौ पल्य जानना। दश कोडाकोडि पल्यका समूह सो सागर जाननां, पल्यका अर्द्धच्छेद प्रमाण पल्य मांडि परस्पर गुणें सूच्यंगुल होइ सो एक अंगुल लंबे प्रदेशनिका प्रमाण जानना। ताका वर्ग प्रतरांगुल सो एक अंगुल लंबा एक अंगुल चौड़ा प्रदेशनिका प्रमाण जानना। तिस सूच्यंगुलका घन सो घनांगुल है सो एक अंगुल लंबा एक अंगुल चौडा एक अंगुल ऊंचा प्रदेशनिका प्रमाण जानना। बहुरि पल्यका अर्द्धच्छेदनिका असंख्यातवां भाग प्रमाण घनांगुल मांडि परस्पर गुणें जगच्छ्रेणी होइ सो लोकका मध्यतैं ऊर्द्ध वा अधः पर्यंत लंबे सात राजूके प्रदेशनिका प्रमाण जाननां। बहुरि ताका वर्ग जगत्प्रतर सो जगच्छ्रेणी प्रमाण लंबे वा चौड़े क्षेत्रके प्रदेशनिका प्रमाण जानना। बहुरि तिसही जगच्छ्रेणीका घन सो घनलोक है सो जगच्छ्रेणी प्रमाण लंबा ऊंचा क्षेत्रका प्रदेशनिका प्रमाण जाननां। सो इहां ऐसा प्रमाणहीका ग्रहण करनां किछू समय प्रदेशादिकतैं प्रयोजन नांहीं। जैसैं काल वर्णन विषैं जगच्छ्रेणी प्रमाणकाल कहै तहां तितने समयनिका ग्रहण करना किछू प्रदेशनितैं प्रयोजन नाहीं। ऐसैंही अन्यत्र जाननां। ऐसैं हम करि जान्या है संख्याका स्वरूप जानैं ऐसा जु शिष्य ताके तांई यातैं परैं अब प्रकरणभूत जो लोकका वर्णन ताहि प्रमाणरूप करैं हैं॥ ११२॥

ऐसैं उपमा प्रमाणका प्रकरण समाप्त भया॥

---

आगैं जो कथन करिए है ताकी पातनिका पूर्वैं गाथाही करि कही सो जांननी:—

**उदयदलं आयामं वासं पुव्वावरेण भूमिमुहे।**
**सत्तेक पंचएक य रज्जू मज्झम्हि हाणिचयं॥ ११३॥**

उदयदलं आयामः व्यासः पूर्वापरेण भूमिमुखे।
सप्तैकं पंचैकं च रज्जुः मध्ये हानिचयम्॥ ११३॥

**अर्थ**—लोकका उदय जो उंचाईका प्रमाण सो चौदह राजू पूर्वैं कह्या था ताका दल कहिए आधा सात राजू प्रमाण आयाम कहिए दक्षिण उत्तर दिसा विषैं चौडाईका प्रमाण जानना जातैं पूर्व पश्चिम विषैं चौड़ाईका हानिचयरूप आगैं कथन करिए है तातैं इहां दक्षिण उत्तर दिसा विषैं नीचैं तैं लगाय उपरि चौदह राजूकी उंचाई पर्यंत सर्वत्र सात राजू चौड़ा लोक जाननां। कहीं हीनाधिक नाहीं। बहुरि पूर्व पश्चिम दिसा विषैं व्यास भूमि अर मुख विषैं क्रमतैं सात राजू, एक राजू, पांच राजू, एक राजू, जानना।

**भावार्थ**—पूर्वतैं पश्चिम पर्यंत लोक नीचैं ही नीचैं तौ सात राजू चौड़ा है। उपरि क्रमतैं घटता मध्यलोक विषैं एक राजू चौड़ा है। उपरि क्रमतैं वधता ब्रह्मस्वर्गके निकटि पांच राजू चौड़ा है उपरि क्रमतैं घटता अंतविषैं एक राजू चौड़ा है। तहां आदि प्रमाणकों भूमि कहिए अंत प्रमाणकों मुख कहिए तिन विषैं हानि अर चय हैं ते साधनै। हानि नाम घटनेका है चयनाम क्रमतैं जितनां जितनां वधै ताका नाम है॥ ११३॥

आगैं तिन हांनि चयके साधनेंका विधान कहता संता सूत्र कहैं हैं:—

**मुहभूमीण विसेसे उदयहिदे भूमुहादु हाणिचयं।**
**जोगदले पदगुणिदे फलं घणो वेधगुणिदफलं॥ ११४॥**

मुखभूम्योः विशेषे उदयहिते भूमुखतः हानिचयं।
योगदले पदगुणिते फलं घनो वेधगुणितफलम्॥ ११४॥

**अर्थ**—मुख अर भूमि विषैं अधिक प्रमाणमें स्यौं हीन प्रमाण घटाएं जो अवशेष रहै ताकों उचाईका भाग दीएं भूमि मुखतैं हानिचय हो हैं। सो इहां अधोलोक विषैं नीचैं चौड़ा राजू सात सो भूमि कहिए। उपरि घटता घटता एक राजू रह्या सो मुख कहिए सो भूमिमें स्यौं मुख घटाएं छहराजू रहे तहां सात राजूकी उचाईमें छहराजू घटै तो एक राजू की उचाई में कितना घटै ऐसैं त्रैराशिक करें उंचाई सात राजूका भाग छहराजूकों दीजिए इतनां इतनां प्रमाण एकराजू उपरि जाइ चौडाईमें घटती हूवा तहां नीचैंही नीचैं सातराजू चौडा है तातैं एक राजू उपरि जाइ सातवीं नरक पृथ्वीके निकटि छह राजूका सातवां भाग घट्या ताकौं समछेद विधान करि घटाएं गुणचासराजूका सात भागमें स्यौं छहराजूका सातवां भाग घटें तियालीस राजूका सातवां भाग प्रमाण व्यास रह्या। ऐसें ही एक एक राजू उपरि जाइ छह राजूका सातवां भाग घटावतैं छठी नरक पृथ्वीके निकटि सैंतीसका सातवां भाग पंचमीके निकटि इकतीसका सातवांभाग चौथीके निकटि पचीसका सातवां भाग तीसरीके निकटि उगणीसका सातवां भाग दूसरीके निकटि तेरहका सातवां भाग प्रथम पृथ्वीके अंति मध्यलोक निकटि सातका सातवां भाग प्रमाण व्यास जाननां। बहुरि आधा ऊर्ध लोकका चय ल्यावनें विषैं मुख तौ मध्य लोकके निकटि एकराजू अर भूमि ब्रह्मस्वर्गके निकटि पांच राजू तहां भूमिमें स्यौ मुख घटाएं अवशेष च्यारि राजू। बहुरि मध्य लोकतैं ब्रह्मस्वर्ग तौ साढा तीन राजू ऊंचा अर सौधर्म युगल डेढराजू ऊंचा। सो जो साढा तीन राजूकी उचाईमें च्यारि राजू वधै तौ ड्योढ राजूकी उंचाईमें कितना वधै ऐसैं त्रैराशिक करिए तब भिन्न गणित करि वारह राजूका सातवां भाग प्रमाण वधती आया। याकौं एक राजूका व्यास मध्यलोक विषै था तामैं समछेद विधान करि मिलाएं सौधर्म युगलका अंतके निकटि उगणीसका सातवां भाग प्रमाण व्यास भया। वहुरि सौधर्म युगलतैं सनत्कुमारयुगल ड्योढ राजू ऊंचा तातैं पूर्वैं ड्योढ राजू विषैं वधतीका प्रमाण वारह राजूका सातवां भाग कह्या था सो इतना प्रमाणरूप चय उगणीसका सातवां भाग विषैं मिलाएं सनत्कुमार युगलका अंतके निकटि इकतीस राजूका सातवा भाग प्रमाण व्यास भया। वहुरि यातैं ब्रह्मयुगल आधा राजू ऊंचा सो साढा तीन राजूकी उचाई मैं च्यारि राजू वधै तौ

आधा राजूमें कितना वधै ऐसें त्रैराशिक कीएं च्यारि राजूका सातवां भाग प्रमाण वधै सो पूर्व चय इकतीस राजूका सातवां भाग प्रमाणमैं मिलाएं ब्रह्मयुगलका अंतके निकटि पैंतीस राजूका सातवां भाग प्रमाण व्यास भया। बहुरि अब उपरिका ऊर्द्धलोक विषैं हानि ल्याईए हैं। तहां ब्रह्मस्वर्गके निकटि तौ पांचराजू व्यास सो भूमि कहिए। अर लोकका अंतविषैं एकराजू व्यास सो मुख कहिए। भूमिमैं स्यौं मुख घटाएं अवशेष च्यारि राजू। बहुरि साढा तीन राजूकी ऊंचाईमें च्यारि राजू घटै तौ आधाराजूकी उंचाईमें कितना घटै ऐसें त्रैराशिक करतें च्यारि राजूका सातवां भाग आया, सो ब्रह्मयुगलतैं लांतवादि युगल आध आध राजू ऊंचे हैं तातैं ब्रह्मस्वर्गके निकटि पैंतीसका सातवां भाग प्रमाण चौडा था तामैं च्यारि राजूका सातवां भाग घटाएं लांतव युगलका अंतके विषैं इकतीस राजूका सातवां भाग प्रमाण व्यास रह्या। यामें च्यारि राजूका सातवां भाग घटाएं शुक्र युगलका अंतके निकटि सताईस राजूका सातवां भाग प्रमाण व्यास रह्या यामें तितनाही घटाएं सतार युगलका अंतके निकटि तेईस राजूका सातवां भाग प्रमाण व्यास रह्या यामें तितनाही घटाएं आणत युगलका अंतके निकटि उगणीस राजूका सातवां भाग प्रमाण व्यास रह्या। यामें तितना ही घटाएं आरण युगलका अंतके निकट पंद्रह राजूका सातवां भाग प्रमाण व्यास रह्या। बहुरि इहांतैं लोकका अंत एक राजू ऊंचा है सो साढा तीन राजूकी उंचाईमें च्यारि राजू घटै तौ एक राजूकी उंचाईमें कितनां घटै ऐसें त्रैराशिक कीएं आठ राजूका सातवां भाग आया सो पंद्रह राजूका सातवां भागमें स्यौं घटाएं सात राजूका सातवां भाग रह्या सो अपवर्तन कीएं लोकका अंत विषैं एक राजू प्रमाण व्यास जाननां। ऐसें पूर्व पश्चिमकी अपेक्षा लोकका व्यास हीनाधिक जाननां। बहुरि अधोलोकका समस्त क्षेत्रफल कहिए है। मुख अर भूमिका योग करि ताकौं आधा करि पदयोग छ तीह करि गुणिए तव क्षेत्रफल होइ। बहुरि याकों वेध करि गुणिए तव घनफल होइ सो इहां पूर्व पश्चिम अपेक्षा नीचैं ही नीचैं व्यास प्रमाणरूप भूमि सो सातराजू अर अधो लोकका अंत विषैं व्यासका प्रमाण सो मुख एक राजू इन दोऊनिकों मिलाएं आठराजू हूवा याकों आधा कीएं च्यारि राजू हूवा। बहुरि इहां दक्षिण उत्तर अपेक्षा सर्वत्र व्यासकों पद कहिए सो सातराजू प्रमाण तीह करि गुणें अठाईस राजू प्रमाण क्षेत्रफल भया। बहुरि याकों वेध जो अधोलोककी उंचाईका प्रमाण सातराजू तीह करि गुणें एकसौ छिनवै राजू प्रमाण घनफल होहै। अधो लोकका एक एक राजू प्रमाण लंबा चौडा ऊंचा खंड कल्पिए तौ एकसौ छिनवै खंड होइ ऐसा अर्थ जानना॥ ११४॥

आगें अधोलोककों क्षेत्र अपेक्षा आठ प्रकार भेदकरि कहैं हैं:—

**सामण्णं दोआयद जवमुर जवमज्झ मंदरं दूसं।**
**गिरिगडगेण विजाणह अट्ठवियप्पो अधोलोगो॥ ११५॥**

सामान्यं द्व्यायते यवमुरजं यवमध्यं मंदरं दूष्यं।
गिरिकटकेन विजानीहि अष्टविकल्पः अधोलोकः॥ ११५॥

**अर्थ**—सामान्य १ ऊर्द्धायत १ तिर्यगायत १ यवमुरज १ यवमध्य १ मंदर १ दूष्य १ गिरिकटक १ ऐसें आठ प्रकार अधोलोक जानहु। तहां आठौं ही प्रकार करि उंचाई अर पूर्व पश्चिम चौडाईकी अपेक्षा अठईस रज्जु क्षेत्रफल कहिए है सर्वत्र दक्षिण उत्तरकी अपेक्षा सात रज्जु

करि गुणें एकसौ छिनवै रज्जु प्रमाण घनक्षेत्र जाननां। तहां सामान्यपनें क्षेत्रकी चौडाईकों समान करि क्षेत्रफल इहां कहिए है सो सामान्य जाननां सो इहां 'मुहभूमी जोगदले, इत्यादि पूर्वोक्त सूत्रके अनुसार मुख तौ एक रज्जु, भूमि सातरज्जु इनका योग आठ रज्जु ताका आधा च्यारि रज्जु ताकौं पद जो उचाई सात रज्जु करि गुणें अठाईस रज्जु क्षेत्रफल भया। वहुरि ऊर्द्धता करि लंवा ऐसा चौकोर क्षेत्र कल्पिकरि जो क्षेत्रफल इहां कहिए है सो ऊर्द्धायत जाननां। सो अधोलोककौं चौडाई का मध्यविषैं छेदि दोय खंड करिए। वहुरि एक खंडको उपरि नीचैं उलटा करि जैसें आयत चतुरस्र क्षेत्र होइ तैसैं स्थापिए तव यहु क्षेत्र च्यारि राजू चौडा सातराजू ऊंचा ऐसा आयत चतुरस्र हूवा ताका 'भुजकोटि वध, इत्यादि सूत्र करि क्षेत्रफल करना। तहां आम्ही साम्ही दोय दिसा संवंधी प्रमाणकों भुज कहिए अवशेप दोय दिसा संवधी प्रमाणकों कोटि कहिए इनकौं परस्पर गुणें क्षेत्रफल होइ सो इहां सातकरि च्यारिकों गुणें अठाईस रज्जु प्रमाण क्षेत्रफल भया। वहुरि तिर्यगरूप लंवा ऐसा चौकोर क्षेत्र कल्पि जो इहां क्षेत्रफल करिए सो तिर्यगायत जानना, सो 'मुखभूमि समास इत्यादि सूत्र करि मुख एक रज्जु भूमि सात रज्जु इनका समास जो जोड़ सो आठ रज्जु ताका आधा च्यारि रज्जु प्रमाण हीनाधिक समान कीएं सर्वत्र चौडाईका प्रमाण होई। वहुरि सात रज्जुकी उंचाई विषैं मध्य विषैं छेदि आधा क्षेत्रकों जुदा स्थापि ताके उपरि आधा क्षेत्र था ताकों चौडाई विपैं मध्यविपैं छेदि जैसैं तिर्यगायत क्षेत्र होई तैसैं तिस आधा क्षेत्रके दोऊ पार्श्वनि विपैं चौथाई क्षेत्र स्थापिए तव साढा तीनि राजू ऊंचा अर आठराजू चौडा ऐसा तिर्यगायत क्षेत्र भया ताका 'भुज कोटि वध, इत्यादि सूत्र करि अठाईस रज्जु प्रमाण क्षेत्रफल हो है ॥ ११५ ॥

आगैं यवमुरज क्षेत्रफलकों ल्यावैं हैः—

**रज्जुतयस्सोसरणे सत्तुदओ जदि हवेज्ज एक्केसे।**
**किमिदि कदे संपादे एक्कजवुस्सेहमाणमिणं ॥ ११६ ॥**

रज्जुत्रयस्यापसरणे सप्तोदयो यदि भवेत् एकस्य।
किमिति कृते संपाते एकयवोत्सेधमानमिदम् ॥ ११६ ॥

**अर्थ**—यवनामा अन्नके आकारि अर मृदंगके आकारि क्षेत्र कल्पिकरि इहां क्षेत्रफल कहिए सो यव मुरज जानना तहां आधा यवका आकार तिकूंटा जाननां। ताकूं दूंणा किएं यवका आकार होइ। वहुरि उपरि नीचैं हीनाधिक चौडाईका प्रमाण लीएं आधा मृदंगका आकार होइ ताकूं दूंणा कीएं सम्पूर्ण मृदंगका आकार होइ। सो इहां अधोलोक विषैं अठारह खंड तौ अर्द्ध यव आकारि कल्पनां अर एक खंड मृदंग आकारि कल्पनां। तहां यवाकार खंडका प्रमाण कहिए है। नीचैं तौ सात राजू चौडा मध्यलोकके पासि एक राजू चौडा सो छह राजू घंट्या सो दोऊ पार्श्व विषैं इतना घव्या ताका आधा तीन रज्जुं प्रमाण एक पार्श्व विषैं घव्या सो तीन रज्जुके घटने विषैं जो सात रज्जुकी उंचाई पाईए तौ एक रज्जूके घटने विषै केती उंचाई पाईए ऐसैं त्रैराशिक कीएं सातरज्जुका तीसरा भाग प्रमाण एक यवकी उंचाई भई याकों आधा कीएं सात रज्जुका छठा भाग प्रमाण आधायवकी उंचाई भई। वहुरि इस आधा

यवरूप क्षेत्रका क्षेत्रफल 'मुहभूमी जोग दले, इत्यादि सूत्र करि कहिए हैं। मुख तौ शून्य जातैं तिकूंटा क्षेत्र विषैं मुखकी चौडाईका अभाव है। बहुरि भूमि एक रज्जु जोडें भी एकरज्जु ताका आधा आधरज्जु ताकों उचाई सातका छठा भाग करि गुणें सात राजूका बारह्वां भाग प्रमाण आधा यवका क्षेत्रफल भया। याकों अठारह गुणा कीएं साढ़ा दस रज्जू प्रमाण क्षेत्रफल तौ यवाकार क्षेत्रनिका भया। बहुरि आधा मृदंगाकारका क्षेत्रफल 'मुह भूमी जोग दले, इत्यादि सूत्र करि कहिए हैं। मुख तौ एक रज्जू भूमि च्यारि रज्जू जोडें पांच रज्जू ताका आधा अढाई रज्जु ताकों पद जो उंचाईका प्रमाण साढा तीन रज्जु करि गुणें पोंणानव रज्जु क्षेत्रफल भया। याकों दूणां कीएं साढा सत्रह रज्जु प्रमाण सम्पूर्ण मृदंग क्षेत्रका क्षेत्रफल भया यामें साढा दस रज्जु यव क्षेत्रफल मिलाएं अठाईस रज्जु प्रमाण क्षेत्रफल भया। इहां यहु भाव जाननां। अधोलोक जहां च्यारि राजू चौडा है तहां मृदंगका मध्य ठहराया ताके उपरि अनुक्रमतैं हीन चौडा हैही सो आधा मृदंग तौ उपरि भया। बहुरि जैसें उपरि चौडाई है तैसें ही नीचें चौडाई मध्यतैं क्रमहीन रूप कल्पना करी सो आधा मृदंग नीचैं भया ऐसें दोऊनिकौं मिलाएं सम्पूर्ण मृदंग क्षेत्र भया। बहुरि नीचैं दोऊ पार्श्वनि विषैं चौडाई वधती रही तहां अठारह तिकूंटा क्षेत्र अर्द्ध यवाकार कल्पना कीएं। इहां ऐसा आकार जानना। इहां नीचेतैं एक राजूकी चौडाई जहां घटी तहां पर्यंत अर्द्ध यव ठहराया। सो नीचैं सात राजूकी चौडाई है तहां मध्य विषैं एक राजू तौ मृदंगाकार विषैं रह्या अर एक पार्श्व विषैं तीनि राजू रह्या तहां तैं तीन तौ नीचैं तैं क्रमहीनरूप आधे यव ठहराए। अर तिनके बीचि दोय उपरितैं क्रम हीनरूप आधे ठहरांए। ऐसैं पांच आधे यव भए। बहुरि तिनके उपरि सात राजूका छठा भाग प्रमाण उचाई नीचेतैं भएं जहां दोय राजूकी चौडाई रही तहां तैं तैसैंही दोयतौ नीचेतैं क्रमहीनरूप एक उपरितैं क्रमहीनरूप ऐसें तीन आधे यव ठहराए, ताके उपरि तहांतैं तितना ही उचाई भएं जहां एक राजूकी चौडाई रही तहां एक नीचेतैं क्रम हीनरूप आधा यव ठहराया। ऐसैंही दूसरे पार्श्व विषैं नव आधे यव जाननें। ऐसैं अठारह आधे यव भए। ऐसैं एक मृदंग नव यव कल्पना करि क्षेत्रफल कह्या। बहुरि यवहीके आकारि क्षेत्र कल्पिकरि इहां क्षेत्रफल कहिए है सो यव मध्य जाननां। सो अधोलोक विषैं चौईस यवाकार क्षेत्रके खंड कल्पिए है। तहां आधा यवका क्षेत्रफल सात रज्जुका बारह्वां भाग कह्या था ताकों दूणा कीएं सात रज्जूका छठा भाग प्रमाण एक यवका क्षेत्रफल होइ याकौं चौईस गुणा कीएं अठाईस रज्जु प्रमाण यव मध्य क्षेत्रफल हो है। इहां यहु भाव जाननां। जैसें पूर्वै पार्श्वनि विषैं यवाकार कल्पना कीया तैसें इहां सर्व ही अधोलोक विषैं अठतालीस अर्द्ध यवाकार ऐसें कल्पनें। इहां नीचैं सात राजू चौडा तहां ते पूर्ववत् नीचैं तैं क्रमहीन तौ सात अर तिनिके बीचि उपरितैं क्रमहीन छह आधे यव ठहराए। तिनके उपरि पूर्ववत् उचाई होतैं छह, पांच, अर पांच, अर पांच, च्यारि च्यारि तीन अर तीन दोय अर दोय, एक, आधे यव कल्पना कीएं तिनके चौवीस सम्पूर्ण यव ठहराय क्षेत्रफल कह्या है॥ ११६॥

आगैं मंदर क्षेत्रफल ल्यावनेकों कहिए है:—

अद्धं चउत्थभागो सगवारसमं तिदाल वारंसो।
सग वारंस दिवड्ढं रज्जुदओ मंदरे खेत्ते॥ ११७॥

अर्धं चतुर्थभागः सप्तद्वादश त्रिचत्वींरशत् द्वादशांशः।
सप्त द्वादशांशं द्व्यर्धं रज्जूदयो मंदरे क्षेत्रे ॥ ११७ ॥

**अर्थ**—मंदर जो मेरु ताका आकार कल्पि क्षेत्रफल जो इहां कहिए है सो मंदर जाननां। तहां अधोलोककी सात राजूकी उचाई है। तामैं आधारज्जु चौथाई रज्जु मिलाएं पौंणरज्जु। बहुरि सात रज्जुका बारव्हां भाग बहुरि तियालीस रज्जुका बारव्हां भाग बहुरि ड्योढ राजू इतनां प्रमाण लीएं जुदी जुदी उंचाई मंदर क्षेत्र विषैं कल्पिए। बहुरि 'मुहभूमीण विसेसे उदयहिदे, इत्यादि पूर्वसूत्रके 'अनुसारि मुख एकराजू भूमि सातराजू, । भूमिमैं स्यों मुख घटाएं छहराजू भया सो सात राजूकी उंचाई विषैं छहराजू घटै तौ पौंणराजूकी उंचाईमें केता घटै ऐसैं त्रैराशिक करि नवराजूका चौदह्वां भाग प्रमाण घव्या सो सात राजूमें स्यौं घटाएं निवासी राजूका चौदह्वां भाग अवशेप रह्या इतना नीचेतैं पौंणराजू उपरि जाइ चौडाईका प्रमाण जाननां। ऐसैंही ताके उपरि सातराजू-का बारव्हां भाग उपरि जाय सातराजूका चौदव्हां भाग घटि बियासीका चौदव्हां भाग प्रमाण आयाम रह्या ताके उपरि तियालीस राजूका बारव्हां भाग उपरि जाय तियालीसका चौदव्हां भाग घटि गुणतालीस राजूका चौदव्हां भाग प्रमाण आयाम रह्या ताके उपरि सात राजूका बारव्हां भाग उपरि जाय सातराजूका चौदव्हां भाग घटि बतीस राजूका चौदव्हां भाग प्रमाण आयाम रह्या ताके उपरि ड्यौढ राजू उपरि जाय नवराजूका सातवां भाग घटि चौदह राजूका चौदहां भाग ऐसा एक राजू प्रमाण आयाम मध्यलोकके निक रह्या। तहां चूलिका ल्यावनेंके अर्थि सातराजूका बारव्हां भाग प्रमाण उचाई रूप दोयक्षेत्र तिनकों लंबा चौकोर जैसैं होइ तैसैं एककों सुलटा एककों उलटा स्थापि तिन दोऊ क्षेत्रनि विषैं अपनी अपनी भूमिमेंस्यों मुख घटाएं सातराजूका चौदव्हां भाग प्रमाण घाटि होनेंका प्रमाण कह्या। सो अपवर्तन कीएं आध आध राजू भया तहां एक एकके दोय दोय खंड कीएं च्यारि खंड भए तहां एक खंडकी भूमि पाव राजू प्रमाण ताकों तौ उपरि स्थापिए अर अवशेप तीन खंडनिका भूमि पौंणराजू प्रमाण ताकौं उपरि स्थापिए अर अवशेष ती-नि खंडनिकी भूमि पौणराजू प्रमाण सो नीचैं स्थापिए इतनां तौ चौडाईका प्रमाण। अर सातराजूका बारव्हां भाग उचाईका प्रमाण जाका भया ऐसी चूलिका करिए पीछैं विषम चतुर्भुज क्षेत्रका तौ क्षेत्रफल ' मुहभूमी जोग दले, इत्यादि सूत्र करि ल्याईए। अर आयत चतुरस्र क्षेत्रका क्षेत्रफल 'भुजकोटि वेध, इत्यादि सूत्र करि ल्याईए। बहुरि छहों क्षेत्रफलनिकों समच्छेद विधान करि जोडिए तब चौराणवै सै आठ राजूकौं तीनसैं छत्तीसका भाग दीजिए इतनां भया सो अठाईस राजू प्रमाण क्षेत्रफल भया। इहां ऐसा भाव जाननां। जैसैं मेरुगिरि नीचेतैं केतीइक उचाई पर्यंत तौ चौडाई क्रमतैं हीन रूप है ताके उपरि केतीइक उंचाई पर्यंत चौडाई समान रूप हैं। ताके उपरि केती इक उंचाई पर्यंत चौंडाई क्रमतैं हीन रूप है ताके उपरि केतीयक उंचाई पर्यंत चौडाई समान रूप है ताके उपरि केतीइक उंचाई क्रमतैं हीन रूप है ताके उपरि चूलिका है सो क्रमतैं हीनरूप चौडाई लीएं है ऐसैं यह्र आकार है तैसैं अधोलोककी उंचाई विपैं पांच भाग कल्पैं तहां पौंण राजकी उचाई पर्यंत तौ चौडाई क्रमतैं हीन रूप ही ग्रहण कीन्हीं इहां मेरु विषैं नीचैं तैं केती

इक ऊचाई पर्यंत तौ भूमि विर्षे कंद हैं। ताके ऊपरि भूमि ऊपरि ऊचाई है ऐसैं दोय भाग हैं। तातैं आध राजू पावराजू ऊचाई रूप दोय भाग कीएं परंतु इहां पर्यंत क्रमतैं चौडाई हीन रूप ही है। तातैं मिलाय पौंण राजू कह्या। बहुरि ताके ऊपरि सात राजूका बारव्हां भाग पर्यंत क्रमहीन चौडाई है। तिस चौडाई विर्षे ऊपरि बियालीसका चौदव्हां भाग प्रमाण चौडाई रही तिस प्रमाण समान चौडाई कल्पी। अर दोऊ तरफां बधती चौडाई रही सो जुदी राखी सो वह चौडाई दोऊ तरफकी मिलाएं नीचैं आधराजू ऊपरि क्रमतैं हीन तिकूंटी जाननी। बहुरि ताके ऊपरि तियालीस राजूका बारव्हां भाग पर्यंत चौडाई क्रमतैं हीन रूप है सोई ग्रहण कीन्हीं। बहुरि ताके ऊपरि सातराजूका बारव्हां भाग पर्यंत चौडाई क्रमतैं हीन रूप है। तिस विर्षे पूर्ववत् बत्तीसराजू चौदहां भाग प्रमाण समान चौडाई ग्रहण कीन्ही। अर दोऊ तरफांकी चौडाई पूर्ववत् प्रमाण लीएं जुदी राखी। बहुरि ताके ऊपरि ज्योढ राजू ऊचाई पर्यंत क्रमतैं हीनरूप चौडाई है सोई ग्रहण कीन्हीं। बहुरि जो दोय जायगा चौडाई जुदी राखी थी तिस विर्षे एक जायगाकी चौडाई सुल्टी एक जायगा उल्टी स्थापैं आधा राजू चौडा सात राजूका बारव्हां भाग प्रमाण ऊंचा क्षेत्र भया। तहां ऊपरिकी चौडाई घटाय नीचैं मिलाएं नीचैं पौणराजू चौडा ऊपरि पावराजू चौडा क्षेत्र कल्पनां कीया अर याकी ऊचाई सातराजूका बारव्हां भाग प्रमाण है सो यहु क्षेत्र मेरुकी चूलिकाकी जायगा कल्पना कीया ऐसैं मेरुगिरि समान अधो-लोकका आकार करि क्षेत्रफल कह्या है। बहुरि अब दूष्य क्षेत्रफल कहिए है। पूर्वैं अर्द्धयवकी ऊंचाई सात राजूका छठा भाग कह्या था सो सात राजूमें समच्छेद विधान करि घटाएं पैंतीसका छठा भाग रह्या। सो एक तौ खंड यहु भया यहां भूमिका प्रमाण सात राजू अर मुखका प्रमाण पैंतीस राजूका छठा भाग जानना। बहुरि दूसरा खंड विर्षे भूमि तौ पैंतीस राजूका छठा भाग अर यामैं सात राजूका छठा भाग घटाएं मुखका प्रमाण अठाईस राजूका छठा भाग। ऐसैंही पूर्व पूर्व खंडविर्षे जो मुख होइ सो उत्तर उत्तर खंडविर्षे भूमि जाननी। पूर्व पूर्व खंडका मुखमें स्यौं अर्द्ध यवकी ऊंचाईका प्रमाण घटाएं उत्तर उत्तर खंडनि विर्षे मुख जानना। ऐसैं छह खंड भए। 'मुह भूमी जोग दले' इत्यादि सूत्र करि इन छहों खंडनिका क्षेत्रफल ल्याइ जोडिए तब दोयसै बावनका बारव्हां भाग भया सो इकईस राजू हूवा। यामैं सात राजू मिलाएं दूष्य क्षेत्रफल विर्षे भी क्षेत्रफल अठाईस राजू हूवा। सो इस दूष्यक्षेत्रफलका भाव मोकौं भी नीकैं नाहीं प्रतिभास्या तातैं नाहीं लिख्या है बुद्धिवांन जानियो॥ बहुरि गिरिकटकका क्षेत्रफल कहिए। इस अठतालीस अर्द्धयवरूप क्षेत्र कल्पना करिए है सो एक अर्द्धयवका क्षेत्रफल सात राजूका बारव्हां भाग कह्या था ताकौं अठतालीस गुणां कीएं गिरिकटक क्षेत्रफल विर्षे भी अठाईस राजू प्रमाण आया। ऐसैं आठ प्रकार करि अधोलोकका क्षेत्रफल दिखाया। इहां यहु भाव जाननां। पूर्वैं जैसैं यव मध्य कह्या तैसैंही गिरिकटक जानना। विशेष इतना तहां दोय दोय तिकूंटे क्षेत्र मिलाय यवाकार कह्या था। इहां एक एक तिकूंटी क्षेत्र ग्रहण करि अठतालीस पर्वताकार कह्या सो आकार ऐसैं जाननां॥ ११७॥

अब ऊर्द्धलोकका क्षेत्रभेदकौं कहैं हैं:—

सामण्णं पत्तेयं अद्धंत्थंमं तहेव पिण्णट्ठी।
एदे पंचपयारा लोयक्खेत्तम्हि णायव्वा॥ ११८॥

सामान्यं प्रत्येकं अर्धस्तंभं तथैव पिनष्टिः ।
एते पंचप्रकाराः लोकक्षेत्रे ज्ञातव्याः ॥ ११८ ॥

अर्थ—सामान्य १ प्रत्येक १ अर्धस्थंभ १ स्तंभ १ पिनष्टि १ ऐसैं ऊर्द्धलोकके क्षेत्रविषैं ए पांच प्रकार जानने । सो इहां पूर्वपश्चिम अपेक्षा चौडाई अर उचाईकी अपेक्षा करि क्षेत्रफल इकईस राजू कहिए है । याकौं दक्षिण उत्तर अपेक्षा सात राजूकी चौडाई करि गुणें एकसो सैंतालीस राजू घनरूप क्षेत्ररूप ऊर्द्धलोकका जाननां । एक एक राजूका लंबा चौड़ा ऊंचा ऊर्द्धलोकका खंड कल्पें एकसौ सैंतालीस हो है । तहां सामान्यकौं समीकृत भी कहिए । जातैं हीनाधिक चौडाईकों समान करि क्षेत्रफल इहां कहिए हैं । सो 'मुहभूमी जोग दले, इत्यादि सूत्र करि मुख तौ इहां मध्यलोक निकटि एक राजू अर भूमि ब्रह्मस्वर्गनिकटि पांच राजू तिनकों जोडें आधा कीएं ती राजू ताकौं उचाई साढा तीन राजू करि गुणें साढा दश राजू प्रमाण क्षेत्रफल आधा ऊर्द्धलोकका भया । याकौं दूणां कीएं इकईस राजू प्रमाण सव ऊर्द्धलोकका क्षेत्रफल भया । उपरिका आधा ऊर्द्धलोकविषैं मुख तौ लोकके अंति एक राजू अर भूमि ब्रह्मस्वर्गके निकटि पांच राजू जाननां । ऊर्द्धलोकका आकार ऐसा जाननां । सो इहां नीचैं तैं ब्रह्मस्वर्गपर्यंतका जुदा क्षेत्रफल कीया तातैं उपरि लोकपर्यंतका जुदा क्षेत्रफल कीया दोऊनिकौं मिलाय ऊर्द्धलोकका क्षेत्रफल कीया है । अब प्रत्येक क्षेत्रफल कहिए हैं । तहां मध्यलोकतैं सौधर्मद्विक ड्यौढ राजू ऊंचा सो 'मुहं भूमीण विसेसे' इत्यादि पूर्वोक्त सूत्रका अनुसारतैं इहां मध्यलोकके निकटि एक राजू सो तो मुख जानना । वहुरि साढा तीन राजूकी उचाईमें च्यारि राजू वधै तौ ड्यौढ राजूकी उचाईमें कितनां वधै । ऐसैं त्रैराशिक कीएं बारह राजूका सातवां भाग प्रमाण वधाएं उगणीस राजूका सातवां भाग चौडा सौधर्मद्विकका अंतके निकटि भया सो एक तौ यहु खंड भया इस विषैं मुखतौ एक राजू भूमि उगणीस राजूका सातवां भाग प्रमाण है । वहुरि ऐसैंही नाके उपरि ड्योढ राजू ऊंचा खंडविषैं मुखतौ उगणीस राजूका सातवां भाग यामें वारहका सातवां भाग मिलैं भूमि इकतीस राजूका सातवां भाग प्रमाण हो है । वहुरि ताके उपरि आध राजू ऊंचा खंडविषैं मुख तो इकतीस राजूका सातवां भाग अर यामें च्यारि राजूका सातवां भाग मिलैं भूमि पांच राजू प्रमाण हो हैं । वहुरि ताके उपरि आधा राजू ऊंचा खंडविषैं भूमि तौ पांच राजू तामैं साढा ती राजूकी उचाईमें च्यारि राजू घटै तौ आध राजूकी उंचाईमें कितनां घटै ऐसैं त्रैराशिक करि च्यारिका सातवां भाग घटाएं मुखका प्रमाण इकतीस राजूका सातवां भाग है । वहुरि ऐसैं ही ताके उपरि आधा राजू ऊंचा खंडविषैं भूमि इकतीस राजूका सातवां भाग तामैं च्यारि राजूका सातवां भाग घटाएं मुख सताईस राजूका सातवां भाग हो है । ता उपरि आध राजू ऊंचा खंडविषैं भूमि सताईस राजूका सातवां भाग तामैं च्यारिका सातवां भाग छटाएं मुख तेइस राजूका सातवां भाग हो है तामैं चारिका सातवां भाग घटैं मुख उगणीस राजूका सातवां भाग हो है । ताके उपरि आध राजू ऊंचा खंड विषैं भूमि उगणीस राजूका सातवां भाग तामें च्यारिका सातवां भाग घटैं मुख पंद्रह राजूका सातवां भाग हो हैं वहुरि ताके उपरि एक राजू ऊंचा खंड विषैं भूमि

पंद्रह राजूका सातवां भाग तामैं आठका सातवां भाग घटैं मुख एकराजू प्रमाण हो है। ऐसैं भूमि मुखका प्रमाण जानि मुहभूमी जोगदले, इत्यादि सूत्रकरि सब खंडनिका जुदा जुदा क्षेत्रफल जो होइ ताकों जोडिए तब दोयसै चौराणवैका चौदह्वां भाग ऐसा इकईस राजू प्रमाण प्रत्येक क्षेत्रफल होइ। इहां यहु भाव जाननां जुदा जुदा क्षेत्रफल कहि करि जोड्या तातैं याकों प्रत्येक क्षेत्रफल कह्या है। बहुरि अर्द्धस्तंभ अर स्तंभ क्षेत्रका क्षेत्रफल सुगम है इहां ऐसा भाव जाननां। ऊर्द्धलोकका आकारकों मध्यविषैं छेदि तहां बीचिका एकराजू क्षेत्र ताका तौ आधा आधा राजू दोऊ पार्श्वनि विषैं स्थापिए। अर जो दोऊ पार्श्वनिका अवशेष क्षेत्र तहां ऊपरला नीचला क्षेत्रकों उलटा सुल्टा स्थापन कीएं चौकोर क्षेत्र होइ सो मध्यविषैं स्थापन करिए ऐसैं अर्द्धस्तंभ क्षेत्रका जुडनां हो है। तहां आकार ऐसा जाननां। इहां स्तंभाकार लोकका मध्यविषैं छेदि स्थापन किया तातैं याका नाम अर्द्धस्तंभ है। बहुरि ऊर्द्धलोकका आकार विषैं बीचि एक राजू चौडा क्षेत्र तौ बीचिमैं लिखना अर दोऊ पार्श्वनिका बचता क्षेत्र मध्यविषैं दोय दोय राजू रह्या था तिसविषैं दोय खंड करि दोऊ पार्श्वनिका उलटा सुल्टा जोडें दोय लंबे चौकोर क्षेत्र होइ सो दोऊ पार्श्वनि विषैं जोडिए ऐसैं स्तंभ क्षेत्रका जुडनां हो है। ताका आकार ऐसा॥ बहुरि अर्द्धस्तंभ वा स्तंभ क्षेत्र विषैं जोड्या हूवा क्षेत्र तीन राजू ऊंचा हूवा सो भुजकोटिका वध करि इकईस राजू हूवा सो यहु क्षेत्रफल सुगम है॥ ११८॥

बहुरि पिनष्टि क्षेत्रफल जाननेंकों त्रिभुजकी ऊंचाई आदि जानी चहिए सो कहै हैं:—

रज्जुदुगहाणिठाणे आउड्ढदवो जदीह एक्किस्से।
किमिदि तिरासियकरणे फलं दलोणं तिवाहुदओ॥ ११९॥

रज्जुद्विकहानिस्थाने अर्धचतुर्थोदयो यदीह एकस्य।
किमिति त्रैराशिककरणे फलं दलोनं त्रिबाहूदयः॥ ११९॥

*अर्थ*—एक पार्श्वकी अपेक्षा चौडाई करि दोय राजूका घटनेका स्थान विषैं साढा तीन राजूकी ऊंचाई होइ तौ एक राजूका घटनें विषैं केती ऊंचाई होइ ऐसैं त्रैराशिक करनें विषैं सातका चौथा भाग आया। यामैं आधा राजू घटाएं सवाराजू प्रमाण त्रिभुजकी ऊंचाईका प्रमाण आया॥ ११९॥

तिभुजुदयूणुदयुच्चं सूईखेत्तस्स भूमिमुहसेसे।
भूमी तप्फलहीणं चदुरस्सधराफलं सुद्धं॥ १२०॥

त्रिभुजोदयोनोदयोच्चं सूचीक्षेत्रस्य भूमिमुखशेषे।
भूमिः तत्फलहीनं चतुरस्रधराफलं शुद्धम्॥ १२०॥

*अर्थ*—बहुरि ऊंचाईका प्रमाण विषैं त्रिभुजकी ऊंचाईका प्रमाण घटाएं बाह्य सूची क्षेत्रकी ऊंचाईका प्रमाण आया। बहुरि भूमिमैं स्यों मुख घटाइ अवशेष भूमि होइ ताका क्षेत्रफल करि हीन शुद्ध चौकोर क्षेत्रका क्षेत्रफल होइ। सो यहु कथन नीकैं मेरे समझनेमैं न आया है। तातैं पिनष्टि क्षेत्रके क्षेत्रफलका विधान इहां नाहीं लिख्याहै संस्कृत टीकातैं जानना। ऐसैं ऊर्द्धलोकका पांच प्रकार करि क्षेत्रफल कह्या है॥ १२०॥

आगैं पूर्व पश्चिम अपेक्षा करि व दक्षिण उत्तर अपेक्षा करि लोकका परिधिकों दिखावता संता कहैं हैं:—

पुव्वावरेण परिही उगुदालं साहियं तु रज्जूणं ।
दक्खिणउत्तरदो पुण बादालं होंति रज्जूणं ॥ १२१ ॥

पूर्वापरेण परिधिः एकोनचत्वारिंशत् साधिका तु रज्जूनाम् ।
दक्षिणोत्तरतः पुनः द्वाचत्वारिंशत् भवंति रज्जूनाम् ॥ १२१ ॥

**अर्थ**—पूर्व पश्चिम अपेक्षाकरि लोकका परिधि गुणतालीस राजू सो साधिक कहिए तियालीस राजूका एकसो वीसवां भाग करि अधिक प्रमाण जाननां । बहुरि दक्षिण उत्तर अपेक्षातैं बियालीस राजू प्रमाण जाननां । गिरहका नाम परिधि है सो दक्षिण उत्तर अपेक्षा तौ परिधिका जाननां सुगम है । जातैं लोक दक्षिण उत्तर दिशाकी अपेक्षा सात राजू तौ नीचैं चौडा सात राजू उपरि चौड़ा, एक तरफ चौदह राजू ऊंचा तीहका दोन्यों तरफां अठाईस राजू हूवा सर्व मिलाएं बियालीस राजू प्रमाण परिधि भया ॥ १२१ ॥

बहुरि पूर्व पश्चिम अपेक्षा साधिक गुणतालीस राजू परिधि कैसैं है ताके जाननेंको करण सूत्र कहैं हैं:—

भुजकोडिकदिसमासो कण्णकदी होदि वग्गरासिस्स ।
गुणयारभागहारा वग्गाणि हवंति णियमेण ॥ १२२ ॥

भुजकोटिकृतिसमासः कर्णकृतिः भवति वर्गराशेः ।
गुणकारभागहारौ वर्गौ भवतः नियमेन ॥ १२२ ॥

**अर्थ**—भुज और कोटिका जो वर्ग ताका समास कहिए जोड़ सो कर्णका वर्ग हो हैं । तहां जैसैं कोऊ वांस खडा है। सो वांस वीचमें स्यौं टूटिकरि पृथ्वीके आंनि लागा तहां पृथ्वी अर खडा वांस अर टूटा वांसके वीचि जो त्रिभुज क्षेत्रभया तहां खडा वांसका प्रमाण अर टूटा वांस जहां पृथ्वीके आंनिलागा तहांतैं लगाय जहां वांस खडा है तहां पर्यंत पृथ्वीका प्रमाण इन दोऊनि विषैं एक कौं भुज कहिए एककों कोटि कहिए हैं । बहुरि जहां तैं टूटा तहां तैं लगाय पृथ्वी विषैं आंनि लगा तहां पर्यंत टूटा वांसका जो प्रमाण सो कर्ण कहिए है। तहां ऐसा आकार जाननां । तहां भुज और कोटि का जो प्रमाण ताका जुदा जुदा वर्ग करिए । इन दोऊनिकों जोडें जो प्रमाण होइ सो कर्णके प्रमाणका वर्ग जानना । ताका मूल ग्रहें कर्णका प्रमाण आवै है । बहुरि वर्गराशिके गुणाकार वा भागहार वर्गरूप ही हो हैं। कोऊ राशि वर्गमूलग्रहण योग्य होइ ताकौं किसी गुणकार करि गुणनां होइ वा भागहार करि भाजनां होइ तौ तिन गुणकार वा भागहारका वर्ग कीएं जो प्रमाण होइ ताकरि गुणिए वा भाग दीजिए है । जैसैं कहीं चौसठि प्रमाण वर्गरूप हैं ताकों दोय करि गुणना होइ तौ तहां दोयका वर्ग करि गुणिए तहां चौसठिकों दोयका वर्ग च्यारि करि गुणैं दोयसै छप्पन होइ ताका वर्गमूल सोलह होइ । सोई चौसठिका वर्गमूल आठकौं दोय करि गुणैं सोलह होइ । सो अब यहां प्रयोजन कहिए हैं । अधो लोक सात राजू तौ ऊंचा है सो सात राजू प्रमाण तौ भुज

कहिए। बहुरि नीचैं तौ सात राजू चौड़ा अर ऊपरि एक राजू चौड़ा तहां नीचैं एक राजू तौ ऊपरिके समान चौड़ा पणां हूवा। अवशेष दोन्यौं तरफां तीन तीन राजू वधता भया सो एक पार्श्वविषैं जो तीन राजू वधता भया, सो तीन राजू प्रमाण कोटि कहिए हैं। बहुरि भुजका वर्ग तौ गुणचास राजू अर कोटिका वर्ग नव राजू इन दोऊनिकों मिलाएं अधोलोकका ऊपरितैं लगाय नीचैं पर्यंत एक पार्श्वविषैं जो परिधिका प्रमाण सो कर्ण कहिए ताका वर्ग अठावन राजू प्रमाण हो है। बहुरि जो एक पार्श्वविषैं इतनां भया तौ दोऊ पार्श्वनिविषैं केता होइ तातैं दोयका गुणकार करनां सो इहां वर्गरूप राशि है। तातैं इहां दोयका वर्ग करि गुणें दोन्यौं तरफका वर्णके वर्गका प्रमाण दोयसै वत्तीस राजू हूवा। याका वर्गमूल ग्रहें अधोलोकके दोऊ तरफ उचाई विषैं परिधिका प्रमाण पंद्रह राजू अर सात राजूका तीसवां भाग मात्र भया। ऐसैं ही आधा ऊर्द्धलोकविषैं भुजका प्रमाण साढा तीन राजू ताका वर्ग सवा बारा राजू ४९/४ अर कोटिका प्रमाण दोय राजू ताका वर्ग च्यारि राजू इन दोऊनिकों समछेद करि मिलाए पैंसठिका चौथा भाग प्रमाण भया ६५/४ बहुरि एक पार्श्वविषैं इतनां होइ तौ दोय पार्श्व तौ आधा ऊर्ध्व लोककैं अर दोय पार्श्व आधा ऊर्ध्व लोककें ऐसैं च्यारि पार्श्वनिविषैं कितनां होइ ऐसैं विचारतैं च्यारिका गुणकार चहिए सो इहां वर्गराशि है तातैं च्यारिका वर्ग करि गुणें अर च्यारिका भागहार था ताकरि अपवर्तन कीएं दोयसौ साठि राजू प्रमाण ऊर्द्धलोकके च्यारयौं कर्णनिके वर्गका प्रमाण भया याका वर्गमूल ग्रहें ऊर्द्धलोककी उचाई विषैं दोऊ तरफां परिधिका प्रमाण सोलह राजू अर च्यारि राजूका वत्तीसवां भागमात्र भया। बहुरि सर्व लोकके नीचैं चौडाईका प्रमाणरूप परिधि सात राजू अर लोकका अंतविषैं चौडाईका प्रमाणरूप परिधि एक राजू। ऐसैं सर्वका जोड दीएं गुणतालीस तौ राजू हूवा। अर अधिक प्रमाण सात राजूका तीसवां भाग अर च्यारि राजूका वत्तीसवां भाग इन दोऊनिके हारकों समच्छेद विधान करि आधा भाज्य भाजक मांडि ११२/४८०। ६० जोडि १७२/४८० च्यारिका अपवर्तन दीएं तियालीस राजूका एकसौ वीसवां भाग भया। ऐसैं पूर्वपश्चिम अपेक्षा लोकका परिधि गुणतालीस राजू अर तियालीस राजूका एकसौ वीसवां भाग प्रमाण जाननां ॥ १२२ ॥

आगैं लोकके सर्व तरफनें परिवेष्टित जो वात वलय तिन स्वरूपादिकका निर्णयके अर्थि सूत्र कहैं हैं:—

**गोमुत्तमुग्गणाणावण्णाण घणवुघणतणूण हवे।**
**वादाणं वलयतयं रुक्खस्स तयं व लोगस्स॥ १२३ ॥**

गोमूत्रमुद्गनानावर्णानां घनांवुघनतनूनां भवेत्।
वातानां वलयत्रयं वृक्षस्य त्वगिव लोकस्य॥ १२३ ॥

**अर्थ**—घनोदधि अर घनवात अर तनुवात इन तीनों पवननिका ती वलय लोककैं पाईए है। तहां घनोदधि तौ गायका मूत्रके समान वर्णकौं धरैं है। घनवात मूंगनामा अन्नके समान वर्णकौं धरैं है। तनुवात नानाप्रकार वर्णकौं धरैं हैं। सो लोकके इन पवननिका वलय तैसें हैं जैसैं वृक्षके

त्वक् कहिये छयोडा होइ। अथवा जैसैं तीनि तहका बेठण किसी गांठिकैं होइ तैसैं मांहीं तौ घनोदधिका वलय है। ताके उपरि घनवातका वलय है ताके उपरि तनुवातका वलय है॥ १२३॥

आगैं इन पवननिका बाहल्य जो मोटापनां ताका निर्णयके अर्थि कहै हैं;—

जोयणवीससहस्सं वहलं वलयत्तयाण पत्तेयं।
भूलोयतले पासे हेट्ठादो जाव रज्जुत्ति॥ १२४॥

योजनविंशतिसहस्रं बाहुल्यं वलयत्रयाणां प्रत्येकम्।
भूलोकतले पार्श्वे अधस्तात् यावत् रज्जुरिति॥ १२४॥

अर्थ—इहां इतना जाननां जो सात तौ नरकपृथ्वी अर एक मोक्षपृथ्वी इन आठ पृथ्वीनिके नीचैं तीन तीन वात वलयनिका बाहुल्य कहिए मोटापनां जाननां। कहां कहां? आठ पृथ्वीनिके नीचैं। बहुरि लोकाकाशका अधोभागविषैं नीचैं बहुरि पार्श्वनिविषैं नीचैंतैं लगाय एक राजूकी उचाई पर्यंत एक एक वात वलय वीस वीस हजार योजन मोटा जाननां॥ १२४॥

आगैं उपरि पवननिका बाहल्यका निर्णयके अर्थि कहैं हैं;—

सत्तमखिदिपणिधिम्हि य सग पण चत्तारि पणचउक्कतियं।
तिरिये वम्हे उड्ढे सत्तमतिरिए च उत्तकमं॥ १२५॥

सप्तमक्षितिप्रणिधौ च सप्त पंच चत्वारि पंच चतुष्कं त्रिकम्।
तिरश्चि ब्रह्मे ऊर्ध्वे सप्तमतिरश्चि च उक्तक्रमः॥ १२५॥

अर्थ—बहुरि पार्श्वनि विषैं नीचैं तैं एक राजूके उपरि सातवीं नरकपृथ्वीके निकटि वात वलयनिका क्रमतैं सात पांच च्यारि योजनका बाहुल्य जाननां। वीस हजार योजनका मोटापनां था सो एकैंसाथि घटि करि इतनां रह्या। बहुरि तहां तैं उपरि अनुक्रमतैं वधता वधता ब्रह्मलोकके निकट सप्तम पृथ्वीवत् सात पांच च्यारि योजनका बाहुल्य जाननां। तहां तैं उपरि क्रमतैं घटता घटता ऊर्द्धलोकके निक तिर्यक् क्षितिवत् पांच च्यारि तीन योजनका बाहुल्य जाननां। अत्र सातवीं पृथ्वीतैं तिर्यक् क्षितिपर्यंत मध्यम पृथ्वीनिके निकटि बाहुल्यका प्रमाण 'मुह भूमीण विसेसे उदायहिदे' इत्यादि सूत्र करि जाननां। सो इहां तिर्यक् क्षितिके निकटि तीनों वात वलयनिका बाहुल्य वारह योजन सो मुख जाननां। बहुरि सप्तम पृथ्वीके निकटि तीनौं वात वलयनिका बाहुल्य सोलह योजन सो भूमि जाननां। सो भूमिमें स्यौं मुख घटाएं अवशेष च्यारि योजन ताकौं सप्तम पृथ्वीतैं तिर्यग्लोक छह राजू ऊंचा है ताका भाग दीएं एक राज उपरि घटतीका प्रमाण च्यारि योजनका छठा भाग आया। सो इतनां सोलह योजनमें समच्छेद करि घटाएं वा अपवर्तन कीएं छठी नरकपृथ्वीके निकटि पंद्रह योजन अर एक योजनका तीसरा भाग प्रमाण बाहुल्य है। यामें तितनाही घटें पांचमी नरकपृथ्वीके निकट चौदह योजन अर दोय योजनका तीसरा भाग प्रमाण बाहुल्य है। यामें तितनां ही घटें चौथी पृथ्वीके निकट चौदह योजन बाहुल्य है। यामें तितना ही घटें तीसरी पृथ्वीके निकट तेरह योजन एक योजनका तीसरा भाग प्रमाण बाहुल्य है। यामें तितनाहीं घटें दूसरी पृथ्वीके निकट वारह योजन अर दोय योजनका तीसरा प्रमाण बाहुल्य है। यामें

तितनाही घटें प्रथम पृथ्वीके अंति तिर्यक् लोकके निकटि वारह योजन प्रमाण वाहुल्य है। ऐसें ऊर्द्धलोक विषैं मुख तौ वारह योजन भूमि सोलह योजन ताका विशेष च्यारि योजन सो साढा तीन राजूकी उंचाईमें च्यारि योजन वधै तौ ड्योढ राजूकी उंचाईमें कितना वधै ऐसैं त्रैराशिक करि वारह योजनमें वारह योजनका सातवां भाग वधाएं सौधर्मयुगलका अंतके निकट तीनौं वात वलयनिका वाहुल्य तेरह योजन अर पांच योजनका सातवां भाग प्रमाण हो है। ऐसैं ही त्रैराशिक करि उपरि भी अपनी अपनी उचाईके अनुसारि ब्रह्मस्वर्गपर्यंत वधाइ करि अर उपरि घटाइ करि तीनौं वात वलयनिका वाहुल्य जाननां। इहां वातवलय ऐसैं आकार लिएं जाननां। इहां आठ पृथ्वीनिके नीचैं अर लोकके चौगिरद वात वलय जाननें ॥ १२५ ॥

आगैं लोकका उपरिम भाग विषैं पवननिका वाहुल्यकौं प्रगट करता संता कहैं हैं;—

**कोसाणं दुगमेक्कं देसूणेक्कं च लोयसिहरम्मि।**
**ऊणधणूण पमाणं पणुवीसज्झहियचारिसयं ॥ १२६ ॥**

क्रोशानां द्विकमेकं देशोनैकं च लोकशिखरे।
ऊनधनुषां प्रमाणं पंचविंशाधिकचतुःशतम् ॥ १२६ ॥

**अर्थ**—तीनौं वात वलयनिका वाहुल्य दोय कोस २ एक कोस १ किछू घाटि एक कोस लोकका शिखरि विषैं जानना। तहां किछू घाटिका प्रमाण पचीस अधिक च्यारिसैं धनुष जानना।

**भावार्थ**—लोकका उपरिम भाग विषैं घनोदधि दोय कोस मोटा है। घन वात एक कोश मोटा है। तनु वात एक कोसमें च्यारिसैं पचीस धनुष घटाएं पंद्रहसै पिचहत्तरि धनुषप्रमाण मोटा है ॥ १२६ ॥

आगैं लोकका अधस्तनविषैं पवन जेता क्षेत्र रोकैं है तिस क्षेत्रका क्षेत्रफल कहैं हैं:—

**लोयतले वादतये वाहल्लं सट्ठिजोयणसहस्सं।**
**सेढिभुजकोडिगुणिदं किंचूणं वाउखेत्तफलं ॥ १२७ ॥**

लोकतले वातत्रये वाहुल्यं षष्टियोजनसहस्रम्।
श्रेणिभुजकोटिगुणितं किंचिदूनं वायुक्षेत्रफलम् ॥ १२७ ॥

**अर्थ**—लोकका नीचला भाग विषैं तीनौं वात वलय विषैं मिलाया हूवा वाहुल्य साठि हजार योजन प्रमाण है। बहुरि जगच्छ्रेणी प्रमाण लंवा चौड़ा है। तातैं जगच्छ्रेणी प्रमाण भुजकोटि कहिए सो भुज अर कोटिकौं परस्पर गुणें जगत्प्रतर होइ याकौं साठिहजार योजन प्रमाण वाहुल्य करि गुणिए। बहुरि दक्षिण उत्तर विषैं तौ सर्वत्र सात राजू ही है। तातैं भुजविषैं तौ हानि नाहीं अर पूर्व पश्चिम विषैं नीचैं तौ सात राजू है। उपरि साठि हजार योजन पर्यंत क्रमतैं घटती है। तातैं कोटि विषैं क्रम हानिके सद्भावतैं समचतुरस्र नाहीं है। तातैं किंचित् ऊन करना। ऐसैं लोकके नीचैं किंचित् ऊन साठि हजार योजन करि गुणित जगत्प्रतर प्रमाण वात वलयनिकरि रोक्या हूवा क्षेत्रका क्षेत्रफल जानना ॥ १२७ ॥

आगैं ताकौं उपरि पार्श्वनिविषैं क्षेत्रफल ल्यावनेके अर्थि कहैं हैं;—

**किंचूणरज्जुवासो जगसेढीदीहरं हवे वेहो ।**
**जोयणसट्ठिसहस्सं सत्तमखिदिपुव्वअवरे य ॥ १२८ ॥**

किंचिदूनरज्जुव्यासः जगच्छ्रेणिदैर्घ्यं भवेत् वेधः ।
योजनषष्टिसहस्रं सप्तमक्षितिपूर्वापरे च ॥ १२८ ॥

**अर्थ**—लोकके पार्श्वनि विषैं नीचेतैं लगाय एक राजूकी उचाईपर्यंत वात वलय साठि हजार योजन मोंटे हैं सो तहां क्षेत्रफल कहिए हैं । उचाइ एक राजू तामें साठि हजार योजन पहलैं अधस्तनक्षेत्रका कह्या क्षेत्रफल तामें आय गई तातैं इहां किंचित् ऊन रज्जु प्रमाण व्यास सो तौ भुज जानना । बहुरि लंवाई लोककी लंबाईके समान जगच्छ्रेणी प्रमाण सो कोटि कहिए । बहुरि मोंटापनों साठि हजार योजन सो वेध कहिए । तहां भुज और कोटिकों परस्पर गुणें जगत्प्रतरका सातवां भाग भया ताकों साठि हजार योजन करि गुणें सातवीं पृथ्वीपर्यंत पूर्व पश्चिम अपेक्षा एक पार्श्वविषैं क्षेत्रफल भया ॥ १२८ ॥

एक पार्श्वका इतना क्षेत्रफल भया तौ दोऊ पार्श्वनि विषैं केता होइ ऐसैं त्रैराशिक करि दोऊ पार्श्वनिका क्षेत्रफल ल्यावना सो कितना फल सिद्ध भया सो कहै हैं:—

**जगपदरसत्तभागं सट्ठिसहस्सेहि जोयणेहि गुणं ।**
**बिगगुणिदमुभयपासे वादफलं पुव्वअवरेय ॥ १२९ ॥**

जगत्प्रतरसप्तभागः षष्टिसहस्रैः योजनैः गुणः ।
द्विकगुणितः उभयपार्श्वे वातफलं पूर्वापरयोः ॥ १२९ ॥

**अर्थ**—जगत्प्रतरका सातवां भागकों साठि हजार योजन करि गुणिए बहुरि ताकों दुगुणा करिए ऐसैं करतैं एक लाख वीस हजार योजन गुणां जग्रत्प्रतरका सातवां भाग प्रमाण दोऊ पार्श्वनिविषैं वातवलयका क्षेत्रफल पूर्व पश्चिम दिशाविषैं हो है ॥ १२९ ॥

आगैं दक्षिण उत्तर विषैं वातवलयका क्षेत्रफल ल्यावनेका विधान कहै हैं;—

**उदयमुहभूमिवेहो रज्जुससत्तमछरज्जुसेढी य ।**
**जोयणसट्ठिसहस्सं सत्तमखिदिदक्खिणुत्तरदो ॥ १३० ॥**

उदयमुखभूमिवेधाः यथासंख्यं रज्जुससप्तमषड्रज्जुश्रेण्यः च ।
योजनषष्टिसहस्रं सप्तमक्षितिदक्षिणोत्तरतः ॥ १३० ॥

**अर्थ**—लोकके नीचे तैं लगाय सप्तम पृथ्वीपर्यंत उचाई एक राजू सो तो उदय जानना याकों इहां पद कहिये । बहुरि सप्तम पृथ्वीके निकट लोककी चौड़ाईका प्रमाण छह राजू अर एक राजूका सातवां भाग $६\frac{१}{७}$ सो मुख कहिए । बहुरि लोकके आदि चौडाईका प्रमाण जगच्छ्रेणी सो इहां भूमि कहिए । बहुरि वात वलयनिका इहां मोंटापनां साठि हजार योजन सो वेध कहिए अव इहां 'मुह भूमी जोगदले' इत्यादि सूत्र करि मुख और भूमि दाऊनिकों जोडि ताका आधा करिए जो प्रमाण आवै ताकों पद करि गुणिए पीछें जो प्रमाण होइ ताकों वेध करि गुणें एक पार्श्वविषैं

क्षेत्रफल होइ यौंका दूणा कीएं सप्तम पृथ्वी पर्यंत दोऊ पार्श्वनि विषैं दक्षिण उत्तर थकी वातवलयका क्षेत्रफल होइ॥ १२० ॥

आगैं जो यहु फल भया ताकौं कहैं हैं;—

तस्स फलं जगपदरो सट्ठिसहस्सेहिं जोयणेहिं हदो।
वाणउदिगुणो सगघणसंभजिदो उभयपासम्हि ॥ १३१ ॥

तस्य फलं जगत्प्रतरः षष्टिसहस्रैः योजनैः हतः।
द्वानवतिगुणः सप्तघनसंभक्तः उभयपार्श्वे ॥ १३१ ॥

अर्थ—ताका क्षेत्रफल जगत्प्रतरकौं साठि हजार योजन करि गुणिए बहुरि ताकौं बाणवै करि गुणिए तब पचावन लाख वीस हजार योजन गुणां जगत्प्रतर भया ताकौं सातका घन तीनसै तियालीस ताका भाग दीजिए इतना क्षेत्रफल दोऊ पार्श्वनि विषैं भया। इतना क्षेत्रफल कैसैं भया सो कहिए हैं। मुख तौ समछेद करि जोड्या हूवा ४३/७ तियालीस राजूका सातवां भाग अर भूमि सात राजू सो गुणचास राजूका सातवां दोऊनिकौं जोडें बाणवै राजूका सातवां भाग ९२/७ याकौं आधा करना अर दोऊ पार्श्वनिका ग्रहणकै अर्थि दूणा करना तब तितनाही रह्या अर इहां प्रतररूप क्षेत्र है तातैं जगत्प्रतरकौं तीनसै तियालीसका भाग सोई एक प्रतर राजूका सातवां भाग है। बहुरि वात वलयनिकी मोटाई साठि हजार योजन करि गुणें पूर्वोक्त क्षेत्रफल आवै है॥ १३१ ॥

आगैं उपरि पश्चिम संबंधि पार्श्वनि विषैं वातवलयका क्षेत्रफलकौं कहै हैं;—

सेढी छरज्जु चोद्दसजोयणमायामवासमुस्सेहं।
पुव्ववरपासजुगले सत्तमदो तिरियलोगोत्ति ॥ १३२ ॥

श्रेणी षड्रज्जुः चतुर्दशयोजनं आयामव्यासोत्सेधम्।
पूर्वापरपार्श्वयुगले सप्तमतः तिर्यग्लोकांतं ॥ १३२ ॥

अर्थ—सप्तम पृथ्वीतैं ल्याय तिर्यग्लोक पर्यंत पार्श्वनि विषैं वातवलयका क्षेत्रफल कहिए सो पूर्व पश्चिम अपेक्षा करि लोककी लंबाईकै समान लंबाईका प्रमाण जगच्छ्रेणी सो ताकौं भुज कहिए। बहुरि सप्तम पृथ्वीतैं तिर्यग् लोक ऊंचा छह राजू सो व्यास है। ताकौं कोटि कहिए। बहुरि तीनौं वातवलय घाटि बाधिकौं समान कीएं मोटा चोदह योजन सो उत्सेध है ताकौं वेध कहिए। सो इहां भुज और कोटिकौं परस्पर गुणें जो प्रमाण होइ ताकौं वेध करि गुणिए सातका अपवर्तन करिए तब एक पार्श्व विषैं फल होइ। बहुरि दोऊ पार्श्वनिके अर्थि याकौं दोय करि गुणि क्षेत्रफल ल्यावना॥ १३२ ॥

आगैं ताका सिद्ध भया क्षेत्रफल ताकौं कहैं हैं।

तव्वादरुद्धखेत्तं जोयणचउवीसगुणिदजगपदरं।
उभयदिसासंजणिदं णादव्वं गणिदकुसलेहिं ॥ १३३ ॥

तद्वातरुद्धक्षेत्रं योजनचतुर्विंशतिगुणितजगत्प्रतरम्।
उभयदिशासंजातं ज्ञातव्यं गणितकुशलैः ॥ १३३ ॥

**अर्थ**—तिस वातवलयकरि रोक्या हूवा क्षेत्र चौवीस योजन गुणा जगत् प्रतर प्रमाण दोऊ पार्श्वरूप दिशा करि उपज्या यहू क्षेत्रफल गणितविद्याविषैं कुशल प्रवीण पुरुषनि करि जाननां। इहां जगच्छ्रेणी छह राजू जो छह गुणा जगच्छ्रेणीका सातवां भाग ताकरि गुणें छह गुणा जगत्प्रतरका सातवां भाग भया। ७।७६।७६ याकों चौदह करि गुणि सातका अपवर्तन कीएं वारह गुणा जगत्प्रतर भया याकों दोऊ पार्श्वनिका ग्रहणके अर्थि दूणां कीएं पूर्वोक्त क्षेत्रफल आवै है ॥ १३३॥

आगैं दक्षिण उत्तरके पार्श्वनि विषैं वातवलयका क्षेत्रफलका प्रमाण करैं हैं:—

**उदयं भूमुह वेहो छरज्जु सत्तमछरज्जु रज्जूय।**
**जोयण चोद्दस सत्तम तिरियोत्ति हु दक्खिणुत्तरदो ॥ १३४ ॥**

उदयः भूमुखं वेधः षड्रज्जवः सप्तमषट्रज्जवः रज्जुश्च।
योजनचतुर्दश सप्तमस्तिर्यगंतं हि दक्षिणोत्तरतः ॥ १३४ ॥

**अर्थ**—सप्तम पृथ्वीतैं लगाय तिर्यग् लोक पर्यंत दक्षिण उत्तर अपेक्षा क्षेत्रफल कहिए हैं। तहां सप्तम पृथ्वीतैं तिर्यग्लोक ऊंचा छह राजू सो उदय है ताकौं तौ पद कहिए। वहुरि सप्तम पृथ्वीनिकट चौडा तियालीस राजूका सातवां भाग है सो भूमि कहिए। वहुरि तिर्यग्लोकके निकट एक राजू चौडा है सो मुख कहिए। वहुरि तीनों वातवलय घाटि वाधि समान करि चौदह योजन मोठा है सो वेध कहिए सो इहां 'मुह भूमी, इत्यादि सूत्र करि मुख अर भूमिकों जोडि ताका आधा करि ताकौं पद करि गुणिए सो प्रमाण होइ ताकों वेध करि गुणिए। एक वार सात करि अपवर्तन करिए तव एक पार्श्वविषैं फल याकौं दूणा कीएं दोऊ पार्श्वनि विषैं होइ ॥ १३४ ॥

आगैं इस सिद्धभया फलकों कहैं हैं;—

**तत्थाणिलखेत्तफलं उभये पासम्हि होइ जगपदरं।**
**छस्सयजोयणगुणिदं पविभत्तं सत्तवग्गेण ॥ १३५ ॥**

तत्रानिलक्षेत्रफलं उभयस्मिन् पार्श्वे भवति जगत्प्रतरः।
षट्छतयोजनगुणितः प्रविभक्तः सप्तवर्गेण ॥ १३५ ॥

**अर्थ**—तहां अनिल जो पवन ताका क्षेत्रफल दोऊ पार्श्वनि विषैं जगत्प्रतरकों छसैं योजन करि गुणिए अर सातका वर्ग गुणचास ताका भाग दीजिए इतना हो हैं। इहां छह राजू अर मुख भूमिकों जोडि आधा कीए पचीस राजूका सातवां भाग इनकों परस्पर गुणैं तौ प्रतर राजू भया सो जगत्प्रतरका गुणचासवां भाग प्रमाण ४९ अर पचीसका सातवां भागकों छह करि गुणें ड्योढसैका सातवां भाग अर चौदह करि गुणें सातका अपवर्तन कीएं तीनिसै अर दोऊ पार्श्वनिके आर्थ दूणां कीएं पूर्वोक्त क्षेत्रफल आवै हैं ॥ १३५ ॥

आगैं ऊर्द्धलोक विषैं पूर्व पश्चिम संबंधि च्यारि पार्श्व तिन विषैं पवनका क्षेत्रफल कहैं हैं;—

**आउड्ढरज्जुसेढी जोयणचोद्दस य वासभुजवेहो।**
**वम्होत्ति पुव्वअवरे फलमेदं चदुगुणं सव्वं ॥ १३६ ॥**

अर्धचतुर्थरज्जुश्रेणिः योजनचतुर्दश च व्यासभुजवेधः ।
ब्रह्मांतं पूर्वापरे फलमेतत् चतुर्गुणं सर्वम् ॥ १३६ ॥

**अर्थ—** तिर्यग् लोकतैं ब्रह्मस्वर्ग पर्यंत पूर्व पश्चिमका एक पार्श्व विषैं क्षेत्रफल कहिए है तिर्यग् लोकतैं ब्रह्मस्वर्ग साढातीनि राजू ऊंचा है सो यहु व्यास है ताकों तौ इहां कोटि कहिए बहुरि जगच्छ्रेणी प्रमाण सर्वत्र चौडा है सो इहां भुज कहिए । बहुरि तीनौं वात वलय चौदह योजन मोटा सो वेध कहिए सो 'भुजकोटि' इत्यादि सूत्र करि भुज अर कोटिकों परस्पर गुणि वेध करि गुणें एक पार्श्व विषैं क्षेत्रफल सो इहां साढा तीनि राजू है सो जगच्छ्रेणीका आधा है २ याकों जगच्छ्रेणि अर चौदह करि गुणें सात गुणा जगत्प्रतर भया । बहुरि ब्रह्मस्वर्ग पर्यंत आधा ऊर्ध्वलोकके दोय पार्श्व अर ताके उपरि आधा ऊर्द्धलोकके दोय पार्श्व ऐसैं च्यारि पार्श्व हैं तिनकी अपेक्षा पूर्वोक्त फलकों चौगुणा कीएं सर्व क्षेत्रफल होइ ॥ १३६ ॥

आगैं ऊर्द्धलोक विषैं दक्षिण उत्तर संबधि च्यारों पार्श्वनि विषैं वातका क्षेत्रफलकों कहैं हैं;—

**पंचाद्धचुट्ठिगिरज्जू भूतुंगमुहं विसत्तजोयणयं ।**
**वेहो तं चउगुणिदं खत्तफलं दक्खिणुत्तरदो ॥ १३७ ॥**

पंचार्धचतुर्थैकरज्जवः भूतुंगमुखं द्विसप्तयोजनकः ।
वेधः तच्चतुर्गुणितं क्षेत्रफलं दक्षिणोत्तरतः ॥ १३७ ॥

**अर्थ—** ब्रह्मस्वर्गके निकटि पांच राजू चौडा सो इहां भूमि कहिए । बहुरि तिर्यग् लोकतैं ब्रह्मस्वर्ग साढा तीनि राजू ऊंचा सो तुंग है । सो इहां पद कहिए गच्छ जानना । तिर्यग् लोक निकटि एक राजू चौडा सो इहां मुख जाननां तीनौं वातवलयकी मोटाई चौदह योजन सो इहां वेध जानना । सो 'मुह भूमी, इत्यादि सूत्र करि मुख अर भूमिको जोडि ताका आधाकों पद करि गुणिए सो प्रमाण होइ ताकों वेध करि गुणें एक पार्श्व विषैं क्षेत्रफल होइ सो इहां मुख भूमिका जोड देइ आधा कीएं तीनि राजू सो तिगुणा जगच्छ्रेणीका सातवां भाग ७।३ याकौं साढा तीन राजू सो आधा जगच्छ्रेणी ताकरि अर चौदह करि गुणें चौगुण जगत्प्रतर भया =४ याकौं चौगुणा कीएं दक्षिण उत्तर अपेक्षातैं सर्व ऊर्द्ध लोक विषैं वातका क्षेत्रफल होइ । इहां प्रश्न उपजै है कि लोकका वर्णन विषैं तौ पूर्वैं पूर्व पश्चिम अपेक्षातैं व्यासका हीनाधिकपनां कह्या था । दक्षिण उत्तर अपेक्षा सर्वत्र जगच्छ्रेणी प्रमाण समान व्यास कह्या था इहां वातवलयका कथन विषैं पूर्व पश्चिम अपेक्षा व्यास सर्वत्र समान कह्या दक्षिण उत्तर अपेक्षा हीनाधिक व्यास कह्या सो कारण कहा । ताका समाधान जैसैं कोऊ मंदिर है ताकी दक्षिण वा उत्तरकी तरफ जे भींति तिनकी लंबाईका जहां प्रमाण करना होइ तहां पूर्व दिशाकी तरफ जो कूंट तीहस्यौं लगाय पश्चिमकी तरफ जो भींतिकी कूंट तींह पर्यंत मापिए । बहुरि पूर्व वा पश्चिमकी तरफ जे भींति तिनकी लंबाईका जहां प्रमाण करना होइ तहां भीतिकी दक्षिणकी तरफकी कूटतैं उत्तरकी कूट पर्यंत मापिए । ऐसैंही लोकका दक्षिण वा उत्तर दिशाका वातवलयका व्यास कहना भया तहां तौ लोकका पूर्व पश्चिम संबंधि व्यास करि कथन कीया अर लोकके पूर्व पश्चिम दिशाका वातवलयका व्यास कहना भया तहा

लोकका दक्षिण उत्तर संबधी व्यास करि कथन कीया । अर लोकके पूर्व पश्चिम दिशाका वातवलयका व्यास कहनां भया तहां लोकका दक्षिण उत्तर सम्बन्धी व्यास करि कथन कीया है ॥१३७॥

आगैं लोकका अग्रभाग विषैं वायुका फलकों कहैं हैं;—

**वासुदयभुजं रज्जू इगिजोयणवीसतिसदखंडेसु ।**
**सतितिसदं सेढी फलमीसिपभारुवरि दंडवाऊणं ॥ १३८ ॥**

व्यासोदयभुजा रज्जुः एकयोजनविंशत्रिशतखंडेषु ।
सत्रीत्रिशतं श्रेणिः फलमीषत्प्राग्भारोपरि दंडवायूनाम् ॥ १३८ ॥

**अर्थ**—पूर्व पश्चिम अपेक्षा लोकका व्यासके समान तौ इहां वातवलयका एक रज्जु प्रमाण व्यास जानना ताकों कोटि कहिए बहुरि तीनों वात वलयकी मोटाई एक योजनके तीनिसै वीस खंड करिए तिनविषैं तीनिसैं तीनि खंड प्रमाण सो इहां उदै जाननां । ताकों वेध कहिए । बहुरि दक्षिण उत्तर अपेक्षा लोकका व्यासके समान वातवलयकी जगच्छ्रेणी प्रमाण भुजा जाननी । इहां भुज और कोटिकों परस्पर गुणि करि ताकौं वेध करि गुणें ईषत्प्रागभारनामा अष्टम पृथ्वीके उपरिका धनुषनिकी मोटाई लीएं जु वायु तिनका क्षेत्रफल हो हैं इहां एक योजनके तीनसै वीस खंडनि विषैं तीनसै तीन खंड प्रमाण तीनों वातवल्यका मोटापना कह्या ताका बीज कहिए हैं । घनोदधि तौ दोय कोश मोटा ताके च्यारि हजार धनुप अर घनवात एक कोश मोटा ताके दोय हजार धनुष अर तनुवात सवा च्यारिसै धनुष हीन एक कोश मोटा ताके पंद्रह सै पिचत्तरि धनुष इन सबनिको मिलाएं सात हजार पांच सै पिचहत्तरि धनुप भए । अर एक योजनके आठ हजार धनुप हैं । सो इहां पचीस करि अपवर्तन कीएं सात हजार पांचसै पिचहत्तरि की जायगा तीनसै तीन भया अर आठ हजारकी जायगा तीनसै वीस भया । ऐसैं करि एक योजनके तीनिसै वीस भागनि विषैं तीनिसै तीनि भाग प्रमाण लोकके उपरि तीनों वातवल्यनिका मोटापनां कह्या है सो इहां जगच्छ्रेणीकों एक राजू जगच्छ्रेणीका सातवां भाग ताकरि गुणें जगत्प्रतरका सातवां भाग ताकों वेध करि गुणें ऐसा गुणें ऐसा क्षेत्रफल हो है । =३०३ बहुरि इहां लोकका अग्रभाग विषैं कह्या जु
७।३२०

वायुका फल ताको छोडि और सर्व वायुफल ऐसैं भए । इहां जगत्प्रतरकी सहनानी ऐसी = जाननी ।

| लोकके नीचैं | सप्तम पृथ्वीपर्यंत पूर्वपश्चिम | सप्तम पृथ्वीपर्यंत दक्षिण उत्तर | तिर्यंग्लोकपर्यंत पूर्वपश्चिम | तिर्यंग्लोकपर्यंत दक्षिण उत्तर | ऊर्द्धलोकपर्यंत पूर्वपश्चिम | ऊर्द्धलोकपर्यंत दक्षिण उत्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|
| =६०००० | =१२०००० | =५५२०००० | =२४ | ४९ ६०० | =२८ | =१२ |
| | | ३ ४३ | | | | |

ऐसैं ए भए क्षेत्रफल तिनकों समच्छेद विधान करि मिलावनें सो इन सातनिके हारनिकों सातका घन अर सातका वर्ग अर एक अर सातका घन अर सात अर सातका घन करि क्रमतैं गुणिएं सर्वत्र सातका घनका भाग दीजिए ॥ भावार्थ ॥ पूर्वोक्त सातौं क्षेत्रफलनि विषैं जहां भागहार न था तहां सातका घन करि गुण्यां जहां सातका भागहार था तहां सातका वर्ग करि गुण्यां जहां तीनसै तियालीसका भाग हार था तहां एक करि गुण्या जहां गुणचासका भागहार था तहां

सात करि गुण्या जातैं समछेद विधान विषैं जिस गुणकार करि गुणें हारनिकी समानता होइ तिस गुणकार करि अंशनिकों गुणनें सो इहां लघु करनेके आर्थि ऐसैं कीया तत्र ऐसैं भए॥ २–$\frac{५८००००}{३४३}$ $\frac{५८८००००}{३४३}$ $\frac{५५२००००}{३४३}$ $\frac{८२३२}{३४३}$ $\frac{४२००}{३४३}$ $\frac{९६०४}{३४३}$ $\frac{४११६}{३४३}$ इन सवनिकों जोडिए तव तीनि कोडि वीस लाख छह हजार एकसो वावनकों तींनसै तियालीसका भाग दीजिए इतने भए $\frac{३२००६१५२}{३४३}$ वहुरि लोकका अग्रभागविषैं क्षेत्रफल ऐसा =$\frac{२०३}{७३२०}$ इहां भाग हार सात अर तीनसै वीसकों गुणें वाईस सै चालीस होइ। वहुरि समच्छेद विधान करना। तातैं इस राशि विषैं हार तीनसै तीन अर अंश वाईस सै चालीस इन दोऊनिकों सातका वर्ग गुणचास ४९ करि गुणें ऐसा भया =$\frac{१४८४७}{१०९७६०}$ अर पूर्वोक्त राशि ऐसा $\frac{३२००६१५२}{३४३}$ याके हार अंशनिकों तीनसै वीस करि गुणें ऐसा $\frac{१०२४१९६८६४०}{१०९७६०}$ ऐसैं करते दोऊ राशिनके समान भागहार भए वहुरि इन दोऊ राशिनके हानिकों मिलाएं ऐसा भया =$\frac{१०२४१९८३४८७}{१०९१६०}$ ऐसैं इतना सर्व वातवल्यनि करि रोक्या हूवा क्षेत्रका क्षेत्रफल हो है॥ १३८॥

आगैं यह सिद्ध भया क्षेत्रफल ताकों कहैं हैं:—

**सत्तासीदिचदुस्सदसहस्सतेसीदिलक्खउणवीसं।**
**चउवीसहियं कोडीसहस्सगुणियं तु जगपदरं॥ १३९॥**

सप्ताशीतिचतुःशतसहस्रत्र्यशीतिलक्षैकोनविंशं।
चतुर्विंशाधिकं कोटिसहस्रगुणितं तु जगत्प्रतरम्॥ १३९॥

**अर्थ**—चौवीस अधिक एक हजार कोडि उगणीस लाख तियालीस हजार च्यारिसै सित्यासी करि जगत्प्रतरकों गुणिए॥ १३९॥

वहुरि याका भागहार कहैं हैं:—

**सट्ठीसत्तसएहिं णवयसहस्सेगलक्खभजियं तु।**
**सव्वं वादारुद्धं गणियं भणियं समासेण॥ १४०॥**

षष्टिसप्तशतैः नवकसहस्रैकलक्षभक्तं तु।
सर्वं वातारुद्धं गणितं भणितं समासेन॥ १४०॥

**अर्थ**—एक लाख वहत्तरि हजार सातसै साठिका भाग दीजिए। इतना सर्व वातवलय करि रोक्या हूवा क्षेत्रका गणित कह्या है जोडि करि लोकके चौगिरद वातवलय है। तिनका क्षेत्र ग्रहण कीया है। अष्टपृथ्वीनिके नीचैं वातवलय है तिनका क्षेत्र ग्रहण न कीया है॥ १४०॥

आगैं लोकका अग्रभाग विषैं तनुवातवलयमें विराजमान सिद्ध भगवान् तिनका जघन्य वा उत्कृष्टि अवगाहका क्षेत्रकों कहैं हैं:—

**णवपण्णारसलक्खा सयाण खंडाणमेयखंडम्हि।**
**सिद्धाणं तणुवादे जहण्णमुक्कस्सयं ठाणं॥ १४१॥**

नवपंचदशलक्षं शतानां खंडानामेकखंडे ।

सिद्धानां तनुवाते जघन्यमुत्कृष्टं स्थानम् ॥ १४१ ॥

अर्थ—तनुवातवलयका वाहुल्यका नव लाख खंड कीजिए तहां खंड विषैं सिद्धनकी जघन्य अवगाहनाका प्रमाण जानना अर ताहीका पंद्रह से खंड कीजिए तहां एक खंड विषैं सिद्धनिकी उत्कृष्टि अवगाहनाका प्रमाण जानना । ऐसैं तनुवातवलय विषैं सिद्धनका जघन्य उत्कृष्ट स्थान है ॥ १४१ ॥

आगैं तिस अवगाहनाकों व्यवहाररूप करता संता कहैं हैं:—

**पणसयगुणतणुवादं इच्छिदउग्गाहणेण पविभत्तं ।**

**हारो तणुवादस्स य सिद्धाणोगाहणाणयणे ॥ १४२ ॥**

पंचशतगुणतनुवातः इच्छितावगाहनेन प्रविभक्तः ।

हारस्तनुवातस्य च सिद्धानामवगाहनानयने ॥ १४२ ॥

अर्थ—तनुवातवलयका वाहुल्य तौ प्रमाणांगुल अपेक्षा है अर सिद्धनिकी अवगाहनाका प्रमाण व्यवहारांगुल अपेक्षा है । तातैं तनुवातका वाहुल्य पंद्रहसौ पिचत्तरि धनुष प्रमाण ताकौं पांचसैं गुणा कीएं ताके व्यवहार धनुषनिका प्रमाण सात लाख सित्यासी हजार पांचसै होइ । ७८७५०० । याकों विवक्षित जघन्यादि सिद्धनिकी अवगाहनाका भाग दीएं सिद्धनिकी अवगाहना ल्यावनों विषैं भागहारका प्रमाण हो है । भावार्थ । सात लाख सित्यासी हजार पांचसैकों जघन्य अवगाहनाका प्रमाण सात धनुषका आठवां भाग दीएं भागहारका प्रमाण नव लाख आया सो नव लाखका भाग तनुवात वलयका वाहुल्यकों दीएं एक भाग प्रमाण सिद्धनिकी जघन्य अवगाहनाका प्रमाण हो है । वहुरि सात लाख साढा सित्यासी हजारकों उत्कृष्ट अवगाहनाका प्रमाण पांचसै पचीस धनुष ताका भाग दीएं भागहारका प्रमाण पंद्रहसै आया सो पन्द्रहसैका भाग तनुवातके वाहुल्यकों दीएं एक भाग प्रमाण सिद्धनिकी उत्कृष्ट अवगाहनाका प्रमाण हो है । तहां भागहारका भाग दैंना ऐसैं जानना जो नव लाख खंडनिका सात लाख साढा सित्यासी हजार व्यवहार धनुष होइ तौ एकखंडके कते धनुष होइ ऐसैं त्रैराशीक करिए । वहुरि इहां भाज्य और भागहारकों एक लाख बारह हजार पांचसै करि अपवर्तन करिए तव भाज्य सात लाख साढा सित्यासी हजारकी जायगा तौ सात होइ अर भागहार नव लाखकी जायगा आठ होइ ऐसैं सात धनुषका आठवां भाग प्रमाण जघन्य अवगाहना होइ । ऐसैं ही उत्कृष्ट अवगाहना जानना । वहुरि च्यारि प्रकार अपवर्तनका विधान जानना ॥ १४२ ॥

आगैं त्रसनालीका स्वरूपकों कहैं हैं:—

**लोयवहुमज्झदेसे रुक्खे सारव्व रज्जुपदरजुदा ।**

**चोद्दसरज्जुत्तुंगा तसणाली होदि गुणणामा ॥ १४३ ॥**

लोकवहुमध्यदेशे वृक्षे सार इव रज्जुप्रतरयुता ।

चतुर्दशरज्जूत्तुंगा त्रसनाली भवति गुणनामा ॥ १४३ ॥

अर्थ—लोकाकाशका वहुत मध्यके प्रदेशनि विषैं त्रस नाली है। सो कैसी है, रज्जुप्रतर करि युक्त है। भावार्थ। एक राजू तौ लंबी हैं अर एक राजू चौडी है। वहुरि चतुर्दश राजू उत्तंग है। भावार्थ। लोकके अधोभागतैं लगाय अग्रभागपर्यंत चौदह राजू ऊंची है। कौंन दृष्टान्त। वृक्षे सार इव। जैसैं वृक्ष विषैं छोडा इत्यादिक तौ उपरि उपरि है। तिनके मध्य सार लकडी पाईए है। तैसैं लोक विषैं मध्य त्रसनाली पाईए है। वहुरि यह त्रसनाली कैसी है। गुणनामा कहिए सार्थिक नामकी धरनहार हैं जातैं वेंद्रियादिक जे त्रस जीव ते इसही विषैं पाईए है। याके वाहरैं अवशेष लोक क्षेत्र विषैं स्थावर जीव ही पाईए है त्रस जीव नाहीं है। उपपाद वा मारणान्तिक केवल समद्घातवाले जीवनिके प्रदेशनिका त्रस नाली वाह्य भी सत्व पाईए हैं परन्तु तिनकी मुख्यता नाहीं। ऐसैं तहां त्रस जीवनिका सद्भाव त्रस नाली विषैं ही जानना वाह्य नाहीं। वहुरि इहां त्रस नालीका लंवाई चौडाई एक राजू सो तौ भुज अर कोटि जानना उचाई चौदह राजू सो उत्सेध जानना वहुरि कोटिकौं परस्पर गुणि ताकौं उचाई करि गुणें त्रस नालीका क्षेत्रफल घन-रूप चौदह राजू प्रमाण है। भावार्थ। तीनसैं तियालीस घनरूप रज्जु प्रमाण लोक है। तामें चौदह राजूमें तौ त्रस नाली है। अवशेष तीनसै गुणतालीस राजू विषैं त्रस नाईं पाईए है इहां ऐसा आकार जानना ॥ १४३ ॥

आगैं त्रस नालीका अधोभाग विषैं तिष्टता पृथ्वी भेदादिककौं कहै हैं:—

**मुरवदले सत्तमही उवरीदो रयणसक्करावालू।**
**पंका धूमतमोमहतमप्पहा रज्जुअंतरिया ॥ १४४ ॥**

मुरजदले सप्त मह्यः उपरि रत्नशर्करा वालुः।
पंका धूमतमोमहातमप्रभा रज्ज्वंतरिताः ॥ १४४ ॥

अर्थ—ऊभ्वोध्व मृदंगके आकारि सर्व लोक कह्या था तामें आधा मृदंगके आकारि अधो लोक कह्या था। तीह आधा मृदंगका आकार विषैं सात पृथ्वी पाईए है तिनका आकार ऐसा। उपरतैं लगाय रत्नप्रभा १ शर्कराप्रभा १ वालुकाप्रभा, १ पंकप्रभा १ धूमप्रभा १ तमप्रभा १ महातमप्रभा १ ऐसैं तिनके नाम जानने इहां प्रभा शब्द प्रत्येक लगाइ लेना तातैं रत्नप्रभा इत्यादि नाम हैं। वहुरि ए नाम सार्थिक हैं जातैं इन विषैं रत्न मिश्री रेत कादो धूंवां अंधकार महा अंधका-रके समान अनुक्रमतैं प्रभा पाईए है। वहुरि ते सर्व पृथ्वी एक एक राजूके अंतर संयुक्त जाननी। भावार्थ। मध्य लोकतैं लगती तौ पहली रत्नप्रभा पृथ्वी है। वहुरि तातैं एक राजू नीचैं शर्कराप्रभा है तातैं एक राजू नीचैं वालुका प्रभा है ऐसैंही अन्य पृथ्वीनिका एक एक राजूका अंतराल जानना ॥ १४४ ॥

आगैं तिन पृथ्वीनिके अन्य नाम कहैं हैं:—

**घम्मा वंसा मेघा अंजनरिट्ठा य होंति अणिउज्झा।**
**छट्टी मघवी पुढवी सत्तमिया माघवी णामा ॥ १४५ ॥**

घर्मा वंशा मेघा अंजनारिष्टा च भवंति अनियोध्याः।
षष्ठी मघवी पृथ्वी सप्तमिका माघवी नाम ॥ १४५ ॥

अर्थ—घर्मा १ वंशा १ मेघा १ अंजना १ अरिष्टा १ वहुरि छठी पृथ्वी मघवी १ सातंमी माघवी नाम पृथ्वी ऐसैं अनियोध्या कहिए अर्थरहित अनादि रूढि रूप नामकौं धरैं ए सप्त पृथ्वी हैं ॥ १४५ ॥

आगैं तहां प्रथम पृथ्वीके भेद कहैं हैं:—

**रयणप्पहा तिहा खरभागा पंकापवहुलभागात्ति।**
**सोलस चउरासीदी सीदी जोयणसहस्सवाहल्ला ॥ १४६ ॥**

रत्नप्रभा त्रिधा खरभागा पंकाप्बहुलभागा इति।
षोडश चतुरशीतिः अशीतिः योजनसहस्रबाहुल्या ॥ १४६ ॥

अर्थ—रत्नप्रभा नामा पृथ्वी तीन प्रकार है। खरभागा १। पंकभागा १ अव्वहुलभागा १ ऐसैं हैं। वहुरि सोलह चउरासी असी हजार योजन बाहुल्यरूप है। भावार्थ। रत्नप्रभा पृथ्वी एक लाख अस्सी हजार योजन मोटी है तीह विषें उपरितैं सोलह हजार योजन तौ खरभागा है। चौरासी हजार योजन पंकभागा है। असी हजार अव्वहुल भागा है। ऐसै एक पृथ्वीस्कंध विषें तीनि भाग जानने ॥ १४६ ॥

आगैं खरभाग विषैं सोलह पृथ्वी पाईए हैं तिनकी संज्ञाकौं दोय गाथानि करि कहै हैं:—

**चित्ता वज्जा वेलुरियलोहिदक्खा मसारगल्लवणी।**
**गोमेदा य पवाला जोदिरसा अंजणा णवमी ॥ १४७ ॥**

चित्रा वज्रा वैडूर्या लोहिताख्या मसारकल्पावनिः।
गोमेदा च प्रवाला जोतिरसा अंजना नवमी ॥ १४७ ॥

अर्थ—चित्रा १ वज्रा १ वैडूर्या १ लोहिता १ कामसारकल्पा १ गोमेदा १ प्रवाला १ ज्योतीरसा १ अंजना १ नवमी पृथ्वी है ॥ १४७ ॥

**अंजणमूलिय अंका फलिहा चंदण सवत्थगा वकुला।**
**सेलक्खाय सहस्सा एगेगा लोगचरिमगया ॥ १४८ ॥**

अंजनमूलिका अंका स्फटिका चंदना सर्वर्थका वकुला।
शैलाख्या च सहस्सा एकैका लोकचरमगता ॥ १४८ ॥

अर्थ—अंजनमूलिका १ अंका १ स्फटिका १ चंदना १ सर्वर्थका १ वकुला १ शैला १ ऐसैं ए सोलह पृथ्वी हैं। एक एक पृथ्वी हजार हजार योजन प्रमाण मोटी है ॥ भावार्थ। खरभाग सोलह हजार योजन मोटा कह्या था तामें उपरि तौ हजार योजन मोटी चित्रा पृथ्वी है। ताके नीचै हजार योजन मोटी वज्रा पृथ्वी है ऐसै ही हजार हजार योजन मोटी सोलह पृथ्वी जाननी। वहुरि ते ए पृथ्वी लोकका अंतकौं प्राप्त जाननी। भावार्थ। लंबाई चौडाई इन पृथ्वीनिकी लोकके समान जाननी सो इस खरभाग विषैं अर पंक भाग विषैं तौ भवनवासी व्यंतर देवनिका वास है सो वर्णन आगैं होइगा। वहुरि अव्वहुल भाग विषैं प्रथम नरकके विल पाईए है। वहुरि ऐसैं भाग कीएं तिनके बीच कोई छेकडि नाहीं है। जैसैं एक पर्वत विषैं कोई अपेक्षा भाग करिए तैसैं इहां भाग कीए हैं ॥ १४८ ॥

आगें द्वितीयादि पृथ्वीनिका वाहुल्य कहैं हैं:—

बत्तीसमट्ठवीसं चउवीसं वीस सोलसट्ठाणि ।
हेट्ठिमछप्पुढवीणं सहस्समाणेहिं वाहुलियं ॥ १४९ ॥
द्वात्रिंशदष्टाविंशतिः चतुर्विंशतिः विंशति षोडशाष्टौ ।
अधस्तनषट्पृथ्वीनां सहस्रमानैः वाहुल्यं ॥ १४९ ॥

**अर्थ**—वत्तीस हजार अठाईस हजार चौवीस हजार वीस हजार सोलह हजार आठ हजार योजन प्रमाण द्वितीयादिक नीचली छह पृथ्वीनिका वाहुल्य कहिए मोटापना सो क्रमतैं जानना ॥ १४९ ॥

आगें तिन पृथ्वीनि विषैं तिष्टते जु पटल तिनके स्थान कहैं हैं.—

सत्तमखिदिबहुमज्झे विलाणि सेसासु आपवहुलात्त ।
हेट्ठुवरिं च सहस्सं वज्जिय पडलक्कमे होंति ॥ १५० ॥
सप्तमक्षितिवहुमध्ये विलानि शेषासु अव्वहुलांतं ।
अध उपरि च सहस्रं वर्जयित्वा पटलक्रमेण भवंति ॥ १५० ॥

**अर्थ**—सातमी पृथ्वीका तौ वहु मध्य भाग विषैं विल हैं । वहुरि अवशेष पृथ्वीनि विषैं अव्वहुल भाग पर्यंत नीचे वा उपरि हजार हजार योजन छोडि पटलनिका अनुक्रम करि विल पाईए है ।

**भावार्थ**—सातमी पृथ्वी आठ हजार योजन मोटी है तामें नीचें वा उपरि वहुत मोटाई छोडि वीचि विषैं विल पाईए हैं । वहुरि अन्य पृथ्वी वा प्रथम पृथ्वीका अव्वहुल भाग तिनकी मोटाई विषैं नीचैं वा उपरि हजार हजार योजनको छोडि वीचि विषैं जेते जेते पटल पाईए तिन विषैं अनुक्रम करि विल पाईए है ॥ १५० ॥

आगैं प्रथमादि पृथ्वीनि विषैं विलनिकी संख्या कहैं हैं:—

तीसं पणुवीसं पण्णरसं दस तिण्णि पंचहीणेक्कं ।
लक्खं सुद्धं पंच य पुढवीसु कमेण णिरयाणि ॥ १५१ ॥
त्रिंशत् पंचविंशतिः पंचदश दश त्रीणि पंचहीनैकं ।
लक्षं शुद्धं पंच च पृथ्वीषु क्रमेण निरयाणि ॥ १५१ ॥

**अर्थ**—तीस लाख पचीस लाख पंद्रह लाख दश लाख तीनि लाख पांच घाटि एक लाख ऐसें एतौ लक्ष विशेषणसहित विल हैं । अर सातमी पृथ्वी विषैं शुद्ध कहिए लक्ष विशेषणरहित पांच ही विल हैं । ऐसैं प्रथमादि पृथ्वीनि विषैं अनुक्रम करि निरय कहिए विल पाईए है ॥१५१॥

आगैं तिन विषैं अति शीत अति उष्णका विभाग कहैं हैं;—

रयणप्पहपुढवीदो पंचमतिचउत्थओत्ति अतिउण्हं ।
पंचमतुरिए छट्ठे सत्तमिए होदि अदिसीदं ॥ १५२ ॥
रत्नप्रभापृथ्वीतः पंचमत्रिचतुर्थांतं अत्युष्णम् ।
पंचमतुरीये षष्ठ्यां सप्तम्यां भवति अतिशीतम् ॥ १५२ ॥

अर्थ—रत्नप्रभा पृथ्वीतैं लगाय पंचम पृथ्वीके तीनि चौथा भाग पर्यंत तौ अति उष्ण है। पंचम पृथ्वीका चौथा भाग अर छठी सातवीं पृथ्वी विषैं अति शीत हैं। भावार्थ— पहली दूसरी तीसरी चौथीके तौ सर्व विल अर पांचमी पृथ्वीके विलनिका च्यारि भाग करिए तहां तीन भाग प्रमाण विल ए तौ अति उष्ण पाईए है। इन विषैं अग्न्यादिक तैं भी वहुत अधिक उष्णता जाननी। वहुरि पांचईं पृथ्वीका चौथाई विल अर छठी सातवीं पृथ्वीके सर्व विल अति शीत पाईए है। इन विषैं हिमादिक तैं भी वहुत अधिक शीतता जाननी। जैसी इहां उत्कृष्ट शीतता पाईए है ताकी उपमादैंनें कोई पदार्थ नाहीं। तहां शीतता वा उष्णताकी महा वेदना है॥ १५२॥

आगैं तिन विलानि विषैं इन्द्रक श्रेणीवद्ध विलनिकी संख्या कहैं हैं। सो इन्द्रकादिकनिका स्वरूप जाननेको किछु इस भाषा टीका विषै वर्णन करिए है। सो प्रथम दृष्टान्त कहिए है। इहां पृथ्वी विषैं केते इक खणका भूमिग्रह वनाईए। वहुरि एक एक खण विषैं ऐसै कोठे वनाईए एक तौ कोठा वीचिमें करिए वहुरि ताकी च्यारि दिशा अर च्यारि विदिशानि विषैं पंक्तिवंध केते इक कोठे करिए। वहुरि दिशा विदिशानिके वीचि केते इक कोठे करिए वहुरि जे ए कोठे कीए तिन विषैं आवने जानेको द्वारादिक न राखिए। ऐसैं जो भूमि गृह वनैं ताका दृष्टान्त नरक रचना विषैं जाननां। तहां दृष्टान्त विषैं जैसैं खण कहे तैसैं इहां नर्करचना विषैं उपरि नीचैं पटल जानने पटलनिका ही नाम प्रस्तार जानना। वहुरि तहां जैसैं खण खण विषैं कोठे कोटडी कहे तैसैं इहां पटल पटल विषैं विल जानने। वहुरि तहां जैसैं वीचिका कोठाके दिशा विदिशा विषैं पंक्तिबंध कोठे कहे। तैसैं इहां इन्द्रक विलके च्यारि दिशा वा च्यारि विदिशानि विषैं पंक्तिवंध विल जानने सो इनका नाम श्रेणीवद्ध विल हैं। वहुरि तहां जैसैं दिशा विदिशानिकी वीचि कोठे कहे तैसैं इहां श्रेणीवद्धनिकी वीचि अंतर दिशानि विषैं विल जानने इनका नाम प्रकीर्णक विल है। वहुरि तहां दृष्टांत विषैं भूमिगृह इस वास तैं कह्या है जो जैसैं भूमिगृह पृथ्वी विषैं हो हैं। तैसैं नरक रचना भी पृथ्वी विषैं जाननी। जैसैं पृथ्वी उपरि आकाश विषैं मंदिर हो हैं तैसैं नरक रचना नाहीं है। वहुरि तहां दृष्टांत विषैं द्वारादिकका अभाव इस वास्तैं कह्या है जो लोक विषैं भूमिगृह बनावैं हैं ताके आवने जानेकों द्वार सीढी इत्यादि राखैं हैं। सो रचना विषैं तिन विलनिके द्वारादिक नाहीं हैं। ऐसैं दृष्टांत करि नरक रचनका स्वरूप जानना। इहां एक पटल विषैं ऐसैं इंद्रादिक विल जानने। वहुरि ऐसी रचना त्रस नाली विषैं ही है। अवशेष त्रस नाली वाहैं जो पृथ्वी है तहां नाहीं है ऐसा जानना॥ तहां प्रथमादि पृथ्वीनि विषैं इंद्रक श्रेणीवद्ध केते केते पाईए सो कहैं हैं;—

**तेरादि दुहीणिंदयसेढीवद्धा दिसासु विदिसासु।**
**उणवण्णउदालादी एक्केक्केणूणया कमसो ॥ १५३॥**

त्रयोदशत्या द्विहीना इंद्रकाः श्रेणीवद्धा दिशासु विदिशासु।
एकोनपंचाशदष्टचत्वारिंशादि एकैकेन न्यूनाः क्रमशः॥ १५३॥

अर्थ—तेरहकों आदि दै करि दोय दोय घाटि इंद्रक विल जानने। भावार्थ॥ प्रथमादि पृथ्वीनि विषैं तेरह ग्यारह नव सात पांच तीनि एक इंद्रक जानने। जातैं एक पटल प्रति एक एक

इंद्रक है सो पटल भी इतने पाईए हैं। वहुरि श्रेणीवद्ध विल दिशा अर विदिशानि विषैं गुणचास अर अठतालीसकों आदि दे करि पटल पटल प्रति एक एक घटता क्रमतैं जानना। भावार्थ। प्रथमादि पृथ्वीनिके तेरह ग्यारह नव सात पांच तीन एक पटल मिलाए हूए गुणचास पटल हैं तहां प्रथम पृथ्वीका पहला पटल तामें एक एक दिशानि विषैं तौ गुणचास गुणचास श्रेणीवद्ध हैं। अर एक एक विदिशानि विषैं अठतालीस अठतालीस श्रेणीवद्ध हैं। वहुरि द्वितीयादि पटल तैं सप्तम पृथ्वीका पटल पर्यंत एक एक दिशा अर विदिशानि विषैं एक एक श्रेणीवद्ध घटता घटता जाननां। ऐसैं करि अंतका गुणचासवां पटल विषैं दिशानि विषैं एक एक श्रेणीवद्ध पाईए है। विदिशानि विषैं श्रेणीवद्धका अभाव है॥ १५३॥

आगैं तिन पृथ्वीनि विषैं कहे जु इंद्रक तिनके नाम छह गाथानि करि कहै हैं;—

सीमंतणिरयरोरव भंतुब्भंतिद्या य संभतो।
तत्तोवि असंभंतो वीभंतो णवमओ तत्थो॥ १५४॥

सीमंतनिरयरौरवभ्रांतोद्भ्रांतेद्रकाः च संभ्रांतः।
ततोपि असंभ्रांतः विभ्रांतः नवमः त्रस्तः॥ १५४॥

**अर्थ**—सीमंत १ निरय १ रौरव १ भ्रांत १ उद्भ्रांतनामा इंद्रक १ संभ्रांत १ तहां पीछें असंभ्रांत १ विभ्रांत १ नवमा इंद्रक त्रस्त १॥ १५४॥

तसिदो वक्कंतक्खो होदि अवक्कंतणाम विक्कंतो।
पढमे तदगो थणगो वणगो मणगो खडा खडिगा॥ १५५॥

त्रसितो वक्रांताख्यः भवति अवक्रांतनाम विक्रांतः।
प्रथमायां ततकः स्तनकः वनकः मनकः खडा खडिका॥ १५५॥

**अर्थ**—त्रसित १ वक्रांतनामा इंद्रक १ विक्रांत १ ऐसैं प्रथम पृथ्वी विषैं तेरह इंद्रक जानने। वहुरि ततक १ स्तनक १ वनक १ मनक १ खडा १ खडिका १॥ १५५॥

जिब्भा जिब्भिगसण्णा तो लोलिग लोलवत्थ थणलोलो।
विदिए तत्तो तविदो तवणो तावणणिदाहा य॥ १५६॥

जिह्वा जिह्विकसंज्ञा ततो लोकिकलोलवत्सस्तनलोलाः।
द्वितीयायां ततः तपितः तपनः तापननिदाघौ च॥ १५६॥

**अर्थ**—जिह्वा १ जिह्विकनाम १ तहां पीछैं लौकिक १ लोलवत्स १ स्तनलोला १ ऐसैं द्वितीय पृथ्वी विषैं ग्यारह इंद्रक जानने। वहुरि तप्त १ तपित १ तापन १ निदाघ १॥ १५६॥

उज्जलिदो पज्जलिदो संजलिदो संपजलिदणामा य।
तदिए आरा मारा तारा चच्चा य तमगी य॥ १५७॥

उज्वलितः प्रज्वलितः संज्वलितः संप्रज्वलितनामा च।
तृतीयायां आरा मारा तारा चर्चा च तमकी च॥ १५७॥

**अर्थ**—उज्वलित १ प्रज्वलित १ संज्वलितनाम १ ऐसैं तीसरी पृथ्वी विषैं नव इंद्रक हैं। बहुरि आरा १ मारा १ तारा १ चर्चा १ तमकी ॥ १५७ ॥

**घाडा घडा चउत्थे तमगा भमगा य झसग अंधिंदा ।**
**तिमिसा य पंचमे हिमवद्दललल्लगितयं छट्ठे ॥ १५८ ॥**

घटा घटा चतुर्थ्यां तमका भ्रमका च झषगा अधेंद्राः ।
तिमिश्रा च पंचम्यां हिमवार्दलिल्लकित्रयं षष्ठयाम् ॥ १५८ ॥

**अर्थ**—घाटा १ घटा १ ऐसैं चौथी पृथ्वी विषैं सात इंद्रक हैं। बहुरि तमका १ भ्रमका १ झषका १ अंधेंद्रा १ तिमिश्रका १ ऐसैं पंचम पृथ्वी विषैं पांच इंद्रक हैं । हिम १ वार्दलि १ लल्लकि ऐसै छठी पृथ्वी विषैं तीन इंद्रक हैं ॥ १५८ ॥

**ओहिट्ठाणं चरिमे तो सीमंतादिसेढिबिलणामा ।**
**पुव्वादिदिसे कंखा पिवास महकंख अइपिवासा य ॥ १५९ ॥**

अप्रतिस्थानं चरमे ततः सीमंतादिश्रेणिबिलनामानि ।
पूर्वादिदिशायां कांक्षा पिपासा महाकांक्षा अतिपिपासा च ॥ १५९ ॥

**अर्थ**—अवधिस्थान १ वा दूसरा नाम अप्रतिष्ठित स्थान सो अंतकी सातवीं पृथ्वी विषैं एक इंद्रक है । ऐसैं क्रमतैं इंद्रक विलनिके नाम कहे । अथ जो आगैं अर्थ कहिए ताकी पातनि-काकों गर्भित करि तीन गाथा कहैं हैं । सो तहां पीछैं अब सीमंतादिक इंद्रक संबंधी पूर्वादि दिशानि-विषैं जे श्रेणीवद्ध हैं तिनके नाम कहिए हैं । भावार्थ—प्रथमादि पृथ्वीका पहला पहला जो इंद्रक ताके समीप वर्ती जे पूर्वादि दिशानि विषैं च्यारि च्यारि श्रेणीवद्ध हैं तिनके नाम कहिए हैं । इन अठाईस विना और श्रेणी वद्ध वा प्रकीर्णक विलनिके नामका वर्णन इस शास्त्र विषैं नाहीं हैं तहां घर्मा पृथ्वीका सीमंत इंद्रककी पूर्वादि दिशानि विषैं कांक्षा १ पिपासा १ महाकांक्षा १ महापिपासा १ ए च्यारि है ॥ १५९ ॥

**वंसातदगे अणिच्छा अविज्ज महणिच्छ महअविज्जा य ।**
**तत्ते दुक्खा वेदा महदुक्ख महादिवेदा य ॥ १६० ॥**

वंशाततके अनिच्छा अविद्या महानिच्छा महाऽविद्या च ।
तप्ते दुःखा वेदा महादुःखा महादिवेदा च ॥ १६० ॥

**अर्थ**—वंशाका तत इंद्रक विषैं अनिच्छा १ अविद्या १ महानिच्छा १ महाविद्या १ ए च्यारि हैं । बहुरि मेघाका तप्त इंद्रक विषैं दुःखा १ वेदा १ महादुःखा १ महावेदा १ ए च्यारि हैं ॥ १६० ॥

**आराए दु णिसट्ठा णिरोह अणिसिट्ठ महणिरोहा य ।**
**तमग णिरुद्धविमद्दण अइपुव्वणिरुद्ध महविमद्दणया ॥ १६१ ॥**

आरे तु निसृष्टा निरोधा अनिसृष्टा महानिरोधा च ।
तमके निरुद्धनिमर्दनअतिपूर्वनिरुद्धमहाविमर्दनाः ॥ १६१ ॥

अर्थ—बहुरि अंजनाका आर इंद्रक विषैं निसृष्टा १ निरोधा १ अनिसृष्टा १ महानिरोधा १ ए च्यारि हैं। बहुरि अरिष्टाका तमक इंद्रक विषै निरुद्ध १ विमर्दन १ अनिरुद्ध १ महाविमर्दनक १ ए च्यारि हैं ॥ १६१ ॥

हिमगा णीला पंका महणील महादिपंक सत्तमए।
पढमो कालो रउरवमहकालमहादिरउरवया ॥ १६२॥
हिमके नीला पंका महानीला महादिपंका सप्तमायाम्।
प्रथमः कालः रौरवमहाकालमहादिरौरवाः ॥ १६२ ॥

अर्थ—मघवीका हिमक इंद्रक विषैं नीला १ पंका १ महानीला १ महापंका १ ए च्यारि हैं। बहुरि सातमी पृथ्वी विषैं पहला श्रेणीबद्ध काल १ बहुरि रौरव १ महाकाल १ महारौरवक १ ए च्यारि हैं। ऐसैं इनके नाम जानने ॥ १६२ ॥

आगैं पृथ्वी पृथ्वी प्रति प्रथम पटल संबंधी श्रेणीबद्ध बिलनिका प्रमाणरूप जो धन ताहि धरि करि अंतके पटलका धन ल्यावनेकों अर अंतके पटलका धनकौं धरि प्रथम पटलके धन ल्यावनेकों करण सूत्र कहैं हैं;—

वेगपदं चयगुणिदं भूमिह्मि मुहम्मि रिणधनं च कए।
मुहभूमीजोगदले पदगुणिदे पदधणं होदि ॥ १६३ ॥
व्येकपदं चयगुणितं भूमौ मुखे ऋणं धनं च कृते।
मुखभूमियोगदले पदगुणिते पदधनं भवति ॥ १६३ ॥

अर्थ—जे ते स्थान होंहिं तिनकों पद कहिए वा गच्छ कहिए। बहुरि स्थान स्थान प्रति जे ते बधते जांहिं वा घटते जांहिं तिनकों चय कहिए। बहुरि आदिस्थान वा अंतस्थान विषैं जो हीन प्रमाण होइ ताकों मुख कहिए अधिक प्रमाण होइ सो भूमि कहिए सो इहां एक घाटि जो पद ताकों चयकरि गुणें जो प्रमाण होइ तितना भूमि विषैं ऋण कीएं घटाएं मुख होइ। अथवा मुख विषैं धनकीएं जोडें भूमि होइ बहुरि मुख और भूमि इन दोऊनिका योग कहिए जोड ताकों दले कहिए आधाकीएं बहुरि ताकों पदगुणिते कहिए पदकरि गुणें पदधनं कहिए सर्व स्थानकनिका जौडरूप प्रमाण हो है। ऐसैं जहां आदिस्थान विषैं किछू प्रमाण होइ अर पीछे स्थान प्रति बरोबरि घटते जांहिं वा बधते जांहिं तहां इस सूत्रकी प्रवृत्ति जाननी। ताका इहां उदाहरण, प्रथम पृथ्वीविषैं प्रथम पटल तहां दिशा विषैं गुणचास अर विदिशा विषैं अठतालीस श्रेणीबद्ध हैं तिनकों मिलाएं सित्याणवै भए। बहुरि दिशा वा विदिशांका प्रमाण च्यारि है तातैं इनकों चौगुणा कीएं प्रथम पटल विषैं सर्व श्रेणीबद्धनिका प्रमाण तीनिसै अठ्यासी भया सो तो इहां भूमि कहिए। बहुरि अंतका तेरेन्हां पटल विषैं दिशा विषैं सैंतीस विदिशा विषैं छतीस श्रेणीबद्ध हैं जोडें तिहत्तरि भए चौगुणा कीएं दोयसै बाणवै अंत पटल विषैं श्रेणीबद्ध भए सो इहां मुख कहिए। बहुरि इहां पटल तेरह हैं तातैं पदका प्रमाण तेरह तामें एक घटाएं बारह। बहुरि इहां पटल पटल आठ श्रेणीबद्ध घटे हैं तातैं चय आठ तीह करि छिनवै होइ सौ भूमि तीनसौ अठ्यासीमें छिनवका ऋण कहिए घटाए मुख दोयसै

वाणवै होइ। अथवा मुख दोयसै वाणवैमें छिनवैकर धनकीएं जोड़ें भूमि तीनिसैं अठ्यासी होइ। बहुरि मुखतै दोयसैं वाणवै अर भूमि तीनिसैं अठ्यासी इनको जोडें छसैं असी याका आधा तीनसै चालीस इनकों पद तेरह करि गुणें च्यारि हजार च्यारिसैं वीस सर्व प्रथम पृथ्वी विषैं तेरह पटल संवंधी श्रेणीवद्धनिका प्रमाण हो है। बहुरि इंद्रक सहित श्रेणीवद्धनिका प्रमाण भी ऐसैं ही ल्यावनां। मुख और भूमि विषैं एक एक और वधावना तव मुख दोयसैं तरेणवै भूमि तीनिसैं निवासी पूर्वोक्त प्रकार कीएं प्रथम पृथ्वीविषैं इंद्रक सहित श्रेणीवद्ध च्यारि हजार च्यारिसैं तेतीस होंहिं ४४३३ बहुरि ऐसैंही द्वितीयादि पृथ्वीनि विषैं भी प्रमाण ल्यावना। बहुरि समस्त पृथ्वीनिके श्रेणीवद्धका प्रमाण ऐसैं ही ल्यावना इहां मुख तौ सप्तम पृथ्वी विषैं श्रेणीवद्ध च्यारि भूमि प्रथम पटल विषैं श्रेणी वद्ध तीनसै अठ्यासी पद सर्व पटल गुणचास चय आठ जाननां। इहां समस्त पृथ्वीनिके इंद्रक सहित श्रेणीवद्धका प्रमाण भी ऐसैं ही ल्यावना। इहां मुख पांच भूमि तीनिसैं निवासी पद गुणचास चय आठ जानना॥ १६३॥

आगैं इंद्रक श्रेणीवद्धका प्रमाण ल्यावनेकों संकलनरूप अन्य करण सूत्र कहे हैं:—

**पदमेगेण विहीणं दुभाजिदं उत्तरेण संगुणिदं।**
**पभवजुदं पदगुणिदं पदगणिदं तं विजाणाहि॥ १६४॥**

पदमेकेन विहीनं द्विभक्तं उत्तरेण संगुणितं।
प्रभवयुतं पदगुणितं पदगणितं तत् विजानीहि॥ १६४॥

**अर्थ**—पदकों एक घाटि करिए ताकों दोयका भाग दीजिए वहुरि उत्तर जो चय ताकरि गुणिए। बहुरि प्रभव जो मुख ताकरि युक्त करिए जोडिए बहुरि पदकरि गुणिए ऐसैं कीएं जो प्रमाण होइ ताकों पद गणित कहिए जहां आदिस्थान विषैं किछू प्रमाण होई अर स्थान स्थान प्रति वरोवरि घटै वा वधै तहां सर्व स्थाननिका जोड विजानीहि कहिए तू जानि। सो इहां प्रथम पृथ्वी विषैं पद तेरह तामें एक घटाएं वारह दोयका भागदिएं छह उत्तर आठकरि गुणें अठतालीस प्रभव जो मुख दोयसै वाणवें तीहकरि जोडें तीनसै चालीस ताकौं पद तेरह करि गुणें सर्व श्रेणीवद्ध च्यारि हजार च्यारिसै वीस भए। ऐसैं ही द्वितीयादि सर्व पृथ्वी विषैं प्रमाण ल्यावनां॥ १६४॥

आगैं अन्य प्रकार करि संकलन ल्यावनेका विधान कहैं है:—

**पुढविंदयमेगूणं अद्धकयं वग्गियं च मूलजुदं।**
**अट्ठगुणं चउसहियं पुढविंदयताडियं च पुढविधणं॥ १६५॥**

पृथ्वींद्रकमेकोनं अर्धकृतं वर्गितं च मूलयुतम्।
अष्टगुणं चतुःसहितं पृथ्वींद्रकताडितं च पृथ्विधनम्॥ १६५॥

**अर्थ**—विवाक्षित पृथ्वी विषैं जो इंद्रकका प्रमाण होई तामें एक घटाईए बहुरि ताकों आधा करिए वहुरि ताका वर्ग करिए बहुरि तामें च्यारि और मिलाईए वहुरि ताकों पृथ्वीके इंद्रकका प्रमाण करि ताडिए गुणिए ऐसैं करतैं विवक्षित पृथ्वी विषैं श्रेणीवद्धानिका प्रमाणरूप धन होहै। तहां प्रथम पृथ्वी विषैं इंद्रकका प्रमाण तेरह तामें एक घटाएं वारह ताका वर्ग वत्तीस तामें ताका वर्ग-

मूल छह मिलाए वियालीस इनकों आठगुणा कीएं तीनिसैं छत्तीस इनमें च्यारि मिलाएं तीनिसैं चालीस इनकों इंद्रकका प्रमाण तेरह करि गुणें च्यारि हजार च्यारिसै वीस प्रथम पृथ्वी विषैं सर्व श्रेणीवद्धनिका प्रमाण हो है। ऐसैं ही द्वितीयादि पृथ्वीनि विषैंभी प्रमाणल्यावनां। अब इहां ऐसा सूत्र कैसैं कह्या सो जाननेकों याकी वासनाका स्वरूप संस्कृत टीकातैं जाननां। या प्रकार प्रथमादि पृथ्वीनि विषैं चौवालीससै बीस, छवीससै चैरासी, चौदासै छहत्तरि, सातसैं, दोयसैं साठि, साठि, च्यारि।४४२०।२६८४।१४७६।७००।२६०।६०।४। श्रेणीवद्ध जाननें। सर्व मिलाएं नव हजार छसै च्यारि श्रेणीवद्ध हो हैं। इंद्रक तेरह ग्यारह नव सात पांच तीन एक जानने। मिलाएंतैं सर्वइंद्रक गुणचास होहैं इन दोऊनिकों मिलाएं इंद्रक सहित श्रेणीवद्धनिका प्रमाण हो है॥ १६५॥

आगैं प्रकीर्णकनिकी संख्या ल्यावनेकों कहैं हैं;—

**सेढीणं विच्चाले पुप्फपइण्णय इव ट्ठिया णिरया।**
**होंति पइण्णयणामा सेढिंदयहीणरासिसमा॥ १६६॥**

श्रेणीनां अंतराले पुष्पप्रकीर्णकानि इव स्थितानि निरयाणि।
भवंति प्रकीर्णकनामानि श्रेणींद्रकहीनराशिसमानि॥ १६६॥

**अर्थ**—जैसैं पुष्पप्रकीर्णक कहिए पुष्पांजलि करि फूल वखेरे हूए पृथ्वीविषैं ते फूल पंक्ति रहित जहां तहां पाईए तैसैं श्रेणीवद्धनिकैं वीचि दिशा विदिशानका अंतराल विषैं पंक्ति रहित जहां जहां जे विल पाईए ते प्रकीर्णक नाम विल हो हैं ते श्रेणीवद्ध और इंद्रककी संख्या रहत राशि जो सर्व विलनिकी संख्या तीह समान जाननैं। तहां प्रथम पृथ्वीविषैं च्यारि हजार च्यारिसै श्रेणीवद्ध अर इंद्रक तेरह इन दोऊनिकों राशि तीस लाख तामें घटाएं गुणतीस लाख पिच्याणवे हजार पांचसै सतसठि रहे सो इतनें प्रथम पृथ्वी विषैं प्रकीर्णक विल जाननें। ऐसैं ही द्वितीयादि पृथ्वीनिविषैं जानना॥ १६६॥

आगैं नरक विलनिका विस्तार कहनेके आर्थ कहैं हैं;—

**पंचमभागपमाणा णिरयाणं होंति संखवित्थारा।**
**सेसचउपंचभागा असंखवित्थारया णिरया॥ १६७॥**

पंचमभागप्रमाणा निरयाणां भवंति संख्यविस्ताराः।
शेषचतुःपंचभागा असंख्यविस्ताराणि नरकाणि॥ १६७॥

**अर्थ**—पृथ्वीनि विषैं जो पूर्वे विलनिका प्रमाण कह्या तिन विषैं पांचवां भाग प्रमाण विल तौ संख्यात योजन विस्तार करि संयुक्त हैं। अर अवशेष च्यारि पांचवां भाग प्रमाण असंख्यात योजन विस्तार करि संयुक्त हैं। तहां इंद्रक तो सर्व ही संख्यात योजन विस्तारयुक्त जाननें। अर श्रेणीवद्ध सर्व असंख्यात योजन विस्तारयुक्त जानने। अवशेष संख्यात वा असंख्यात विस्तारयुक्त प्रकीर्णक जानने। तहां प्रथम पृथ्वीविषैं विल तीस लाख तिनकों पांचका भाग दीएं एक भाग प्रमाण छह लाख विल तौ संख्यात योजन विस्तार युक्त हैं। अवशेष च्यारि भाग प्रमाण चौईस लाख विल असंख्यात योजन विस्तारयुक्त जाननें। तहां संख्यात योजन विस्तारयुक्त छह

लाख विलनि विषैं तेरह तौ इंद्रक अर अवशेष पांच लाख निन्यानवै हजार नौसै सित्यासी प्रकीर्णक जानने। बहुरि असंख्यात योजन विस्तारयुक्त चौईस लाख विलनिविषैं च्यारि हजार च्यारिसै वीस तौ श्रेणीबद्ध अर अवशेष तेईस लाख पिच्याणवै हजार पांचसै असी प्रकीर्णक जाननें। ऐसैं ही द्वितीयादि पृथ्वीनिविषैं भी जाननां। वा सर्व पृथ्वीनिके सर्व विलनिविषैं भी ऐसैं ही प्रमाण ल्यावनां॥ १६७॥

आगैं संख्यात असंख्यात विस्तारविषैं नियम दिखावता कहैं हैं;—

**इंदयसेढीबद्धापइण्णयाणं कमेण वित्थारा।**
**संखेज्जमसंखेज्जं उभयं च य जोयणाण हवे॥ १६८॥**

इंद्रकश्रेणीबद्धप्रकीर्णकानां क्रमेण विस्ताराः।
संख्येयमसंख्येयमुभयं च च योजनानां भवेत्॥ १६८॥

**अर्थ**—इंद्रक अर श्रेणीवद्ध अर प्रकीर्णक इनका विस्तार अनुक्रमतैं संख्यात योजन अर असंख्यात योजन अर उभय कहिए संख्यात वा असंख्यात योजनका है॥ १६८॥

आगैं इंद्रकनिके विस्तारका विशेष कहैं हैं;—

**माणुसखेत्तपमाणं पढमं चरिमं तु जंबुदीवसमं।**
**उभयविसेसे रूऊणिंदयभजिदह्मि हाणिचयं॥ १६९॥**

मानुषक्षेत्रप्रमाणं प्रथमं चरणं तु जंबूद्वीपसमम्।
उभयविशेषे रूपोनेंद्रकभक्ते हानिचयं॥ १६९॥

**अर्थ**—प्रथम इंद्रक मनुक्ष क्षेत्र प्रमाण है। अंत इंद्रक जंबूद्वीप समान है। दोऊनिका सोधन कीएं एक घाटि इंद्रकका भाग दीए हानि चय हो है। सो पहला पटल संबंधी पहला इंद्रक तौ पैंतालीस लाख योजन चौडा है। अर गुणचासवां पटल संबंधी अंतका इंद्रक एकलाख चौडा है। इनकर सोधन कीएं पैतालीस लाखमेंस्यों एक लाख घटाएं अवशेष चवालीस लाख रहे तिनको एक घाटि इंद्रकनिका प्रमाण अठतालीस ताका भाग दीएं इक्याणवैं हजार छसैं छयासठि योजन अर बत्तीस योजन अठतालीसवां भाग आया तहां बत्तीसका अठतालीसवां भागका सोलह करि अपवर्तन कीएं बत्तीसकी जायगा दोय अर अठतालीसकी जायगा तीन भया ऐसैं करि इक्याणवै हजार छसै छयासठि योजन अर दोय योजनका तीसरा भाग प्रमाण हानि चय आया इहां इंद्रक इंद्रक प्रति घटनेका जो प्रमाण ताका नाम हानि चय जानना सो पैंतालीस लाख योजनमेंस्यों हानि चय घटाएं चवालीस लाख आठ हजार तीनसैं तेतीस योजन अर एक योजनका तीसरा भाग प्रमाण द्वितीय इंद्रकका विस्तार है। ऐसैंही उपरिके इंद्रकका विस्तारका जो प्रमाण तामें पूर्वोक्त हानि चय घटाएं निचले इंद्रकका प्रमाण अंत इंद्रक पर्यंत जानना॥ १६९॥

आगैं इंद्रकादिक तीन जातिके विल तिनका बाहुल्यका प्रमाण कहैं हैं;—

**छक्कट्ठचोद्दसादिसु पडिपुढविमुखद्धसहिकोसेसु।**
**छहिं भजिदेसु बहलं इंदयसेढीपइण्णाणं॥ १७०॥**

पट्काष्टचतुर्दशादिषु प्रतिपृथ्वीमुखार्धसहितक्रोशेषु।
पड्भिः भक्तेषु इंद्रकश्रेणीप्रकीर्णानाम्॥ १७०॥

**अर्थ**—छह आठ चौदानें आदि दे करि पृथ्वी प्रति मुखका अर्द्ध प्रमाण संयुक्त जे कोई तिनकों छहका भाग दीएं इंद्रक श्रेणीवद्ध प्रकीर्णकनिका वाहुल्य हो है। इहां विलनिकी भूमिस्यों लगाय छाति पर्यंत उचाईका प्रमाण ताका नाम वाहुल्य जाननां। सो प्रथम पृथ्वी विषै छह कोशकों छहका भाग दीएं एक कोश भया सो इंद्रकनिका वाहुल्य जानना। वहुरि आठकों छहका भाग दीएं च्यारि कोशका तीसरा भाग सो श्रेणी वद्धनिका वाहुल्य जाननां। वहुरि चौदहकों छहका भाग दीएं सातकोशका तीसरा भाग भया सो प्रकीर्णकनिका वाहुल्य जाननां। [१।४/३।७/३] ऐसैं प्रथम पृथ्वी विषैं इंद्रकादिकका वाहुल्य कह्या ताका नाम इहां मुख जाननां। ताका आधा कीएं जो प्रमाण होइ तितनां तितनां उपरिकी पृथ्वीके इंद्रकादिकनिका वाहुल्य विषैं जोडें नीचली पृथ्वीके इंद्रकादिकका वाहुल्य हो है। सो इंद्रकनिविषैं तीनका छठा भाग श्रेणीवद्धनिविषैं च्यारिका छठा भगा प्रकीर्णकनि विषैं सातका छठा भाग पृथ्वी पृथ्वी प्रति जोडना सो प्रथम पृथ्वी विषैं छह आठ चौदह तिनमें तीन च्यारि सात अर छह आठ चौदह अर नव वारा इकईस अर वारा सोलह अठाईस अर पंद्रह वीस पैंतीस अर अठारह चौईस शून्य इतने अनुक्रमतैं मिलाएं छहका भाग दीएं द्वितीयादि पृथ्वीनि विषैं इंद्रकादिकनि वाहुल्यका प्रमाण आवै है। तहां सप्तम पृथ्वी विषैं प्रकीर्णकनिका अभाव है। तातैं तीसरी जायगा शून्य कह्या है। तहां छे आठ चौदह विषैं तीनि च्यारि सात जोडे तव नौ वारा इकईस हूवा इनकों छहका भाग दीएं अपवर्तन कीएं द्वितीय पृथ्वीविषैं इंद्रकनिका ड्योढकोश श्रेणीवद्धनिका दोय कोश प्रकीर्णकनिका साढा तीनि कोश वाहुल्य [३/२।२।७/२] हो हैं। तृतीयादि पृथ्वी विषैं जानना॥ १७०॥

आगैं वहुरि इस वाहुल्यकों अन्य प्रकार करि कहैं हैं;—

रूवहियपुढविसंखं तियचउसत्तेहि गुणिय छब्भजिदे।
कोसाणं वेहुलियं इंदयसेढीपइण्णाणं॥ १७१॥

रूपाधिकपृथ्विसंख्या त्रिकचतुःसप्तभिः गुणयित्वा षड्भक्ते।
क्रोशानां वाहुल्यं इंद्रकश्रेणीप्रकीर्णानाम्॥ १७१॥

**अर्थ**—जेथवीं पृथ्वी होइ तीह संख्या विषैं एक अधिक कीएं जो संख्या होइ, ताकों तीन च्यारि सात करि गुणें छहका भाग दीएं जो प्रमाण होइ तितनी कोशनिका वाहुल्य जो उचाईका प्रमाण सो जाननां। तहां प्रथम पृथ्वी विषैं एक अधिक कीएं दोय भए सो तीन जायगा दोय दोय मांडि तिनकों च्यारि सात करि गुणें छह आठ चौदह भए तिनकों छहका भाग दीएं [१][४/३][७/३] इंद्रकादिकनिका कोशरूप वाहुल्य आवै है। वहुरि द्वितीय पृथ्वी विषैं एक अधिक संख्या तीन सो तीन जायगा मांडि तीन च्यारि सात करि गुणें नव वारह वाईस होइ इनकों छहका भाग दीएं [३/२।२।७/२] कोशरूप इंद्रकादिकनिका वाहुल्य आवै है। ऐसैं ही तृतीयादि पृथ्वीनि विषैं जाननां॥१७१॥

आगैं इंद्रकादि विलनिका अंतरालका प्रमाण कहैं हैं;—

पदराहय विलवहलं पदरट्ठिदभूमिदो विसोहित्ता।
रूऊणपदहिदाए विलंतरं उड्ढगं तीए ॥ १७२॥
प्रतराहतं विलवाहल्यं प्रतरस्थितभूमितः विशोध्य।
रूपोनपदहृतायां विलांतरं ऊर्ध्वगं तस्याः ॥ १७२ ॥

अर्थ—प्रतर कहिए पटल तिनका प्रमाण करि आहत कहिए गुण्या हूवा ऐसा जु विलका वाहुल्य कहिए इंद्रकादि विलनिका वाहुल्यका प्रमाण सो प्रतरस्थित भूमितः कहिए पटलनि करि संयुक्त जो नरक पृथ्वीका प्रमाण तातैं विशोधयित्वा कहिए घटाय करि अवशेपकों रूपोनपद कहिए एक घाटि पटलका प्रमाण रूप गच्छ ताकरि हृतायां कहिए भाग दीएं संतैं तीह विवक्षित पृथ्वी विपैं ऊर्द्धग विलांतर कहिए उचाई विपैं प्राप्त ऐसा विलानिके अंतराल हो है। जैसैं मंदिर ऊपर मंदिर बनै हैं। तिन दोऊ मंदिरनिके वीचि छांति हो है। तिस छातिकी मोटाईका जो प्रमाण सो ऊर्द्धग मंदिरांतर कहिए तैसैं उपरले नीचले पटल संवधी विलनिके वीचि जो ता पृथ्वीकी मोटाईका प्रमाण सो इहां ऊर्द्धग मंदिरांतर कहिए तैसैं उपरिले नीचले पटल विलांतर जानना। तहां प्रथम पृथ्वी विषैं पटलनिका प्रमाण तेरह ताकरि इंद्रक विलका वाहुल्य एक कोश श्रेणीवद्धनिका च्यारि कोशका तीसरा भाग प्रकीर्णकनिका सात कोशका तीसरा भाग इनकों गुणें तेरह कोश वावन कोशका तीसरा भाग इक्याणवै कोशका तीसरा भाग भया [१३।५२/३।९१/३] वहुरि च्यारि कोशका एक योजन होइ तौ इतने कोशनिका केते योजन होय ऐसैं तिन कोशनिके योजन कीएं तेरह योजनका चौथा भाग वहुरि वावन योजनका वारव्हां भाग वहुरि इक्याणवै योजनका वारव्हां भाग भया [१३/४।५२/१२।९१/१२]। वहुरि इहां अव्वहुल भाग असी हजार योजन छोडि वीचि पटल पाईए तातैं प्रतरस्थित भूमि अठहत्तरि हजार योजन तिनमें पूर्वोक्त योजननिकों समच्छेद विधान करि घटाएं इंद्रकनि विपैं तीनि लाख ग्यारह हजार नवसै सित्यासी योजनानिका चौथा भाग अर श्रेणीवद्धनि विपैं च्यारिका अपवर्तन कीएं दोय लाख तेतीस हजार नौसै सित्यासी योजननिका तीसरा भाग अर प्रकीर्णकनि विषैं नौ लाख पैंतीस हजार नौसै नवका वारव्हां भाग प्रमाण आया वहुरि इनकों एक घाटि पटलका प्रमाणरूप पदका प्रमाण वारह ताका भाग दीएं उपरले नीचले इंद्रकानिकैं वीचि तौ तीन लाख ग्यारह हजार नवसै सित्यासी योजनका अडतालीसवां भाग प्रमाण अंतराल है। वहुरि श्रेणीवद्धनिके वीचि दोय लाख तेतीस हजार नौसे सित्यासी योजनका छत्तीसवां भाग प्रमाण अंतराल है। वहुरि प्रकीर्णकानिके वीचि नव लाख पैतीस हजार नवसै नौका एक सो चवालीसवां भाग प्रमाण अंतराल है [३११९८७/४८।२३३९८७/३६।९३५९०९/१४४] ऐसैं ही द्वितीयादि पृथ्वीनि विपैं तीस हजार छत्तीस हजार आदि प्रतर स्थित भूमि विषैं अपना अपना पटल प्रमाण करि गुण्या हूवा विल वाहुल्य घटाइ एक घाटि पटल प्रमाणका भाग दीएं ऊर्द्ध गत अंतरालका प्रमाण आवै है। ऐसैं एक पृथ्वी विषैं तिष्ठते जु पटल तिनका परस्पर अंतराल वर्णन किया ॥ १७२ ॥

आगैं उपरली पृथ्वीका अंतपटल अर नीचली पृथ्वीका आदि पटल तिन विषैं अंतराल निरूपण करैं हैं;—

उवरिमपच्छिमपडला हिट्ठिमपढमिल्लपत्थरंतरयं ।
रज्जू तिसहस्सूणिदघम्मा वंसुदयपरिहीणा ॥ १७३ ॥
उपरिमपश्चिमपटलात् अधस्तनप्रथमप्रस्तरांतरका ।
रज्जुः त्रिसहस्रोनितघर्मा वंशोदयपरिहीना ॥ १७३ ॥

अर्थ—उपरिकी घर्मा पृथ्वी ताका पश्चिम पटल कहिए अंतका पटल अर ताके अधस्तन कहिए नीचली वंशा पृथ्वी ताका प्रथम पटल इनविर्षे एक रज्जु अंतराल है। सो रज्जु कैसा। तीन हजार घाटि घर्मा अर वंशकी मोटाईका प्रमाण जामें घटाईए ऐसा एक रज्जु प्रमाण अंतराल है। कैसें सो कहिए है। इहांतें एक हजार योजन पर्यंत चित्रा पृथ्वी है सो चित्रा पृथ्वीकी मोटाई तौ ऊर्द्ध लोककी उचाई विर्षे गिनी है। अर ताके नीचें वंशा पृथ्वीका अंतपर्यंत एक राजू उंचाई है। बहुरि एक लाख असी हजार योजन घर्मा पृथ्वीकी मोटाई विर्षे चित्रा पृथ्वीकी हजार योजनकी मोटाई आय गई है तातैं हजार योजन तौ चित्रा पृथ्वी संबंधी घटाए बहुरि घर्मा पृथ्वीका अंत पटलके नीचें हजार योजन विर्षे पटल नाहीं सो घटाए बहुरि वंशा पृथ्वीका प्रथम पटलके उपरि हजार योजन विर्षे पटल नाहीं सो घटाए ऐसैं तीन हजार योजन घर्मा अर वंशाकी मोटाई विर्षे घटाईए तहां घर्माकी मोटाई एक लाख असी हजार योजन वंशाकी मोटाई बत्तीस हजार योजन दोऊनिको मिलाए दोय लाख बारह हजार योजन घटाएं दोय लाख नव हजार रहे सो इतने एक राजू विर्षे घटाएं घर्माका अंत पटल अर वंशाका प्रथम पटल विर्षे अंतरालका प्रमाण हो है। इस अंतराल विर्षे हजार योजन घर्माकी नीचली पृथ्वी अर हजार योजन वंशाकी उपरली पृथ्वी अर अवशेष सर्व बीचिमें अवकाश पाईए है ॥ १७३ ॥

आगैं तातैं नीचली पृथ्वीनिका अंतादि पटलनि विर्षे अंतराल निरूपण करैं हैं;—

कमसो विसहस्सूणियमेघादीणं च वेहपरिहीणा ।
चरिमे वितिभागाहियजोयणतिसहस्सपरिवज्जा ॥ १७४ ॥
क्रमशो द्विसहस्रोनितमेघादीनां च वेधपरिहीना ।
चरमे द्वित्रिभागाधिकयोजनत्रिसहस्रपरिवर्जा ॥ १७४ ॥

अर्थ—अनुक्रमतैं दोय हजार योजन घाटि मेघादि पृथ्वीनिका वेधकरि हीन ऐसा रज्जु प्रमाण अंतर है। तहां मेघादि पृथ्वीका मोटाईका प्रमाण अठाईस हजार योजन तिनमें दोय हजार घटाएं छवीस हजार योजन तिन करि हीन ऐसा एक रज्जु प्रमाण अंतराल वंशाका अंतपटल अर मेघाका आदि पटलके बीचि जाननां। बहुरि अंजना पृथ्वीकी मोटाई चौडाई चौईस हजार योजनमें दोय हजार योजन घटाएं बाईस हजार योजन रहे तिन करि हीन एक राजू प्रमाण मेघाका अंतपटल अर अंजनाका आदि पटल विर्षे अंतराल जानना। बहुरि अरिष्टा पृथ्वीकी मोटाई वीस हजार योजनमें दोय हजार योजन घटाएं अठारह हजार योजन रहे तिनकरि हीन एक राजू प्रमाण अंजनाका अंत पटल अर अरिष्टाका प्रथम पटल बीचि अंतराल है। बहुरि मघवी पृथ्वीकी मोटाई सोलह हजार योजनमें दोय हजार योजन घटाएं चौदह हजार योजन तिन करि हीन एक राजू प्रमाण अरि-

छाका अंत पटल अर मघवीका प्रथम पटल वीचि अंतराल है ॥ भावार्थ ॥ घंशादिक पृथ्वीका अंततैं मेघादिक पृथ्वीका अंत एक राजू है तामें मेघादिक पृथ्वीकी मोटाई घटाईए बहुरि उपरली पृथ्वीका अंत पटल नीचैं एक हजार योजन अर नीचली पृथ्वीका प्रथम पटलके उपरि पक हजार योजन ए दोय हजार योजन अंतराल विपैं मिलाएं अनुक्रमतैं अंतरालका प्रमाण हो हैं । तहां अंतराल विपैं दोय हजार योजन तौ उपरि नीचें पृथ्वी है अवशेष वीचिमें अवकाश है । बहुरि चरम कहिए अंत मघवीका अंतपटल अर माघवींका आदि पटलीविपैं अंतराल दोय योजनका तीसरा भाग करि अधिक तीन हजार योजन घाटि एक राजू प्रमाण है । कैसैं सो वासना कहिए है । सप्तम पृथ्वीकी मोटाई आठ हजार योजन बहुरि श्रेणीवद्धनिका बाहुल्य सोला कोशका तीसरा भाग ताके योजन करिए तब सोलहका बारव्हां भाग भया च्यारि करि अपवर्तन कीएं च्यारि योजनका तीसरा भाग श्रेणीवद्धका बाहुल्य भया ताकों समच्छेद विधान करि आठ हजार योजनमें घटाईए तब तेईस हजार नवसै छिनवै योजनका तीसरा भाग रह्या सो ताका आधा ग्यारह हजार नवसै अठयाणवैका तीसरा भाग सो भाग दीएं तीन हजार नवसै निन्याणवे योजन अर एक योजका तीसरा भाग भया सो इतना तौ सप्तम पृथ्वीका पटलके उपरि पृथ्वीकी मोटाईका प्रमाण है । जातैं सप्तम पृथ्वी विषैं एक पटल वीचिमें पाईए है । बहुरि छठी पृथ्वीका अंतपटलके नीचें एक हजार योजन पृथ्वी पाईए सो मिलाए च्यारि हजार नवसै निन्याणवै योजन अर एक योजनका तीसरा भाग भया सो इतना तौ मिल्यावना अर छठी पृथ्वीका अंततैं सप्तम पृथ्वीका अंत एक राजू है तातैं एक राजू विपैं सप्तम पृथ्वीकी मोटाईका प्रमाण आठ हजार योजन घटावनां । ऐसैं करि तीन हजार योजन अर दोय योजनका तीसरा भाग करि हीन एक राजू प्रमाण छठी पृथ्वीका अंतपटल अर सप्तम पृथ्वीका पटलके वीचि अंतराल जानना । इस अंतरालविपैं गुणचाससै निन्याणवे योजन अर एक योजनका तीसरा भाग प्रमाण तौ उपरि वा नीचैं पृथ्वी है । अवशेप वीचिमें अवकाश है ॥ १७४ ॥

आगैं बिलनिका तिर्यक् अंतर दोय गाथानिकरि निरूपण करैं है;—

**संखेज्जवासणिरए तेरिच्छं अंतरं जहण्णमिणं ।**
**इगिजोयणमद्धजुदं जोयणतिदयं हवे जेट्ठं ॥ १७५ ॥**

संख्यातव्यासनिरये तैरश्चमंतरं जघन्यमिदं ।
एकयोजनमर्धयुतं योजनत्रितयं भवेत् ज्येष्ठम् ॥ १७५ ॥

अर्थ—जैसैं मंदिरकी बरोबरि लगता दूसरा मंदिर होइ तहां तिन दोऊ मंदिरनि विषैं वीचिमें भीति होइ तिस भींतिकी चौडाईका जो प्रमाण सो तिर्यक् अंतर कहिए । तैसैं इहां विवक्षित पटलनिविषैं लगता बिलनिकी वीचि जो पृथ्वी पाईए ताका चौडाईका प्रमाण सो तिर्यक् अंतर जानना। सो संख्यात योजन व्यासकों धरैं जो नरकाविल तीह विषैं तिर्यक् अंतर यह है । एक योजन अर आधा सहित सो ताका ड्योढ योजन भया सो तौ जघन्य तिर्यक् अंतर है । अर तीन योजन उत्कृष्ट अन्तर है ॥१७५॥

जोयणसत्तसहस्सं असंखवित्थारजुत्तणिरयाणं।
अंतरमवरं णेयं जेट्ठमसंखेज्जजोयणयं॥ १७६॥

योजनसप्तसहस्रं असंख्यविस्तारयुक्तनिरयाणाम्।
अंतरमवरं ज्ञेयं ज्येष्ठमसंख्येययोजनकम्॥ १७६॥

**अर्थ**—असंख्यात योजनका विस्तार संयुक्त जो नरक तिनके तिर्यक् अन्तर जघन्य तौ सात हजार योजन जानना। उत्कृष्ट असंख्यात योजन जानना॥ १७६॥

आगैं तिन बिलनिका आकारादिक निरूपण करैं हैं;—

वज्जघणभित्तिभागा वट्टतिचउरंसबहुविहायारा।
णिरया सयावि भरिया सव्विंदियदुक्खदाईहिं॥ १७७॥

वज्रघनभित्तिभागा वृत्तत्रिचतुरस्रबहुविधाकाराः।
निरयाः सदापि भृताः सर्वेंद्रियदुःखदायिभिः॥ १७७॥

**अर्थ**—वज्रसमान निबड है भीति जिनकी अर गोल अथवा तिकूंटा अथवा चौकोर आदि बहुत प्रकार आकारकों धरैं हैं ऐसे नरक बिल हैं बहुरि ते सदा ही सब इंद्रियनिकों दुःखदायक जे वस्तु सामग्री तिनकरि भरे हैं॥ १७७॥

आगैं तहां पाईए दुर्गंध ताकों दृष्टांतपूर्वक कहैं हैं;—

मज्जारसाणसूयरखरवाणरकरहहत्थिपहुदीणं।
कुहिदादहिदुग्गंधा णिरया णिच्चंधयारचिदा॥१७८॥

मार्जारश्वसूकरखरवानरकरभहस्तिप्रभृतीनाम्।
कुथितादतिदुर्गंधा निरया नित्यांधकारचित्ताः॥ १७८॥

**अर्थ**—बिलाव कूकरा सूरडा गदहा वानरा ऊंट हाथी इत्यादिकनिका जो कुथित कहिए मल तातैं अति बहुत दुर्गंधता सहित नरक बिल हैं। बहुरि ते सदा ही अंधकार सहित हैं॥१७८॥

आगैं तहां उपजनेवाले जीवनिकों वा तिनके उपजनेके स्थाननिकों कहैं हैं;—

उप्पज्जंति तहिं बहुपरिग्गहारंभसंचिदाउस्सा।
उट्टादिमुखायारेसुवरिल्लुववादठाणेसु॥ १७९॥

उत्पद्यंते तेषु बहुपरिग्रहारंभसंचितायुष्याः।
उष्ट्रादिमुखाकारेषु उपरितनोपपादस्थानेषु॥ १७९॥

**अर्थ**—तिन विषैं बहुत परिग्रह आरंभ करि संचय कीया है नरक आयु जिननें ऐसे जीव उपजैं हैं। ऊंट आदिका मुखके आकारि उपरि उपपादस्थान हैं तिन विषैं उपजैं हैं। भावार्थ॥ जैसैं मंदिरकी छाति विषैं कोऊ स्थान बनें तैसैं नरक बिलनिकी छाति विषैं उपपादस्थान हैं ते मांही पोले मुख सांकडा ऐसैं ऊंट आदि प्राणीनिका जैसा मुखका आकार है तैसे आकारकों धरैं हैं। तहां जीव जाय करि जन्म धरैं हैं॥ १७९॥

आगैं तिन उपपाद स्थानकनिका व्यास वा बाहुल्य कहैं हैं;—

इगिबितिकोसो वासो जोयणमवि जोयणं सयं जेट्ठं।
उट्टादीणं वहलं सगवित्थारेहिं पंचगुणं ॥ १८० ॥
एकद्वित्रिक्रोशः व्यासः योजनमपि योजनशतं ज्येष्टं।
उष्ट्रादीनां वाहल्यं स्वकविस्तारेभ्यः पंचगुणम् ॥ १८० ॥

**अर्थ**—एक कोश दोय कोश तीन कोश वहुरि योजनमपि कहिए एक योजन दोय योजन तीन योजन वहुरि योजनानां शतं कहिए सौ योजन इतना घर्मादि सप्त पृथ्वीनिका क्रमतैं उष्ट्रादि आकारके धारक जे उपपादस्थान तिनका उत्कृष्ट व्यास जो चौडाई ताका प्रमाण जाननें। वहुरि अपना अपना प्रमाणतैं पांच गुणा वाहुल्य कहिए उचाईका प्रमाण जाननां ॥ १८० ॥

आगैं तिन उपपाद स्थानकनिविषैं उपजे जे जीव कहा करैं हैं सो कहैं हैं;—

अंतोमुहुत्तकाले तदो चुदा भूतलह्मि तिक्खाणं।
सत्थाणमुपरि पडिदूणुड्डीय पुणोवि णिवडंति ॥ १८१ ॥
अंतर्मुहूर्त्तकाले ततश्चुता भूतले तीक्ष्णानाम्।
शस्त्राणामुपरि पतित्वा उड्डीय पुनरपि निपतंति ॥ १८१ ॥

**अर्थ**—अंतर्मुहूर्त कालविषैं तहां पर्याप्ति पूर्ण करि तिस उपपाद स्थानतैं छूटि नरक विलनिका पृथ्वी तल विषैं जे तीक्ष्ण शस्त्र हैं तिन उपरि पडें हैं। वहुरि तहांस्यों उड्डीय कहिए उछलि करि वहुरि तिनही उपरि निपतंति कहिए पडैं हैं ॥ १८१ ॥

आगैं कितना उछलें हैं सो कहैं हैं;—

पणघणजोयणमाणं सोलहिदं उप्पडंति णेरइया।
घम्माए वंसादिसु दुगुणं दुगुणंति णादव्वं ॥ १८२ ॥
पंचघनयोजनमानं पोडशहृतं उत्पतंति नैरयिकाः।
घर्मायां वंशादिपु द्विगुणं द्विगुणं इति ज्ञातव्यम् ॥ १८२ ॥

**अर्थ**—पांचका घन एक सो पचीस ताकों सोलाका भाग दीएं जो आवै तितने योजन प्रमाण घर्मा पृथ्वी विषैं नारकी उछलैं हैं। वहुरि यातैं वंशादिक पृथ्वीनि विषैं क्रमतैं दूणे दूणे उछलें हैं ऐसा जाननां ॥ १८२ ॥

आगैं तहां तिष्टते थे जु पुरातन नारकी ते उछलि करि पडे जे नवीन नारकी तिनकों कहा करैं हैं सो कहैं हैं;—

पोराणिया तदा ते दट्ठूणइणिट्ठुरारवागम्म।
खोवंति णिसिंचंति य वणेसु वहुखारवारीणि ॥ १८३ ॥
पौराणिकाः तदा तान् दृष्ट्वा अतिनिष्ठुरारवा आगम्य।
घ्नंति निषिंचंति च वनेषु वहुक्षारवारीणि ॥ १८३ ॥

**अर्थ**—पुरातन नारकी तहां तिन नवीन नारकीनिकों देखि करि अत्यन्त कठोर वचन कहते संते आय करि तिन नवीन नारकीनकों घातैं हैं। बहुरि शस्त्रनि उपरि पड़नेतैं भए जु शरीर विषैं व्रण कहिए घात तिन विषैं बहुत खारा जलनिकों सींचैं हैं ॥ १८३ ॥

आगैं ते नवीन नारकी कहा करैं हैं सो कहैं हैं;—

**तेवि विहंगेण तदो जाणिदपुव्वावरारिसंबंधा ।**
**असुहापुहविक्किरिया हणंति हण्णंति वा तेहिं ॥ १८४ ॥**

तेपि विभंगेन ततः ज्ञातपूर्वापरारिसंबंधाः ।
अशुभापृथग्विक्रिया घ्नंति हन्यंते वा तैः ॥ १८४ ॥

**अर्थ**—ते नवीन नारकी भी विभंग जो कुअवधि तीह करि तहां पर्याप्ति पूर्ण भए पीछैं जान्या है पिछला वैरीपणाका संबंध जिननें ऐसे बहुरि अशुभ अपृथक् विक्रिया जिनके पाईए ऐसे होत संतें अन्य नारकीनिकों हनें हैं। वा तिन नारकीन करि आप हनिए हैं। ऐसैं परस्पर घात प्रवर्तैं है ॥ भावार्थ ॥ नारकीनिकें ऐसा कुअवधि हो हैं। जाकरि परस्पर वैरकों जानि परस्पर विरोध रूप ही प्रवर्तैं बहुरि जो पूर्वभव विषैं कोई उपकार किया होय तौ ताकों जानि तहां परस्पर प्रीतिरूप न प्रवर्तैं। बहुरि तिनके अशुभ जो आपापरकों दुःखदायक ऐसी ही विक्रिया होय सकै है। बहुरि सो अपृथक् विक्रिया हो है। अपने शरीरकों तौ अनेक रूप परनवावै अपने शरीरतैं जुदी विक्रिया करनेकी सामर्थ्य नाहीं। ऐसैं ए नारकी परस्पर घात करैं हैं ॥ १८४ ॥

आगैं अपृथक् विक्रिया करनेका विधान कहैं हैं;—

**वयवग्घघूगकागहिविच्छियभल्लूकगिद्धसुणयादिं ।**
**सूलग्गिकोंतमोग्गरपहुदी संगे विकुव्वंति ॥ १८५ ॥**

वृकव्याघ्रघूककाकाहिवृश्चिकभल्लूकगृध्रशुनकादिं ।
शूलाग्निकुंतमुद्गरप्रभृतिं स्वांगे विकुर्वंति ॥ १८५ ॥

**अर्थ**—वृक कहिए स्याल बहुरि व्याघ्र कहिए वघेरा घूक कहिए घूघू काक कहिए कागला अहि कहिए सर्प वृश्चिक कहिए वींछू भल्लूक कहिए रीछ गध्र कहिए ग्रध्र पंखी शुनक कहिए कूकरा इत्यादि अपने शरीर विषैं विक्रिया करैं हैं। भावार्थ। नारकी परस्पर दुःख देनेकों अपने शरीरकों स्याल इत्यादि दुःखदायक तिर्यंचनिके आकाररूप विक्रिया करि परनमाइ परस्पर खाणा चूंटना काटना इत्यादि घातरूप प्रवर्तैं हैं। बहुरि शूल कहिए त्रिशूल वरछी अग्नि कहिए जलावनेकों कारण अग्नि अर कुंत कहिए सेल अर मुद्गर कहिए मोंगरा इत्यादि दुखदायक शस्त्रादि सामिग्री अपने शरीरविषैं विक्रिया करैं हैं। भावार्थ। नारकी परस्पर दुख देनेकों अपने शरीर ही विषैं त्रिशूल आदि शस्त्र वा अग्नि आदि दुःखदायक वस्तु विक्रिया करि उपजाय तिनि करि परस्पर घात करैं हैं। ऐसैं अशुभ लेश्या करि नारकी परस्पर दुःख देनेकों प्रवर्तैं हैं। ऐसा ही तिस नारक पर्यायका स्वभाव है। बहुरि हम सर्व पापी हैं काहेकों परस्पर वैर करि दुःखकों उदीरैं हैं ऐसा विचार तहां नाहीं उपजै है ॥ १८५ ॥

आगैं क्षेत्र संबंधी पदार्थनिकी क्रूरताकों दोय गाथानिकरि कहैं हैं;—

वेदालगिरी भीमा जंतसयुक्कडगुहा य पडिमाओ ।
लोहणिहग्गिकणड्ढा परसूछुरिगासिपत्तवणं ॥ १८६ ॥

वेतालगिरयः भीमा यंत्रशतोत्कटगुहाश्च प्रतिमाः ।
लोहनिभाग्निकणाढ्याः परशुछुरिकासिपत्रवनम् ॥ १८६ ॥

**अर्थ**—वेतालकीसी आकृतिकों धरैं ऐसा महाभयानक तौ तहां गिरि कहिए पर्वत हैं। बहुरि सैकड़ां दुःखदायक यंत्रनिकरि उत्कट ऐसी गुफा हैं। बहुरि तिष्टती जु प्रतिमा कहिए स्त्री आदिकका आकाररूप प्रतिबिंब सो लोहसमान हैं अर अग्निका कणनिकरि संयुक्त है। बहुरि तहां असिपत्र वन हैं सो फरसी छुरी खड्ग इत्यादि शस्त्रसमान पत्रनिकरि संयुक्त हैं ॥ १८६ ॥

कूडा सामलिरुक्खा वयिदरणिणदीउ खारजलपुण्णा ।
पूहरुहिरा दुगंधा हदा य किमिकोडिकुलकलिदा ॥ १८७ ॥

कूटाः शाल्मलिवृक्षाः वैतरणिनद्यः क्षारजलपूर्णाः ।
पूयरुधिरा दुर्गंधाः ह्रदाश्च क्रमिकोटिकुलकलिताः ॥ १८७ ॥

**अर्थ**—बहुरि तहां कूटा कहिए असत्य झूठे ऐसे शाल्मली वृक्ष हैं नाम वृक्ष अर महा दुःखदायक हैं। बहुरि तहां वैतरिणी नाम नदी है सो खारा जल करि सम्पूर्ण भरी है। बहुरि पूय कहिए घिनावनां ऐसा रुधिर करि संयुक्त महा दुर्गंध ऐसे द्रह हैं ते कोटिक क्रमिनिका कुल करि व्याप्त होइ रहे हैं। **भावार्थ**। विक्रियादि करि विना निपजाया क्षेत्रस्वभावकरि तिन बिलनि विषैं महा दुःखकों कारण पर्वतादि पाईए हैं ॥ १८७ ॥

आगैं तैसी नदीकों पाइ कहा हो है सो कहैं हैं;—

अग्गिभया धावंता मण्णंता सीयलंति पाणीयं ।
ते वइदरणिं पविसिय खारोदयदड्ढसव्वंगा ॥ १८८ ॥

अग्निभयाद्धावंतः मन्यमानाः शीतलमिति पानीयं ।
ते वैतरणीं प्रविश्य क्षारोदकदग्धसर्वांगाः ॥ १८८ ॥

**अर्थ**—अग्निके भयतैं दोडता ऐसैं जु ते नवीन नारकी ते इहां शीतल पाणी है ऐसा मानता संता वैतरणी नामा नदी प्रति प्रवेश करि तहां खारा जल करि दग्ध भया है सर्व अंग जिनका ऐसे हो हैं ॥ १८८ ॥

बहुरि ऐसे होत संतैं ते नारकी कहा करैं हैं सो कहैं हैं:—

उट्ठिय वेगेण पुणो असिपत्तवणं पयांति छायेत्ति ।
कुंतासिसत्तिजट्ठिहिं छिज्जंते वादपडिदेहिं ॥ १८९ ॥

उत्थाय वेगेन पुनः असिपत्रवनं प्रयांति छायेति ।
कुंतासिशक्तियष्टिभिश्छिद्यंते वातपतितैः ॥ १८९ ॥

**अर्थ**—ते नवीन नारकी वेग करि शीघ्र ही तहांस्यों उठि करि इहां छाया है ऐसा मानते संते असिपत्र नामा वनकों प्राप्त हो हैं। तहां पवन करि पडे ऐसे सेल वा खड्ग वा शक्ती या यष्टि कहिए लाठी इत्यादि समान जे पत्रादिक तिनकरि शरीर भेदिए है॥ १८९॥

आगैं तिन नारकीनिके बाह्य दुखका साधनकों कहैं हैं;—

**लोहोदयभरिदाओ कुंभीओ तत्तबहुकडाहा य।**
**संतत्तलोहफासा भू सूईसद्दलाइण्णा॥ १९०॥**

लोहोदकभरिताः कुंभ्यः तप्तबहुकटाहाश्च।
संततलोहस्पर्शा भूः सूचीशाड्वलाकीर्णा॥ १९०॥

**अर्थ**—ताता लोह समान जल करि भरे ऐसे तहां कुंभी हैं जैसैं हांडी विषैं अन्न पचाईए तैसैं नारकीनिकों कुंभी विषैं पचावैं हैं बहुरि बहुत ताता कडाह हैं। जैसैं कडाह विषैं तप्त तैलादि करि अन्न आदि पचाईए तैसैं नारकीनिकों कडाह विषैं पचाईए हैं इत्यादि अनेक बाह्य दुःखकों कारण सामिग्री तहां पाईए है। बहुरि तहां भूमिका है सो तप्तायमान लोहके समान है स्पर्श जाका ऐसी है। बहुरि सूई सारिखी शाद्वल कहिए दोब तिनकरि आकीर्णा कहिए व्याप्त है॥ १९०॥

आगैं क्षेत्रका स्पर्श करि हो है जो दुख ताकों दृष्टान्त करि कहै हैं;—

**विच्छियसहस्सवेयणसमधियदुक्खं धरित्तिफासादो।**
**कुक्खक्खिसीसरोगगछुधातिसभयवेयणा तिव्वा॥ १९१॥**

वृश्चिकसहस्रवेदनासमधिकदुःखं धरित्रीस्पर्शात्।
कुक्ष्यक्षिशीर्षरोगगक्षुधातृषाभयवेदना तीव्राः॥ १९१॥

**अर्थ**—हजार वीछू काटैं जैसैं इहां वेदना होइ तीहस्यों भी बहुत अधिक वेदना तहां धरित्री जो भूमिका ताका स्पर्शतैं हो हैं। बहुरि तिन नारकीनिकै कुक्षि कहिए उदर अर अक्षि कहिए नेत्र अर शीर्ष कहिए मस्तक इत्यादि संबंधी अनेक रोग करि संयुक्त क्षुधा तृषा भयादिक तीव्र वेदना तहां पाईए हैं॥ १९१॥

आगैं ते नारकी क्षुधादि करि पीडित कहा भोजन करैं हैं सो कहैं हैं;—

**सादिकुहिदातिगंधं सणिमण्णं मट्टियं विभुंजंति।**
**धम्मभवा वंसादिसु असंखगुणिदासुहं तत्तो॥ १९२॥**

श्वादिकुथितातिगंधां अशनैरल्पां मृत्तिकां विभुंजंते।
धर्मभवा वंशादिषु असंख्यगुणिताशुभां ततः॥ १९२॥

**अर्थ**—श्वा जो कूकरा ताकों आदि देकर निकृष्ट जीवनिका जो कथित कहिए विष्टा तीहस्यों भी अति अधिक दुर्गंध भोजननि करि अल्पा कहिए भूंख बहुत अर मिलै थोडी तातैं भूंख अपेक्षा थोरी जो तिस क्षेत्र संबंधी मांटी ताकों धर्मा नरक विषैं उपजे नारकी भक्षण करैं हैं। बहुरि वंशादिकनि विषैं तिहस्यों असंख्यात गुणी अशुभ बुरी ऐसी जो मृत्तिका ताहि भक्षण करैं हैं॥१९२॥

आगैं तिन नारकीनिका आहारके दु:ख करनेका सामर्थ्यको कहैं है:;—

**पढमासणमिह खित्तं कोसद्धं गंधदो विमारेदि ।**
**कोसद्धद्धहियधराट्ठियजीवे पत्थरक्कमदो ॥ १९३ ॥**

प्रथमाशनमिह क्षिप्तं क्रोशार्धं गंधतो विमारयति ।
क्रोशार्धार्धाधिकधरास्थितजीवान् प्रस्तरक्रमतः ॥ १९३ ॥

**अर्थ**—प्रथम पृथ्वीका प्रथम पटल विषैं जिस मृत्तिकाकों भखैं हैं सो मृत्तिकारूप अशन इहां मनुष्य लोक विषैं जो क्षेपिए धरिए तौ वह मृत्तिका अपनी दुर्गंधतैं कोश आधा पर्यंत तिष्ठते जीवनिकों मारै है। बहुरि आगैं पटलका अनुक्रमतैं आध आध कोश अधिक पृथ्वी विषैं तिष्ठते जीवनिकों मारैं हैं। दूसरे पटलका एक कोश तीसरे पटलका ड्योढ कोश ऐसैं आध आध कोश बधती पृथ्वी पर्यंत जीवनिकों नारकीनका आहार अपनी दुर्गंधतैं मारै है। ऐसी तिस मृत्तिकारूप आहारमें दुख करनेकी समर्थता है॥ १९३ ॥

आगैं इन दु:खके साधननिकरि नारकी मरैं हैं कहा ऐसी आशंका होत संतें कहैं हैं;—

**ण मरंति ते अकाले सहस्सखुत्तोवि छिण्णसव्वंगा ।**
**गच्छंति तणुस्स लवा संघादं सूदगस्सेव ॥ १९४ ॥**

न म्रियंते ते अकाले सहस्रकृत्वोपि छिन्नसर्वांगाः ।
गच्छंति तनोः लवाः संघातं सूतकस्येव ॥ १९४ ॥

**अर्थ**—ते नारकी आयु पूर्ण होनेका काल यावत् न आवै तावत् हजारां वार छेदे हैं टूंक टूंक कीए हैं सर्व शरीरके अंग जिनके ऐसे होत संते भी न मरैं हैं। तिन नारकीनिके शरीरके जु लव कहिए अंग ते जुदे जुदे भए हुए फेरि संघात कहिए मिलन ताकों प्राप्त हो हैं। जैसैं सूतक जो पारा सो कण कण करि जुदा भया तुरत मिलै तैसैं तिनके शरीरके अंग जुदे भए भी तुरत मिलैं हैं॥ १९४ ॥

आगैं तिन दु:खके साधननि करि सर्वदा सर्व ही दु:खकों पावैं हैं कहा सो कहै हैं;—

**तित्थयरसंतकम्मुवसग्गं णिरए णिवारयंति सुरा ।**
**छम्मासाउगसेसे सग्गे अमलाणमालंको ॥ १९५ ॥**

तीर्थंकरसत्कर्मोपसर्गं निरये निवारयंति सुराः ।
षण्मासायुष्कशेषे स्वर्गे अम्लानमालांकः ॥ १९५ ॥

**अर्थ**—तीर्थंकर नामा नाम प्रकृतिका सत्त्व जाकैं पाईए जो जीव नरकस्यों निकासि तीर्थंकर होना होइ तिन जीवनिका नरक आयु विषैं छह महीना अवशेष रहैं देव हैं ते नरक विषैं ताका उपसर्गकों निवारण करैं हैं। बहुरि स्वर्ग विषैं अम्लान मालांक कहिए मलिन मालाका होना इत्यादि चिन्ह न हो है। जो जीव स्वर्गतैं तीर्थंकर होना होइ ताकैं और देवनिकीसी नांई छह महीना देवायुका अवशेष रहें भी फूल मालाका कुमलावनां इत्यादि चिन्ह न हो हैं॥ १९५ ॥

आगैं तिन नारकीनके शरीरका विलय होनेका विधान कहैं हैं;—

अणवट्टसगाउस्से पुण्णे वादाहदब्भपडलं वा ।
णेरइयाणं काया सव्वे सिग्घं विलीयंते ॥ १९६ ॥

अनपवर्त्यस्वकायुष्ये पूर्णे वाताहताभ्रपटलमिव ।
नैरयिकाणां कायाः सर्वे शीघ्रं विलीयंते ॥ १९६ ॥

**अर्थ**—भुज्यमान आयुका अपवर्तन जो घटना तींह करि जो कदली घात मरण होइ सो ·पवर्त्यायु कहिए। भुज्यमान आयुका अपवर्तन विना भएं जो च्युत मरण होइ सो अनपवर्त्यायु कहिए सो नारकीनके शरीर अनपवर्त्य जो अपना आयु ताकौं पूर्ण होत संतैं जैसैं पवन करि हने मेघपटल विलय जांय तैसैं सर्व ही शीघ्र विलय हो हैं। जैसैं इहां मनुक्ष (ष्य) निकं शरीर मरण भए पीछैं पड़े रहैं हैं तैसैं नारकीनके शरीर पड़े नाहीं रहै हैं ॥१९६ ॥

आगैं तिन नारकीन करि भोगवनेमें आवैं हैं जे दुःख तिनके भेद कहैं हैं;—

खेत्तजणिदं असादं सारीरं माणसं च असुरकयं ।
भुंजंति जहावसरं भवट्ठिदीचरिमसमयोत्ति ॥ १९७ ॥

क्षेत्रजनितं असातं शारीरं मानसं च असुरकृतम् ।
भुंजंते यथावसरं भवस्थितेश्चरमसमयांतम् ॥ १९७ ॥

**अर्थ**—क्षेत्र जनित १ शारीर १ मानस १ असुरकृत १ ए च्यारि प्रकार असाता यथा अवसर लिएं अपनी पर्यायका अंतसमय पर्यंत भोगवें हैं तहां नरक क्षेत्र करि उत्पन्न जो आतापादि दुःखं सो क्षेत्र जनित कहिये। नरक शरीर करि उत्पन्न जो रोगादिक दुःख सो शारीर कहिए। आकुल परिणामनि करि उत्पन्न जो आर्त ध्यानादि रूप दुःख सो मानस कहिए। तीसरी पृथ्वी पर्यंत संक्लेश परिणामनि करि संयुक्त जे असुरकुमार जातिके भवनवासी देव तिन करि कीया हूवा जो परस्पर लडावना घात करना इत्यादि दुःख सो असुरकृत कहिए। ऐसैं दुःखके च्यारिभेद जाननें ॥ १९७ ॥

आगैं पटल पटल प्रति तिन नारकीनका जघन्य उत्कृष्ट आयुकों तीन गाथानिकरि कहै हैं;—

पढमिंदे दसणउदीवाससहस्साउगं जहण्णिदरं ।
तो णउदिलक्ख जेट्ठं असंखपुव्वाण कोडी य ॥ १९८ ॥

प्रथमेंद्रके दशनवतिवर्षसहस्रायुष्कं जघन्येतरत् ।
ततः नवतिलक्षं ज्येष्ठं असंख्यपूर्वाणां कोट्यश्च ॥ १९८ ॥

**अर्थ**—प्रथम पृथ्वीका प्रथम पटल विषैं जघन्य आयु दश हजार वर्ष है। इतर कहिए उत्कृष्ट आयु सो निवै हजार वर्ष प्रमाण है। बहुरि इहां तैं परैं जो कहिए है आयु सो सर्व उत्कृष्ट आयु जाननां। तहां दूसरा पटल विषैं निवै लाख वर्ष आयु है। तीसरा पटल विषैं असंख्यात कोडि पूर्व वर्ष प्रमाण आयु है। सत्तरिलाख छप्पन कोडिकों पूर्व कहिए है ॥ १९८ ॥

सायरदसमं तुरिये सगसगचरमिंदयम्हि इगि तिण्णि ।
सत्त दसं सत्तरसं उवही वावीस तेत्तीसं ॥ १९९ ॥
सागरदशमं तुरीये स्वकस्वकचरमेंद्रके एकं त्रीणि ।
सप्त दश सप्तदश उदधयो द्वाविंशतिः त्रयस्त्रिंशत् ॥ १९९ ॥

अर्थ—चौथा पटल विषैं एक सागरका दशवां भाग प्रमाण आयु है । इहां तैं आगैं प्रथमादि सप्तमी पर्यंत पृथ्वीनिका अंतका पटल विषैं आयु कहिए है सो प्रथमादि पृथ्वीनि विषैं क्रमतैं एक तीन सात दश सतरह वावीस तेतीस सागर प्रमाण आयु जानना । १।३।७।१०।१७। २२।३३ ॥ १९९ ॥

आदी अंतविसेसे रूऊणद्धाहिदम्हि हाणिचयं ।
उवरिम जेट्ठं समयेणहियं हेट्ठिमजहण्णं तु ॥ २०० ॥
आदौ अंतविशेषे रूपोनाद्धाहिते हानिचयं ।
उपरिमं ज्येष्ठं समयेनाधिकं अधस्तनजघन्यं तु ॥ २०० ॥

अर्थ—आदि विषैं जो प्रमाण हो ताकों अंतके प्रमाणमें स्यों घटाएं जो प्रमाण होइ ताकों रूपोनाद्धा कहिए एक घाटि पटलका प्रमाणरूप गच्छका भाग दीएं हानिचयौ कहिए नीचले पटलतैं पटल पटल प्रति वधनेका प्रमाण हो है । सोई कहिए है—प्रथम पृथ्वी विषैं चौथा पटल विषैं आयु एक सागरका दशवां भाग सो तौ आदि कहिए, अंत पटल विषैं एक सागर सो अंत कहिए अंतमेंस्यौं आदि समछेद विधान करि घटाएं नव सागरका दशमां भाग रह्या तहां तीन पटलका तौ आयुका जुदा प्रमाण कह्या तातैं तिनकों छोडि अवशेष पटल रहे सो इहां गच्छ जाननां। यद्यपि चौथा पटलका भी आयु जुदा जुदा कह्या था तथापि इहां चौथा पटलका आयुकों आदि विषैं स्थाप्या तातैं भेलि लीया सो गच्छमें एक घाटि कीएं नव सो नव पटलनि विषैं नव सागरका दशवां भाग वधै तौ एक पटल विषैं कितना वधै ऐसैं त्रैराशिक कीएं नवका दशवां भागकों नवका भाग दीएं एक सागरका दशवां भाग प्रमाण चय आया सो इतना चय चौथा पटलका आयु विषैं मिलाएं पांचवां पटलका आयु दोय सागरका दशवां भाग हो है तामें चय मिलाएं छठा पटलका आयु तीन सागरका दशवां भाग हो है ऐसैं ही एक एक चय मिलाएं सप्तमादि पटलनिविर्षै—च्यारि पांच छह सात आठ नव दश सागरनिका दशवां भाग प्रमाण आयु हो है । वहुरि द्वितीयादि पृथ्वीनि विषैं जो उपरली पृथ्वीका अंत विषैं जो आयु कह्या सो तौ इहां आदि स्थापिए तातैं आदि तौ क्रमतैं एक तीन सात दश सत्रह वावीस सागर प्रमाण हैं । वहुरि जो विवक्षित पृथ्वीका अंत पटल विषैं आयु सो अंत स्थापिए तातैं क्रमतैं अंत तीन सात दश सत्रह वावीस तेतीस सागर प्रमाण है । तहां अंतमेंस्यौं आदि घटाएं दोय च्यारि तीन सात पांच ग्यारह सागर रहे । वहुरि इहां पटलनिका प्रमाण ग्यारह नव सात पांच तीन एक है । तिन विषैं इहां पूर्व पृथ्वीका अंत पटलका आयुकों आदि स्थापन कीया तातैं एक एक और मिलाएं वारह दश आठ छह च्यारि दोय प्रमाण गच्छ भया तामें एक घटाएं क्रमतैं ग्यारह नव सात पांच तीन एक रहे सो ग्यारह नव

सात पांच तीन एक पटलनि विषैं दोय च्यारि तीन सात पांच ग्यारह सागर प्रमाण आयु वधै तौ एक पटल विषैं कितना आयु वधै ऐसैं त्रैराशिक कीएं द्वितीयादि पृथ्वीनिविषैं क्रमतैं दोय सागरका ग्यारह्वां भाग अर च्यारि सागरका नवमां अर तीन सागरका सातवां भाग अर सात सागरका पांचवां भाग अर पांच सागरका तीसरा भाग अर ग्यारा सागर प्रमाण चय आया। सो एक चयकों पूर्व पूर्व स्थिति विषैं जोडें तिन तिन पटलनि विषैं उत्कृष्टायुका प्रमाण आवै है। तहां द्वितीय पृथ्वी विषैं दोय सागर पूर्वस्थिति विषैं दोय सागरका ग्यारव्हां भाग प्रमाण चय जोडें प्रथम पटल विषैं आयु होइ यामें तीह प्रमाण चय जोडें तृतीय पटल विषैं आयु होइ ऐसैं चय करि वधता वधता पटल पटल प्रति आयु जानना। याही प्रकार तृतीयादि पृथ्वीनि विषैं क्रमतैं तीन सात दश सत्रह वावीस सागरनि विषैं अपना अपना चय जोडें प्रथम पटल विषैं आयु होइ। बहुरि अपना अपना प्रथमादि पटलनिका आयु विषैं क्रमतैं अपना अपना चयकों वधाएं अपना अपना द्वितीयादि पटलनि विषैं आयु होइ। बहुरि उपरि उपरिका पटल विषैं जो उत्कृष्ट आयु कह्या सो एक समय अधिक होइ तौ नीचला नीचला पटल विषैं जघन्य आयु हो हैं। ऐसा तहां प्रथम पटल विषैं आयु उत्कृष्ट निवै हजार वर्ष तामें एक समय अधिक भएं द्वितीय पटल विषैं जघन्य आयु हो है। ऐसैं हीं गुणचासवां पटल पर्यंत जानना ॥ २०० ॥

आगैं तिन नारकीनिके पटल पटल प्रति शरीरकी उचाईका प्रमाण कहैं हैं;—

**पढमे सत्त ति छक्कं उदयं धणुरयणिअंगुलं सेसो।**
**दुगुणकमं पढमिंदे रयणितियं जाण हाणिचयं॥ २०१॥**

प्रथमे सप्त त्रि षट्कं उदयः धनूरत्न्यंगुलानि शेषे।
द्विगुणक्रमं प्रथमेंद्रके रत्नित्रयं जानीहि हानिचयम्॥ २०१॥

**अर्थ**—प्रथम पृथ्वीका अंत पटल विषैं शरीरका उत्सेध सात धनुष तीन हाथ छह अंगुल प्रमाण है। बहुरि द्वितीयादि पृथ्वीका अंत-अंतपटल विषैं शरीरका उत्सेध दूणा दूणा क्रमतैं पांचसै धनुष पर्यंत जातना। बहुरि प्रथम पृथ्वीका प्रथम इंद्रक विषैं रत्नीत्रयं कहिए तीन हाथ उत्सेध हैं। ऐसैं धरि करि हे सुज्ञ तू हानि चय जानि। हानि चयका साधन कैसैं सो कहिए है। प्रथम पृथ्वी विषैं प्रथम पटल विषैं तीन हाथ उत्सेध सो तो आदि जाननां। अर अंतपटल विषैं सात धनुष तीन हाथ छह अंगुल उत्सेध सो अंत जानना तहां अंतमैंस्यों आदि तीन हाथ घटाएं सात धनुष छह अंगुल रहे। बहुरि इहां पटल प्रमाण रूप गच्छ तेरह तामें एक घटाएं वारह ताका भाग दीजिए तहां सात धनुषका अठाईस हाथ हूवा ताकों वाराका भाग दीएं दोय पाया सो दोय तौ हाथ बहुरि अवशेष च्यारि हाथ रहे तिनके अंगुल कीएं छिनवै अंगुल भए अर छह अंगुल पूर्वैं थे मिलकर एक सो दोय अंगुल भए तिनकों वाराका भाग दीएं आठ अंगुल भए अर अवशेष छह अंगुलका वारव्हां भागकों छह करि अपवर्तन कीएं एक अंगुलका दूसरा भाग भया ऐसैं प्रथम पृथ्वी विषैं हानि चय दोय हाथ साढा आठ अंगुल प्रमाण आया सो उपरि पटलका उत्सेध विषैं अपनी अपनी दंडादिक जातिका क्रम करि मिलाएं वा हस्तादिक कीएं नीचले पटल

विषैं उत्सेध होइ तहां प्रथम पटलका उत्सेध होइ तहां प्रथम पटलका उत्सेध विषै चय मिलाएं च्यारि हाथका एक धनुष कीएं द्वितीय पटल विषैं एक धनुष एक हाथ साढा आठ अंगुल प्रमाण उत्सेध हो है। वहुरि यामें सोई चय मिलाएं तृतीय पटल विषैं एक धनुप तीन हाथ सत्रह अंगुल उत्सेध हो है। ऐसैंही सर्व पटलनि विषैं जानना। वहुरि द्वितीयादि पृथ्वीनि विषैं पूर्व पृथ्वीका अंत पटल विषैं जो उत्सेध सो तौ आदि अर विवक्षित पृथ्वीका अंत पटल विषैं उत्सेध सो अंत स्थापि अर आदिमेंस्यों अंत घटाईए। वहुरि इहां पूर्व पृथ्वीका अंतपटलकों आदि कह्या तातैं विवक्षित पृथ्वी विषैं जितना पटलका प्रमाण तातैं एक अधिक गच्छ करि तामें एक घटाएं विवक्षित पृथ्वी विषैं जितना पटलनिका प्रमाण ताका ताकौं भाग दीएं हानिचयका प्रमाण आवै तैसैं द्वितीयादि पृथ्वी विषैं आदि तौ सात धनुष तीन हाथ छह अंगुल अर अंत पंद्रह धनुप दोय हाथ बारह अंगुल तहां आदिमेंस्यों अंत घटाएं सात धनुप तीन हाथ छह अंगुल रहे तिनकों पटल प्रमाण ग्यारह ताका भाग दीएं धनुषादिकके हस्तादिक कीएं दोय हाथ वीस अंगुल अर दोय अंगुलका ग्यारव्हां भाग प्रमाण हानि चय आया। ऐसैं ही तृतीयादि पृथ्वीनिविषैं भी हानि चय साधनां। बहुरि उपरि पृथ्वीका अंतपटलका उत्सेध विषैं अपना अपना चय मिलाएं अपने अपने प्रथम पटल विषैं उत्सेध होइ। वहुरि अपना अपना प्रथमादि पटलनिविषैं क्रमतैं अपना अपना चय मिलाएं अपनां अपनां द्वितीयादि पटलनि विषैं उत्सेध होइ। जैसैं प्रथम पृथ्वीका अंतपटलका उत्सेध सात धनुष तीन हाथ छह अंगुल तामें दोय हाथ वीस अंगुल दोय अंगुलका ग्यारव्हां भाग मिलाएं द्वितीय पृथ्वीका प्रथम पटल विषैं आठ धनुष दोय हाथ दोय अंगुल अर दोय अंगुलका ग्यारव्हां भाग प्रमाण उत्सेध भया। यामेंस्यों चय मिलाएं द्वितीय पटल विषैं उत्सेध होइ ऐसैं अंतपटल पर्यन्त जाननां। बहुरि जैसैं द्वितीय पृथ्वी विषैं विधान कह्या तैसैं ही तृतीयादि पृथ्वीनिविषैं उत्सेध ल्यावनां ॥ २०१ ॥

आगैं नारकीनके अवधिज्ञानका विषयभूत क्षेत्रका प्रमाण कहैं हैं;—

**रयणप्पहपुढवीए चउरो कोसा य ओहिखेत्तं तु।**
**तेण परं पडिपुढवी कोसद्धविवज्जियं होदि ॥ २०२ ॥**

रत्नप्रभापृथिव्याश्चत्वारः क्रोशाश्चावधिक्षेत्रं तु।
ततः परं प्रतिपृथ्वि क्रोशार्धविवर्जितं भवति ॥ २०२ ॥

**अर्थ**—रत्नप्रभा पृथ्वीके जीवनिकैं च्यारि कोस अवधिका क्षेत्र है अवधिज्ञान करि च्यारि कोश पर्यंत जानैं। तीह परैं पृथ्वी पृथ्वी प्रति आध आध कोश घाटि है सो द्वितीयादि पृथ्वीके जीवनिकैं साढा तीन तीन अढाई दोय ड्योढ एक कोस अवधिक्षेत्र जाननां ॥ २०२ ॥

आगैं नरकतैं निकस्या जीव कहां उपजै है सो नियम कहैं हैं;—

**णिरयादो णिस्सरिदो णरतिरिए कम्मसण्णिपज्जत्ते।**
**गब्भभवे उप्पज्जादि सत्तमपुढवीदु तिरिए व ॥ २०३ ॥**

निरयान्निसृतः नरतिरश्चोः कर्मसंज्ञिपर्याप्ते ।

गर्भभवे उत्पद्यते सप्तमपृथिव्यास्तु तिरश्चि एव ॥ २०३ ॥

अर्थ—नरकतैं निकस्या हूवा जीव मनुष्य तिर्यंच गतिविषैं कर्मभूमि संज्ञी पर्याप्त गर्भज विषैं ही उपजै । भोगभूमि असंज्ञी लब्ध्यपर्याप्तक सन्मूर्छनविषैं न उपजै । बहुरि सप्तम पृथ्वीका निकस्या जीव तैसा कर्मभूमियां संज्ञी पर्याप्तक गर्भज तिर्यंच ही विषैं उपजै मनुष्य भी न होइ ॥२०३॥

आगैं मनुष्य तिर्यंच इत्यादि नियम उपजनेका कह्या तहां कहा सर्वत्र ही उपजै इसी आशंका होत संतै कहैं हैं;—

**णिरयचरो णत्थि हरी बलचक्की तुरियपहुदिणिस्सरिदो ।**

**तित्थचरमंगसंजद मिस्सतियं णत्थि णियमेण ॥ २०४ ॥**

निरयचरो नास्ति हरिः बलचक्रिणौ तुरीयप्रभृतिनिःसृतः ।

तीर्थचरमांगसंयताः मिश्रत्रयं नास्ति नियमेन ॥ २०४ ॥

अर्थ—निरयचरः कहिए नरकतैं निकस्या जीव सो नारायण बलभद्र चक्रवर्ति न होइ । बहुरि चौथी आदि पृथ्वीतैं निकस्या तीर्थंकर न होइ । पांचमी आदि पृथ्वीतैं निकस्या चरम शरीरी न होइ । छठी आदि पृथ्वीतैं निकस्या सकल संयमी न होइ सातवीं पृथ्वीतैं निकस्या मिश्रत्रय कहिए मिश्र वा असंयत वा देशसंयत न होइ नियम करि । इहां असंयतपणा निषेध्या तातैं सासादनका भी अभाव जानना ॥ २०४ ॥

आगैं नरककौं जाता जीवनिका पृथ्वी प्रति नियम कहैं हैं;—

**अमणसरिसपविहंगमफणिसिंहित्थीण मच्छमणुवाणं ।**

**पढमादिसु उप्पत्ती अडवारादो दु दोण्णिवारोत्ति ॥ २०५ ॥**

अमनस्कसरीसृपविहंगमफणिसिंहस्त्रीणां मत्स्यमनुष्याणाम् ।

प्रथमादिषु उत्पत्तिः अष्टवारतस्तु द्विवार इति ॥ २०५ ॥

अर्थ—अमनस्क कहिए असंज्ञी पंचेंद्री अर सरीसृप कहिए कृकलास गौंधेरे आदि जीव अर विहंगम कहिए भेरुंड आदि पंखी अर फणी कहिए सर्प अर सिंह कहिए नाहर अर स्त्री कहिए मनुष्यणी अर मत्स्य मनुष्य कहिए मांछला वा मनुष्य इनकैं प्रथमादि पृथ्वीनिविषैं अनुक्रमतैं निरंतर उत्पत्ति आठ वारतैं लगाय दोय वार पर्यंत जाननी । तहां अमनस्क प्रथम नरकि जाय तहांस्यों निकसि संज्ञी होइ मरिकरि बहुरि इहां हीं असंज्ञी होइ मरिकरि प्रथम नरक जाय तब एक वार होय । ऐसैं असंज्ञी उत्कृष्ट आठ वार प्रथम नरकि जाय । नरकका निकस्या असंज्ञी न होइ तातैं वीचि एक संज्ञी पर्यायका एक अंतर जानना । बहुरि सरीसृपादिकविषैं एक अंतर न ग्रहण करनां । सरीसृप दूसरे नरकि जाय तहांस्यों निकसि सरीसृप होइ फेरि दूसरे नरकि जाय ऐसैं निरंतर सातवार जाइ । ऐसैं ही निरंतर विहंगम तीसरे नरकि छह वार । फणी चौथे नरकि पांच वार । सिंह पांचवें नरकि च्यारि वार स्त्री छठे नरकि तीन वार निरंतर उपजै । बहुरि मत्स्य मनुष्य एक अंतर करि सातवें नरकि दोय वार उपजै तहां मत्स्य सातवें नरकि जाय तहांस्यौं निकसि

गर्भज तिर्यंच होइ मरि करि फेरि मत्स्य होइ सातवें नरकि जाय। इहां नरकका निकस्या सन्मूर्छन न होइ। मत्स्य सन्मूर्छन हैं तातैं एक अंतर कह्या। बहुरि ऐसैं ही मनुष्य विषैं एक अंतर जाननां। जातैं सातवां नरकका निकस्या मनुष्य न होइ तातैं बीचिमैं एक अंतर कह्या। ऐसैं दोय वार उपजना जानना। इहां जीवनिके उपजनेका भी नियम जानना। असंज्ञी प्रथम पृथ्वीविषैं ही उपजै द्वितीयादि पृथ्वीनि विषैं न उपजै। सरीसृप दूसरी पृथ्वी पर्यंत ही उपजै तृतीयादि पृथ्वी विषैं न उपजै ऐसैं ही विहंगादिकका नियम जाननां। बहुरि उत्कृष्ट जेतीवार उपजै सो नियम जाननां। असंज्ञी आठ वार ही निरंतर नरक जाय नवमी वार न जाय इत्यादि नियम जाननां॥ २०५॥

इहां असंज्ञी आदिककै एक वार अंतर होते भी निरंतर ही कहिए है;—

**चउवीसमुहुत्तं पुण सत्ताहं पक्खमेक्कमासं च।**
**दुगचदुछम्मासं च य जम्मणमरणंतरं णिरये॥ २०६॥**

चतुर्विंशतिर्मुहूर्ताः पुनः सप्ताहानि पक्षः एकमासश्च।
द्विकचतुःषण्मासाश्च च जननमरणांतरं निरये॥ २०६॥

**अर्थ**—प्रथमादि पृथ्वीनिविषैं क्रमतैं चौवीस मुहूर्त अर सात दिन अर एक पक्ष अर एक मास अर दोय मास अर च्यारि मास अर छह मास जन्म अर मरण विषैं अंतर जाननां। **भावार्थ**—प्रथम पृथ्वीविषैं कोई जीव न उपजै तौ उत्कृष्टपनैं चौईस मुहूर्त पर्यंत न उपजै न मरै चौईस मुहूर्त पीछैं कोई उपजै ही उपजै वा कोई मरै ही मरै ऐसैं ही द्वितीयादि पृथ्वीविषैं जाननां॥ २०६॥

आगैं तिन नारकीनिके दुःखका आधिक्य कहैं हैं;—

**अच्छिणिमीलणमेत्तं णत्थि सुहं दुक्खमेव अणुवद्धं।**
**णिरए णेरइयाणं अहोणिसं पच्चमाणाणं॥ २०७॥**

अक्षिनिमीलनमात्रं नास्ति सुखं दुःखमेव अनुबद्धम्।
निरये नैरयिकाणां अहर्निशं पच्यमानानाम्॥ २०७॥

**अर्थ**—नेत्रका टिमकारनां मात्र भी सुख नाहीं है दुःख ही निरंतर संबंधरूप पाईए हैं नरक विषैं नारकी जीवनिकैं। कैसे हैं नारकी। अहर्निशं काहिए निरंतर दुःखअग्निकरि पच्यमान हैं। **भावार्थ**—मिथ्यात्व हिंसादि रौद्रध्यान बहुत आरंभ परिग्रह इत्यादि पापनिकरि जीव नरकि जाय तहां ऐसे दुःख पावैं हैं। तातैं मिथ्यात्वादि पापनिका त्याग ही करनां योग्य है॥ २०७॥

॥ इति नरकके स्वरूपका वर्णन सम्पूर्ण भया॥

**इति श्रीनेमिचन्द्राचार्यविरचिते त्रिलोकसारे लोकसामान्याधिकारः॥ १॥**

# भवनाधिकार ॥ २ ॥



अथ लोकका सामान्य वर्णन करि 'भवणव्वेंतर' इत्यादि पूर्वोक्त गाथासूत्र करि पंच अधिकार सूचन कीए तिन विषैं तैसैं ही अनुक्रमकरि भवनाधिकारकों आरंभ करता, संता तिन भवननिका आधारभूत जो रत्नप्रभा पृथ्वी वहुरि तींह रत्नप्रभा पृथ्वीकी सहचारिणी जे शर्करा प्रभा आदि पृथ्वी वहुरि तिन पृथ्वीनिविषैं प्राप्त जे नरकनिके पटल वहुरि तिन पटलनि प्राप्त जे नारकी तिनका आयु आदिक इन सबनिकों प्रसंग पाइ व्याख्यान करि विवाक्षित प्रथम भवनाधिकार ताकों कहनेकी है इच्छा जाकैं ऐसा आचार्य सो तींह भवनाधिकारकी आदि विषैं भवनलोक संवधी जे चैत्यालय तिनकों वंदना करता संता ऐसा मंगल सूत्र कहै है;—

**भवणेसु सत्तकोडी वावत्तरिलक्ख होंति जिणगेहा।**
**भवणामरिंदमहिया भवणसमा ताणि वंदामि ॥ २०८ ॥**

भवनेषु सप्तकोट्यः द्वासप्ततिलक्षाणिं भवंति जिनगेहानि।
भवनामरेंद्रमहितानि भवनसमानि तानि वंदे ॥ २०८ ॥

**अर्थ**—भवननिविषैं सात कोडि वहत्तरि लाख जिन मंदिर हैं भवनवासी देव वा तिनके इंद्रनिकरि पूजनीक हैं। वहुरि भवनवासी देवनिके जे ते भवन हैं तिनहींके समान संख्याकों धरै हैं। जातैं एक एक भवनविषैं एक एक चैत्यालय है। तिन चैत्यालयनिकों मैं वंदौं हों ॥ २०८॥

आगैं भवनिवासी देवनिका कुलभेद आदि तीन गाथाकरि कहैं हैं;—

**असुरा णागसुवण्णा दीवोदहिविज्जुथणिददिसअग्गी।**
**वादकुमारा पढमे चमरो वइरोइणो इंदो ॥ २०९ ॥**

असुरो नागसुपर्णौ द्वीपोदधिविद्युत्स्तनितदिगग्नयः।
वातकुमारः प्रथमे चमरो वैरोचन इंद्रः ॥ २०९ ॥

**अर्थ**—असुरकुमार १ नागकुमार १ सुपर्णकुमार १ द्वीपकुमार १ उदधिकुमार १ विद्युत्कुमार १ स्तनितकुमार १ दिक्कुमार १ अग्निकुमार १ वातकुमार १ ऐसैं भवनवासी देवनिके दश कुल हैं। तिनि विषैं पहले असुरकुमार कुलविषैं चमर अर वैरोचन ए दोय इंद्र हैं ॥ २०९ ॥

**भूदाणंदो धरणाणंदो वेणू य वेणुधारी य।**
**पुण्णवसिट्ठ जलप्पह जलकंतो घोसमहघोसो ॥ २१० ॥**

भूतानंदो धरणानंदः वेणुश्च वेणुधारी च।
पूर्णवशिष्ठौ जलप्रभः जलकांतः घोषमहाघोषौ ॥ २१० ॥

अर्थ—नागकुमार कुलविषैं भूतानंद धरणानंद ए दोय इंद्र हैं। सुपर्णकुमार कुल विषैं वेणु अर वेणु अर वेणुधारी दोय इंद्र हैं। द्वीपकुमार कुल विषैं पूर्ण वशिष्ट ए दोय इंद्र हैं। उदधिकुमार कुल विषैं जलप्रभ जलकांत ए दोय इंद्र हैं। विद्युत्कुमार कुल विषैं घोप महाघोप ए दोय इंद्र हैं॥ २१०॥

हरिसेणो हरिकंतो अमिदगदी अमिदवाहणग्गिसिही।
अग्गीवाहणणामा वेलंवपभंजणा सेसे॥ २११॥ जुम्मं।

हरिषेणः हरिकांतः अमितगतिः अमितवाहनः अग्निशिखी।
अग्निवाहननामा वेलंवप्रभंजनौ शेषे॥ २११॥ युग्मं।

अर्थ—स्तनितकुमार कुल विषैं हरिषेण हरिकांत ए दोय इंद्र हैं। दिक्कुमार कुल विषैं अमितगति अमितवाहन ए दोय इंद्र हैं। अग्निकुमार कुल विषैं अग्निशिखी अग्निवाहन नाम ए दोय इंद्र हैं। वातकुमार कुलविषैं वेलंव प्रभंजन ए दोए इंद्र हैं। ऐसैं शेषनागादि कुल विषैं इंद्र जानने॥ २११॥

आगैं तिनकैं परस्पर ईर्षाका स्थान कहैं हैं;—

चमरो सोहम्मेण य भूदाणंदो य वेणुणा तेसिं।
विदिया विदियेहिं समं ईसंति सहावदो णियमा॥ २१२॥

चमरः सौधर्मेण च भूतानन्दश्च वेणुना तेषां।
द्वितीया द्वितीयैः समं ईर्ष्यंति स्वभावतो नियमात्॥ २१२॥

अर्थ—चमर इंद्र तौ सौधर्म इंद्र सहित अर भूतानंद इंद्र वेणु इंद्र सहित अर तिनके द्वितीया जे दूसरे वैरोचन और धरणानंद ते द्वितीयैः समं कहिए दूसरे ईशान इंद्र अर वेणुधारी इंद्र तिन सहित ईर्ष्यन्ति कहिए ईर्षा करैं हैं। स्वभाव ही तैं कारण विना ही नियम करि इनकें ऐसैं स्पर्द्धा हो है॥ २१२॥

आगैं तिन असुरादिकनिके चिन्ह कहैं हैं;—

चूडामणिफणिगरुडं गजमयरं वडमाणगं वज्जं।
हरिकलसस्सं चिहं मउले चेत्तमदुमाह धया॥ २१३॥

चूडामणिफणिगरुडं गजमकरं वर्धमानकं वज्रं।
हरिकलशाश्वं चिह्नं मुकुटे चैत्यद्रुमा अथ ध्वजाः॥ २१३॥

अर्थ—असुर कुमारादिकनिकैं अनुक्रमतैं चूडामणि रत्न अर सर्प अर गरुड अर हाथी अर मांछला अर सांथिया अर वज्र अर सिंह कलश अर घोडा मुकट विषैं चिन्ह जाननां। मुकट विषैं इनका आकार है सो तिनका चिन्ह हैं। अथवा जुदी जुदी जातिके चैत्यवृक्ष वहुरि ध्वजा तिन असुरादिकनिका चिन्ह हैं॥ २१३॥

आगैं तिनके चैत्यवृक्षनिके भेदनिकों कहैं हैं;—

अस्सत्थसत्तसामलिजंवूवेतसकदंवकापियंगू।
सिरिसं पलासरायद्दुमा य असुरादिचेत्ततरू ॥ २१४ ॥
अश्वत्थसप्तच्छदशाल्मलिजंवूवेतसकदंवकाप्रियंगवः।
शिरीषः पलाशराजद्रुमौ च असुरादिचैत्यतरवः ॥ २१४ ॥

अर्थ—अश्वत्थ वृक्ष अर सप्तपर्ण वृक्ष अर शाल्मली वृक्ष अर जंबू वृक्ष अर वेतस वृक्ष अर कदंव वृक्ष अर प्रयंगु वृक्ष अर सरिसौं वृक्ष अर पलाश वृक्ष अर राजद्रुम कहिए किरमाला वृक्ष अनुक्रमतैं असुरकुमारादिकानिके चैत्यवृक्ष हैं ॥ २१४ ॥

आगैं चैत्यवृक्षानिके सार्थिकपनांकों दृढ करैं हैं;—

चेत्ततरूणं मूले पत्तेयं पडिदिसम्हि पंचेव।
पलियंकठिया पडिमा सुराचिया ताणि वंदामि ॥ २१५ ॥
चैत्यतरूणां मूले प्रत्येकं प्रतिदिशं पंचैव।
पर्यंकस्थिताः प्रतिमाः सुरार्चिताः ताः वंदे ॥ २१५ ॥

अर्थ—चैत्यवृक्षानिके मूल विषैं प्रत्येक प्रतिदिशा विषैं पांच पांच प्रतिमा पर्यंक आसन करि स्थित देवनिकरि पूजित हैं। तिन प्रतिमानिकों वंदों हों। भावार्थ। एक एक चैत्यवृक्ष नीचैं एक एक दिशाविषैं पांच पांच जिनबिंब पंक्ति करि विराजमान हैं। तातैं वृक्षानिकों चैत्यवृक्ष कहिए हैं॥२१५॥

आगैं तिन प्रतिमानिके आगें तिष्ठते जु मानस्तंभ तिनका स्वरूप कहैं हैं;—

पडिदिसयं णियसीसे सगसगपडिमाजुदा विराजंति।
तुंगा माणत्थंभा रयणमया पडिदिसं पंच ॥ २१६ ॥
प्रतिदिशं निजशीर्षे सप्तसप्तप्रतिमायुता विराजंते।
तुंगा मानस्तंभा रत्नमया प्रतिदिशं पंच ॥ २१६ ॥

अर्थ—दिशा दिशा प्रति अपने उपरिम भागविषैं सात सात प्रतिमा संयुक्त उत्तुंग रत्नमई मानस्तंभ दिशादिशा प्रति पांच पांच विराजैं हैं ॥ भावार्थ। एक एक प्रतिमाके आगैं एक एक मानस्तंभ हैं मान दूरि करनेकों समर्थ ऊंचा थांभा है। सो चैत्यवृक्षकी एक एक दिशा प्रति पांच पांच मानस्तंभ भए। बहुरि तिन मानस्तंभनिके उपरि एक एक दिशा प्रति सात सात जिनबिंब विराजैं हैं ॥ २१६ ॥

आगैं भवनवासी इंद्रनिकें भवणनिकी संख्या जणावता सूत्र कहैं हैं;—

चोत्तीसं चउदालं अडतीसं छसुवि ताल पण्णासं।
चउचउविहीण ताणि य इंदाणं भवणलक्खाणि ॥ २१७ ॥
चतुस्त्रिंशच्चतुश्चत्वारिंशदष्टात्रिंशत् षट्सु अपि चत्वारिंशत् पंचाशत्।
चतुश्चतुर्विहीनानि तानि च इंद्राणां भवनलक्षाणि ॥ २१७ ॥

अर्थ—चौतीस अर चवालीस अर अठतीस अर छहनि विषैं चालीस अर पंचास अर उत्तर इंद्रनि प्रति च्यारि च्यारि घाटि ऐसैं इंद्रनिके भवननिके लक्ष जाननैं। भावार्थ। एक एक कुल

विषैं दोय दोय इंद्र कहे थे तहां दोऊनि विषैं पहलैं जाका नाम कह्या सो दक्षिणेंद्र है अर पीछैं जाका नाम कह्या सो उत्तरेंद्र है । दक्षिण दिशाके भवन विषैं जाका वास पाईए सो दक्षिणेंद्र जाननां । 'अर उत्तर दिशाके भवन विषैं जाका वास पाईए सो उत्तरेंद्र जाननां । तहां असुर कुमार कुल विषैं दक्षिणेंद्रकैं तौ चौतीस लाख भवन हैं । उत्तरेंद्रकें तीस लाख हैं मिलि करि चौंसठि लाख भए । बहुरि नागकुमार कुल विषैं दक्षिणेंद्रकैं तौ चवालीस लाख हैं उत्तरेंद्रके चालीस लाख हैं मिलकर चौरासी लाख भवन भए । बहुरि सुपर्णकुमार कुल विषैं दक्षिणेंद्रकें अठतीस लाख हैं अर उत्तरेंद्रकें चौंतीस लाख हैं मिलिकरि बहत्तरि लाख भवन भए । द्वीप कुमारादि छह कुलनि विषैं एक एक कुल विषैं दक्षिणेंद्रके चालीस लाख हैं उत्तरेंद्रकें छत्तीस लाख हैं मिलिकरि छिहत्तरि लाख भवन भए । बहुरि वातकुमार कुल विषैं दक्षिणेंद्रकें पंचास लाख हैं उत्तरेंद्रकें छियालीस लाख हैं मिलिकरि छिनवै लाख भवन भए ऐसैं दशौं कुलके सर्व भवन सात कोडि बहत्तरि लाख जाननें ॥ २१७ ॥

आगैं तिन भवननिका विशेष स्वरूप कहैं हैं;—

**ससुगंधपुप्फसोहियरयणधरा रयणभित्ति णिच्चपहा ।**
**सव्विदियसुहदाइहिं सिरिखंडादिहिं चिंदा भवणा ॥ २१८ ॥**

ससुगंधपुष्पशोभितरत्नधरा रत्नभित्तयः नित्यप्रभाः ।
सर्वेंद्रियसुखदायिभिः श्रीखंडादिभिश्चिता भवनाः ॥ २१८ ॥

**अर्थ**—सुगंध फूलनिकरि संयुक्त सोभायमान रत्नमयी जिनकी भूमि हैं । बहुरि रत्नमई ही जिनकी भींति हैं नित्य प्रकाश संयुक्त हैं सब इंद्रियनिकों सुखदायक जे चंदनादि वस्तु तिनकरि सिंचित हैं ऐसे भवनवासी देवनिके भवन हैं ॥ २१८ ॥

आगैं तिन भवननिविषैं जे देव हैं तिनका ऐश्वर्य कहैं हैं;—

**अट्ठगुणिड्ढिविसिट्ठा णाणामणिभूसणेही दित्तंगा ।**
**भुंजंति भोगमिट्ठं सग्गपुव्वतवेण तत्थ सुरा ॥ २१९ ॥**

अष्टगुणर्धिविशिष्टाः नानामणिभूषणैः दीप्तांगाः ।
· भुंजंति भोगमिष्टं स्वकपूर्वतपसा तत्र सुराः ॥ २१९ ॥

**अर्थ**—तहां जे देव हैं ते अणिमा महिमा आदि आठ गुण ऋद्धि करि विशिष्ट हैं बहुरि नाना प्रकार मणिका आभूषणनि करि प्रकासमान है अंग जिनका ऐसै हैं । ते अपनां पूर्व कीया तपका फल करि इष्टभोगकों भोगवैं हैं ॥ २१९ ॥

आगैं ते भवन भूमिगृहकी उपमा धरैं हैं जैसैं इहां पृथ्वीविषैं मंदिर बनाईए ताका नाम प्रवृत्ति विषैं तहखाना कहिए है । तैसैं खरभाग पंकभागरूप रत्नप्रभा पृथ्वीविषैं भवन जानने । इहां प्रश्न । जो नरक बिल भी ऐसैं ही पृथ्वी विषैं कहे थे तहां बिल संज्ञा भई इहां भवन संज्ञा भई सो कारन कहा । ताका समाधान । जैसै इहां पृथ्वी विषैं तिर्यंचादिक पापी जीवनिके स्थान तिनकों बिल कहिए हैं । अर पुन्यवान मनुक्षनिके रहनेके स्थान तिनकों भूमिगृह कहिए हैं । तैसैं नारकी

पापी जीवनिकैं रहनेके स्थाननिकों बिल कहे अर पुन्यवान देवनिके रहनेके स्थानकनिकों भवन कहे। बहुरि प्रश्न। जो नरक बिलनिका वर्णन विषैं पूर्वैं भूमिगृहका दृष्टांत काहेकों दीया बिलनिहीका दृष्टांत देनां था। ताका समाधान। जो भूमिगृहका दृष्टांत करि पटलनिका वा इंद्रकादि बिलनिका स्वरूप नीकैं पहांचानिए है तातैं भूमिगृहका दृष्टांत दिया था।

ऐसैं भूमिगृहकी उपमा धरैं जु भवन तिनका व्यासादिक कहैं हैं;—

जोयणसंखासंखाकोडी तव्वित्थडं तु चउरस्सा।
तिसयं वहलं मज्झं पाडि सयतुंगेक्ककूडं च॥ २२०॥

योजनसंख्यासंख्यकोट्यः तद्विस्तारस्तु चतुरस्राः।
त्रिशतं वाहल्यं मध्यं प्रति शततुंगैककूटश्च॥ २२०॥

**अर्थ**—जघन्य तौ संख्यात कोडि योजन अर उत्कृष्ट असंख्यात कोडि योजन प्रमाण तिन भवननिका विस्तार है। चौडाई वा लंबाईका इतना प्रमाण हैं। बहुरि ते भवन चौकोर हैं। बहुरि तिनका तीनसै योजन बाहुल्य है। भूमितैं छाति पर्यंत इतने ऊंचे हैं। बहुरि एक्त एक भवन प्रति मध्यविषैं सौ योजन ऊंचा एक पर्वत है। ताके उपरि चैत्यालय हैं॥ २२०॥

आगैं तिन भवननिका स्थानकनिकों दोय गाथानि करि कहैं हैं;—

वेंतर अप्पमहड्ढियमज्झिमभवणामराण भवणाणि।
भूमीदोधो इगिदुगबादालसहस्सइगिलक्खे॥ २२१॥

व्यंतराणां अल्पमहर्धिकमध्यमभवनामराणां भवनानि।
भूमितोधः एकद्विकद्वाचत्वारिंशत्सहस्रएकलक्षाणि॥ २२१॥

**अर्थ**—चित्रा भूमितैं लगाय नीचैं नीचैं एक हजार योजन जाइ करि तौ व्यंतरानिके आवास हैं। बहुरि दोय हजार योजन जाय अल्प ऋद्धिके धारक भवनवासीनिके भवन हैं। बहुरि बियालीस हजार योजन जाइ महाऋद्धिके धारक भवनवासीनिके भवन हैं। बहुरि एक लक्ष योजन जाइ मध्यम ऋद्धिके धारक भवनवासीनिके भवन हैं॥ २२१॥

रयणप्पहपंकड्ढे भागे असुराण होंति आवासा।
भौम्मेसु रक्खसाणं अवसेसाणं खरे भागे॥ २२२॥

रत्नप्रभापंकाढ्ये भागे असुराणां भवंति आवासाः।
भौमेषु राक्षसानां अवशेषाणां खरे भागे॥ २२२॥

**अर्थ**—रत्नप्रभाका पंकभाग विषैं असुरकुमारानिके भवन हैं। बहुरि व्यंतरनि विषैं राक्षसनिके तहां हीं आवास है। बहुरि अवशेष नागकुमारादि भवनवासीनिके भवन वा राक्षस विना सात जातिके व्यंतरनिके आवास खरभागविषैं पाईए हैं॥ २२२॥

आगैं देवनिके इंद्रादिक भेद कहैं हैं;—

इंदपडिंददिगिंदा तेत्तीससुरा समाणतणुरक्खा।
परिसत्तयआणीया पइण्णगभियोगकिब्भिसिया॥ २२३॥

इंद्रप्रतींद्रदिगींद्राः त्रयस्त्रिंशत्सुराः सामानिकतनुरक्षकौ ।
परिषत्त्रयानीकौ प्रकीर्णकाभियोग्यकिल्विषिकाः ॥ २२३ ॥

**अर्थ**—इंद्र १ प्रतींद्र १ दिगींद्र कहिए लोकपाल १ त्रायस्त्रिंशद्देव १ सामानिक १ तनुरक्षक १ तीन प्रकार पारिषत् १ अनीक १ प्रकीर्णक १ आभियोग्य १ किल्विषिक १ ऐसें भेद जाननें ॥ २२३ ॥

आगें इन इंद्रादि पदवीनिका दृष्टांत कहैं हैं;—

**रायजुवतंतराए पुत्तकलत्तंगरक्खवरमज्झे ।**
**अवरे तंडे सेणापुरपरिजणगायणेहिं समा ॥ २२४ ॥**

राजयुवतंत्रराजैः पुत्रकलत्रांगरक्षवरमध्येन ।
अवरेण तंडेण सेनापुरपरिजनगायकैः समाः ॥ २२४ ॥

**अर्थ**—जैसें इहां राजा तैसें इंद्र हैं। वहुरि जैसें युवराजा तैसें प्रतींद्र हैं । वहुरि जैसें तंत्रादि राजा कहिए सेनापति तैसें लोकपाल हैं। वहुरि जैसें राजाका पुत्र तैसें तेतीस देव हो हैं ते त्रायस्त्रिंशत्क हैं । वहुरि जैसें राजाकें कलत्र तैसें इंद्रकीसी समानताकों धरैं सामानिक हैं। वहुरि जैसें राजाके अंगरक्षक तैसें तनुरक्षक हैं। वहुरि जैसें राजाके सभाविषैं तिष्ठने योग्य होहिं तैसें पारिषत् हैं। ते तीन प्रकार—तहां जैसें उत्कृष्ट मांहिली सभा विषैं तिष्ठने योग्य तैसें अंतः पारिषद जानने। वहुरि जैसें मध्य वीचिकी सभा विषैं तिष्ठने योग्य तैसें मध्य पारिषद जाननें वहुरि जैसें जघन्य वाह्य सभाविषैं तिष्ठने योग्य तैसें वाह्य पारिषद जाननें । ऐसें तंडसेन कहिए तीन प्रकार सभा करि समान जाननें। वहुरि जैसें राजाकें हस्ती आदि सेना ऐसें अनीक हैं अनीक जातिके देव ही हस्ती आदि आकाररूप अपने नियोगतें हो हैं। वहुरि जैसें पुरजन व्यापारी तैसें प्रकीर्णक हैं। वहुरि जैसें परिजन दास आदि तैसें आभियोग्य हैं। वहुरि जैसें गायक गावनें आदि क्रियातें आजीविकाके करन हारे तैसें किल्विषक हैं। ऐसें देवनिके भेद जाननें ॥ २२४ ॥

आगें च्यारि प्रकार देवनि विषैं इंद्रादिक भेदानिके संभवनेका विधान कहैं हैं;—

**वेंतरजोयिसियाणं तेत्तीससुरा ण लोयपाला य ।**
**भवणे कप्पे सव्वे हवंति अहमिंदया तत्तो ॥ २२५ ॥**

व्यंतरज्योतिष्काणां त्रयस्त्रिंशत्सुरा न लोकपालाः च ।
भवने कल्पे सर्वे भवंति अहमिंद्रकाः ततः ॥ २२५ ॥

**अर्थ**—व्यंतर अर ज्योतिषी इनकैं तौ त्रायस्त्रिंशत् देव वहुरि लोकपाल ए दोय भेद नाहीं हैं। वहुरि भवनवासी अर स्वर्गवासीनि विषैं सर्व पूर्वोक्त भेद हैं। वहुरि तातैं परैं स्वर्गनिके उपरि अहमिंद्र हैं ते सर्व ही समान हैं। हीनाधिकपना तहां नांहीं हैं ॥ २२५ ॥

आगैं भवनवासीनिविषैं इंद्रादिक पारिषत् तीनप्रकार पर्यन्त देवनिकी संख्या तीन गाथानिकरि कहैं हैं;—

इंदसमा हु पडिंदा सोमो यम वरुण तह कुवेरा य।
पुव्वादिलोयवाला तेत्तीससुरा हु तेत्तीसा ॥ २२६ ॥
इंद्रसमाः खलु प्रतींद्राः सोमो यमो वरुणस्तथा कुवेरश्च।
पूर्वादिलोकपालाः त्रयस्त्रिंशत्सुराः हि त्रायस्त्रिंशत् ॥ २२६ ॥

**अर्थ**—इंद्रके समान प्रतींद्र हैं। एक इंद्र एक प्रतींद्र जाननां। बहुरि पूर्वादि दिशानिके च्यारि लोकपाल हैं। सोम १ यम १ वरुण १ कुवेर १ तिनके नाम हैं। बहुरि त्रायस्त्रिंशत् देव तेतीस हैं ॥ २२६ ॥

चमरतिये सामाणियतणुरक्खाणं पमाणमणुकमसो।
अडसोलकदिसहस्सा चउसोलसहस्सहीणकमा ॥ २२७ ॥
चमरत्रिके सामानिकतनुरक्षाणां प्रमाणमनुक्रमशः।
अष्टषोडशकृतिसहस्राणि चतुःषोडशसहस्रहीनक्रमाणि ॥ २२७ ॥

**अर्थ**—चमर आदि तीन इंद्रनिविषैं सामानिक अर तनुरक्षक अनुक्रमतैं आठ अर सोल्हका वर्ग प्रमाण हजार बहुरि च्यारि हजार अर सोल्ह हजार घटता क्रमतैं जाननें। **भावार्थ**-चमरेंद्रके सामानिक देव तौ चौसठि हजार हैं। अर तनुरक्षक दोय लाख छप्पन हजार हैं। बहुरि वैरोचन इंद्रकें सामानिक साठि हजार हैं। अर तनुरक्षक दोय लाख चालीस हजार हैं। बहुरि भूतानंद इंद्रकें सामानिक छप्पन हजार हैं। तनुरक्षक दोय लाख चौईस हजार हैं ॥ २२७ ॥

पण्णसहस्स विलक्खा सेसे तट्ठाण परिसमादिह्मि।
अडछव्वीसं छच्चउसहस्स दुसहस्सवड्ढिकमा ॥ २२८ ॥
पंचाशत्सहस्राणि द्विलक्षे शेषे तत्स्थाने परिषदादिमा।
अष्टषड्विंश षट्चतुःसहस्राणि द्विसहस्रवृद्धिक्रमाः ॥ २२८ ॥

**अर्थ**—शेष जे अवशेष नागकुमारादिकके सत्रह इंद्र तिनविषैं सामानिक पंचास हजार हैं। तनुरक्षक दोय लाख हैं। बहुरि तिनहीं स्थानकनिविषैं परिषत् कहिए है। आदिकी अंतःपरिषत् चमरेंद्रकें अठाईस हजार, वैरोचनकें छव्वीस हजार, भूतानंदके छह हजार, अवशेष इंद्रनिकें च्यारि हजार हैं। बहुरि अंतः परिषत्का प्रमाणतैं मध्य परिषत् दोय दोय हजार बधते जाननें। बहुरि मध्य परिषत्तैं बाह्य परिषत् दोय दोय हजार बधते जाननें ॥ २२८ ॥

आगैं तीनौं परिषत्का विशेष नाम कहैं हैं;—

पढमा परिसा समिदा विदिया चंदोत्ति णामदो होदि।
तदिया जदुअहिधाणा एवं सव्वेसु देवेसु ॥ २२९ ॥
प्रथमा परिषत् समित् द्वितीया चंद्रा इति नामतो भवति।
तृतीया जत्वभिधाना एवं सर्वेषु देवेषु ॥ २२९ ॥

**अर्थ**—प्रथम परिषत् समित् ऐसे नाम धरै है। दूसरी चंद्रा ऐसे नामतैं युक्त है। तीसरी जतु ऐसे नाम युक्त है। ऐसैं ही सर्व देवनिविषैं सभानिके नाम जाननें ॥ २२९ ॥

अब आनीकके भेद अर तिनकी संख्या कहैं हैं;—

**सत्तेव य आणीया पत्तयं सत्तसत्तकक्खजुदा।**
**पढमं ससमाणसमं तद्दुगुणं चरिमकक्खोत्ति ॥ २३० ॥**

सप्तैव च आनीकाः प्रत्येकं सप्तसप्तकक्षयुताः।
प्रथमं स्वसामानिकसमं तद्द्विगुणं चरमकक्षं इति ॥ २३० ॥

**अर्थ**—सात ही आनीकके भेद हैं तहां एक एक भेद विषैं सात सात कक्ष कहिए फौज हैं। तहां प्रथम आनीकका कक्षविषैं प्रमाण अपनैं अपनैं सामानिक देवानिके समान हैं। तातैं दूणां दूणां प्रमाण अंतका कक्षविषैं पर्यंत जाननां। तहां चमरेंद्रकैं भैंसानिकी प्रथम फौजविषैं चौसठी हजार भैंसे हैं। तातैं दूणें दूसरी फौजविषैं भेसे हैं। ऐसैं सातई फौज पर्यंत दूणें दूणें जाननें। बहुरि ऐसैं ही इतनें इतनें ही घोटकादिक जाननें। याही प्रकार औरनिकौं यथा संभव प्रमाण जांनि लेना ॥ २३० ॥

आगैं गुणकाररूप उत्तरका अनुक्रम करि भया जो सातौं आनीकका प्रमाण ताके ल्याव-नेंकों जहां स्थान स्थान प्रति गुणकार होइ ताके जोड देनेंका कारणसूत्र कहैं हैं;—

**पदमेत्ते गुणयारे अण्णोण्णं गुणिय रूवपरिहीणे।**
**रूऊणगुणेण हिए मुहेण गुणियम्मि गुणगणियं ॥ २३१ ॥**

पदमात्रान् गुणकारान् अन्योन्यं गुणयित्वा रूपपरीहिणे।
रूपोनगुणेन हृते मुखेन गुणिते गुणगणितम् ॥ २३१ ॥

**अर्थ**—स्थानकनिका प्रमाणरूप जो गच्छ सो पद कहिए अर स्थान स्थान प्रति जितनेका गुणकार सो गुणकार कहिए सो पदका प्रमाणके समान गुणकार मांडि तिनकों परस्पर गुणिए बहुरि जो प्रमाण होइ तामें एक घटाईए बहुरि ताकों एक घाटि गुणकारका भाग दीजिए। बहुरि लब्ध प्रमाणकों मुख जो आदि विषैं प्रमाण तीहिं करि गुणिए। ऐसैं करतैं गुण संकलन हो है। सो इहां सात कक्ष हैं तातैं पदका प्रमाण सात है। अर इहां दूणां दूणां क्रम कह्या तातैं गुणकार दोय है। सो सात जायगां दूवा मांडि ।२।२।२।२।२।२।२। परस्पर गुणें एकसौ अठाईस होइ यामें एक घटाएं एकसो सताईस होइ। बहुरि एक घाटि गुणकार एक ताका भाग दीएं एकसो सत्ताईस इनकों प्रथम कक्षाका प्रमाण रूप मुख चौंसठि हजार करि गुणें इक्यासी लाख अठाईस हजार एक जातिकी सेना भई याकों सात करि गुणें सातों जातिके समस्त आनीक देवनिका प्रमाण पांच कोडि अडसठि लाख छिनवै हजार चमरेंद्रकैं जाननां। ऐसैं ही वैरोचन आदिकैं भी यथासंभव प्रमाण जांनि लैनां। बहुरि इहां पदमेत्ते गुणयारे इत्यादि करण सूत्र कैसैं कह्या ताका विधानरूप वासनाका वर्णन संस्कृत टीकातैं जाननां ॥ २३१ ॥

अब आनीकके भेदका स्वरूप दोय गाथानिकरि कहैं हैं;—

**असुरस्स महिसतुरगरथेभपदाती कमेण गंधव्वा।**
**णिच्चाणीय महत्तर महत्तरी छक एक्को य ॥ २३२ ॥**

असुरस्य महिषतुरगरथेभपदातयः क्रमेण गंधर्वः।
नृत्यानीकं महत्तरा महत्तरी षट् एका च ॥ २३२ ॥

**अर्थ**—असुरकुमारकैं भैंसा १ घोडा १ रथ १ हाथी १ पयादा १ गंधर्व १ नृत्यकी १ ए सात प्रकार सेना हैं। तहां पहली छह सेना विषैं महत्तर हैं एक नृत्यकी सेना विषैं महत्तरी है ॥ **भावार्थ** ॥ भैंसा आदिक छह जातिकी सेना विषैं तौ प्रधान देव हैं। अर नृत्यकी सेना विषैं प्रधान देवांगना हैं॥ २३२ ॥

**णावा गरुडिभमयरं करभं खग्गी मिगारिसिविगस्सं।**
**पढमाणीयं सेसे सेसाणीया हु पुव्वं व ॥ २३३ ॥**

नौर्गरुडेभमकरं करभः खड्गी मृगारिशिविकाश्वम्।
प्रथमानीकं शेषे शेषानीकास्तु पूर्वं इव ॥ २३३ ॥

**अर्थ**—असुरनिकैं प्रथम आनीक भैंसा कह्या था अवशेष नागकुमारादिककैं क्रमतैं नाव १ वा सर्प १ गरुड १ हाथी १ मांछला १ ऊंट १ सूर १ सिंह १ पालिकी १ घोडा १ प्रथम आनीक हैं। ऐसैं प्रथम आनीकविषैं तौ भेद हैं अन्य अवशेष आनीक पूर्वोक्त असुरनिकैं समान हैं ॥ २३३ ॥

आगैं भवनवासी देव असंख्याते हैं तातैं प्रकीर्णादिक देव गाथानि विषैं विना कहैं भी असंख्यात जानिए यातैं तिनका प्रमाणकौं न कहि करि अब असुरकुमारादिनकिकैं देवांगनानिकी संख्या दोय गाथानिकरि कहैं हैं;—

**असुरतिए देवीओ छप्पण्णसहस्स तत्थ वल्लभिया।**
**सोलसहस्सं छक्कसहस्सेणूणक्कमो होई ॥ २३४ ॥**

असुरत्रिके देव्यः षट्पंचाशत्सहस्राणि तत्र वल्लभिकाः।
षोडशसहस्राणि षट्सहस्रेणोनक्रमो भवति ॥ २३४ ॥

**अर्थ**—असुरादिक तीन विषैं असुरकुमारका इंद्रकैं देवांगना छप्पन हजार हैं तिनविषैं सोलह हजार वल्लभिका प्यारी देवांगना हैं पांच महादेवी हैं सो आगैं कहैंगे। अर पांच घाटि चालीस हजार परिवार देवी हैं। वहुरि औरनि विषैं छह छह हजार घाटि हैं सो नाग कुमारका इंद्रकैं पंचास हजार देवी हैं। सुपर्णकुमारका इंद्रकैं चवालीस हजार हैं ॥ २३४ ॥

**वत्तीस वे सहस्सा सेसे पण पण सजेट्ठदेवीओ।**
**तिसु अट्ठ छस्सहस्सं विगुव्वणामूलतणुसहियं ॥ २३५ ॥**

द्वात्रिंशत् द्वे सहस्राणि शेषे पंच पंच स्वज्येष्ठदेव्यः।
त्रिषु अष्ट षट्सहस्रं विकुर्वणामूलतनुसहिताः ॥ २३५ ॥

**अर्थ**—शेष द्वीप कुमारादिकविषैं इंद्रकैं वत्तीस हजार देवांगना हैं तिनविषैं दोय हजार वल्लभिका हैं। वहुरि कही जु ए देवांगना तिनविषैं पांच पांच ज्येष्ठ देवी कहिए पटराणीवत् महादेवी हैं। वहुरि तिन असुरादि तीनविषैं अर अवशेष द्वीपादि विषैं ज्येष्ठ देवीके आठ हजार छह

हजार मूल शरीर सहित विक्रिया है। असुरादि तीन विषैं एक एक जेष्ठदेवी विक्रिया करै तौ आठ हजार देवांगना रूप होइ तामें एक आप मूल अर अन्य विक्रियारूप देवी होइ ऐसें ही अवशेषनिविषैं एक एक ज्येष्ठदेवी विक्रिया करै तौ मूल शरीर सहित छह हजार देवांगनारूप होइ ॥२३५॥

आगैं चमर और वैरोचन इंद्रकैं पट्टदेवीनिके नाम कहैं हैं;—

किण्ह सुमेघ सुकड्ढा रयणि य जेट्ठित्थि पउम महपउमा।
पउमसिरी कणयसिरी कणयादिममाल चमरदुगे ॥ २३६ ॥

कृष्णा सुमेघा सुकाढ्या रत्नी च ज्येष्ठास्त्रियः पद्मा पहापद्मा।
पद्मश्रीः कनकश्रीः कनकादिमाला चमरद्विके ॥ २३६ ॥

अर्थ—कृष्णा १ सुमेघा १ सुका १ सुकाढ्या १ रत्नी ए पंच चमरेद्रकें ज्येष्ठ स्त्री हैं। पद्मा १ महापद्मा १ पद्मश्री १ कनकश्री १ कनकमाला १ ए पंच वैरोचन इंद्रकें ज्येष्ठ स्त्री हैं। ऐसें ए चमर द्विकविषैं ज्येष्ट स्त्री हैं ॥ २३६ ॥

आगैं इंद्र प्रतींद्र लोकपाल त्रायस्त्रिंशत्सामान्यक इनकें इंद्रके समान ही देवांगना पाईए हैं तातैं इनकें जुदा प्रमाण न कहि औरनिकें देवांगनाका प्रमाण तीन गाथानि करि कहैं हैं;—

अड्ढाइज्जं तिसयं पण्णासूणं कमं तु चमरदुगे।
पारिसदेवी णागे विसयं तु ससट्ठिताल सयं ॥ २३७ ॥

अर्धतृतीयं त्रिशतं पंचाशदूनः क्रमस्तु चमरद्विके।
पारिषदेव्यः नागे द्विशतं तु सषष्टिचत्वारिंशच्छतं ॥ २३७ ॥

अर्थ—अढाईसैं तीनसै पचास घाटि क्रमतैं चमरद्विकविषैं पारिषदानिकें देवी जाननी ॥ **भावार्थ** ॥ चमर इंद्रके अंतः पारिषदनिकें अढाईसै मध्य पारिषदनिकैं दोयसै बाह्यपारिषदनिकैं ड्योढ़सै देवांगना हैं। बहुरि वैरोचनइंद्रके अंतः पारिषदनिकैं तीनसैं मध्य पारिषदानिके अढाईसै बाह्य पारिषदनिकें दोयसै देवांगना हैं बहुरि नागकुमारविषैं अंतः पारिषदानिकें दोयसै मध्य पारिषदनिकैं एकसौ साठि बाह्य पारिषदनिकें एकसो चालीस देवांगना हैं ॥ २३७ ॥

गरुडे सेसे सोलस चउदस दससंगुणं तु वीसूणा।
सयसयदेवी पेधामहत्तराणंगरक्खाणं ॥ २३८ ॥

गरुडे शेषे षोडश चतुर्दश दशसंगुणाः तु विंशोनाः।
शतशतदेव्यः पृतनामहत्तराणां अंगरक्षाणाम् ॥ २३८ ॥

अर्थ—गरुड़ अर शेष विषैं दश गुणां सोलह अर चौदह बहुरि वीस वीस घाटि देवी हैं। **भावार्थः**—गरुड़ कुमार विषैं अंतः पारिषदनिकै एक सौ साठि मध्य पारिषदनिकै एक सौ चालीस बाह्य परिषदनिकै एक सौ देवांगना हैं। बहुरि अवशेष जातिविषैं अंतः पारिषदनिकैं एकसो चालीस मध्य पारिषदनिकै एक सौ वीस जघन्य पारिषदनिकै एक सौ देवांगना हैं। बहुरि पृतना जो सेना ताके महत्तर प्रधान तिनकै अर अंगरक्षकनिकैं सौ सौ देवांगनां हैं ॥ २३८ ॥

सेणादेवाणं पुण देवीयो तस्स अद्धपरिमाणं।
सव्वणिगिट्ठसुराणं वत्तीसा होंति देवीओ ॥ २३९ ॥
सेनादेवानां पुनः देव्यः तस्य अर्धपरिमाणं।
सर्वनिकृष्टसुराणां द्वात्रिंशद्भवंति देव्यः ॥ २३९ ॥

अर्थ—सेना देवनिकैं देवी तिन सेना महत्तरकेतैं अर्द्ध प्रमाण है। भावार्थ-आनीक देवनिकै पचास देवांगना हैं, बहुरि सर्व निकृष्ट देवनिकै वत्तीस देवांगनां हैं कोई ही देवकैं वत्तीससों घाटि देवांगनां न होय ॥ २३९ ॥

आगैं भवनवासीनिकै वा आगे कहिए जे व्यंतर तिनकै जघन्य उत्कृष्ट आयु कहै हैं;—

असुरादिचदुसु सेसे भौम्मे सायर तिपल्लमाउस्सं।
दलहीणकमं जेट्ठं दसवाससहस्समवरं तु ॥ २४० ॥
असुरादिचतुर्षु शेषे भौमे सागरं त्रिपल्यं आयुष्यम्।
दलहीनक्रमः ज्येष्ठं दशवर्षसहस्रं अवरं तु ॥ २४०

अर्थ—असुरादि च्यारनिविषैं, शेष भवनवासीनिविषै, भौम जो व्यंतर तीह विषैं क्रमतै सागर तीन पल्य आधी घाटि क्रम लिएं उत्कृष्ट आयु है। भावार्थ—असुरकुमारविषैं एक सागर नागकुमार विषैं तीन पल्य सुपर्णकुमारविषैं अढाई पल्य द्वीपकुमारविषैं दोय पल्य अवशेष छह जातिके भवनवासीनिविषैं ड्योढ़ पल्य व्यंतर देनिविषैं एक पल्य उत्कृष्ट आयु है। बहुरि सवनि ही विषैं जघन्य आयु दशहजार वर्ष प्रमाण है ॥ २४० ॥

आगैं जिनकै जो आयु कह्या ताकों विशेष सहित कहैं हैं;—

असुरचउक्के सेसे उदही पल्लत्तियं दलूणकमं।
उत्तरइंदाणहियं सरिसं इंदादिपंचण्हं ॥ २४१ ॥
असुरचतुष्के शेषे उदधिः पल्यत्रिकं दलोनक्रमः।
उत्तरेंद्राणामधिकं सदृशं इंद्रादिपंचानाम् ॥ २४१ ॥

अर्थ—असुरादि च्यरि विषै अर अवशेष भवन वासीनि विषैं एक सागर तीन पल्य आंध आध पल्य घाटि आयु कह्या सोई उत्तर दिशाके इंद्रनिका किछू अधिक आयु जाननां। भावार्थ असुरकुमारविषैं चमरेंद्रका एक सागर आयु है, वैरोचनका किछू अधिक एक सागर आयु है। नागकुमारविषैं भूतानंदका तीन पल्यका आयुप है। धरणानंदका किछू अधिक तीन पल्य आयु है। ऐसेही सुपर्णकुमारादिविषैं जानना। बहुरि इन्द्र प्रतीन्द्र लोकपाल त्रायस्त्रिंशत सामानिक इन पंचनिका आयु समान है ॥ २४१ ॥

आगैं तिसही समानताकौं विशेषकरि कहैं हैं;—

आऊपरिवारिद्धीविक्किरियाहिं पडिंदयादि चऊ।
सगसगइंदेहि समा दहरच्छत्तादिसंजुत्ता ॥ २४२ ॥

आयुःपरिवारर्धिविक्रियाभिः प्रतींद्रादयः चत्वारः ।
स्वकस्वकेंद्रैः समा दभ्रच्छत्रादिसंयुक्ताः ॥ २४२ ॥

**अर्थः**—आयु परिवार ऋद्धि विक्रिया इनकरि प्रतीन्द्र लोकपाल त्रायस्त्रिंशत सामानिक ए च्यारि अपनें अपनें इन्द्र करि समान हैं इतना विशेप दभ्र घाटि हैं तातैं छत्रादिक करि संयुक्त हैं ॥ २४२ ॥

आगैं असुरादि इन्द्रनिकी देवांगनानिका आयु कहैं हैं;–

**अड्ढाइज्जतिपल्लं चमरदुगे णागगरुडसेसाणं ।**
**देवीणमट्ठमं पुण पुव्वावस्साण कोडितयं ॥ २४३ ॥**

अर्धतृतीयत्रिपल्यं चमरद्विके नागगरुडशेपाणां ।
देवीनामष्टमं पुनः पूर्ववर्पाणां कोटित्रयम् ॥ २४३ ॥

**अर्थ**—चमर द्विकविपैं चमरेन्द्रकी देवांगनाका आयु अढाई पल्य है । वैरोचनकीका तीन पल्य है बहुरि नागेन्द्रकी देवीनिका आयु पल्यका आठवां भाग है । बहुरि गरुडेंद्रकी देवांगनानिका आयु तीन कोड़ि पूर्व प्रमाण है । अवशेप इन्द्रनिकी देवांगनानिका आयु तीन कोड़ि वर्ष प्रमाण है ॥ २४३ ॥

आगैं अंगरक्षक तीन जातिके परिपद तिनका आयु च्यारि गाथानिकरि कहैं है;–

**चमरंगरक्खसेणामहत्तराणाउगं हवे पल्लं ।**
**साणीकवाहणाणं दलं तु वइरोयणे अहियं ॥ २४४ ॥**

चमरांगरक्षसेनामहत्तराणामायुष्यं भवेत् पल्यं ।
सानीकवाहनानां दलं तु वैरोचने अधिकम् ॥ २४४ ॥

**अर्थ**—चमर इन्द्रके अंगरक्षक अर सेनामहत्तर इनका आयु एक पल्य है बहुरि आनीक कहिए चढनेवाले देव तिन सहित वाहन कहिए गजादि रूप होन योग्य देव तिनका आयु आध पल्य है ॥ बहुरि चमर इन्द्रके तै वैरोचन इन्द्रके अंगरक्षकादिकनिकैं किछू अधिक आयु है ॥ २४४ ॥

**फणिगरुडसेसयाणं तट्ठाणे पुव्ववस्सकोडी य ।**
**वस्साण कोडि लक्खं लक्खं च तदद्धयं कमसो ॥ २४५ ॥**

फणिगरुडशेषाणां तत्स्थाने पूर्ववर्षकोटिः च ।
वर्षाणां कोटिः लक्षं लक्षं च तदर्धकं क्रमशः ॥ २४५ ॥

**अर्थ**—नाग गरुड़ शेपनिकैं तिन पूर्वोक्त स्थानकनिविषैं क्रमतै कोड़ि पूर्ववर्ष कोड़ि वर्ष बहुरि कोडि वर्ष लाख वर्ष बहुरि लाख वर्ष ताका आधा वर्प प्रमाण आयु है। **भावार्थ**-नागकुमारनिविषैं अंगरक्षक सेनामहत्तरनिका आयु कोड़ि पूर्व वर्ष है आनीक सहित वाहननिका कोड़ि वर्ष है । बहुरि गरुड़कुमारविषैं अंग रक्षक सेनामहत्तरनिका आयु कोटि वर्ष है । आनिक सहित वाहननिका लक्ष वर्ष है । बहुरि अवशेप सात जाति विषैं अंगरक्षक सेनामहत्तरानिका आयु लाख वर्प है आनीक सहित वाहननिका पचास हजार वर्ष है ॥२४५॥

चमरदुगे परिसाणं अड्डाइज्जं तिपल्लमद्धूणं ।
णागे अट्ठमभागं सोलस वत्तीसभागं तु ॥ २४६ ॥
चमरद्विके परिषदां अर्धतृतीयं त्रिपल्यमर्धोनम् ।
नागे अष्टमभागं षोडश द्वात्रिंशद्भागं तु ॥ २४६ ॥

**अर्थ**—चमर द्विक विषैं परिषदनिका अढ़ाई तीन पल्य अर आधी घाटि जाननां। **भावार्थ**—चमर इन्द्रके अंतः परिषदनिका अढ़ाई पल्य मध्य पारिषदनिका दोय पल्य बाह्य पारिषदनिका ड्योढ़ पल्य आयु है। बहुरि वैरोचन इंद्रके अंत पारिषदानिका तीन पल्य मध्य पारिषदानिका अढाई पल्य बाह्य पारिषदनिका दोय पल्य आयु है। बहुरि नागकुमारविषैं अंत पारिषदानिका पल्यका आठवां भाग मध्य पारिषदनिका पल्यका सोलहूां भाग बाह्य पारिषदनिका पल्यका वत्तीसवां भाग प्रमाण आयु है॥ २४६ ॥

गरुडे सेसे कमसो तिगदुगमेक्कं तु होदि पुव्वाणं ।
वस्साणं कोडीओ परिसाणब्भंतरादीणं ॥ २४७ ॥
गरुडे शेषे क्रमशः तिस्रः द्वे एका तु भवति पूर्वाणाम् ।
वर्षाणां कोट्यः पारिषदानां अभ्यंतरादीनाम् ॥ २४७ ॥

**अर्थ**—गरुड अर अवशेषविषैं क्रमतैं तीन दोय एक पूर्व कोड़ि वर्ष कोड़ि प्रमाण अभ्यंतर आदि परिषदनिका आयु है। **भावार्थ**। गरुड़ कुमारविषैं अभ्यंतर परिषदनिका तीन पूर्व कोड़ि मध्य पारिषदनिका दोय कोड़ि बाह्य पारिषदनिका एक कोड़ि वर्ष प्रमाण आयु है। बहुरि अवशेष जातिविषैं अभ्यंतर पारिषदनिका तीन कोड़ि वर्ष मध्य परिषदनिका दोयकोड़ि वर्ष बाह्य परिषदनिका एक कोड़ि वर्ष प्रमाण आयु है ॥ २४७ ॥

आगैं असुरादिकनिकैं उश्वास अर आहारका क्रम कहैं हैं;—

असुरे तित्तिसु सासाहारा पक्खं समासहस्सं तु ।
समुहुत्तदिणाणद्धं तेरस वारस दलूणट्ठं ॥ २४८ ॥
असुरे त्रिस्त्रिषु श्वासाहारौ पक्षं समासहस्रं तु ।
समुहूर्तदिनयोः अर्धत्रयोदश द्वादश दलोनाष्टमं ॥ २४८ ॥

**अर्थ**—असुरविषैं अर तीन तीन विषैं उश्वास अर आहार पक्ष वर्ष हजार अर सो मुहूर्त अर दिननिका साढा वारा वारा साढा सातवां भाग गएं एक वार हो है। **भावार्थ**। असुरकुमारनिकैं एक पक्ष भए एकवार उश्वास हो है। हजार वर्ष गए एक वार आहार हो है। बहुरि नागकुमार आदि तीन जातिविषैं साढा वारा मुहूर्त भएं उछास हो है साढा वारा दिन गए आहार हो है। बहुरि दिक्कुमार आदि तीन जातिविषैं साढा सात मुहूरत भएं उछ्वास होवे साढा सात दिन गएं आहार हो है ॥ २४८ ॥

आगै भवनत्रिक देवनिका उत्सेध कहैं हैं;—

**पणवीसं असुराणं सेसकुमाराण दसधणू चेव ।**
**विंतरजोइसियाणं दशसत्त सरीरउदओ दु ॥ २४९ ॥**

पंचविंशतिः असुराणां शेषकुमाराणां दशधनुषां चैव ।
व्यंतरज्योतिष्कयोः दशसप्त शरीरोदयः तु ॥ २४९ ॥

**अर्थ**—असुर कुमारनिका पचीस धनुष अवशेष नव जातिके भवनवासी कुमारनिका दश धनुष व्यंतर देवनिका दश धनुष ज्योतिषी देवनिका सात धनुष शरीरकी उचाईका प्रमाण है ॥२४९॥

इति श्री **नेमिचंद्राचार्य** विरचित **त्रिलोकसारमें** भवनलोकका अधिकार समाप्त भया ।२।



# व्यंतर लोकाधिकार ॥ ३ ॥

अब व्यंतरलोक निरूपण करनेकौं है मन जाका ऐसा आचार्य सो प्रथम ही व्यंतरलोक विषै तिष्ठते जु चैत्यालयनिकौं प्रमाण पूर्वक नमस्कारकौं विस्तारै है;—

**तिण्णिसयजोयणाणं कदिहिदपदरस्स संखभागमिदे ।**
**भौमाणं जिणगेहे गणणातीदे णमंसामि ॥ २५० ॥**

त्रिशतयोजनानां कृतिहृतप्रतरस्य संख्यभागमितान् ।
भौमानां जिनगेहान् गणनातीतान् नमस्यामि ॥ २५० ॥

अर्थ—तीनसै योजनके वर्गका भाग जगत्प्रतरकौं दीएं जो प्रमाण होइ ताके संख्यात वैभागि प्रमाण जे व्यंतर देव संबंधी जिनमंदिर तिनहिं नमस्कार करौं हौं। कैसे हैं जिनमंदिर, गणनातीतान् कहिए असंख्यात हैं लौकिक गणित करि गिणे न जावैं हैं ? सो तीनसै योजनका वर्ग किएं निवै हजार योजन भए। बहुरि एक योजनके सात लाख अडसठि हजार अंगुलतैं निवै हजार योजनके केते अंगुल होइ।। ऐसे त्रैराशिक करि तिनके अंगुल करिए सो वर्ग राशिका गुणकार अर भागहार वर्गरूप ही होइ इस न्याय करि सात लाख अड़सठि हजारका वर्ग करि निव्वै हजारकौं गुणिए ९००००।७६८०००।७६८००० बहुरि अंगुलनिका अंकनिकौं तीन करि भेदिए तब सातसै अडसठिकी जायगा दोयसै छप्पन अर आगैं तीनका अंक भया। बहुरि गुण्य अर गुणकारविषै दश बिंदी थी तिनकौं जुदी स्थापी तब ऐसा भया ९।२५६।३।२५६।३। बहुरि दोय जायगा दोय सै छप्पन थे तिनकौं परस्पर गुणे पणट्ठी ६५५३६ भई अर दोइ जायगा तीन तीन थे तिनकौं परस्पर गुणें नव भए तिनकौं गुण संबंधी नवका अंककरि गुणें इक्यासी भए ऐसे करते ऐसा भया ६५=८१ बहुरि याके आगे जुदी राशि थी दश विन्दी ताकी सहनानी ऐसी१०° कीए ऐसा भया ६५=८१–१० इतने अंगुल भए। बहुरि एक अंगुलका एक सूच्यंगुल होइ तौ इतनें अंगुलनिका केते होइ सो इहां वर्ग राशि है तातैं सूच्यंगुलका वर्ग जो प्रतरांगुल ताकी सहनानी ऐसी ४ ताकरि गुणिए तब ऐसा होइ ४।६५=८११० बहुरि याका भाग जगत्प्रतरकी सहनानी ऐसी=ताकौं दीजिए तब व्यंतरनिका प्रमाण पणट्ठीको इक्यासी करि गुणि ताके आगैं दस बिंदी धरिए इतने प्रतरांगुलका जगत्प्रतर दिए ऐसा होय है ४=।६५=८१।१० सोई कह्या है "तिण्णि सयजोयणाणं वेसदछप्पणअंगुलाणं च कदिहदपदरं वेंतरजोइसियाणं च परिमाणं ।" तीनसै योजन अर दोयसे छप्पन अंगुलका वर्गका भाग जगत्प्रतरकौं दिए क्रमतैं व्यंतर अर ज्योतिषीनिका प्रमाण हो है ऐसा सिद्धांत वचन है। बहुरि संख्याते व्यंतर देवनिके एक एक जिनमंदिर पाइए तौ पूर्वोक्त प्रमाण व्यंतर देवनिकैं केते जिन मंदिर पाईए। ऐसे करि पूर्वोक्त व्यंतर प्रमाणकौं संख्यातकी सहनानी ऐसी ? ताका भाग दिएं व्यंतरनिकै जिन मंदिरका प्रमाण ऐसा होय है ४=।६५=८१।१०? ॥ २५० ॥

आगैं व्यंतरिनका कुल भेद कहें हैं;—

**किंणरकिंपुरिसा य महोरगगंधव्वजक्खणामा य ।**
**रक्खसभूयपिसाया अट्ठाविहा वेंतरा देवा ॥ २५१ ॥**

किंनरकिंपुरुषौ च महोरगगंधर्वयक्षनामानः च ।
राक्षसभूतपिशाचाः अष्टविधा व्यंतरा देवाः॥ २५१ ॥

**अर्थ**—किन्नर, किंपुरुष, महोरग, गंधर्व, यक्ष, राक्षस, भूत, पिशाच, ऐसे नामके धारक आठ प्रकार व्यंतर देव हैं ॥ २५१ ॥

आगैं तिनके शरीरका वर्णकों निरूपैं हैं,—

**तेंसि कमसो वण्णो पियंगुफलधवलकालयसियामं ।**
**हेमं तिसुवि सियामं किण्हं वहुलेवभूसा य ॥ २५२ ॥**

तेषां क्रमशः वर्णाः प्रियंगुफलधवलकालश्यामाः ।
हेमः त्रिष्वपि श्यामः कृष्णः वहुलेपभूषा च ॥ २५२ ॥

**अर्थ**—तिनका अनुक्रमतैं शरीरका वर्ण कहिए है । किंनरनिका प्रियंगुफल समान वर्ण है । किंपुरुषनिका धवल वर्ण है । महोरगनिका काला स्याम वर्ण है । गंधर्वनिका सुवर्ण समान वर्ण है यक्ष राक्षस भूत इन तीनोंका स्याम वर्ण है पिशाचनिका कृष्ण वर्ण है वहुरि ते देव वहुत अगर इत्यादि लेप आभूषणनिकरि संयुक्त हैं ॥ २५२ ॥

आगैं तिनकैं चैत्य वृक्षनिका भेद कहैं हैं;—

**तेसिं असोयचंपयणागा तुंवुरुवडो य कंटतरू ।**
**तुलसी कदंवणामा चेत्ततरू होंति हु कमेण ॥ २५३ ॥**

तेषां अशोकचंपकनागाः तुंवुरुवटाश्च कंटतरुः ।
तुलसी कदंवनामा चैत्यतरवो भवंति खलु क्रमेण ॥ २५३ ॥

**अर्थ**—तिन किन्नरादिक व्यंतरनिकैं अशोक १ चंपा १ नागकेसरि १ तुंवडी १ वट १ कंटतरु १ तुलसी १ कदंव । ऐसे नाम धारक चैत्य वृक्ष अनुक्रमतैं पाईए है ॥ २५३ ॥

आगैं तिनि चैत्य वृक्षके मूल विषैं तिष्टै है । जिन प्रतिमा इत्यादि कथन कहैं हैं;—

**तम्मूले पलियंकगजिणपडिमा पडिदिसम्हि चत्तारि ।**
**चउतोरणजुत्ता ते भवणेसु च जंवुमाणद्धा ॥ २५४ ॥**

तन्मूले पल्यंकगजिनप्रतिमाः प्रदिदिशं चतस्रः ।
चतुस्तोरणयुक्तास्ताः भवनेषु च जंवूमानार्धाः ॥ २५४ ॥

**अर्थ**—तिन चैत्य वृक्षानिकै मूलविषै पल्यंक आसनकौं प्राप्त ऐसे जिन प्रतिमा एक एक दिशा प्रति च्यारि च्यारि पाइए हैं वहुरि ते प्रतिमा च्यारि तोरण द्वारानिकरि संयुक्त हैं वहुरि भवननिविषैं ते चैत्य वृक्ष हैं ते आगैं जंवूद्विपका वर्णन विषैं जंवू वृक्षके परिकरका प्रमाण कहैंगे तातैं अर्द्ध प्रमाण जाननें ॥ २५४ ॥

आगैं तिन प्रतिमानिकै आगे तिष्टता मानस्तभकों विशेष सहित निरूपण करैं हैं;—

पडिपडिमं एक्केक्का माणत्थंभा तिवीढसालजुदा।
मोत्तियदामं सोहइ घंटाजालादियं दिव्वं ॥ २५५ ॥

प्रतिप्रतिमां एकैको मानस्तंभाः त्रिपीठशाल्युताः।
मौक्तिकदाम शोभते घंटाजालादिकं दिव्यम् ॥ २५५ ॥

**अर्थ**—प्रतिमा प्रतिमा प्रति एक एक आगैं मानस्तंभ है ते मानस्तंभ तीन पीठ तीन शालनिकर संयुक्त हैं। **भावार्थ**—तीन पीठकै ऊपरि मानस्तंभ है तिस मानस्तंभके तीन कोट पाइए है बहुरि तिस मानस्तंभविषै मोतीनिकी माला वा दिव्य घंटा जाल इत्यादिक सोभैं हैं ॥ २५५ ॥

आगैं आठ प्रकार व्यंतरनिकै एक एक कुल प्रति भेद कहैं हैं;—

किणरचउ दसदसधा सेसा बारसगसत्तचोदसधा।
दो द्दो इंदा दो द्दो वल्लभिया पुह सहस्सदेविजुदा ॥ २५६ ॥

किंनरचत्वारः दशदशधा शेपाः द्वादशसप्तचतुर्दशधा।
द्वौ द्वौ इंद्रौ द्वे द्वे वल्लभिके पृथक् सहस्रदेवीयुते ॥ २५६ ॥

**अर्थ**—किन्नरादिक च्यारि कुल तौ दश दश प्रकार हैं अर यक्षादिक अनुक्रमतें बारह प्रकार सात प्रकार सात प्रकार चौदह प्रकार हैं। जैसे मनुष्यविषैं क्षत्रिय वैश्यादिक कुल भेद पाईए है अर एक क्षत्रिय कुल विषैं इक्ष्वाकु सोम वंशादि भेद पाईए तैसे व्यंतरनिके आठ कुल भेद हैं। एक एक कुल विषैं दश आदि अवांतर भेद जानने। बहुरि इन विषैं एक एक कुल विषैं दोय दोय इंद्र हैं। तिन इंद्रनिकै एक एक कैं दोय दोय वल्लभिका देवांगना हैं ते प्रथक् प्रथक् एक एक देवांगना हजार हजार परिवार देवांगना करि संयुक्त हैं ॥ २५६ ॥

आगैं तिनके नाम सोलह गाथानि करि कहैं है;—

किंपुरिसकिंणरावि य हिदयंगमगा य रूवपाली य।
किंणरकिंणरऽणिंदित मणरम्मा किंणरुत्तमगा ॥ २५७ ॥

किंपुरुपकिंनरावपि च हृदयंगमश्च रूपपाली च।
किंनरकिंनरः अनिंदितः मनोरमः किंनरोत्तमः ॥ २५७ ॥

**अर्थ**—किंपुरुप १ किन्नर १ हृदयंगमक १ रूपपाली १ किंनरकिंनर १ अनंदित १ मनोरम १ किंनरोत्तम १ ॥ २५७ ॥

रतिपियजेट्ठा इंदा किंपुरिसाकिंणरावतंसा हु।
केतुमती रतिसेणा रादिप्पिया होंति वल्लभिया ॥ २५८ ॥

रतिप्रियज्येष्ठौ इंद्राः किंपुरुपकिंनरौ अवतंसा हि।
केतुमती रतिसेना रतिप्रिया भवंति वल्लभिकाः ॥ २५८ ॥

**अर्थ**—रतिप्रिय १ ज्येष्ट १ ऐसे दस प्रकारके किन्नर व्यंतर देव हैं तिन इंद्रनिकी अवतंसा १ केतुमती १ रतिपेण १ रतिप्रिया १ ए वल्लभिका देवांगना हैं ॥ २५८ ॥

पुरुसा पुरुसुत्तमसप्पुरुसमहापुरुसपुरुसपहणामा ।
अतिपुरुसा मरुओ मरुदेवमरुप्पहजसोवंता ॥ २५९ ॥

पुरुषः पुरुषोत्तमसत्पुरुषमहापुरुपपुरुषप्रभनामानः ।
अतिपुरुषः मरुर्मरुदेवमरुत्प्रभयशस्वंतः ॥ २५९ ॥

अर्थ—पुरुष १ पुरुषोत्तम १ सत्पुरुष १ महापुरुष १ पुरुषप्रिय १ अतिपुरुष १ मरु १ मरुद्देव १ मरुत्प्रभ १ यशस्वान १ ऐसें दश प्रकार किंपुरुष हैं ॥ २५९ ॥

सप्पुरुसमहापुरुसा किंपुरिसिंदा कमेण वल्लभिया ।
रोहिणिया णवमी हिरि पुप्फवदी य इयरस्स ॥ २६० ॥

सत्पुरुषमहापुरुषौ किंपुरुषेंद्रौ क्रमणे वल्लभिकाः ।
रोहिणी नवमी ह्री पुष्पवती च इतरस्य ॥ २६० ॥

अर्थ—तिनविषै सत्पुरुष अर महापुरुष दोय किंपुरुष व्यंतरके इन्द्र हैं तिनकी क्रमकरि सत्पुरुषकी तौ रोहिणी अर नवमी वल्लभिका देवी है अर दूसरा महापुरुषकी ह्री अर पुष्पवती वल्लभिका देवी हैं ॥ २६० ॥

भुजगा भुजंगसाली महकायतिकाय खंधसाली य ।
मणहर असणिजवक्खा महसरगंभीरपियदरिसा ॥ २६१ ॥

भुजंगः भुजंगशाली महाकायो अतिकायः स्कंधशाली च ।
मनोहरः अशनिजवाख्यः महैश्वर्यगंभीरप्रियदर्शिनः ॥ २६१ ॥

अर्थ—भुजंग १ भुजंगशाली १ महाकाय १ अतिकाय १ स्कंधशाली १ मनोहर १ असनिजव १ महैश्वर्य १ गंभीर १ प्रियदर्शी १ ऐसे दस प्रकार महोरग हैं ॥ २६१ ॥

महकायो अतिकायो महोरगेंदा हु भोग भोगवदी ।
इदरस्स पुप्फगंधी अणिंदिता होंति वल्लभिया ॥ २६२ ॥

महाकायो अतिकायः महोरगेंद्रौ हि भोगा भोगवती ।
इतरस्य पुष्पगंधी अनिंदिता भवतः वल्लभिके ॥ २६२ ॥

अर्थ—तिनविषैं महाकाय १ अर अतिकाय ए दोय महोरग व्यंतरानिके इंद्र हैं तहां पूर्व इन्द्रकी तो भोगा १ भोगवती १ अर द्वितीय इन्द्रकी पुष्पगंधी १ अनिंदिता ए वल्लभिका देवी हैं ॥ २६२ ॥

हाहा हूहू णारयतुंबुरुकदंबवासवक्खा य ।
महसर गीतरतीवि य गीतयसा दइवता दसमा ॥ २६३ ॥

हाहा हूहू नारदतुंबुरुककदंबवासवाख्याश्च ।
महास्वरो गीतरतिः अपि च गीतयशा दैवता दशमः ॥ २६३ ॥

अर्थ—हाहा १ हूहू १ नारद १ तुंबुरु १ कदंब १ वासव १ महास्वर १ गीतरति १ गीतयशा १ दैवत १ दशवां दश प्रकार गंधर्व हैं ॥ २६३ ॥

गीतरती गीतजसो गंधव्विंदा हवंति वल्लभिया।
सरसति सरसेणावि य णंदिणि पियदंसिणादेवी ॥ २६४ ॥
गीतरतिः गीतयशा गंधर्वेन्द्रौ भवतः वल्लभिकाः।
सरस्वति स्वरसेनापि च नंदिनी प्रियदर्शनादेवी ॥ २६४ ॥

अर्थ—तिनं विषैं गीतरति अर गीतयशा ए दोय गंधर्वनिके इन्द्र हैं तिनकी वल्लभिका देवी सरस्वती १ स्वरसेना १ अर नंदिनी १ प्रियदर्शना १ हैं ॥ २६४ ॥

अह माणिपुण्णसेलमणोभद्दा भद्दगा सुभद्दा य।
तह सव्वभद्द माणुस धणपाल सुरूवजक्खा य ॥ २६५ ॥
अथ माणिपूर्णशैलमनोभद्राः भद्रकः सुभद्रः च।
तथा सर्वभद्रः मानुषः धनपालः सुरूपयक्षश्च ॥ २६५ ॥

अर्थ—अथ अवैं माणिभद्र १ पूर्णभद्र १ शैलभद्र १ मनोभद्र १ भद्रक १ सुभद्र १ सर्वभद्र १ मानुष १ धनपाल १ सुरूपयक्ष १ ॥ २६५ ॥

जक्खुत्तमा मणोहरणामा तह माणिपुण्णभद्दिंदा।
कुंदा बहुपुत्तदेवी तारा पुण उत्तमा देवी ॥ २६६ ॥
यक्षोत्तमो मनोहरनामा तत्र माणिपूर्णभद्रेंद्रौ।
कुंदा बहुपुत्रदेवी तारा पुनरुत्तमा देवी ॥ २६६ ॥

अर्थ—यक्षोत्तम १ मनोहर १ ऐसे बारह प्रकार यक्ष हैं तिनं विषैं माणिभद्र पूर्णभद्र ए दोय इंद्र हैं तिन इंद्रनिकी कुंदा १ बहुपुत्रा १ देवी हैं अर तारा उत्तमा देवी हैं ॥ २६६ ॥

भीम महाभीम विग्घविणायक तह उदक रक्खसा य तहा।
रक्खसरक्खस तह बह्मरक्खसा होंति सत्तमया ॥ २६७ ॥
भीमो महाभीमः विघ्नविनायकः तथा उदकः राक्षसश्च तथा।
राक्षसराक्षसः तथा ब्रह्मराक्षसः भवंति सप्तमकः ॥ २६७ ॥

अर्थ—भीम १ महा भीम १ विघ्नविनायक १ उदक १ राक्षस १ राक्षसराक्षस १ ब्रह्मराक्षस सातवा ऐसे सात प्रकार राक्षस हैं ॥ २६७ ॥

भीमो य महाभीमो रक्खसइंदा हवंति वल्लभिया।
पउमा वसुमित्तावि य रयणड्ढा कणयपह देवी ॥ २६८ ॥
भीमश्च महाभीमो राक्षसेंद्रौ भवतः वल्लभिकाः।
पद्मा वसुमित्रापि च रत्नाढ्या कनकप्रभा देवी ॥ २६८ ॥

अर्थ—तिनविषैं भीम अर महाभीम ए राक्षसनिके इन्द्र हैं, तिनकी वल्लभिका देवी पद्मा वसुमित्रा १ बहुरि रत्नाढ्या १ कनकप्रभा १ है ॥ २६८ ॥

भूदाणं तु सुरूपा पडिरूवा भूदउत्तमा तत्तो।
पडिभूद महाभूदा पडिछण्णागासभूद इदि ॥ २६९ ॥

भूतानां तु सुरूपः प्रतिरूपः भूतोत्तमः ततः ।
प्रतिभूतः महाभूतः प्रतिछन्नः आकाशभूत इति ॥ २६९ ॥

**अर्थ**—बहुरि भूतनिकैं सुरूप १ प्रतिरूप १भूतोत्तम १ प्रतिभूत१ प्रतिछिन्न १ आकाशभूत १ ऐसैं सात प्रकार है ॥ २६९ ॥

**इंदा य सुपडिरूवा वल्लभिया तह य होदि रूववदी ।**
**बहुरूवा य सुसीमा सुमुहा य हवंति देवीयो ॥ २७० ॥**

इंद्रौ च सुप्रतिरूपौ वल्लभिकाः तथा च भवंति रूपवती ।
बहुरूपा च सुपीमा सुमुखा च भवंति देव्यः ॥ २७० ॥

**अर्थ**—तिन विषैं इन्द्र स्वरूप अर प्रतिरूप हैं तिनकी वल्लभिका १ रूपवती १ बहुरूया सुसीमा १ सुमुखा १ ए देवी हैं ॥ २७० ॥

**कुम्भंड रक्ख जक्खा संमोहो तारका अचोक्खा य ।**
**काल महकाल चोक्खा सतालया देह महदेहा ॥ २७१ ॥**

कूष्मांडो रक्षो यक्षः संमोहः तारकः अशुचिश्च ।
कालः महाकालः शुचिः सतालकः देहः महादेहः ॥ २७१ ॥

**अर्थ**—कूष्मांड १ रक्षा १यक्ष संमोह १तारक १अशुचि १काल१ महाकाल १ शुचि १ सतालक १ देह १ महादेह१ ॥ २७१ ॥

**तुण्हिय पवयणणामा इंदा तेसिं तु कालमहकाला ।**
**कमलकमलप्पहुप्पलसुदरिसणा होंति वल्लभिया ॥ २७२ ॥**

तूष्णीकः प्रवचननामा इंद्रौ तेषां तु कालमहाकालौ ।
कमलाकमलप्रभोत्पलासुदर्शना भवंति वल्लभिकाः ॥ २७२ ॥

**अर्थ**—तूष्णीक १ प्रवचन १ ऐसैं नाम लिऐं चौदह प्रकार पिशाच हैं। तिन विषैं तिन पिशाचनिकैं काल अर महाकाल इन्द्र हैं। तिनकी कमला १कमलप्रभा बहुरि उत्पला १ सुदर्शना१ ए वल्लभिका हैं ॥ २७२ ॥

आगैं बहुरि इंद्रनिहीके नाम जुदे दोय गाथानिकरि कहैं हैं;—

**किंपुरुस किंणरा सप्पुरुस महापुरुसणामया कमसो ।**
**महकायो अतिकायो गीतरती गीतयसणामा ॥ २७३ ॥**

किंपुरुषः किन्नरः सत्पुरुषः महापुरुषनामा क्रमशः ।
महाकायः अतिकायः गीतरती गीतयशोनामा ॥ २७३ ॥

**अर्थ**—क्रमतैं किंपुरुष किन्नर बहुरि सत्पुरुष महापुरुष बहुरि महाकाय अतिकाय बहुरि गीतरति गीतयशा ॥ २७३ ॥

**तो माणिपुण्णभद्दा भीममहाभीमया सुरूवा य ।**
**पडिरूवो काल महाकालो भोम्मेसु जुगलिंदा ॥ २७४ ॥**

ततो माणिपूर्णभद्रौ भीममहाभीमौ सुरूपश्च ।
प्रतिरूपः कालः महाकालः भौमेषु युगलेंद्राः ॥ २७४ ॥

अर्थ—तहां पीछे माणिभद्र पूर्णभद्र बहुरि भीम महाभीम बहुरि सुरूप प्रतिरूप बहुरि काल महाकाल ए सर्व व्यंतरनिविषैं एक एक कुलके दोय दोय इन्द्र जाननां ॥ २७४ ॥

आगें किंपुरुष इन्द्रनिकै गणिका महत्तरीकों च्यारि गाथानि करि कहैं हैं;—

**गणिकामहत्तरीयो इंदं पडि पल्लदलठिदी दो द्दो ।**
**मधुरा मधुरालावा सुस्सर मउभासिणी कमसो ॥ २७५ ॥**

गणिकामहत्तर्यः इंद्रं प्रति पल्यदलस्थितयः द्वे द्वे ।
मधुरा मधुरालापा सुस्वरा मृदुभाषिणी क्रमशः ॥ २७५ ॥

अर्थ—एक एक इन्द्र प्रति दोय दोय गणिका महत्तरी हैं। जैसे इहां वेश्या हो हैं तैसै तहां जो देवांगना होंहि तिनकों गणिका कहिए तिन विषैं जो प्रधान सो गणिकामहत्तरी जाननी बहुरि ते आध पल्य प्रमाण आयुकों धरै हैं तिनकों नाम अनुक्रमतैं कहिए हैं। तहां एक एक किंपुरुषादि इन्द्र संबंधी दोय दोय गणिका महत्तरीनिका नाम जाननां मधुरा मधुरालाप बहुरि सुस्वरा मृदुभाषिणी ॥ २७५ ॥

**पुरिसपिया पुंकंता सोम्म पुंदरिसिणी य भोगक्खा ।**
**भोगवदी य भुजंगा भुजंगपिया तो सुघोस विमलेत्ति ॥ २७६ ॥**

पुरुषप्रिया पुंकांता सौम्या पुंदर्शिनी च भोगाख्या ।
भोगवती च भुजंगा भुजंगप्रिया ततः सुघोषा विमला इति ॥ २७६ ॥

अर्थ—बहुरि पुरुषप्रिया पुंकांता बहुरि सौम्य पुंदर्शिनी बहुरि भोगा भोगवती बहुरि भुजंगा भुजंगप्रिया बहुरि सुघोषा विमला ॥ २७६ ॥

**सुस्सर अणिंदियक्खा भद्द सुभद्दा य मालिणी होंति ।**
**पउमादिमालिणीवि य तो सव्वरि सव्वसेणेत्ति ॥ २७७ ॥**

सुस्वरा अनिंदिताख्या भद्रा सुभद्रा च मालिनी भवंति ।
पद्मादिमालिनी अपि च ततः शर्वरी सर्वसेना इति ॥ २७७ ॥

अर्थ—बहुरि सुस्वरा अनिंदिता बहुरि भद्रा सुभद्रा बहुरि मालिनी पद्ममालिनी बहुरि शर्वरी सर्वसेना ॥ २७७ ॥

**रुद्दक्ख रुद्ददरिसिण भूदादीकंद भूद भूदादी ।**
**दत्त महाभुज अंबा कराल सुलसा सुदरिसणया ॥ २७८ ॥**

रुद्राख्या रुद्रदर्शना भूतादिकांता भूता भूतादि ।
दत्ता महाभुजा अंबा कराला सुरसा सुदर्शनका ॥ २७८ ॥

अर्थ—बहुरि रुद्रा रुद्रदर्शना बहुरि भूतकांता भूता बहुरि भूतदत्ता महाभुजा बहुरि अंबा कराल बहुरि सुरसा दर्शना। ऐसें सोलह इंद्र संबंधी बत्तीस गणिका महत्तरनिके नाम क्रमतैं जाननें ॥२७८॥

आगैं किंपुरुषादि इन्द्रानिकैं सामानिक आदि देवनकी संख्या कहैं हैं;—

इंदसमा हु पडिंदा समाणुतणुरक्खपरिसपरिमाणं ।
चउसोलसहस्सं पुण अट्ठसयं विसदवड्ढिकमो ॥ २७९ ।

इन्द्रसमाः खलु प्रतींद्राः सामानिकतनुरक्षपारिषदप्रमाणं ।
चतुःषोडशसहस्रं पुनरष्टशतं द्विशतवृद्धिक्रमः ॥ २७९ ॥

**अर्थ**—इन्द्रनिके समान प्रतीन्द्र हैं एक एक इन्द्र संबंधी एक एक प्रतीन्द्र है बहुरि सामानिक तनुरक्षक पारिषदनिका प्रमाण च्यारि हजार सोल्ह हजार आठसै दोयसै वधता क्रम लीए है। **भावार्थ**-एक एक इन्द्रकै सामानिक देव च्यारि हजार हैं। तनुरक्षक सोल्ह हजार हैं। अभ्यंतर परिषद आठसै हैं। मध्य परिषद हजार हैं। वाह्य वारहसै हैं ॥ २७९ ॥

*आगैं तिनकैं सात आनीक कहैं हैं;—*

कुंजरतुरयपदादीरहगंधव्वा य णच्चवसहेत्ति ।
सत्तेवय आणीया पत्तेयं सत्त सत्त कक्खजुदा ॥ २८० ॥

कुंजरतुरगपदातिरथगंधर्वाश्च नृत्यवृषभाविति ।
सप्तैव अनीकाः प्रत्येकं सप्त सप्त कक्षयुताः ॥ २८० ॥

**अर्थ**—हाथी १ घोड़ा १ पयादा १ रथ १ गंधर्व १ नृत्यकी १ वृषभ १ ऐसे सात प्रकार आनीक एक एक के हैं। बहुरि एक एक आनीक सात सात कक्ष जो फौज तिन करि संयुक्त है ॥ २८० ॥

आगैं तिस सेनाके महत्तर कहैं हैं;—

सेणामहत्तरा सुज्जेट्ठा सुग्गीवविमलमरुदेवा ।
सिरिदामा दामसिरी सत्तमदेवो विसालक्खो ॥ २८१ ॥

सेनामहत्तराः सुज्येष्ठः सुग्रीवविमलमरुदेवाः ।
श्रीदामा दामश्रीः सप्तमदेवो विशालाख्यः ॥ २८१ ॥

**अर्थ**—हाथी आदिक जे सेना ताके महत्तर कहिए प्रधान अनुक्रमतैं सुज्येष्ठा१ सुग्रीव १ विमल १ मरुदेव १ श्रीदामा १ दामश्री १ सातवां विसाल नाम देव जानना ॥ २८१ ॥

आगैं तिस आनीककी संख्या कहैं हैं;—

अट्ठावीससहस्सं पढमं दुगुणं कमेण चरिमोत्ति ।
सव्विंदाणं सरिसा पइण्णयादी असंखमिदा ॥ २८२ ॥

अष्टाविंशसहस्राणि प्रथमं द्विगुणं क्रमेण चरमांतम् ।
सर्वेंद्राणां सदृशाः प्रकीर्णकादयः असंख्यमिताः ॥ २८२ ॥

**अर्थ**—अठाईस हजार प्रथम कक्ष हैं। बहुरि दूणा दूणा करि अंत पर्यंत जानना ॥**भावार्थ**॥ हाथी प्रथम फौज विषैं अठाईस हजार दूसरा विषैं छप्पन हजार ऐसें सातईं फौज पर्यंत दूणे दूणे जाननें। ऐसेही घोटकादिक जाननें। या प्रकार सर्वही व्यंतरेंद्रनिकैं समान आनीक

पाइए है। बहुरि चतुर्निकायरूप सर्व देवनिकै प्रकीर्णक आभियोग्य किल्विषिक एक असंख्यात प्रमाण हैं॥ २८२॥

आगें व्यंतरेंद्रनिका नगर जहां पाइए तिन द्वीपनिके नाम कहैं हैं;—

अंजणकवज्जधाउगसुवण्णमणसिलगवज्जरजदेसु।
हिंगुलिके हरिदाले दीवे भोम्मिदणयराणि॥ २८३॥

अंजनकवज्रधातुकसुवर्णमनःशिलकवज्ररजतेषु।
हिंगुलिके हरिताले द्वीपे भौमेंद्रनगराणि॥ २८३॥

**अर्थ**—अंजनक १ वज्रधातुक १ सुवर्ण १ मनः शिलक १ वज्र १ रजत १ हिंगुलक १ हरिताल १ इन आठ द्वीपनिविषैं क्रमतैं किन्नरादिकनिके इंद्रनिके नगर हैं॥ **भावार्थ**॥ किन्नर कुलके इंद्रनिका अंजनक द्वीपविषैं नगर है। तहां किंपुरुष इंद्रके तौ दक्षिण दिशाविषैं अर किन्नरइंद्रके उत्तर दिशाविषैं नगर जाननें ऐसैं ही वज्रधातुकादि द्वीपनिविषैं किं पुरुषादिकविषैं इंद्रनिके पहले इंद्रका दक्षिणविषैं दूसरेका उत्तरविषैं नगर जाननें॥ २८३॥

आगें तिन नगरनिके नाम अर आयाम कहैं हैं;—

भोमिंदंकं मज्झे पहकंतावत्तमज्झ चरिमंका।
पुव्वादिसु जंबुसमा पणपणणयराणि समभागे॥ २८४॥

भौमेंद्रांकं मध्ये प्रभकांतावर्तमध्याः चरमांकाः।
पूर्वादिषु जंबूसमानि पंचपंचनगराणि समभागे॥ २८४॥

**अर्थ**—व्यंतर इंद्रका जो अंक कहिए नाम सो तो मध्यका नगर विषैं जानना अर ताहीकी पूर्वादि दिशानिविषैं इंद्रका नामकै आगे क्रमतैं प्रभकांत आवर्त्त मध्य ऐसे अंतविषैं नाम संयुक्त नगरनिके नाम जाननें॥ **भावार्थ**॥ किन्नर नामा इंद्र ताके पांच नगर हैं तहां मध्य विषैं जो नगर है ताका नाम किन्नरपुर है बहुरि ताकी पूर्व दिशाविषैं किन्नरप्रभ नगर है। दक्षिणविषैं किन्नरकांत नगर है पश्चिम दिशाविषैं किन्नरावर्त नगर है। उत्तरविषैं किन्नरमध्य नगर है। ऐसें ही और इंद्रनिके नगरनिके नाम जानने। एक एक इंद्रके पांच पांच नगर हैं ते जंबूद्वीप समान हैं। **भावार्थ**। लक्ष योजन विस्तारकों धरैं हैं। बहुरि ते नगर समभूमि विषैं पाइए हैं पृथ्वीतैं नीचें वा पर्वतादिके ऊपर नहीं हैं॥ २८४॥

आगें तिन नगरनिका कोट द्वार तिनकों उदयादिक कहैं हैं;—

तप्पायारुदयतियं पणहत्तरिपण्णवीसपंचदलं।
दारुदओ वित्थारो पंचघणद्धं तदद्धं च॥ २८५॥

तत्प्राकारोदयत्रयं पंचसप्ततिपंचविंशतिपंचदलम्।
द्वारोदयो विस्तारः पंचघनार्धं तदर्धं च॥ २८५॥

**अर्थ**—तिन नगरनिका जो प्राकार कहिए कोट ताका उदयादि तीन पिचहत्तरि पचीस पांचका आधा है॥ भावार्थ॥ कोट साढ़ा सैंतीस योजन ऊंचा है साढा बारा योजन चौड़ा है

अढ़ाई योजन मोटा है बहुरि तिस कोटके द्वार कहिए दरवाजे तिनकी उदय अर विस्तार पंच घन जो सवासो ताका आधा अर ताहूका आधा प्रमाण है ॥ भावार्थ ॥ द्वार साढा वासठि योजन ऊंचा है सवा इकतीस योजन चौड़ा है ॥ २८५ ॥

आगैं ताके ऊपरि जो प्रासाद है ताका स्वरूप कहैं हैं;—

तस्सुवरिं पासादो पणहत्तरितुंगओ सुधम्मसहा ।
पणकादिदल तद्दल णव दीहरवासुदय कोस ओगाढा ॥ २८६ ॥
तस्योपरि प्रासादः पंचसप्ततितुंगः सुधर्मसभा ।
पंचकृतिदलं तद्दलं नव दीर्घव्यासोदयाः क्रोशः अवगाढः ॥ २८६ ॥

अर्थ—तिस द्वारकै ऊपरि पिचहत्तरि योजन ऊंचा प्रासाद है सोई प्रासादके अभ्यंतरि सुधर्मा नामा सभा कहिए सो पंचमी कृति पचीस ताका आधा बहुरि ताहूका आधा बहुरि नव प्रमाण दीर्घ व्यास उदय संयुक्त है॥ भावार्थ ॥ सुधर्म्मा सभा साढा वारा योजन लंबी है। सवा छह योजन चौड़ी है। नव योजन ऊंची हैं। वहुरि तिसका अवगाढ़ कहिए अधिष्ठान भूमि सो एक कोश है ॥ २८६ ॥

आगैं तिस प्रासादके जे द्वार तिनके उदयादि कहैं हैं;—

तिस्से दारुदओ दुग इगि वासो दक्खिणुत्तरिंदाणं ।
सव्वेसिं णगराणं पायारादीणि सरिसाणि ॥ २८७ ॥
तस्याः द्वारोदयः द्विकमेकं व्यासः दक्षिणोत्तरेंद्राणाम् ।
सर्वेषां नगराणां प्राकारादीनि सदृशानि ॥ २८७ ॥

अर्थ—तिस सुधर्म्मा सभाका द्वारका उदय जो ऊंचाई सो दोय योजन है । वहुरि व्यास जो चौड़ाई सो एक योजन है । वहुरि दक्षिण इंद्र वा उत्तर इंद्रनिकै सवनिहींकैं सर्व नगरनिका प्राकारादिक समान हैं ॥ २८७॥

आगैं तिन नगरनिकै वाह्य वन कहैं हैं;—

पुरदो गंतूण वहिं चउदिसं जोयणाणि विसहस्सं ।
इगिलक्खायद तद्दलवासजुदा रम्मवणखंडा ॥ २८८ ॥
पुराद्गत्वा वहिः चतुर्दिशं योजनानि द्विसहस्रं ।
एकलक्षायता तद्दलव्यासयुताः रम्यवनखंडाः ॥ २८८ ॥

अर्थ—नगरतैं वाहरैं दोय दोय हजार योजन परैं जाइ च्यारि दिशानिविषैं एक लाख योजन लंवे तातैं पचास हजार योजन चौड़े रमणीक वनखंड कहिए वाग हैं ॥ २८८॥

आगैं तिन द्वीपनविषैं पाईए ऐसे गणिकानिके नगर तिनके विस्तार संख्यादिक निरूपैं हैं;—

तत्थेव य गणिकाणं चुलसीदिसहस्सविउलणयराणि ।
सेसाणं भोम्माणं अणेयदीवे समुद्दे य ॥ २८९ ॥

तत्रैव च गणिकानां चतुरशीतिसहस्रविपुलनगराणि।
शेषाणां भौमानां अनेकद्वीपे समुद्रे च ॥ २८९ ॥

**अर्थ**—तिसही अपनें अपनें इंद्र संबंधी द्वीपविर्षें गणिकामहत्तरीनिके नगर हैं। ते अपनी अपनी इंद्रपुरीकै दोऊ पार्श्वनिविर्षें जाननें। बहुरि ते चौरासी हजार योजन लंबे चौड़े हैं। बहुरि अवशेष जे व्यंतर हैं तिनके नगर अनेक द्वीप वा अनेक समुद्रनि विर्षें पाईए हैं ॥ २८९ ॥

आगैं कुलभेद अपेक्षा निलयभेद कहैं हैं;—

**भूदाण रक्खसाणं चउदस सोलस सहस्स भवणाणि।**
**सेसाण वाणवेंतरदेवाणं उवरि णिलयाणि ॥ २९० ॥**

भूतानां राक्षसानां चतुर्दश षोडश सहस्रं भवनानि।
शेषाणां वानव्यंतरदेवानां उपरि निलयानि ॥ २९० ॥

**अर्थ**—भूतनिका अर राक्षसनिका चौदह सोलह हजार भवन हैं ॥ **भावार्थ** ॥ रत्नप्रभा पृथ्वीके खरभागविर्षें भूतानिके चौदह हजार भवन हैं। बहुरि पंक भागविर्षें राक्षसनिके सोलह हजार भवन हैं। बहुरि अवशेष वान व्यंतरदेव हैं तिनके पृथ्वीके ऊपरि निलय, कहिए स्थान पाईए हैं ॥ २९० ॥

आगैं नीचोपपादादि वान व्यंतरनिके विशेष दोय गाथानिकरि कहैं हैं;—

**हत्थपमाणे णिच्चुववादा दिगुवासि अंतरणिवासी।**
**कुंभंडा उप्पण्णाणुप्पण्ण पमाणया गंधा ॥ २९१ ॥**

हस्तप्रमाणे नीचोपपादाः दिग्वासिनः अंतरनिवासिनः।
कूष्मांडाः उत्पन्ना अनुत्पन्नाः प्रमाणका गंधाः ॥ २९१ ॥

**अर्थ**—हस्तप्रमाणविर्षै नीचौपपाद हैं बहुरि दिग्वासी १ अंतरनिवासी १ कूष्मांड १ उत्पन्न १ अनुत्पन्न १ प्रमाणक १ गंध १ ॥ २९१ ॥

**महगंध भुजग पीदिग आगासुववण्णगा य उवरुवरिं।**
**तिसु दसहत्थसहस्सं वीससहस्संतरं सेसे ॥ २९२ ॥**

महागंधा भुजगाः प्रीतिका आकाशोत्पन्नाश्च उपर्युपरि।
त्रिषु दशहस्तसहस्राणि विंशतिसहस्रांतरं शेषे ॥ २९२ ॥

**अर्थ**—महागंध १ भुजंग १ प्रीतिक १ आकाशोत्पन्न १ ए सर्व्व ऊपरि ऊपरि तीनविर्षें दश दश हजारकै आंतिरै अर अवशेष वीस वीस हजारके आंतिरै जाननें। **भावार्थ**—पृथ्वीतै एक हस्त ऊपरि क्षेत्रविर्षे नीचोपपाद व्यंतर हैं। तिनकै ऊपरि दश हजार हाथ ऊंचे क्षेत्रविर्षें दिग्वासी हैं। तिनकै ऊपरि दश हजार हाथ ऊंचे क्षेत्रविर्षें अंतर निवासी हैं। तिनके ऊपर दस हजार हाथ ऊंचे क्षेत्रविर्षें कूष्मांड है। तिनकै ऊपरि वीस हजार हाथ ऊंचे क्षेत्रविर्षें उत्पन्न व्यंतर हैं। आगैं ऐसे ही ऊपरि ऊपरि वीस वीस हजार हाथका अंतराल जाननां ॥ २९२ ॥

आगैं तिन नीचोपपादादिकनिकी आयु क्रमतैं कहैं हैं;—

दसवरिससहस्सादो सीदी चुलसीदिकं सहस्सं तु ।
पल्लट्ठमं तु पादं पल्लद्धं आउगं कमसो ॥ २९३ ॥
दशवर्षसहस्रात् अशीतिः चतुरशीतिकं सहस्रं तु ।
पल्याष्टमं तु पादं पल्यार्धमायुष्यं क्रमशः ॥ २९३ ॥

**अर्थ**—दश हजार वर्षतैं लगाय दश दश हजार वधता असी हजार वर्ष पर्यंत बहुरि चौरासी हजार वर्ष बहुरि पल्यका आठवां भाग चौथा भाग पल्यका आधा प्रमाण आयु तिनका क्रमतैं जाननां । **भावार्थ**—नीचोपपादनिका दश हजार दिग्वासीनिका बीस हजार अंतरनिवासीनिका तीस हजार कूष्मांडनिका चालीस हजार उत्पन्ननिका पचास हजार अनुत्पन्ननिका साठि हजार प्रमाणकनिका सत्तरि हजार गंधनिका अस्सी हजार वर्ष प्रमाण आयु है । महा गंधनिका चौरासी हजार वर्ष प्रमाण आयु है जुगलनिका पल्यका आठवां भाग प्रीतिकानिका चौथाई पल्य आकाशोत्पन्ननिका आधापल्य प्रमाण आयु है ॥ २९३ ॥

आगैं व्यंतरनिका निलय भेद कहैं हैं;—

वेंतरणिलयतियाणि य भवणपुरावासभवणणामाणि ।
दीवसमुद्दे दहगिरितरुम्हि चित्तावणिम्हि कमे ॥ २९४ ॥
व्यंतरनिलयत्रयाणि च भवनपुरावासभवननामानि ।
द्वीपसमुद्रे द्रहगिरितरौ चित्रावन्यां क्रमेण ॥ २९४ ॥

**अर्थ**—भवनपुर अर आवास अर भवन ए वितरनिके भवननिके तीनही नाम हैं तहां क्रमकरि द्वीप समुद्रनिविषै भवनपुर पाईए है । बहुरि द्रह पर्व्वत वृक्ष इन विषैं आवास पाईए हैं बहुरि चित्रापृथिवीविषैं नीचें भवन पाईए हैं ॥ २९४ ॥

आगैं तीन प्रकार निलयनका वर्णन कहैं हैं;—

उड्ढगया आवासा अधोगया वितराण भवणाणि ।
भवणपुराणि य मज्झिमभागगया इदि तियं णिलयं ॥ २९५ ॥
ऊर्ध्वगताः आवासा अधोगता व्यंतराणां भवनानि ।
भवनपुराणि च मध्यमभागगतानीति त्रयं निलयम् ॥ २९५ ॥

**अर्थ**—जे पृथ्वीतैं ऊंचे स्थानक विषैं पाईए ते आवास जाननें । बहुरि जे पृथ्वीतै नीचे पाइए ते व्यंतरनिके भवन जानने । बहुरि जे मध्य लोकको समभूमि विषैं पाईए ते भवनपुर कहिए ऐसे तीन प्रकार निलय हैं ॥ २९५ ॥

आगैं सर्व्व व्यंतरनिका यथा संभव रहनेका क्षेत्र कहैं हैं;—

चित्तवइरादु जावय मेरुदयं तिरियलोयवित्थारं ।
भोम्मा हवंति भवणे भवणपुरावासगे जोग्गे ॥ २९६ ॥

चित्रावज्रातः यावत् मेरूदयं तिर्यग्लोकविस्तारं।
भौमा भवंति भवने भवनपुरावासके योग्यं ॥ २९६ ॥

**अर्थ**—चित्रा अर वज्रा पृथ्वीका मध्य संधितैं लगाय यावत् मेरु गिरिकी उचाई है तहां पर्यंत ऊंचा अर तिर्यक् लोकका जेता विस्तार तहां पर्यंत विस्तारकों धरें जो क्षेत्र तिहविर्षै भौम कहिए व्यंतर देव ते अपनें अपनें योग्य भवनविषैं वा भवन पुरविषैं वा आवासविषैं वास करैं हैं ॥ २९६ ॥

**भवणं भवणपुराणि य भवणपुरावासयाणि केसिंपि।**
**भवणामरेसु असुरे विहाय केसिं तियं णिलयं ॥ २९७ ॥**

भवनं भवनपुरे च भवनपुरावासकानि केषांचित्।
भवनामरेषु असुरान् विहाय केषां त्रयं निलयम् ॥ २९७ ॥

**अर्थ**—केई व्यंतरनिकै तो भवन ही हैं केईनिके भवन अर पुर हैं केईनिकें भवन अर भवन-पुर अर आवास हैं। ऐसे व्यंतरनिके स्थान जाननें। बहुरि भवनवासी देवनिविषैं असुर कुमार विना अन्य कुलवाले केईक भवन वासीनिके भवन वा भवनपुर वा आवास तीन निलय पाईए है इस कथनतैं पृथ्वीतै नीचे खर भाग पंक भाग विषैं अर पृथ्वी तैं ऊपरि पर्व्वतादि विषैं अर सम-भूमि पृथ्वीविषैं व्यंतरानिके अर भवन वासीनिके स्थान पाइए हैं ऐसा जाननां ॥ २९७ ॥

आगैं तीन प्रकार निलयनिका व्यासादिक तीन गाथानि करि कहैं हैं;—

**जेट्ठावरभवणाणं वारसहस्सं तु सुद्धपणुवीसं।**
**वहलं तिसय तिपादं वहलतिभागुदयकूडं च ॥ २९८ ॥**

ज्येष्ठावरभवनयोः द्वादशसहस्रं तु शुद्धपंचविंशतिः।
बाहल्यं त्रिशतं त्रिपादं बाहल्यत्रिभागोदयकूटं च ॥ २९८ ॥

**अर्थ**—ज्येष्ठ अर जघन्य भवननिका विस्तार अठारह हजार अर शुद्ध पचीस योजन हैं। बाहुल्य तीनसै अर त्रिपाद योजन है। वाहुल्यका तीसरा भाग प्रमाण ऊंचा कूट है। **भावार्थ**। उत्कृष्ट भवन है सो तो वारह हजार योजन चौड़ा तीन सै योजन पृथ्वीतें छाति पर्यंत ऊंचा है। बहुरि तिन भवननिविषै जेता ऊंचाईका प्रमाण कह्या ताके तीसरा भाग प्रमाण ऊंचा कूट पाइए हैं। इस कूट ऊपरि जिन मंदिर हैं ॥ २९८ ॥

**जेट्ठभवणाण परिदो वेदी जोयणदलुच्छिया होदि।**
**अवराणं भवणाणं दंडाणं पणुवीसुदया ॥ २९९ ॥**

ज्येष्ठभवनानां परितः वेदी योजनदलोच्छ्रिता भवति।
अवराणां भवनानां दंडानां पंचविंशत्युदया ॥ २९९ ॥

**अर्थ**—उत्कृष्ट भवननिके चौगिरद आध योजन ऊंची वेदी है। जघन्य भवननिके पचीस धनुष ऊंची वेदी है। जैसे बागके चौगिरद भीति हो है तैसे जो होइ ताका नाम वेदी जाननां ॥ २९९ ॥

वट्टादीण पुराणं जोयणलक्खं कमेण एक्कं च ।
आवासाणं विसयाहियवारसहस्स य तिपादं ॥ ३०० ॥

वृत्तादीनां पुराणां योजनलक्षं क्रमेण एकं च ।
आवासानां द्विशताधिकद्वादशसहस्राणि च त्रिपादम् ॥ ३००

**अर्थ**—गोल आदि आकार रूप जे पुर तिनका क्रम करि उत्कृष्ट विस्तार लक्ष योजन है ॥ जघन्य विस्तार एक योजन है । बहुरि गोल आदि आकार रूप जे आवास तिनका उत्कृष्ट विस्तार दोयसै अधिक बारह योजन है । जघन्य विस्तार पौण योजन है ॥ ३०० ॥

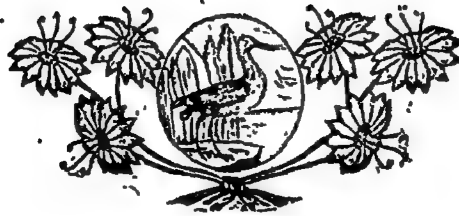
आगैं तीनप्रकार निलयनिका विशेपस्वरूप अर व्यंतरनिके आहार उश्वास ताकौं कहैं हैं;—

भवणावासादीणं गोउरपायारणच्चणादिघरा ।
भोम्माहारुस्सासा साहियपणदिण मुहुत्ता य ॥ ३०१ ॥

भवनासादीनां गोपुरप्राकारनर्तनादिगृहाणि ।
भौमाहारोच्छ्वासः साधिकपंचदिनानि मुहूर्ताश्च ॥ ३०१ ॥

**अर्थ**—भवन आवासादिकनिकैं दरवाजे कोट नृत्य आदिक ग्रह पाईए है । बहुरि भौमतैं व्यंतर तिनकें आहार किछू अधिक पांच दिन भए अर उश्वास किछू अधिक पांच मुहूर्त भए जाननां ॥ इति व्यंतरलोक अधिकार समाप्त भया ॥ ३०१ ॥

इति श्री **नेमिचंद्राचार्य** विरचित **त्रिलोकसारमैं** व्यन्तरलोकका अधिकार समाप्त भया ।३।



# अथ ज्योतिर्लोकाधिकार ॥ ४ ॥

अथ व्यंतरलोकके अधिकारकों निरूपण करि ताकैं अनंतर उद्देशकों प्राप्त ज्यो ज्योतिष्क-लोकका अधिकार निरूपण करनेका है अभिलाष जाकें ऐसा आचार्य सो ताकी आदिविषैं प्रथम ज्योतिष्कनिकैं बिंबनिकी संख्या दिखावनैकेलिए ज्योतिष्क लोकके चैत्यालयनिकौं नमस्कार रूप मंगल करै है;—

**वेसदछप्पण्णंगुलकदिहिदपदरस्स संखभागमिदे ।**
**जोइसजिणिंदगेहे गणणातीदे णमंसामि ॥ ३०२ ॥**

द्विशतषट्पंचाशदंगुलकृतिहृतप्रतरस्य संख्यातभागमितान् ।
ज्योतिष्कजिनेंद्रगेहान् गणनातीतान्नमस्यामि ॥ ३०२ ॥

**अर्थ**—दोयसै छप्पन अंगुलका वर्गका भाग जगत्प्रतरकों दिएं जो प्रमाण होइ ताके संख्यातवें भाग प्रमाण असंख्याते जिनेन्द्र मंदिर तिनकों नमस्कार करौं हों । **भावार्थ**—दोयसैं छप्पनका वर्ग पणट्ठी ६५५३६ सूच्यंगुलका वर्ग प्रतरांगुल सो पणट्ठी प्रमाण प्रतरांगुलका भाग जगत्प्रतरकों दिएं जो प्रमाण होय तितनें ज्योतिषी हैं । बहुरि संख्यात ज्योतिषी एक बिंबविषै पाइए एक एक बिंबविषैं एक एक चैत्यालय पाइए तातैं ज्योतिषीनिके प्रमाणकों संख्यातका भाग दिएं बिंबनिका वा चैत्यालयनिका प्रमाण आवै है तिन चैत्यालयनिकों नमस्कार करौं हों ॥ ३०२ ॥

आगैं तिन बिंबनिविषैं तिष्ठते ज्योतिष्कनिका भेद कहैं हैं;—

**चंदा पुण आइचा गह णक्खत्ता पइण्णतारा य ।**
**पंचविहा जोइगणा लोयंतघणोदहिं पुट्ठा ॥ ३०३ ॥**

चंद्राः पुनः आदित्या ग्रहा नक्षत्राणि प्रकीर्णकताराश्च ।
पंचविधा ज्योतिर्गणा लोकांतघनोदधिं स्पृष्टवंतः ॥ ३०३ ॥

**अर्थ**—चंद्रमा १ सूर्य १ ग्रह १ नक्षत्र १ प्रकीर्णक तारा १ ऐसें पांच प्रकार ज्योतिष्क समूह हैं । ते लोकके अंत घनोदधि वातवलयकों स्पर्शते हैं । **भावार्थ**—पूर्व्व पश्चिम अपेक्षा घनो-दधि वातवलय पर्यंत ज्योतिष्कबिंब पाईए हैं ॥ ३०३ ॥

आगैं द्वीप समुद्रनिके निरूपण विना ज्योतिष्क निरूपण संभवै नाहीं तातें ज्योतिष्क बिंब-निके आधारभूत जे द्वीप समुद्र तिनकों च्यारि गाथानिकरि कहै हैं;—

**जंबूधादगिपुक्खरवारुणिखीरघदखोदवरदीओ ।**
**णंदीसररुणअरुणब्भासा वर कुंडलो संखो ॥ ३०४ ॥**

जंबूधातकिपुष्करवारुणिक्षीरघृतक्षौद्रवरद्वीपाः ।
नंदीश्वरारुणारुणाभासा वराः कुंडलः शंखः ॥ ३०४ ॥

अर्थ—जंबूद्वीप १ धातुकीखंडद्वीप १ पुष्करवर १ वारुणिवर १ क्षीरवर १ घृतवर १ क्षौद्रवर १ नंदीसुर द्वीपवर १ अरुणवर १ अरुणाभासवर १ कुंडलवर १ शंखवर ॥ ३०४ ॥

तो रुजगभुजगकुसगयकोंचवरादी मणस्सिला तत्तो ।
हारिदालदीवसिंदुरसियामगंजणयहिंगुलिया ॥ ३०५ ॥

ततो रुचकभुजगकुशगक्रौंचवरादयः मनःशिला ततः ।
हरितालद्वीपसिंदूरस्यामकांजनकहिंगुलिकाः ॥ ३०५ ॥

अर्थ—तहां पीछे रुचकवर १ भुजगवर १ कुशगवर १ क्रौंचवर १ ए अभ्यंतरके सोलह द्वीप हैं तातैं परैं बीचमें असंख्यात द्वीप समुद्र हैं तिनकों छोड़ी अंतके सोलह द्वीपनिके नाम कहे हैं। तहां पीछे मनः शिलाद्वीप १ हरिताल द्वीप १ सिंदूरवर १ श्यामवर १ अंजनवर १ हिंगुलिकवर १ ॥ ३०५ ॥

रूप्पसुवण्णयवज्जयवेलुरियणागभूदजक्खवरा ।
तो देवाहिंदवरा सयंभुरमणो हवे चरिमो ॥ ३०६ ॥

रूप्यसुवर्णकवज्रवैडूर्यकनागभूतयक्षवराः ।
ततो देवाहींद्रवरौ स्वयंभूरमणो भवेत् चरमः ॥ ३०६ ॥

अर्थ—अथ रूणवर १ सुवर्णवर १ वज्रवर १ वैडूर्य्यवर १ नागवर १ भूतवर १ यक्षवर १ देववर १ अहीन्द्रवर १ स्वयंभूरमण १ अंत विषै जाननां ॥ ३०६ ॥

लवणंबुहि कालोदयजलही तत्तो सदीवणामुवही ।
सव्वे अड्ढाइज्जुद्धारुवहीमेत्तया होंति ॥ ३०७ ॥

लवणांबुधिः कालोदकजलधिः ततः स्वदीपनामोदधयः ।
सर्वे अर्धतृतीयोद्धारोदधिमात्रा भवंति ॥ ३०७ ॥

अर्थ—समुद्रनिके नाम कहैं हैं जंबूद्वीपकै परिक्षेपी लवणसमुद्र। बहुरि धातुकी खंडकै कालोदक समुद्र बहुरि अन्य द्वीपनिकै अपने अपने द्वीपका जो नाम तिसही नामके धारक समुद्र जाननें। बहुरि ते सर्व्व द्वीप समुद्र कितने हैं अढाई उद्धार सागर प्रमाण हैं। **भावार्थ**—दस कोड़ा कोड़ि दूसरी उद्धार पल्यका एक उद्धार सागर होइ। ऐसे अढ़ाई सागरके जेते रोम तितनें द्वीप समुद्र हैं ॥ ३०७ ॥

अब तिन द्वीप समुद्रनिका विस्तार वा आकार निरूपैं हैं;—

जंबू जोयणलक्खो वट्टो तद्दुगुणदुगुणवासेहिं ।
लवणादिहिं परिखित्तो सयंभुरमणुवहियंतेहिं ॥ ३०८ ॥

जंबू योजनलक्षः वृत्तः तद्द्विगुणद्विगुणव्यासैः ।
लवणादिभिः परिक्षिप्तः स्वयंभूरमणोदध्यंतैः ॥ ३०८ ॥

अर्थ—जंबूद्वीप लक्ष योजन है बहुरि वृत्त कहिए गोल है। बहुरि तातैं दूणा दूणा व्यास संयुक्त जे लवण समुद्रादिक स्वयंभूरमण समुद्र पर्यंत द्वीप समुद्र तिनकरि परिक्षिप्त कहिए वेष्टित

है । भावार्थ—सर्व द्वीप समुद्रनिके वीचि जंबूद्वीप है सो गोल है । ताकौं मध्य विषैं चौड़ाईका प्रमाण लक्ष योजन है ताकौं वेढैं लवण समुद्र है सो तातैं दूणा दोय लाख योजन व्यास संयुक्त है। ताकौं वेढैं धातुकीखंड द्वीप है । सो तातैं दूणा च्यारि लाख योजन व्यास संयुक्त है । याही प्रकार द्वीपकौं समुद्र वेढ्यां समुद्रकौं द्वीप वेढ्यां दूणा दूणा विस्तार लिएं स्वयंभूरमण समुद्र पर्यंत द्वीप समुद्र गोल आकार जानने ॥ ३०८ ॥

आगैं तहां इच्छित द्वीपका वा समुद्रका सूची व्यास अर वलय व्यास ल्यावनेकौं करणसूत्र यहु है;-

**रूऊणाहियपदमिदद्दुगसंवग्गे पुणोवि लक्खहदे ।**
**गयणतिलक्खविहीणे वासो वलयस्स सूइस्स ॥ ३०९ ॥**

रूपोनाधिकपदमितद्विकसंवर्गे पुनरपि लक्षहते ।
गगनत्रिलक्षाविहीने व्यासो वलयस्य सूचेः ॥ ३०९ ॥

अर्थ—द्वीप समुद्रनिका इष्ट गच्छका जो प्रमाण ताकौं एक जायगा एक घाटि अर एक जायगा एक वांधि करि तितने हुए इनिकौं परस्पर गुणे जो प्रमाण होइ ताकौं लाख करि गुणि एक जायगा शून्य एक जायगा तीन लाख घटाइये तव वलयका अर सूचीका व्यास होइ । भावार्थ—इष्ट द्वीप वा समुद्रतैं पहला जो समुद्र वा द्वीप तिहका अंत तट अर ताके सन्मुख इष्ट द्वीप व समुद्रका अंत तट इन दोऊनिके वीचि जो क्षेत्रका प्रमाण सो वलय व्यास जाननां, वहुरि इष्ट द्वीप वा समुद्रका सन्मुख दोऊ अंत तटनिके वीच जो क्षेत्र सो सूची व्यास जाननां । जैसे कालोदक समुद्रतैं पहला धातुकीखंड द्वीप है सो धातुकीखंडका अंत तट अर कालोदकका अंत तटके वीचि जो क्षेत्रका प्रमाण सो तो वलय व्यास है । वहुरि कालोदकका सन्मुख दोय अंत तट तिनिकै वीचि जंवूद्वीप अर दोऊ दिशा संवंधी लवणोद धातुकीखंड कालोदका व्यास जोडैं जो क्षेत्र होइ सो कालोदका सूची व्यास है। ऐसेही सर्वत्र जाननां। अव इनके ल्यावनेका विधान कहिए है । इष्ट द्वीप व समुद्र जेथवां होइ तीह प्रमाण इहां गच्छ जाननां । तामें एक घटाएं जो प्रमाण होइ ताका विरलन कहिए एक एक करि वखेरिए । वहुरि एक एक प्रति दोय दोय दीजिये वहुरि तिनकौं परस्पर गुणिएं ऐसे करतै जो प्रमाण होइ ताकौं लक्ष करि गुणिए तामें बिंदी घटाइये ऐसे करतैं इष्ट द्वीप वा समुद्रका वलय व्यास आवै है । ताका उदाहरण—जैसे जंवूद्वीपतैं लगाय कालोदक समुद्र चौथा है सो गच्छ प्रमाण च्यारि भया तामें एक घटाएं तीन सो तीनका विरलन करिए १।१।१। वहुरि एक एक प्रति दोय दोय दीजिए ।२।२।२। वहुरि इनकौं परस्पर गुणि तव आठ होइ । इनकौं लक्ष करि गुणे आठलाख होइ तामें विन्दी घटाए भी तितने ही रहैं सो कालोदकका वलय व्यास आठलाख योजन है वहुरि इष्ट द्वीप वा समुद्र जेथवां होइ तिस प्रमाण गछतैं एक अधिक प्रमाणका विरलन करि एक एक प्रति दोय दोइ परस्पर गुणि जो प्रमाण होइ ताकौं लक्ष करि गुणि तामें तीन लाख घटाए इष्ट द्वीप वा समुद्रका सूची व्यास हो है। ताका उदाहरण—जैसे कालोदक समुद्र चौथा है । सो गच्छका प्रमाण च्यारि तामें एक मिलाएं पांच सो पांचका विरलन करि १।१।१।१।१। एक एक प्रति दोय २।२।२।२।२। रख परस्पर गुणें वत्तीस होइ इनकौं लक्ष करि गुणें वत्तीस लाख

होइ इनमें तीन लाख घटाए गुणतीस लक्ष योजन प्रमाण कालोदक समुद्रका सूचीव्यास हो है। अब यह करण सूत्र कैसें कह्या सो वासना कहिए हैं । तहां वलय व्यासकी वासना ऐसी है जो जंबूद्वीपका व्यास लक्षयोजन तातैं दूणा दूणा लवण समुद्रादिकका व्यास है तातैं एक घाटि गछ प्रमाण दुवा परस्पर गुणि लब्ध प्रमाणकों जंबूद्वीपका व्यास करि गुणें इष्ट स्थानविषै वलय व्यास हो है इहां किछू हीन अधिक करना नाहीं तातैं गगन हीन कहिए बिंदी घटावना कह्या। बहुरि सूचीव्यासकी वासना ऐसी हैं। इष्ट द्वीप वा समुद्रका जो वलय व्यास ताकों दोऊ सन्मुख दिशा संबंधी व्यास मिलावनेंतैं दूणा स्थापिए बहुरि तातैं पहले जे द्वीप वा समुद्र तिनका दोऊ दिशा संबंधी व्यास मिलाइ दूणा दूणा वलय व्यास स्थापिए। बहुरि जंबूद्वीपकै दोय दिशा संबंधी

| | |
|---|---|
| कालोदि | १६ |
| धातुकी | ८ |
| लवणद्वि | ४ |
| तीन स्थान | ० |
| जंबूद्वीप | १ |
| | २९ |

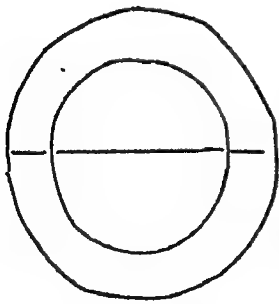
व्यास नाहीं तातैं वलय व्यासका प्रमाणही स्थापनां। बहुरि दूसरे स्थानि शून्य स्थापन करना जैसे कालोदकका सूची व्यास ल्यावनेका ऐसें स्थापन करना। ऐसे स्थापन किएं द्वितीय स्थानविषैं शून्यकी जायगा दोय लाख मिलाएं गछतैं एक अधिक स्थानभए ऐसे चारि एक अधिक गछका परस्पर गुणन कह्या। बहुरि पदमेत्ते गुणयोरे इत्यादि सूत्र करि जोड दिए तहां दोय लाख तो दूसरा स्थानका अर रूवपरिहीणे इस वचन करि एक लाख ए इन दोऊ ऋण घटावनेंकों तीन लाखका घटावना कह्या ऐसे करते इष्ट स्थानविषैं सूचीव्यास हो है॥ ३०९॥

तैसे ही अभ्यन्तर मध्यम बाह्य सूचीव्यास ल्यावनेकों करण सूत्र कहैं हैं;—

**लवणादीणं वासं दुगतिगचदुसंगुणं तिलक्खूणं।**
**आदिममज्झिमबाहिरसूइत्ति भणंति आइरिया॥ ३१०॥**

लवणादीनां व्यासं द्विकत्रिकचतुःसंगुणं त्रिलक्षोनम्।
आदिममध्यमबाह्यसूची इति भणंति आचार्याः॥ ३१०॥

**अर्थ**—लवणादिक समुद्र वा द्वीपनिका वलय व्यासकों दोय तीन च्यारि गुणां करि तामें तीन लाख घटाए अभ्यन्तर मध्य बाह्य सूची व्यास होइ ऐसे अर्थ कहैं हैं। **भावार्थ**—इष्ट द्वीप वा समुद्रके सन्मुख आदिके दोऊ तटनिके बीचि जो क्षेत्र प्रमाण सो अभ्यन्तर सूची व्यास जाननां। बहुरि इष्ट द्वीप वा समुद्रके सन्मुख दोऊ दिशा संबंधी मध्य प्रदेशनिके बीचि जो क्षेत्र प्रमाण सो मध्य सूची व्यास जाननां। बहुरि इष्ट द्वीप वा समुद्रके सन्मुख अंतके दोऊ तटनिके बीचि जो क्षेत्रप्रमाण सो बाह्यसूची व्यास जाननां। तहां लवण समुद्रादिक विषैं इष्ट द्वीप वा समुद्रका वलय व्यासकों दूणा करि तामें तीन लाख घटाएं अभ्यन्तर सूची व्यास हो है। सोई



कहिए है—विवक्षित द्वीप वा समुद्रका दोऊ दिशाका मिलाया हुवा वलय व्यास सो तातें अभ्यंतरवर्ती जे पहले सर्व्व द्वीप वा समुद्र तिनका दोऊ दिशा संबंधी वलय व्यास जोड़े जो प्रमाण होइ तातें तीन लाख अधिक हो है बहुरि इहां अभ्यन्तरवर्त्ती पहले द्वीप समुद्रनिका दोऊ दिशा संबंधी

वलय व्यास मिलाए ही विवक्षित द्वीप समुद्रका अभ्यन्तर सूचीव्यास हो है । तातैं दोऊ दिशाका ग्रहणके अर्थि विवक्षित द्वीप समुद्रका वलय व्यासकों दूणा करि तामैं तीन लाख घटाएं अभ्यन्तर सूची व्यासका प्रमाण कह्या । बहुरि विवक्षित द्वीप समुद्रका वलय व्यासकों तिगुणा करि तामैं तीन लाख योजन घटाएं मध्यम सूची व्यास हो है । सोई कहिए है । विवक्षित द्वीप वा समुद्रका वलय व्यासकों दूणा किए तामें तीन लाख घटाएं अभ्यन्तर सूची व्यास हो है । तिह अभ्यन्तर सूची व्यासका प्रमाणविषैं विवक्षित द्वीप वा समुद्रका दोय दिशानिका वलय व्यासका आधा आधा प्रमाण मिलि संपूर्ण वलय व्यास हूवा ताकों मिलाएं तिगुणा वलय व्यास तीन लाख घाटि प्रमाण मध्यम सूची व्यास हो है । बहुरि विवक्षित द्वीप वा समुद्रका वलय व्यासकों चौगुणा करि तामें तीन लाख योजन घटाएं बाह्य सूची व्यास हो है सोई कहिए हैं । विवक्षित द्वीप वा समुद्रका दूणा वलय व्यासमें तीन लाख घटाएं अभ्यन्तर सूची व्यास हो है तिहविषै विवक्षित द्वीप वा समुद्रका दोऊ दिशा संबंधी वलय व्यास मिलैं दूणा वलय व्यास मिलाएं चौगुणा वलय व्यास तीन लाख घाटि योजन प्रमाण बाह्य सूची व्यास हो है । ऐसा आचार्यका अभिप्राय है ॥३१०॥

आगैं कह्या जो सूचीव्यास ताकी अपेक्षा करि तिस तिस क्षेत्रका बादर सूक्ष्म परिधि बहुरि बादर सूक्ष्म क्षेत्रफल ल्यावनेकों करण सूत्र कहैं हैं;—

**त्रिगुणियवासं परिही दहगुणवित्थारवग्गमूलं च ।**
**परिहिहदवासतुरियं बादर सुहुमं च खेत्तफलं ॥ ३११ ॥**

त्रिगुणितव्यासः परिधिः दशगुणविस्तारवर्गमूले च ।
परिधिहतव्यासतुरीयं बादरं सूक्ष्मं च क्षेत्रफलम् ॥ ३११ ॥

**अर्थ**—तिगुणा व्यासप्रमाण बादर परिधि है बहुरि दश गुणा व्यासका जो वर्ग ताका मूल प्रमाण सूक्ष्म परिधि हो है । बहुरि परिधिकों व्यासकी चौथाई करि गुणें बादर वा सूक्ष्म क्षेत्रफल हो है । **भावार्थ**—परिधिका गिरदका जो प्रमाण सो परिधि कहिए बहुरि समकोष्टका जो प्रमाण सो क्षेत्रफल कहिए । जैसे योजन रूप क्षेत्रफल होइ सो एक एक योजनके खंड जेते होंहि तितना क्षेत्र फल जाननां । ऐसेही अंगुलादि रूप जाननां । तहां जो स्थूलपने करि कहिए सो बादर जाननां बहुरि तारतम्य करि सूक्ष्मपने करि कहिए सो सूक्ष्म जाननां तहां व्यासका जो प्रमाण ताकों तिगुणा करि बादर परिधि हो है । सो जंबूद्वीपका लक्ष योजन प्रमाण व्यासकों तिगुणा किएं तीन लाख योजन प्रमाण परिधि हो है बहुरि व्यासका जो प्रमाण ताका वर्ग करिए बहुरि ताकों दस गुणा करिए जो प्रमाण होइ ताका वर्ग मूल करिए तब सूक्ष्म परिधि हो है सो जंबूद्वीपका लक्ष योजन व्यास ताका वर्ग हजार कोड़ि योजन हो हैं । ताकों दश गुणा किएं दश हजार कोड़ि होइ है । १०००००००००००० बहुरि अंत विषमतैं कृति कोडि इत्यादि विधान करि याका वर्ग मूल करिए तब तीन लाख सोल्ह दोय सै सत्ताईस तौ योजन होइ—३१६२२७ बहुरि अवशेष च्यारि लाख चौरासी हजार चार सै इकहत्तरि योजन रहे तिनको चौगुणा करि कोश करिए तब उगणीस लाख सैंतीस हजार

आठसै चौरासी १९३७८८४ कोश हुए तिनकों दूणा मूल अंक रूप पंक्तिका प्रमाण छह लाख बत्तीस हजार च्यारिसै चौवन ६३२४५४ ताका भाग दिएं तीन कोश होइ बहुरि अवशेष चालीस हजार पांचसै बाईस कोश रहे—४०५२२ तिनकों दोय हजार गुणा करि इनके धनुष करिए तब आठ कोडि दश लाख चवालीस हजार धनुष होइ तिनकों पूर्व्व भाग हारका भाग दिए एक सौ अठाईस धनुष भए बहुरि अव शेष धनुष निवासी हजार आठसै अठ्यासी तिनको चौगुणां करि हाथ करिए तब तीन लाख गुणसिठ हजार पांचसै वारह हस्त होइ सो इन विषैं पूर्व्व भागहार संभवै नाहीं तातें इनकों चौवीस गुणा करि अंगुल करिए तब छियासी लाख गुणतीस हजार दोयसै अढतालीस ८६२९२४८ अंगुल होइ इनकों पूर्व्व भागहारका भाग दिएं तेरह अंगुल होइ। बहुरि अवशेष अंगुल च्यारि लाख सात हजार तीनसै छियालीस सो तो भाज्य अर पूर्व्वोक्त छह लाख बत्तीस हजार च्यारि हजार चार सै चौवन दोयनिकों तीन लाख सोलह हजार दोइ सै सत्ताइस करि अपवर्त्तन किएं भाज्य किछू अधिक एक अर भाग हार दोइ होइ ऐसे किछू अधिक अंगुल भया। या प्रकार जंबूद्वीपका सूक्ष्म परिधि तीन लाख सोलह हजार दोयसै सत्ताईस योजन तीन कोश एक सौ अठाईस धनुष किछू अधिक साढा तेरह अंगुल प्रमाण आया। बहुरि स्थूल परिधिका प्रमाण करि व्यासका चौथा भागकों गुणें बादर क्षेत्रफल हो है। सो जंबूद्वीपका स्थूल परिधि तीन लाख योजन तीह करि व्यास एक लाखकी चौथाई पचीस हजार योजन गुणें सातसै पचास कोड़ि योजन प्रमाण जंबूद्वीपका वादर क्षेत्रफल हो है। बहुरि सूक्ष्म परिधिका प्रमाण करि व्यासका चौथा भाग गुणें सूक्ष्म क्षेत्र फल हो है। सो जंबूद्वीपका सूक्ष्म परिधि विषैं तीन लाख सोलह हजार दोयसै सत्ताईस योजन तिनकौं व्यासकी चौथाई पचीस हजार करि गुणें सातसै निवै कोड़ि छप्पन लाख पिचहत्तरि हजार ७९०५६७५००० भए बहुरि तीन कोशकों व्यासकी चौथाई कर गुणें पिचहत्तरि हजार कोश हुआ इनकों च्यारिका भाग दिएं अठारह हजार सात सै पचास योजन भए तिनकों पूर्व्वोक्त योजननिमें मिलाइए ७९०५६९३७५० बहुरि एक सौ अठाईस धनुष तिनकों व्यासकी चौथाई करि गुणें बत्तीस लाख धनुष हूवा इनकों आठ हजारका भाग देइ योजन किए च्यारिसै योजन होइ सोभी तिन योजननविषै मिलाइये ७९०५६ ९४१५० बहुरि तेरह अंगुल अर किछू अधिक आध अंगुल इनकों समछेद करि मिलाए सत्ताईसका आधा हुवा २७/२ बहुरि दोय करि तिर्यग अपवर्त्तन करि पचीस हजारका आधा साढा बारह हजार करि सत्ताईसकों गुणें तीन लाख सैंतीस हजार पांचसै अंगुल भए इनकों एक कोशके अंगुल एक लाख बाणवे हजार तिनका भाग दिए साधिक एक कोश होइ। या प्रकार जंबूद्वीपका सूक्ष्म क्षेत्रफल सातसै निवै कोड़ि छप्पन लाख चौराणवै हजार एक सौ पचास योजन अर साधिक एक कोश प्रमाण आया। ऐसे ही सर्व द्वीप समुद्रनिका स्थूल सूक्ष्म क्षेत्रफल ल्यावनां ॥३११॥

आगैं जंबूद्वीपका सूक्ष्म परिधिका सिद्ध भए अंक कहैं हैं;—

**जोयण सगदुदु छकिगि तिदयं तिकोसमडदुगि दंडा।**
**अहियदलंगुलतेरस जंबूए सुहुमपरिणाहो ॥ ३१२ ॥**

योजनानां सप्तद्विद्वि षडेकं त्रयं त्रिकोशा अष्टद्वयेके दंडाः।
अधिकदलांगुलत्रयोदश जंबौ सूक्ष्मपरिणाहः ॥ ३१२ ॥

**अर्थ**—योजननिके सात दोय दोय छह एक तीन ए अंक हैं ३१६२२७ बहुरि तीन कोश बहुरि आठ दोय एक इन अंक १२८ रूप धनुष बहुरि साधिक आधा तेरह अंगुल इतना सर्व्व जंबूद्वीपका सूक्ष्म परिधिका प्रमाण है ॥ ३१२ ॥

आगैं तिसही जंबूद्वीपके सूक्ष्म क्षेत्रफलके सिद्ध भए अंक कहैं हैं;—

**पण्णासमेकदालं णव छप्पणाससुण्ण णवसदरी।**
**साहियकोसं च हवे जंबूदीवस्स सुहमफलं ॥ ३१३ ॥**

पंचाशदेकचत्वारिंशन्नवपट् पंचाशच्छून्यं नवसप्ततिः।
साधिकक्रोशश्च भवेज्जंबूद्वीपस्य सूक्ष्मफलम् ॥ ३१३ ॥

**अर्थ**—पचास इकतालीस नव छप्पन शून्य गुण्यासी ए तो योजननिके अंक हैं ७९० ५६९४१५० बहुरि साधिक एक कोश इतना जंबूद्वीपका सूक्ष्म क्षेत्रफल है ॥ ३१३ ॥

आगैं जंबूद्वीपका परिधिकी अपेक्षा करि विवक्षित द्वीप वा समुद्रका परिधि ल्यावनेंकों करण सूत्र यह है;—

**जंबूउभयं परिही इच्छियदीउवहिसूइ संगुणिय।**
**जंबूवासविभत्ते इच्छियदीउवहिपरिही दु ॥ ३१४ ॥**

जंबूभयं परिधी इच्छितद्वीपोदधिसूच्या संगुण्य।
जंबूव्यासविभक्ते ईप्सितद्वीपोदधिपरिधी तु ॥ ३१४ ॥

**अर्थ**—जंबूद्वीपका स्थूल सूक्ष्म दोउ परिधिकों विवक्षित द्वीप वा समुद्रका सूची व्यास करि गुणि जंबूद्वीपके व्यासका भाग दिएं विवक्षित द्वीप वा समुद्रका स्थूल वा सूक्ष्म परिधि हो है। ताका उदाहरण। जंबूद्वीपका स्थूल परिधि तीन लाख ३ योजन ताकों लवण समुद्रका सूची व्यास पांच लाख योजन करि गुणें १५ लक्ष जंबूद्वीपका व्यास लाख योजन ताका भाग दीएं लवण समुद्रका स्थूल परिधि पंद्रह योजन प्रमाण हो है। बहुरि जंबूद्वीपका स्थूल परिधिकों धातुकी खंडका सूची व्यास तेरह लाख योजन करि गुणें जंबूद्वीपका व्यासका भाग दिए धातुकी खंडका स्थूल परिधि गुणतालीस लाख योजन हो है। बहुरि जंबूद्वीपका सूक्ष्म परिधि तीन लाख सोलह हजार दोयसै सत्ताईस योजन तीन कोश एकसै अठाईस धनुप किछू अधिक साढा तेरह अंगुल तिनकों लवण समुद्रका सूची व्यास करि गुणें जंबूद्वीपके व्यासका भाग दिएं लवण समुद्रका सूक्ष्म परिधि पंद्रह लाख इक्यासी हजार एक सौ गुणतालीस योजनादि प्रमाण हो है। ऐसे ही जंबूद्वीपके स्थूल परिधिका धातुकी खंडका सूची व्यास करि गुणें जंबूद्वीपके व्यासका भाग दिएं धातुकी खंडका सूक्ष्म परिधि हो है। ऐसेही अन्य द्वीप वा समुद्रनिका स्थूल सूक्ष्म परिधि ल्यावनां ३१४

अब स्थूल सूक्ष्म क्षेत्रफलकों ल्यावनेंकों करण सूत्र कहैं हैं;—

अंताइसूइजोगं रुंदद्ध गुणित्त दुप्पडिं किच्चा।
तिगुणं दसकरणिगुणं वादरसुहुमं फलं वलये॥ ३१५॥
अंतादिसूचियोगं रुंद्रार्धेन गुणयित्वा द्विःप्रतिं कृत्वा।
त्रिगुणं दशकरणिगुणं वादरसूक्ष्मं फलं वलये॥ ३१५॥

अर्थ—अंत सूची तौ बाह्य सूची व्यास अर आदि सूची अभ्यंतर सूची व्यास इन दोऊनिके प्रमाणका जु योग कहिए जोड़ ताकों रुद्र कहिए वलय व्यास ताका अर्ध प्रमाण करि गुणिए जो प्रमाण होइ ताहि द्विः प्रति कृत्वा कहिए दोय जायगा स्थापि करि तिस प्रमाणकों एक जायगा तौ तिगुणा करिए तब बादर क्षेत्रफल होइ एक जायगा दश करि गुणा करिए जो प्रमाण था ताका वर्ग करि ताकों दश गुणा करि ताका वर्गमूल ग्रहण करिए। जिस राशिका वर्गमूल ग्रहण करना होइ ताकों करणि कहिए। ऐसे किए सूक्ष्म क्षेत्रफल हो है या प्रकार वलय वृत्त जो गोलका परिक्षेपी गोल क्षेत्र तिह विषैं वादर अर सूक्ष्म क्षेत्रफल हैं ताका उदाहरण लवण समुद्रका बाह्य सूची व्यास पंच लाख योजन अभ्यन्तर सूची व्यास एक लाख योजन इन दोऊनिकों जोड़ें छह लाख भए इनकों रुंद्र जो वलय व्यास इनकों दोय लाख योजन ताका आधा एक लाख तिह कर गुणिए तब छह हजार कोड़ि भए सो इनकों दोय जायगा स्थापि एक जायगा तिगुणा करिए तब लवण समुद्रका बादर क्षेत्रफल अठारह हजार कोड़ि योजन प्रमाण हो है। बहुरि एक जायगा तिह छह हजार कोड़िका वर्ग करि दश गुणा करिए तब छत्तीस कोड़ा कोड़ि भए इनका वर्गमूल ग्रहण किएं अठारह हजार नवसै तहेतरि कोड़ि छ्यासठि लाख गुणसठि हजार छैसै दस १८९७३६६५९६१० योजन प्रमाण समुद्रका सूक्ष्म क्षेत्र फल हैं ऐसे ही अन्य द्वीप वा समुद्रनिका वादर सूक्ष्म क्षेत्रफल ल्यावनां॥ ३१५॥

आगैं जंबूद्वीप प्रमाण करि लवण समुद्रादिकानिके खंड ल्यावनेंकों करण सूत्र कहैं हैं;—

वाहिरसूईवग्गं अब्भंतरसूइवग्गपरिहीणं।
जंबूवासाविभत्ते तत्तियमेत्ताणि खंडाणि॥ ३१६॥
बाह्यसूचीवर्गः अभ्यन्तरसूचिवर्गपरिहीनः।
जंबूव्यासविभक्तः तावन्मात्राणि खंडानि॥ ३१६॥

अर्थ—बाह्य सूची व्यासका जो वर्ग तामें अभ्यन्तर सूची व्यासका वर्ग घटाए जो प्रमाण होइ ताकों जंबूद्वीपके व्यासका भाग दीजिए सो वर्ग राशिके गुणकार भाग हार वर्ग रूप ही होइ। इस न्याय करि इहां भी वर्ग राशि है तातैं जंबूद्वीपके व्यासका जो वर्ग ताका भाग दीजिए यों करतां जो प्रमाण आवै तावन्मात्र जंबूद्वीप समान खंड जाननें। ताका उदाहरण--लवण समुद्रका बाह्य सूची व्यास पांच लाख योजन ताका वर्ग पचीस हजार कोड़ि तातैं अर अभ्यन्तर सूची एक लाख योजन ताका वर्ग एक हजार कोड़ि घटाएं चौईस हजार कोड़ि रहे याकों जंबूद्वीपका व्यास एक लाख योजन ताका वर्ग एक हजार कोड़ि ताका भाग दिएं चौवीस भए सोई लवण समुद्रके जंबूद्वीपके समान खंड करिए तौ चौवीस खंड हो हैं। ऐसे ही अन्य द्वीप वा समुद्रनि विषै जाननें॥३१६॥

आगैं अन्य प्रकार करि जंबूद्वीप समान खंड ल्यावनेको करण सूत्र रूप दोय गाथा कहै हैं;—

**रूऊणसला वारससलागगुणिदे दु वलयखंडाणि ।**
**वाहिरसूइसलागा कदी तदंताखिला खंडा ॥ ३१७ ॥**

रूपोनशला द्वादशशलाकगुणितास्तु वलयखंडानि ।
वाह्यसूचीशलाका कृतेः तदंताखिलानि खंडानि ॥ ३१७ ॥

**अर्थ**—विवक्षित द्वीप वा समुद्रका वलय व्यास जितने लक्ष प्रमाण कह्या सोई इहां शलाकाका प्रमाण जाननां सो एक घाटि शलाकाका प्रमाणकों वारह करि गुणिए। बहुरि ताकों शलाका प्रमाण करि गुणिए तब जंबूद्वीप समान गोलखंड हो है। ताका उदाहरण। लवण समुद्रका वलय व्यास दोय लाख योजन है सो शलाकाका प्रमाण दोय जाननां। बहुरि एक घाटि शलाकाका प्रमाण एक ताकों वारह गुणा किएं वारह ताकों शलाका प्रमाण दोय करि गुणें चौवीस भए सोई लवण समुद्र विषैं जंबूद्वीप समान खंड कल्पें चौवीस हो हैं। ऐसेंही अन्यत्र जाननां। बहुरि बाह्य सूची व्यास जितने लक्ष प्रमाण होइ तीह प्रमाण सूची शलाका कहिए ताका वर्ग किएं जो प्रमाण होइ तितना जंबूद्वीपतैं लगाइ तिस विवाक्षित द्वीप वा समुद्र पर्यंत क्षेत्र विषैं सर्व जंबूद्वीप समान खंडनिका प्रमाण जाननां। ताका उदाहरण—लवणसमुद्रका बाह्य सूची व्यास पांच लाख योजन है सो लवण समुद्रकी सूची शलाका पांच जाननी ताका वर्ग पचीस सोई जंबूद्वीपतैं लवण समुद्र पर्यंत सर्व क्षेत्र विषैं जंबूद्वीप समान पचीस खंड हो हैं। एक जंबूद्वीपका चौईस लवण समुद्रके ऐसें पचीस खंड जाननें ॥ ३१७ ॥

याही प्रकार अन्यत्र भी जानने;—

**वाहिरसूई वलयव्वासूणा चउगुणिदृवासहदा ।**
**इगिलक्खवग्गभजिदा जंबूसमवलयखंडाणि ॥ ३१८ ॥**

वाह्यसूची वलयव्यासोना चतुर्गुणितेष्टव्यासहता ।
एकलक्षवर्गभक्ता जंबूसमवलयखंडानि ॥ ३१८ ॥

**अर्थ**—विवक्षित द्वीप वा समुद्रका बाह्य सूची व्यासका प्रमाणमैंसौं वलय व्यासका प्रमाण घटाइए। बहुरि ताकौं चौगुणा इष्ट वलय व्यास करि गुणिएं। बहुरि एक लाखका वर्गका भाग दीजिए जो प्रमाण होइ तितनें जंबूद्वीप समान गोल खंड जानने। ताका उदाहरण। लवण समुद्रका बाह्य सूची व्यास पांच लाख योजन तामें वलय व्यास दोय लाख योजन घटाएं तीन लाख योजन ताकों चौगुणा वलय व्यास आठलाख करि गुणें चौईस हजार कोड़ि इनकों एक लाखका वर्ग एक हजार कोड़ि ताका भाग दिएं चौईस भए। सोई लवण समुद्र विषै जंबूद्वीप समान खंड कल्पें चौईस हो हैं। ऐसें अन्यत्र जाननें ॥ ३१८ ॥

आगैं समुद्रनिका रसविशेष कहैं हैं;—

**लवणं वारुणितियमिदि कालदुगंतिमसयंभुरमणमिदि ।**
**पत्तेयजलसुवादा अवसेसा होंति इच्छुरसा ॥ ३१९ ॥**

लवणं वारुणित्रयमिति कालद्विकमंतिमस्वयंभूरमणमिति ।
प्रत्येकजलस्वादा अवशेषा भवंति इक्षुरसाः ॥ ३१९ ॥

**अर्थ**—लवण समुद्र वारुणी आदि तीन समुद्र ऐसे च्यारि समुद्र बहुरि कालोदक पुष्कर-वर अंतका स्वयंभूरमण समुद्र ए तीन क्रमतैं प्रत्येक अपनें अपनें नामके अनुसारि स्वाद धरै हैं। बहुरि जल स्वाद धरै है। अवशेष इक्षुरस स्वादको धरै हैं। **भावार्थ**—लवण समुद्रविषैं जो जल है ताका स्वाद लवण समान है। वारुणीवरविषैं स्वाद मदिरावत् है। क्षीरवरविषैं स्वाद दुग्धवत् है। घृतवरविषैं स्वाद घृतवत् है ऐसे च्यारि तो अपनें नामके अनुसारि रसकों धरै हैं। बहुरि कालोदक पुष्करवर स्वयंभूरमण इन तीनों विषै जल है ताका स्वाद जल समान ही है। बहुरि असंख्यात समुद्र तिनविषैं जो जल है ताका स्वाद सांठेका रस समान है॥ ३१९॥

आगैं तिन समुद्रनिविषैं जलचर जीवनिका संभवने न संभवनेकों हेतुपूर्वक कहैं हैं;—

**जलयरजीवा लवणे कालेयंतिमसयंभुरमणे य ।**
**कम्ममहीपडिवद्धे ण हि सेसे जलयरा जीवा ॥ ३२० ॥**

जलचरजीवा लवणे कालेऽतिमस्वयंभुरमणे च ।
कर्ममहीप्रतिवद्धे न हि शेषे जलचरा जीवाः ॥ ३२० ॥

**अर्थ**—जलचर जीव लवण समुद्रविषैं बहुरि कालोदकविषैं बहुरि अंतका स्वयंभू रमण-विषैं पाईए हैं। जातैं ए तीन समुद्र कर्मभूमि संबंधी हैं। बहुरि अवशेष सर्व समुद्र भोगभूमि संबंधी हैं भोगभूमिविषैं जलचर जीवोंका अभाव है। तातैं इन तीन विना अन्य समुद्रनिविषैं जलचर जीव नाहीं हैं॥ ३२०॥

आगैं स्थान निर्देश करि तीन समुद्रनिविषैं मत्स्यनिका शरीरकी अवगाहना कहैं हैं;—

**लवणदुगंतसमुद्दे णदीमुहुवहिम्हि दीह णव दुगुणं ।**
**दुगुणं पणसय दुगुणं मच्छे वासुदयमद्धकमं ॥ ३२१ ॥**

लवणद्विकांत्यसमुद्रे नदीमुखोदधौ दैर्घ्यं नव द्विगुणं ।
द्विगुणं पंचशतं द्विगुणं मत्स्ये व्यासोदयो अर्धक्रमौ ॥ ३२१ ॥

**अर्थ**—लवणादि दोय समुद्रनिविषैं बहुरि अंतका समुद्रविषैं जहां नदी प्रवेशका मुखविषैं बहुरि समुद्रका मध्यविषै क्रमतैं नव ताका दूणा तिनका दूणा पांचसै ताका दूणा मत्स्यनिका शरीर लंबा है। तातैं अर्द्ध प्रमाण व्यास है व्यासतैं आधा शरीर ऊंचा है। **भावार्थ**—मत्स्यनिके शरीरनिकी लंबाई लवण समुद्रविषैं जहां नदीनिका प्रवेश हो है तहां तीरविषैं तौ नव योजन है। बहुरि समुद्रका मध्य भागविषैं अठारह योजन है। बहुरि कालोदक समुद्रविषैं नदी प्रवेशरूप तीरविषैं तौ अठारह योजन अर मध्य भागविषै छत्तीस योजन है बहुरि स्वयंभू रमणविषै पांचसै योजन मध्यविषैं हजार योजन है। बहुरि सर्वत्र जो लंबाईका प्रमाण कह्या तातैं आधा चौड़ाईका प्रमाण है। बहुरि चौड़ाईके प्रमाणतैं आधा उंचाईका प्रमाण है॥ ३२१॥

अब मनुष्य क्षेत्र इतर क्षेत्रके विभागका अर कर्मभूमि भोगभूमिकी मर्यादाकों प्राप्त होते जे दोय पर्वत तिनका स्वरूप निरूपण करता संता तिनहीके विभागकों दृढ करनेकों तीन गाथा कहैं हैं;—

पुक्खरसयंभुरमणाणद्धे उत्तरसयंपहा सेला।
कुंडलरुचगद्धं वा सव्वे पुव्वं परिक्खित्ता॥ ३२२॥

पुष्करस्वयंभुरमणयोरर्धे उत्तरस्वयंप्रभौ शैलौ।
कुंडलरुचकार्धे वा सर्वे पूर्वं परिक्षिप्ताः॥ ३२२॥

अर्थ—पुष्करार्धविषै स्वयंभूरमणार्द्धविषै मानुषोत्तर स्वयंप्रभ पर्वत हैं। भावार्थ—पुष्कर नाम द्वीपका वलय व्यासका अर्द्ध भागविषै बीचि मानुषोतर नाम पर्वत है। बहुरि स्वयंभूरमण द्वीपका वलय व्यासका अर्द्धभागविषै बीचि स्वयंप्रभ नामा पर्वत है। कैसे हैं? कुंडल रुचकार्ध मिव कहिए जैसे कुंडल वर द्वीपविषैं बीचि कुंडल गिरि है। बहुरि रुचक वर द्वीपकै बीचि रुचक गिर है तैसे ही जाननें। बहुरि ए सर्व पर्वत पूर्व्व अपनें अपनें अभ्यन्तरवर्ती जे द्वीप वा समुद्रनिकों परिक्षेप करि वेढि करि जैसे नगरकों वेढि कोट हो है तैसे तिष्टे हैं॥ ३२२॥

मणुसुत्तरोत्ति मणुसा मणुसुत्तरलंघसत्तिपरिहीणा।
परदो सयंपहोत्ति य जहण्णभोगावणीतिरिया॥ ३२३॥

मानुषोत्तरांतं मनुष्याः मानुषोत्तरलंघशक्तिपरिहीनाः।
परतः स्वयंप्रभांतं च जघन्यभोगावनितिर्यंचः॥ ३२३॥

अर्थ—मानुषोत्तर पर्वत पर्यंत अढ़ाई द्वीपविषै ही मनुष्य हैं ते मनुष्य मानुषोत्तर, पर्व्वतकों उलंघन शक्तिकरि हीन हैं। मानुषोत्तर पर्वतकों उलंघि किसी मनुष्यकी जानेकी सामर्थ नाहीं। बहुरि इस मानुषोत्तर पर्वतके परें स्वयंप्रभ नामा पर्वत पर्यंत जघन्य भोगभूमियां तिर्यंच हैं॥ ३२३॥

कम्मावणिपडिबद्धो बाहिरभागो सयंपहगिरिस्स।
वरओगाहणजुत्ता तसजीवा होंति तत्थेव॥ ३२४॥

कर्मावनिप्रतिबद्धो बाह्यभागः स्वयंप्रभगिरेः।
वरावगाहनयुक्ताः त्रसजीवा भवंति तत्रैव॥ ३२४॥

अर्थ—स्वयंप्रभ नामा पर्वततैं परे जो बाह्य भाग सो कर्म्म भूमि संबंधी है। भावार्थ—स्वयंप्रभ पर्वतके परे कर्मभूमि पाइए है बहुरि उत्कृष्ट शरीरकी अवगाहना संयुक्त त्रस जीव तहां ही बाह्यविषै पाइए हैं॥ ३२४॥

आगें इस गाथाका अपर अर्द्धविषैं कह्या जो उत्कृष्ट अवगाहन ताकों एक इन्द्रियका अवगाहनपूर्वक कहैं हैं;—

अधियसहस्सं बारस तिचउत्थेक्कं सहस्सयं पउमे।
संखे गोम्हिय भमरे मच्छे वरदेहदीहो दु॥ ३२५॥

अधिकसहस्रं द्वादश त्रिचतुर्थमेकं सहस्रकं पद्मे ।
शंखे ग्रैष्मे भ्रमरे मत्स्ये वरदेहदीर्घं तु ॥ ३२५ ॥

अर्थ—साधिक हजार बारह तीन चतुर्थ भाग एक एक हजार योजन प्रमाण संख ग्रैष्म भ्रमर मच्छविषै उत्कृष्ट शरीरका दीर्घपना हो है। भावार्थ—एकेन्द्रीविषै कमलका साधिक हजार योजन बेंद्रीविषै शंखका बारह योजन तेन्द्रीविषै ग्रैष्म जो सहस्रपद नाना जीव ताका पौण योजन चौन्द्रीविषै भ्रमरका एक योजन पंचेन्द्रीविषै मच्छका एक हजार योजन शरीरकी लंबाईका उत्कृष्ट प्रमाण जानना ॥ ३२५ ॥

आगें तिनहीके व्यास अर उदय कहैं हैं;—

वासिगि कमले संख मुहुदओ चउपंचचरणमिह गोम्ही ।
वासुदओ दिग्घट्टमतदलमलिए तिपाददलं ॥ ३२६ ॥

व्यास एकं कमले शंखे मुखोदयौ चतुःपंचचरणं इह ग्रैष्मे ।
व्यासोदयौ दीर्घाष्टमतद्दलमलौ त्रिपाददलम् ॥ ३२६ ॥

अर्थ—कमल नालविषैं व्यास एक योजन है सो समान गोल आकार है तातैं ताका बाहुल्य भी तितना ही जानना। बहुरि शंखविषै मुख व्यास च्यारि योजन अर उदय जो ऊंचाई सो पांच चरण कहिए पांचका चौथा भाग ताका सवा योजन प्रमान जानना। बहुरि इहां ग्रैष्मविषै व्यास तौ दैर्घ्य ताके आठवें भाग सो तीन योजनका बत्तीसवां भाग प्रमाण अर उदय दीर्घ ताके सोलहें भाग सो तीन योजनका चौसठिवां भाग प्रमाण जानना। बहुरि भ्रमरविषै व्यास त्रिचरण कहिए तीन चौथा भाग ताकी पौण योजन प्रमाण अर उदय जो ऊंचाई सो दल कहिए आध योजन प्रमान जानना। तहां वासो तिगुणो परिही इत्यादि करणसूत्र करि कमलका क्षेत्रफल ल्याइए हैं। तहां एक योजन व्यास ताकों तिगुणा किएं तीन योजन परिधि हो है। याकों व्यासकी चौथाई पाव योजन करि गुणें पौण योजन होइ। याकों हजार योजन लंबाईकरि गुणें साढ़ा सातसै योजन प्रमान कमलका क्षेत्रफल हो है ॥ ३२६ ॥

आगें शंखका क्षेत्रफल ल्यावनेकौं करणसूत्र कहैं हैं;—

आयामकदी मुहदलहीणा मुहवासअद्धवग्गजुदा ।
विगुणा वेहेण हदा संखावत्तस्स खेत्तफलं ॥ ३२७ ॥

आयामकृतिः मुखदलहीना मुखव्यासार्धवर्गयुता ।
द्विगुणा वेधेन हता शंखावर्तस्य क्षेत्रफलम् ॥ ३२७ ॥

अर्थ—लंबाईका प्रमाणका वर्ग करिए तामें मुख व्यासका अर्द्ध प्रमाण घटाइए जो प्रमाण रहै तामें मुख व्यासका अर्द्ध प्रमाणका वर्ग मिलाए जो प्रमाण होइ ताकों दूणा करिए जो प्रमाण होइ ताकों वेध करि गुणिएं ऐसे किएं शंखावर्त्त क्षेत्रका क्षेत्रफल हो है। सो इहां लंबाई बारह योजन ताका वर्ग एक सौ चवालीस योजन तामें मुख व्यास-च्यारि योजनका आधा दोय योजन घटाएं एक

सौ वियालीस योजन तामें मुख व्यासकी आधा दोय योजन ताका वर्ग च्यारि मिलाएं एकसौ छियालीस योजन याकौं दूणां किएं दोयसै बाणवें योजन इनकों वेधका प्रमाण पांच चौथा भाग तिनकरि गुणें च्यारि करि अपवर्त्तन किएं तेहत्तरिको पांच गुणा करिए तीनसै पैसठि योजन प्रमाण संखका क्षेत्रफल हो है। इहां एह सूत्र कैसें कह्या ? सो वासनारूप मुरज क्षेत्रफल आदि करि विधान है सो संस्कृत टीकातैं जाननां। बहुरी तेइन्द्री चौइन्द्री पंचेन्द्रीनिका घनरूप क्षेत्रफल भुजकोटि व इत्यादि करण-सूत्र करि हो है सो लंबाई चौडाईको परस्पर गुणें जो जो प्रमाण होइ तितनां तितनां क्षेत्रफल जाननां। तहां तेइन्द्री ग्रैष्मका सत्ताईस योजन इक्यासीसै बाणवेका भाग दीजिए इतना क्षेत्रफल हैं। चौइन्द्री भ्रमरका तीन योजनका आठवां भाग प्रमाण क्षेत्रफल है पंचेन्द्री मत्स्यका १२५००० ००० साढा बारा कोडि योजन प्रमाण क्षेत्रफल हो है। अब इहां एकेन्द्रियादि जीवनिका घनरूप क्षेत्रफलनिका अल्प बहु प्रदेश जाननेंकों कहिए हैं। तहां अति अल्प तेइन्द्रीका घनफल है। तहां एक योजनके सात लाख अडासिठ हजार अंगुल होइं तौ सत्ताईस योजनका इक्यासीसैं बाणवे भागविषैं एक भागके केते अंगुल होहिं। तहां घनरूप राशिके गुणकार घनरूप ही होइ सो सात लाख अडसिठ हजारका घनकरि गुणिए तव अंगुल होइं ८१९२ ७६८०००।७६८०००।७६८००० बहुरि सूच्यंगुल तौं प्रमाणांगुल है अर इहां शरीरका प्रमाण व्यवहार अंगुलतैं है। सो पांचसै व्यवहार अंगुलका एक सूच्यंगुल होइ। अर घनरूप राशिका भागहार भी घन रूप होइ तातैं पाचसैका घनका भाग दीजिए ५००।५००।५०० बहुरि इहां तीनों जायगा की छह बिन्दी ऊपर अंगुलनिके प्रमाणकी छह बिंदीका अपवर्तन किए ऐसा भया ८१९२ ७६८ ७६८ ७६८०० बहुरि दोय जायगा सात सै अडासिठ थे तिनकी जायगा तीन करि संभेदन किएं दोयसै छप्पन अर तीन भए ८१९१ ३ २५६ ७६८००० बहुरि दोय दोयसै छप्पनकों परस्पर गुणें पणट्ठी ६५५३६ भए तिनकों सत्ताईसके नीचें इक्यासी बाणवेका भागहार था तिनकरि अपवर्त्तन किएं आठ भए। बहुरि तीन जायगा पांचका परस्पर गुणें एकसौ पचीसका भागहार भया तिनकरि सात लाख अड़सठि हजारका गुणकारका अपवर्त्तन किएं इकसठिसै चवालीस भए। अर दोय जायगा तीनका गुणकार था तिनकों परस्पर गुणें नव भए तव ऐसे भया २७।८।६१४४।९ ऐसे सत्ताईस आठ इकसठिसै चवालीस नव इनकों परस्पर गुणें जो प्रमाण होइ ताकों एक वार संख्यात स्थापि तिहंकरि घनांगुलकों गुणें तेन्द्रीका खात फल हो है। ताकी सहनानी ऐसी ६ १ इहां घनांगुलकी सहनानी ऐसी ६ संख्यातकी ऐसी १ जाननी। बहुरि ऐसेही चौइन्द्रीका खात फल करनां। तहां इकसिठसै चवालीस गुणाकारकों तहां घनफलविषै आठका भागहार है तातैं आठका अपवर्तन किएं सातसै अड़सठिका गुणकार होइ ऐसे पैसठि हजार पांचसै छत्तीस अर सातसै अडसठि अर नव तीन इनका परस्पर गुणनेतै जो प्रमाण होइ तितना घनांगुलका भया। सो ते-इन्द्रीके गुणकारतैं संख्यात अधिक भया ऐसे चौइन्द्रीकों घनांगुलका दोय वार संख्यातका गुणकार जाननां। ताकी सहनानी ऐसी ६ ११ ऐसेही बेन्द्रीके तीन वार ६ १११ चौइन्द्रीके चार वार ६ ११ ११ पंचेन्द्रीके पांच वार ११११ संख्यातका गुणाकारपना गुणकों जाननां ॥ ३२७ ॥

ऐसे उत्कृष्ट अवगाहनाका प्रसंग करि एकेंद्रियादिक जीव पृथ्वी आदि विशेषरूप हैं तिनका उत्कृष्ट वा जघन्य आयुका कहनेके अर्थि तीन गाथा कहैं हैं;—

सुद्धखरभूजलाणं बारस बावीस सत्त य सहस्सा ।
तेउतिए दिवसतियं सहस्सतियं दस य जेट्ठाओ ॥ ३२८ ॥

शुद्धखरभूजलानां द्वादश द्वाविंशतिः सप्त च सहस्राणि ।
तेजस्त्रये दिवसत्रयं सहस्रत्रयं दश च ज्येष्ठम् ॥ ३२८ ॥

**अर्थ**—शुद्ध खर पृथ्वी जल इनका बारह बाईस सात हजार वर्ष अर तेज आदित्रिकविषैं तीन दिन तीन हजार दश हजार वर्ष उत्कृष्ट आयु है । **भावार्थ**—मृत्तिका आदि शुद्ध पृथ्वी-कायिकका बारह हजार वर्ष, पाषाण आदि खर पृथ्वी कायिकका बाईस हजार वर्ष जल कायिकका सात हजार वर्ष, तेज कायिकका तीन दिन, वात कायिकका तीन हजार वर्ष, वनस्पति कायिकका दश हजार वर्ष प्रमाण उत्कृष्ट आयु है ॥ ३२८ ॥

वासदिणमास बारसमुगुवण्णं छक्क वियलजेट्ठाओ ।
मच्छाण पुव्वकोडी णव पुव्वंगा सरिसपाणं ॥ ३२९ ॥

वर्षदिनमासाः द्वादशैकोनपंचाशत् षट्काः विकलज्येष्ठम् ।
मत्स्यानां पूर्वकोटिः नव पूर्वांगानि सरीसृपाणाम् ॥ ३२९ ॥

**अर्थ**—वर्ष दिन मास बारह गुणचास छह विकलत्रयनिका ज्येष्ठ आयु है । **भावार्थ**—वेन्द्रीका बारह वर्ष, तेइन्द्रीका गुणचासदिन, चौइन्द्रीका छह महिना प्रमाण, उत्कृष्ट आयु है । बहुरि मत्स्यनिका कोड़िपूर्व प्रमाण उत्कृष्ट आयु है सो एक पूर्वांग चौरासी लाख वर्ष प्रमाण जाननां ३२९

बावत्तरि बादालं सहस्समाणाहि पक्खिउरगाणं ।
अंतोमुहुत्तमवरं कम्ममहीणरतिरिक्खाऊ ॥ ३३० ॥

द्वासप्ततिः द्वाचत्वारिंशत् सहस्रमानानि पक्ष्युरगाणाम् ।
अंतर्मुहूर्तमवरं कर्ममहीनरतिरश्चामायुः ॥ ३३० ॥

**अर्थ**—बहत्तरि बियालीस हजार प्रमाण पंखी उरगनिका आयु है । —**भावार्थ**—पंखी-निका बहत्तरि हजार वर्ष, उरग जे सर्पादि तिनका बियालीस हजार वर्ष प्रमाण उत्कृष्ट आयु है बहुरि शुद्ध पृथ्वीकों आदि देकरि सर्व ही कर्म्मभूमि संबंधी मनुक्ष वा तिर्यंचनिका जघन्य आयु अंतर्मुहूर्त प्रमाण है ॥ ३३० ॥

आगैं पहले आयुका निरूपण करि अब तिनहींका वेद विशेषकों निरूपै हैं;—

णिरया इगिविगला संमूछणपंचक्खा होंति संढा हु ।
भोगसुरा संढूणा तिवेदगा गब्भणरतिरिया ॥ ३३१ ॥

निरया एकविकलाः संमूर्छनपंचाक्षाः भवंति षंढाः खलु ।
भोगसुराः षंढोनाः त्रिवेदगा गर्भनरतिर्यंचः ॥ ३३१ ॥

अर्थ—नारकी एकेन्द्री विकलत्रय सन्मूर्छनपंचेन्द्री ए नपुंसक वेदी ही हैं। बहुरि भोगभूमियां मनुक्ष तिर्यंच अर देव ए नपुंसक विना दोय वेदी ही हैं। बहुरि गर्भजन्म भूमिके मनुक्ष तिर्यंच तीनों वेदके धारक हो हैं। आगैं प्रसंगका प्रसंगरूप अर्थका प्रतिपादन करि अब प्रकृत ज्योतिर्लोकका अधिकारका प्रतिपादन करैं हैं॥ ३३१॥

तहां तारादिकनिका स्थिति स्थान तीन गाथानि करि कहैं हैं;—

णउदुत्तरसत्तसए दस सीदी चदुदुगे तियचउक्के।
तारिणससिरिक्खबुहा सुक्कगुरुंगारमंदगदी॥ ३३२॥

नवत्युत्तरसप्तशतानि दश अशीतिः चतुर्द्विके त्रिकचतुष्के।
तारेनशशिऋक्षबुधाः शुक्रगुर्वंगारमंदगतयः॥ ३३२॥

अर्थ—निवै अधिक सातसै विषै उपरि दश असी च्यारि दोय स्थानविषै तीन च्यारि स्थान विषै जाइ क्रमतैं तारा इन शशि ऋक्ष बुध शुक्र गुरु अंगार मंदगति तिष्ठै हैं। भावार्थ—चित्रा पृथ्वीतैं लगाइ सातसै निवै योजन ऊपरि तौ तारे हैं। बहुरि तिनतैं दश योजन ऊपरि इन कहिए सूर्य है। बहुरि तिनतै असी योजन ऊपरि शशि कहिए चंद्रमा है। बहुरि तिनतैं च्यारि योजन ऊपरि ऋक्ष कहिए नक्षत्र हैं। बहुरि तिनतैं च्यारि योजन ऊपरि बुध है। बहुरि तिनतैं तीन योजन ऊपरि शुक्र है। बहुरि तिनतैं तीन योजन ऊपरि गुरु कहिए बृहस्पति है। बहुरि तिनतैं तीन योजन ऊपरि अंगार कहिए मंगल है। बहुरि तिनतैं तीन योजन ऊपरि मंदगति कहिए शनैश्चर है। ऐसे ज्योतिषी तिष्ठै हैं॥ ३३२॥

अवसेसाण गहाणं णयरीओ उवरि चित्तभूमीदो।
गंतूण बुहसणीणं विच्चाले होंति णिच्चाओ॥ ३३३॥

अवशेषाणां ग्रहाणां नगर्य उपरि चित्राभूमितः।
गत्वा बुधशन्योः विचाले भवंति नित्याः॥ ३३३॥

अर्थ—अठ्यासी ग्रहनिविषैं अव शेष तिनकी नगरी ऊपरि ऊपरि चित्रा भूमितैं जाइ बुध अर शनैश्चर इन दोऊनकै वीचि अंतराल क्षेत्रविषैं शाश्वती हैं॥ ३३३॥

अत्थइ सणी णवसये चित्तादो तारगावि तावदिए।
जोइसपडलबहल्लं दससहियं जोयणाण सयं॥ ३३४॥

आस्ते शनिः नवशतानि चित्रातः तारका अपि तावंतः।
ज्योतिष्कपटलबाहल्यं दशसहितं योजनानां शतम्॥ ३३४॥

अर्थ—शनैश्चर चित्रा भूमितैं नवसै योजन ऊपरि आस्ते कहिए तिष्ठै है। बहुरि तारे हैं ते भी तावत कहिए नवसै योजन पर्यंत तिष्ठै हैं। सो चित्रातैं सातसै निवै योजन ऊपरि सों लगाय नवसै योजन पर्यंत ज्योतिषी देवनिका पटलका बाहुल्य कहिए मोटाईका प्रमाण सो दश सहित एकसौ योजन प्रमाण जानना॥ ३३४॥

आगैं प्रकीर्णक तारानिका प्रकार अंतराल निरूपण है;—

तारंतरं जहण्णं तेरिच्छे कोससत्तभागो दु ।
पण्णासं मज्झिमयं सहस्समुक्कस्सयं होदि ॥ ३३५ ॥

तारांतरं जघन्यं तिर्यक् क्रोशसप्तभागस्तु ।
पंचाशत् मध्यमकं सहस्रमुत्कृष्टकं भवति ॥ ३३५ ॥

**अर्थ**—तारातैं ताराके वीचि तिर्यगरूप वरोवरिविषै अंतराल जघन्य एक कोशका सातवां भाग, मध्यम पचास योजन, उत्कृष्ट एक हजार योजन प्रमाण हो है ॥ ३३५ ॥

अब ज्योतिषीनिके विमानस्वरूप निरूपै हैं;—

उत्ताणट्ठियगोलगदलसरिसा सव्वजोइसविमाणा ।
उवरिं सुरणगराणि य जिणभवणजुदाणि रम्माणि ॥ ३३६ ॥

उत्तानस्थितगोलकसदृशाः सर्वज्योतिष्कविमानाः ।
उपरि सुरनगराणि च जिनभवनयुतानि रम्याणि ॥ ३३६ ॥

**अर्थ**—गोलक जो गोला ताका दल कहिए तिस गोलाकौं वीचिमैंसौं विदारि दोय खंड करिए तिसविषै जो एक खंड सो उत्तान स्थित कहिए तिस आधा गोलाकों ऊंचा स्थापित किया होय चौड़ा ऊपरि अर ताकी अणी नीचे ऐसे धस्या होइ ताका जैसा आकार तिह समान सर्व ज्योतिषीनिके विमान हैं । बहुरि तिन विमानानिके ऊपरि ज्योतिषी देवनिके नगर हैं । ते नगर जिन मंदिरनिकरि संयुक्त हैं । बहुरि रमणीक हैं ॥ ३३६ ॥

आगैं तिन विमाननिका व्यास अर वाहुल्य दोय गाथानिकरि कहैं हैं;—

जोयणमेक्कट्ठिकए छप्पण्णंठदाल चंदरविवासं ।
सुक्कगुरिदरतियाणं कोसं किंचूणकोस कोसद्धं ॥ ३३७ ॥

योजनं एकषष्ठिकृते षट्पंचाशदष्ठचत्वारिंशत् चंद्ररविन्यासौ ।
शुक्रगुर्वितरत्रयाणां क्रोशः किंचिदूनक्रोशः क्रोशार्धम् ॥ ३३७ ॥

**अर्थ**—एक योजनका इकसिठ भाग करिए तहां छप्पन भाग प्रमाण तो चन्द्रमाके विमानका व्यास है । बहुरि अठतालीस भाग प्रमाण सूर्यके विमानका व्यास है । बहुरि शुक्रका एक कोश, बृहस्पतिका किंचित ऊन एक कोश, इतर तीन बुध मंगल शनैश्चर इनका आध कोश प्रमाण विमान व्यास जाननां ॥ ३३७ ॥

कोसस्स तुरियमवरं तुरियहियकमेण जाव कोसोत्ति ।
ताराणं रिक्खाणं कोसं वहलं तु वासद्धं ॥ ३३८ ॥

क्रोशस्य तुरीयमवरं तुर्याधिकक्रमेण यावत् क्रोश इति ।
ताराणां ऋक्षाणां क्रोशं बाहुल्यं तु व्यासार्धम् ॥ ३३८ ॥

**अर्थ**—तारानिका विमाननिका जघन्य व्यास कोशका चौथा भाग प्रमाण है । बहुरि चौथाई अधिक एक कोश पर्यंत जाननां । तहां आध कोश पाणै कोश प्रमाण मध्यम व्यास

जाननां। एक कोश प्रमाण उत्कृष्ट व्यास जाननां। बहुरि शेष जे नक्षत्र तिनका विमान व्यास एक कोश प्रमाण जाननां। बहुरि सर्व विमाननिका बाहुल्य कहिए मोटाईका प्रमाण सो अपने अपने व्यासतें आधा जाननां ॥ ३३८ ॥

आगें राहु केतु ग्रहनिका विमान व्यास वा तिनका कार्य वा तिनका अवस्थानकों दोय गाथानिकरि कहैं हैं;—

राहुअरिट्ठविमाणा किंचूणं जोयणं अधोगंता।
छम्मासे पव्वंते चंदरवी छादयंति कमे ॥ ३३९ ॥

राहुरिष्टविमानौ किंचिदूनौ योजनं अधोगंतारौ।
षण्मासे पर्वांते चंद्ररवी छादयतः क्रमेण ॥ ३३९ ॥

अर्थ—राहु अर अरिष्ट कहिए केतु इन दोऊनिके विमान किछू घाटि एक योजन प्रमाण हैं। बहुरि ते विमान क्रम करि चंद्रमा अर सूर्यका विमानकै नीचे गमन करैं हैं। बहुरि छह मास भए पर्वका अंतविषैं चंद्रमा सूर्यकौं आछादैं हैं। राहु तौ चंद्रमाकौं आछादै है, केतु सूर्यकौं आछादै है याका ही नाम ग्रहण कहिए हैं ॥ ३३९ ॥

राहुअरिट्ठविमाणधयादुवरि पमाणअंगुलचउक्कं।
गंतूण ससिविमाणा सूरविमाणा कमे होंति ॥ ३४० ॥

राह्वरिष्टविमानध्वजादुपरि प्रमाणांगुलचतुष्कम्।
गत्वा शशिविमानाः सूर्यविमाना क्रमेण भवंति ॥ ३४० ॥

अर्थ—राहु अर केतुके विमाननिका जो ध्वजा दंड ताके ऊपरि च्यारि प्रमाणांगुल जाइ क्रम करि चंद्रमाके विमान अर सूर्यके विमान हैं। राहु विमानकै ऊपरि चंद्रमा विमान है केतु विमानकै ऊपरि सूर्य विमान हैं ॥ ३४० ॥

आगैं चंद्रादिकनिकै किरणनिका प्रमाण कहैं हैं;—

चंदिण बारसहस्सा पादा सीयल खरा य सुक्के दु।
अड्ढाइज्जसहस्सा तिव्वा सेसा हु मंदकरा ॥ ३४१ ॥

चंद्रेनयोः द्वादशसहस्राः पादाः शीतलाः खराश्च शुक्रे तु।
अर्धतृतीयसहस्राः तीव्राः शेषा हि मंदकराः ॥ ३४१ ॥

अर्थ—चन्द्रमा अर सूर्य इनकै बारह बारह हजार किरण हैं। तहां चन्द्रमाके किरण शीतल हैं सूर्यके किरण खर कहिए तीक्ष्ण हैं। बहुरि शुक्र है ताके अढाई हजार किरण हैं ते तीव्र कहिए प्रकाश करि उज्जल हैं। बहुरि अवशेष ज्योतिषी मंदकरा कहिए मंद प्रकाश संयुक्त है ॥ ३४१ ॥

आगैं चन्द्रमाका मंडलकी वृद्धि हानिका अनुक्रमकूं कहै हैं;—

चंदो णियसोलसमं किण्हो सुक्को य पण्णरदिणोत्ति।
होट्ठिल्ल णिच्च राहुगमणविसेसेण वा होदि ॥ ३४२ ॥

चंद्रो निजषोडशं कृष्णः शुक्लश्च पंचदशदिनांतम् ।
अधस्तनं नित्यं राहुगमनविशेषेण वा भवति ॥ ३४२ ॥

**अर्थ**—चन्द्रमण्डल है सो अपना सोल्हां भाग प्रमाण कृष्ण अर शुक्ल पंद्रह दिन पर्यंत हो है। **भावार्थ**—चन्द्रविमानका जो सोलह भागविषैं एक एक भाग एक एक दिनविषैं कृष्णपक्षविषैं तो श्यामरूप होइ अर शुक्लपक्षविषैं श्वेतरूप होइ स्वयमेव पंद्रह दिन पर्यंत परिनमैं है। तहां चन्द्रमाका विमानका क्षेत्र योजनका छप्पन इकसठिवां भाग प्रमाण $\frac{५६}{६१}$ है तो एक कलाका केता होइ। ऐसे ताकों सोलहका भाग दिएं आठ करि अपवर्त्तन किएं एक योजनका एकसौ बाईस भाग करि तामें सात भाग प्रमाण एक कलाका प्रमाण आया $\frac{७}{१२२}$ वहुरि एक कलाका इतना $\frac{७}{१}$ प्रमाण होइ तो सोलह कलानिका केता होइ ऐसे दोयका अपवर्त्तन करि गुणें छप्पन इकसठिवां भाग प्रमाण आवै। वहुरि अन्य कोई आचार्यनिके अभिप्रायकरि चंद्रविमानकै नीचे राहुविमान गमन करै है तिस राहुका सदा काल ऐसा ही गमन विशेष है जो एक एक कला चंद्रमाकी क्रमतै आछादे वा उघाडै है तिहकरि वृद्धि हानि है ॥ ३४२ ॥

आगैं चन्द्रादिकानिके विमानके वाहक कहिये चलावनेवाले देव तिनका आकार विशेष वा तिनकी संख्या कहैं हैं;—

**सिंहगयवसहजडिलस्सायारसुरा वहंति पुव्वादिं ।**
**इंदुरवीणं सोलससहस्समद्धद्धमिदरतिये ॥ ३४३ ॥**

सिंहगजवृषभजटिलाश्वाकारसुरा वहंति पूर्वादिम् ।
इंदुरवीणां षोडशसहस्राणि तदर्धार्धक्रममितरत्रये ॥ ३४३ ॥

**अर्थ**—सिंह हाथी वृषभ जटिलरूप आकारकों धारि देव हैं ते विमाननिकों पूर्व्वादि दिशानि प्रति वहंति कहिए लेइ चालैं हैं। ते देव चन्द्रमा अर सूर्य इनकें तौ प्रत्येक सोलह हजार हैं। वहुरि इंतारै तीनके आधे आधे हैं। तहां ग्रहनिके आठ हजार नक्षत्रनिके च्यारि हजार तारानिके दोय हजार विमान वाहक देव जाननें ॥ ३४३ ॥

आगैं आकाशविषैं गमन करते जे केई नक्षत्र तिनके दिशाभेद कहैं हैं;—

**उत्तरदक्खिणउड्ढाधोमज्झे अभिजिमूलसादी य ।**
**भरणी कित्तिय रिक्खा चरंति अवराणमेवं तु ॥ ३४४ ॥**

उत्तरदक्षिणोर्ध्वाधोमध्ये अभिजिन्मूलस्वातिश्च ।
भरणी कृत्तिका ऋक्षाणि चरंति अवराणामेवं तु ॥ ३४४ ॥

**अर्थ**—उत्तर १ दक्षिण १ उर्द्ध १ अधः १ मध्य १ इनविषैं क्रमतैं अभिजित १ मूल १ स्वाति १ भरणी १ कृत्तिका १ ए पंच नक्षत्र गमन करैं हैं। अवराणं कहिए क्षेत्रांतरकों प्रांत भएं जे अभिजित आदि पंच नक्षत्र तिनकी ऐसी अवस्थिति है ॥ ३४४ ॥

आगैं मेरु गिरितैं कितने दूरि कैसे गमन करैं हैं;—

**इगिवीसेयारसयं विहाय मेरुं चरंति जोइगणा ।**
**चंदतियं वज्जित्ता सेसा हु चरंति एक्कपहे ॥ ३४५ ॥**

एकविंशैकादशशतानि विहाय मेरुं चरंति ज्योतिर्गणाः ।
चन्द्रत्रयं वर्जयित्वा शेषा हि चरंति एकपथे ॥ ३४५ ॥

**अर्थ**—इकईस अधिक ग्यारहसै योजन मेरुकों छोडि ज्योतिषीसमूह गमन करैं हैं । **भावार्थ**—मेरु गिरितैं ग्यारहसैं इकईस योजन ऊपरैं ज्योतिषी मेरुकी प्रदक्षिणारूप गमन करैं हैं मेरुतैं ग्यारहसै इकईस योजन पर्यंत कोऊ ज्योतिषी न पाईए है । बहुरि चन्द्रमा सूर्य ग्रह इन तीन विना अन्य शेष सर्व्व ज्योतिषी एक पथविषै गमन करैं हैं । **भावार्थ**—चन्द्रमा सूर्य ग्रह तौ कदाचित् कोई कदाचित् कोई परिधिरूप मार्गविषै भ्रमण करैं हैं । बहुरि नक्षत्र अर तारे ए अपनां अपनां एक ही परिधिरूप मार्गविषैं गमन करैं हैं । अन्य अन्य मार्गविषै नाहीं भ्रमण करैं हैं ॥ ३४५ ॥

अब जंबूद्वीपतैं लगाय पुष्करार्द्ध पर्यंत चन्द्रमा सूर्यनिका प्रमाण निरूपै है;—

**दो दोवग्गं बारस बादाल बहत्तरिंदुइणसंखा ।**
**पुक्खरदलोत्ति परदो अवट्ठिया सव्वजोइगणा ॥ ३४६ ॥**

द्वौ द्विवर्गो द्वादश द्वाचत्वारिंशत् द्वासप्ततिरिंद्विनसंख्या ।
पुष्करदलांतं परतः अवस्थिताः सर्वज्योतिर्गणाः ॥ ३४६ ॥

**अर्थ**—दोय दोय वर्ग बारह वियालीस बहत्तरि चन्द्रमा सूर्यनिकी संख्या पुष्करार्द्ध पर्यंत है । **भावार्थ**—जंबूद्वीपविषैं दोय लवण समुद्रविषैं च्यारि धातुकी खंडविषैं बारह कालोदकविषैं वियालीस पुष्करार्द्धविषैं बहत्तरि चन्द्रमा हैं । अर इतनें इतनें ही सूर्य है । बहुरि पुष्करार्द्धतैं परैं जे ज्योतिषी देवनिका गण है ते अवस्थित है । कदाचित अपनें अपनें स्थानतैं गमन नाहीं करैं हैं जहां ही स्थिररूप तिष्ठै है ॥ ३४६ ॥

आगैं तहां तिष्ठैं हैं जु ध्रुव तारे तिनकों निरूपैं हैं;—

**छक्कदि णवतीससयं दसयसहस्सं खबार इगिदालं ।**
**गयणतिदुगतेवण्णं थिरतारा पुक्खरदलोत्ति ॥ ३४७ ॥**

षट्कृतिः नवत्रिंशशतं दशकसहस्रं खद्वादश एकचत्वारिंशत् ।
गगनत्रिद्विकत्रिपंचाशत् स्थिरताराः पुष्करदलांतम् ॥ ३४७ ॥

**अर्थ**—छहकी कृति ३६ अर गुणतालीस अधिक सौ १३९ अर दश अधिक हजार १०१० अर बिंदी बारह इकतालीस ४११२० अर बिंदी तीन दोय तरेपन ५३२३० इतने पुष्करार्ध पर्यंत स्थिर तारे हैं । **भावार्थ**—जंबूद्वीपविषै छत्तीस लवण समुद्रविषै एक सौ गुणतालीस धातुकी खंडविषैं एक हजार दश कालोदकविषैं इकतालीस हजार एकसौ वीस पुष्करार्द्धविषै तरेपन हजार दोयसै तीस ध्रुव तारे हैं । ते कबहूं अपने स्थानतें गमन नाहीं करै हैं । जहांके तहां स्थिररूप रहैं हैं ॥ ३४७ ॥

आगैं ज्योतिषी समूहनिके गमनका क्रम विचारैं हैं;—

**सगसगजोइगणद्धं एक्के भागम्हि दीवउवहीणं ।**
**एक्के भागे अद्धं चरंति पंतिक्कमेणेव ॥ ३४८ ॥**

स्वकस्वकीयज्योतिर्गणार्धं एकस्मिन् भागे द्वीपोदधीनाम् ।
एकस्मिन् भागे अर्धं चरंति पंक्तिक्रमेणैव ॥ ३४८ ॥

**अर्थ**—अपनां अपनां ज्योतिषी गणका अर्द्ध तो द्वीप समुद्रनिका एक भागविषै अर अर्द्ध एक भागविषैं पंक्तिका अनुक्रम करि विचरै हैं। **भावार्थ**—जिह द्वीप वा समुद्रविषैं जेते ज्योतिषी हैं तिनविषै आधे ज्योतिषी तौ तिह द्वीप वा समुद्रका एक भागविषै गमन करैं हैं आधे एक भाग विषैं गमन करैं हैं। ऐसे पंक्ति लिएं गमन जाननां ॥ ३४८ ॥

आगैं मानुषोत्तर पर्व्वततैं परे चंद्रमा सूर्यनिके अवस्थानका अनुक्रम रूपै है;—

**मणुसुत्तरसेलादो वेदियमूलादु दीवउवहीणं ।**
**पण्णाससहस्सेहि य लक्खे लक्खे तदो वलयं ॥ ३४९ ॥**

मानुषोत्तरशैलात् वेदिकामूलात् द्वीपोदधीनाम् ।
पंचाशत्सहस्रैश्च लक्षे लक्षे ततो वलयं ॥ ३४९ ॥

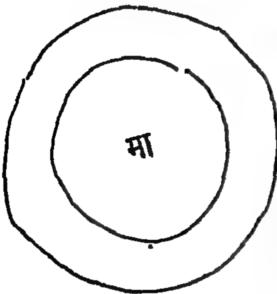
**अर्थ**—मानुषोतर पर्व्वततैं परे अर द्वीप समुद्रनिकी वेदीनिके परै तौ पचास हजार योजन जाइ प्रथम वलय है। बहुरि तिस प्रथम वलयतैं परैं लाख लाख योजन परैं जाइ द्वितीयादिक वलय है। **भावार्थ**—मानुषोतर पर्व्वततैं पचास हजार योजन व्यास परैं जो परिधि सो वाह्य पुष्करार्द्ध द्वीपका प्रथम वलय है। तिह परैं एक लाख योजन व्यास जाइ जो परिधि सो दूसरा वलय है ऐसैं लाख लाख योजन व्यास जाइ जो परिधि सो वलय जाननां। बहुरि पुष्कर द्वीपकी अंत वेदिकाके परैं पचास हजार योजन व्यास जाइ जो परिधि सो पुष्कर समुद्रका प्रथम वलय है। तातैं परैं लाख योजन व्यास जाइ जो परिधि सो द्वितीय वलय है। ऐसे लाख लाख योजन व्यास परैं जाइ जो परिधि सो वलय जाननां। ऐसै ही अन्य द्वीप समुद्रनिविषैं वलय जाननां ॥ ३४९ ॥

आगैं तिन वलयनविषै तिष्ठते जे चन्द्रमा सूर्य तिनकी संख्या कहैं हैं;—

**दीवद्धपढमवलये चउदालसयं तु वलयवलयेसु ।**
**चउचउवड्ढी आदी आदीदो दुगुणदुगुणकमा ॥ ३५० ॥**

द्वीपार्धप्रथमवलये चतुश्चत्वारिंशच्छतं तु वलयवलयेषु ।
चतुश्चतुर्वृद्धयः आदिः आदितः द्विगुणद्विगुणक्रमः ॥ ३५० ॥

**अर्थ**—मानुषोत्तर पर्व्वततैं बाह्यस्थित जो पुष्करार्धं ताका प्रथम वलयविषै एक सौ चवालीस है। **भावार्थ**—जो मानुषोत्तर पर्व्वत परे पचास हजार योजन परे जाइ जो परिधिविषैं एक सौ चवालीस चन्द्रमा एक सौ चवालीस सूर्य है। ऐसै ही द्वितियादि वलय वलयविषै च्यारि च्यारि वधती चन्द्रमा सूर्य जाननें। १४८। १५२।१५६।१६०।१६४।१६८।१७२। बहुरि उत्तरोत्तर द्वीप वा समुद्रका आदिविषैं पूर्व्व पूर्व्व द्वीप वा समुद्रका आदितै दूणे दूणे क्रमतैं जाननें। जैसे पुष्करार्द्धका आदिविषै एकसौ चवालीस, तातैं दूणें पुष्कर समुद्रका आदि विषैं हैं, तातैं द्वितीयादि वलयविषैं च्यारि च्यारि वधती हैं। ऐसे ही सर्व्वत्र जानने ॥ ३५० ॥



आगैं तिस तिस वलयविषैं तिष्ठते चन्द्रमातै चंद्रमाका अंतराल सूर्यतैं सूर्यका अंतराल परिधि विषै कहैं हैं;—

**सगसगपरिधिं परिधिगरविंदुभजिदे दु अंतरं होदि।**
**पुस्सम्हि सव्वसूरट्ठिया हु चंदा य अभिजिम्हि॥ ३५१॥**

स्वकस्वकपरिधिं परिधिगरवींदुभक्ते तु अंतरं भवति।
पुष्ये सर्वसूर्याः स्थिता हि चंद्राश्च अभिजिति॥ ३५१॥

**अर्थ**—अपनां अपनां सूक्ष्म परिधिकौं परिधिविषैं प्राप्त जे चन्द्र वा सूर्य तिनके प्रमाणका भाग दिएं अंतराल हो है। तहां प्रथम जंवूद्वीपतैं लगाय दोऊ तरफका अभ्यन्तर द्वीप समुद्रनिका वा वलयनिका व्यास मिलाएं बाह्य पुष्करार्धका प्रथम वलयका सूची व्यास छियालीस लाख योजन हो है। मानुषोत्तर पर्वतका सूची व्यास पैतालीस लाख योजन ताभैं दोऊ तरफका वलयका व्यास पचास हजार योजन मिलाएं छियालीस लाख योजन हो है। याका 'विष्कंभवग्गदहगुण' इत्यादि करणसूत्रकरि सूक्ष्म परिधिविषैं एक कोड़ि पैतालीस लाख छियालीस हजार च्यारि योजन प्रमाण होइ ताकौं परिधिविषैं प्राप्त सूर्य वा चन्द्रमाका प्रमाण एक सौ चवालीस ताका भाग दिएं एक लाख एक हजार सतरह योजन अर गुणतीस योजनका एक सौ चवालीसवां भाग प्रमाण १०१० १७ $\frac{२९}{१४४}$ सूर्यतैं सूर्यका चन्द्रतैं चन्द्रका अंतराल परिधिविषैं विंवसहित जाननां बहुरि विंव जो चंद्र वा सूर्यका मंडल तीह विना अंतराल ल्याइये है जो विंवसहित अंतरालविषै योजन थे तिनमें सों एक घटाइए १०१०१६। बहुरि तिस एक योजनकौं गुणतीसका एकसौ चवालीसवां भाग सहित समछेद विधान करि जोड़िए तव १ $\frac{२९}{१४}$ $\frac{१४४}{१४४}$ $\frac{२९}{१४४}$ एकसौ तहेत्तरिका एकसौ चवालीसवां भाग होइ तामें चन्द्रका विंव छप्पनका इकसठिवां भाग सो समछेद विधान करि घटाइए $\frac{१७३}{१४४}$ $\frac{५६}{६१}$ $\frac{१०५५३}{८७८४}$ $\frac{८०६४}{८७८४}$ $\frac{२४८९}{८७८४}$ तव चौईसै निवासीकौं सित्यासीसै चौरासीका भाग दीजिए इतना भया ऐसे करि चन्द्रमातैं चन्द्रमाका विंव रहित अंतराल एक लाख एक हजार सोलह योजन अर चौईसै निवासी योजनका सित्यासीसै चौरासी भागविषैं एक भाग प्रमाण आया। बहुरि तीह एकसौ तहेत्तरिका एकसौ चवालीसवां भागविषैं अठतालीसका इकसठिवां भाग प्रमाण सूर्यविंवकौं समछेद विधान करि घटाए छत्तीसै इकतालीसका सित्यासीसै चौरासीवां भाग आया $\frac{१७३}{१४४}$ ६१ $\frac{१०५५३}{८७८४}$ $\frac{६९१२}{८७८४}$ $\frac{३६४१}{४}$ सो इतनैं करि अधिक एक लाख एक हजार सोलह योजन प्रमाण सूर्यतैं सूर्यका अंतराल जाननां। ऐसे ही अन्य वलयनिविषै अंतराल ल्यावना। बहुरि सर्व्व वलयसंबंधी सूर्य तौ पुष्य नक्षत्रविषै स्थित है। अर चन्द्रमा अभिजित नक्षत्रविषैं स्थित है। **भावार्थ**—सूर्यका विमान अर पुष्य नक्षत्रका विमान नीचे ऊपरि तिष्ठै हैं। अर चन्द्रमाका विमान अर अभिजित नक्षत्रका विमान नीचे ऊपरि है॥ ३५१॥

आगैं असंख्यात द्वीप समुद्रनिविषैं प्राप्त जे चन्द्रादिक तिनकी संख्या ल्यावनेकौं गछका प्रमाण ल्यावता थका ताका कारणभूत असंख्यात द्वीप समुद्रनिकी संख्याकौं आठ गाथानिकरि कहैं हैं;—

रज्जूद्दलिदे मन्दिरमज्झादो चरिमसायरंतोत्ति ।
पडदि तदद्धे तस्स दु अब्भंतरवेदिया परदो ॥ ३५२ ॥
रज्जूद्दलिते मंदरमध्यतः चरमसागरांत इति ।
पतति तदर्धे तस्य तु अभ्यंतरवेदिका परतः ३५२ ॥

अर्थ—राजूकों आधा किएं मेरुका मध्यतैं लगाय अंतका सागर पर्यंत प्राप्त हो है । भावार्थ-मध्यलोक एक राजू है तिस एक राजूकों आधा करिए तब मेरुगिरिका मध्यतैं लगाय अंतका स्वयंभूरमण समुद्रपर्यंत एक पार्श्वविषै क्षेत्र हो हैं। बहुरि तिसकों आधा किएं तिसकी अभ्यन्तर वेदिकाके परै ॥ ३५२ ॥

कहा सो कहैं हैं;—

दसगुणपण्णत्तरिसयजोयणमुवगम्म दिस्सदे जम्हा ।
इगिलक्खहिओ एक्को पुव्वगसव्वुवहिदीवेहिं ॥ ३५३ ॥
दशगुणपंचसप्ततिशतयोजनमुपगम्य दृश्यते यस्मात् ।
एकलक्षाधिकः एकः पूर्वगसर्वोदधिद्वीपेभ्यः ॥ ३५३ ॥

अर्थ—दश गुणां पिचहतरिसै योजन जाइ राजू दीसै हैं। भावार्थ—स्वयंभूरमण समुद्रकी अभ्यन्तर वेदीतैं पिचहत्तरि हजार योजन परै जाइ तिस आध राजूका अर्द्धभाग हो है। काहेतैं जातैं सर्व्व पूर्व्व द्वीप वा समुद्रनिके व्यासकों जोड़े जो प्रमाण होइ तातैं उत्तर द्वीप वा समुद्रका व्यास एक लाख योजन अधिक हो है। सो इसही कथनकों स्पष्ट करैं हैं—स्वयंभूरमण समुद्रका बत्तीस लाख योजन प्रमाण व्यास कल्पि करि जंबूद्वीपका आध लाख सहित सर्व्व द्वीप समुद्रनिका वलय व्यासके अंकनिकों जोड़िए ५०००० । २ ल । ४ ल । ८ ल । १६ ल । ३२ ल । तब कल्पना करि आप राजूका प्रमाण साढ़ा वासठि लाख योजन भए, बहुरि याकों आधा किएं इकतीस लाख पचीस हजार योजन प्रमाण दूसरी बार आधा किया राजूका प्रमाण होइ तिहविषै पूर्व्वद्वीप समुद्रनिका वलय व्यास ५०००० । २ ल । ४ ल । ८ ल । १६ ल । जो जोड़े तीन लाख पचास हजार योजन प्रमाण भया। सो घटाए तिस स्वयंभूरमण समुद्रका अभ्यन्तर वेदिकातैं परै पिचहत्तरि हजार योजन समुद्रमें गए आध राजूका अर्ध हो है। बहुरि तीह द्वितीय बार आधा किया राजू प्रमाण ३१२५०० कों आधा किएं पंद्रह लाख वासठि हजार पांच सै योजन तीसरी बार आधा किया राजूका प्रमाण हो है। तीहविषै पूर्व्व द्वीप समुद्रनिका वलय व्यास ५०००० । २ ल । ४ ल । ८ ल मिलाए साढ़ा चौदह लाख योजन भए। सो घटाएं तिस स्वयंभूरमण द्वीपका अभ्यन्तर वेदिकातैं एक लाख बारह हजार पांचसै योजन परै द्वीपविषै जाइ तृतीयबार आधा किया हुवा राजू क्षेत्रका प्रमाण हो है ऐसैंही पूर्व्व पूर्व्वकों आधा करि तीहविषै पूर्व्व द्वीप समुद्रनिका वलय व्यास घटाएं जो जो प्रमाण रहै तितनां तितनां तिस तिस द्वीप वा समुद्रकी अभ्यन्तर वेदिकातैं परै जाइ चतुर्थवार आदि आधा किया राजू क्षेत्रका प्रमाण जाननां ॥ ३५३ ॥

पुणरवि छिण्णे पच्छिमदीवब्भंतरिमवेदियापरदो ।
सगदलजुदपण्णत्तरिसहस्समोसरिय णिवडदि सा ॥ ३५४ ॥

पुनरपि छिन्नायां पश्चिमद्वीपाभ्यंतरवेदिकापरतः ।
स्वदलयुतपंचसप्ततिसहस्रमपसृत्य निपतति सा ॥ ३५४ ॥

**अर्थ**—बहुरि भी दूसरी वार छिन्न कहिए आधा किया राजू ताकौं आधा किएं ताके पीछे जो द्वीप ताकी अभ्यन्तर वेदिकातैं परै अपना आधा साठा सैतीस हजार करि संयुक्त पिचहत्तरि योजन परै जाइ सो राजू पड़ै है । संदृष्टि—द्वितीय वार छिन्न राजूका प्रमाण इकतीस लाख पचीस हजार योजन ताका आधा किएं पंद्रह लाख बासठि हजार पांचसै योजन होत संतैं स्वयंभू रमणतैं पाछला स्वयंभू रमण द्वीप ताकी अभ्यन्तर वेदिकातै परै तिस द्वीपविषै अपनां आधा करि अधिक पिचहत्तरि हजारके भएं एक लाख बारह हजार पांचसै सो इतनें योजन जाइ सो राजू पड़ै है ॥३५४॥

अर्द्ध चतुर्थ अष्टमादि राजूके अंश किएं जहां जहां मध्य क्षेत्र होइ तहां तहां राजूका पड़ना कहिए है;—

**दलिदे पुण तदणंतरसायरमज्झंतरत्थवेदीदो ।**
**पडदि सदलचरणण्णिदपण्णत्तरिदससयं गत्ता ॥ ३५५ ॥**

दलिते पुनः तदनंतरसागरमध्यांतरस्थवेदीतः ।
पतति स्वदलचरणान्वितपंचसप्ततिदशशतं गत्वा ॥ ३५५ ॥

**अर्थ**—बहुरि ताकौं आधा किएं ताके अनंतरि अहींद्रवरनामा समुद्रकी अभ्यन्तर वेदिकातै परे अपनां आधा अर चौथाई करि संयुक्त पिचहत्तरि दश सैकड़ां प्रमाण योजन जाइ सो राजू पड़ै है । संदृष्टि—तीसरी वार आधा किया खंड पंद्रह लाख बासठि हजार पांचसै १५६२५०० ताकौं आधा किएं सात लाख इक्यासी हजार दोयसै पचास योजन होत संते तिस स्वयंभूरमण द्वीपके अनंतरि अहीन्द्रवरनामा समुद्र ताका अभ्यन्तर तटतैं परै तिस समुद्रविषै पिचहत्तरि दश सैकड़ाका पिचहत्तरि हजार भए ताका आधा साढासै तीस हजार अर चौथाई पौणा उगणीस हजार इनकौं मिलाए एक लाख इकतीस हजार दोयसै पचास १३१२५० भए । सो इतने योजन जाइ सो राजू पड़ै है ॥ ३५५ ॥

**इदि अब्भन्तरतडदो सगदलतुरियट्ठमादिसंजुत्तं ।**
**पण्णत्तरिं सहस्सं गंतूण पडेदि सा ताव ॥ ३५६ ॥**

इति आभ्यन्तरतटतः स्वकदलतुर्याष्टमादिसंयुक्तम् ।
पंचसप्ततिसहस्रं गत्वा पतति सा तावत् ॥ ३५६ ॥

**अर्थ**—ऐसेही अभ्यन्तर तटतैं अपनां अर्द्ध चौथा भाग आठवां भाग आदि संयुक्त पिचहत्तरि हजार योजन जाइ जाइ सो राजू तावत् पड़ै है । तहां चौथीवार आधा किएं अहींद्रवर नाम द्वीपका अभ्यन्तर तटतैं अपनां आधा ३७५००० चौथाई १८७५० अष्टमांस ९३७५ करि संयुक्त पिचहत्तरि ७५००० हजार योजन ४०६२५ जाइ एक पडै है बहुरि पांचई वार आधा किएं तातैं पिछला समुद्रकी अभ्यन्तर वेदीतैं अपनां आधा चौथाई अष्टमांश सोलव्हां अंश करि संयुक्त पिचहत्तरि हजार योजन परै जाइ राजू पड़ै है, बहुरि छठीवार आधा किएं तिस समुद्रतैं

पिछला द्वीपकी अभ्यन्तर वेदींतैं अपना अर्द्ध चौथाई आठवां सोलवां वत्तीसवां भाग संयुक्त पिचहत्तरि हजार योजन परै जाइ राजू पड़े है ऐसेही पूर्व्वै जेता अधिक होइ तातैं आधा आधा अधिकका अनुक्रम करि पिछला समुद्र वा द्वीपकी अभ्यन्तर वेदीतैं परै जाइ सो राजू पड़े है। तहां आधा आधाका अनुक्रम करि जहां एक योजनका अधिकपणा उवरै तहां पर्यंत पिचहत्तरि हजारके अर्द्धछेद सतरह हो हैं। वहुरि तहां पीछे उवर्या जो एक योजन ताके अंगुल करिए तव सात लाख अड़सठि हजार होंहिं तिनका आधा आधा क्रम करि एक अंगुल उवरै तहां पर्यंत उगणीस अर्द्धछेद हो है। तिन सर्व्व छेदनिकों मिलाय ताका नाम संख्यात किया। वहुरि उवर्या था एक अंगुल ताके प्रदेश करि आधा आधा अनुक्रम लिएं अधिक करतैं सूच्यंगुलके अर्धछेदनिका जो प्रमाण तितनी वार भएं एक प्रदेशका अधिकपणा आनि रहै सो संख्यात अर सूच्यंगुलका अर्द्धछेद मिलाय संखेज्जरूवसंजुद इत्यादि गाथा कहैं हैं ॥ ३५६ ॥

संखेज्जरूवसंजुदसूईअंगुलछिदिप्पमा जाव।
गच्छंति दीवजलही पडादि तदो साद्धलक्खेण ॥ ३५७ ॥

संख्येयरूपसंयुतसूच्यंगुलछेदप्रमा यावत्।
गच्छंति द्वीपजलधयः पतति ततः सार्धलक्षेण ॥ ३५७ ॥

अर्थ—संख्यातरूप करि संयुक्त ऐसे सूच्यंगुलके अर्द्धछेदनिका जो प्रमाण यावत् होइ तावत् ते द्वीप समुद्र पूर्वोक्त अनुक्रम करि अभ्यन्तर वेदीतैं परै जाइ राजूका पतनरूप क्षेत्रकौं प्राप्त हो है। तहां पीछे सर्व्व द्वीप समुद्रनिविषै ड्योढ़ लाख १५०००० योजन परैं अभ्यन्तर वेदीतैं परैं जाइ राजू पड़ै है। कैसे सो कहिए है। अंतधणं गुणगुणियं आदिविहीणं रूऊणुत्तरभजियं इस करणसूत्र करि अन्तका धन पिचहत्तरि हजार ताकौं गुणकार दोय करि गुणें ड्योढ़ लाख भए तिनमैं आदिका प्रमाण एक प्रदेश घटाइए अर एक घाटि गुणकारका प्रमाण एक ताका भाग दीजिए तव एक प्रदेश घाटि ड्योढ़ लाख योजन प्रमाण भए। सो संख्यात सहित सूच्यंगुलका अर्द्धछेदप्रमाण द्वीप समुद्र भए। अन्तविषै अभ्यतर वेदीतै इतने परें जाइ राजू पडै है। वहुरि आधा आधाकी अर्थसंदृष्टि ऐसी—७५००० ७५०००/२ ७५०००/२५ ००० सू २ २/२ २०००४।२।१ इहां संदृष्टि
२२

विषै पहले तौ पिचहत्तरि हजार तै लगाइ आधे आधे किए आधा करनेकों दोयका भागहार जानना, ताके आधा करनेकों तिस भागहारकों दोयका गुणकार जांननां। वहुरि मध्यभेदानिके ग्रहण निमित्ति वीचि विंदी जाननी। वहुरि आगें सूच्यंगुलतैं लगाय आधा आधा क्रम जाननां वहुरि मध्य भेदनिके ग्रहण निमित वीचि विंदी जाननी। वहुरि आगें सूच्यंगुलतैं लगाय आधा आधा क्रम जानना। सूच्यंगुलकी सहनानी दोयका अंक जाननां वहुरि मध्य भेदनिके ग्रहण निमित वीचि विंदी जाननीं। वहुरि आगैं च्यारि दोय एक प्रदेश जाननें ऐसै आधा आधाका प्रमाण जाननां। ऐसे पूर्व्व पूर्व्व प्रमाणतैं उतर उतर प्रमाण अधिक करनां। वहुरि अंक संदृष्टि कर जैसे चौंसठितैं लगाय एक पर्यंत आधा आधा कीये इहां जाननी। ६४।३२।१६।८।४।२।१ ऐसैं

ज्योढ़ लाख ज्योढ़ लाख योजनका क्रम करि लवण समुद्र पर्यंत असंख्यात द्वीप समुद्रनिकों जाइ करि ॥ ३५७॥

कहा सो कहैं हैं;—

**लवणे दु पडिदेकं जंबूए देज्जमादिमा पंच।**
**दीउदही मेरुसला पयदुवजोगी ण छव्वेदे ॥ ३५८ ॥**

लवणे द्विः पतितः एकं जंबौ देहि आदिमाः पंच।
द्वीपोदधयः मेरुशलाः प्रकृतोपयोगिनः न षट् चैते ॥ ३५८ ॥

अर्थ—लवण समुद्रविषैं दोय अर्द्ध छेद पड़े है। कैसैं? राजूकों आधा आधा करतैं जहां दोय लाखका अर्द्ध छेद करिए तब सतरह १७ वार भएं एक योजन उवरैं बहुरि एक योजन उवरैं। बहुरि एक योजनके अंगुल सात लाख अडसठि हजार तिनके अर्द्धछेद करिए तब उगणीस वार भएं एक अंगुल उवरैं। बहुरि राजूका अर्धछेद किएं प्रथम अर्द्धछेद मेरुकै मध्य पड्या सो ऐसे सतरह उगणीस एक अर्द्धछेद मिलि संख्यात अर्द्धछेद भए। बहुरि एक अंगुल उवस्या था सो वह सूच्यंगुल है। सो सूच्यंगुलके अर्द्धछेद इतने छेछे। इहां पल्यके अर्द्धछेदनिका वर्ग प्रमाण सूच्यंगुलके अर्धछेद जानने। इनकों मिलाए संख्यात अधिक सूच्यंगुलके अर्द्धछेद प्रमाण एक लाख योजनके अर्द्धछेद भए तिनकी सहनानी ऐसी छेछे १ इहां संख्यात अधिककी सहनानी ऊपरि ऐसे १ जाननीं। इतने अर्द्धछेदनिविषैं अपनयन त्रैराशिक विधि करि घटाएं जो प्रमाण आवैं तितनी द्वीप समुद्रनिकी संख्या जाननीं। अपनयन त्रैराशिक विधि कैसैं सो कहैं हैं। राजूका अर्द्धछेद इतने कहे छेछेछे ३ / ७ तहां पल्यके अर्द्धछेदनिका असंख्यातवां भाग प्रमाण तौ गुण्य जाननां छे / ७ बहुरि पल्यके अर्द्धछेदनिका वर्ग तिगुणा सो गुणकार जाननां। छे छे ३ तहां जो इतने छेछे ३ गुणकारकों देखि करि गुणकार प्रमाण राशि घटावनेकों गुण्यविषैं एक घटाइए तौ इतना १ / छेछे घटावनेके अर्थि गुण्यमें कितना घटाइये ऐसैं त्रैराशिक करिए तहां प्रमाण राशि ऐसा छेछे ३ फलराशि १ इच्छा राशि ऐसा १ / छेछे फल करि इच्छाकों गुणि प्रमाणका भाग दीजिए तहां भाज्य राशि अर भागहार राशि दोऊनिविषैं पल्य अर्द्धछेदनिका वर्ग ऐसा छेछे तिनकों समान देखि भागहारविषैं उवर्या तीनका अंक ताका भाज्यविषैं असंख्यात उवरे तीह करि साधिक एककों भाग दीजिए। इतनां गुण्यविषैं घट्या। ऐसैं करि अपनां साधिक एकका तीसरा भाग करि हीन पल्यका अर्द्ध छेदनिका असंख्यातवां भाग प्रमाण गुण्यको पल्यका अर्द्धछेदनिका वर्ग अर तीन करि गुणें जो प्रमाण होइ इतने सर्व्व द्वीप समुद्र हैं तिनकी सहनानी ऐसे छे छे छे ३ इहां साधिक तृतीय भाग घटावनेकी

सहनानी ऐसी । ) जाननी इनविषैं आधे द्वीप आधे समुद्र जानने ७ ) ऐसैं द्वीप समुद्रनिकी
३ १
संख्या कहि अब जाका अधिकार है ताकों कथनविषैं जोड़ै है । जंबूद्वीप लाख योजन प्रमाण तासौं लाख योजन रहै । तहां लवण समुद्रका अभ्यन्तर तटतैं ड्योढ़ लाख योजन परैं लवण समुद्रविषैं जाइ अर्द्ध पड़ै है । ऐसैं दो वहुरि ताका आधा लाख योजन भएं लवण समुद्रका अभ्यंतर तटतैं पचास हजार योजन परैं जाइ अर्द्धच्छेद पडै है ऐसैं दोइ अर्द्धछेद जाननें। वहुरि तहां एक जंबूद्वीपकूं देहु । भावार्थ— दोय अर्द्ध छेदनिविषैं एक अर्द्धछेद तो लवण समुद्रका गिनना । अर एक अर्द्ध विषैं पचास हजार योजन जंबूद्वीपके मिलाएं लाख योजन होइ सो इस अर्द्धछेदकों जंबूद्वीपहीका गिननां ऐसे ए अर्द्धछेद कहे । वहुरि इन अर्द्धछेदनिविषैं आदिके जंबूद्वीपादि पांच द्वीप समुद्र संबंधी पांच अर्द्धछेद अर मेरुशलाका कहिए राजूकों आधा करतें प्रथम अर्द्धछेद कह्या सो ऐसैं ए छह अर्द्धछेद इहां अधिकाररूप ज्योतिषी विंवनिका प्रमाण ल्यावनेविषैं उपयोगी कार्यकारी नाहीं जातैं तीन द्वीप दोय समुद्रनिके विंवनिका प्रमाण जुदा ग्रहण करैंगे तातैं पांच अर्द्धछेद तो ए कार्यकारी नाहीं अर मेरुशलाका रूप प्रथम अर्द्धछेदनिविषैं कोई द्वीप समुद्र आया नाहीं तातैं सो कार्यकारी नाहीं ऐसे छह अर्द्धछेद आगैं घटावैंगे ॥ ३५८ ॥

कहां सो कहैं हैं;—

**तियहीणसेढिछेदणमेत्तो रज्जुच्छिदी हवे गच्छो ।**
**जंबूदीवच्छिदिणा छरूवजुत्तेण परिहीणो ॥ ३५९ ॥**

त्रिकहीनश्रेणिछेदनमात्रः रज्जुछेदः भवेत् गच्छः ।
जंबूद्वीपछेदेन षड्रूपयुक्तेन परिहीनः ॥ ३५९ ॥

**अर्थ**—तीन घाटि जगच्छ्रेणीका अर्द्धप्रमाण एक राजूके अर्द्धछेद हैं । तिनमें जंबूद्वीप लाख योजन प्रमाण ताके अर्द्धछेद छह अर्द्धछेदनि करि संयुक्त घटाएं ज्योतिषी विंवनिकी संख्या ल्यावनेविषैं गच्छका प्रमाण हो है । तहां जगच्छ्रेणी अर्द्धछेद इतने हैं छे छे छे ३ इहां पल्यके
७
अर्द्धछेदनिकी सहनानी ऐसी छे अर नीचे असंख्यातकी सहनानी ऐसी ७ ताका भागहार जाननां। वहुरि आगैं पल्यके अर्द्धछेदनिका वर्गका गुणाकी सहनानी ऐसी छे छे छे ३ ताका गुणकार जाननां । वहुरि इनमें तीन अर्द्धछेद घटाएं राजूके अर्द्धछेद होंहि जातैं जगच्छ्रेणीकै सातवें
३
भाग राजू है। सो सातके तीन अर्द्धछेद होंहि ताकी सहनानी ऐसी छे छे छे ३ इहां ऊपरि घटा-
७
वनेकी सहनानी ऐसी ३ जाननी वहुरि इन अर्द्धछेदनिका प्रमाणविषैं जंबूद्वीपकै अभ्यन्तर पचास हजार योजन अर वाह्य पचास हजार योजन मिलि एक लाख योजन प्रमाण जंबूद्वीप संबंधी अर्द्धछेद कह्या था सो इन लाख योजननिके अर्द्धछेद घटाइए । तहां एक लाखके अर्द्धछेद तिनमें छह

करिए तब सत्रह १७ बार भएं एक योजन उवरै। बहुरि एक योजनके अंगुल सात लाख अडसठि हजार तिनके अर्धच्छेद करिए तब उगणीस बार भएं एक अंगुल उवरै। बहुरि राजूका अर्धच्छेद कीएं प्रथम अर्धच्छेद मेरुके मध्य पड्या सो ऐसें सत्रह उगणीस एक अर्धच्छेद मिलि संख्यात अर्धच्छेद भए। बहुरि एक अंगुल उवर्या था सो वह सूच्यंगुल है। सो सूच्यंगुलके अर्धच्छेद इतने छे छे। इहां पल्यके अर्धच्छेदनिका वर्गप्रमाण सूच्यंगुलके अर्धच्छेद जाननें। इनकौं मिलाएं संख्यात अधिक सूच्यंगुलके अर्धच्छेद प्रमाण एक लाख योजनके अर्धच्छेद भए। तिनकी सहनानी ऐसी छे छे᾿। इहां संख्यात अधिककी सहनानी उपरि ऐसी ? जाननी। इतने अर्धच्छेद राजूके अर्धच्छेदनिविषैं अपनयन त्रैराशिक विधि करि घटाएं जो प्रमाण आवै तितनी द्वीप समुद्रनिकी संख्या जाननी। अपनयन त्रैराशिक विधि कैसें? सो कहै हैं—राजूके अर्धच्छेद इतनें कहे छे छे छे ३ तहां पल्यके अर्धच्छेदनिका असंख्यातवां भाग प्रमाण तौ गुण्य जाननां छे। बहुरि पल्यके अर्धच्छेदनिका वर्ग तिगुणा सो गुणकार जानना छे छे ३। इहां जो इतने छे छे ३ गुणकारकौं देखि करि गुणकार प्रमाण राशि घटावनेंकौं गुण्यविषैं एक घटाइए तौ इतना घटावनेंके अर्थि गुण्यमेंसौं कितना घटाइए ऐसैं त्रैराशिक करिए। तहां प्रमाण राशि ऐसा छे छे ३ फलराशि एक १ इच्छा राशि ऐसा छे छे᾿। फल करि इच्छाकौं गुणि प्रमाणका भाग दीजिए, तहां भाज्यराशि अर भागहार राशि दोऊनिविषैं पल्यका अर्धच्छेदनिका वर्ग ऐसा छे छे। तिनकौं समान देखि भागहार विषैं उवर्या तीनका अंक ताका भाज्यविषैं संख्यात उवरे तीहकरि साधिक एककौं भाग दीजिए, इतना गुणविषैं घट्या। ऐसैं करि साधिक एकका तीसरा भाग करि हीन पल्यका अर्धच्छेदनिका असंख्यातवां भाग प्रमाण गुण्यकौं पल्यका अर्धच्छेदनिका वर्ग अर तीनिकरि गुणें जो प्रमाण होइ तामैं तीन घटाइए। इतनैं सर्वद्वीप समुद्र हैं। तिनकी सहनानी ऐसी छे छे छे ३। ३। इहां साधिक तृतीय भाग घटावनेंकी सहनानी ऐसी ३ जाननी। इन विषैं आधे द्वीप आधे समुद्र जाननें। ऐसैं द्वीप समुद्रनिकी संख्या कहि अब जाका अधिकार है ताकौं कथन विषैं जोडैं हैं। जंबूद्वीप लाख योजन प्रमाण ताके अर्धच्छेद तिनमें छह अर्द्धछेद और मिलाइए, इनकों जोडि जो प्रमाण होइ तितनैं अर्द्धछेद राजूके अर्द्धछेदनिमैंस्यौं घटाएं जो प्रमाण होइ तितनां सर्व द्वीप समुद्र संबंधी चंद्र सूर्यादिकनिके प्रमाण ल्यावनेंकौं गच्छका प्रमाण जाननां **भावार्थ**—यहु पूर्वैं द्वीपसमुद्रनिकी संख्या कही तामैं छह घटाएं इहां गच्छका प्रमाण हो है॥ ३५९॥

आगैं तिन ज्योतिषी विंवनिकी संख्या ल्यावनेविषैं जो गछ कहा ताकी आदि कहैं हैं;—

**पुक्खरसिंधुभयधणं चउघणगुणसयछहत्तरी पभओ।**
**चउगुणपचओ रिणमवि अडकादिमुहमुवरि दुगुणकमं॥ ३६०॥**

पुष्करसिंधूभयधनं चतुर्घनगुणशतषट्सप्ततिः प्रभवः।
चतुर्गुणप्रचयः ऋणमपि अष्टकृतिमुखमुपरि द्विगुणक्रमं॥ ३६०॥

**अर्थ**—स्थानिकनिका जो प्रमाण सो गच्छ कहिए वा पद कहिए। बहुरि गछविषैं जो पहला स्थानविषैं प्रमाण सो आदि कहिए वा प्रभव कहिए वा मुख कहिए। बहुरि स्थान स्थान

प्रति जितनां जितनां बधै सो प्रचय कहिए। बहुरि सर्व स्थानकां संबंधी वृद्धिका प्रमाण विनां जो आदि ताकौं जोड़ें जो प्रमाण होइ सो आदि धन कहिए। बहुरि सर्व स्थानकां संबंधी वृद्धिकों जोड़ें जो प्रमाण होइ सो उत्तर धन कहिए। सो इहां पुष्कर नामा समुद्रका आदि धन अर उत्तर धन मिलाएं च्यारिका घन चौंसठि तीह करि गुण्या हूवा एक सौ छिहंत्तरि प्रमाण उभय धन हो है सो इहां प्रभव जाननां। बहुरि एक एक द्वीप वा समुद्र प्रति चौगुणा चौगुणा वधती धन है सो प्रचय जाननां। बहुरि ऋणविषै आठकी कृति चौसठि तीह प्रमाण तो मुख जाननां। बहुरि क्रमतैं द्विगुण द्विगुण वधता है सो प्रचय जाननां। ऐसे धनराशि ऋणराशिकौं जानि धनराशिविषै ऋणराशिकों घटाएं स्थान स्थानविषै प्रमाण जाननां। तहां पुष्कर समुद्रका आदि धन उत्तर धन कैसें ल्यावनां सो कहिए हैं—आदितैं आदि दूणा दूणा क्रमतैं कहे थे तातैं पुष्करार्द्ध द्वीपका आदि वलयविषै एक सौ चवालीस थे तिनतैं दूणे पुष्कर समुद्रका आदि वलयविषै हैं। १४४।२ सो इहां मुख जाननां। बहुरि पदहतमुखमादिधनं इस सूत्रकरि गछकरि गुण्या हुवा मुखका प्रमाण सो आदि धन है। सो इहां बत्तीस वलय हैं। तातैं गच्छका प्रमाण बत्तीस तिहकरि मुखकौं गुणें जो मुखविषै दोयका गुणकार था ताकों बत्तीस करि गुणि अर एकसो चवालीसकै आगैं चौसठिका गुणकार स्थापिए। १४४।६४ इतनां तौ आदि धन जाननां· बहुरि "व्येकपदार्द्धघ्नचयगुणो गच्छ" उत्तरधनं इस सूत्रकरि एक घाटि गछका आधा करि चयकों गुणि तीहकरि गछकौं गुणें उत्तर धन हो है। सो इहां एक घाटि गछ इकतीस ३१ ताका आधा $\frac{३१}{२}$ करि चयका प्रमाण एक एक वलयविषै च्यारि च्यारि वधती है, तातैं च्यारिकरि गुणिए $\frac{३१।४}{२}$। बहुरि इनकौं गछ बत्तीसकरि गुणिए, $\frac{३१}{२}$।४।३२। बहुरि भागहारका दूवा करि गुणकारका चौका अपवर्त्तन किएं दोय होय तीहकरि बत्तीसका गुणकार गुणें चौसठि होइ। ऐसैं इकतीसकौं चौसठि गुणां करिए ३१।६४ इतनां उत्तरधन हुवा। बहुरि इस उत्तर धनविषै चौसठि ऋण मिलावनां सो उत्तर धनविषै चौसठिका गुणकार जानि गुण्यविषै एक मिलाया तब बत्तीसकौं चौसठि गुणां करिए। इतनां उत्तरधन भया ३२।६४। इहां ऋणका मिलावनां बहुरि याहीका घटावनांसो सुगम गणित आवनेके अर्थि करिए हैं। बहुरि आदि धन अर उत्तर धनविषै गुण्य बत्तीस इनकों मिलाइ एक सौ छिहंतरि गुण्य किया अर चौसठि गुणकार किया। ऐसे चौसठि गुणां एक सौ छिहंतरि १७६।६४ प्रमाण पुष्कर समुद्रका उभय धन सो ज्योतिर्बिंबनिका प्रमाण ल्यावनैंके अर्थि जो गछ कह्या था ताका प्रभव कहिए आदि जाननां। बहुरि यातैं चौगुणां वारुणीवर द्वीपविषै धन जाननां। कैसैं सो कहिए हैं। पूर्व्व आदितैं दूणां इहां आदि वलयविषै है सो मुख १४४।२।२ जांननां। बहुरि पदहतमुखमादिधनं इस सूत्र करि याकों इहां वलय चौसठि है तातैं गछका प्रमाण चौसठि तीहकरि गुणिए १४४।२।२।६४। बहुरि दोय दुवानिकौं परस्पर गुणें च्यारि होइ १४४।६४।४ ऐसैं आदि धन भया। बहुरि "व्येक पदार्धघ्नचयगुणो गच्छः उत्तरधनं" इस सूत्र करि एक घाटि गछ प्रमाण तरेसठि ६३ ताका आधा $\frac{६३}{२}$ कों वलय वलय प्रति वधती प्रमाणरूप चय च्यारि करि गुणिए $\frac{६३}{२}$। ४ बहुरि याकौं गछ चौसठि करि गुणिए $\frac{६३}{२}$।४।६४ बहुरि दोयके भागहार करि च्यारिका अपवर्त्तन करि दूवाकौं

चौंसठिके आगें स्थापिए ६४।६४ यामैं पूर्वोक्त दूणा ऋण मिलाइये सो दुगुणां चौंसठि मिलाइए ६४।२ सो दुगुणा चौसठिका गुणकार समान देखि गुण्यविषै एक मिलाइए ६४।६४।२। बहुरि सर्वत्र चौंसठि गुणा एक सौ छिहंतरि करनां तातैं जिह भांति वत्तीस रहै तैसैं संभेदन करि चौसठि की जायगा तौ वत्तीस करिए अर दोय आगैं धरिए ३२। २।६४।२ बहुरि दोय दूवानिकौं पर-स्पर गुणि च्यारिका अंक लिखिए ३२।६४।४ ऐसे उत्तर धन होइ। बहुरि आदि धन १४४।६। ४।४ अर उत्तर धन दोऊनिकौं मिलाएँ चौसठि गुणां एक सौ छिहंतरिका चौगुणा उभय धन होइ ऐसैही एक एक द्वीप वा समुद्रविषै चौगुणा चौंगुणा तौ धन जाननां। अर जो उत्तर धन विषै ऋण मिलाया था सो पुष्करवर समुद्रविषै तौ ऋण आठकी कृति जो चौसठि तिह प्रमाण जाननां। अर ऊपरि दूणा परि दूणा जाननां। ऐसैं धनविषै आदि तौं चौंसठि गुणा एकसौ छिहंतरि १७६।६४बहुरि उत्तर गुणकार च्यारि४ गछ पूर्वोक्त प्रमाण ऐसा छे छे छे ३ इनकों ल्याइ॥ ३६०॥

इनका संकलनरूप धनकौं ल्यावताथका सर्व ज्योतिषी विंवनिके प्रमाण ल्यावनेंका विधान कहैं हैं;—

**आणिय गुणसंकलिदं किंचूणं पंचठाणसंठवियं।**
**चंदादिगुणं मिलिदे जोइसविंवाणि सव्वाणि॥ ३६१॥**

आनाय्य गुणसंकलितं किंचिदूनं पंचस्थानसंस्थापितम्।
चंद्रादिगुणं मिलिते ज्योतिष्कविंवानि सर्वाणि॥ ३६१॥

**अर्थ—**"पदमेत्ते गुणयारे अण्णोण्णं गुणिय रूवपरिहीणे। रूऊणगुणेणहिए मुहेण गुणयम्मि गुणगणियं।" इस करण सूत्रकरि गछ प्रमाण गुणकारकौं परस्पर गुणि तामें एक घटाइ ताकौं एक घाटि गुणकारका भाग देइ मुख करि गुणें गुणकाररूप सर्व गछके जोड़का प्रमाण हो है सो। यहां गछका प्रमाण ऐसा छे छे छे ३ सो इतनी जायगा गुणकारका प्रमाण च्यारि तातैं च्यारिका अंक मांडि परस्पर गुणिए। तहां इस गछविषै उपरिका राशि छे जगच्छ्रेणीका अर्द्ध छेद प्रमाण ऐसा छे छे छे ३ बहुरि च्यारिकौं दोयका संभेदन करिए तव दोय जायगा दोय दोय होइ २।२ तहां 'तम्मेतदुगुणे रासी' इस करण सूत्रके न्यायकरि तिस जगच्छ्रेणीका अर्द्धछेद राशि छे छे छे ७ ३ प्रमाण दूवा मांडि परस्पर गुणें जगच्छ्रेणी होइ। बहुरि दोय दोय जायगा दोय दोय थे तातैं दूसरी वार भी तैसैं ही ऊपरिका राशि छे छे छे ३ प्रमाण दूवानिकों परस्पर गुणें जगच्छ्रेणी होइ औंर इन दोऊ जगच्छ्रेणीनिकों परस्पर गुणें जगत्प्रतर होइ। ऐसैं ऊपरिका राशि प्रमाण गुणकारकौं परस्पर गुणें तौ जगत्प्रतर भया। बहुरि नीचे ऋणरूप राशि गुण्यका साधिक तृतीय भाग मात्र था ३ तिसविषैं सतरह तो लाखके अर्द्धछेद थे तिन प्रमाण दोयवार दूवानिको परस्पर गुणें एक लक्षका वर्ग भया। १ ल १ ल। बहुरि अंगुलनिके अर्धछेद उगणीस थे तिन प्रमाण दोयवार दूवानिकों परस्पर गुणें सात लाख अडसठि हजारका वर्ग भया ७६८० ००।७६८०००। बहुरि सूच्यंगुलका अर्धछेद प्रमाण दोयवार दूवानिकों परस्पर गुणें प्रतरांगुल

भया। वहुरि छह अर्द्धछेद इहां उपयोगी न कहि घटाए थे तिन प्रमाण दोयवार दूवानिकौं परस्पर गुणें चौसठिका वर्ग होइ। वहुरि जगच्छ्रेणीका अर्द्धछेदमैंस्यौं तीन वटाएं राजूके अर्द्धछेद होहिं ऐसा कहि घटाए थे। तिन प्रमाण दोयवार दूवानिकौं मांडि परस्पर गुणें सातका वर्ग भया। ऐसैं ए सर्व अर्द्धछेद घटाए थे तिन प्रमाण दोयवार दोयका अंक मांडि परस्पर गुणें जो जो प्रमाण भया ताका भागहार जाननां। जातैं "विरलिज्जमाणरासिं जेत्तियमेत्ताणि हीणरूवाणि। तेसिं अण्णोण्ण हदी हारो उप्पण्णरासिस्स" ऐसा करणसूत्र पूर्वैं कहि आए हैं। ऐसैं गछप्रमाण गुणकारका परस्पर गुणनां भया। वहुरि यामें एक घटाइए ताकी सहनानी ऐसी वहुरि याकौं एक घाटि गुणकार तीन ताका भाग दीजिए। वहुरि मुखका प्रमाण चौसठि गुणां एकसौ छिहंतरि तीहकरि गुणिए तव धन राशिका जोड़ दिएं जगत्प्रतरकौं चौसठि गुणां एकसौ छिहंतरि करि गुणिए अर ताकौं प्रतारांगुलकौं सात लाख अडसठि हजारका वर्ग अर लाखका वर्ग अर चौंसठिका वर्ग अर सातका वर्ग अर तीन करि गुणे ताका भाग दीजिए तामें एक घटाइए इतना संकलित धन=१७६।६४। हो है। इहां जगत्प्रतरकी सहनानी ऐसी=प्रतरांगुलकी ऐसी ४

४।७६८०००।७६८०००। १ ल। १ ल। ६४। ६४। ७। ७। ३।

जांननीं। वहुरि ऋण राशिका संकलित धन ल्याइए तहां गुणाकारका प्रमाण दोय है तातें पूर्वोक्त गच्छका जितनां प्रमाण तितनां दूवा मांडि परस्पर गुणिए। तहां उपरितन राशि प्रमाण दूवा मांडि परस्पर गुणें जगच्छ्रेणी होइ। वहुरि नीचै ऋणरूप राशी तिहविषै सतरह आदि प्रमाण दूवा मांडि परस्पर गुणें एक लक्ष अर सात लाख अडसठि हजार अर चौसठि अर सात होइ इनका भाग दीजिए। वहुरि इनमें एक घटाइए, वहुरि मुख चौसठि करि गुणिएं, वहुरि एक घाटि गुणकार एक ताका भाग दीजिए ऐसैं करतै ऋण राशिका संकलित धन चौसठि गुणां जगछ्रेणीकौं सूच्यंगुलकौं सात लाख अडसठि हजार अर एक लाख अर सात अर चौसठि अर एक करि गुणि ताका भाग दीजिए। तामें एक घटाइए इतनां भया ६४ २।७६८०००।१ल।६४।७१ इहां जगच्छ्रेणीको सहनानी ऐसी— सूच्यंगुलकी ऐसी २ जाननी। अव तिस धन राशिविषै जो एकसौ छिहंतरिकार गुणकार था अर नीचै चौसठिका भागहार था तिन दोऊनिकौं सोलाकरि अपवर्त्तन किएं एकसौ छिहंतरिकी जायगा ग्यारह हुवा, चौसठिकी जायगां च्यारि हुवा। वहुरि गुणकारके चौसठिकौं भागहारके चौसठि करि अपवर्त्तन किएं दोऊ जायगा अभाव भया। वहुरि दोय जायगा सात लाख अडसठि हजार अर दोय जायगा लाख तिनकी सोलह विन्दीं स्थापिए। वहुरि अंगुलनिका दोय जायगा सातसै अडसठिका अंक रह्या तिनकौं तीनकरि संभेदन करि तिनकी जायगा दोयसै छप्पन लिखिए आगैं तीनका अंक लिखिए। वहुरि दोय जायगा दोयसै छप्पन भए तिनकौं परस्पर गुणें पण्णट्ठी होइ। वहुरि दोय जायगा तीनका अंक भए अर एक जायगा तीनका अंक आगैं था इनकौं परस्पर गुणें सत्ताईस होइ। वहुरि सत्ताईसकौं सातका वर्ग गुणचास करि गुणें तेरहसै तेईस होइ इनकौं जो चौंसठिकी जायगा च्यारि भए थे तिन करि गुणें वावनसै वाणवै होइ। ऐसैं करि जगत्प्रतरकौं ग्यारहका गुणकार अर तरांगुलकौं पणट्ठी अर पांच हजार दोय सै वाणवैके

आगैं सोल्ह विन्दी तिनकरि गुणें जो प्रमाण होइ ताका भागहार दिएं धन राशिका गुणसंक-
=११
लित धन हो है ४।६५=५२९२००००००००००००००००। वहुरि जंबूद्वीपतैं लगाय पुष्कराद्धपर्यन्त दोढोवगा इत्यादि चंद्रादिकका प्रमाण कह्या २।४।१२।४२।७२। तिनकौं मिलाएं एकसौ वत्तीस भए। वहुरि मानुषोत्तर पर्वत परैं पुष्करार्द्ध द्वीपविपै चंद्रमानिका प्रमाण ल्यावनकों कहैं हैं। "पदमेगेण विहीणं दुभाजिदं उत्तरेण संगुणिदं। पभवजुदं पदगुणिदं पद गणिदं तं वियाणाहि" इस करण सूत्र करि इहां वलय आठ है। तातैं गछका प्रमाण आठ तामैं एक घटाइ ७ ताका आधा करि ७/२ उत्तर जो वलय वलय प्रति ववतीका प्रमाण च्यारि तिहकरि गुणिए २८/२ ४ अपवर्त्तन करिए तव चौदह भए १४ इनविपैं प्रभव जो प्रथम वलयविपै प्रमाणरूप मुख एकसौ चवालीस जोड़िए १५८। वहुरि इनकौं गछ आठकरि गुणिए तव वारहसौ चौसठि भए इनविपै एकसौ वत्तीस जंवूद्वीप आदिकके मिलाएं तेरहसै छिनवै होइ सो इनकों जो पूर्वं ऋण संकलित घन भया था तिनमैं घंटाइए हैं। जातैं ऋणस्यऋणं राशेर्द्धनं इस वचनकरि ऋणमैं स्यौं घटावनां अर राशिमैं मिलावनां इन दोऊनिका एक अर्थ है। तहां ऋण संकलित धन सहित तेरहसैं छिनवैका समछेद करिए तव ऐसा होइ—१३९६। सू २।७६८०००। १ ल। ६४।७।१। सू २।७६८०००। १ ल।६४।७।१ सो यहु गुणकार भागहारादिकका अपवर्तनादिक किएं भाज्य राशिकौं परस्पर गुणैं संख्यात सूच्यंगुल प्रमाण भया। सो इनकों पूर्वोक्त ऋण संकलित धनका भाज्य विपै घटाईए तव ऐसा भया।२।७६८०००।१ल।७।६४।१ इहां संख्यात्त सूच्यंगुलकी सहनानी ऐसी २ ? जाननीं। अर आगैं घटावनैंकी सहनानी ऐसी—जाननी। ऐसैं ऋण संकलित धनीविपै एक जगश्रेणी है। ताका सहित ऋण सहित जो धनसंकलित घन पूर्व्वं कह्या तीहस्यौं समान छेद करिए तव ऐसा—सू २।६४।७६८०००।१ ल।७।६४।३।४। ७६८०००।७६८०००।१ ल।१ ल ७।७।६४।६४।३। भया। इसविपै सूच्यंगुल विना औरं सर्व गुणकारनिकों संख्यातरूप मनि इस प्रमाणकों संख्यात सूच्यंगुल गुणित जगछ्रेणी प्रमाण ऋणराशि भया। ताकी सहनानी ऐसी—२ इनकों पूर्वोक्त घन संकलित ऐसा=४।६५=५२९२।१६ इहां सोल्ह विंदीनिकी सहनानी ऐसी १६ जाननीं। सो इहां जगत्प्रतरविपै श्रेणीकौं श्रेणीका गुणाकार है तातैं दोय वार श्रेणी है। तहां एक जगच्छ्रेणीकों ऋण राशिकी जगच्छ्रेणीकै समान देखि तहांही दूसरी गुणकाररूप जगच्छ्रेणीविपै घटाएं किंचित न्यूनपणा आया ऐसे करि गुण संकलित धन कहिए गुणकार विपै जोड़का प्रमाण ताकौं ल्यायैं किंचित न्यून किएं संख्यात सूच्यंगुल गुणित जगच्छ्रेणीकरि हीन जगत्प्रतर किंचिन्न्यून ग्यारह गुणां ताकों प्रतरांगुल पणट्ठी प्रमाणकौं वावनसै वाणवै आगैं सोल्ह विंदीका गुणकार करि ताका भाग दीजिए इतनां प्रमाण भया ०—२ ?।११।
४।६५=५२९२।१६
इहां जगत्प्रतरके आगैं किंचिन्न्यूनकी सहनानी ऐसी ०—जाननी अर आगैं संख्यात सूच्यंगुलकी ऐसी २ ? सहनानी जाननी। अव इस प्रमाणकौं पांच जायगा स्थापि एक जायगा एक करि गुणें चन्द्रनिका प्रमाण होइ एक जायगा एक करि गुणें सूर्यनिका प्रमाण होइ। एक जायगा अठ्यासी

करि गुणें ग्रहनिका प्रमाण होइ। एक जायगा अठाईसकरि गुणें नक्षत्रनिका प्रमाण होइ एक जायगा छँयासठि हजार नवसै पिचहत्तरि कोड़ाकोड़ि करि गुणें तारानिका प्रमाण होइ इन सबनिकों जोड़ें।

=०-२ १|१|१|१=०२ १|१|१|१=०२ १|१|१|८८

४|६५=५२९२|१६|४|६५=५२९२|१६४|६५=५२९२|१६

=०२ १|१|१|२८=०२ १|१|१|६६९७५|१४

४|६५=५२९२|१६ ४|६५=५२९२|१६

जगत्प्रतरकों सांत तीन छह सात दोय पांच अंक अर दश विंदी अर आगैं बारहसै अठ्याणैव इनका गुणकार अर प्रतरांगुल पणट्ठी आगैं वावनैसै बाणवै सोल्ह विंदी इनका भागहार भया। सो इतनें सर्व्व ज्योतिषी बिंब हैं।=७३६७२५००००००००००१२९८

४|६५=५२९२०००००००००००००००० बहुरि

स्थान सदृश अपवर्त्तन कहिए हीन अधिक अंकनिकों न।गिणिकरि दाहकी विषै दाहकी सैंकड़ा विषै सैंकड़ा इत्यादि यथास्थान अपवर्त्तन करनां तिसन्याय करि सात तीननै आदि दे करि गुणकारके वीस अंक अर पांच दोयनैं आदि दैकरि भागहारके वसि अंकनिका अपवर्तन करि दोय जायगा अभाव करना।ऐसा मनविषै विचारि 'वेसदछप्पण्णंगुल' इत्यादि सूत्रकरि दोयसै छप्पन अंगुलका वर्ग जो पणट्ठी गुणित प्रतरांगुल ताका भाग जगत्प्रतरकों दीजिए इतनें ४|६५।· ज्योतिषी बिंब है। ऐसा आचार्यनैं कह्या। सोई असंख्यात द्वीप समुद्र संबंधी सर्व ज्योतिषी बिंबनिका प्रमाण जाननां ॥ ३६१ ॥

आगैं एक चंद्रमाका परिवाररूप ग्रहनक्षत्र तारे तिनिका प्रमाण कहैं हैं;—

**अडसीदट्ठावीसा गहरिक्खा तार कोडकोडीणं।**
**छावट्ठिसहस्साणि य णवसयपण्णत्तरिगि चंदे ॥ ३६२ ॥**

अष्टाशीत्यष्टाविंशतिः ग्रहऋक्षयोस्तारा: कोटिकोटीनाम्।
षट्षष्टिसहस्राणि च नवशतपंचसप्ततिरेकस्मिन् चंद्रे ॥ ३६२ ॥

**अर्थ**—अठ्यासी अर अठाईस ग्रह अर नक्षत्र हैं। **भावार्थ**—ग्रह अठ्यासी हैं नक्षत्र अठाईस हैं। बहुरि तारे छयासठि हजार नवसै पिचहत्तरि कोड़ाकोड़ी हैं। ६६९७५०००००००००००००० इतना एक चंद्रमाका परिवार है ॥ ३६२ ॥

आगैं अठ्यासी ग्रहनिका नाम आठ गाथानिकरि कहैं हैं;—

**कालविकालो लोहिदणामो कणयक्ख कणयसंठाणा।**
**अंतरदो तो कचयव दुंदुभि रत्तणिह रूवणिब्भासो ॥ ३६३ ॥**

कालविकालो लोहितनामा कनकाख्यः कनकसंस्थानः।
अंतरदस्ततः कचयवः दुंदुभिः रत्ननिभः रूपनिर्भासः ॥ ३६३ ॥

**अर्थ**—कालविकाल १ लोहित १ कनक १ कनक संस्थान १ अंतरद १ कचयव १ दुंदुभि १ रत्ननिभ १ रूपनिर्भास १ ॥ ३६३॥

णीलो णीलब्भासो अस्सस्सट्ठाण कोस कंसादी ।
वण्णा कंसो संखादिमपरिमाणो य संखवण्णोवि ॥ ३६४ ॥
नीलो नीलाभासोऽश्वोऽश्वस्थानः कोशः कंसादिः ।
वर्णः कंसः शंखादिपरिमाणः च शंखवर्णोपि ॥ ३६४ ॥

**अर्थ**—नील १ नीलाभास १ अश्व १ अश्वस्थान १ कोश १ कंसवर्ण १ कंस १ शंखपरिमाण १ शंखवर्ण ॥ ३६४ ॥

तो उदय पंचवण्णा तिलो य तिलपुच्छ छाररासीओ ।
तो धूम धूमकेदिगिसंठाणक्खो कलेवरो वियडो ॥ ३६५ ॥
तत उदयः पंचवर्णस्तिलश्च तिलपुच्छः क्षारराशिः ।
ततो धूमो धूमकेतुः एकसंस्थानः अक्षः कलेवरो विकटः ॥ ३६५ ॥

**अर्थ**—उदय १ पंचवर्ण १ तिल १ तिलपुछ १ क्षारराशि १ धूम १ धूमकेतु १ एक संस्थानं १ अक्ष १ कलेवर १ विकट १ ॥ ३६५ ॥

इह भिण्णसंधि गंठी माण चउप्पाय विज्जुजिब्भणभा ।
तो सरिस णिलय कालय कालादीकेउ अणयक्खा ॥ ३६६ ॥
इहाभिन्नसंधिः ग्रंथिः मानश्चतुःपादो विद्युज्जिह्वो नभः ।
ततः सदृशो निलयः कालश्च कालादिकेतुरनयाख्यः ॥ ३६६ ॥

**अर्थ**—अभिन्नसंधि १ ग्रंथि १ मान १ चतुःपाद १ विद्युज्जिह्व १ नभ १ सदृश १ निलय १ काल १ काल केतु १ अनय ॥ ३६६ ॥

सिंहाउ विउल काला महकालो रुद्दणाम महरुद्दा ।
संताण संभवक्खा सव्वट्ठि दिसाय संति वत्थूणो ॥ ३६७ ॥
सिंहायुर्विपुलः कालो महाकालो रुद्रनामा महारुद्रः ।
संतानः संभवाख्यः सर्वार्थी दिशः शांतिर्वस्तूनः ॥ ३६७ ॥

**अर्थ**—सिंहायु १ विपुल १ काल १ महाकाल १ रुद्र १ महारुद्र १ संतान १ संभव १ सर्वार्थी १ दिशा १ शांति १ वस्तून १ ॥ ३६७ ॥

णिच्चल पलंभ णिम्मंत जोदिमंता सयंपहो होदि ।
भासुर विरजा तत्तो णिदुक्खो वीदसोगो य ॥ ३६८ ॥
निश्चलः प्रलंभो निर्मंत्रो ज्योतिष्मान् स्वयंप्रभो भवति ।
भासुरो विरजस्ततो निर्दुःखो वीतशोकश्च ॥ ३६८ ॥

**अर्थ**—निश्चल १ प्रलंभ १ निर्मंत्र १ ज्योतिष्मान १ स्वयंप्रभ १ भासुर १ विरज १ निर्दुःख १ वीतशोक १ ॥ ३६८ ॥

सीमंकर खेमभयंकर विजयादिचउ विमलतत्था य ।
विजयण्हु वियसो करिकट्ठिगिजडिअग्गिजाल जलकेदू ॥ ३६९ ॥

सीमंकरः क्षेमभयंकरः विजयादिचत्वारः विमलस्त्रस्तश्च ।
विजयिष्णुः विकसः करिकाष्टः एकजटिरग्निज्वालः ज्वलकेतुः ॥ ३६९ ॥

अर्थ—सीमंकर १ क्षेमंकर १ अभयंकर १ विजय १ वैजयंत १ जयंत १ अपराजित १ विमल १ त्रस्त १ विजयिष्णु १ विकस १ करिकाष्ठ १ एकजटि १ अग्निज्वाल १ जल केतु १ ॥ ३६९ ॥

केदूखीरसऽघस्सवणा राहू महगहा य भावगहो ।
कुज साणि बुहसुक्कगुरू गहाण णामाणि अडसीदी ॥ ३७० ॥

केतुः क्षीरसः अघः स्रवणो राहुः महाग्रहश्च भावग्रहः ।
कुजः शनिः बुधः शुक्रः गुरुः ग्रहाणां नामानि अष्टाशीतिः ॥ ३७० ॥

अर्थ—केतु १ क्षीरस १ अघ १ श्रवण १ राहु १ महाग्रह १ भावग्रह १ मंगल १ शनैश्चर १ बुध १ शुक्र १ बृहस्पति १ ऐसैं ग्रहनिके अठ्यासी नाम हैं ॥ ३७० ॥

आगैं जंबूद्वीपविषै भरतादि क्षेत्र वा कुलाचल पर्वत तिनकैं तारानिका विभाग दोय गाथानिकरि कहैं हैं;—

णउदिसयभजिदतारा सगदुगुणसलासमब्भत्था ।
भरहादिविदेहोति य तारा वस्से य वस्सधरे ॥ ३७१ ॥

नवतिशतभक्ततारा: स्वकद्विगुणद्विगुणशलासमभ्यस्ताः ।
भरतादिविदेहांतं च ताराः वर्षे च वर्षधरे ॥ ३७१ ॥

अर्थ—दोय चंद्रमा संबंधी तारे एक लाख तेतीस हजार नवसै पचास कोड़ाकोड़ी जंबूद्वीप विषैं पाईए है। १३३९५।१५ इनकौं एकसौ निवैका भाग दीजिए जो प्रमाण होइ ताकों भरतादि क्षेत्र वा कुलाचलनिकी एकतैं दूणी दूणी शलाका विदेह पर्यंत हैं परैं आधी आधी हैं। भरतक्षेत्रकी एक शलाका हिमवत पर्वतकी दोय शलाका ऐसैं दूणी दूणी किएं विदेहकी चौसठि शलाका तातैं परैं नीलादि विषैं आधी आधी जाननी। १।२।४।८।१६।३२।६४।३२।१६।८।४।२।१ तिनकरि गुणें भरतादि क्षेत्र वा हिमवत आदि कुलाचलनिविषै तारानिका प्रमाण हो है ॥ ३७१ ॥

आगैं पाया हुवा अंकनिकों कहैं हैं;—

पंचुत्तरसत्तसया कोडाकोडी य भरहताराओ ।
दुगुणा हु विदेहोत्ति य तेण परं दलिददलिदकमा ॥ ३७२ ॥

पंचोत्तरसप्तशतकोटिकोट्यः च भरततारा: ।
द्विगुणा हि विदेहांतं च तेन परं दलितदलितक्रमः ॥ ३७२ ॥

अर्थ—सातसै पांच कोड़ा कोड़ी भरतविषै तारे हैं। तातैं दूणे दूणे विदेह पर्यंत हैं तहाँ परैं आधे आधे क्रमतै हैं सोई कहिए हैं। भरतक्षेत्र विषैं सातसै पांच कोड़ाकोड़ी ७०५।१४ हिमवत पर्वतविषै चौदहसै दश कोड़ाकोड़ी १४१।१५ हैमवत क्षेत्रविषै अठाईससै वीस कोड़ा कोड़ी २८२।

२०।१५ महा हिमवत पर्वतविषै छप्पनसै चालीस कोड़ा कोड़ी ५६।५१५ हरि क्षेत्रविषै ग्यारह हजार दोयसै अस्सी कोड़ा कोड़ी ११२८।१५ निषध पर्वतविषै बाईस हजार पांच सै साठि कोड़ा कोड़ी २२५६।१५ विदेह क्षेत्रविषै पैंतालीस हजार एकसौ वीस कोड़ा कोड़ि ४५१२ १५ नील पर्वतविषै बाईस हजार पांचसै साठि कोड़ा कोड़ी २२५६।१५ रम्यक क्षेत्रविषै ग्यारह हजार दोयसै अस्सी कोड़ा कोड़ी ११२८।१५ रुक्मि पर्वतविषै छप्पनसै चालीस कोड़ा कोड़ी ५६४।१५ हैरण्यवत क्षेत्रविषै अठाईसै वीस कोड़ा कोड़ि २८२।१५ शिखरी पर्वत विषै चौदहसै दश कोड़ा कोड़ि १४१।१५ ऐरावत क्षेत्रविषै सातसै पांच कोड़ा कोड़ी ७०५।१४ तारे जानने ॥ ३७२ ॥

आगैं लवणादि पुष्करार्द्ध पर्यंत तिष्ठते चंद्र सूर्य तिनका अंतराल कहै हैं;—

**सगरविदलविंवूणा लवणादी सगदिवायरद्धहिया।**
**सूरंतरं तु जगदीआसण्णपहंतरं तु तस्स दलं ॥ ३७३ ॥**

स्वकरविदलविंबोनं लवणादेः स्वकदिवाकरार्धाधिकं।
सूर्यांतरं तु जगत्यासन्नपथांतरं तु तस्य दलम् ॥ ३७३ ॥

**अर्थ**—अपनां अपनां जहां जेते सूर्य हैं तहां तितनां सूर्यनिका प्रमाणतैं अर्द्ध प्रमाण करि सूर्यके विंवनिका प्रमाणकों गुणिकरि जो प्रमाण होइ ताकौं लवणादिकका व्यासमैंस्यौं घटाइए जो प्रमाण रहै ताकौं स्वकीय सूर्यनिका प्रमाणतैं आधा प्रमाणका भाग दीजिए यों कीएं जेता प्रमाण आवै तितनां सूर्य सूर्य विषैं अंतराल जाननां। बहुरि जगती कहिए वेदी तिह थकी आसन्न पथांतरं कहिए निकटवर्त्ती सूर्यविंवका अंतराल सो तिहस्यों अर्द्ध प्रमाण जाननां। तहां उदाहरण—लवण समुद्रविषैं सूर्य च्यारि हैं ताका अर्द्ध प्रमाण दोय तीहकरि सूर्य विंवका प्रमाण अठतालीसका इकसठिवां भाग ताकौं गुणें छिनवैका इकसठिवां भाग होइ $\frac{96}{61}$ याकों लवण समुद्रका व्यास दोय लाख योजन तामैं समच्छेद विधानकरि घटाइए तब एक कोड़ि इकईस लाख निन्याणवै हजार नवसै च्यारिका इकसठिवां भाग प्रमाण होइ $\frac{12199904}{61}$ बहुरि एक तौ सूर्यविषैं अंतराल अर सूर्यतैं अभ्यंतर वेदिकाका अर द्वितीय सूर्यतैं बाह्य वेदिका मिलिकरि एक अंतराल ऐसें दोय अंतराल विषैं इतनां $\frac{12199904}{61}$ अंतराल होइ तौ एक अंतरालविषैं केता अंतराल होइ ऐसें करि ताकौं अपनें सूर्यनिका प्रमाण च्यारि तातैं आधा दोय ताका भाग दिएं निन्याणवे हजार नवसै निन्याणवै योजन अर एक योजनका एकसौ बाईस भागविषैं छवीस भाग ताका दोयकरि अपवर्तन किएं तेरह इकसठिवां भाग प्रमाण सूर्य सूर्य विषैं अंतराल जाननां। बहुरि वेदीतैं निकट सूर्यविंवका अंतराल तातैं आधा जाननां। तहां विषमकौं कैसैं आधा करिए तातैं रशिमैंस्यौं एक घटाइ ९९९९८ ताका आधा करिए तब गुणचास हजार नवसै निन्याणवै योजन भए। बहुरि अवशेष एककौं आधा स्थापि $\frac{1}{2}$ पूर्वोक्त अवशेष तेरह इकसठिवां भाग थे ते राशिके अंश थे तातैं तिनका भी आधा स्थापिए $\frac{13}{61/2}$ इन दोऊनिकों समच्छेद विधान करि मिलाइ दोइकरि अपवर्त्तन करिए तब सैंतीसका इकसठिवां भाग $\frac{37}{61}$ प्रमाण अवशेष आया। ऐसैं ही घातकी खंड कालोदक समुद्र पुष्करार्द्ध द्वीप तिन विषैं

तिष्ठते सूर्य सूर्यनिके वीचि अंतराल अर वेदी सूर्यनिविषैं अंतराल ल्यावनां। भावार्थ—लवण समुद्रादि विषैं च्यारि आदि सूर्य हैं तिनविषैं एक एक परिधिविषैं दोय दोय सूर्य जाननैं तहां लवण समुद्र विषैं अभ्यंतर वेदीतैं गुणचास हजार नवसै निन्याणवै योजन अर सैतीस इकसठिवां भाग परैं जाइ परिधि है तहां सूर्यका विमान है। सो अठतालीस इकसठिवां भाग प्रमाण है। वहुरि तातैं परैं निन्याणवै हजार नवसै निन्याणवै योजन अर तेरह इकसठिवां भाग परैं जाइ परिधि है तहां सूर्य विमान है सो अठतालीस इकसठिवां भाग प्रमाण है। वहुरि तातैं परैं गुणचास हजार नवसै निन्याणवै योजन अर सैंतीस इकसठिवां भाग परैं जाइ लवण समुद्रकी वाह्यवेदी है। ऐसैं इनकौं मिलाएं दोय लाख योजन प्रमाण लवण समुद्रका व्यास हो है। याही प्रकार धातुकी खंडविषैं च्यारि लाख योजन व्यास है। तामैं छह जायगा एक एक परिधिविषैं दोय दोय सूर्य हैं। तिनि छहौं परिधिनिके वीचि सूर्य सूर्यविषैं पांच अंतराल हैं। तिनका प्रमाण ल्यावनां। वहुरि तिस प्रमाणतैं आधा आधा अभ्यंतर वेदी सूर्यविषैं अर वाह्यवेदी सूर्यविषै अंतराल है सो ल्यावनां। याही प्रकार कालोदक समुद्र पुष्करार्द्ध द्वीपविषैं भी अंतरालका प्रमाण ल्यावनां ॥ ३७३ ॥

अब चार क्षेत्र कहैं हैं;—

दो दो चंदरविं पडि एक्केक्कं होदि चारखेत्तं तु ।
पंचसयं दससहियं रविविंववहियं च चारमही ॥ ३७४ ॥
द्वौ द्वौ चंद्ररवी प्रति एकैकं भवति चारक्षेत्रं तु ।
पंचशतं दशसहितं रविविंवाधिकं च चारमही ॥ ३७४ ॥

अर्थ—दोय दोय चंद्रमा वा सूर्यप्रति एक चार क्षेत्र सो कितनां है? पांचसै दश योजन अर सूर्य विंवका प्रमाणकरि अधिक है। भावार्थ—चंद्रमा वा सूर्यका गमन करनैंका जु क्षेत्रगली सो चार क्षेत्र कहिए ताका व्यास पांचसै दश योजन अर योजनका अठतालीस इकसठिवां भाग प्रमाण है ५१०|४८/६१ तिस चार क्षेत्रविषैं गलीनिका प्रमाण आगैं कहेंगे तहां जिस गलीविषै एक चंद्रमा का सूर्य गमन करै तिस ही गलीविषैं दूसरा गमन करै है। तातैं दोय दोय चंद्रमा व सूर्य प्रति एक एक चार क्षेत्र है ॥ ३७४ ॥

आगैं तिन चंद्रमा सूर्यनिका जो चार क्षेत्र ताका विभागका नियम कहैं हैं;—

जंबुरविंदू दीवे चरंति सीदिं सदं च अवसेसं ।
लवणे चरंति सेसा सगसगखेत्ते व य चरंति ॥ ३७५ ॥
जंबूरवींदवः द्वीपे चरंति अशीतिं शतं च अवशेषम् ।
लवणे चरंति शेषाः स्वकस्वकक्षेत्रे एव च चरंति ॥ ३७५ ॥

अर्थ—जंबूद्वीपसंवंधी सूर्य वा चंद्रमा तौ एकसौ असी योजन तौ द्वीपविषैं विचरैं हैं। अवशेष लवण समुद्रविषैं विचरैं हैं। वहु अवशेष सूर्य चंद्रमा अपनां अपनां क्षेत्रही विषैं विचरैं हैं। भावार्थ—चार क्षेत्रका जो व्यास कह्या तामैं जंबूद्वीपसंवंधी चंद्रमा सूर्यनिका एकसौ असी १८० योजन तौ जंबूद्वीपविषैं अर तीनसौ तीस योजन अर अठतालीस योजनका इकसठिवां भाग लवण

समुद्रविषैं चार क्षेत्रका व्यास जाननां। अवशेष पुष्करार्द्ध पर्यंत द्वीप वा समुद्रसंबंधी चंद्र सूर्यनिका चार क्षेत्र अपनां अपनां द्वीप वा समुद्रही विषैं जाननां ॥ ३७५ ॥

आगैं सूर्य चंद्रनिके वीथी जो गली तिनका प्रमाण कहैं हैं;—

पडिदिवसमेक्कवीथिं चंदाइच्चा चरंति हु कमेण।
चंदस्स य पण्णरसा इणस्स चउसीदिसय वीथी ॥ ३७६ ॥
प्रतिदिवसं एकवीथिं चंद्रादित्याः चरंति हि क्रमेण।
चंद्रस्य च पंचदश इनस्य चतुरशीतिशतं वीथ्यः ॥ ३७६ ॥

अर्थ—दोय दोय मिलि करि एक एक दिन प्रति एक एक वीथी प्रति चंद्रमा वा सूर्य विचरैं हैं क्रम करि। तहां चंद्रमाकी पंद्रह वीथी हैं बहुरि इन कहिये सूर्य ताकी एकसौ चौरासी गली हैं। भावार्थ—जो चार क्षेत्र कह्या तीहविषै चंद्रमाकी तो पंद्रह गली हैं, सूर्यकी एक सौ चौरासी गली हैं। तहां एक एक दिन प्रति एक एक गलीविषैं दोय चंद्रमा वा दोय सूर्य गमन करैं हैं ॥ ३७६ ॥

आगैं वीथीनिका अंतराल करि दिवस प्रति गतिविशेषकौं कहैं हैं;—

पथवासपिंडहीणा चारक्खेत्ते णिरेयपथभजिदे।
वीथीणं विच्चालं सगबिंबजुदो दु दिवसगदी ॥ ३७७ ॥
पथव्यासपिंडहीना चारक्षेत्रे निरेकपथभक्ते।
वीथीनां विचालं स्वकबिंबयुतं तु दिवसगतिः ॥ ३७७ ॥

अर्थ—पथ व्यास पिंड कहिए बिंबका व्यासकरि गुण्या हुवा वीथीनिका प्रमाण तीह करि हीन जो चारक्षेत्र ताकों एक घाटि वीथीनिका प्रमाणका भाग दिएं वीथीनिका अंतरालका प्रमाण हो है। बहुरि स्वकीय बिंबप्रमाण तामैं जोड़ें दिवस गतिका प्रमाण है। तहां सूर्यबिंबका व्यास योजनका अठतालीस इकसठिवां भाग ४८/६१ तीह करि वीथीनिका प्रमाण एकसौ चौरासीकौं गुणिएं तब अठ्यासीसै बत्तीसका इकसठिवां भाग प्रमाण होइ ८८३२/६१ याकों समछेद विधान करि चारक्षेत्रका प्रमाणविषै घटाइए तहां पांचसै दस योजनस्यौं समछेद किएं इकतीस हजार एक सौ दशका इकसठिवां भाग होय ३१११०/६१ यामें सूर्यबिंब प्रमाण अधिक था ४८/६१ सो जोड़ें इकतीस हजार एकसौ अठावनका इकसठिवां भाग भया ३११५८/६१ याविषैं पथव्यासपिंड अठ्यासी सौ बत्तीसका इकसठिवां भाग ८८३२/६१ घटाइए तब बाईस हजार तीनसै छब्बीसका इकसठिवां भाग होय २२३२६/६१ याकौं एक घाटि वीथीनिका प्रमाण एकसौ तियासी ताका भाग दीजिए तहां पूर्व भागहार इकसठि ताकों एकसौ तियासी करि गुणि भाग दीजिए तब बाईस हजार तीनसै छब्बीसकों ग्यारह हजार एकसौ तरेसठिका भाग दीजिए इतना भया २२३२६/१११६३ तहां भाग दिएं दोय योजन पाए, सो दोय योजन प्रमाण वीथीके बीच अंतराल है। बहुरि यामें स्वकीय बिंब जो जो सूर्यबिंबका प्रमाण योजनका अठतालीस इकसठिवां भाग सो मिलाएं एकसौ सत्तरिका इकसठिवां भाग प्रमाण दिन दिन प्रति गमन क्षेत्रका प्रमाण हो है। भावार्थ—पूर्वोक्त चार

क्षेत्रका व्यासविषै एकसौ चौरासी गमन करनैंकी गली हैं। तहां प्रथम गली अर दूसरी गली-विषैं दोय योजनका अंतराल है। ऐसैंही दोय दोय योजनका एक अंतराल जाननां। बहुरि प्रथम गलीविपैं सूर्य जिस दिनविषै गमन करै है। इहां प्रथम गलीकी आदितैं द्वितीय गलीकी आदि पर्यंत अंतराल जाननां। ऐसैं ही दिन दिन प्रति तातैं दूसरे दिन तिस प्रथम गलीतै योजनका एक सौ सत्तरिका इकसठिवां भाग परै जाइ दूसरी गलीविपै गमन करै है। ऐसे दिन २

प्रति परै परै गमन क्षेत्रका प्रमाण जाननां। बहुरि ऐसेंही चंद्रमाका चार क्षेत्र इकतीस हजार एक सौ अठावन योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण $\frac{३११५८}{६१}$ तामें पथ व्यासपिंड आठसौ चालीसका इकसठिवां भाग $\frac{८४०}{६१}$ घटाइ एक घाट चौदह १४ का भाग दिएं पैंतीस योजन अर दोइसै चौदहका च्यारिसै सत्ताइसवां भाग प्रमाण तौ वीथी वीथीविषै अंतराल हो है। याभें चंद्रबिंबका प्रमाण मिलाए छत्तीस योजन अर एकसौ गुण्यासीका च्यारिसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण दिन दिन प्रति गमन क्षेत्रका प्रमाण जाननां ॥ ३७७ ॥

ऐसें ल्याया जो दिन प्रति गमन प्रमाण ताकौं आश्रय करि मेरुतैं मार्ग मार्ग प्रति अंतराल अर तिन मार्गनिका परिधिकौं कहैं हैं;—

**सुरगिरिचंदरवीणं मग्गं पडि अंतरं च परिहिं च।**
**दिणगदितप्परिहीणं खेवादो साहए कमसो ॥ ३७८ ॥**

सुरगिरिचंद्ररवीणां मार्गं प्रत्यंतरं च परिधिः च।
दिनगतितत्परिधीनां क्षेपात् साधयेत् क्रमशः ॥ ३७८ ॥

**अर्थ**—मेरु गिर अर चंद्रमा सूर्यनिका मार्ग इनकै वीचि अंतराल, बहुरि तिन मार्गनिका परिधि सो ल्यावनां। कैसैं सो कहिए हैं—जंबूद्वीपका व्यास एक लाख योजन तामें जंबूद्वीपके अंत-तैं एकसौ अस्सी योजन उरैं अभ्यन्तर मार्ग है। तातैं सन्मुख दोऊ पार्श्वनिका दीपसंबंधी चार क्षेत्र मिलाएं तीनसै साठि योजन भए सो घटाएं निन्यानवै हजार छसै चालीस योजन प्रमाण अभ्यन्तर वीथीका सूचीव्यास हो है। इतनांही अभ्यन्तर वीथीविषैं तिष्टते सन्मुख दोऊ सूर्य तिनकै बीच अंतराल है। बहुरि तामें मेरुका व्यास दशहजार योजन घटाइ ८९६४० आधा करिए तब चवालीस हजार आठसै वीस योजन प्रमाण मेरुगिरि अर अभ्यन्तर वीथीविपै तिष्टता सूर्यकै वीचि अंतराल हो है। बहुरि यामें दिनगतिका प्रमाण दोय योजन अर अठतालसिका एकसाठिवां भाग प्रमाण मिलाएं चवालीस हजार आठसै बावीस योजन अर अठतालीसका इकसठिवां भाग प्रमाण दूसरी वीथीविषै तिष्टता सूर्य अर मेरु गिरिके वीचि अन्तराल हो है। ऐसेंही पूर्व्व पूर्व्व मेरु गिरि सूर्यका अन्तरालविपै दिन गातिका प्रमाण मिलाएं उत्तरोत्तर पथविषैं तिष्टता सूर्य अर मेरुगिरिकै बीचि अन्तरालका प्रमाण हो है। बहुरि अभ्यन्तर वीथीका सूची व्यास ९९६४०। विषैं दूणा दिन गतिका प्रमाण तीनि-सै चालीसका इकसठिवां भाग ताका पांच योजन अर पैंतीसका इकसठिवां भाग मिलाएं निन्याणवै हजार छसै पैंतालीस योजन योजनका पैंतीस इकसठिवां भागप्रमाण दूसरी वीथीविषैं तिष्टते दोऊ

सूर्य तिनकै वीचि अन्तराल हो है। इतनांही दूसरी वीथी विषै तिष्ठते दोऊ सूर्य तिनके वीचि अंतराल हो है। इतनां ही दूसरी वीथीका सूची व्यास हो है। ऐसैं अपनां अभ्यन्तरवर्ती पूर्व पूर्व व्यासविषैं दूना दिन गतिका प्रमाण मिलाए उत्तरोत्तर वीथीविषै तिष्ठते दोऊ सूर्यनिकै वीचि अंतराल हो है। वहुरि विक्खंभवग्गदहगुण करिणी वट्टस्स परिरहो होदि।

इस करणसूत्रकरि अभ्यन्तर परिधिका ( सूची व्यास ९९६४० का परिधि अनाईये। तब तीन लाख पंद्रह हजार निवासी ३१५०८९ योजन प्रमाण होइ वहुरि यामें दूना दिन गतिका प्रमाण ३४०/६१ का परिधिका) प्रमाण विष्कंभ ३४०/६१ का वर्ग दशगुणा ११५६०००/६१।६१ ताका वर्गमूल १०७५/६१ ल्याइ अपना भागहारका भाग दिये सतरह योजन अर योजनका अठतीस इकसठि भाग होइ सो मिलाए तीन लाख पंद्रह हजार एकसौ छह योजन अर योजनका अठतीस इकसठिवां भाग प्रमाण ३१५१०६।३८/६१ द्वितीय वीथीका परिधि हो: है। ऐसेही दूणा दिन गतिका परिधिका प्रमाण पूर्व पूर्व वीथीका परिधिविषै जोड़े उत्तर उत्तर वीथीका परिधि हो है। इस प्रकार करि दिन गतिके मिलावनेतें अर दूणा दिन गतिके मिलावनेतें अर दूणा दिन गतिका परिधिके मिलावनेतैं क्रमतैं मेरुगिरि सूर्यकै वीचि अंतराल अर सूर्य सूर्यके वीचि अंतराल अर वीथीनिका परिधि साधिए है॥ ३७८॥

आगैं ऐसे कह्या जु परिधि तिहविषै भ्रमण करता सूर्य ताके दिन रात्रिको कारण पनैं अर तिन दिन रात्रनिका प्रमाण मार्गनिकी अपेक्षा करि कहैं हैं;—

**सूरादो दिणरत्ती अट्ठारस वारसा मुहुत्ताणं।**
**अब्भंतरम्हि एदं विवरीयं वाहिरम्हि हवे॥ ३७९।**

सूर्यात् दिनरात्री अष्टादश द्वादश मुहूर्तानाम्।
अभ्यन्तरे एतत् विपरीतं बाह्ये भवेत्॥ ३७९॥

**अर्थ**—सूर्यतैं दिनरात्रि अठारह मुहूर्त प्रमाण अभ्यन्तर परिधिविषैं हो है। यहु ही विपरीत उलटा बाह्य परिधिविषै हो है। **भावार्थ**—जंबूद्वीपकी वेदीतै उरैं एकसौ अस्सी योजन जो अभ्यन्तर परिधि है तिहविषै सूर्य भ्रमण करै तिहदिन अठारह मुहूर्तका तो दिन हो है। अर वारह मुहूर्तकी रात्रि हो है। वहुरि लवण समुद्रविषै सूर्यबिंब प्रमाण करि अधिक तीनसै दस योजन परैं जो बाह्य परिधि है तीहिविषै सूर्य भ्रमण करै तिहदिन वारह मुहूर्तका दिन हो है। अठारह मुहूर्तकी रात्रि हो है॥ ३७९॥

आगैं सूर्यका अवस्थिति स्वरूप अर दिन रात्रिविषै हानिचय कहैं हैं;—

**कक्कडमयरे सव्वब्भंतरवाहिरपहट्ठिओ होदि।**
**मुहभूमीण विसेसे वीथीणंतराहिदे य चयं॥३८०॥**

कर्कटमकरे सर्वाभ्यन्तरवाह्यपथस्थितो भवति ।
मुखभूम्योः विशेषे वीथीनामंतररहिते च चयः ॥ ३८० ॥

**अर्थ**—कर्कट अर मकरविषै सर्व अभ्यन्तर वाह्य पथविषै तिष्ठतो सूर्य है। **भावार्थ**—कर्क राशिविषै सूर्य प्राप्त होइ तव अभ्यंतर वीथीविषै भ्रमण करै है। वहुरि मकर राशिविषै सूर्य प्राप्त होय तव वाह्य वीथी विषै भ्रमण करै है। वहुरि तिस राशिकी समाप्ततापर्यंत दिन रात्रिका प्रमाण तितना ही रहै है कि विशेष है। तहां कहिए हैं दिन दिन प्रति हानिचय है। कैसें? मुख तो वारह मुहूर्तका दिन अर भूमि अठारह मुहूर्तका दिन तहां विशेष कहिए भूमिमैंस्यौं मुख घटाएं अवशेष छह रहे इनको वीथी एकसौ चौरासी तिनकै वीचि अन्तराल एकसौ तियासी सो इतनें दिननिविषै जो छह मुहूर्त होइ तौ एक अन्तरालविषै कितना मुहूर्त होइ। ऐसे किएं छहका एकसौ तियासिवां भाग होय। तहां तीन करि अपवर्तन कीए दोय मुहूर्तका इकसठिवां भाग प्रमाण दिन दिन प्रति हानि चय हो है। **भावार्थ**—अभ्यन्तर वीथीविषै सूर्य जिहदिन भ्रमण करै तिहदिन अठारह मुहूर्तका दिन हो है। वहुरि तातैं परैं दूसरी वीथीविषै जिहदिन प्रमाण करै तिहदिन अठारह मुहूर्तमैं स्यौं दोय मुहूर्तका इकसठिवां भाग घटाइए इतने प्रमाण दिन हो है। ऐसेंही दिन दिन प्रति घटता घटता वाह्य विषै सूर्य भ्रमै तिह दिन वारह मुहूर्तका दिन हो है। वहुरि तिसतैं उरैं मार्गविषै सूर्य भ्रमै तिहदिन वारह मुहूर्तविषैं दोइ मुहूर्तका इकसठिवां भाग मिलाइए इतना दिन हो है। सो वधता वधता अभ्यन्तर पथविषै सूर्य भ्रमै तव अठारह मुहूर्तका दिन हो है। ऐसैं हानिचय जाननां। वहुरि तिस मुहूर्तका अहोरात्र है तामैं जितनें प्रमाण दिन होय सो घटाएं अवशेष तहां रात्रिका प्रमाण जाननां ॥ ३८० ॥

ऐसैं कहे जु दिन रात्रि तिनविषै ताप अर तमको वर्त्तमान काल है। दिनविषै तौ ताप कहिये तावड़ा वर्तै हैं रात्रिविषै तमकौं कहिए अन्धकार वर्तै है। तातै तम तापका क्षेत्र प्रमाण निरूपण करत संता आचार्य श्रवण माह मासादिकनिकै दक्षिणायन उत्तरायणकों निरूपैं हैं;—

**सावणमाघे सव्वब्भंतरवाहिरपहट्ठिओ होदि ।**
**सूरट्ठियमासस्स य तावतमा सव्वपरिहीसु ॥ ३८१ ॥**

श्रावणमाघे सर्वाभ्यन्तरवाह्यपथस्थितो भवति ।
सूर्यस्थितमासस्य च तापतमसी सर्वपरिधीषु ॥ ३८१ ॥

**अर्थ**—श्रावण मासविषै तौ सूर्य सर्व अभ्यन्तर मार्गविषै तिष्ठै है। माघ मासविषै सूर्य सर्वतै वाह्य मार्गविषै तिष्ठै है। तिस सूर्य तिष्ठनेको जु मास तिनविषैं ताप अर तमके वर्तनेका प्रमाण सर्व परिधिनिविषै ल्यावनां। तहां छहमहीनांके एकसौ तियासी दिन होय तौ श्रावण आदि एक आदिक महिनाके केते दिन होइ। ऐसैं कीएं श्रावण भएं साढातीस, भादवा भएं एकसठि, आसोज भएं साढा इक्याणवै कातीक भए एकसौ वाईस मार्गशीर्ष भए एक सौ साढावावन पौष भए एकसौ तियासी दिन हो हैं सो एतौ दक्षिणायनके दिन हैं। वहुरि माघ भए साढातीस फागुन भए इकसठि

चैत्र मएं साढाइक्याणवै, वैशाख मएं एक सौ बाईस ज्येष्ठ मएं एकसौ साढाबावन, आपाढ मएं एकसौ तियासी ए उत्तरायणके दिन हैं ॥ ३८१ ॥

आगें सर्व परिधिनिविषै ताप तमके प्रमाण ल्यावनैंका विधान कहै हैं;—

गिरिअब्भंतरमज्झिमबाहिरजलछट्टभागपरिहिं तु।
सट्ठिहिदे सूरट्ठियमुहुत्तगुणिदे दु तावतमा ॥ ३८२ ॥

गिर्यभ्यन्तरमध्यमबाह्यजलषष्ठभागपरिधिं तु।
षष्टिहिते सूर्यस्थितमुहूर्तगुणिते तु तापतमसी ॥ ३८२ ॥

अर्थ—मेरुगिर अर अभ्यन्तर वीथी अर जलविषै लवण समुद्रका व्यासका छठा भाग परैं जो जो परिधिका प्रमाण होइ ताकौं साठिका भाग दीजिए अर सूर्य जिस मासविषै तिष्ठै तिस मासविषै जो दिन रात्रिका मुहूर्तनिका प्रमाण तीहकरि गुणिए तब तीह मासविषै ताप तमका विषयभूत क्षेत्रका प्रमाण आवै है। तहां मेरुगिरिका व्यास तौ दस हजार योजन है। बहुरि जंबूद्वीपका व्यास १०००००विषै द्वीपका चार क्षेत्र १८० कौं दोऊ पार्श्वनिका ग्रहणके अर्थि दूणां करि ३६० घटाईये तब अभ्यन्तर वीथीका सूची व्यास निन्याणवै हजार छसै चालीस योजन हो है ९९६४० बहुरि चारक्षेत्रका प्रमाण ५१० कौं आधा करि २५५ यामैं द्वीपसंबंधी चार क्षेत्र १८० घटाइ अवशेष ७५ कौं दोऊ पार्श्वनिका ग्रहणके अर्थि दूणा १५० करि जंबूद्वीपका व्यास १००००० विषै मिलाएं एक लाख एकसौ पचास योजन प्रमाण मध्यम वीथीका सूची व्यास हो है। बहुरि लवण समुद्रसंबंधी चार क्षेत्र ३३० कौं दोऊ पार्श्वनिका ग्रहणके अर्थि दूणा ६६० करि जंबूद्वीपका व्यास १००००० विषै मिलाएं एक लाख छहसै साठि योजन प्रमाण बाह्य वीथीका सूची व्यास हो है। बहुरि लवण समुद्रका व्यास २००००० को छहका भाग देइ लब्धराशि ३३३३३$\frac{२}{६}$ कौं दोऊ पार्श्वनिकौं ग्रहणके अर्थि दूणा करि ६६६६६$\frac{४}{६}$ जंबूद्वीपके व्यास १००००० विषै मिलाए एक लाख छासठि हजार छैसै छासठि योजन अर अपवर्तन किएं दोयका तीसरा भाग प्रमाण जल षष्ट भागका व्यास हो है। अब इन पांचौं व्यासनिकौं विक्खंभवग्गदहगुणकरणी वदस्स परिरहियं होदि। इस करण सूत्र करि परिधिका प्रमाण ल्याइये तब मेरुगिरिका परिधि इकतीस हजार छसै बाईस योजन ३१६२२ अभ्यन्तर वीथीका परिधि तीन लाख पंद्रह हजार निवासी योजन, मध्यम वीथीका परिधि तीन लाख सोल्ह हजार सातसै योजन, बाह्यवीथीका परिधि तीन लाख अठारह हजार तीनसै चौदह योजन, जल षष्टभागका परिधि पांचलाख सत्ताईस हजार छियालीस योजन प्रमाण है ऐसैं परिधिका प्रमाण ल्याइ इन परिधिनिविषै जो विवक्षित परिधि होइ ताकौं साठिका भाग दीजिये। जैसे विवक्षित मेरुगिरिका परिधिकौं साठिका भाग दिएं पांचसैं सत्ताईस योजन अर एकका तीसरा भाग प्रमाण होइ। बहुरि जिस मासविषै सूर्य तिष्ठै तिस मास संबंधी दिन रात्रिके मुहूर्तनिका अठारहसौं लगाय बारह पर्यंत प्रमाण १८।१७।१६।१५।१४।१३।१२ तिह कर गुणिए। जैसे पूर्वोक्त प्रमाण ५२७$\frac{१}{३}$ कौं अठारह करि गुणैं चौराणवैसैं छियासी योजन अर अठारहका तीसरा भागकौं छहकरि अपवर्तन किएं

तीनका पांचवां भाग प्रमाण होइ ९४८६ ऐसैं किएं जो जो प्रमाण आवै सो सो ताप तमका विषयभूत क्षेत्र जाननां । **भावार्थ**—मेरुगिरिका परिधि इकतीस हजार छसै बाईस योजन है ३१६२२ तींहविषै श्रावण- मासविषै जहां अठारह मुहूर्तका दिन बारह मुहूर्तकी रात्रि हो है तहां चौराणवैसै छियासी योजन अर योजनका तीन पांचवां भागविषै तौ एक सूर्यके निमित्तैं तावड़ा पाईए है । अर ताके सन्मुख इतना ही दूसरे सूर्यके निमित्तैं तावड़ा है । अर तिनके बीचि अन्तरालविषै तरेसटिसै तेईस योजन अर दोयका पंचम भागविषै अन्धकार है, अर ताके सन्मुख दूसरा अन्तरालविषै इतनाही अन्धकार है इन सबनिको जोड़ें ९४८३।३/५।६३२४।२/५। ९४८६।३/५।६३२४।२/५ ॥ इकतीस हजार छसै बाईस योजन प्रमाण परिधि हो है । ऐसैंही अन्य परिधिनिविषै जाननां । बहुरि विवक्षित परिधिकौं साठिका भाग देइ एक मुहूर्त करि गुणें जे प्रमाण आवै तितना मास प्रति ताप तमका घटतां बधतां क्षेत्रका प्रमाणरूप हानिचय जाननां तहां विवक्षित मेरुगिरिका परिधिकौं साठिका भाग देइ एक मुहूर्त करि गुणें पांचसै सताईस योजन अर एकका तीसवां भाग प्रमाण हानिचय होइ । एक मासविषै एक मुहूर्त रात्रिदिन कैसैं घटै बधै सो कहिए है । एक दिनविषै दोय इकसठिवां भाग प्रमाण हानि चय होय तौ ताड़ा तीस दिनविषै कितना हानिचय होइ ऐसैं करतैं अपवर्तन किएं एक मुहूर्त एक मासविषै आवै है । बहुरि साठि मुहूर्तविषैं सर्व परिधिप्रमाणविषैं गमन करै तौ एक मुहूर्तविषै कितनां क्षेत्रविषै गमन करै ऐसैं परिधिका साठिवां भाग प्रमाण एक मुहूर्तविषै गमनक्षेत्रका प्रमाण आवै है । **भावार्थ**—मेरुगिरिका परिधिविषैं श्रावण मासतैं भाद्रव मासविषै पांचसै सताईस योजन अर एकका तीसवां भाग प्रमाण तापक्षेत्र घटता है तम क्षेत्र बधता पाइए है । तहां एक सूर्यसंबंधी तापक्षेत्र निवासीसैं गुणसाठि योजन अर सतरह तीसवां भाग अर इतना ही दूसरा सूर्यसंबंधी । बहुरि एक अन्तरालविषैं तमक्षेत्र अडसठिसै इक्यावन योजन अर ग्यारह सत्तरहां भाग अर इतनांहीं दूसरा अन्तरालविषै ऐसैं सर्व मिलि मेरुगिरिका परिधि प्रमाण हो है । ऐसैंही पूस मास पर्यंत दक्षिणायनविषैं तौ मास मास पर्यंत पांचसै सताईस योजन अर एकका तीसवां भाग प्रमाण आतापक्षेत्र तौ घटता घटता अर तमक्षेत्र बधता जाननां । बहुरि मावतैं फाल्गुनादिक अषाढ पर्यंत उत्तरायणविषै मास मास पर्यंत तितनांही तापक्षेत्र बधता बधता अर तमक्षेत्र घटता घटता जाननां । ऐसैंही सर्व परिधिनिविषै ताप तम क्षेत्रका प्रमाण विवक्षित मासविषै ल्यावनां । बहुरि इहां पांच परिधिविषै मास मासनिकी अपेक्षा वर्णन किया है इस ही प्रकार विवक्षित क्षेत्रका परिधिविषै विवक्षित दिन अपेक्षा ताप तम क्षेत्रका प्रमाण ल्यावनां । बहुरि इहां जंबूद्वीप संबंधी सूर्यनिका लवण समुद्रके व्यासका छटा भाग पर्यंत प्रकाश है तातैं तहां पर्यंत ग्रहण किया है । बहुरि जिस क्षेत्रविषै ताप है तहां दिन जाननां जहां तम है तहां रात्रि जाननी ॥ ३८२ ॥

आगैं ऐसैं ल्याया जु ताप तमका क्षेत्र ताका प्रवर्तनकौं कहैं हैं;—

परिहिम्हि जम्हि चिट्ठदि सूरो तस्सेव तावमाणद्लं ।
बिंबपुरदो पसप्पदि पच्छाभागे य सेसद्धं ॥ ३८३ ॥

परिधौ यस्मिन् तिष्ठति सूर्यः तस्यैव तापमानदलम्।
बिंबपुरतः प्रसर्पति पश्चाद्भागे च शेषार्धम्॥ ३८३॥

अर्थ—जिस परिधिविषै सूर्य तिष्टै है तिस परिधिहीका तापका जो प्रमाण ताका आधा तौ सूर्यके बिंबतैं आगैं फैलै है, अवशेष आधा पीछैं फैलै है। भावार्थ—परिधिनिविषै जो तापका प्रमाण कह्या तीहविषै जहां सूर्यका बिंब पाईए तिह क्षेत्रकै आगैं तिस प्रमाणतैं आधा ताप फैलै है, अर आधा पीछैं फैलै है। इहां प्रश्न। जो मेरुगिरिकी परिधिनैं आदि दे करि जिन परिधिनिविषै सूर्यका गमन नांहीं तहां ताप कैसैं फैलै है? ताका समाधान-सूर्यबिंबतैं सूधा सन्मुख जो तिस विवक्षित परिधिविषै क्षेत्र तातैं आगैं पीछैं आधा आधा ताप फैलै है। बहुरि ऐसा जाननां जैसैं चिराकके आगैं पाछैं प्रकाश हो है। बहुरि जैसैं जैसैं चिराक आगानैं चालै तैसैं तैसैं आगानैं तौ प्रकाश होता जाय पीछैतैं अन्धकार होता आवै तैसैंही सूर्यबिंब जैसैं जैसैं आगैं चलै तैसैं तैसैं आगैं ताप फैलता जाय पीछैं पीछैं तम होता आवै है॥ ३८३॥

अब ताप तमकी हानि वृद्धिकौं कहैं हैं;—

**पणपरिधीयो भजिदे दसगुणसूरंतरेण जल्लद्धं।**
**सा होदि हाणिवड्ढी दिवसे दिवसे च तावतमे॥ ३८४॥**

पंचपरिधिषु भक्तेषु दशगुणसूर्यांतरेण यल्लब्धं।
सा भवति हानिवृद्धिर्दिवसे दिवसे च तापतमसोः॥ ३८४॥

अर्थ—पांचों परिधिनिविषैं दश गुणां सूर्यके अन्तरालनिका भाग दिएं जो लब्धराशि होइ सो दिन दिन विषै ताप तमकी हानि वृद्धिका प्रमाण जाननां। तहां पंच परिधिनिविषै विवक्षित मेरुगिरि परिधि तहां साठि मुहूर्तनिविषै इकतीस हजार छहसै बाईस योजन प्रमाण क्षेत्रविषै गमन करै तौ दोय मुहूर्त्तका इकसठिवां भाग मात्र दिनका वृद्धि हानिका जो प्रमाण तामैं कितनां गमन करै ऐसैं तिस परिधिप्रमाणकौं साठिका भाग दिएं दोयका इकसठि भागकरि गुणें दोय करि अपवर्तन किएं सत्रह योजन अर पांचसौ बाराका अठारहसै तीसवां भाग प्रमाण आवै सोई सूर्यके गमन मार्गनिका अन्तराल एकसौ तियासी ताकौं दस गुणां किएं अठारहसै तीस ताका भाग विवाक्षित मेरुगिरिके परिधि प्रमाणकौं दिएं प्रमाण आवै तातैं ऐसा विचारि आचार्यनैं ऐसा कह्या कि विवक्षित परिधिकौं दश गुणां सूर्यांतरालका भाग दिएं ताप तमका वृद्धि हानिका प्रमाण आवै है। ऐसैं सतरह योजन अर पांचसै बारहका अठारहसै तीसवां भाग प्रमाण दिन दिन प्रति उत्तरायणविषै ताप वधै है तम घटै है, दक्षिणायनविषै तम वधै है ताप घटै है। याही प्रकार अन्य परिधिनिविषै दिन दिन प्रति ताप तमका घटनां वधनां ल्यावनां॥ ३८४॥

आगैं पांचौं परिधिनिके सिद्ध भए अंकनिकौं दोय गाथानिकरि कहैं हैं;—

**बावीस सोल तिण्णिय उणणउदी पण्णमेक्कतीसं च।**
**दुखसत्तद्विगितीसं चोद्दस तेसीदि इगितीसं॥ ३८५॥**

द्वाविंशतिः पोडश त्रीणि एकोननवतिपंचाशदेकत्रिंशच्च।
द्विखसप्तषष्ठयेकत्रिंशत् चतुर्दश त्र्यशीतिरेकत्रिंशत् ॥ ३८५ ॥

अर्थ—बाईस सोला तीन ३१६२२ इन अंक क्रमकरि इकतीस हजार छसै बाईस योजन प्रमाण मेरुगिरिका परिधि है। बहुरि निवासी पचास इकतीस ३१५०८९ इन अंक क्रम करि तीन लाख पंद्रह हजार निवासी योजन प्रमाण अभ्यन्तर वीथीका परिधि है। बहुरि दोय विंदी सतसठि इकतीस ३१६७०२ इन अंक क्रमकरि तीन लाख सोलह हजार सातसै दोय योजन प्रमाण मध्य वीथीका परिधि है। बहुरि चौदह तियासी इकतीस ३१८३१४ इन अंक क्रमकरि तीन लाख अठारह हजार तीनसै चौदह योजन प्रमाण बाह्य वीथीका परिधि है ॥ ३८५॥

**छादालसुण्णसत्तयवावण्णं होंति मेरुपहुदीणं।**
**पंचण्हं परिधीओ कमेण अंकक्कमेणेव ॥ ३८६ ॥**

षट्चत्वारिंशच्छून्यसप्तकाद्विपंचाशत् भवंति मेरुप्रभृतीनाम्।
पंचानां परिधयः क्रमेण अंकक्रमेणैव ॥ ३८६ ॥

अर्थ—छियालीस सून्य सात बावन ५२७०४६ इन अंक क्रमकरि पांच लाख सत्ताईस हजार छियालीस योजन प्रमाण जल षष्ट भागका परिधि है। ऐसैं मेरु आदि दै पंचनिका परिधि है सो क्रमकरि अंकनिका अनुक्रमकरि जाननां ॥ ३८६ ॥

आगैं जिनका प्रमाण समान नांहीं ऐसी जु अभ्यन्तरादि परिधि तिनकौं समान काल करि कैसैं समाप्त करै है सो कहैं हैं;—

**णीयंता सिग्घगदी पविसंता रविससी दु मंदगदी।**
**विसमाणि परिरयाणि दु साहंति समाणकालेण ॥ ३८७ ॥**

निर्यांतौ शीघ्रगती प्रविशंतौ रविशशिनौ तु मंदगती।
विषमान् परिधींस्तु साधयतः समानकालेन ॥ ३८७ ॥

अर्थ—सूर्य अर चंद्रमा ए निकसते हूए ज्यों ज्यों अगली परिधिकौं प्राप्त होयं त्यों त्यों शीघ्र गमनरूप हो हैं उतावले चलैं हैं। बहुरि पैसते हुए ज्यौं ज्यौं माहिली परिधिनिकौं प्राप्त होंइ त्यों त्यों मन्द गमनरूप हो हैं धीरे चलैं हैं। ऐसैं होइ समान कालकरि विषम प्रमाणकौं लिएं जु अभ्यन्तरादि परिधि तिनकौं समाप्त करै हैं गमन करि साधै हैं ॥ ३८७ ॥

आगैं तिन सूर्य चन्द्रमानिका गमन विधान दृष्टांतमुखकरि कहैं हैं;—

**गयहयकेसरिगमणं पढमे मज्झंतिमे य सूरस्स।**
**पडिपरिहिं रविससिणो मुहुत्तगदिखेत्तमाणिज्जो ॥ ३८८ ॥**

गजहयकेसरिगमनं प्रथमे मध्ये अंतिमे च सूर्यस्य।
प्रतिपरिधि रविशशिनोः मुहूर्तगतिक्षेत्रमानेयम् ॥ ३८८ ॥

अर्थ—गज घोटक केशरी गमन प्रथम मध्य अंतविषै सूर्य चन्द्रमाके हो है। भावार्थ—सूर्य चन्द्रमा अभ्यन्तर परिधिविषैं हस्तीवत् मंद गमन करै हैं, बहुरि मध्यपरि-

थिविषै घोटकवत् तातें शीघ्र गमन करै हैं। बहुरि बाह्य परिधिविषैं सिंहवत् अति शीघ्र गमन करैं हैं। बहुरि अत्र सूर्य चन्द्रमानिके परिधि परिधि प्रति एक मुहूर्तविषैं गमनका प्रमाण ल्यावनां। कैसें सो कहिए हैं। तहां सूर्यका परिधिविषै भ्रमणकी समाप्तताका काल साठि मुहूर्त है। बहुरि अभ्यन्तर परिधिका प्रमाण तीन लाख पद्रह हजार निवासी योजन है सो सूर्यके साठ मुहूर्तनिका गमन क्षेत्र तीनलाख पंद्रह हजार निवासी योजन होइ तौ एक मुहूर्तका कितनां होइ। ऐसैं परिधि प्रमाणकौं साठिका भाग दिएं पांच हजार दोयसै इक्कावन योजन अर गुणतीसका साठिवां भाग मात्र सूर्यका अभ्यन्तर परिधिविषै एक मुहूर्तकरि गमन क्षेत्रका प्रमाण हो है। ऐसैं ही अन्य विवक्षित परिधिके प्रमाणकौं साठिका भाग दिएं सूर्यका विवक्षित परिधिविषैं एक मुहूर्त करि गमन क्षेत्रका प्रमाण साधनां। बहुरि ऐसें ही चंद्रमाका भी त्रैराशिक विधान करि ल्यावनां। तहां चंद्रमाका परिधिविषैं भ्रमणकी समाप्तताका काल बासठि मुहूर्त अर तेईसका दोयसै इकईसवां भाग प्रमाण है ६२।२३/२२१ याका विधान आगैं अढही सत्तरस इत्यादि सूत्रकरि कहैंगे ॥ याकौं समच्छेद करि मिलाएं तेरह हजार सातसै पच्चीसका दोयसै इकईसवां भाग मात्र भया सो इतनें कालविषैं अभ्यंतर परिधिका प्रमाण तीन लाख पंद्रह हजार निवासी योजन प्रमाण गमन क्षेत्र होइ तौ एक मुहूर्तविषै कितनां होइ। प्रमाण १३७२५/२२१ फल ३१५०८९ इछा मु १ ऐसैं करि लब्ध राशि पांच हजार तहेत्तरि योजन अर सात हजार सातसै चवालीसका तेरह हजार सातसै पच्चीसवां भाग मात्र ५०७३।७७४४/१३७२५ चंद्रमाका अभ्यंतर परिधिविषै एक मुहूर्तका गमन क्षेत्रका प्रमाण आया। ऐसैं ही अन्यविवक्षित परिधिके प्रमाणकौं बासठि अर तेईसका दोयसै इकईसवां भागका भाग दिएं विवक्षित परिधिविषै एक मुहूर्तका गमन क्षेत्रका प्रमाण आवै है ॥ ३८८ ॥

आगैं अभ्यंतर वीथीविषै तिष्टता जु सूर्य ताका चक्षुः स्पर्शा ध्वान जो दृष्टिविषै आवनेका मार्ग ताकौं तीन गाथानिकरि अनावै हैं;—

**सट्ठिहिदपढमपरिरिहिं णवगुणिदे चक्खुफासअद्धाणं।**
**तेणूणं णिसहाचलचावद्धं जं पमाणमिणं ॥ ३८९ ॥**

षष्टिहितप्रथमपरिधौ नवगुणिते चक्षुःस्पर्शाध्वा।
तेनोनं निषधाचलचापार्धं यत् प्रमाणमिदम् ॥ ३८९ ॥

**अर्थ**—प्रथम परिधिका प्रमाणकौं साठिका भाग देइ नवकरि गुणिए इतनां चक्षुःस्पर्श ध्वान है। तहां साठि मुहूर्तनिका प्रथम परिधि तीन लाख पंद्रह हजार निवासी योजन प्रमाण गमन क्षेत्र होइ तौ नव मुहूर्तनिका कितनां गमन क्षेत्र होइ ऐसैं प्रथम परिधिकौं साठिका भाग ही नवका गुणाकार भया। इनकौं तीनकरि अपवर्त्तन कीएं वीसका भागहार तीनका गुणकार हो है। तहां

प्रथम परिधिकौं ३१५०८९ वीसका भाग देइ $\frac{३१५०८९}{२०}$ तीन करि गुणिए $\frac{९४५२६७}{२०}$ तव लब्धराशि सैंतालीस हजार दोयसै तरेसठि योजन अर सातका वीसवां भाग मात्र चक्षुःस्पर्शाध्वान हो है । **भावार्थ**—अयोध्या नाम नगरका वासी महंत पुरुषनिकरि उत्कृष्टपनै सैंतालीस हजार दोयसै तरेसठि योजन अर सातका वीसवां भाग मात्र क्षेत्रका अंतराल होतैं सूर्य देखिए हैं इतनां ही चक्षु इन्द्रीका उत्कृष्ट विषय है याहीका नाम चक्षुःस्पर्शाध्वान है । वहुरि इहां अठारह मुहूर्त्त का जु दिन ताका आधा भएं मध्यान्हविषै सूर्य अयोध्याकी वरोवरि आवै अर इहां उदय होता सूर्यका ग्रहण है तातैं नवका गुणकार किया है । अर परिधिविषैं भ्रमण काल साठि मुहूर्त्त है तातैं साठिका भाग हार कीया है । वहुरि निषध नामा कुलाचल ताका चापका प्रमाण एक लाख तेईस हजार सातसै अडसठि योजन अर अठारह उगणीसवां भाग ताका आधा इकसठि हजार आठसै चौरासी योजन अर नवका उगणीसवां भाग तामैं पूर्वोक्त चक्षुःस्पर्शाध्वानका प्रमाण ४७२६३ $\frac{७}{२०}$ घटाइए अवशेष जो प्रमाण रहै ॥ ३८९ ॥

सो अगली गाथा विषै कहैं हैं;—

**इगिवीसछदालयसं साहियमागम्म णिसहउवरिमिणो ।**
**दिस्सदि अउज्झमज्झे तेणूणो णिसहपासभुजो ॥ ३९० ॥**

एकविंशतिषट्चत्वारिंशच्छतं साधिकं आगत्य निषधोपरि इनः ।
दृश्यते अयोध्यामध्ये तेनोनः निषधपार्श्वभुजः ॥ ३९० ॥

**अर्थ**—इकवीस एकसौ छियालीस अंक क्रमकरि चौदह हजार छसै इकईस तौ योजन अर साधिक कहिए किछू अधिक सो अधिक कितनां ? चक्षुःस्पर्शाध्यानका अवशेष सातका विसवां भागकों निषध चापका अवशेष नवका उगणीसवां भागविषै समछेद विधान करि $\frac{१३३}{३८०}\frac{१८०}{३८०}$ घटाएं सैंतालीसका तीनसै असीवां भाग $\frac{४७}{३८०}$ मात्र अधिक जाननां । सो निषध कुलाचलकै ऊपरि इतनैं १४६२१ । $\frac{४७}{३८०}$ उरैं आइ करि सूर्य है सो अयोध्याके मध्य महंत पुरुषनिकरि देखिए हैं । **भावार्थ**—प्रथम वीथीविषै भ्रमण करता सूर्य सो निषध कुलाचलका उत्तर तटतैं चौदह हजार छैसै इकईस योजन अर सैंतालीसका तीनसै अस्सीवां भाग उरैं आवै तव भरत क्षेत्रविषै उदय हो है । अयोध्याके वासी महंत पुरुषनिकारि देखिए है । वहुरि निषधकी पार्श्वभुजा वीस हजार एकसै छिनवै योजन प्रमाण तामैं निषध उरैं आइ सूर्य देखनेंका जो प्रमाण कह्या १४६२१ । $\frac{४७}{३८०}$ ताकौं घटाएं ॥ ३९० ॥

आगैं कहिए है सो है;—

**णिसहुवरिं गंतव्वं पणसगवण्णास पंचदेसूणा ।**
**तेत्तियमेत्तं गत्ता णिसहे अत्थं च जादि रवी ॥ ३९१ ॥**

निषधोपरि गंतव्यं पंचसप्तपंचाशत् पंचदेशोना।
तावन्मात्रं गत्वा निषधे अस्तं च याति रविः॥ ३९१॥

**अर्थ**—निषधके ऊपरि जानां पांच सतावन पांच इन अंक क्रम करि पांच हजार पांचसै पिचहत्तरि योजन देशोन कहिए किछु घाटि इतनां निषध पर्वत ऊपरि जाइ सूर्य अस्तपनैंकौं प्राप्त हो है। **भावार्थ**—परिधिविषै भ्रमण करता सूर्य जब निषध पर्वतका दक्षिण तटतैं परैं किछू घाटि पचावनसै पिचहत्तरि योजन जाइ तब अस्त हो है। अजोध्यादिक भरत क्षेत्रके वासीनिकरि न देखिए है॥ ३९१॥

अब जाका प्रयोजन तिस चापके ल्यावनैंकौं तिसके वाण ल्यावनैंका विधान कहैं हैं, चापादिकका वर्णन तो आगैं होइगा इहां प्रयोजनभूत वर्णन करिए हैं;—

**जंबूचारधरूणो हरिवस्ससरो य णिसहवाणो य।**
**इह वाणावट्टं पुण अब्भंतरवीहिवित्थारो॥ ३९२॥**

जंबूचारधरोनः हरिवर्षशरः च निषधवाणश्च।
इह वाणवृत्तं पुनः अभ्यंतरवीथीविस्तारः॥ ३९२॥

**अर्थ**—धनुषाकार क्षेत्रविषै जैसैं धनुषका पीठ हो है तैसैं जो होइ ताका नाम धनुष है वा ताका नाम चाप भी है। बहुरि जैसैं धनुषकै चिला हो है तैसैं जो होइ ताका नाम जीवा है। बहुरि जैसैं तिस धनुषका मध्यतैं जीवाका मध्यपर्यंत तीरका क्षेत्र हो है तैसैं जो होइ ताका नाम वाण है। सो इहां जंबूद्वीपकी वेदी अर हरि क्षेत्र वा निषध पर्वतकै वीचि जो क्षेत्र सो धनुषाकार क्षेत्र हो है। तहां हरि क्षेत्र वा निषध पर्वततैं लगाय वेदी पर्यंत अंतराल क्षेत्र सो वाण कहिए वेदी ताका प्रमाण ल्याइए हैं तहां भरत क्षेत्रकी एकसलका हिमवन् पर्वतकी दोय इत्यादि विदेह पर्यंत दूणी दूणी पीछैं आधी २ शलाका जोडें सर्व जंबूद्वीपविषै एकसौ निवै शलाका कहिए विसवा हो है। तहां भरत क्षेत्रतैं लगाय हरि वर्ष पर्यंत जोड इकतीस शलाका हो हैं। कैसैं? "अंतधणं गुणगुणियं आदिविहीणं रूऊणुत्तरभजियं।" इस सूत्रकरि अंतविषैं हरिवर्षकी शलाका सोलह ताकौं भरतादिकतैं दोयका गुणकार है। तातैं गुणकार दोय करि गुणें वत्तीस तामैं आदि भरतक्षेत्रकी शलाका एक सो घटाएं इकतीस, याकौं एक घाटि गुणकार एक ताका भाग दीएं भी इकतीस, ऐसैं हरिवर्ष शलाका इकतीस हैं। बहुरि याही प्रकार निषध शलाका तेरसठि हो हैं। बहुरि एकसौ निवै शलाकानिका एक लाख योजन क्षेत्र होइ तौ इकतीस वा तेरसठि शलाकानिका केता होइ ऐसैं किएं हरिवर्षका वाण तौ तीन लाख दश हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण हो है। बहुरि निषधका वाण छह लाख तीस हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण हो है। वेदीके अर हरिवर्ष वा निषेधके वीचि इतनां अंतराल है। बहुरि इहां चक्षुः अध्वान क्षेत्र कहनां। तहां अभ्यंतर वीथी अर हरिक्षेत्र वा निषध पर्वतके वीचि जो धनुषाकार क्षेत्र तहां वीथीकी परिधि सो तो धनुष है। बहुरि वीथी अर हरिक्षेत्र वा निषधके वीचि अंतराल क्षेत्र सो वाण है। हरिक्षेत्र वा निषधका पूर्व पश्चिमकी तरफ़ लंबाईका प्रमाण सो जीवा है। तहां पूर्वैं जो हरिवर्ष वा निषध पर्वतका वाणका प्रमाण कह्या तामैं जंबूद्वीपसंबंधी चार क्षेत्र एकसो

असी योजन ताकों उगणीसका भागहार करि समच्छेद किएं चौतीससै वीसका उगणीसवां भाग भया। सो इतनां घटाएं चक्षुः स्पर्शाध्वान क्षेत्र ल्यावनेंविषै तीन लाख छह हजार पांचसै असीका उगणीसवां भाग प्रमाण तौ हरिक्षेत्रका वाण हो है। बहुरि छह लाख छत्तीस हजार पांचसै असीका उगणीसवां भाग प्रमाण निषधका वाण हो है ३०६५८०/१९ ६२६५८०/१९ अत्र इनका वृत्तविष्कंभ जो ऐसा क्षेत्र गोल होइ तब चौडाईका प्रमाण सो कहिए हैं— तहां जंबूद्वीपका वृत्तविष्कंभ एक लाख योजन तामें द्वीपसंबंधी चार क्षेत्र एकसो असी ताकौं दोऊ पार्श्वनिका ग्रहण अर्थि दूणाकरि ३६० घटाएं अभ्यंतर वीथीका सूची व्यास निन्याणवै हजार छसै चालीस योजन हो है ९९६४०। याकों समछेद करनेंके अर्थि उगणीसका भाग दीएं अठारह लाख तरेणवै हजार एक सौ साठीका उगणीसवां भाग होइ बहुरि इहां प्रथमहरि क्षेत्रविषै कहिए हैं। इसुहीणं विक्खंभ चउगुणिदिसुणा हेद हु जीवकदी। वाणकदिं छह गुणिदे तत्थ जुदे धणुकदी होंदि १ ऐसा करण सूत्र आगैं कहैंगे ताकरि वाणका प्रमाण ३०६४८०/१० कों विष्कंभका प्रमाण १८९३१६०/१९ मैं घटाइए १५८६५८० बहुरि वाणका जो प्रमाण ३०६५८०/१९ ताकौं चौगुणा किएं १२२६३२० जो प्रमाण होइ तीहकरि गुणिए १९४५६५४७८५६००/३६१ तब जीवाकी कृति होई। याका वर्गमूल किएं जीवाका प्रमाण हो बहुरि वाणका जु प्रमाण ३०६५८०/१९ ताका वर्ग करिए ९३९९१२९६९६४००/३६१ बहुरि याकों छह गुणा करिए ५६३९४७७७८४००/३६१ बहुरि याकौं जीवाकी कृति कही तिसविषै जोडिए २५०९६०२५६४०००/३६१ ऐसैं किएं धनुषकी कृति होइ, याका वर्गमूल ग्रहण किएं १५८१४१७२/१ अपनां भागहारका भाग दिएं तियासी हजार तीनसै सतहत्तरि योजन अर नव उगणीसवां भाग प्रमाण हरि क्षेत्रका चाप हो है ८३३७७ ९/१९। बहुरि निषध पर्वतका कहिए है। इसुहीणं विष्कंभं इत्यादि सूत्र करि निषधका वाणकौं ६२६५८०/१९ पूर्वोक्त वृत्त विष्कंभ १८९३१६०/१९ मैं स्यौं घटाइये अवशेष रहे १२६६५८०/१९ ताकौं चौगुणा वाणका प्रमाण २५०६३२०/१९ करि गुणिए ३१७४४५४७८५६००/३६१ तब निषधका जीवाकी कृति हो है। याका वर्गमूल प्रमाण निषधकी जीवा है। बहुरि निषधका वाणकी जो कृति ३९२६०२४९६४००/३६१ ताकों छह गुणा करिए २३५५६१४९७८४००/३६१ याकौ जीवाकी कृति जो कही तिसविषै जोडिए ५५३०६९०६४०००/३६१ तब धनुः कृति होइ। याका वर्गमूल ग्रहण करि २३५१६१०/१९ अपनां भागहारका भाग दिएं एक लाख तेईस हजार सातसै अडसठि योजन अर अठारह उगणीसवां भाग प्रमाण १२३७६८ १८/१९ निषध कुलाचलका चाप हो है। इस चापका अयोध्याके पासि अर्द्धपणां है तातैं इस चापकौं आधा किया। बहुरि अयोध्यातैं चक्षुःस्पर्शाध्वान प्रमाण क्षेत्र परैं सूर्य दीसै ताकौं तिस आधा प्रमाणमैंस्यौं घटाएं अवशेष जो रह्या तितनैं निषध चापविषैं उत्तर तटतैं उरैं आइ सूर्य भरत क्षेत्रविषैं उदय हो है ऐसा भावार्थ जाननां ॥ ३९२ ॥

ऐसे ल्याए जु हरि क्षेत्र निषध पर्वतके चाप तिनका कहा करनां सो कहैं हैं;—

हरिगिरिधणुसेसद्धं पासभुजो सत्तसगतितेसीदी।
हरिवस्से णिसहधणू अडछस्सगतीस वारं च॥ ३९३॥

हरिगिरिधनुःशेपार्धं पार्श्वभुजः सप्तसप्तत्रित्र्यशीतिः।
हरिवर्षे निपधधनुः अष्टपट्सप्तत्रिंशद् द्वादश च॥ ३९३॥

**अर्थ**—निपधपर्वतका चापविषै हरि क्षेत्रका चाप घटाइ ताका आधा करिए इतनां निपध पर्वतकी पार्श्व भुजा है। दक्षिण तटतैं उत्तर तट पर्यंत चापका जो प्रमाण ताका नाम इहां पार्श्व भुजा जाननां। तहां निपध पर्वतका धनुः १२३७६८।$\frac{१८}{१९}$ विषै हरि क्षेत्रका धनुः ८३३७७।$\frac{९}{१९}$ घटाइए तब अवशेष चालीस हजार तीनसै इक्याणवै योजन अर नव उगणीसवां भाग प्रमाण होइ ४०३९१।$\frac{९}{१९}$ याका आधा करना तहां योजन प्रमाणमैंस्यौं एक घटाइ आधा करिए तब वीस हजार एकसौ पिच्याणवै योजन होइ। बहुरि जो एक घटाया था ताका आधा $\frac{१}{२}$ अर नव उगणीसवां भागका आधा $\frac{९}{१९।२}$ इनकों समच्छेद करि जोड़े $\frac{२८}{३८}$ दोयका अपवर्तन किएं चौदह उगणीसवां भाग भए। सो याकों किछू घाटि एक योजन मांनि जोड़ें किछू घाटि वीस हजार एक सौ छिनवै योजन प्रमाण निपध पर्वतकी पार्श्वभुजा हो है। सो इहां पार्श्व भुजाविषैं उत्तर तटतैं चौदह हजार छसै इकईस योजन उरैं यावत सूर्य है तावत भरत क्षेत्रवाले वासीनिकों दीसै पीछै न दीसै तातैं पार्श्व भुजाविषै इतनां घटाइ अवशेष किछू घाटि पचावनसै पिचहत्तरि योजन दक्षिण तटतैं निपधकै ऊपरि चाप विषै परैं जाइ सूर्य अस्त हो है ऐसा भावार्थ जाननां। अब हरिक्षेत्रके निपध पर्वतके धनुपके सिद्ध भए अंक कहैं हैं। तहां सात सात तीन तियासी इन अंकनके क्रम करि ८३३७७ तियासी हजार तीनसै सतहत्तरि योजन तौ हरिवर्पका धनुः है। बहुरि आठ छह सैंतीस बारा इन अंकनिके क्रम करि १२३७६८ एक लाख तेईस हजार सातसै अडसठि योजन का निपधका धनुप है॥ ३९३॥

आगै कहे जु दोऊनिके धनुपका प्रमाण तहां अव शेष अधिकका प्रमाण वा पार्श्व भुजाके अंक तिनकौं कहैं हैं;—

माहवचंदुद्धरिया णवयकला णयपदप्पमाणगुणा।
पासभुजो चोदसकदि वीससहस्सं च देसूणा॥ ३९४॥

माधवचंद्रोद्धृता नवककला नयपदप्रमाणगुणाः।
पार्श्वभुजः चतुर्दशकृतिः विंशसहस्रं च देशोनानि॥ ३९४॥

**अर्थः**—इहां पदार्थ नामकी संज्ञा करि अंक कहे हैं। सो माधव चंद्र कहिए उगणीस जातैं माधव जो नारायण सो नव है। अर दृश्यमान चंद्र एक है। इन दोऊ अंकनिकरि उगणीस

भए तिनकरि उद्धृत नव कला । भावार्थ-एक योजनकों उगणीसका भाग दीजिए । तहां नव भाग प्रमाण तौं हरिक्षेत्रका चापका प्रमाण पूर्वै कह्या तामें अवशेष अधिक जाननां । बहुरि इहां नय स्थान कहिए नय नव हैं तातैं नवकी जायगा नव ताकौं प्रमाण कहिए प्रमाणका भेद दोय है सो दोय करि गुणिए तब एक योजनका उगणीस भागविषै अठारह भाग प्रमाण होइ। सो इतनां निषध पर्वतका चापका प्रमाण पूर्वै योजनरूप कह्या तामें इतनां अवशेष अधिक जाननां। बहुरि निषध पर्वतकी पार्श्व भुजा चौदहकी कृति एकसौ छिनवै तिहकरि अधिक वीस हजार योजन२०१९६ प्रमाण है ॥ ३९४ ॥

आगैं अयन विषै विभागकौं न करि सामान्यपनैं चार क्षेत्रविषै उदय प्रमाणका प्रतिपादनके आर्थि यहु सूत्र कहैं हैं;—

**दिणगदिमाणं उदयो ते णिसहे णीलगे य तेसट्ठी ।**
**हरिरम्मगेसु दो द्दो सूरे णवदससयं लवणे ॥ ३९५ ॥**

दिनगतिमानं उदयः ते निषधे नीलके च त्रिषष्टिः ।
हरिरम्यकयोः द्वौ द्वौ सूर्ये नवदशशतं लवणे ॥ ३९५ ॥

**अर्थ**—एक दिन विषै चार क्षेत्रका व्यासविषै सूर्यका गमनका प्रमाण एकसौ सत्तरिका इकसठिवां भाग प्रमाण कह्या था सो इतना दिन गति क्षेत्रीविषै जो एक उदय होइ तौ चार क्षेत्रका पांचसै दश योजन विषै केते उदय होइ । ऐसैं किएं लब्ध प्रमाण एकसै तियासी उदय आए । बहुरि पर्यंतविषैं चार क्षेत्र विषैं अवशेष सूर्य बिंब करि रोक्या हुवा अठतालीस इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र तिहविषैं एक उदय है ऐसैं मिलि एकसौ चौरासी उदय हैं । जातैं एक एक वीथी प्रति एक एक उदय संभवै हैं। तहां निषध नीलविषै प्रत्येक तरेसठि अर हरि रम्यक क्षेत्रविषै दोय दोय अर लवण समुद्र विषै एकसौ उगणीस उदय हैं ।

**भावार्थ**—समस्त चार क्षेत्रविषै सूर्यका उदय एकसै चौरासी हो है । तहां भरत अपेक्षा तरेसठि तौ निषध पर्वतविषै दोय हरि क्षेत्रविषै एकसौ उगणीस लवण समुद्रविषै उदय स्थान हैं। अभ्यंतर वीथीतैं लगाय तेरसठिवी वीथी पर्यंतविषै तिष्ठता सूर्य तौ निषध पर्वतकै ऊपरि उदय हो है भरत क्षेत्रके वासीनिकरि देखिए हैं । बहुरि चौसठि पैंसठिवीं वीथी विषै तिष्ठता सूर्य हरि क्षेत्र ऊपरि उदय हो है । बहुरि छ्यासठिवींतैं लगाय अंतपर्यंत वीथीनिविषै तिष्ठता सूर्य लवण समुद्रकै ऊपरि उदय हो है । ऐसैंही ऐरावत अपेक्षा तरेसठि नीलपर्वतविषै दोय रम्यक क्षेत्रविषै एकसौ उगणीस लवण समुद्रविषै उदय स्थान जाननैं ॥ ३९५ ॥

आगैं दक्षिणायनविषै चार क्षेत्रका द्वीप वेदिका समुद्रका विभाग करि उदय प्रमाणका प्ररूपणकै अर्थी त्रैराशिककी उत्पत्ति कहैं हैं;—

**दीवविहिचारखित्ते वेदीए दिणगदीहिदे उदया ।**
**दीवे चउ चंदस्स य लवणसमुद्दम्हि दस उदया ॥ ३९६ ॥**

द्वीपोदधिचारक्षेत्रे वेद्यां दिनगतिहिते उदयाः ।
द्वीपे चतुः चंद्रस्य च लवणसमुद्रे दश उदयाः ॥ ३९६ ॥

अर्थः—द्वीप समुद्र संबंधी चार क्षेत्र अर वेदी इनकौं दिन गति प्रमाणका भाग दिएं उदयनिका प्रमाण हो है। भावार्थ—चार क्षेत्रका व्यासविषै वीथीनिविषै सूर्यका जहां जहां जितनें उदय पाइये हैं सो कहिए हैं। तहां जंबूद्वीप संबंधी चार क्षेत्र एकसौ असी योजनमैंस्यौं जंबूद्वीपकी वेदीका व्यास च्यारि योजन है सो दूरि किएं द्वीप चार क्षेत्र एकसौ छिहंत्तरि योजन है। बहुरि च्यारि योजन वेदी ऊपरि चार क्षेत्र हैं। बहुरि तीनसै तीस योजन अर अठतालीस इकसठिवां भाग प्रमाण लवण समुद्र ऊपरि चार क्षेत्र है इनकौं दिन गतिका प्रमाण एकसौ सत्तरिका एकसठिवां भाग प्रमाण ताका भाग दिएं जितनां जितनां प्रमाण आवै तितना उदय जाननें। सो कहिए हैं। दिन गतिका प्रमाण एकसौ सत्तरिका इकसठिवां भाग $\frac{१७०}{६१}$ सो इतना क्षेत्र विषै एक उदय होय तौ वेदिका रहित द्वीप चार क्षेत्र विषै केते उदय हौंहिं ऐसैं त्रैराशिक किएं तरेसठि उदय पाए। तिन विषै अभ्यंतर वीथीका उदय पूर्वला उत्तरायणविषै गिनिए हैं तातैं वासठि उदय भए अर अवशेष छवीस एक सौ सत्तरिवां भाग प्रमाण उदयके अंश रहे। इहां द्वीप संबंधी अंतका सूर्य सूर्य विषै अंतराल पर्यंत आए। बहुरि अवशेष छवीस एकसौ सतरिवां भाग उदय अंश रहे थे तिनका योजन अंशरूप क्षेत्र करिए हैं। एक उदयका एकसौ सत्तरि योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र होइ तौ छवीस एकसौ सत्तरिवां भाग प्रमाण उदय अंशनिका केता क्षेत्र होइ। ऐसैं त्रैराशिक करि फल राशि इच्छा राशिकौं गुणें छवीस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र भया। ए द्वीप संबंधी योजन अंश अगले बिंब करि रोक्या हुवा क्षेत्रविषै देनां। बहुरि एकसौ सत्तरिका इकसठिवां भागविषै एक उदय होय तौ च्यारि योजन प्रमाण वेदिका क्षेत्रविषैं केता उदय होइ ऐसैं त्रैराशिक करि भागहारका भागहार इकसठि करि च्यारिकौं गुणें दोयसै चवालीस भए। इनकौं एकसौ सत्तरि भागहारका भाग दिएं एक उदय पाया अवशेष चहौत्तरिका एकसौ सत्तरिवां भाग प्रमाण उदय अंश रहे। इनकौं पूर्वोक्त न्याय करि क्षेत्ररूप किएं चहौत्तरि योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र भया इस विषैं वाईस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र ग्रहि पूर्वोक्त द्वीपका अंत अवशेष क्षेत्र छवीस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण तिह विषैं मिलाएं। अठतालीस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण सूर्य बिंब करि रोक्या हुआ क्षेत्र संपूर्ण हो है। ऐसैं अभ्यंतर वीथी स्थिति सूर्य बिंबतैं चौसठिवीं वीथीस्थित सूर्यबिंबका व्यास छवीस इकसठिवां भाग तौ द्वीप चार क्षेत्रके अर वाईस इकसठिवां भाग वेदिका चार क्षेत्रको मिलिकरि सिद्ध हो है। इहां चौसठिवी वीथी द्वीप अर वेदिकाकी संधिविषै है ऐसा तात्पर्य जानना। ताके आगैं दोय योजनका अंतराल है, ताके आगैं सूर्यकरि रोक्या हुवा अठतालीस इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र है। तातैं परैं बावन योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र रह्या सो आगिला दोय योजनका अंतरालविषैं देनां। ऐसैं द्वीप वेदिकाका संधिविषै प्राप्त जो सूर्य बिंबका व्यास ताकौं प्राप्त भया वाईस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र तिहिस्यौं लगाइ वेदिकाका च्यारि योजन प्रमाण क्षेत्र समाप्त

भया। बहुरि लवण समुद्रविषै एकसौ सत्तरिका इकसठिवां भागविषै एक उदय होइ तौ बिंब रहित समुद्र चार क्षेत्र तीनसै तीस योजन तिहविषै केते उदय होइ ऐसैं त्रैराशिक करि पाए उदय एकसौ अठारह। बहुरि अवशेष उदय अंश सत्तरि एकसौ सत्तरिवां भाग प्रमाण इनका पूर्वोक्त प्रकार क्षेत्र किएं सत्तरि योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र भया। इनिकौं वेदिकासंबंधी अंतरालविषै प्राप्त बावन योजनका इकसठिवां भाग मिलाएं भागहार इकसठिका भाग दिएं दोय योजन प्रमाण अंतराल संपूर्ण हो है। बहुरि यातैं परैं रविबिंब सहित अंतर प्रमाणरूप दिन गतिशलाका अंतका अंतरालपर्यंत एकसौ अठारह हैं ते सुगम हैं। तहां उदय भी एकसौ अठारह है। तातैं परैं बाह्य वीथीविषै तिष्ठता सूर्यबिंबका व्यासविषै एक उदय है। ऐसैं सर्व मिलि लवण समुद्रविषै एकसौ उगणीस उदय हैं। ऐसैं दक्षिणायनविषै एकसौ तियासी उदय जाननें। इहां ऐसा भावार्थ जाननां वीथीविषै तिष्ठता हुआ सूर्यका बिंब प्रमाण जो क्षेत्र ताका नाम पथ व्यास है सो अठतालीस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण है। अर वीथी वाथीनिकै वीचि जितनां चार क्षेत्र विषै अंतराल ताका नाम अंतर है सो दोय योजन प्रमाण है। तहां एक सौ छिहंत्तरि योजन प्रमाण द्वीप संबंधी चार क्षेत्रविषै प्रथम अभ्यंतर पथ व्यास है ताकै आगैं प्रथम अंतराल है। ताकै आगैं दूसरा पथव्यास है। ताकै आगैं दूसरा अंतराल हैं। ऐसैं ही क्रमतैं अंतविषैं तेरसठिवां पथ व्यास अर ताके आगैं तेरसिठवां अंतराल हो है। अर ताकै आगैं छव्वीस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र अवशेष रह्या। बहुरि च्यारि योजन प्रमाण वेदिका संबंधी चार क्षेत्र है तामैं बाईस योजनका इकसठिवां भाग काढि तिस द्वीप संबंधी अवशेष क्षेत्रविषै जोड़ैं चौसठिवां पथ व्यास हो है। चौसठिवीं वीथी द्वीप अर वेदिकाकी संधिविषै है। बहुरि तिस पथ व्यासकै आगैं चौसठिवां अंतराल है ताके आगैं पैंसठिवां पथव्यास है ताकै आगैं बावन योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र वेदिका चार क्षेत्रविषै अवशेष रह्या। बहुरि पथ व्यास रहित समुद्र चार क्षेत्र तीनसै तीस योजन प्रमाण है। तामैं सत्तरि योजनका इकसठिवां भाग काढि वेदिका अवशेष क्षेत्रविषैं जोडें पैसठिवां अंतराल हो है। बहुरि ताकै आगैं पथ व्यास है ताकै आगैं अंतर है। ऐसैंही क्रमतैं अंतविषै एकसौ तियासीवां पथ व्यास आगैं एकसौ तियासींवां अन्तराल हो है। बहुरि ताकै आगैं पथ व्यास प्रमाण अवशेष समुद्रचार क्षेत्रविषै एकसौ चौरासीवां पथ व्यास है। बहुरि इहां जहां पथ व्यास है तहां वीथी जाननी। एक एक वीथीविषैं प्राप्त होइ सूर्यका दृष्टिविषै आवनां ताका नाम उदय जाननां। ऐसैं एकसौ चौरासी वीथीनिविषै एकसौ चौरासी उदय भए। तहां उत्तरायणस्यौं आवता आवता सूर्य अभ्यन्तर वीथीविषै आवै सो वह उत्तरायणविषै गिनि लिया अर लगता ही दूसरी बार तहां उदय होइ नाहीं तातैं दक्षिणायणविषै नाहीं गिना ऐसैं करि एकसौ तियासी उदय जाननें। आगैं उत्तरायणविषै कहिए है—लवण समुद्रविषै रविबिंब सहित चार क्षेत्र तीनसै तीस योजन अर अठतालीस इकसठिवां भाग प्रमाण है ताका समच्छेद करि जोड़े बीस हजार एकसौ अठहत्तरिका इकसठिवां भाग प्रमाण होइ $\frac{२०१७८}{६१}$ बहुरि एकसो सत्तरिका इकसठिवां भाग क्षेत्रकी एक दिनगतिशलाका होइ तौं बीस हजार एकसौ अठहत्तरिका इकसठिवां भागकी केती होइ ऐसैं त्रैराशिक किएं एकसौ

अठारह दिनगतिशलाका होइ। अर एकसौ अठारहका एकसौ सत्तरिवां भाग अवशेष रहै इहां एक घाटि दिन गति शलाका प्रमाण उदय एकसौ सत्तरह हैं। काहे तै ? जातैं बाह्य पथ संबंधी उदय दक्षिणायण संबंधी है सो इहां न गिन्यां। बहुरि अवशेप एकसौ अठारहका एकसौ सत्तरिवां भाग प्रमाण उदय अंशनिका पूर्वोक्त प्रकार क्षेत्र किएं एकसौ अठरह योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र अवशेप रह्या, तिसविपै अठतालीस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण तौ अगिला पथ व्यासविपै देना, तहां पथ व्यासविपै एक उदय है। अर पूर्वै एकसौ सतरह उदय मिलि उत्तरायणविपै समस्त उदय लवण समुद्रविपै एकसौ अठारह हो हैं। बहुरि अवशेप सत्तरि योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र लवण समुद्रविपै रह्या सो अगिला अन्तरविपै देनां ऐसैं समुद्र चार क्षेत्र समाप्त भया। बहुरि च्यारि योजन प्रमाण वेदिका क्षेत्रविपै पूर्वोक्त प्रकार त्रैराशिक करि ल्यायें एक उदय हो है। और अवशेप चहौत्तरि योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र रहै है। तिहविपै बावन योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्रकौं समुद्रका अवशेप क्षेत्र विपै मिलाएं दोय योजन प्रमाण अन्तर संपूर्ण हो है। इस अन्तरतैं आगैं एक दिनगतिविपै एक उदय होइ आगैं अवशेप बाईस योजनका इकसठिवां भाग रह्या सो आगिला पथ व्यासविपै देनां। ऐसैं च्यारि योजन प्रमाण वेदिका क्षेत्र भी समाप्त भया। आगैं वेदिका रहित द्वीप चार क्षेत्र एकसौ छिहंत्तरि योजन प्रमाण तामैं अभ्यन्तर पथ व्यास अठतालीसका इकसठिवां भाग प्रमाण समछेद करि घटाएं दश हजार छ सैं अठ्यासीका इकसठिवां भाग प्रमाण होइ। $\frac{१०६८८}{६१}$ बहुरि एकसौ सत्तरिका इकसठिवां भाग क्षेत्रकी एक दिनगति शलाका होइ तौ दश हजार छसैं अठ्यासीका इकसठिवां भागकी केती दिन गति शलाका होइ ऐसैं त्रैराशिक किएं बासठि दिनगतिशलाका पावैं, सो इतनांही उदय जांननां। अर अवशेप एकसा अठतालीसका एकसौ सत्तरिवां भाग प्रमाण उदय अंश रहैं। इनका पूर्वोक्त प्रकार क्षेत्र किएं एकसौ अठतालीस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण होइ तीहविपै छत्तीस योजनका इकसठिवां भागमात्र क्षेत्र तौ वेदिका अर द्वीपकी संधिविपै पथ व्यास है तहां देनां तब सा पथ व्यास संपूर्ण होइ अवशेप एकसौ बाईसका इकसठिवां भागहार करि भाजिए तब दाय योजन पाए सो संधि पथव्यासकै आगैं अंतरालविपै देना। बहुरि तातैं परैं बासठि दिनगतिशलाका हैं तहां तितनेंही उदय हैं। आगैं अभ्यन्तर पथ व्यासविषै एक एक उदय है ऐसैं वेदिकारहित द्वीपचार क्षेत्रविषैं संधि उदय सहित चौंसठि उदय हो हैं। ऐसैं मिलि करि उत्तरायणविपै सूर्यके एकसौ तियासी उदय जानने। इहां ऐसा भावार्थ जाननां। अंतरका वा पथ व्यासका स्वरूप प्रमाण पूर्वै कह्या था तहां लवण समुद्रका चार क्षेत्रविपै प्रथम पथव्यास है। आगैं अंतराल है ताकै आगें पथ व्यास है। ऐसैंही क्रमतैं एकसौ अठारव्हां अंतरालकैं आगैं एकसौ उगणीसवां पथ व्यास है अवशेप सत्तरि योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र रहै है। बहुरि वेदिकाका चार क्षेत्रविपै बावन योजनका इकसठिवां भाग ग्रहि तामैं मिलाएं समुद्र वेदिकाकी संधिविपै एकसौ उगणीसवां अंतराल हो है, ताकै आगैं एकसौ वीसवां पथव्यास

है । आगैं एकसौ वीसवां अंतराल है ताकै आगैं बाईस योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्र अव शेष रहै है । बहुरि द्वीप चार क्षेत्रविषै छवीस योजनका इकसठिवां भाग ग्रहि तामैं मिलाएं एक सौ इकईसवां पथव्यास हो है । ताकै आगैं एक सौ इकईसवां अंतर है ऐसैं क्रमतैं अंतविषै एक सौ तियासीवां अंतरकै आगैं एकसौ चौरासीवां पथव्यास है तहां एकसौ चौरासी पथव्यास प्रमाण उदयनिविषै बाह्य वीथीका उदय पूर्व दक्षिणायण विषै गिनिए हैं । अर लगता तहां उदय न हो है तातैं समुद्रका आदि उदय घटाएं उत्तरायणविषै सूर्यके उदय एकसौ तियासी ऐसैं जाननें। उदयादिकका स्वरूप पूर्वोक्त कह्याही था । बहुरि चंद्रमाका भी अयन भेद किएं विना द्वीप चार क्षेत्र १८० विषै पांच उदय अर समुद्र चार क्षेत्र ३३०। $\frac{४८}{६१}$ विषै दश उदय हैं । मिलि करि पंद्रह उदय हो हैं । आगैं दक्षिणायणविषै कहैं हैं । पथव्वासपिंडहीणे इत्यादि पूर्वोक्त सूत्रकरि चंद्रमाका दिनगति क्षेत्र पंद्रह हजार पांचसै इकावन योजनका च्यारिसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण है सो इतनां $\frac{१५५५१}{४२७}$ क्षेत्रविषै जो एक उदय होय तौ एकसौ अस्सी योजन प्रमाण द्वीप चार क्षेत्रविषै कितनें उदय होंहि ऐसैं त्रैराशिक किएं च्यारि उदय पाए । बहुरि अवशेष चौदह हजार छसै छप्पनका पंद्रह हजार पांचसै इकावनवां भाग प्रमाण उदय अंश रहे । बहुरि एक उदयका पंद्रह हजार पांचसै इकावनका च्यारिसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण क्षेत्र होइ तौ चौदह हजार छसै छप्पनका पंद्रह हजार पांचसै इकावनवां भाग प्रमाण उदय अंशनिका केता क्षेत्र होइ ऐसैं त्रैराशिक करि तिर्यग फलराशिकै भाज्य करि इच्छाराशिकै भागका अपवर्त्तन किएं चौदह हजार छसै छप्पन योजनका च्यारिसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण क्षेत्र अवशेष रह्या । बहुरि चंद्रमाका पथ व्यासका प्रमाण छप्पन योजनका इकसठिवां भाग ताका सात करि समच्छेद किए तीनसै बाणवै योजनका च्यारिसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण भया सो इतनां तिस अवशेष क्षेत्रविषैं ग्रहि अगिला पथ व्यासविषै दैनां । तहां उदय एक, ऐसैं जंबूद्वीप विषैं पांचसै उदय हैं तिनविषै अभ्यन्तर पथका उदय उत्तरायण संबंधी है तातैं ताका न ग्रहण करनैंतैं द्वीपविषै च्यारि उदय हैं । द्वीप चार क्षेत्रविषैं अवशेष चौदह हजार दोयसै चौसठिका च्यारिसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण क्षेत्र रह्या । सो यहु भागहारका भाग दिएं तेतीस योजन अर एकसौ तहेत्तरिका च्यारिसै सत्ताईसवां भागप्रमाण क्षेत्र है । सो याकौं अगले अंतरालविषै दैनां । आगैं समुद्रविषैं चारक्षेत्र तीनसै तीस योजन अर अठतालीसका इकसठिवां भाग प्रमाण हैं । ताकौं समछेदकरि मिलाएं वीस हजार एकसौ अठहत्तरिका इकसठिवां भागप्रमाण भया । सो पंद्रह हजार पांचसै इकावन योजनका च्यारिसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण क्षेत्रविषैं एक उदय होइ तौ वीस हजार एकसौ अठहत्तरिका इकसठिवां भाग प्रमाण क्षेत्रविषै कितनें उदय होंहि । ऐसैं त्रैराशिक किएं इकसठिकरि अपवर्तन करि सातकरि गुणें लब्धराशि एक लाख इकतालीस हजार दोयसै छियालीसका पंद्रह हजार पांचसै इकावनवां भागप्रमाण आया सो भागहारका भाग दिएं नव उदय पाए अर अवशेष बारहसै सित्यासीका पंद्रह हजार पांचसै इकावनवां भागप्रमाण उदयअंश रहे इनका पूर्वोक्त प्रकार क्षेत्र किएं बारहसै सित्यासी योजनका च्यारिसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण क्षेत्र अवशेष रह्या । यामैं

सौं चन्द्रबिंबका प्रमाण छप्पन योजनका इकसठिवां भाग प्रमाण ताकौं सातकरि समछेद किएं तीनसै बाणवैका च्यारिसै सत्ताईसवां भाग प्रमाण ग्रहिकरि बाह्यपथविर्षे देना। तहां एक उदय ऐसैं लवण समुद्रविर्षे दश उदय हैं। बहुरि अवशेष आठसै पिच्याणवै योजनका च्यारिसै सत्ताईसवां भागप्रमाण क्षेत्र रह्या सो अपनां भागहारका भाग दिएं दोय योजन अर इकतालीसका च्यारिसै सत्ताईसवां भागप्रमाण क्षेत्र भया सो याकौं द्वीपविर्षे अवशेष तेतीस योजन अर एकसौ तहेत्तरिका च्यारिसै सत्ताईसवां भागप्रमाण क्षेत्रविर्षे जोड़े पैंतीस योजन अर दोयसै चौदहका च्यारिसै सत्ताईसवां भागप्रमाण पांचवां अंतराल संपूर्ण हो है। ऐसैं चन्द्रमाका दक्षिणायनविर्षे द्वीप समुद्रका मिलि चौदह उदय हो है। इहां ऐसा भावार्थ जाननां। चन्द्रमाका चार क्षेत्रविर्षे पंद्रह वीथी हैं तिनविर्षे चन्द्रमाका दृष्टिविर्षे आवनां सोई उदय है। तहां वाथीनिविर्षे जहां चन्द्रबिंब छप्पन योजनका इकसठिवां भागप्रमाण क्षेत्र रोकै ताका नाम पथव्यास है। बहुरि वीथीनिकै वीचि वीचि पैंतीस योजन अर दोयसै चौदहका च्यारिसै सत्ताईसवां भागप्रमाण जो अंतराल ताका नाम अंतर है। दोऊनिकौं मिलाएं पंद्रह हजार पांचसै इकावनका च्यारिसै सत्ताईसवां भागप्रमाण दिनगति क्षेत्र हो है। तहां द्वीपसंबंधी एकसौ असी योजन प्रमाण चारक्षेत्रविर्षे प्रथम अभ्यन्तर वीथी है तहां पथ व्यास प्रमाण क्षेत्र है। ताकै आगैं प्रथम अंतर है ताकै आगैं दूसरा पथव्यास है। ऐसैं क्रमतैं चौथा अंतरकै आगैं पांचवां पथ व्यास है ताके आगैं द्वीपचार क्षेत्रविर्षे तेतीस योजन अर एकसौ तहेत्तरिका च्यारिसै सत्ताईसवां भागप्रमाण क्षेत्र अवशेष रहै है। बहुरि लवण समुद्रका चार क्षेत्र तीनसै तीस योजन अर अठतालीसका इकसठिवां भागप्रमाण तिहविर्षे दोय योजन अर दोयसै चौदहका च्यारिसै सत्ताईसवां भागप्रमाण क्षेत्रद्वीप अवशेष क्षेत्रविर्षे जोड़े। द्वीप अर समुद्रकी संधिविर्षे पांचवां अंतराल हो है। ताकै आगैं छठा पथ व्यास है। ताके आगैं छठा अंतराल है। ऐसे क्रमतैं अंतविर्षे चौदव्हां अंतरालकै आगैं पंद्रव्हां बाह्य पथ व्यास है। इन पंद्रह पथ व्यासनिविर्षे जे पंद्रह उदय तिनविर्षे द्वीप चार क्षेत्रविर्षे पहला अभ्यन्तर वीथीका उदय उत्तरायण संबंधी है। तातैं चंद्रमाकै दक्षिणायणविर्षे ऐसैं चौदह उदय जाननें। आगैं उत्तरायणविर्षे कहैं हैं। समुद्रका चार क्षेत्र तीनसै तीस योजन अर अठतालीसका इकसठिवां भागप्रमाण है। तहां पूर्वोक्त प्रकार करि ल्याएं नव उदय आए। अर अवशेष उदय अंस बारहसै सित्यासीका पंद्रह हजार पांचसै इकावनवां भागप्रमाण रहे इनका पूर्वोक्त प्रकार क्षेत्र किए बारहसै सित्यासी योजनका च्यारिसै सत्ताईसवां भागप्रमाण हो है। बहुरि यामैं चंद्रबिंबका प्रमाण छप्पन योजनका इकसठिवां भाग मात्र ताका सात करि समछेद किएं तीनसै बाणवैका च्यारिसै सत्ताईसवां भागप्रमाण ताकौं ग्रहि करि बाह्य पथतैं लगाय नवमां अंतरालकै आगैं जो पथ व्यास तामैं देना था तहां एक उदय ऐसे समुद्रविर्षे दस उदय भए इनविर्षे बाह्य पथका उदय दक्षिणायण संबंधी ही है। तातैं ताका ग्रहण न करना ऐसे नव उदय रहै। बहुरि समुद्र चार क्षेत्रविर्षे अवशेष दोय योजन अर इकतालीसका च्यारिसै सत्ताईसवां भागप्रमाण क्षेत्र रह्या सो दशवां अंतरालविर्षे देनां। ऐसे किएं समुद्रका चार क्षेत्र समास भया।

आगैं द्वीप चार क्षेत्रविर्षे पूर्वोक्त प्रकार उदय च्यारि अर अवशेष चौदह हजार छसै छप्पनका पंद्रह हजार पांचसै इकावनवां भागप्रमाण उदय अंश रहे इनका पूर्वोक्त प्रकार क्षेत्र किएं चौदह हजार छसै छप्पनका च्यारिसै सत्ताईस योजनका च्यारिसै सत्ताईसवां भागप्रमाण होइ यामें प्रतीस योजन अर एकसौ तहेत्तरिका च्यारिसैं सत्ताईसवां भागका समछेद किएं चौदह हजार दोयसैं चौसठिका च्यारिसैं सत्ताईसवां भाग होइ सो ग्रहि करि दशवां अंतरालविषै देना। ऐसैं पैंतीसै योजन अर दोयसै चौदहका च्यारिसैं सत्ताईसवां भाग प्रमाण दशवां अंतराल संपूर्ण हो है। वहुरि अव शेप तीनसै वाणवे योजनका च्यारिसै सत्ताईसवां भागप्रमाण रह्या। ताकौं सात करि अपवर्तन किए छप्पनका इकसठिवां भागप्रमाण होइ सो यहु अभ्यन्तर पथ व्यासविषै देनां। इसविषै एक उदय ऐसे द्वीपविषैं चंद्रमाका उत्तरायणविषै पांच उदय हैं इहां ऐसा भावार्थ जाननां। चंद्रमाका पथव्यास अंतरादिकका स्वरूप प्रमाणतैं पूर्वोक्त जानना तहां लवण समुद्रका चार क्षेत्रविषै प्रथम बाह्य पथ व्यास है। ताकै अभ्यंतरवर्ती आगैं आगैं प्रथम अंतर है। ताकै आगैं द्वितीय पथ व्यास है। ताकै आगैं द्वितीय अंतर है। ऐसे क्रमतैं नवमां अंतरकै आगैं दशवां पथ व्यास है। ताकै आगैं दोय योजन अर इकतालीसका च्यारिसैं सत्ताईसवां भाग प्रमाण क्षेत्र अवशेप रह्या। वहुरि आगैं द्वीप चार क्षेत्रविषै तेतीस योजन अर एकसौ तहेत्तरिका च्यारिसै सत्ताईसवां भागप्रमाण क्षेत्र ग्रहि अर समुद्रका अवशेप क्षेत्र ग्रहि दशवां अंतरालकौं दीएं समुद्र अर द्वीपकी संधिविषै दशवां अंतराल संपूर्ण हो है। ताकै आगैं ग्यारव्हां पथ व्यास है ताकै आगैं ग्यारव्हां अंतराल है। ऐसैं क्रमतैं अंतविषैं चौदहवां अंतकै आगैं पंद्रहवां अभ्यंतर पथ व्यास है। ऐसैं इन पंद्रह पथ व्यासनिविषैं पंद्रह उदय हैं। तिनिविषैं समुद्रसंबंधी प्रथम व्यासविषैं जो उदय है सो दक्षिणायन संबंधीही है। जातैं लगता दूलरीवार तहां उदय न हो है तातैं चंद्रमाका उत्तरायणविषैं नव समुद्रविषैं पांच द्वीप विषैं ऐसे चौदह उदय जानने वहुरि इहां सूर्य व चन्द्रमाका उत्तरायणविषैं उदयका विभाग मूल सूत्र कर्त्तान कह्या। तथापि दक्षिणायणका उदय मार्ग्ग करि टीकाकार विचार करि कह्या है ॥३९६॥

अव दक्षिण उत्तर ऊर्द्ध अधविषै सूर्यके आतापका क्षेत्र विभाग कहैं हैं;—

**मन्दरगिरिमज्झादो जावय लवणुवहिछट्टभागो दु।**
**हेट्ठा अट्ठरससया उवरिं सयजोयणा ताओ ॥ ३९७ ॥**

मंदरगिरिमध्यात् यावत् लवणोदधिषष्टभागस्तु।
अधस्तनो अष्टादशशतानि उपरि शतयोजनानि तापः ॥ ३९७ ॥

**अर्थ—**मेरुगिरिके मध्यतैं लगाय यावत् लवण समुद्रका छठा भागपर्यंत सूर्यका आताप फैलै है। ताका उदाहरण अभ्यन्तर वीथीविषैं तिष्टता सूर्यकी अपेक्षा कहिए है। जंबूद्वीपका आधा क्षेत्र पचास हजार योजन तामें द्वीप चार क्षेत्र एकसौ अस्सी योजन घटाएं गुणचास हजार आठसै वीस योजन प्रमाण तौ मेरु गिरिके मध्यतैं लगाय अभ्यंतर वीथी पर्यंत उत्तर दिशा विषैं आताप फैलै है। वहुरि लवण समुद्रका व्यास दोय लाख योजन ताका छट्ठा भाग तेत्तीस हजार तीनसै

तेतीस योजन अर एकका तीसरा भाग प्रमाण यामैं द्वीप चार क्षेत्र एकसौ अस्सी योजन मिलाएं तेतीस हजार पांचसै तेरह योजन अर एकका तीसरा भाग प्रमाण अभ्यंतर वीथीतैं लगाय लवण समुद्रका छठा भाग पर्यंत दक्षिण दिशाविषैं आताप फैलै है। बहुरि ऐसैंही अन्य वीथीनिविषैं भी जाननां। बहुरि सूर्य विंवतैं नीचे अठारहसै योजन पर्यंत अधः दिशा विषै आताप फैलै है। **भावार्थ**—सूर्यविंवतैं नीचैं आठसै योजन तौ समभूमि है अर तातैं नीचैं हजार योजन पर्यंत चित्रा पृथ्वी है तहां पर्यंत सूर्यका आताप फैलै है। बहुरि सूर्य विंवतैं ऊपरि सौ योजन पर्यंत ऊर्द्ध दिशाविषैं आताप फैलै है। **भावार्थ**— सूर्यविंवतैं ऊपरि सौ १०० योजनपर्यंत ज्योतिर्लोक है तहांपर्यंत सूर्यका आताप फैलै है। ऐसे परिधिनि विषै तो आताप फैलनेका प्रमाण पूर्वै कह्या था इहां दक्षिण उत्तर ऊर्द्ध अधः दिशा विषै आताप फैलनेका प्रमाण कह्या॥ ३९७॥

आगैं चंद्रमा सूर्य ग्रह इनकैं नक्षत्र भुक्तिके प्रतिपादन करनैं कौं चाहता आचार्य सो प्रथम एक एक नक्षत्र संवंधी मर्यादारूप गगन खंडनिकौं कहैं है;—

**अभिजिस्स गगणखंडा छस्सयतीसं च अवरमज्झवरे।**
**छप्पण्णरसे छक्के इगिदुतिगुणपणयुतसहस्सा॥ ३९८॥**

अभिजितः गगनखंडानि षट्शतत्रिंशत् च अवरमध्यवराणि।
षट्पंचदशे षट्के एकद्वित्रिगुणपंचयुतसहस्राणि॥ ३९८॥

**अर्थ**—अभिजित नक्षत्रके गगनखंड छसै तीस हैं। बहुरि जघन्य मध्य उत्कृष्ट नक्षत्र क्रमतैं छह पंद्रह छह प्रमाणकौं धरै तिनके एक दोय तीन गुणां पांच संयुक्त एक हजार प्रमाण गगन खंड हैं। **भावार्थ**—परिधिरूप जो गगन कहिए आकाश ताके एक लाख नव हजार आठसै खंड करिए तामैं एक चंद्रमा संवंधी अभिजित नक्षत्रके छसै तीस गगन खंड है। छसै तीस खंड प्रमाण परिधि रूप आकाश क्षेत्र विषै अभिजित नक्षत्रकी सीमा मर्यादा है। बहुरि ऐसैं हीं छह जघन्य नक्षत्र तिन एक एकके एक हजार पांच गगन खंड हैं। बहुरि पंद्रह मध्य नक्षत्र तिन एक एककै दोय हजार दश गगन खंड हैं। बहुरि छह उत्कृष्ट नक्षत्र तिन एक एकके तीन हजार पंद्रह गगन खंड हैं। बहुरि इतनें इतनेंही दूसरा चंद्रमा संवंधी हैं। इहां नक्षत्रनिके जघन्य मध्य उत्कृष्टपना गगन खंडनिका थोडा वहुत अति वहुतकी अपेक्षा कह्या है स्वरूपादिक अपेक्षा नाहीं कह्या है॥ ३९८॥

आगैं तिन जघन्य मध्यम उत्कृष्ट नक्षत्रनिकौं दोय गाथानि करि कहैं हैं;—

**सदभिस भरणी अद्दा सादी असिलेस्स जेट्ठमवर वरा।**
**रोहिणि विसाह पुणव्वसु तिउत्तरा मज्झिमा सेसा॥ ३९९॥**

शतभिषा भरणी आर्द्रा स्वातिः आश्लेषा ज्येष्ठा अवराणि वराणि।
रोहिणी विशाखा पुनर्वसुः त्र्युत्तराः मध्यमा शेषाः॥ ३९९॥

**अर्थ**—शतभिषक कहिए शतभिषा १ भरणी १ आर्द्रा १ स्वाति १ आश्लेषा १ ज्येष्ठा १ ए छह जघन्य नक्षत्र हैं। बहुरि रोहणी १ विशाखा १ पुनर्वसु १ उत्तरा कहिए उत्तरा फाल्गुनी १ उत्तराषाढा १ उत्तरा भाद्रपदा ए छह उत्कृष्ट नक्षत्र हैं। बहुरि अवशेष नक्षत्र मध्यम हैं॥ ३९९॥

ते अवशेष कौंन सो कहैं हैं;—

अस्सिणि कित्तिय मियासिर पुस्स मघा हत्थ चित्त अणुराहा।
पुव्वातिय मूल सवणा सधणिट्ठा रेवदी य मज्झिमया ॥ ४०० ॥
आश्विनी कृतिका मृगशीर्षा पुष्यः मघा हस्तः चित्रा अनुराधा ।
पूर्वत्रिका मूलं श्रवणं सधनिष्ठा रेवती च मध्यमाः ॥ ४०० ॥

अर्थ—अश्विनी १ कृतिका १ मृगशीर्षा १ पुष्य १ मघा १ हस्त १ चित्रा १ अनुराधा १ पूर्वत्रिका कहिए पूर्वा फाल्गुनी १ पूर्वाषाढा १ पूर्वाभाद्रपदा १ मूल १ श्रवण १ धनिष्टा १ रेवती १ ए पंद्रह मध्यम नक्षत्र हैं॥ ४०० ॥

आगै कहे जु ए गगन खंड तिनकों इकटे करि चंद्रमा सूर्य नक्षत्रनिकी परिधिविषै भ्रमण कालका प्रमाण कहैं हैं;—

दोचंदाणं मिलिदे अट्ठसयं णवसहस्समिगिलक्खं ।
सगसगमुहुत्तगदिणभखंडहिदे परिधिगमुहुत्ता ॥ ४०१ ॥
द्विचंद्रयोः मिलिते अष्टशतं नवसहस्रं एकलक्षं ।
स्वकस्वकमुहूर्तगातिनभःखंडहिते परिधिमुहूर्ताः ॥ ४०१ ॥

अर्थ—दोय चंद्रमानिके मिलाए हुए आठसै सहित नव हजार अधिक एक लाख गगन खंड हो हैं। कैसें? जघन्य मध्य उत्कृष्ट नक्षत्रनिका गगन खंड क्रमतें एक हजार पांच दो हजार दश तीन हजार पंद्रह इनकौं अपनें नक्षत्र प्रमाण छह पंद्रह छह करि गुणें जघन्य नक्षत्रनिके छह हजार तीस मध्य नक्षत्रनिके तीस हजार एकसौ पचास, उत्कृष्ट नक्षत्रनिके अठारह हजार निंबे गगन खंड हो हैं। ए खंड अर छसै तीस अभिजितके खंड मिलाएं चौवन हजार नवसै भए। बहुरि एक परिधि विषैं दोय चंद्रमा हैं। तातैं तिनकौं दूणां करि मिलाइए तब एक लाख नव हजार आठसै गगन खंड परिधि विषैं हो है। बहुरि इन गगन खंडनिकौं अपनां अपनां एक मुहूर्त विषैं गमन प्रमाण जे गगन खंड तिनका भाग दिएं परिधि विषै भ्रमणकालका प्रमाण आवै है। कैसैं सो कहिए है। चंद्रमा सतरहसै अडसठि गगन खंडनिविषै एक मुहूर्त्त करि गमन करै तौ एक लाख नव हजार आठसै गगन खंडनि विषै केते मुहूर्त्तनिकरि गमन करै ऐसैं त्रैराशिक किएं चंद्रमाका परिधि विषै भ्रमण करनैंका काल बासठि मुहूर्त्त आए, अर एकसौ चौरासीका सतरहसै अडसठिवां भागका आठ करि अपवर्तन किएं तेईस मुहूर्तका दोयसै इकईसवां भाग आया। बहुरि याही प्रकार सूर्य अठारहसै तीस गगन खंडनिविषै एक मुहूर्त्त करि गमन करै तौ एक लाख नव हजार आठसै गगन खंडनि विषै केते मुहूर्तनि करि गमन करै ऐसैं त्रैराशिक किएं सूर्यका परिधिविषै भ्रमण करनेंका काल साठि मुहूर्त आवै है। बहुरि नक्षत्र अठारहसै पैंतीस गगनखंडनिविषै एक मुहूर्त करि गमन करै तौ एक लाख नव हजार आठसै गगनखंडनिविषै केते मुहूर्तनि करि गमन करै ऐसैं त्रैराशिक किएं नक्षत्रनिका परिधिविषै भ्रमण करनेंका काल गुणसठि तौ मुहूर्त आए अर अवशेष पंद्रहसैं पैंतीसका अठारहसैं पैंतीसवां भाग ताका पांच करि अपवर्त्तन किए तीनसैं सात मुहूर्त्तनिका तीनसैं सतस-

ठिवां भाग आया। या प्रकार एक वार संपूर्ण एक परिधिविर्षे भ्रमण करनेंका काल प्रमाण कह्या ॥ ४०१ ॥

आगें सो एक मुहूर्त्त करि अपनां अपनां गगन खंडनिविषै गमन करनेंका प्रमाण कहा सो कहैं हैं;—

अट्टट्ठी सत्तरसयमिंदू वावट्ठि पंचअहियकमं।
गच्छंति सूररिक्खा णभखंडाणिगिमुहुत्तेण ॥ ४०२ ॥

अष्टषष्टिः सप्तदशशतं इंदुः द्वाषष्टिः पंचाधिकक्रमाणि।
गच्छंति सूर्यऋक्षाणि नभःखंडानि एकमुहूर्तेन ॥ ४०२ ॥

अर्थ—अडसठि अधिक सतरहसैं १७६८ गगन खंडनिकौं चंद्रमा एक मुहूर्त्त करि गमन करै है। बहुरि तिनतैं बासठि अधिक ताका अठारहसैं तीस गगन खंडनिकौं सूर्य अर इनतैं पांच अधिक ताका अठारहसैं पैंतीस गगन खंडनिकौं नक्षत्र एक मुहूर्त करि गमन करै हैं ॥ ४०२ ।

आगें चंद्रमादि तारापर्यंत ज्योतिषीनिकैं गमन विशेषका स्वरूप कहैं हैं;—

चंदो मंदो गमणे सूरो सिग्घो तदो गहा तत्तो।
तत्तो रिक्खा सिग्घा सिग्घयरा तारया तत्तो ॥ ४०३ ॥

चंद्रो मंदो गमने सूरः शीघ्रः ततो ग्रहाः ततः।
ततः ऋक्षाणि शीघ्राणि शीघ्रतराः तारकाः ततः ॥ ४०३ ॥

अर्थ—सर्वतें गमनविषै चंद्रमा मंद है मंद गमन करै है। तातैं सूर्य शीघ्र गमन करै है। तातैं ग्रह शीघ्र गमन करैं हैं, तातैं नक्षत्र शीघ्र गमन करै हैं, तातैं अतिशीघ्र तारे गमन करैं हैं ॥ ४०३ ॥

आगें अब चंद्रमा सूर्यकै नक्षत्र भुक्तिकौं कहैं हैं;—

इंदुरवीदो रिक्खा सत्तट्ठी पंच गगणखंडहिया।
अहियहिदरिक्खखंडा रिक्खे इंदुरविअत्थणमुहुत्ता ॥ ४०४ ॥

इंदुरवितः ऋक्षाणि सप्तषष्टिः पंच गगनखंडाधिकानि।
अधिकहितऋक्षखंडानि ऋक्षे इंदुरविअस्तमनमुहूर्ताः ॥ ४०४ ॥

अर्थ—चंद्रमा सूर्यके गगन खंडनितैं क्रमतैं सड़सठि अर पांच गगन खंड अधिक नक्षत्रनिकैं एक मुहूर्त्त करि गमन अपेक्षा गगन खंड हैं। सो इस अधिकका भाग अपनें अपनें नक्षत्र खंड-निकौं दिएं नक्षत्र अर चंद्र वा सूर्यका आसन्न मुहूर्त्तनिका प्रमाण आवै है। सो कहिए हैं। एक ही वार चंद्रमा अर नक्षत्र साथि गमनका प्रारंभ किया तहां एक मुहूर्त्तविषै चंद्रमा तो सतरहसै अड-सठि गगन खंडनि प्रति गमन किया अर नक्षत्र अठारहसै पैंतीस गगन खंडनि प्रति गमन किया। तहां चंद्रमा नक्षत्रतैं सतसठि गगन खंड पीछैं रह्या। तहां अभिजित नक्षत्र अर चंद्रमा दोऊ साथि गमनका प्रारंभ करि एक मुहूर्त्तविषै अभिजिततैं चंद्रमा सतसठि गगन खंड पीछैं रह्या। बहुरि दूसरा मुहूर्तविषै और सतसठि गगन खंड पीछैं रह्या। ऐसें पीछैं रहता रहता जितनें काल करि

छसै तीस अभिजितके सर्व खंडनिकों छोड़ि पीछैं रहै तितनां काल अभिजित नक्षत्र अर चंद्रमाका आसन्न मुहूर्त कहिए। सो सड़सठि अधिक खंडनिके पीछैं छोड़नेंमें एक एक मुहूर्त्त होइ तौ छसै तीस अभिजित खंडनिके पीछैं छोड़नेमें केते मुहूर्त होइ। ऐसैं त्रैराशिक करि अधिक प्रमाण सतसठिका भाग अपनें छसै तीस खंडनिकौं दिएं लब्ध राशि नव मुहूर्त्त अर सत्ताईसका सतसठिवां भाग मात्र अभिजित अर चंद्रमाका आसन्न मुहूर्त्तका प्रमाण आया। इतनें काल चंद्रमा अभिजित संबंधी गगन खंडानिके निकट वर्ती रहैं हैं। तातैं आसन्न मुहूर्त्त कहिए। बहुरि इस आसन्न मुहूर्त्त काल हीं विषै नक्षत्र भुक्ति कहिए। यावत्काल चंद्रमा आभिजित संबंधी गगन खंडनिके समीपवर्ती रहैं तावत्काल चंद्रमाके अभिजित नक्षत्रका भोगवनां कहिए। बहुरि इस ही कालविषै योग कहिए यावत्काल चंद्रमा अर अभिजित संबंधी गगन खंडनिका संयोग रहै तावत्काल चंद्रमा अर अभिजितका योग कहिए। बहुरि याही प्रकार अधिक प्रमाण सतसठिका भाग जघन्य मध्य उत्कृष्ट नक्षत्रनिके क्रमतैं एक हजार पांच दोय हजार दस तीन हजार पंद्रह गगन खंडनिकों दिएं जघन्य नक्षत्रनिका पंद्रह मुहूर्त्त मध्य नक्षत्रनिका तीस मुहूर्त्त उत्कृष्टनिका पैंतालीस मुहूर्त्त मात्र आसन्न मुहूर्त्त हो है। बहुरि तीस मुहूर्त्तका एक दिन होइ तौ पंद्रह आदि मुहूर्त्तनिका केता होइ ऐसैं करि पंद्रहका अपवर्त्तन किएं जघन्य नक्षत्रनिका आधा दिन $\frac{१}{२}$ मध्यम नक्षत्रनिका एक दिन १ उत्कृष्ट नक्षत्रनिका ड्योढ़ दिन $\frac{३}{२}$ प्रमाण चंद्रमाके नक्षत्र भुक्ति काल हो है। बहुरि याही प्रकार अधिक प्रमाण पांचका भाग अपनें अपनें नक्षत्र संबंधी गगन खंडनिकों दिएं दिनादिक किएं सूर्यकै अभिजितका च्यारि दिन छह मुहूर्त्त जघन्य नक्षत्रका छहदिन इकईस मुहूर्त्त मध्यम नक्षत्रका तेरह दिन बारह मुहूर्त उत्कृष्ट नक्षत्रका बीस दिन तीन मुहूर्त्त प्रमाण नक्षत्र भुक्तिका काल जाननां ॥ ४०४ ॥

आगैं राहुका गगन खंड कहि करि ताकै नक्षत्र भुक्ति कहैं हैं;—

रविखंडादो बारसभागूणं वज्जदे जदो राहू।
तह्मा तत्तो रिक्खा बारहिदिगिसट्ठिखंडहिया ॥ ४०५ ॥

रविखंडतः द्वादशभागोनं व्रजति यतो राहुः।
तस्मात्ततः ऋक्षाणि द्वादशहितैकषष्टिखंडाधिकानि ॥ ४०५ ॥

अर्थ—जातैं सूर्यके खंडनितैं एकका बारहां भाग घाटि राहु गमन करै है। सूर्यका अठारहसै तीस गगन खंडनविषै एकका बारहां भाग घटाएं अठारहसैं गुणतीस गगन खंड अर ग्यारहका बारहां भाग मात्र राहुकै एक मुहूर्त्त विषै गमन करनेंका प्रमाण हो है। इनतैं इकसठिका बारहां भाग अधिक नक्षत्रनिकै गमन करनेका प्रमाण हो है। कैसैं इतनां अधिक हो है? राहुका गगन खंड १८२९ $\frac{११}{१२}$ नक्षत्रका गगन खंड १८३५ मैंस्यों घटाएं ग्यारहका बारहां भाग घाटि छह खंड भए। तहां छहका बारहकर समछेद करि $\frac{७२}{१२}$ अर तामें ग्यारहका बारहां भाग घटाएं इकसठिका बारहां भाग अधिकका प्रमाण हो है। बहुरि अहियहिदरिक्खखंडे इस सूत्रके न्यायकरि अधिकका भाग अपनें २ नक्षत्र खंडनिकों दीएं राहुके नक्षत्र भुक्तिका काल

आवै है। तहां इकसठिका वारह्वां भाग छोड़नें विषै एक मुहूर्त्त होइ तौ छसै तीस अभिजित खंड-निके छोड़नें विषैं केते मुहूर्त्त होइ ऐसें छसै तीसकौं इकसठिका वारह्वां भागका भाग दैनां तहां भागहारका भागहार वारह ताकौं छसै तीसका गुणकार करि ताकौं इकसठिका भाग दैनां ६३० । $\frac{१२}{६१}$ वहुरि इनकौं तीसका भाग देइ दिन करनें $\frac{६३०}{६१}$ । $\frac{१२}{३०}$ वहुरि इहां वारहकों तीस सहित छह करि अपवर्त्तन करनां $\frac{६३०}{६१}$ । $\frac{२}{५}$ वहुरि छसै तीसकौं पांच करि अपवर्त्तन करनां $\frac{१२६}{६१}$ । २ याकों अपनें गुणकार करि गुणें $\frac{२५२}{६१}$ भाग हारका भाग दिएं च्यारि दिन अर आठका इकसठिवां भाग प्रमाण राहुके अभिजित् नक्षत्रका भुक्तिका काल है। याही प्रकार राहुके जघन्य नक्षत्रका छह दिन अर छतीसका इकसठिवां भाग मध्य नक्षत्रका तेरह दिन अर ग्यारहका इकसठिवां भाग उत्कृष्ट नक्षत्रका उगणीस दिन अर सैंतालीसका इकसठिवां भाग प्रमाण भुक्ति काल जाननां ॥ ४०५ ॥

आगैं अन्य प्रकार करि राहुके नक्षत्र भुक्तिकौं कहैं हैं;—

णक्खत्तसूरजोगजमुहुत्तरासिं दुवेहि संगुणिय।
एकट्ठिहिदे दिवसा हवंति णक्खत्तराहुजोगस्स ॥ ४०६ ॥

नक्षत्रसूर्ययोगजमुहूर्तराशिं द्वाभ्यां संगुण्य।
एकषष्टिहिते दिवसा भवंति नक्षत्रराहुयोगस्य ॥ ४०६ ॥

अर्थ—नक्षत्र अर सूर्यका योग करि उत्पन्न जो मुहूर्त्तनिका प्रमाण रूप राशि ताकौं दोय करि गुणि इकसठिका भाग दिएं जो प्रमाण आवै तितनें नक्षत्र अर राहुके योगविषैं दिननिका प्रमाण जाननां। तहां सूर्यकै अभिजित नक्षत्रका भुक्तिकाल च्यारि दिन छह मुहूर्त्त है। दिननिकौं तीस गुणां करि मुहूर्त्त किए सर्व एकसौ छवीस मुहूर्त्त भए। इनकौं दोय करि गुणें दोयसै बावन भए। इनकौं इकसठिका भाग दिएं च्यारि अर आठका इकसठिवां भाग आया। सोई राहुकै अभिजित नक्षत्रका भुक्तिकाल च्यारि दिन अर आठका इकसठिवां भाग प्रमाण है। ऐसैंही अन्य नक्षत्रनिका भी विधान करनां ॥ ४०६ ॥

आगैं एक अयन विषै नक्षत्र भुक्ति सहित वा रहित जे दिन तिनकों कहैं हैं;—

अभिजादि तिसीदिसयं उत्तरअयणस्स होंति दिवसाणि।
अधिकदिणाणं तिण्णि य गददिवसा होंति इगि अयणे ॥ ४०७ ॥

अभिजिदादि त्र्यशीतिशतं उत्तरायणस्य भवंति दिवसानि।
अधिकदिनानां त्रीणि च गतदिवसानि भवंति एकस्मिन् अयने ॥ ४०७ ॥

अर्थ—अभिजितकों आदि दे करि पुष्य पर्यंत जे जघन्य मध्य उत्कृष्ट नक्षत्र तिनके एक सौ तियासी दिन उत्तरायणके हो हैं। वहुरि इनतैं अधिक दिन तीन एक अयन विषैं गत दिवस हो हैं ॥ ४०७ ॥

आगैं अधिक दिननिकी उत्पत्तिकौं कहैं हैं;—

एकपहलंघणं पडि जदि दिवसिगिसट्ठिभागमुवलद्धं।
किं तेसीदिसदस्सिदि गुणिदे ते होंति अहियदिणा ॥ ४०८ ॥

एकपथलंघनं प्रति यदि दिवसैकषष्टिभागं उपलब्धं ।
किं त्र्यशीतिशतस्येति गुणिते ते भवंति अधिकदिनानि ॥ ४०८ ॥

**अर्थ**—वीथी रूप जो एक सूर्यका मार्ग ताका उलंघन प्रति जो एक दिनका इकसठिवा भाग पावै तौ एक सौ तियासी मार्गनिका उलंघन प्रति केते दिवस पावै ऐसैं त्रैराशिक करि तहं इकसठि करि अपवर्त्तन करि गुणें अधिक दिन तीन हो हैं। वहुरि एक अयन विषैं एक सौ तियासी दिन कैसे हैं सो कहिए हैं। एक मुहूर्त्त विषै गमन योग्य सूर्यके अठारहसै तीस खंड अर नक्षत्रके अठारहसै पैंतीस खंड तातैं सूर्यके नक्षत्रतैं पांच खंड छोडनैंविषै एक मुहूर्त्त होइ तौ अभिजित नक्षत्रके छसैंतीस खंड छोडनैंविषै केते मुहूर्त्त होइ ऐसैं मुहूर्त्त करि ६३/५ ताकौं तीसका भाग देइ दिन करनें ६३/१५० वहुरि भाज्य भाजककौं तीस करि अपवर्त्तन किएं इकईस दिनका पांचवां भाग प्रमाण अभिजितका भुक्तिकाल आया। ऐसैंही जघन्य मध्य उत्कृष्ट नक्षत्र श्रवण आदि पुनर्वसू पर्यंत तिनके त्रैराशिक विधिकरि मुहूर्त्त वा दिन करि क्रमतैं पंद्रह तीस पंद्रह करि अपवर्त्तन करि जो जो पावै सो सो तिस तिस नक्षत्र विषै स्थापन करनां ॥ ४०८ ॥

आगैं पुष्यविषै विशेष है ताके प्रतिपादनके अर्थि कहैं हैं;—

**सतिपंचमचउदिवसे पुस्से गमियुत्तरायणसमत्ती ।**
**सेसे दक्खिणआदी सावणपडिवदि रविस्स पढमपहे ॥ ४०९ ॥**

सत्रिपंचमचतुर्दिवसान् पुष्ये गत्वा उत्तरायणसमाप्तिः ।
शेषान् दक्षिणादिः श्रावणप्रतिपदि रवेः प्रथमपथे ॥ ४०९ ॥

**अर्थ**—तीन दिनका पांचवां भाग सहित च्यारि दिन पुष्य नक्षत्रका भुक्तिकालविषै जाइकरि उत्तरायणकी समाप्तता हो है। ऐसैं करि पूर्वोक्त प्रकार पुष्य नक्षत्र भुक्तिका कालकौं सड़सठि दिनका पांचवां भाग प्रमाण ल्याइ तामैं तीनका पांचवां भाग सहित च्यारि दिनका समछेद किएं तेईस दिनका पांचवां भाग भया सो ग्रहि करि उत्तरायणकी समाप्तता विषै देनां अवशेष चवालीस दिनका पांचवां भाग रह्या तामें कोष्ट पूरण करणैंके अर्थि तितना ही तेईस दिनका पांचवां भाग ग्रहिकरि दक्षिणायनका प्रथम कोष्ट विषै दिएं यह ही श्रावण मासविषै पड़िवाके दिन सूर्यका प्रथम मार्गविषै दक्षिणायनका आदि हो है। अवशेष इकईस दिनका पांचवां भाग द्वितीयकोष्ट विषै दैनां। वहुरि ऐसैंही पूर्वोक्त प्रकार आश्लेषा आदि उत्तराषाढा पर्यंत नक्षत्रनिकी सूर्यके भुक्तिका काल ल्याइ तिहतिह नक्षत्र विषै स्थापन करनां।

**भावार्थ**—सूर्यका उत्तरायण विषैं प्रथम अभिजित नक्षत्रकी भुक्ति हो है ताका काल पूर्वोक्त प्रकार किएं इकईस दिनका पांचवा भाग प्रमाण है। पीछे क्रमतैं श्रवण १ धनिष्ठा १ शतभिखा १ पूर्वाभाद्रपदा १ उत्तराभाद्रपदा १ रेवती १ अश्विनी १ भरणी १ कृतिका १ रोहिणी १ मृगशीर्षा १ आर्द्रा १ पुनर्वसु १ इनकी भुक्ति हो है। तहां शतभिषा १ भरणी १ आर्द्रा १ ए तीन जघन्य नक्षत्र हैं तिनका तौ एक एकका भुक्ति काल सड़सठि दिनका दशवां भाग प्रमाण है। वहुरि श्रवण १ धनिष्ठा १ पूर्वाभाद्रपदा १ रेवती अश्विनी कृतिका मृगशीर्षा ए सात मध्य नक्षत्र हैं सो

इनका एक एकका भुक्ति काळ सतसठि दिनका पांचवा भाग प्रमाण है। बहुरि उत्तराभाद्रपद रोहिणी पुनर्वसु ए तीन उत्कृष्ट नक्षत्र हैं। सो इनका एक एकका भुक्तिका दोयसै एक दिनका दशवां भाग प्रमाण है। बहुरि पीछे पुष्य नक्षत्रका भुक्ति काळ सड़सठि दिनका पांचवां भाग प्रमाण तामें तेईस दिनका पांचवां भाग मात्र काल पर्यंत पुष्य नक्षत्रकी भुक्ति इस अयनविषैं हो है। ऐसैं सर्व काळकों समच्छेद करि जोड़ें सूर्यके उत्तरायण विषैं एकसौ तियासी दिन हो हैं। बहुरि दक्षिणायनका प्रारंभ श्रावण कृष्णकी पड़िवाके दिन हो हैं। तहां प्रथम पुष्य नक्षत्र भोगिए हैं। तहां पुष्य नक्षत्रका भुक्ति काळ सडसठि दिनका पांचवां भागविषैं तेईस दिनका पांचवां भाग तौ उत्तरायण विषै भए थे अवशेष चौवालीस दिनका पांचवां भाग इस अयनकी आदि विषै भोगिए हैं। तहां उत्तरायण समान कोठे पूर्ण करनेंकौं प्रथम कोष्ट विषै तौ तेईसका पांचवां भाग देना। दूसरा कोष्ट विषै अभिजितकी जायगा इकईसका पांचवां भाग देनां। ऐसैं प्रथम पुष्य नक्षत्रका भुक्तिकाल भएं पीछे क्रमतैं अश्लेषा १ मघा १ पूर्वा फाल्गुनी १ उत्तरा फाल्गुनी १ हस्त १ चित्रा १ स्वाति १ विशाखा १ अनुराधा १ ज्येष्टा १ मूळ १ पूर्वापाढ १ उत्तरापाढ इन नक्षत्रनिकों भोगवे है। तहां अश्लेपा १ स्वाति ज्येष्टा ए तीन जघन्य नक्षत्र हैं। सो इनका तौ एक एकका भुक्तिकाल सतसठि दिनका दशवां भाग प्रमाण है। बहुरि मघा पूर्वा फाल्गुनी हस्त चित्रा अनुराधा मूळ पूर्वापाढ ए सात मध्य नक्षत्र हैं। सो इन एक एकका भुक्तिकाल सतसठि दिनका पांचवां भाग प्रमाण है। बहुरि उत्तरा फाल्गुनी विशाखा उत्तरापाढ ए तीन उत्कृष्ट नक्षत्र हैं। सो इन एक एकका भुक्तिकाल दोयसै एक दिनका दशवां भाग प्रमाण है। ऐसैं इन सर्व भुक्तिकाळनिकौं जोड़े सूर्यके दाक्षिणायनविषै एक सौ तियासी दिन हो हैं। बहुरि अब चंद्रमाका कहिए हैं। पूर्वोक्त प्रकार चंद्रमाका भुक्तिकाल इकईस दिनका सतसठिवां भाग प्रमाण ल्याइ तिस चंद्रमाहीके जघन्य मध्य उत्कृष्ट नक्षत्रनिका भुक्तिकालविषै श्रवण आदि पुनर्वसु पर्यंत नक्षत्रनिकी पूर्वोक्त प्रकार भुक्ति ल्याइ तिहविषै सर्वत्र सड़सठिकों भाजककरि भाज्यका अपवर्त्तन करि बहुरि भाजक तीस अर भाज्यका जघन्य उत्कृष्ट नक्षत्रनिका पंद्रह करि अपवर्त्तन करि अर मध्यमनिकैं तीसकै अपवर्त्तन करि जो जो पावै सो सो तिस तिस नक्षत्रविषै स्थापन करनां। बहुरि पुष्यविषैं सूर्यके भुक्ति सतसठि दिनका पांचवां भाग मात्र विषै चंद्रमाके भुक्ति एक दिन प्रमाण होइ तौ पुष्यविषै सूर्यकै तेईस दिनका पांचवा भागविषै चंद्रमाकै केती होइ ऐसैं त्रैराशिक करि आई जो तेईसका सतसठिवां भाग प्रमाण भुक्ति सो उत्तरायणकी समाप्तता विषै दैनी ऐसेही दक्षिणायनविषै विधान करना। **भावार्थ**—चंद्रमाकै उत्तरायणविषै पहले अभिजितकी भुक्ति हो है। ताका काल इकईस दिनका सतसठिवां भाग मात्र है। पीछैं श्रवण आदि पुनर्वसु पर्यंत नक्षत्र क्रमतैं भोगिए हैं। तहां तीन जघन्य नक्षत्रनिविषै एक एकका भुक्तिकाल अर्द्धदिन है सात मध्य नक्षत्रनिविषैं एक एकका भुक्तिकाल एक दिन है। तीन उत्कृष्ट नक्षत्रनिविषै एक एकका भुक्तिकाल ड्योढ़ दिन है। बहुरि तहां पीछैं पुष्य नक्षत्रका भुक्तिकाल एक दिन विषै तेईस दिनका सतसठिवां भाग काल प्रमाण पुष्य नक्षत्र भोगिए

हैं। ऐसे सर्व काल जोड़ें चंद्रमाका उत्तरायण विषैं तेरह दिन अर चवालीसक सडसठिवां भाग मात्र काल हो हैं। बहुरि दक्षिणायन विषैं पहलैं पुष्य नक्षत्र भोगिएं हैं तहां पुष्य नक्षत्रका भुक्ति काल एक दिन विषैं तेईस दिनका सतसठिवां भाग मात्र काल उत्तरायण विषैं गया अब शेष चवालीसका सडसठिवां भाग प्रमाण काल इहां भोगिए हैं। बहुरि अश्लेषा आदि उत्तराषाढ पर्यंत नक्षत्र क्रमतैं भोगिए हैं। तहां तीन जघन्य नक्षत्र सात मध्य नक्षत्र तीन उत्कृष्ट नक्षत्रनिका भुक्तिकाल क्रमतैं एक एकका आध दिन एक दिन ड्यौढ़ दिन जाननां। सर्व्व काल मिलाएं चंद्रमाका दक्षिणायनविषैं तेरह दिन अर चवालीसका सड़सठिवां भाग प्रमाण काल हो है। अब राहुका कहिए हैं राहुकै अभिजित आदि पुनर्वसु पर्यंत नक्षत्रनिकी भुक्ति ल्याइ तिस तिस नक्षत्रविषैं स्थापना करनां। बहुरि पुष्य विषै सूर्यकै सतसठि दिनका पांचवां भाग प्रमाण भुक्ति होतैं राहुकै आठसै च्यारिसैका इकसठिवां भाग प्रमाण भुक्ति होइ तौ सूर्यकै तेईस दिनका पांचवां भाग प्रमाण भुक्ति होतैं राहुकै केती भुक्ति होइ ऐसैं ल्याइ अपवर्त्तन करैं दोयसै छिहंतरि दिनका इकसठिवां भाग प्रमाण भुक्ति उत्तरायणकी समाप्तिविषै पुष्यकी स्थापन करनी। बहुरि पूर्व्ववत् दक्षिणायनविषै विधान करनां। **भावार्थ—**राहुकै उत्तरायणविषै प्रथम अभिजितकी भुक्ति हो है ताका काल दोयसै बावन दिनका इकसठिवां भाग मात्र है पीछैं श्रवणादि पुनर्वसु पर्यंत नक्षत्रनिकी भुक्ति क्रमतैं हो हैं। तिनविषै तीन जघन्य सात मध्य तीन उत्कृष्ट नक्षत्रनिका भुक्तिकाल क्रमतैं च्यारिसै दोयका इकसठिवां भाग आठसै च्यारिका इकसठिवां भाग बारहसै छैका इकसठिवां भाग प्रमाण हो है। पीछे पुष्यकी भुक्ति हो है ताका काल आठसै च्यारि दिनका इकसठिवां भागविषैं दोयसै छिहंतरि दिनका इकसठिवां भाग मात्र पुष्यकी भुक्तिका काल हो हैं। ऐसैं सर्वकाल मिलि राहुकै उत्तरायणविषै एक सौ असी दिन हो है। बहुरि राहुकै दक्षिणायनविषै प्रथम पुष्यका भुक्तिकालविषै अवशेष पांचसै अठाईस दिनका इकसठिवां भाग प्रमाण कालपर्यंत तौ पुष्यकी भुक्ति हो है। पीछे आश्लेषादि उत्तराषाढ पर्यंत नक्षत्रनिकी भुक्ति क्रमतैं हो है। तहां तीन जघन्य सात मध्य तीन उत्कृष्ट नक्षत्रनिका भुक्तिकाल क्रमतैं च्यारिसै दोयका इकसठिवां भाग आठसै च्यारिका इकसठिवां भाग बारहसै छैका इकसठिवां भाग मात्र है। ऐसे सर्व्वकाल मिलि राहुकै दक्षिणायन विषै एकसौ असीदिन हो हैं। या प्रकार नक्षत्र भुक्तिकौं समछेद करि जोड़ें चंद्रमाके अयनकै दिन तेरह अर चवालीसका सतसठिवां भाग हो है। बहुरि दोऊ अयन मिलाएं वर्षके दिन सत्ताइस अर इकईसका इकसठिवां भाग हो है। बहुरि सूर्यकै अयनदिन एक सौ तियासी वर्ष दिन तीनसै छयासठि हो हैं। बहुरि राहुकै अयनदिन एक सौ असी वर्ष दिन तीनसै साठि हो हैं॥४०९॥

आगैं अधिक मासका प्रतिपादनकै आर्थि सूत्र कहैं हैं;—

इगिमासे दिणवड्ढी वस्से बारह दुवस्सगे सदले।
अहिओ मासो पंचयवासप्पजुगे दुमासहिया॥ ४१०॥

एकस्मिन् मासे दिनवृद्धिः वर्षे द्वादश द्विवर्षके सदले।
अधिको मासः पंचवर्षात्मकयुगे द्विमासौ अधिकौ॥ ४१०॥

**अर्थ**—एक मासविषै एक दिनकी वृद्धि होइ एक वर्षविषै बारह दिनकी वृद्धि होइ अढ़ाई वर्षविषै एक मास अधिक होइ। पंच वर्षका समुदाय सोई है स्वरूप जाका ऐसा युग तींहविषै दोय मास अधिक हो है। तहां एक वर्षविषै बारह दिन बधै तौ अढ़ाई वर्षविषै कितेन दिन बधै ऐसैं किएं लब्धराशि तीस दिन होइ। ऐसैंही युगविषै भी त्रैराशिक करनां। **भावार्थ**—एक वर्षके बारह मास एक मासके तीस दिन तहां इकसठिवैं दिन एक तिथि घटै तातैं वर्षके तीनसै चौवन दिन होइ। अर सूर्यके वर्षके तीनसै छासठि दिन है। सो बारह दिन एक वर्षविषै बधतां भए सो अढाई वर्ष व्यतीत भएं एक अधिक मास होइ तब तेरह मासका वर्ष होइ। बहुरि ऐसैंही अढ़ाई वर्ष और भएं एक मास अधिक होइ। या प्रकार पांच वर्ष प्रमाण जो युग तिहविषै दोय अधिक मास होइ॥ ४१०॥

अब पूर्व गाथाका जु अर्थ ताहीकों आठ गाथानि करि वर्णन करैं हैं;—

आसाढपुण्णमीए जुगणिप्पत्ती दु सावणे किण्हे।
अभिजिह्मि चंदजोगे पाडिवदिवसह्मि पारंभो॥ ४११॥

आषाढपूर्णिमायां युगनिष्पत्तिः तु श्रावणे कृष्णे।
अभिजिति चंद्रयोगे प्रतिपद्दिवसे प्रारंभः॥ ४११॥

**अर्थ**—आषाढ मासविषै पून्योंकै दिन अपरान्ह समय उत्तरायणकी समाप्तता होतैं पंच वर्ष स्वरूप युगकी निष्पत्ति कहिए संपूर्णता सो हो है। बहुरि श्रावण मास कृष्णपक्षविषै अभिजित नक्षत्र अर चन्द्रमाका योग होतैं पड़िवाकै दिन दक्षिणायनका प्रारंभ हो है। **भावार्थ**—आषाढ़ सुदि पून्यौं अपरान्हविषै तौ पूर्व युगकी समाप्तता भई। बहुरि श्रावण वदि एकै दिन जहां चन्द्रमाकै अभिजित नक्षत्रका भुक्तिकाल होइ तहां सूर्यका दक्षिणायनका आरंभ हो है। सोई नवीन पंच वर्ष स्वरूप जो युग ताका प्रारंभ जानना॥ ४११॥

आगैं किस वीथीविषै किस अयनका प्रारंभ हो है सो कहैं हैं;—

पढमंतिमवीहीदो दक्खिणउत्तरदिगयणपारंभो।
आउट्टी एगादी दुगुत्तरा दक्खिणाउट्टी॥ ४१२॥

प्रथमांतिमवीथीतः दक्षिणोत्तरदिगयनप्रारंभः।
आवृत्तिः एकादि द्विकोत्तरा दक्षिणावृत्तिः॥ ४१२॥

**अर्थ**—प्रथम अंतिम वीथीतैं दक्षिण उत्तर दिशाका अयनका प्रारंभ हो है। **भावार्थ**—एकसौ चौरासी वीथीनिविषै प्रथम अभ्यंतर वीथीविषै तिष्टता सूर्यकै दक्षिण अयनका प्रारंभ हो है। अंतबाह्य वीथीविषै तिष्टता सूर्यकै उत्तर अयनका प्रारंभ हो है। बहुरि सोई दक्षिणायन अर उत्तरायणकी प्रथम आवृत्ति है। पूर्व अयनकौं समाप्त करि नवीन अयनका ग्रहण ताका नाम आवृत्ति जाननां। तहां एककौं आदि दे करि दुगुत्तरा कहिए दोय वृद्धि प्रमाण लिएं दक्षिण आवृत्ति हो है॥ ४१२॥

उत्तरायणकी आवृत्ति कैसे है सो कहैं हैं;—

उत्तरगा य दुआदी दुचया उभयत्थ पंचयं गच्छो।
विदिआउट्टी दु हवे तेरसि किण्हेसु मियसीसे॥ ४१३॥

उत्तरगा च द्व्यादिः द्विचया उभयत्र पंचकं गच्छः ।
द्वितीयावृत्तिः तु भवेत् त्रयोदश्यां कृष्णेषु मृगशीर्षायाम् ॥ ४१३ ॥

**अर्थः**—उत्तरायणसंबंधी आवृत्ति सो दोयकौं आदि दै करि द्विचयाः कहिए दोय वृद्धि प्रमाण लिएं है । बहुरि उभयत्र कहिए दोऊ जायगा दक्षिणायन उत्तरायनविषै गच्छ कहिए स्थान प्रमाण सो पांच जानना । **भावार्थ**—पूर्व अयनकौं समाप्त करि नवीन अयनका ग्रहण होतैं अयनकी जो पलटनि ताका नाम आवृत्ति है । सो पंच वर्ष प्रमाण एक युगविषै दश वार आवृत्ति हो है । तहां पहली तीसरी पांचवीं सातवीं नवमी आवृत्ति तौ दक्षिणायनसंबंधी है । जातैं तहां उत्तरायणकौं समाप्त करि दक्षिणायनका ग्रहण कीजिए है । बहुरि दूसरी चौथी छटीं आठवी दशमी आवृत्ति उत्तरायणसंबंधी है । जातैं तहां दक्षिणायणकौं समाप्त करि उत्तरायणका ग्रहण कीजिए हैं तहां दक्षिणायणसंबंधी आवृत्ति श्रावण मासहीविषै हो है। सो प्रथम आवृत्ति तौ पूर्वै कही थी, बहुरि दूसरी आवृत्ति कृष्णपक्षविषै तेरसिके दिन चंद्रमाके मृगशीर्षा नक्षत्रका भुक्तिकालविषै हो है ॥ ४१३ ॥

तीसरी आदि आवृत्ति कब होत है सो कहैं हैं;—

**सुक्कदसमीविसाहे तदिया सत्तमिगकिण्हरेवदिए ।**
**तुरिया दु पंचमी पुण सुक्कचउत्थीए पुव्वफग्गुणिये ॥ ४१४ ॥**

शुक्लदशमीविशाखे तृतीया सप्तमीकृष्णरेवत्याम् ।
तुरीया तु पंचमी पुनः शुक्लचतुर्थ्यां पूर्वफाल्गुन्याम् ॥ ४१४ ॥

**अर्थ**—शुक्लपक्ष दशमी तिथिविषै विशाखा नक्षत्रका योग होतैं तीसरी आवृत्ति हो है। बहुरि कृष्णपक्षकी सप्तमी तिथिविषै रेवती नक्षत्रका योग होतैं चौथी आवृत्ति हो है । बहुरि शुक्लपक्षकी चौथी तिथिविषै पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्रका योग होतैं पांचवी आवृत्ति हो है ॥ ४१४ ॥

इन करि कहा हो है सो कहैं हैं;—

**दक्खिणअयणे पंचसु सावणमासेसु पंचवस्सेसु ।**
**एदाओ भणिदाओ पंचणियट्टीउ सूरस्स ॥ ४१५ ॥**

दक्षिणायने पंचसु श्रावणमासेषु पंचवर्षेषु ।
एताः भणिताः पंचनिवृत्तयः सूर्यस्य ॥ ४१५ ॥

**अर्थ**—दक्षिणायनविषै पांच जे श्रावण मास पांच वर्षनि विषै होइ तिनविषै ए पांच आवृत्ति सूर्यकी कही हैं ॥ ४१५ ॥

उत्तरायणविषै आवृत्ति कैसैं है सो कहै हैं;—

**माघे सत्तमि किण्हे हत्थे विणिवित्तिमेदि दक्खिणदो ।**
**बिदिया सदभिससुक्के चोत्थीए होदि तदिया दु ॥ ४१६ ॥**

माघे सप्तम्यां कृष्णे हस्ते विनिवृत्तिं एति दक्षिणतः ।
द्वितीया शतभिषि शुक्ले चतुर्थ्यां भवति तृतीया तु ॥ ४१६ ॥

अर्थ—माघमासविषै उत्तर आवृत्ति हो है तहां कृष्णपक्षकी सप्तमी तिथिविषै चंद्रमाके हस्त नक्षत्रकी भुक्ति होतैं अयनतैं पलटै है सोई उत्तरायणविषै प्रथम आवृत्ति है । बहुरि दूसरी आवृत्ति शतभिषक नक्षत्रका योग होतैं शुक्लपक्षकी चौथी तिथिविषै हो है ॥ ४१६ ॥

बहुरि तीसरी आदि आवृत्ति कैसैं सो कहैं हैं;—

पडवदि किण्हे पुस्से चोत्थी मूले य किण्हतेरसिए ।
कित्तियरिक्खे सुक्के दसमीए पंचमी होदि ॥ ४१७ ॥

प्रतिपदि कृष्णे पुष्ये चतुर्थी मूले च कृष्णत्रयोदश्याम् ।
कृत्तिकाऋक्षे शुक्ले दशम्यां पंचमी भवति ॥ ४१७ ॥

अर्थ—कृष्णपक्षकी पड़िवा तिथिविषै पुष्यनक्षत्रका योग होतैं तीसरी आवृत्ति हो है । बहुरि चौथी आवृत्ति कृष्णपक्षकी त्रयोदशी तिथिविषै मूल नक्षत्रका योग होतैं हो है । बहुरि शुक्ल पक्षकी दशमी तिथिविषै कृत्तिका नक्षत्रका योग होतैं पांचवीं आवृत्ति हो है ॥ ४१७ ॥

कह्या अर्थकौं जोड़े हैं;—

ताओ उत्तरअयणे पंचसु वासेसु माघमासेसु ।
आउट्टीओ भणिदा सूरस्सिह पुव्वसूरीहिं ॥ ४१८ ॥

ताः उत्तरायणे पंचसु वर्षेषु माघमासेषु ।
आवृत्तयः भणिताः सूर्यस्येह पूर्वसूरिभिः ॥ ४१८ ॥

अर्थ—ते ए आवृत्ति उत्तरायणविषै पांच वर्षनिविषै जे पांच माघमास होहिं तिनविषै पूर्व आचार्यनिकरि सूर्यकी कही हैं । अब कही जु गाथा तिनका रचनाका उद्धार करनेका विधान कहिए है । पांच वर्षका समुदाय सो युग है । जातैं युगके आरंभतैं पांच वर्ष व्यतीत भए तिथि आदि रचना जैसैं पहले युगविषै थी तैसैंही हो है । सो युगविषै दक्षिणायनका प्रारंभ तौ पांच श्रावणमासनिविषै होइ अर उत्तरायणका प्रारंभ पांच माघमासनि विषै होइ । बहुरि बीचिविषै दक्षिणायणविषै तौ भाद्रपद आदि मास हो है उत्तरायण विषै फाल्गुन आदि मास हो हैं । तहां एक एक मासकी इकतीस तिथि स्थापन करनी । काहेतैं ? एक मासकी तीस तिथि हो हैं । अर इगिमासं दिणवड्ढी इस सूत्र करि एक मासविषै एक दिन वधै तातैं इकतीस तिथि स्थापन करनी । इहां पंद्रह पंद्रह दिनका पक्ष ग्रहण किया तातैं एक मासके तीस दिन ही ग्रहण किए । बहुरि जो तिथि घटै है तिहकी विविक्षा किएं पक्षविषै भी घटती दिन कहना होइ मासविषै भी कहना होइ तातैं भावार्थ एक जानि तीस दिनही मासके ग्रहण कीए । तहां युगविषै दक्षिणायनविषै प्रथम श्रवण मासविषै कृष्णपक्षके पंद्रह शुक्लके पंद्रह कृष्णका एक दूसरेविषै कृष्णके तीन शुक्लके पंद्रह कृष्णके तेरह, तीसरेविषै शुक्लके छह कृष्णके पंद्रह शुक्लके दश, चौथेविषै कृष्णके नव शुक्लके पंद्रह कृष्णके सात, पांचवांविषै शुक्लके बारह कृष्णके पंद्रह शुक्लके च्यारि दिन हो हैं । बहुरि उत्तरायणविषै प्रथम माघविषै कृष्णपक्षके नव शुक्लके पंद्रह कृष्णके सात, दूसरेविषै शुक्लके बारह कृष्णके पंद्रह शुक्लके च्यारि तीसरेविषै कृष्णके पंद्रह शुक्लके पंद्रह कृष्णके एक चौथेविषै कृष्णके तीन शुक्लके पंद्रह कृष्णके तेरह, पांचवां माघविषै शुक्लके छह

कृष्णके पंद्रह शुक्लके दश दिन हो है। बहुरि दक्षिणायनविषै वीचि जे भाद्रपदादिक मास अर उत्तरायणविषै वीचि फाल्गुन आदि मास तिनविषै आदिविषै एक एक घटता अर अंतविषै एक एक वधता दिन स्थापन करिए ऐसें एक एक मासविषै इकतीस तिथि स्थापन किए तीह तीह मासविषै वा तीह तीह अयनविषै अधिक दिन आवैं है। **भावार्थ**—प्रथम श्रावणविषै वदि एकैतैं लगाय पंद्रह तिथि कृष्णपक्षकी अर पंद्रह शुक्लपक्षकी अर एक भाद्रपदका कृष्णकी मिलि एकतीस तिथि होइ। बहुरि भाद्रपदविषै पहलै आदिविषै पंद्रह तिथि कही थी तामें एक घटाएं चौदह तौ कृष्णपक्षकी अर पंद्रह शुक्लपक्षकी अर अंतविषै एक कृष्णपक्षकी कही थी तामैं एक वधाएं दोय अश्विनके कृष्णपक्षकी मिलाएं इकतीस तिथि हो है। बहुरि अश्विनिविषै आदिमैं एक घटाएं तेरह कृष्णपक्षकी पंद्रह शुक्लपक्षकी अंतविषै एक वधाएं तीन कार्तिकके कृष्णपक्षकी मिलाएं इकतीस तिथि हो हैं। ऐसैंही कार्तिकविषै वारह कृष्णकी पंद्रह शुक्लकी च्यारि कृष्णकी मार्गशीर्षविषै ग्यारह कृष्णकी पंद्रह शुक्लकी पांच कृष्णकी पौषविषै दश कृष्णकी पंदह शुक्लकी छह कृष्णकी तिथि मिलें इकतीस तिथि होइ। बहुरि उत्तरायणविषै माघ वदी सातैं तें नव कृष्णकी पंद्रह शुक्लकी सात कृष्णकी इत्यादि रचना किएं बहुरि दक्षिणायनविषै द्वितीय श्रावणमासविषै श्रावण वदी त्रयोदशीतैं लगाय तीन कृष्णकी पंद्रह शुक्लकी तेरह कृष्णकी तिथि हो हैं। बहुरि भाद्रपदादिकविषै रचना करनी। ऐसैं रचना किएं मासविषै अयनविषै अधिक दिन आवै है। इस क्रम करि पंचवर्षात्मक युगविषै दोय अधिकमास हो हैं॥ ४१८॥

आगैं दक्षिणायण उत्तरायणका प्रारंभविषै नक्षत्र ल्यावनैंका विधान कहैं हैं;—

**रूऊणाउट्टिगुणं इगिसीदिसदं तु सहिद इगिवीसं।**
**तिघणहिदे अवसेसा अस्सिणिपहुदीणि रिक्खाणि॥ ४१९॥**

रूपोनावृत्तिगुणं एकाशीतिशतं तु सहितं एकविंशत्या।
त्रिघनहृते अवशेषाणि अश्विनीप्रभृतीनि ऋक्षाणि॥ ४१९॥

**अर्थ**—रूपोना वृत्ति कहिए जेथवीं आवृत्ति होइ तामें एक घटाएं जो प्रमाण होइ तिह करि गुण्या हुवा एकसौ इक्यासी तामें इकईस जोड़िए अर ताकौं तीनका घन जो सत्ताईस ताका भाग दिएं जेता अवशेष रहै तेथवां नक्षत्र अश्विनी आदितैं जाननां। उदाहरण-जैसे विवक्षित आवृत्ति प्रथम तामैं एक घटाएं शून्य अवशेष रहै ० तीह करि एकसौ इक्यासीकौं गुणिए सो शून्य करि गुण्या हुवा अंक शून्य ही होइ तातैं गुणें भी शून्य ही पाया। तीह बिंदीविषैं इकईस जोड़ें इकईसही भए। बहुरि इहां सत्ताईसतैं अधिक होता तौ सताईसका भाग देते तातैं इकईस ही रहे सो अश्विनी भरणी कृतिका आदि अनुक्रमतैं गिणे अश्विनीतैं लगाय जो इकईसवां नक्षत्र होइ सोई प्रथम आवृत्तिविषै नक्षत्र होइ सो अश्विनीतैं लगाय इकईसवां नक्षत्र उत्तरापाढा है। परंतु इहां अभिजितका ग्रहण करना। काहेतैं सो कहिए हैं। यद्यपि नक्षत्र अठाईस है। तथापि जहां नक्षत्रनिकी गणनादिक करिए हैं तहां सत्ताईस नक्षत्रनिहीका ग्रहण कीजिए है। अभिजित नक्षत्रका ग्रहण न कीजिए है जातैं याका साधन सूक्ष्म है तातैं इहां प्रथम आवृत्तिविषै स्थूलपनै

साधन किएं उत्तराषाढ आवै परंतु सूक्ष्मपनैं साधन किएं अभिजित नक्षत्र जाननां। आगैं भी अश्विनी आदिकतैं वा कार्तिकआदिकतैं नक्षत्र गणनाविषै अभिजित नक्षत्रका ग्रहण करना नाहीं। या प्रकार दक्षिणायनका प्रारंभविषै प्रथम श्रावणमासविषै नक्षत्र ल्यावनैंका विधान कह्या। अब दूसरा उदाहरण कहिए हैं। विवक्षित दूसरी आवृत्ति तामैं एक घटाएं एक रह्या तीह करि एकसौ इक्यासीकों गुणें एकसौ इक्यासीही हुवा इनमें इकईस मिलाएं दोयसै दोय भए इनकों सत्ताईसका भाग दिएं अवशेष तेरह रहे सो अश्विनी नक्षत्रतैं तेरह्वां नक्षत्र हस्त सो उत्तरायणका प्रारंभविषै प्रथम माघमासविषै हस्तनक्षत्र पाईए है। ऐसेही तीसरी पांचवीं सातवीं नवमी आवृत्तिविषै दक्षिणायनका प्रारंभ श्रावणमासविषै हो है। तहां अर चौथी छठी आठवीं दशवीं आवृत्ति विषै उत्तरायणका प्रारंभ माघमासविषै हो है। तहां नक्षत्र साधन करनां॥ ४१९॥

आगैं दक्षिणायण उत्तरायणकै पर्व वा तिथि ल्यावनैंविषै सूत्र कहैं हैं;—

वेगाउट्टिगुणं तेसीदिसदं सहिद तिगुणगुणरूवे।
पण्णरभजिदे पव्वा सेसा तिहिमाणमयणस्स॥ ४२०॥

व्येकावृत्तिगुणं त्र्यशीतिशतं सहितं त्रिगुणगुणरूपेण।
पंचदशभक्ते पर्वाणि शेषं तिथिमानं अयनस्य॥ ४२०॥

**अर्थ**—व्येका वृत्ति कहिए जेथवीं विवक्षित आवृत्ति होइ तामें एक घटाएं जो प्रमाण रहै तिह करि एकसौ तियासीकौं गुणिए, बहुरि जितनैं गुणकारक एकसौ तियासीकौं गुकरि ताकों तिगुणा करि तामें जोड़िए। बहुरि एक और जोड़िए जो प्रमाण होइ ताकौं पंद्रहका भाग दीजिए जो लब्धप्रमाण आवै तितनैं तौ पर्व जाननें, अवशेष रहै सो तिथि प्रमाण जाननां। दक्षिणायन वा उत्तरायणका ऐसैंही जाननां। उदाहरण विवक्षित आवृत्ति प्रथम तामैं एक घटाएं बिंदी रही तिह करि एकसौ तियासीकों गुणें बिंदी करि गुणें बिंदी ही होइ इस न्याय करि बिंदी ही आई। बहुरि इहां गुणकार बिंदी ताकों तिगुणां किएं भी बिंदीविषै बिंदी जोड़ें बिंदी ही भई। बहुरि तामें एक जोड़ें एक भया याकौं पंद्रहका भाग लागै नाहीं तातैं पर्वका तौ अभाव जाननां। अर अवशेष एक रह्या सो तिथिका प्रमाण जाननां ऐसैं प्रथम आवृति दक्षिणायनका प्रारंभविषै प्रथम श्रावणमासविषै पर्वका तौ अभाव आया पक्षकी पूर्णता भएं पूर्णमा वा अमावस्या जो होइ ताका नाम पर्व है। सो युगका आरंभ भएं पीछैं जेते पर्व व्यतीत होइ सोई इहां पर्वनिकी संख्या जाननी। सो प्रथम आवृत्तिविषै कोऊ भी पर्व व्यतीत भया तातैं पर्वका अभाव जाननां। अर तिथिका प्रमाण एकैं जाननां। बहुरि दूसरा उदाहरण-विवक्षित आवृत्ति दूसरी तामें एक घटाएं एक रह्या तीह करि एकसौ तियासीकों गुणें एकसौ तियासी भए। बहुरि गुणकारका प्रमाण एक ताकौं तिगुणा किएं तीनसौं मिलाय एकै सौ छियासी भये। बहुरि तामैं एक और जोड़ें एकसौ सित्यासी भए। इनकों पंद्रहका भाग दिएं वारह पाए सो वारह तौ पर्वका प्रमाण भया। युगका प्रारंभतैं वारह पर्व व्यतीत भएं पीछैं दूसरी आवृत्ति हो है। अर अवशेष सात रहे सो सात तिथि जाननीं। ऐसैं दूसरी आवृत्ति उत्तरायणका प्रारंभ होतैं प्रथम माघ मासविषै होइ तहां युगके आरंभतैं

बारह तौ पर्व व्यतीत भए जाननें अर सातैं तिथि जानना। याही प्रकार अन्य आवृत्तिनिविषै भी पर्व वा तिथिका प्रमाण ल्यावनां ॥ ४२० ॥

आगैं दिन वा रात्रिका प्रमाण जिहिं कालविषै समान होइ ताका नाम विषुप हैं तिंह विषुपविषै पर्व वा तिथि वा नक्षत्रनिकौं छह गाथानि करि युगके दश अयनिविषै कहै हैं;—

**छम्मासद्धगयाणं जोइसयाणं समाणदिणरत्ती ।**
**तं इसुपं पढमं छसु पव्वसु तीदेसु तदियरोहिणिए ॥ ४२१ ॥**

षण्मासार्धगतानां ज्योतिष्काणां समानदिनरात्री ।
तत् विषुवं प्रथमं षट्सु पर्वसु अतीतेषु तृतीयारोहिण्याम् ॥ ४२१ ॥

**अर्थ**—छह मासका अर्द्ध ज्योतिषीनिके गएं समान रात्रि हो है सोई विषुप है। **भावार्थ**-एक अयन छह मासका हो है तहां आधा अयन भएं दिन अर रात्रिका प्रमाण समान हो है। सो जिस कालविषै दिन रात्रि समान होइ ताका नाम विषुप है। सो पंच वर्ष प्रमाण युगविषै दश विषुप हो हैं। पांच तौ दक्षिणायनका अर्द्धकालविषै अर पांच उत्तरायणका अर्द्धकालविषै हो है। तहां पहला विषुप दक्षिणायनका अर्द्धकालविषै दूसरा उत्तरायणका अर्द्धकालविषै ऐसैं क्रमतैं विषुप जाननें। तहां प्रथम विषुप युगके आरंभतैं छह पर्व व्यतीत भएं तृतीय तिथिविषै रोहिणी नक्षत्रकी भुक्ति चन्द्रमाकै होत होत सो हो संतैं हो है ॥ ४२१ ॥

**विगुणणवपव्वऽतीदे णवमीए विदियगं धणिट्ठाए ।**
**इगितीसगदे तदियं सादीए पण्णरसमह्मि ॥ ४२२ ॥**

द्विगुणनवपर्वातीतेषु नवम्यां द्वितीयकं धनिष्ठायाम् ।
एकत्रिंशद्गते तृतीयं स्वातौ पंचदश्याम् ॥ ४२२ ॥

**अर्थ**—दुगुण नव जो युगके आरंभ पीछैं अठारह पर्व व्यतीत भएं नवमी तिथिविषैं धनिष्ठा नक्षत्रका योग चंद्रमाकै होतैं दुतिय विषुप हो है। बहुरि इकतीस पर्व व्यतीत भएं तिसरा विषुप स्वाति नक्षत्र होत संते पंचदशी तिथिविषै हो है। सो कृष्णपक्ष पनेतै अर्थतै अमावस्याः विषै हो है ॥ ४२२ ॥

**तेदालगदे तुरियं छट्ठिपुणव्वसुगयं तु पचमयं ।**
**पणवण्णपव्वतीदे बारसिए उत्तराभद्दे ॥ ४२३ ॥**

त्रिचत्वारिंशद्गतेषु तुरीयं षष्ठीपुनर्वसुगतं तु पंचमम् ।
पंचपंचाशत्पर्वातीतेषु द्वादश्यां उत्तराभाद्रे ॥ ४२३ ॥

**अर्थ**—तियालीस पर्व व्यतीत भएं चौथा विषुप षष्ठीविषै पुनर्वसु नक्षत्रकों प्राप्त भएं हो है। बहुरि पांचवां विषुप पचावन पर्व व्यतीत भएं द्वादशी तिथिविषै उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र होत संते हो है ॥ ४२३ ॥

**अडसट्ठिगदे तदिए मित्ते छट्टं असीदिपव्वगदे ।**
**णवमिमघाए सत्तममिह तेणउदिगदे दु अट्ठमयं ॥ ४२४ ॥**

अष्टषष्टिगतेषु तृतीयायां मैत्रे षष्ठं अशीतिपर्वगतेषु।
नवमींमघायां सप्तमं इह त्रिनवतिगतेषु तु अष्टमम्॥ ४२४॥

अर्थ—अडसठि पर्व गएं तृतीय तिथिविषै मैत्र जो अनुराधा नक्षत्र ताकों होत संतैं छठा विषुप हो है। बहुरि असी पर्व गएं नवमी तिथिविषै मघा नक्षत्र होतैं सातवां विषुप हो है। बहुरि इहां तेरणवै पर्व गएं आठवां विषुप हो है॥ ४२४॥

अस्सिणि पुण्णे पव्वे णवमं पुण पंचजुदसए पव्वे।
तीते छट्टितिहीए णक्खत्ते उत्तरासाढे॥ ४२५॥

अश्विनी पूर्णे पर्वणि नवमं पुनः पंचयुतशतेषु पर्वेषु।
अतीतेषु षष्ठीतिथौ नक्षत्रे उत्तराषाढे॥ ४२५॥

अर्थ—सो आठवां विषुप अश्विनी नक्षत्र होतैं पूर्ण पर्व जो अमावस्या तीहविषै हो है। बहुरि नवमां विषुप एकसौ पांच पर्व व्यतीत भएं षष्ठी तिथिविषैं उत्तराषाढ नक्षत्र होतैं हो है॥४२५॥

चरिमं दसम विसुपं सत्तरसुत्तरसएसु पव्वेसु।
तीदेसु वारसीए जाइदि उत्तरगफग्गुणिए॥ ४२६॥

चरमं दशमं विषुवं सप्तदशोत्तरशतेषु पर्वेषु।
अतीतेषु द्वादश्यां जायते उत्तराफाल्गुन्याम्॥ ४२६॥

अर्थ—अंतका दशवां विषुप एकसौ सतरह पर्व व्यतीत भएं द्वादशी तिथिविषै उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र होतैं हो है॥ ४२६॥

आगैं विषुपविषै पर्व वा तिथि ल्यावनैकौं सूत्र कहैं हैं;—

विगुणे सगिट्ठइसुपे रूऊणे छग्गुणे हवे पव्वं।
तप्पव्वदलं तु तिथी पवट्टमाणस्स इसुपस्स॥ ४२७॥

द्विगुणे स्वकेष्टविषुपे रूपोने षड्गुणे भवेत् पर्व।
तत्पर्वदलं तु तिथिः प्रवर्तमानस्य विषुवस्य॥ ४२७॥

अर्थ—अपनां इष्ट विषुप जेथवां होइ तीह प्रमाणकौं दूणा करिए तामैं एक घटाइए बहुरि अवशेषकौं छह गुणा किएं पर्वनिका प्रमाण आवै है। बहुरि तिस पर्व प्रमाणका आधा सो प्रवर्त्तमान विवक्षित विषुपका तिथि प्रमाण हो है। तीह पर्वका आधा प्रमाण पंद्रहतैं अधिक होइ तो पंद्रहका भाग दिएं जो लब्ध प्रमाण होइ सो तो पर्व संख्याविषै जोड़िए अर अवशेष रहै सो तिथिका प्रमाण हो हैं। इहां उदाहरण-इष्ट विषुप पहला ताकौं दूणा किएं दोय तामैं एक घटाएं अवशेष एक ताकौं छह गुणा किएं छहसो प्रथम विषुप विषै युग आरंभतैं व्यतीत पर्वनिका प्रमाण छह है। बहुरि तीह पर्व प्रमाणका आधा तीन सो प्रथम विषुपविषै तिथि तृतीया है। दूसरा उदाहरण—इष्ट विषुप दशवां ताकौं दूणा किएं वीसतामैं एक घटाएं उगणीस ताकौं छह गुणा किएं एकसौ चौदहसो पर्व प्रमाण ताका आधा सत्तावन ताकौं पंद्रहका भाग दिएं तीन

पाएसा पर्व्व संख्याविषै मिलाएं अंत विषुपविषै एकसौ सत्तरह तौ पर्वनिका प्रमाण है। अर अव-शेष बारह रहे सो तिथि द्वादशी है। ऐसै ही अन्य विषुपनिविषै भी जाननां ॥ ४२७ ॥

आगैं आवृत्ति अर विषुपविषै तिथि संख्याकौ कहैं हैं;—

**वेगपद छग्गुणं इगितिजुदं आउट्टिइसुपतिहिसंखा।**
**विसमतिहीए किण्हो समतिथिमाणो हवे सुक्को ॥ ४२८ ॥**

व्येकपदं षड्गुणं एकत्रियुतं आवृत्तिविषुपतिथिसंख्या।
विषमतिथौ कृष्णः समतिथिमानो भवेत् शुक्लः ॥ ४२८ ॥

**अर्थ**—इष्ट भूत जेथवीं आवृत्ति होइ तिस आवृत्ति स्थानकमैंस्यों एक घटाइए अवशेष छह गुणा करि दोय जायगा स्थापिए तहां एक जायगा एक और मिलाईए एक जायगा तीन और मिला-इए तब क्रमतैं आवृत्ति अर विषुपविषै तिथिकी संख्या हो है तिनिविषै जो एक तृतीया पंचमी आदि विषम गणना रूप तिथि होइ तौ तहां कृष्णपक्ष है। बहुरि द्वितीया चतुर्थी षष्ठी आदि समतिथि हैं तौ तहां शुक्लपक्ष है। उदाहरण-इष्ट आवृति प्रथम तामैं एक घटाएं शून्यताकों छह गुणा किएं भी शून्य होइ ताकौं दोय जायगा स्थापि तामैं एक जायगा एक जोड़ें एक होइ सो प्रथम आवृ-त्तिविषै तिथि एक है सो यहु विषम तिथि है तातैं इहां कृष्णपक्ष जाननां। बहुरि दूसरी जायगा तीन जोड़े तीन होइ सो प्रथम आवृत्ति संबंधी प्रथम विषुपविषै तिथिका तृतीया है। यहु भी विषम तिथि है तातैं इहां भी कृष्णपक्ष ही जाननां। बहुरि दूसरा उदाहरण-इष्ट आवृत्ति दशमी तामैं एक घटाए नव ताकौं छह गुणा किएं चौवन तिनकौं दोय जायगा स्थापि एक जायगा एक और मिलाएं पचावन होइ ताकौं पंद्रहका भाग दिएं अवशेष दश रहे साई दशवीं आवृत्तिविषै दशमी तिथि है। इहां शुक्लपक्ष जाननां। बहुरि दूसरी जायगा तीन और मिलाएं सत्तावन होइ ताकौं पंद्रहका भाग दिएं अवशेष बारह रहे सोई दशवां विषुपविषै तिथि द्वादशी है। यहु भी सम तिथि है। तातैं इहां भी शुक्लपक्ष जाननां। ऐसेही अन्य आवृत्ति वा विषुपविषै साधन करनां ॥ ४२८ ॥

आगैं विषुपविषै नक्षत्रनिका वा सर्व्व तिथि ल्यावनैका विधान कहैं हैं;—

**आउट्टिलद्धरिक्खं दहजुद छट्ठट्ठदसमगेगूणं।**
**इषुपे रिक्खा पण्णरगुणपव्वाजुदतिही दिवसा ॥ ४२९ ॥**

आवृत्तिलब्धऋक्षं दशयुतं षष्ठाष्टदशमके एकोनं।
विषुवे ऋक्षाणि पंचदशगुणपर्वयुततिथयः दिवसानि ॥ ४२९ ॥

**अर्थ**—आवृत्तिविषै जो नक्षत्र पाया तीका आगिला नक्षत्रसौं लगाय जो दशवां नक्षत्र होइ सो तीह आवृत्ति संबंधी नक्षत्र जांननां। तहां छठा आठवां दशवां विषपविषै एक घटावनां जो नवमां ही नक्षत्र होइ सो तीह विषुपविषै जाननां। उदाहरण दूसरी-आवृत्तिविषै हस्तनक्षत्र है। तातैं आगैं चित्रातैं लगाय दशवां नक्षत्र धनिष्टा है। सोई दूसरा विषुपविषै नक्षत्र जाननां। बहुरि दूसरा उदाहरण छठी आवृत्तिविषै पुष्य नक्षत्र है। तातैं आगिला आश्लेषातैं लगाय नवमां नक्षत्र रोहिणी है। सोई छटा विषुपविषैं नक्षत्र जाननां। इहां छठा आठवां दशवांविषै एक घाटि कह्या

है। तातैं नवमा नक्षत्र ही ग्रहण किया। इहां गणनाविषै अभिजितका ग्रहण करना। ऐसैंही अन्य विषुपनिविषैं नक्षत्र साधन करनां। बहुरि आवृत्ति वा विषुपविषै पर्व प्रमाणकौं पंद्रह गुणा करि तामैं तिति प्रमाण मिलाएं समस्त दिननिका प्रमाण हो है। उदाहरण-दूसरी आवृत्तिविषै पर्व-प्रमाण बारह तिनकौं पंद्रह गुणां किएं एकसौ असी भए, तहां तिथि प्रमाण सात मिलाएं एकसौ सित्यासी भए सोई युगके आरंभतैं एकसौ सित्यासी दिन व्यतीत भएं दूसरी आवृत्ति हो है। इहां एकसौ तियासी दिन व्यतीत भए ही दूसरी आवृत्ति हो है तथापि घटती तिथिकी विवक्षा न करि पक्षके पंद्रही दिन गिणि ऐसा कथन किया है। ऐसैंही अन्य आवृत्ति वा विषुपनिविषै साधन करनां॥४२९॥

आगैं विषुपविषै नक्षत्रका ल्यावनां अन्य प्रकार करि दोय गाथानि करि कहैं हैं;—

आउट्टिरिक्खमस्सिणिपहुदीदो गणिय तत्थ अट्ठजुदे।
इसुपेसु होंति रिक्खा इह गणणा कित्तियादीदो॥४३०॥

आवृत्तिऋक्षं अश्विनीप्रभृतितः गणयित्वा तत्र अष्टयुते।
विषुपेषु भवंति ऋक्षाणि इह गणना कृत्तिकादितः॥४३०॥

अर्थ—आवृत्तिका नक्षत्रकौं अश्विनी नक्षत्रतैं लगाय गिणिए जेथवां होइ तिहविषै आठ मिलाएं जो प्रमाण होइ तेथवां नक्षत्र विषुपविषै जांननां इहां गणना कृत्तिका आदितैं करनी। उदाहरण-विवक्षित तीसरी आवृत्तिका नक्षत्र मृगशीर्षा सो अश्विनी मृगशीर्ष नक्षत्र पांचवो है। बहुरि पांचविषै आठ मिलाएं तेरह होइ सो कृत्तिका नक्षत्रतैं तेरव्हां नक्षत्र स्वाति है। सोई गणना किएं तीसरा विषुपविषैं स्वाति नक्षत्र जाननां॥४३०॥

आगैं आवृत्ति नक्षत्रका प्रमाणविषै आठ मिलाए नक्षत्र प्रमाणतैं राशि अधिक होइ तौ कहा करिए सो कहैं हैं;—

अहियंकादडवीसं छंडेज्जो विदियपंचमट्ठाणे।
एक्कं णिक्खिव छट्ठे दसमे विय एक्कमवणिज्जो॥४३१॥

अधिकांकादष्टविंशं त्याज्याः द्वितीयपंचमस्थाने।
एकं निक्षिप षष्ठे दशमेपि च एकमपनेयम्॥४३१॥

अर्थ—आवृत्ति नक्षत्रकौं अश्विनीतैं गिनैं जेथवां होइ तामैं आठ मिलाएं जो अठाईसतैं अधिक राशि होइ तौ तीहमैंस्यौं अठाईस घटाइए। अर दूसरा पांचवां आवृत्ति स्थानविषै आठ मिलाएं जो राशि होइ तामैं एक और मिलाइए। अर छटा दशवां आवृत्ति स्थानमैंस्यौं एक घटाइए इनका उदाहरण चौथी आवृत्तिविषै शतभिषक नक्षत्र है सो अश्विनीतैं पचीसवां है। तामैं आठ मिलाए तेत्तीस होइ तिनमैंसौं अठाईस घटाएं पांच रहे सो कृत्तिकातैं पांचवां नक्षत्र पुनर्वसु है। सोई चौथा विषुपविषै जाननां ऐसे अन्यत्र भी जाननां। बहुरि दूसरी आवृत्तिविषै हस्त नक्षत्र है सो अश्विनीतैं तेरव्हां है तामैं आठ मिलाएं इकईस होइ एक और मिलाएं बाईस होइ सो कृत्तिकातैं बाईसवां नक्षत्र धनिष्ठा है सोई दूसरा विषुपविषै जाननां। ऐसैं पांचवां स्थानविषै जानि लैना। बहुरि छटी आवृत्तिविषै पुष्य नक्षत्र है सो अश्विनीतै आठवां है। तामैं आठ मिलाए सोलह

होइ तामैं एक घटाएं पंद्रह रहें सो कृत्तिकातैं पंद्रव्हां नक्षत्र अनुराधा है। सोई पांचवां विपुपविषै नक्षत्र है। ऐसैं दशवां स्थानविषै भी जानि लेनां। इहां अठाईस नक्षत्रकी विवक्षा है तातैं गणनाविषै अभिजितका भी ग्रहण करनां ॥ ४३१ ॥

आगैं नक्षत्रनिके नाम अनुक्रमतैं कहैं हैं;—

**कित्तियरोहिणिमियासिर अद्दपुणव्वसु सपुस्स असिलेस्सा।**
**मह पुव्वुत्तर हत्था चित्ता सादी विसाह अणुराहा ॥४३२॥**

कृत्तिका रोहिणी मृगशीर्षा आर्द्रा पुनर्वसुः सपुष्यः आश्लेपा।
मघा पूर्वा उत्तरा हस्तः चित्रा स्वातिः विशाखा अनुराधा॥ ४३२ ॥

**अर्थ—**कृत्तिका १ रोहिणी १ मृगशीर्षा १ आर्द्रा १ पुनर्व्वसु १ पुष्य १ अश्लेपा १ मघा १ पूर्व्वाफाल्गुनी १ उत्तराफाल्गुनी १ हस्त १ चित्रा १ स्वाति १ विसाखा १ अनुराधा ४३२

**जेट्ठा मूल पुवुत्तर आंसाढा अभिजिसवणसधणिट्ठा।**
**तो सदभिसपुव्वुत्तरभद्दपदा रेवदस्सिणी भरणी ॥ ४३३ ॥**

ज्येष्ठा मूलं पूर्वोत्तरौ आषाढौ अभिजित् श्रवणः सधनिष्ठा।
ततः शतभिषा पूर्वोत्तरभाद्रपदा रेवती अश्विनी भरणी ॥ ४३३ ॥

**अर्थ—**ज्येष्ठा १ मूल १ पूर्वाषाढ १ उत्तराषाढ १ अभिजित १ श्रवण १ धनिष्ठा १ शतभिषक १ पूर्वाभाद्रपदा १ उत्तराभाद्रपदा १ रेवती १ अश्विनी १ भरणी १ ए अठाईस नक्षत्रनिके नाम हैं। गणनाविषै इस क्रमतैं गिननैं ॥ ४३३ ॥

आगैं नक्षत्रनिके अधिदेवतानिकौं दोय गाथानि करि कहैं हैं;—

**अग्गि पयावदि सोमो रुद्दो दिति देवमंति सप्पो य।**
**पिदुभगअरियमदिणयरतोट्ठणिलिंदग्गिमिंत्तिदा ॥ ४३४ ॥**

अग्निः प्रजापतिः सोमः रुद्रः अदितिः देवमंत्री सर्पश्च।
पिताभगः अर्यमा दिनकरः त्वष्टा अनिलेंद्राग्निमित्रेन्द्राः ॥ ४३४ ॥

**अर्थ—**अग्नि १ प्रजापात्ति १ सोम १ रुद्र १ दिति १ देवमंत्री १ सर्प १ पिता १ भग १ अर्यमा १ दिनकरा १ त्वष्टा १ अनिल १ इंद्राग्नि १ मित्र १ इंद्र १ ॥ ४३४ ॥

**तो णेरिदि जल विस्सो वह्मा विण्हू वसू य वरुण अजा।**
**अहिवड्ढि पूसण अस्सा जमो वि अहिदेवदा कमसो ॥ ४३५ ॥**

ततः नैर्ऋतिः जलः विश्वः ब्रह्मा विष्णुः वसुश्च वरुणः अजः।
अभिवृद्धिः पूषा अश्वः यमोऽपि अधिदेवताः क्रमशः ॥ ४३५ ॥

**अर्थ—**तहां पीछैं नैऋति १ जल १ विश्व १ ब्रम्हा १ विष्णु १ वसु १ वरुण १ अज १ अभिवृद्धि १ पूषा १ अश्व १ यम १ ए कृतिका आदि नक्षत्रनिके अनुक्रम करि अधिदेवता है। नक्षत्ररूप तारिनिके स्वामी जे देव तिनिकै ए नाम जाननें ॥ ४३५ ॥

आगैं नक्षत्रनिकी स्थिति विशेषका विधान कहैं हैं;—

**कित्तियपडंतिसमये अट्ठम मघारिक्खमेदि मज्झण्हं।**
**अणुराहारिक्खुदओ एवं सेसे वि भासिज्जो॥ ४३६॥**

कृत्तिकापतनसमये अष्टमं मघाऋक्षं एति मध्याह्नम्।
अनुराधाऋक्षोदयः एवं शेषेपु अपि भाषणीयम्॥ ४३६॥

**अर्थ**—कृतिका नक्षत्रका पतन समय कहिए अस्त होनैंका काल तीहविषैं इस कृत्तिकातैं आठवां मघा नक्षत्र सो मध्यान्ह कहिए वीचि प्राप्त हो है। वहुरि तीह मघातैं आठवां अनुराधा नक्षत्र सो उदय हो है। ऐसेही रोहिणी आदि नक्षत्रनिविपै जो नक्षत्र अस्त होइ तीह समय तीह नक्षत्रसौं आठवां नक्षत्र मध्यान्हकों प्राप्त होइ। अर तीहसौं आठवां नक्षत्र उदयकों प्राप्त होइ ऐसा कहना॥ ४३६॥

आगैं चन्द्रमाके पंद्रह मार्ग हैं तिनविपै इस इस मार्ग्गविषै ए नक्षत्र तिष्टै हैं। ऐसा तीन गाथानि करि कहैं हैं;—

**अभिजिणव सादि पुव्वुत्तरा य चंदस्स पढममग्गह्मि।**
**तदिए मघापुणव्वसु सत्तमिए रोहिणी चित्ता॥ ४३७॥**

अभिजिन्नव स्वातिः पूर्वोत्तरा च चन्द्रस्य प्रथममार्गे।
तृतीये मघापुनर्वसू सप्तमे रोहिणी चित्राः॥ ४३७॥

**अर्थ**—अभिजित आदि नव सो अभिजित १ श्रवण १ धनिष्ठा १ शतभिषा १ पूर्वा भाद्रपदा १ उत्तरा भाद्रपदा १ रेवती १ अश्विनी १ भरणी १ अर ए नव स्वाति १ पूर्व्वाफाल्गुनी १ उत्राफाल्गुनी १ ए वारहतौ चन्द्रमाके प्रथम मार्गविषै विचरै हैं। जो चन्द्रमाका प्रथम अभ्यन्तर वीथी रूप परिधि तीहकै उपरि जो परिधि तिहविषै भ्रमण करै है। ऐसेही तीसरा मार्गविषै मघा १ पुनर्वसु ए दोय नक्षत्र विचरै हैं। सातवां मार्गविषै रोहिणी चित्रा ए दोय नक्षत्र विचरैं हैं॥ ४३७॥

**छट्टट्ठमदसमेयारसमे किंत्तिय विसाह अणुराहा।**
**जेट्ठा कमेण सेसा पण्णारसमह्मि अट्ठेव॥ ४३८॥**

षष्ठाष्टमदशमैकादशे कृतिका विशाखा अनुराधा।
ज्येष्ठा क्रमेण शेषाणि पंचदशे अष्टैव॥ ४३८॥

**अर्थ**—छटा मार्गविषै कृत्रिका आठवांविपै विशाखा दशवांविषै अनुराधा ग्यारवांविषै ज्येष्टा क्रम करि विचरैं हैं। अवशेष आठ नक्षत्र पंद्रन्हां अंतका मार्गके ऊपरि विचरैं हैं॥ ४३८॥

ते शेष आठ नक्षत्र कौंन सो कहैं हैं;—

**हत्थं मूलतियं विय मियसिरदुग पुस्सदोण्णि अट्ठेव।**
**अट्ठपहे णक्खत्ता तिट्ठंति हु वारसादीया॥ ४३९॥**

हस्तः मूलत्रयं अपि मृगशीर्षद्विकं पुष्यद्वयं अष्टैव ।
अष्टपथे नक्षत्राणि तिष्ठंति हि द्वादशादीनि ॥ ४३९ ॥

**अर्थ**—हस्त १ मूल त्रय कहिए मूल पूर्वाषाढ १ उत्तराषाढ १ मृगशीर्ष द्विक कहिए मृगशीर्षा १ आर्द्रा १ पुष्यद्वयं-कहिए पुष्य १ अश्लेषा ए आठ अवशेष जाननें। ऐसैं प्रथमादिक पथनिविषैं बारह आदि नक्षत्र चन्द्रमाके आठ पथनिकै ऊपरि तिष्टै हैं॥ ४३९ ॥

आगैं नक्षत्रनिके तारानिकी संख्या दोय गाथानि करि कहैं हैं;—

**कित्तिय पहुदिसु तारा छप्पण तिय एक्क छत्ति छक्क चऊ ।**
**दो दो पंचेक्केक्कं चउ छत्तियणवचउक्क चऊ ॥ ४४० ॥**

कृतिकाप्रभृतिषु ताराः षट् पंच तिस्रः एका षट् त्रिषट्चतुः ।
द्वे द्वे पंच एकैका चतुःपट् त्रिकनवचतुष्काः चतस्रः ॥ ४४० ॥

**अर्थ**—कृत्रिका आदि नक्षत्रानिके तारे अनुक्रम करि छह पांच तीन एक छह तीन छह च्यारि दोय दोय पांच एक एक च्यारि छव तीन नव च्यारि च्यारि ॥ ४४० ॥

**तिय तिय पंचेकारहियसय दो दो कमेण बत्तीसा ।**
**पंच य तिण्णि य तारा अट्ठावीसाण रिक्खाणं ॥ ४४१ ॥**

तिस्रः तिस्रः पंचकादशाधिकशतं द्वे द्वे क्रमेण द्वात्रिंशत् ।
पंच च तिस्रः च तारा अष्टाविंशानां ऋक्षाणाम् ॥ ४४१ ॥

**अर्थ**—तीन तीन पांच ग्यारह अधिक एक सौ दोय दोय बत्तीस पांच तीन ऐसैं ए तारा क्रमकरि अठाईस नक्षत्रनिके हैं ॥ ४४१ ॥

आगैं तिन तारानिका आकारविशेषकों तीन गाथानि करि कहैं हैं;—

**बीयणसअलुद्धीए मियासिरदीवे य तोरणे छत्ते ।**
**वम्मियगोमुत्ते विय सरजुगहत्थुप्पले दीवे ॥ ४४२ ॥**

वीजनशकटोद्धिका मृगशिरदीपे च तोरणे छत्रे ।
वल्मीकगोमूत्रे अपि शरयुगहस्तोत्पले दीपे ॥ ४४२ ॥

**अर्थ**—कृत्रिका नक्षत्रके छह तारे हैं तिनका आकार वीजना सदृश है । ऐसेही रोहिणी आदि नक्षत्रके तारानिका आकार क्रमतैं गाडेकी ऊंद्धिका १ हिरणका मस्तक १ दीपक तोरण १ छत्र १ वंवई १ गऊका मूत्र १ शरका युगल १ हाथ १ कमल १ दीपक ॥ ४४२ ॥

**अधियरणे वरहारे वीणासिंगे य विंच्छिए सारिसा ।**
**दुक्कयवावीहरिगजकुंभे मुरवे पतंतपक्खीए ॥ ४४३ ॥**

अधिकरणे वरहारे वीणाशृंगे च वृश्चिकेन सदृशाः ।
दुष्कृतवापीहरिगजकुंभेन मुरजेन पतत्पक्षिणा ॥ ४४३ ॥

**अर्थ**—अहिरिणी १ उत्कृष्टहार १ वीणाकाशृंग १ वीछू १ जीर्णा वावडी १ सिंहका कुंभस्थल १ मृदंग १ पडतापंखी १ ॥ ४४३ ॥

सेणागयपुव्वावरगत्ते णावा हयस्स सिरसरिसा ।
चुल्लीपासाणणिभा कित्तियआदीणि रिक्खाणि ॥ ४४४ ॥
सेनागजपूर्व्वावरगात्रे नावा हयस्य शिरसा सदृशाः ।
चुल्लीपाषाणनिभाः कृत्तिकादीनि ऋक्षाणि ॥ ४४४ ॥

अर्थ—सेना १ हस्तीका आगिला शरीर १ हस्तीका पाछिला शरीर १ नाव १ घोड़ेका मस्तक १ चूल्हाका पापाण १ समान आकारकौं धरैं हैं तारे जिनके ऐसे कृतिकादि नक्षत्र जानतें ॥ ४४४ ॥

आगैं कृतिकादि नक्षत्रनिके परिवार रूप तारानिकों कहैं हैं;—

एक्कारसयसहस्सं सगसगतारापमाणसंगुणिदं ।
परिवारतारसंखा कित्तियणक्खत्तपहुदीणं ॥ ४४५ ॥
एकादशशतसहस्रं स्वकस्वकताराप्रमाणसंगुणितम् ।
परिवारतारासंख्या कृत्तिकानक्षत्रप्रभृतीनाम् ॥ ४४५ ॥

अर्थ—ग्यारह अधिक एकसौ सहित एक हजारकौं अपनें अपनें तारानिका प्रमाण करि गुणें जो प्रमाण होइ सो कृत्तिका नक्षत्र आदि नक्षत्रनिके परिवाररूप तारेनिकी संख्या जाननी । उदाहरण—कृत्तिका नक्षत्रके मूल तारे छह हैं इनिकों ग्यारहसै ग्यारह करि गुणे छह हजार छह सै छासठि तारे कृत्तिका नक्षत्रके परिवारके हैं । ऐसैं ही रोहिणी आदिके भी जाननें नक्षत्रनिके जे अधिदेवता तिनिके अनुसारी इनिविषै वसैं हैं ॥ ४४५ ॥

आगैं पंच प्रकार ज्योतिषी देवनिका आयु प्रमाण कहैं हैं;—

इंदिणसुक्कगुरिदरे लक्ख सहस्सा सयं च सहपल्लं ।
पल्लं दलं तु तारे वरावरं पादपादद्धं ॥ ४४६ ॥
इंदिनशुक्रगुर्वितरेषु लक्षं सहस्रं शतं च सहपल्यं ।
पल्यं दलं तु तारासु वरमवरं पादपादार्धम् ॥ ४४६ ॥

अर्थ—चंद्रमा सूर्य शुक्र बृहस्पति इतर इनविषै क्रमतैं लाख हजार सौ वर्ष सहित पल्य अर्द्ध पल्य प्रमाण आयु है । भावार्थ—चंद्रमाका आयु लाख वर्ष सहित पल्य प्रमाण है । सूर्यका आयु हजार वर्ष सहित पल्य प्रमाण है । शुक्रका आयु सौ वर्ष सहित पल्य प्रमाण है । बृहस्पतिका आयु पल्य प्रमाण है । इतर बुध मंगल शनैश्चरादिकका आयु आध पल्य प्रमाण है । बहुरि तारे कहिए तारा अर नक्षत्र इनका आयु उत्कृष्ट तौ पाद कहिए पल्यका चौथा भाग प्रमाण है । अर जघन्य पादार्थ कहिए पल्यका आठवां भाग प्रमाण है ॥ ४४६ ॥

आगैं चन्द्रमा सूर्यनिकी देवांगनानिकौं दोय गाथानि करि कहैं हैं;—

चंदाभा य सुसीमा पहंकरा अच्चिमालिणी चंदे ।
सूरे दुदि सूरपहा पहंकरा अच्चिमालिणी देवी ॥ ४४७ ॥
चन्द्राभा च सुसीमा प्रभंकरा अर्चिमालिनी चंद्रे ।
सूर्ये द्युतिः सूर्यप्रभा प्रभंकरा अर्चिमालिनी देव्यः ॥ ४४७ ॥

अर्थ—चद्राभा १ सुसीमा १ प्रभंकरा १ अर्चिमालिनी १ ए च्यारि चन्द्रमाकै पट्ट देवांगना हैं। वहुरि सूर्यकै द्युति १ सूर्यप्रभा १ प्रभंकरा १ अर्चिमालिनी ए च्यारि पट्ट देवी हैं ॥४४७॥

जेट्ठा ताओ पुह पुह परिवारचदुस्सहस्सदेवीणं।
परिवारदेविसरिसं पत्तेयमिमा विउव्वंति ॥ ४४८ ॥

जेष्ठाः ताः पृथक् पृथक् परिवारचतुःसहस्रदेवीनाम्।
परिवारदेवीसदृशं प्रत्येकमिमाः विकुर्वंति ॥ ४४८ ॥

अर्थ—ते ज्येष्ठ कहिए पट्ट देवी प्रथक् प्रथक च्यारि हजार परिवार देवीनिकी है। भावार्थ—च्यारि च्यारि हजार परिवार देवांगनानिकी एक एक पट्ट देवांगना है। वहुरि इस परिवार देवी समान संख्याकों प्रत्येक विक्रिया करै हैं। भावार्थ—एक एक पट्ट देवांगना विक्रिया करै तौ च्यारि हजार हो हैं ॥ ४४८ ॥

आगैं ज्योतिष्क देवांगनानिका आयु प्रमाण कहैं हैं;—

जोइसदेवीणाऊ सगसगदेवाणमद्धयं होदि।
सव्वणिगिट्ठसुराणां वत्तीसा होंति देवीओ ॥ ४४९ ॥

ज्योतिष्कदेवीनामायुः स्वकस्वकदेवानामर्धं भवति।
सर्वनिकृष्टसुराणां द्वात्रिंशत् भवंति देव्यः ॥ ४४९ ॥

अर्थ—ज्योतिष्क देवांगनानिका आयु अपनें अपनें भर्त्तार देवनिका आयुतैं अर्द्धप्रमाण जाननां। वहुरि इहां सर्वतैं निकृष्ट हीन पुन्यवान देव तिनकै व्रत्तीस देवांगना हो हैं। मध्यविषै यथायोग्य देवांगनानिकी संख्या जाननी ॥ ४४९ ॥

आगैं भवनत्रिकविषैं जे जीव उपजें है तिनकौं कहैं हैं;—

उम्मग्गचारि सणिदाणणलादिमुदा अकामणिज्जरिणो।
कुदवा सवलचरित्ता भवणतियं जंति ते जीवा ॥ ४५० ॥

उन्मार्गचारिणः सनिदानाः अनलादिमृता अकामनिर्जरिणः।
कुतपसः शवलचारित्रा भवनत्रये यांति ते जीवाः ॥ ४५० ॥

अर्थ—उन्मार्गचारी कहिए जिनमततैं विपरीत धर्मके आचरनेवाले, वहुरि सनिदानाः कहिए निदान जिननैं किया होइ, वहुरि अनलादिमृताः कहिए अग्नि जल झंपापात आदिकतैं मूए, वहुरि अकामनिर्जरिणः कहिए विना अभिलाष वंधादिकके निमित्ततैं परीषह सहनादि करि जिनकै निर्जरा भई वहुरि कुतपसः कहिए पंचाग्नि आदि खोटे तपके करनेवाले वहुरि शवलचारित्राः कहिए सदोष चारित्रके धरनहारे जे जीव हैं ते भवनत्रय जो भवनवासी व्यंतर ज्योतिषी तिनविषै जाय उपजै हैं ॥ ४५० ॥ ऐसैं ज्योतिर्लोकका अधिकार समाप्त भया।

इतिश्री नेमिचंद्राचार्य विरचित त्रिलोकसारमें चौथा ज्योतिर्लोकका अधिकार समाप्त भया ॥ ४ ॥

## ॥ अथ वैमानिकलोकाधिकार ॥ ५ ॥

अथ अनुक्रम करि प्राप्त भया वैमानिक लोकका वर्णन करनेंका है अभिलाषा जाकैं ऐसा आचार्य सो प्रथम विमाननिकी संख्याका प्रतिपादनके अर्थि तिन विमाननिविषै तिष्टतै जे अविनाशी जिन मंदिर तिनकौं प्रमाणपूर्वक नमस्कारकौं करै है;—

चुलसीदिलक्खसत्ताणउदिसहस्से तहेव तेवीसे।
सव्वे विमाणसमणगजिणिंदगेहे णमंसामि ॥ ४५१ ॥

चतुरशीतिलक्षसप्तनवतिसहस्रान् तथैव त्रयोविंशान्।
सर्वान् विमानसमानजिनेंद्रगेहान् नमस्यामि ॥ ४५१ ॥

अर्थ—चौरासी लाख सित्याणवै हजार तेईस सर्व विमान संख्याकै समान जिनेश्वरके मंदिर हैं जातैं एक एक विमानविषै एक एक जिन मंदिर पाईए हैं तिनकौं नमस्कार करौं हौं ४५१

आगैं इन विमाननिका कल्प अर कल्पातीत भेद करि तहां प्रथमही कल्प जे स्वर्ग तिनके नाम दोय गाथानि करि कहैं हैं;—

सोहम्मीसाणसणक्कुमारमाहिंदगा हु कप्पा हु।
बम्हब्बम्हुत्तरगो लांतवकापिट्ठगो छट्ठो ॥ ४५२ ॥

सौधर्मैशानसनत्कुमारमाहेंद्रकौ हि कल्पा हि।
ब्रह्मब्रह्मोत्तरकौ लांतवकापिष्ठकौ षष्टः ॥ ४५२ ॥

अर्थ—सौधर्म १ ईशान १ सनत्कुमार १ माहेन्द्र १ ए च्यारि कल्प कहिए स्वर्ग हैं। बहुरि ब्रह्म १ ब्रह्मोत्तर ए दोय कल्प मिलि करि इनका इंद्र एक ही है तांह अपेक्षा एक ही कल्प है। बहुरि लांतव १ कापिष्ट ए दोय भी एक इंद्रकी अपेक्षा छठा एक कल्प है ॥ ४५२ ॥

सुक्कमहासुक्कगदो सदरसहस्सारगो हु तत्तो दु।
आणदपाणदआरणअच्चुदगा होंति कप्पा हु ॥ ४५३ ॥

शुक्रमहाशुक्रगतः शतारसहस्रारगो हि ततस्तु।
आनतप्राणतारणाच्युतगा भवंति कल्पा हि ॥ ४५३ ॥

अर्थ—शुक्र १ महाशुक्र १ ए दोय भी एक इन्द्र अपेक्षा एक कल्प है, बहुरि शतार १ सहस्रार १ ए दोय भी एक इंद्र अपेक्षा एक कल्प है। बहुरि तहां पीछैं आनत १ प्राणात १ आरण १ अच्युत ए च्यारि कल्प हैं ॥ ४५३ ॥

मज्झिमचउजुगलाणं पुव्वावरजुम्मगेसु सेसेसु।
सव्वत्थ होंति इंदा इदि बारस होंति कप्पा हु ॥ ४५४ ॥

मध्यमचतुर्युगलानां पूर्वापरयुग्मयोः शेषेषु ।
सर्वत्र भवंति इंद्रा द्वादश भवंति कल्पा हि ॥ ४५४ ॥

**अर्थ**—सोलह स्वर्गनिके आठ युगल तिनविषै मध्यका च्यारि युगलनिविषै पूर्व दोय युगल तौ ब्रह्म ब्रह्मोत्तर अर लांतव कापिष्ट अर अपर दोय युगल शुक्र सता महाशुक्र अर सहस्रार इन च्यारि युगलनिकें एक एक इंद्र हैं। बहुरि अवशेष आठ कल्प तिनिविषै सर्वत्र एक एक इंद्र है। ऐसे इंद्र अपेक्षा करि कल्प बारह है ॥ ४५४ ॥

आगैं स्वर्गनिकै ऊपरि जे कल्पातीत विमान तिनके नाम कहैं हैं;—

**हिट्ठिममज्झिमउवरिमतित्तिय गेवेज्ज णवअणुद्दिसगा ।**
**पंचाणुत्तरगा विय कप्पादीदा हु अहमिंदा ॥ ४५५ ॥**

अधस्तनमध्यमोपरिमात्रित्रिकाणि ग्रैवेयाणि नव अनुदिशानि ।
पंचानुत्तरकाणि अपि च कल्पातीता हि अहमिंद्राः ॥ ४५५ ॥

**अर्थ**—अधस्तन अर मध्यम अर उपरिम तीन तीन ग्रैवेयक हैं तिनके नव ग्रैवेयक भए। बहुरि नव अनुदिश विमान हैं। बहुरि पंच अनुत्तर विमान हैं। ऐसैं ए कल्पातीत विमान हैं। तिनविषै अहमिंद्र देव तिष्टैं हैं ॥ ४५५ ॥

आगैं नव अनुदिश विमान अर पंच अनुत्तर विमान तिनके नाम दोय गाथानि करि कहैं हैं;—

**अच्चीय अच्चिमालिणि वइरे वइरोयणा अणुद्दिसगा ।**
**सोमो य सोमरूवे अंके फलिके य आइच्चे ॥ ४५६ ॥**

आर्चिः अर्चिमालिनी वैरो वैरोचनः अनुदिशकानि ।
सोमश्च सोमरूपः अंकः स्फटिकः च आदित्यं ॥ ४५६ ॥

**अर्थ**—आर्चि १ अर्चिमालनी १ वैर १ वैरोचन १ ए च्यारि श्रेणी बद्ध विमान पूर्वादि दिशानिविषै प्राप्त हैं। बहुरि सोम १ सोमरूप १ अंक १ स्फटिक ए च्यारि प्रकीर्णक विमान विदिशानिविषैं प्राप्त हैं। मध्यविषै आदित्यनामा इंद्रक विमान है। ऐसैं ए नव अनुदिश विमाननिके नाम हैं ॥ ४५६ ॥

**विजयो दु वैजयंतो जयंत अवराजिदो य पुव्वाई ।**
**सव्वट्ठसिद्धिणामा मज्झम्मि अणुत्तरा पंच ॥ ४५७ ॥**

विजयस्तु वैजयंतः जयंतः अपराजितश्च पूर्वादयः ।
सर्वार्थसिद्धिनामा मध्ये अनुत्तराः पंच ॥ ४५७ ॥

**अर्थ**—विजय १ वैजयं १ जयंत १ अपराजित १ ए च्यारि पूर्वादि दिशानिविषै श्रेणीबद्ध विमाननिके नाम हैं। बहुरि मध्यविषैं सर्वार्थसिद्धि नामा इंद्रक विमान है। ऐसैं ए पंच अनुत्तर विमान हैं ॥ ४५७ ॥

आगें कहे जु कल्प अर कल्पातीत विमान तिनके स्थितिस्थानकौं कहैं हैं;—

**मेरुतलादु दिवड्ढं दिवड्ढदलछक्कएक्करज्जुह्मि।**
**कप्पाणमट्ठजुगला गेवेज्जादी य होंति कमे ॥ ४५८ ॥**

मेरुतलात् द्व्यर्धं द्व्यर्धदलषट्कैकरज्जौ।
कल्पानां अष्टयुगलानि ग्रैवेयादयश्च भवंति क्रमेण ॥ ४५८ ॥

**अर्थ**—सौधर्म ईशान युगलतें लगाय अनुक्रमतें मेरुतलतें। ड्योढ अर अर्द्ध छह राजूनिविषैं स्वर्गनिके आठ युगल हैं। **भावार्थ**—मेरु तलतें ड्यौढ़ राजूविषैं सौधर्म ईशान युगल हैं। ताकै ऊपरि ड्यौढ़ राजूविषै सनत्कुमार माहेन्द्र युगल हैं। आगैं ऊपरि ऊपरि आध आध राजूविषैं छह युगल क्रम करि हैं ऐसैं छह राजूनिविषै स्वोलह स्वर्ग हैं। बहुरि तिनके ऊपर एक राजूविषै नवग्रैवेयक अर अनुदिश अनुत्तरविमान कमतै हैं ॥ ४५८ ॥

अब सौधर्मादिक निविषै विमाननिंकी संख्या तीन गाथानि करि कहैं हैं;—

**बत्तीसट्ठावीसं वारस अट्ठेव होंति लक्खाणि।**
**सोहम्मादिचउक्के लक्खचउक्कं तु बह्मदुगे ॥ ४५९ ॥**

द्वात्रिंशदष्टाविंशतिः द्वादश अष्टैव भवंति लक्षाणि।
सौधर्मादिचतुष्के लक्षचतुष्कं तु ब्रह्मद्विके ॥ ४५९ ॥

**अर्थ**—बत्तीस अठाईस बारह आठ लाख सौधर्मादिक च्यारि स्वर्गनिविषैं विमान हैं। तहां सौधर्मविषै बत्तीस लाख ईशानविषै अठाईस लाख सनत्कुमारविषै बारह लाख महेन्द्रविषै आठ लाख विमान हैं। बहुरि ब्रह्मब्रह्मोत्तर युगलविषै मिलि करि च्यारि लाख विमान हैं ॥ ४५९ ॥

**तत्तो जुम्माण तिए पण्णासं ताल छस्सहस्साणं।**
**सत्तसयाणि य आणदकप्पचउक्केसु पिंडेण ॥ ४६० ॥**

ततो युग्मानां त्रये पंचाशत् चत्वारिंशत् षट्सहस्राणां।
सप्तशतानि च आनतकल्पचतुष्केषु पिंडेन ॥ ४६० ॥

**अर्थ**—तहां पीछैं तीन युग्मविषै पचास चालीस छह हजार हैं। तहां लांतव कापिष्ट युगलविषै पचास हजार शुक्र महाशुक्र युगलविषै चालीस हजार सतार सहस्रार युगलविषैं छह हजार विमान हैं। बहुरि आनतादि च्यारि कल्पनिविषै पिंड करि मिलाए हुए सातसै विमान हैं ॥ ४६० ॥

**एक्कारसत्तसमहियसयमेक्काणउदी णव य पंचेव।**
**गेवेज्जाणं तित्तिसु अणुदिस्साणुत्तरे होंति ॥ ४६१ ॥**

एकादशसप्तसमधिकशतं एकनवतिः नव च पंचैव।
ग्रैवेयाणां त्रित्रिषु अनुदिशानुत्तरे भवंति ॥ ४६१ ॥

**अर्थ**—ग्यारह सात अधिकसौ इक्याणवै नव पांच विमान ग्रैवेयक तीन तीन अर अनुदिश अनुत्तरविषै हो है। तहां तीन अधो ग्रैवेयिकनिविषैं एकसौ ग्यारह अर तीन मध्य ग्रैवेयकनिविषैं एकसौ

सात अर तीन ऊर्द्ध ग्रैवेयकनिविषैं इक्याणवै अर अनुदिशविषै नव अर अनुत्तरविषै पांच विमान जाननें ॥ ४६१ ॥

अब प्रथमादि स्वर्गनिविषै प्रत्तरनिकी संख्याका प्रतिपादनकै अर्थि इंद्रकानिका प्रमाण निरूपै हैं। जातैं एक एक प्रतरविषै एक एक इंद्रक विमान है;—

इगितीससत्त चत्तारि दोण्णि एक्केक्क छक्क चदुकप्पे।
तित्तिय एक्केक्किंदयणामा उडुआदितेवट्ठी ॥ ४६२ ॥

एकत्रिंशत्सप्त चत्वारि द्वे एकमेकं पट्कं चतुःकल्पे।
त्रीणि त्रीणि एकमेकं इंद्रकनामानि ऋत्वादित्रिषष्टिः ॥ ४६२ ॥

अर्थ—सौधर्म युग्मविषै इकतीस इंद्रक हैं सनत्कुमार युग्मविषै सात इंद्रक है ब्रह्मयुग्मविषै च्यारि इंद्रक हैं लांतव युग्मविषै दोय इन्द्रक हैं शुक्र युग्मविषै एक इंद्रक है शतार युग्मविषै एक इंद्रक है। आनंतादि च्यारि कल्पनिविषै छह इंद्रक हैं। अधस्तन आदि तीन प्रकार ग्रैवेयकनिविषै तीन तीन इंद्रक है नव अनुदिशविषैं एक इंद्रक है। पंच अनुत्तरविषै एक इंद्रक है ऐसे ए तरेसठि इंद्रक है सो इनके ऋतुविमान आदि तरेसठि नाम हैं ॥ ४६२ ॥

आगैं इन इंद्रकनिका ऊर्द्ध अपेक्षा अंतराल अर तिनका नामका अवतार कहै है;—

एक्केक्कइंदयस्स य विच्चालमसंखजोयणपमाणं।
एदाणं णामाणं वोच्छामो आणुपुव्वीओ ॥ ४६३ ॥

एकैकमिंद्रकस्य च विचालं असंख्यातयोजनप्रमाणं।
एतेषां नामानि वक्ष्यामः आनुपूर्व्या ॥ ४६३ ॥

अर्थ—एक एक इंद्रककै वीचि अंतराल असंख्यात योजन प्रमाण है। अब इंद्रकनिकें नाम अनुपूर्वी कहिए नीचैतैं लगाय क्रम करि कहौं हौं ॥ ४६३ ॥

कहे इंद्रक तिनके नाम छह गाथानि करि कहैं हैं;—

उडुविमलचंदवग्गू वीररुणं णंदणं च णलिणं च।
कंचण रोहिद चंचं मरुदं रिद्धिसय वेलुरियं ॥ ४६४ ॥

ऋतुविमलचंद्रवल्गुवीरारुणनंदनं च नलिनं च।
कांचनं रोहितं चंचत् मरुत् ऋद्धीशं वैडूर्यं ॥ ४६४ ॥

अर्थ—ऋतु १ विमल १ चंद्र १ वल्गु १ वीर १ अरुण १ नंदन १ नलिन १ कांचन १ रोहित १ चंचत् १ मरुत् १ ऋद्धीश १ वैडूर्य ॥ ४६४ ॥

रुचग रुचिरंक फलिहं तवणीयं मेघमब्भ हारिद्दं।
पउमं लोहिद वज्जं णंदावत्तं पहंकरयं ॥ ४६५ ॥

रुचकं रुचिरं अंकं स्फटिकं तपनीयं मेघं अभ्रं हारिद्रं।
पद्मं लोहितं वज्रं नंद्यावर्तं प्रभंकरं ॥ ४६५ ॥

अर्थ—रुचक १ रुचिर १ अंक १ स्फटिक १ तपनीय १ मेघ १ अभ्र १ हरित १ पद्म १ लोहित १ वज्र १ नंद्यावर्त्त १ प्रभंकर ॥ ४६५ ॥

पिट्टक गज मित्त पहा अंजण वणमाल णाग गरुडं च ।
लंगल वलभद्द चय चक्कं चरिमं च अडतीसो ॥ ४६६ ॥
पृष्टकं गजं मित्रं प्रभं अंजनं वनमालं नागं गरुडं च ।
लांगलं बलभद्रं च चक्रं चरमं च अष्टात्रिंशत् ॥ ४६६ ॥

अर्थ—पृष्टक १ गज १ मित्र १ प्रभ १ अंजन १ वनमाल १ नाग १ गरुड १ लांगल १ वलभद्र १ अंतका इंद्रकं चक्र १ ऐसैं सौधर्मादि च्यारि स्वर्गविषै मिलाए हुए अठतीस इंद्रकनिके नाम हैं ॥ ४६६ ॥

रिट्ठसुरसमिदि वह्मं वह्मुत्तर वह्महिदयलांतवयं ।
सुक्कं खलु सुक्कदुगे सदरविमाणं तु सदरदुगे ॥ ४६७ ॥
अरिष्टसुरसमिति ब्रह्म ब्रह्मोत्तरं ब्रह्महृदयलांतवकं ।
शुक्रं खलु शुक्रद्विके शतारविमानं तु शतारयुगे ॥ ४६७ ॥

अर्थ—अरिष्ट १ सुरस १ ब्रह्म १ ब्रह्मोत्तर १ ए च्यारि ब्रह्म युगलविषै इंद्रकनिके नाम हैं। बहुरि ब्रह्महृदय १ लांतव १ ये दोय लांतव युगलविषै इंद्रकानिके नाम हैं। बहुरि शुक्र युगल विषै शुक्र नामा एक इंद्रक है। बहुरि शतार द्विकविषै शतार विमान नाम इंद्रक है ॥ ४६७ ॥

आणद पाणदपुप्फय सातक तह आरणच्चुदवसाणे।
तो गेवेज्ज सुदरिसण अमोह तह सुप्पवुद्धं च ॥ ४६८ ॥
आनतप्राणतपुष्पकं शातकं तथा आरणाच्युतावसाने ।
ततः ग्रैवेयके सुदर्शनं अमोघं तथा सुप्रवुद्धं च ॥ ४६८ ॥

अर्थ—आनत १ प्राणत १ पुष्पक १ सातक १ आरण १ अच्युत १ ए छह इंद्रकानिके नाम आनतादि अच्युत पर्यंत च्यारि कल्पनिविषै हैं। बहुरि तहां पीछैं नव ग्रैवेयकनिविषै सुदर्शन १ अमोघ १ सुप्रवुद्ध १ हैं। ॥ ४६८ ॥

जसहर सुभद्दणामा सुविसालं सुमणसं च सोमणसं ।
पीदिंकरमाइच्चं चरिमे सव्वट्ठसिद्धी दु ॥ ४६९ ॥
यशोधरं सुभद्रनाम सुविशालं सुमनसं च सौमनसं ।
प्रीतिंकरं आदित्यं चरमे सर्वार्थसिद्धिस्तु ॥ ४६९ ॥

अर्थ—यशोधर १ सुभद्र नाम १ सुविशाल १ सुमनस १ सौमनस १ प्रीतिंकर ए नव इंद्रकनिके नाम है। बहुरि नव अनुदिशविषै आदित्यनामा इंद्रक है। बहुरि अंतविषै पंचानुत्तरविषै सर्वार्थसिद्धिनामा इंद्रक है ॥ ४६९ ॥

आगैं मेरुतलादु दिवड्ढ इत्यादि पूर्वोक्त गाथाका अर्थविषै सर्वत्र विमान तिष्ठै हैं कहा? ऐसा प्रश्न होतैं उत्तर कहै हैं;—

णाभिगिरिचूलिगुवरिं वालग्गंतरट्ठियो हु उडुइंदो ।
सिद्धीदो धो वारह जोयणमाणह्मि सव्वट्ठं ॥ ४७० ॥

नाभिगिरिचूलिकोपरि बालाग्रांतरे स्थितः हि ऋत्विंद्रकः ।
सिद्धितः अधः द्वादशयोजनमाने सर्वार्थः ॥ ४७० ॥

**अर्थ**—नाभिगिरि जो वीचि तिष्ठता सुदर्शन मेरुगिरि ताकी चूलिकाकै ऊपरि वालका अग्रभाग प्रमाण अंतराल छोडि पहला ऋतु नामा इंद्रक विमान तिष्ठै है। बहुरि सिद्धक्षेत्रतैं नीचैं बारह योजन प्रमाणविषै अंतका सर्वार्थसिद्धि नामा इंद्रक विमान तिष्ठै है ॥ ४७० ॥

आगैं कल्प अर कल्पातीतनिकै विक्रियादिकानिकी मर्यादाकौं कहैं हैं;—

सगसगचरिमिंदयधयदंडं कप्पावणीणमंतं खु ।
कप्पादीदवणिस्स य अंतं लोयंतयं होदि ॥ ४७१ ॥

स्वकस्वकचरमेंद्रकध्वजदंडः कल्पावनीनां अंतः खलु ।
कल्पातीतावनेश्च अंतः लोकांतकः भवति ॥ ४७१ ॥

**अर्थ**—अपनां अपनां अंतका इंद्रकका जु ध्वजादंड सो कल्पसंबंधी पृथ्वीका अंत जाननां। जैसैं सौधर्म युगलविषै इकतीसवां अंतका इंद्रकका ध्वजादंड जहां है तहां सौधर्म युगलका अंत है। ऐसैं ही अन्यत्र जाननां। बहुरि कल्पातीत संबंधी पृथ्वीका अंत सो लोकका अंत है। लोकका जहां अंत है तहां कल्पातीत पृथ्वीका अंत है ॥ ४७१ ॥

आगैं इंद्रकनिका विस्तार कहैं हैं;—

माणुसखित्तपमाणं उडु सव्वट्ठं तु जंबुदीवसमं ।
उभयविसेसे रूऊणिंदयभजिदे दु हाणिचयं ॥ ४७२ ॥

मानुषक्षेत्रप्रमाणं ऋतु सर्वार्थं तु जंबुद्वीपसमं ।
उभयविशेषे रूपोनेंद्रकभक्ते तु हानिचयम् ॥ ४७२ ॥

**अर्थ**—मनुष्य क्षेत्र प्रमाण पैंतालीस लाख योजन व्यासकौं धरैं ऋतुनामा इंद्रक है। बहुरि सर्वार्थसिद्धि विमान जंबूद्वीप समान एक लाख योजन व्यासकौं धरे हैं। बहुरि दोऊनिविषै विशेष ग्रहण करिए तहां पैतालीस लाखमैं सौं एक लाख घटाएं चवालीस लाख अवशेष रहे तिनकौं एक घाटि इंद्रकका भाग दीजिये तहां इंद्रक प्रमाण तरेसठिमैंस्यौं एक घटाएं वासठि ताका भाग दिएं सत्तरि हजार नवसै सतसठि योजन अर तेईसका इकतीसवां भाग प्रमाण आया। सो इंद्रक इंद्रक प्रति हानि चय जाननां। याका वर्णन—पैतालीसलाख योजन ऋतुविमान है यामें सत्तरि हजार नवसै सतसठि योजन अर तेईसका इकतीसवां भाग प्रमाण हानि चय घटाईए तब चवालीस लाख गुणतीस हजार बत्तीस योजन अर आठ इकतीसवां भाग प्रमाण रह्या सो इतनां दूसरा इंद्रकका व्यास प्रमाण है। यामें हानिचय घटाएं तीसरा इंद्रकका व्यास प्रमाण है। ऐसे क्रमतैं यावत् अंत इंद्रकका एक लाख योजन व्यास रहै तावत् पूर्व पूर्व इंद्रक व्यासमैंस्यौ हानिचय घटाएं उत्तर उत्तर इंद्रकका व्यास प्रमाण हो है ॥ ४७२ ॥

इहांतैं आगैं श्रेणीवद्धनिका अवस्थानका स्वरूप निरूपै हैं;—

वासट्ठी सेढिगया पढमिंदे चउदिसासु पत्तेयं।
पडिदिसमेक्केक्कूणं अणुद्दिसाणुत्तरेकोत्ति ॥ ४७३ ॥

द्वाषष्टिः श्रेणिगतानि प्रथमेन्द्रे चतुर्दिशासु प्रत्येकं।
प्रतिदिशमेकैकोनं अनुदिशानुत्तरे एकमिति ॥ ४७३ ॥

अर्थ—पहला इंद्रक विषै च्यारि दिशानिविषै प्रत्येक श्रेणीवद्ध विमान वासठि हैं। ताकै चारौं दिशानिविषै दोयसै अठताळीस भए। यातैं ऊपरि द्वितीयादि पटलनिविषै एक एक दिशा प्रति एक एक श्रेणीवद्ध घटाएं ऊपरि ऊपरि विवक्षित श्रेणीवद्धनिका प्रमाण हो है सो पटल पटल प्रति च्यारि च्यारि घटते श्रेणीवद्ध जाननें। यावत् अनुदिश वा अनुत्तरविषै दिशा प्रति एक एक श्रेणीवद्ध अवशेष रहैं तावत् ऐसैं जाननां। इहां दक्षिण इंद्र उत्तर इंद्रका भेद करि श्रेणीवद्धनिका संकलित धन ल्यावनैंका विधान कहिए है। सौधर्म इंद्रकै प्रथम पटलविषै एक दिशासंबंधी श्रेणीवद्ध वासठि हैं अर दक्षिण इंद्रकै उत्तर दिशा विना तीन दिशासंबंधी श्रेणीवद्ध पाईए हैं तातैं तीन करि गुणें प्रथम पटलविषै एकसौ छियासी श्रेणीवद्ध भया सो यहु तौ आदि भया, अर पटल पटल प्रति तीन तीन श्रेणीवद्ध घटै हैं तातैं ऋण रूप चय तीन। वहुरि पटल इकतीस हैं तातैं गछ इकतीस। अव इहां हीन संकलनकों आश्रयकरि धन ल्याईए हैं। पदमेगेण विहीणं दुभाजिदं उत्तरेण संगुणिदं पभवजुदं पदगुणिदं पदगणिदं तं वियाणाहि। १। इस सूत्रकरि पद जो गछ सो इकतीस यामें एक घटाएं तीस याकों दोयका भाग दिएं पंद्रह इनकौं उत्तर जो चय तीन तीहकरि गुणें पैंताळीस इनकौं प्रभव जो आदि एकसौ छियासी तामैं इहां ऋण रूप चय है तातैं पैंताळीस घटाएं एकसौ इकताळीस रहे। इनकौं पद जो गछ इकत्तीस तीहकरि गुणें च्यारि हजार तीनसै इकहत्तरि सौधर्म्मकै श्रेणीवद्ध विमान भए। वहुरि इन विषै इकतीस पटल संवंधी इकतीस इंद्रक मिलाएं च्यारि हजार च्यारिसै दोय विमान हो हैं। वहुरि ऐसैं ही ईशान विषै उत्तर इन्द्रनिकै एक उत्तर दिशा संवंधी श्रेणीवद्ध पाईए है। अर ईसान उत्तर इन्द्र है तातैं आदि वासठि उत्तर एक गछ इकतीस करि संकलित धन ल्याएं ईशानकै चौदहसै सत्तावन श्रेणीवद्ध हो हैं। इहां ईशानविषै इन्द्रक न मिलावनें, जातै उत्तर इंद्रनिकैं उत्तर इन्द्र विमानका अभाव है। वहुरि सौधर्मकै एकदिशा संवंधी श्रेणीवद्ध वासठि तिनमें अपना गछ इकतीस घटाएं अवशेष इकतीस रहे सोई सनत्कुमार माहेन्द्रविषै प्रथम पटलविषै एकादिशा संवंधी श्रेणीवद्धनिका प्रमाण है। ऐसैं ही पूर्व पूर्व युगलके प्रथम पटलके एक दिशासंवंधी श्रेणीवद्धनिका प्रमाण विषै अपनां अपनां पटल प्रमाण गछ घटाएं उपरि उपरि युगलके प्रथम पटलके एक दिशा संवंधी श्रेणीवद्धनिका प्रमाण हो है। सो सौधर्म ईशानविषै वासठि ६२ सनत्कुमार माहेन्द्रविषै इकतीस ब्रह्म ब्रह्मोत्तरविषै चौईस लांतव कापिष्ठविषै वीस शुक्र महाशुक्रविषै अठारह शतार सहश्रारविषै सत्तरह आनतादि च्यारि कल्पविषै सोलह अधोग्रैवेयकविषै दश मध्य ग्रैवेयकविषै सात उपरिम ग्रैवेयकविषै च्यारि नवानुदिशविषै एक श्रेणीवद्ध विमान एक दिशासंवंधी जाननां। इस श्रेणीवद्धनिके प्रमाणकों दक्षिण इंद्र अपेक्षा करि तीन करि गुणें उत्तर इंद्र अपेक्षा करि एक करि

गुणें अर जहां दक्षिण उत्तर इंद्रकी विवक्षा नांहीं तहां चारि करि गुणें आदिका प्रमाण हो है। सो सनत्कुमारकै तरेणवै माहेन्द्रकै इकतीस ब्रह्मब्रह्मोत्तरविषै छिनवै लांतव कापिष्ठविषै असी शुक्र महाशुक्रविषै वहत्तरि सतार सहस्रारविषै अडसठि आनतादिविषै चौंसठि अधो ग्रैवेयकविषै चालीस मध्य ग्रैवेयकविषै अठाईस उपरिम ग्रैवेयकविषै सोलह नव अनुदिशविषै च्यारि ऐसें आदिका प्रमाण है। बहुरि उत्तर जो ऋणरूप चय सो सनतकुमारविषै तीन माहेन्द्रविषै एक उपरि सर्वत्र च्यारि प्रमाण हैं। बहुरि गछ अपनां अपनां पटल प्रमाण सनतकुमारादिविषैं क्रमतैं सात सात च्यारि दोय एक एक छह तीन तीन तीन एक एक है। ऐसें आदि उत्तर गछ जांनि तीह तीहका संकलित धन दक्षिण इंद्र या उत्तर इंद्रनिकैं ल्यावना। सो सनत्कुमारादिविषै क्रमतैं श्रेणीवद्धनिका प्रमाण ५८८।१९६।३६०।१५६।७२।६८।३२४।१०८।७२।३६।४ जाननें॥ ४७३॥

आगैं तहां प्रथम इन्द्रक संबंधी श्रेणीवद्धनिका अवस्थानका वर्णनकौं कहैं हैं;—

**उडुसेढीवद्धदलं सयंभुरमणुदहिपणिधिभागह्मि।**
**आइल्लतिण्णि दीवे तिण्णि समुद्दे य सेसा हु॥ ४७४॥**

ऋतुश्रेणीवद्धदलं स्वयंभुरमणोदधिप्रणिधिभागे।
आदिमत्रिपु द्वीपेपु त्रिपु समुद्रेपु च शेपं हि॥ ४७४॥

**अर्थ**—ऋतु इंद्रक संबंधी श्रेणीवद्धनिका एक दिशा संबंधी प्रमाण वासठि ताका आधा इकतीस श्रेणीवद्ध तौ स्वयंभूरमण नामा समुद्रका प्रणिधि भाग कहिए निकटवर्त्ती उपरिमभाग तिहविषै तिष्टै हैं। अवशेप अर्वाचीन तीन द्वीप अर तीन समुद्रनिविषै तिष्टैं हैं। **भावार्थ**—प्रथम पटलविषै एक दिशासंवंधी वासठि श्रेणीवद्ध हैं। तिनविषै इकतीस तौ स्वयंभूरमण समुद्र उपरि हैं पंद्रह स्वयंभूरमण द्वीप ऊपरि हैं। आठ तीहस्यौं लगता समुद्र उपरि हैं च्यारि तीहसौं लगता द्वीप उपरि हैं दोय तिहसौं लगता समुद्र उपरि हैं एक तीहसौं लगता द्वीप उपरि हैं। एक तीह सौं लगता अनेक द्वीप समुद्रनिके ऊपरि है॥ ४७४॥

आगैं प्रकीणकनिका स्वरूप वा प्रमाण कहैं हैं;—

**सेढीणं विच्चाले पुप्फपइण्णय इव ठ्ठियविमाणा।**
**होंति पइण्णइणामा सेढिंदयहीणरासिसमा॥ ४७५॥**

श्रेणीनां विचाले पुष्पप्रकीर्णकानि इव स्थितविमानानि।
भवंति प्रकीर्णकनामानि श्रेणींद्रकहीनराशिसमानि॥ ४७५॥

**अर्थ**—श्रेणीवद्ध विमाननिका विचाल कहिए अंतराल तिहविषै प्रकीर्णकानि पुष्पाणि इव कहिए वखेरेफूल जैसे पंक्तिरहित जहां तहां स्थित होइ तैसैं जे विमान पंक्तिरहित जहां तहां होइ ते प्रकीर्णक नामधारक जाननें। ते श्रेणीवद्ध वा इंद्रककरि हीन स्वकीय रासि समान जाननें। सो कैसैं? वत्तीस लाख अठाईस लाख इत्यादि सौधर्मादिकविषै विमाननिकी संख्या पूर्वें

कहीं है तामैं पूर्वोक्त श्रेणीवद्धनिका वार इंद्रनिका प्रमाण घटाएं जो जो राशि अवशेष रहै तिह समान प्रमाण धरैं सौधर्मादिकविषैं प्रकीर्णक विमान जाननें ॥ ४७५ ॥

आगैं दक्षिणअर उत्तर इंद्रनिके इंद्रक श्रेणीवद्ध प्रकीर्णकनिका विभागकौं दिखावैं हैं;—

उत्तरसेढीवद्धा वायव्वीसाणकोणगपइण्णा ।
उत्तरइंदणिवद्धा सेसा दक्खिणदिसिंदपडिवद्धा ॥ ४७६ ॥
उत्तरश्रेणीवद्धा वायव्येशानकोणगप्रकीर्णानि ।
उत्तरेन्द्रनिवद्धानि शेषाणि दक्षिणदिगींद्रप्रतिवद्धानि ॥ ४७६ ॥

अर्थ—उत्तरदिशासंबंधी श्रेणीवद्ध विमान वहुरि वायवी अर ईशान कोणकौं प्राप्त भए प्रकीर्णक विमान ए तौ उत्तरदिशाका इंद्रसंबंधी हैं। वहुरि अवशेष सर्व विमान दक्षिणदिशाका इंद्रसंबंधी है। अव इहां ऊर्द्ध लोककी रचनाविषैं स्वर्गादिकका अवस्थान वा इन्द्रकादिक विमाननिका स्वरूप मंद वुद्धिनिके समझनेके अर्थि कहिए हैं। मेरुतलतैं लगाय सात राजू ऊंचा उर्द्धलोक है। तीहविषै छह राजूकी उंचाईविषै सोलह स्वर्ग हैं। तहां मेरुतलतैं लगाय ड्योढ राजूकी उंचाईविषै तौ सौधर्म ईशान युगल है ताके इकतीस पटल हैं। पटल कहां कहिए? तिर्यकरूप वरोवरि क्षेत्रविषैं जहां विमान पाईए ताका नाम पटल है। तहां मेरुकी चूलिकातैं वालाग्रका अंतराल छोड़ि प्रथम पटल है। ताकै ऊपरि वीचिमैं असंख्यात योजन प्रमाण अंतरालविषैं अवकाश है। वहुरि तहां उपरि द्वितीय पटल है। ऐसैं ही वीचि वीचिमैं असंख्यात असंख्यात योजनका अवकाशरूप अंतराल छोड़ि उपरि उपरि पटल जाननें। इकतीसवां अंतका पटल ड्योढ़ राजू क्षेत्रका अंतविषैं पाईए है। वहुरि पटल पटल प्रति वीचिमें जो एक एक विमान पाईए तिनका नाम इंद्रक विमान है। सो मेरु उपरि तौ ऋतु इंद्रक है। ताकी सूधिविषै उपरि उपरि पटल पटल प्रति एक एक इंद्रक जाननां। वहुरि पटल पटल प्रति तिस इंद्रक विमानकी पूर्वादिक च्यारि दिशानिविषै जे पंक्तिवंध विमान पाईए तिनका नाम श्रेणीवद्ध विमान है। वहुरि पटल पटल प्रति तिन तिन श्रेणीवद्धनिके वीचि विदशानिविषै जे वखेरे हुए फूलकी ज्यों जहां तहां तिष्ठते विमान हैं तिनका नाम प्रकीर्णक विमान है ते ऐसैं जाननें। तहां पटल पटलसंवंधी उत्तरदिशाका श्रेणीवद्ध विमान वायवी ईशान विदिशाका प्रकीर्णक इनविषै तौ उत्तर इंद्र ईशान ताकी आज्ञा प्रवर्त्ते है। वहुरि अवशेष सर्व इंद्रक विमान अर तीन दिशाका श्रेणीवद्ध विमान अर नैऋति आग्नेय विदिशाका प्रकीर्णक इनविषैं दक्षिण इंद्र जो सौधर्म् ताकी आज्ञा प्रवर्त्ते है। तहां जिनि विमाननिविषै सौधर्म इंद्रकी आज्ञा प्रवर्त्ते हैं तिनके समूहका नाम सौधर्म स्वर्ग है। वहुरि जिन विमाननिविषैं ईशान इंद्रकी आज्ञा प्रवर्त्ते है तिनका समूहक नाम ईशान स्वर्ग है। जैसैं इहां एक नगरविषैं अपनें अपनें स्वामीके नामकी अपेक्षा वसतीनिका नाम हो है तैसैं जाननां। वहुरि ताकै ऊपरि ड्यौढ़ राजूकी उचाईविषै सनत्कुमार माहेन्द्र युगल है। तहां सात पटल हैं सो सौधर्म युगलके अंत पटलतैं असंख्यात योजन अंतराल छोड़ि प्रथम पटल है। ताकै ऊपरि ऊपरि तैसे ही अंतराल लिएं द्वितियादि पटल हैं। तिनविषैं इंद्रकादिक विमान पूर्वोक्त प्रकार जाननें, तहां उत्तर श्रेणीवद्ध वायवी

ईशान कोणके प्रकीर्णकनिविषै उत्तर इंद्र माहेन्द्रकी आज्ञा प्रवर्त्तै है। अवशेषविषै दक्षिण इंद्र सनत्कुमार ताकी आज्ञा प्रवर्त्तै है। तिनकी अपेक्षा तिन विमाननिका समूहका नाम सनत्कुमार स्वर्ग अर माहेन्द्र स्वर्ग है। वहुरि ऐसैं ही उपरि उपरि अन्य युगल वा तिनके पटल जाननें। वहुरि तिनविषै इंद्रकादिक विमान जाननें। उंचाई आदिकका प्रमाण पूर्वै गाथानि कर कहि आए हैं सो जाननां। तहां ब्रह्म ब्रह्मोत्तर युगल अर लांतव कापिष्ट युगल अर शुक्र महाशुक्र युगल अर शतार सहस्रार युगलनिविषै एक एक इंद्र ही है। तहां वसती अपेक्षा दोय नाम हैं इंद्रकी अपेक्षा नाहीं हैं। जैसैं इहां नगरविषैं एक स्वामी हो है तौ भी वसतीनिका जुदा नाम हो है। वहुरि आनत प्राणत युगल अर आरण अच्युत युगलनिविषै दोय दोय इंद्र हैं तहां आनत आरण दक्षिण इंद्र हैं, प्राणत अच्युत उत्तर इंद्र हैं तहां पूर्वोक्त विधान जाननां। वहुरि आरण अच्युतका अंततैं एक राजू क्षेत्रकी उचाईविषै कल्पातीत क्षेत्र है। तहां प्रथम ग्रैवेयक है, तहां अधो मध्य ऊर्द्ध ग्रैवेयकनिके तीन तीन पटल हैं। तहां अच्युतके अंततैं असंख्यात योजन अंतराल छोड़ि अधो ग्रैवेयकका प्रथम पटल है। वहुरि ताके ऊपरि तैसैं ही अंतराल छोड़ि उपरि उपरि पटल हैं। तिन पटलनिविषै इंद्रकादिक विमाननिका स्वरूप पूर्वोक्त जाननां। वहुरि ऊपरिम ग्रैवेयकनिका अंत पटलतैं असंख्यात योजन अंतराल छोड़ि नव अनुदिश विमान हैं। तहां वीचिमैं एक इंद्रक चार्यौं दिशानिविषैं च्यारि श्रेणीवद्ध च्यारि विदिशानिविषै च्यारि प्रकीर्णक विमान पाइए हैं। वहुरि तीहसौं असंख्यात योजन अंतराल छोड़ि उपरि पंच अनुत्तर विमान हैं, तहां वीचिमैं सर्वार्थसिद्धि नामा इंद्रक है। च्यारि विदिशानिविषै विजयादि च्यारि श्रेणीवद्ध हैं। वहुरि तीहसौं वारह योजन अंतराल छोड़ि सिद्धक्षेत्र हैं। ऐसैं उर्द्धलोकको रचना जाननी। इहां पटलनिका ऊर्द्ध अंतरालविषै वा विमाननिके वीचि तिर्यक अंतरालविषै सर्वत्र अवकाश जाननां, नरकवत् पृथ्वी नाहीं है। या प्रकार मंद बुद्धीनिके समझनेंके अर्थि पूर्वैं जो कथन कह्या था ताकौं विस्तार करि कह्या॥ ४७६॥

अब इंद्रकादिकनिका व्यासकौं निरूपैं हैं;—

इंदयसेढीवद्धप्पइण्णयाणं कमेण वित्थारा।
संखेज्जमसंखेज्जं उभयं चय जोयणाणं तु॥ ४७७॥

इंद्रकश्रेणीवद्धप्रकीर्णकानां क्रमेण विस्ताराः।
संख्येयं असंख्येयं उभयं च योजनानां तु॥ ४७७॥

**अर्थ**—इंद्रक श्रेणीवद्ध प्रकीर्णक विमाननिका क्रमतैं विस्तार संख्यात असंख्यात उभययोजन प्रमाण है। **भावार्थ**—इंद्रक विमान सर्व संख्यात योजन प्रमाण विस्तार धरै हैं। श्रेणीवद्ध विमान सर्व असंख्यात योजन विस्तार धरै हैं। प्रकीर्णकविमान केई संख्यात केई असंख्यात योजन विस्तारकौं धरें हैं॥ ४७७॥

आगैं सौधर्मादिकनिविषै संख्यात असंख्यात योजन विस्तार धरैं विमाननिकी संख्याकौं दोय गाथानि करि कहैं हैं;—

कप्पेसु रासिपंचमभागं संखेज्जवित्थडा होंति ।
तत्तो तिण्णट्ठारस सत्तरसेक्केक्कयं कमसो ॥ ४७८ ॥
कल्पेषु राशिपंचमभागं संख्येयविस्तारा भवंति ।
ततः त्रीण्यष्टादश सप्तदशैकमेकं क्रमशः ॥ ४७८ ॥

अर्थ—कल्पनिविषैं अपनां अपनां बत्तीस लाख अठाईस लाख इत्यादि विमाननिका प्रमाणरूप राशि ताका पांचवां भाग प्रमाण विमान संख्यात योजन विस्तारकों धरैं हैं । जैसे सौधर्म स्वर्गविषै बत्तीस लाख विमान ताकां पांचवां भाग छह लाख चालीस हजार विमान संख्यात योजन विस्तार धरैं हैं । ऐसैं ही अन्यत्र जाननां । तातैं परैं अधो ग्रैवेयकविषैं तीन मध्य ग्रैवेयकविषैं अठारह उपरिम ग्रैवेयकविषै सतरह नवानुदिशविषैं एक पंचानुत्तरविषैं एक विमान संख्यात योजन विस्तार धरैं हैं ॥ ४७८ ॥

सगसगसंखेज्जूणा सगसगरासी असंखवासगया ।
अहवा पंचमभागं चउगुणिदे होंति कप्पेसु ॥ ४७९ ॥
स्वकस्वकसंख्येयोनाः स्वकस्वकराशयः असंख्यव्यासगताः ।
अथवा पंचमभागं चतुर्गुणिते भवंति कल्पेषु ॥ ४७९ ॥

अर्थ—स्वकीयस्वकीयसंख्यात योजन व्यास धरैं विमाननिकी संख्याकरि हीन जो अपनां अपनां बत्तीस लाख विमाननिका प्रमाणरूप राशि सो असंख्यात योजन विस्तार धरे हैं जैसैं सौधर्मविषै बत्तीस लाख राशिमैंसौं संख्यात व्यास विमानकी संख्या छह लाख चालीस हजार घटाएं अवशेष पचीस लाख साठि हजार विमान असंख्यात योजन प्रमाण विस्तार धरैं है । ऐसैं ही अन्यत्र जाननां । अथवा राशिका पांचवां भागकौं चौगुणा किएं कल्पनिविषैं असंख्यात योजन विस्तार धरैं विमाननिकी संख्या हो है । जैसे सौधर्मविषैं राशि बत्तीस लाखका पांचवां भाग छह लाख चालीस हजार ताका चौगुणां पचीस लाख साठि हजार विमान असंख्यात योजन विस्तार धरैं हैं । ऐसैं ही अन्यत्र जाननां ॥ ४७९ ॥

आगैं तिन विमाननिका वाहुल्य कहैं हैं;—

छज्जुगल सेसकप्पे तित्तिसु सेसे विमाणतलवहलं ।
इगिवीसेयारसयं णवणउदिरिणकमा होंति ॥ ४८० ॥
षड्युगलेषु शेषकल्पेषु त्रित्रिषु शेषे विमानतलबहलं ।
एकविंशत्येकादशशतं नवनवतिऋणक्रमा भवंति ॥ ४८० ॥

अर्थ—सौधर्म युगलादिक छह युगलनिके छह स्थान अर अवशेष आनतादि कल्पनिका एक स्थान अर तीन तीन अधो ग्रैवेयकादिकनिका एक एक स्थान तिनकै ग्रैवेयकानिके तीन स्थान अर अवशेष अनुदिश अनुत्तरका एक स्थान ऐसैं इन ग्यारह स्थानकनिविषै विमानतल वाहुल्य कहिए विमाननिकी भूमिकी मोटाई सो आदिविषैं इकईस अधिक ग्यारहसै योजन प्रमाण अर ऊपरि सर्वत्र क्रमतैं निण्याणवै निन्याणवै योजन घाटि प्रमाण है । ११२१।१०२२।९२३।८२४।७२५।६२६।५२७।

४२८।३२९।२३०।१३१ । भावार्थ—ऐसैं मोटाई प्रमाणकौं धरैं विमाननिकी भूमि हैं । ताकै ऊपरि नगर मंदरादि रचना है ॥ ४८० ॥

आगैं तिन विमाननिका वर्णका अनुक्रमकौं वर्णै हैं;—

दोद्दो चउचउकप्पे पंचयवण्णा हु किण्णवज्जा हु ।
णीलूणा रत्तूणा विमाणवण्णा तदा सुक्का ॥ ४८१ ॥

द्वयोः द्वयोः चतुश्चतुःकल्पेषु पंचकवर्णा हि कृष्णवर्जाः हि ।
नीलोनाः रक्तोनाः विमानवर्णा ततः शुक्लाः ॥ ४८१ ॥

अर्थ—दोय दोय च्यारि च्यारि कल्पनिविषैं क्रमतैं पंचवर्ण कृष्णवर्जित नीलवर्जित रक्तवर्जित विमाननिके वर्ण हैं । तातैं ऊपरि शुक्लवर्ण ही है । भावार्थ—सौधर्मईशानविषैं विमाननिका पंच वर्ण है । सनत्कुमार माहेन्द्रविषै कृष्ण विना च्यारि वर्ण है । ब्रह्मादि च्यारि कल्पनिविषैं नील भी नांहीं तातैं तीन वर्ण हैं । शुक्रादि च्यारि कल्पनिविषैं रक्त भी नाहीं हैं । तातैं दोय वर्ण है । तातैं आनतादि अनुत्तर पर्यंत सर्वनिविषैं एक शुक्ल वर्ण ही है । ऐसैं विमाननिका रंग जाननां ॥ ४८१ ॥

आगैं विमाननिका आधार स्थानकौं निरूपैं हैं;—

दुसु दुसु अट्ठसु कप्पे जलवादुभये पइट्ठियविमाणा ।
सेसविमाणा सव्वे आगासपइट्ठया होंति ॥ ४८२ ॥

द्वयोः द्वयोः अष्टसु कल्पेषु जलवातोभये प्रतिष्ठितविमानाः ।
शेषविमानाः सर्वे आकाशप्रतिष्ठिता भवंति ॥ ४८२ ॥

अर्थ—दोय दोय आठ कल्पनिविषैं जल वात उभय प्रतिष्ठित विमान हैं । अवशेष विमान सर्व आकाश प्रतिष्ठित हैं । भावार्थ—सौधर्म युगलविषै तौ जलकै आधार विमान हैं जलरूप पुद्गल स्कंधनिका आधार करि तिनकै ऊपरि विमान तिष्ठै हैं । बहुरि सनत्कुमार युगलविषैं पवनकै आधार विमान हैं पवनरूप पुद्गल स्कंधनिका आधार करि तिनिकै ऊपरि विमान तिष्ठै हैं । बहुरि ब्रह्मादि आठ कल्पनिविषै विमान जल अर पवन दोऊकै आधार है । जलरूप वा पवनरूप परणए पुद्गल स्कंधनिका आधार करि तिनकै ऊपरि विमान तिष्ठैं हैं । बहुरि आनतादि अनुत्तरपर्यंतविषैं आकाशकै आधारि सर्व विमान हैं । पुद्गल स्कंधनिका आधारकी अपेक्षा रहित आकाशहीकै आधार तिष्ठै हैं ॥ ४८२ ॥

अब इंद्र जहां तिष्ठैं हैं तिस विमानकौं कहैं हैं;—

छज्जुगलसेसकप्पे अट्ठारसमम्हि सेढिबद्धम्हि ।
दोहीणकमं दक्खिणउत्तरभागम्हि देविंदा ॥ ४८३ ॥

षड्युगलशेषकल्पेषु अष्टादशमे श्रेणीबद्धे ।
द्विहीनक्रमं दक्षिणोत्तरभागे देवेंद्राः ॥ ४८३ ॥

अर्थ—छह युगल अर अवशेष कल्प इन सात स्थानकविषैं अपनां अपनां अंतका पटल संबंधी अठारह्वां श्रेणीबद्धविषैं अर दोय दोय घाटि क्रम लिएं श्रेणीबद्धविषैं दक्षिण दिशाका भागविषैं दक्षिण

इंद्र अर उत्तर दिशाका भागविषै उत्तर इंद्र तिष्टै है। भावार्थ—सौधर्म युगलका इकतीसवां अंत पटलविषैं इंद्रक विमानतैं लगता श्रेणीबद्धतैं लगाय अठारव्हां दक्षिणदिशाका श्रेणीबद्ध विमानविषै तौ सौधर्म इंद्र वसै है। अर उत्तर दिशाका श्रेणीबद्ध विमानविषै ईशान इंद्र वसै है। बहुरि सनत्कुमार युगलका अंतका पटलविषैं सोलव्हां दक्षिण श्रेणीबद्धविषै सनत्कुमार इंद्र वसै हैं। उत्तर श्रेणी बद्धविषै माहेन्द्र इंद्र वसै है। बहुरि ब्रह्मयुगलका अंतपटलका चौंदव्हां दक्षिण श्रेणीबद्धविषै ब्रह्मइन्द्र वसै है। बहुरि लांतव युगलका अंतपटलका बारव्हां उत्तर श्रेणीबद्धविषै लांतव इंद्र वसै हैं। बहुरि शुक्र युगलका अंतपटलका दशवां दक्षिण श्रेणीबद्धविषै शुक्र इंद्र वसै है। बहुरि शतार युगलका अंतपटलका आठवां उत्तर श्रेणीबद्धविषै शतार इंद्र वसै है। बहुरि आनत युगलका अंतका पटलका छठां दक्षिण श्रेणीबद्धविषै आरण इंद्र अर उत्तर श्रेणीबद्धविषै अच्युत इंद्र वसै है॥ ४८३॥

आगैं तिन विमाननिके नाम दोय गाथानिकरि कहैं हैं;—

**इंदट्ठियं विमाणं सगसगकप्पं तु तस्स चउपासे।**
**वेलुरियरजदसोकं मिसक्कसारं तु पुव्वादी॥ ४८४॥**

इंद्रस्थितं विमानं स्वकस्वककल्पं तु तस्य चतुःपार्श्वे।
वैडूर्यरजताशोकं मृपत्कसारं तु पूर्वादिषु॥ ४८४॥

अर्थ—इंद्र स्थित कहिए जिस विमानविषै इंद्र वसै है सो विमान स्वकस्वकल्पं कहिए अपने स्वर्गकै नाम है जो अपनां स्वर्गका नाम सोई तिस विमानका नाम है। जैसैं सौधर्म इंद्र जहां वसै है तिस विमानका नाम सौधर्म है। ऐसैं ही अन्यत्र जाननां। बहुरि तिस इंद्र स्थित विमानका च्यारौं पार्श्वनिविषै वैडूर्य १ रजत १ अशोक १ मृपत्कसार १ ऐसैं नाम धरैं च्यारि विमान पूर्वादि दिशानिविषैं तिष्टैं हैं। सो यहु विधान सर्व दक्षिण इंद्रनिकै जाननां॥ ४८४॥

**रुचकं मंदरसोकं सत्तच्छदणामयं विमाणं तु।**
**सव्वुत्तरइंदाणं विमाणपासेसु होंति कमे॥ ४८५॥**

रुचकं मंदराशोकं सप्तच्छदनामकं विमानं तु।
सर्वोत्तरेन्द्राणां विमानपार्श्वेषु भवंति क्रमेण॥ ४८५॥

अर्थ—रुचक १ मंदर १ अशोक १ सप्तच्छद ऐसैं नाम धरैं च्यारि विमान सर्व उत्तर इंद्रनिका विमानका च्यार्यौं पार्श्वनिविषै क्रमकरि पूर्वादि दिशानिविषैं जाननें॥ ४८५॥

आगैं सौधर्मादि देवनिके मुकुटके चिन्हनिकौं दोय गाथानिकरि कहैं हैं;—

**सोहम्मादीवारस साणदआरणगजुगवि कमा।**
**देवाण मउलचिह्नं वराहमयमहिसमच्छावि॥ ४८६॥**

सौधर्मादिद्वादशसु आनतारणकयुगेपि क्रमात्।
देवानां मौलिचिन्हं वराहमृगमहिषमत्स्या अपि॥ ४८६॥

अर्थ—सौधर्मादि बारह कल्पनिकै बारह स्थान अर आनत युगलका एक स्थान अर आरणयुगलका एक स्थान ऐसैं इन चौंदह स्थानकनिविषै अनुक्रमतैं देवनिकै मुकुटविषै ए चिन्ह हैं। सूअर १ हिरण १ भैंसा १ मांछला १॥ ४८६॥

कुम्मो दद्दुरतुरया तो कुंजर चंद सप्प खग्गी य।
छगलो वसहो तत्तो चोद्दसमो होदि कप्पतरू ॥ ४८७ ॥
कूर्मो दर्दुरस्तुरगस्ततः कुंजरः चंद्रः सर्पः खड्गी च।
छगलो वृषभः ततः चतुर्दशो भवति कल्पतरुः ॥ ४८७ ॥

अर्थ—काछिवो १ मींडक १ घोड़ो १ हाथी १ चंद्रमा १ सर्प १ खड्गी १ छेलो १ वैल १ तहां पीछैं चौदहौं कल्पवृक्ष १ इनके आकार देवनिके मुकुटविषै पाईए हैं ॥ ४८७ ॥

अव इंद्रनिका नगरका संस्थान अर विस्तारकौं दोय गाथानि करि कहैं हैं;—

सोहम्मादिचउक्के जुम्मचउक्के य सेसकप्पे य।
सगदेविजुदिंदाणं णयराणि हवंति णवयपदे ॥ ४८८ ॥
सौधर्मादिचतुष्के युग्मचतुष्के च शेषकल्पे च।
स्वकदेवीयुतेंद्राणां नगराणि भवंति नवकपदे ॥ ४८८ ॥

अर्थ—सौधर्मादि च्यारि कल्पनिके च्यारि स्थान ब्रह्मयुगल आदि च्यारि युगलनिके च्यारि स्थान आनतादि अवशेप कल्पनिका एक स्थान इन नव स्थानकनिविषै अपनी अपनी देवांगना संयुक्त जे इंद्र तिनके नगर हैं। इहां आनतादि च्यारि कल्पनिविषैं प्रत्येक वीस हजार योजन नगर व्यासकी समानतातैं एक स्थान कह्या है ॥ ४८८ ॥

चुलसीदीय असीदी विहत्तरी सत्तरीय जोयणगा।
जावय वीससहस्सं समचउरस्साणि रम्माणि ॥ ४८९ ॥
चतुरशीतिः अशीतिः द्वासप्ततिः सप्ततिश्च योजनानि।
यावद्विंशसहस्रं समचतुरस्राणि रम्याणि ॥ ४८९ ॥

अर्थ—चौरासी असी बहत्तरि सत्तरि हजार अर यावत वीस हजार होइ तावत् दश दश हजार घाटि नगरनिका विस्तार है। भावार्थ—सौधर्मविषै चौरासी हजार ईशानविषै असी हजार सनत्कुमार-विषै बहत्तरि हजार माहिन्द्रविषै सत्तरि हजार, ब्रह्मयुगलविषै साठि हजार, लांतव युगलविषै पचास हजार, शुक्रयुग्मविषै चालीस हजार, सतार युगलविषै तीस हजार, आनतादि च्यारि कल्पनिविषै प्रत्येक वीस वीस हजार योजन प्रमाण इंद्रनिके नगरनिका विस्तार जाननां। वहुरि ते नगर सम-चतुरस्र हैं जितनें लंबे तितनें ही चौड़े ऐसे चौकोर हैं अर रमणीक हैं ॥ ४८९ ॥

आगैं कहे नगर ताका प्रकारकी उचाईका स्वरूप कहैं हैं;—

छज्जुगलसेसकप्पे तप्पायारुदय जोयणं तिसदं।
पण्णासूणं पंचम तीसूणं उवरि वीसूणं ॥ ४९० ॥
पट्युगलशेपकल्पे तत्प्राकारोदयः योजनं त्रिशतं।
पंचाशदूनं पंचमे त्रिंशदूनं उपरि विंशोनम् ॥ ४९० ॥

अर्थ—सौधर्म युगलादिक छह युगलनिके छह स्थान अर अवशेप च्यारि कल्पनिका एक स्थान इन सात स्थानकनिविषै अनुक्रमतैं तिन इंद्रनिके नगरनिका प्राकार जो कोट ताकी उचा-

ईका प्रमाण आदिविषैं तीनसैं ऊपरि पचास घाटि पांचवैं स्थान तीस घाटि ऊपरि बीस घाटि योजन प्रमाण है। भावार्थ—सौधर्म युगलविषै तीनसैं सनत्कुमार युग्मविषै अढाईसैं ब्रह्मयुग्मविषै दोयसैं लांतव युग्मविषै ड्योढसैं शुक्र युग्मविषै एकसौ बीस सतार युग्मविषै एकसौ आनत चतुष्कविषै असी योजन प्रमाण तिन इंद्रनिके नगरनिकी कोटकी उचाई है॥ ४९० ॥

आगैं तिन प्राकारनिका गाध अर विस्तार कहै हैं;—

**गाढो वित्थारो विय पण्णासं दलकमं तु पंचमगे।**
**चत्तारि तियं छट्ठे चरिमे दुगमद्धसंजुत्तं॥ ४९१॥**

गाधो विस्तारः अपि पंचाशत् दलक्रमस्तु पंचमके।
चत्वारि त्रीणि षष्ठे चरमे द्विकमर्धसंयुक्तम्॥ ४९१॥

**अर्थ**—गाध अर विस्तार दोऊ ही पचास अर अर्द्ध अर्द्ध क्रम अर पांचवैं च्यारि छठैं तीन अंतविषैं आधा सहित दोय दोय योजन प्रमाण है। **भावार्थ**—भूमिविषै उचाईका नाम गाध है इहां ताहीका नाम नींव कहिए हैं। बहुरि चौड़ाईका नाम विस्तार है इहां ताहीका नाम रद्दा कहिए हैं। तिन कोटनिकौ इन दोऊनिका प्रमाण समान है तातैं एकठा कहिए हैं। सो कोटनिक गाध अर विस्तार पूर्वोक्त सौधर्म युग्मादि सातस्थानकनिविषैं क्रमतैं पचास पच्चीस साडाबारा सवाछै च्यारि तीन अढाई योजन प्रमाण है॥ ४९१॥

आगैं तिन प्राकारनिका गोपुरनिका स्वरूप दोय गाथानिकरि कहैं हैं;—

**पडिदिस गोउरसंखा तेसिं उदओवि चउतिदोण्णिसया।**
**तत्तो दुगुणासीदी वीसविहीणं तदो होदि॥ ४९२॥**

प्रतिदिशं गोपुरसंख्या तेषां उदयोपि चतुस्त्रिद्विशतानि।
ततः द्विगुणाशीतिः विंशतिविहीनः ततः भवति॥ ४९२॥

**अर्थ**—दिशा दिशा प्रति तिन कोटनिकैं गोपुर कहिए द्वार तिनकी संख्या अर तिनका उदय भी च्यारि तीन दोयसै तहां पीछैं दूणा असी तहां पीछैं बीस घाटि है। **भावार्थ**—तिन इन्द्र नगरिके कोटके दिशा दिशा प्रति द्वारनिका प्रमाण अर तिन द्वारनिकी उचाईका योजननिका प्रमाण पूर्वोक्त सौधर्म्म युग्मादि सात स्थाननिविषै अनुक्रमतैं च्यारिसैं तीनसै दोयसै एकसौ साठि एकसौ चालिस एकसौ बीस एकसौ जाननां॥ ४९२॥

**गोउरवासो कमसो सयजोयणगाणि तिसु य दसहीणं।**
**वीसूणं पंचमगे तत्तो सव्वत्थ दसहीणं॥ ४९३॥**

गोपुरव्यासः क्रमशः शतयोजनानि त्रिषु च दशहीनं।
विंशोनं पंचमके ततः सर्वत्र दशहीनम्॥ ४९३॥

**अर्थ**—गोपुरनिका व्यास क्रमतैं सौ योजन तीन विषै दश घाटि पांचवै स्थान बीस घाटि तातैं परे सर्वत्र दश घाटि योजन प्रमाण है। **भावार्थ**—तिन गोपुरनिका व्यास जो चौड़ाईका

प्रमाण सो पूर्वोक्त सातस्थाननिविषै क्रमतैं सौ निवै असी सत्तरि पचास चालीस तीस योजन प्रमाण है ॥ ४९३ ॥

आगैं पूर्वोक्त नवस्थाननिका आश्रयकरि सामानिक तनुरक्षक अनीक देवनिका प्रमाण दोय गाथानिकरि कहै हैं;—

**णयरपदे तस्संखा समाणिया चउगुणा य तणुरक्खा ।**
**वसहतुरंगरथेभपदातीगंधव्वणच्चणी चेदि ॥ ४९४ ॥**

नगरपदे तत्संख्या सामानिका चतुर्गुणाश्च तनुरक्षाः ।
वृषभतुरंगरथेभपदातिगंधर्वनर्तकी चेति ॥ ४९४ ॥

**अर्थ**—नगरव्यास वर्णनविषै जे स्थान कहे तिनविषै नगर व्याससमान सामानिक देवनिकी संख्या है सो सोहम्मादिचउके इत्यादि गाथाकरि कह्या नगरनिका नव स्थान तिनविषै चुलसीदि इत्यादि गाथाकरि तिन नगरनिका जो विस्तार कह्या तीह संख्याकै समान ही सामानिक देवनिकी संख्या है । **भावार्थ**—सौधर्म्मादि च्यारि कल्पनिके च्यारिस्थान ब्रह्मयुग्मादि च्यारि युग्मनिके च्यारि स्थान आनतादि च्यारि कल्पनिका एक स्थान इन नव स्थानकनिविषै अनुक्रमतैं चौरासी असी बहत्तरि सत्तरि साठि पचास चालीस तीस वीस हजार सामानिक देवनिकी संख्या जाननां । बहुरि सो संख्या चौगुणी किएं अंग रक्षकनिकी संख्या हो है । जेता जेता सामानिक देवनिका प्रमाण है तातैं चौगुणा अंगरक्षक देवनिका प्रमाण है । बहुरि वृषभ १ घोड़ा १ रथ १ हाथी १ पयादा १ गंधर्व १ नर्त्तकी १ याप्रकार ॥ ४९४ ॥

**सत्तेव य आणीया पत्तेयं सत्तसत्तकक्खजुदा ।**
**पढमं ससमाणसम तद्दुगुणं चरिमकक्खोत्ति ॥ ४९५ ॥**

सप्तैव च आनीकानि प्रत्येकं सप्तसप्तकक्षयुतानि ।
प्रथमः स्वसमानसमः तद्द्विगुणं चरमकक्षांतम् ॥ ४९५ ॥

**अर्थ**—सात ही आनीक कहिए सेना हैं । सो एक एक आनीक सात कक्षकरि संयुक्त है । तहां प्रथम कक्ष तौ अपनां अपनां सामानिक देवनिका प्रमाणकै समान है । बहुरि तातैं ऊपरि द्वितीयादिकक्ष दूणा दूणा क्रम लिएं चरमकक्ष पर्यंत है । **भावार्थ**—इन्द्रनिकै वृषभादि सात प्रकार सेना हैं । एक एक सेनाविषै सात सात कक्ष हैं जुदी जुदी फौजका नाम कक्ष है सो पहली कक्षविषै तौ वृषभादिकका प्रमाण जितनां जितनां सामानिक देवनिका प्रमाण कह्या तितनां तितनां चौरासी हजार आदि जाननां । अर द्वितीयादि कक्षविषै अंतका सातवां कक्षपर्यंत तीह प्रथम कक्षतैं दूणा दूणा वृषभादिकनिका प्रमाण जाननां । सो पूर्वैं भवनवासी देवनिका वर्णन विषै सेनाका करण सूत्रादिकरि वर्णन किया है । तैसैं इहां भी यथा संभव जाननां ॥ ४९५ ॥

आगैं दक्षिण इन्द्र उत्तर इन्द्रनिकै आनीक के जु नायक तिनकौं दोय गाथानिकरि कहैं हैं;—

दामेट्ठी हरिदामा मादलि अइरावदा महत्तरया।
वाउअरिट्ठजसा णीलंजणया दक्खिणिंदाणं ॥ ४९६ ॥
दामयष्टिः हरिदामा मातलिः ऐरावतो महत्तरः।
वायुः अरिष्टयशाः नीलांजना दक्षिणेन्द्राणाम् ॥ ४९६ ॥

अर्थ—वृषभादिक सेनानिके अनुक्रमतें दामयष्टि१ हरिदामा१ मातलि १ऐरावत १वायु १ अरिष्टयसा ए छह तौ पुरुष वेदी देव महत्तर कहिए सबनिमें प्रधान नायक हैं। बहुरि नर्तकी सेनाकी नीलांजना नाम स्त्री सो महत्तरी है ऐसें सर्व सौधर्मादि दक्षिण इन्द्रनके सेनाका प्रधान तिनके नाम जाननें ॥ ४९६ ॥

महदामेट्ठि मिदगदी रहमंथण पुप्फयंत इदि कमसो।
सलघुपरक्कमगीदरदि महासुसेणा य उत्तरिंदाणं ॥ ४९७ ॥
महदामयष्टिः अमितगतिः रथमंथनः पुष्पदंत इति क्रमशः।
सलघुपराक्रमो गीतरतिः महासुसेना चोत्तरेंद्राणाम् ॥ ४९७ ॥

अर्थ—महादामयष्टि १ अमितगति १ रथमथन १ पुष्पदंत १ सलघुपराक्रम १ गीतरति १ ए तौ वृषभादि सेनाविषै क्रमकरि पुरुषवेदी देव प्रधान हैं। बहुरि नर्तकी सेना विषै महासेना नाम स्त्री प्रधान है। ए ईशानादि उत्तर इन्द्रनिकै सेनाविषै मुख्य तिनके नाम जाननें ॥ ४९७ ॥

आगें तिन पारिषदनिकी संख्या कहैं हैं;—

बारस चोद्दस सोलस सहस्स अब्भंतरादिपरिसाओ।
तत्थ सहस्सदुउण्णा दुसहस्सादो हु अद्धद्धं ॥ ४९८ ॥
द्वादश चतुर्दशषोडशसहस्राणि अभ्यंतरादिपारिषदाः।
तत्र सहस्रघूना द्विसहस्रात् हि अर्धार्धम् ॥ ४९८ ॥

अर्थ—पूर्वोक्त नव स्थानकनिविषै आदिविषै तौ अभ्यंतर आदि पारिषदनिकी संख्या क्रमतें बारह चौदह सोलह हजार प्रमाण है। तातें उपरि दोय दोय हजार घाटि है। बहुरि दोय हजारतें उपरि आधा आधा अनुक्रम जाननां। भावार्थ—सौधर्मादि चारि कल्पनिका च्यारि स्थान ब्रह्म युगलादि च्यारि युगलनिका च्यारि स्थान आनतादि च्यारि कल्पनिका एक स्थान ऐसें नवस्थानकनिविषै प्रथम स्थानकविषै अभ्यंतर पारिषद बारह हजार मध्य परिषद चौदह हजार बाह्य परिषद सोलह हजार हैं। दूसरै स्थानि अभ्यंतरादि परिषद क्रमतें दश बारह चौदह हजार हैं। तीसरै स्थानि आठि दश बारह हजार हैं। चौथे स्थानि छह आठ दश हजार हैं। पांचवें स्थानि च्यारि छह आठ हजार हैं। छठै स्थानि दोय च्यारि छह हजार हैं। सातवें स्थानि एक दोय च्यारि हजार हैं। आठवें स्थानि पांचसै एकहजार दोय हजार हैं। नवें स्थानि अढाईसै पांचसै एकहजार हैं ॥ ४९८ ॥

आगें और प्राकारनिकी संख्या अर तिनका अंतरालका प्रमाण कहैं हैं;—

णयराणं विदियादीपायारा पंचमोत्ति तेरसयं ।
तेसट्ठि अडकदी चुलसीदी लक्खाणि गंतूणं ॥ ४९९ ॥
नगराणां द्वितीयादिप्राकारा पंचमातं त्रयोदश ।
त्रिषष्टिः अष्टकृतिः चतुरशीतिः लक्षाणि गत्वा ॥ ४९९ ॥

अर्थ—नगरानिके द्वितीयादि पंचम पर्यंत प्राकार तेरह त्रेसठि आठका वर्ग चौरासी लाख योजन जाइ जाइ पाइए हैं । भावार्थ—इन्द्रका जु नगर ताकै पांच कोट हैं। तिनि कोटिनिकै वीचि च्यारि अंतराल पहला सों दूसरा कोटवीचि प्रथम अंतर तेरह लाख योजन है । वहुरि दूसरा तीसरा वींचि त्रेसठि लाख योजन है । वहुरि तीसरा चौथा वींचि चौसठि लाख योजन है । वहुरि चौथा पांचवां वीचि चौरासी लाख योजन चौथा अंतराल है ॥ ४९९ ॥

आगैं तिन अंतरालनिविषै तिष्ठते देवनिकों दोय गाथानिकरि कहैं हैं;—

सेण्णावदितणुरक्खा पढमे विदियंतरे दु परिसतयं ।
सामाणियदेवा पुण तदिए णिवसंति तुरिए दु ॥ ५०० ॥
सेनापतितनुरक्षाः प्रथमे द्वितीयांतरे तु पारिषदत्रयम् ।
सामानिकदेवाः पुनः तृतीये निवसंति तुरीये तु ॥ ५०० ॥

अर्थ—सेनाके नायक अर अंग रक्षक देव प्रथम अंतरालविषै वसै हैं । वहुरि दूसरा अंतरालविषै तीन जातिका पारिषद देव वसै हैं । वहुरि तीसरा अंतरालविषै सामानिक देव वसैं हैं ॥५०० ॥

वहुरि चौथा अंतरालविषै कहैं हैं;—

आरोहियाभियोग्गगकिब्भिसियादी य जोग्गपासादे ।
गमिय तदो लक्खदलं णंदणमिदि तव्विसेसणामाणि ॥ ५०१ ॥
आरोहिकाभियोग्यककिल्विषिकादयश्च योग्यप्रासादे ।
गत्वा ततः लक्षदलं नंदनमिति तद्विशेषनामानि ॥ ५०१ ॥

अथ—वृषभादि ऊपरि चढनेंवाले आरोहक वहुरि आभियोग्य वहुरि किल्विषिक आदि देव अपनें अपनें योग्य मंदरनिविषै वसै हैं । वहुरि तीह पांचवां कोटतै परै आध लाख योजन जाइ नंदन वन है । आनन्दकारी है तातैं तिन वननिकों सामान्यपनें नंदन कहे । इनका विशेष नाम आगैं कहिसी ॥ ५०१ ॥

कैसै सो कहैं हैं;—

सुरपुरवहिं असोयं सत्तच्छदचंपचूदवणखण्डा ।
पउमद्दहसममाणा पत्तेयं चेत्तरुक्खजुदा ॥ ५०२ ॥
सुरपुरवहिः अशोकं सप्तच्छदचंपचूतवनखंडाः ।
पद्महृदसममानाः प्रत्येकं चैत्यवृक्षयुताः ॥ ५०२ ॥

अर्थ—देवनिका नगरतैं बारैं पूर्वादि दिशानिविषै अशोक वनखंड बहुरि सप्तछद वनखंड बहुरि चंपक वनखंड बहुरि आम्र वनखंड हैं। ते एक एक वनखंड पद्म नामा द्रह समान प्रमाण धरै हैं। हजार योजन लंबे अर पांचसै योजन चौड़े हैं। बहुरि एक एक चैत्यवृक्षकरि संयुक्त हैं॥ ५०२॥

आगैं तिन वननिकै मध्य तिष्टते चैत्यवृक्षनिका स्वरूपकौं निरूपण करता संता तिन चैत्यनिकौं नमस्कार करै हैं;—

चउचेत्तदुमा जंबूमाणा कप्पेसु ताण चउपासे।
पल्लंकगजिणपडिमा पत्तेयं ताणि वंदामि॥ ५०३॥

चतुश्चैत्यद्रुमाः जंबूमानाः कल्पेषु तेषां चतुःपार्श्वेषु।
पल्यंकगजिनप्रतिमाः प्रत्येकं तानि वंदामि॥ ५०३

अर्थ—सौधर्म्मादि कल्पनिविषै चारौ वनसंबंधी च्यारि चैत्य वृक्ष हैं। ते एक एक जंबूवृक्ष समान प्रमाण धरै हैं। जंबू वृक्षका उचाई आदिकका प्रमाण आगैं कहैंगे तिह समान ए जाननें। बहुरि तिन एक एक चैत्य वृक्षनिके चारौं पार्श्वनिविषै पल्यंक आसन जिन प्रतिमा विराजै हैं। तिनकौं मैं वंदौं हौं॥ ५०३।

अब लोकपालनिका नगरनिका स्वरूप कहैं हैं;—

तत्तो वहुजोयणयं गंतूण दिसासु लोगवालाणं।
णयराणि अजुदसंगुणपणघणवित्थारजुत्ताणि॥ ५०४॥

ततो बहुयोजनकं गत्वा दिशासु लोकपालानाम्।
नगराणि अयुतसंगुणपंचघनविस्तारयुक्तानि॥ ५०४॥

अर्थ—तिन वनखंडनितैं परैं बहुत योजन जाइ पूर्वादिदिशानिविषै लोकपालनिके नगर हैं। ते अयुत जो दशहजार तीहकरि गुण्या हुआ पंच घन कहिए एकसौ पच्चीस ताका साढा बारा लाख योजन प्रमाण विस्तारकरि संयुक्त हैं।॥ ५०४॥

आगैं तहां ही गणिका महत्तरीनिके नगरनिकौं कहैं हैं;—

गणिकामहत्तरीणं पुराणि तत्थेव अग्गिपहुदीसु।
विदिसासु लक्खजोयणवित्थारायामसहियाणि॥ ५०५॥

गणिकामहत्तरीणां पुराणि तत्रैव अग्निप्रभृतिषु।
विदिशासु लक्षयोजनविस्तारायामसहितानि॥ ५०५॥

अर्थ—जैसैं इहां वेश्या हो हैं तैसैं तहां गणिका देवांगना जाननीं। तिनविषै जो प्रधान ताकौं गणिका महत्तरी कहिए। तिन गणिका महत्तरीनिका नगर तहां ही लोकपाल नगरनिकै समीप अग्नि आदि च्यारौं विदिशनिविषै हैं। ते लाख योजन प्रमाण लंबे चौड़े हैं॥ ५०५॥

आगैं तिनिके नाम कहैं हैं;—

ताओ चउरो सग्गे कामा कामिणि य पउमगंधा य ।
तो होदि अलंबूसा सव्विदपुराणमेस कमो ॥ ५०६ ॥
ताः चतस्रः स्वर्गे कामा कामिनी च पद्मगंधा च ।
ततो भवति अलंबूषा सर्वेंद्रपुराणामेष क्रमः ॥ ५०६ ॥

अर्थ—सौधर्मादि स्वर्गविषै कामा १ कामिनी १ पद्मगन्धा १ अलंबूपा ऐसैं नाम धारक ते गणिका महत्तरी च्यारि हैं । बहुरि सर्व इंद्रनिके नगरनिका यह ही वर्णनका क्रम जाननां ॥ ५०६ ॥

आगैं सौधर्म्मादिकनिविषै मंदिरनिकी उचाईकौं प्रतिपादन करैं हैं;—

छज्जुगलसेसकप्पे तित्तिसु य अणुद्दिसे अणुत्तरगे ।
गेहुदओ छप्पणसय पण्णास रिणं दलं चरिमे ॥ ५०७ ॥
षट्युगलशेषकल्पेषु त्रिस्त्रिषु च अनुदिशि अनुत्तरके ।
गेहोदयः षट्पंचशतं पंचाशदृणं दलं चरमे ॥ ५०७ ॥

अर्थ—छह युगल अर शेष कल्प अर तीन तीन ग्रैवेयक अर अनुदिश अर अनुत्तर इनविषै गेहनिका उदय छसै पांचसै बहुरि पचासका ऋण अर अंतविषै आधा इतनें योजन प्रमाण है । भावार्थ—सौधर्म्म युगल आदि छह युगलनिकै छह स्थान बहुरि शेष आनतादि कल्पनिका एक स्थान बहुरि तीन तीन ग्रैवेयकानिका एक एक स्थान तिनके तीन स्थान बहुरि अनुदिशका एक स्थान बहुरि अनुत्तरका एक स्थान ऐसैं बारह स्थानकनिविषै क्रमतैं छसैं पांचसैं साढा च्यारिसै च्यारिसै साढा तीनसै तीनसै अढ़ाईसै दोयसै ड्योढसै सौ पचास पचीस योजन मंदिरनिकी उचाईका प्रमाण है ॥ ५०७ ॥

आगैं देवांगनानिका मंदिरनिकी उचाई कहि सर्व मंदिरनिका विस्तार अर आयाम कहैं हैं;—

सत्तपदे देवीणं गिहोदयं पणसयं तु पण्णरिणं ।
सव्वगिहदिग्घवासं उदयस्स य पंचमं दसमं ॥ ५०८ ॥
सप्तपदे देवीनां गेहोदयः पंचशतं तु पंचाशदृणं ।
सर्वगृहदैर्घ्यव्यासौ उदयस्य च पंचमो दशमः ॥ ५०८ ॥

अर्थ—छह युगलनिके छह स्थान अर अवशेष एक कल्पनिका एक स्थान इन सात स्थानकनिविषै देवांगनानिके मंदिरनकी उचाईका प्रमाण आदिविषै पांचसै उपरि पचास ऋण सो क्रमतैं पांचसै साढा च्यारिसै च्यारिसै साढा तीनसै अढाई सै दोयसै योजन है । बहुरि सर्व ही देव वा देवांगनानिका मंदिरनिकी उचाईका जो प्रमाण कह्या ताकै पांचवैं भाग तौ लंबाईका प्रमाण जाननां । बहुरि दशवैं भागि चौड़ाईका प्रमाण जाननां ॥ ५०८ ॥

आगैं कल्पनिविषै अग्रदेवी बहुरि तिनकी परिवार देवीनिका प्रमाण कहैं हैं;—

सत्तपदे अट्ठट्ठमहादेवीयो पुधादिमेक्किस्से ।
संसमं सोलसहस्सा देवीओ उवरि अद्धद्धा ॥ ५०९ ॥

सप्तपदेषु अष्टाष्टमहादेव्यः पृथक् आदिमे एकस्य।
स्वसमं षोडशसहस्रा देव्यः उपरि अर्धार्धाः॥ ५०९॥

अर्थः—सात स्थानकनिविषै आठ महादेवी हैं। बहुरि पृथक एक एक महादेवीकै आदिकै स्थानविषै स्वसमं कहिए आप सहित सोल्ह हजार परिवार देवी हैं। ऊपरि आधी आधी हैं भावार्थ—सर्व इन्द्रनिकै महादेवी तौ आठ आठ ही हैं। बहुरि छह युगलनिका छह स्थान अर आनतादिकका एक स्थान इन सात स्थानकनिविषै अनुक्रमतैं इन्द्रकै एक एक महादेवीसंबंधी परिवार देवी तिस महादेवीसहित सोल्ह हजार आठ हजार च्यारि हजार दोय हजार एक हजार पांचसै अढाईसै हैं॥ ५०९॥

आगैं तिन महादेवीनिके नाम दोय गाथानिकरि कहैं हैं;—

**सचि पउम सिव सियामा कालिंदीसुलसअज्जुकाणामा।**
**भाणुत्ति जेट्ठदेवी सव्वेसिं दक्खिणिंदाणं॥ ५१०॥**
शचीः पद्मा शिवा श्यामा कालिंदी सुलसा अज्जुकानामा।
भानुरिति ज्येष्ठादेव्यः सर्वेषां दक्षिणेंद्राणाम्॥ ५१०॥

अर्थ—शची १ पद्मा १ शिवा १ श्यामा १ कालिंदी १ सुलसा १ अज्जुका १ भानु १ ऐसैं ए सर्व दक्षिण इन्द्रनिकै पट्टदेवीनिके नाम जानने॥ ५१०॥

**सिरिमति राम सुसीमा पभावदि जयसेण णामय सुसेणा।**
**वसुमित्त वसुंधर वरदेवीओ उत्तरिंदाणं॥ ५११॥**
श्रीमति रामा सुसीमा प्रभावती जयसेना नामा सुषेणा।
वसुमित्रा वसुंधरा वरदेव्यः उत्तरेंद्राणाम्॥ ५११॥

अर्थ—श्रीमती १ रामा १ सुसीमा १ प्रभावती १ जयसेना १ सुषेणा १ वसुमित्रा १ वसुंधरा ऐसे नाम धारक महादेवी सर्व उत्तर इन्द्रनिकै हैं॥ ५११॥

आगैं तहां अग्र महादेवीनिकै विक्रियाका प्रमाण निरूपै हैं;—

**अट्ठण्हं देवीणं पुध पुध सोलससहस्स विकिरिया।**
**मूलसरीरेण समं सेसे दुगुणा मुणेदव्वा॥ ५१२॥**
अष्टानां देवीनां पृथक् पृथक् षोडशसहस्रं विक्रियाः।
मूलशरीरेण समं शेषे द्विगुणा मंतव्याः॥ ५१२॥

अर्थ—आठ महादेवीनिकै पृथक पृथक मूल शरीर सहित सोलह हजार विक्रिया शरीर हो हैं। अवशेष स्थाननिविषै दूणा दूणा जानने। भावार्थ—छह युगलनिका छह स्थान अर आनतादिकका एक स्थान इन सातौं स्थानकनिविषै पहला युगलविषै तौ एक एक महादेवी मूल शरीर सहित सोलह हजार विक्रिया शरीरनिकौं करै है अवशेष द्वितियादि स्थानकनिविषै क्रमतै बत्तीस हजार चौंसठि हजार एक लाख अठाईस हजार दोय लाख छप्पन हजार पांचलाख बारह

हजार दस लाख चौईस हजार विक्रिया शरीर करै हैं। ऐसैं ही आगैं महादेवीनिकै विक्रिया शरीरनिका प्रमाण जाननां ॥ ५१२ ॥

आगैं तहां ही परिवार देवीनिविषै वल्लभिका देवीभिका प्रमाणकौं निरूपै हैं;—

**सत्तपदे वल्लभिया वत्तीसट्ठेव दो सहस्साइं ।**
**पंचसयं अद्धद्धं तेस्सट्ठी होंति सत्तमगे ॥ ५१३ ॥**

सप्तपदेषु वल्लभिका द्वात्रिंशदष्टैव द्वौ सहस्राणि ।
पंचशतानि अर्धार्धं त्रिपष्टिः भवंति सप्तमके ॥ ५१३ ॥

**अर्थ**—सात पदनिविषै वल्लभिका वत्तीस आठ दोय हजार पांचसै पीछैं आधी आधी सातवैं स्थानि तरेसठि हैं। **भावार्थ**—परिवार देविनिविषै जे देवी इन्द्रकौं वल्लभ होंहि तिनकौं वल्लभिका कहिए ते छह युगल अर आनतादि इन सात स्थानकनिविषै क्रमतैं वत्तीस हजार आठ हजार दोय हजार पांचसै अढाईसै एकसौ पचीस तरेसठि वल्लभिका देवी हैं ॥ ५१३ ॥

आगैं तिन वल्लभिकानिका मंदिरनिकी उंचाई अर तिन मंदिरनिका अवस्थानिकी दिशा ताहि कहैं हैं;—

**देवीपासादुदया वल्लभियाणं तु वीसअहियं खु ।**
**इंदत्थंभगिहादो वल्लभियावासया पुव्वे ॥ ५१४ ॥**

देवीप्रासादोदयात् वल्लभिकांना तु विंशाधिकः खलु ।
इंद्रस्तंभगृहात् वल्लभिकावासकाः पूर्वस्याम् ॥ ५१४ ॥

**अर्थ**—देवीनिके मंदिरनिकी उंचाई पूर्वैं कही थी तातैं बीस योजन अधिक वल्लभिका देवीनिके मंदिरनिकी उंचाईका प्रमाण जाननां। बहुरि इन्द्रका जो प्रासाद रहनेंका मंदिर तातैं पूर्व दिशाविषै वल्लभिका देवीनिके मंदिर हैं ॥ ५१४ ॥

आगैं इन्द्रका आस्थानमंडपका स्वरूप कहैं हैं;—

**अमरावदिपुरमज्झे थंभगिहीसाणदो सुधम्मक्खं ।**
**अत्थाणमण्डवं सयतद्दलदीहद्दु तदुभयदल उदयं ॥ ५१५ ॥**

अमरावतीपुरमध्ये स्तंभगृहैशानतः सुधर्माख्यम् ।
आस्थानमंडपं शततद्दलदीर्घद्विः तदुभयदलः उदयः ॥ ५१५ ॥

**अर्थ**—अमरावती नाम इन्द्रका पुर है ताकै मध्य इन्द्रके रहनेंका मंदिरतैं ईशानविदिशाविषै सुधर्मा नामा आस्थान मंडप कहिए सभास्थान है। ताका सौ अर ताका आधा तौ दीर्घद्विक है तिन दोऊनका आधा उदय है। **भावार्थ**—सुधर्मा नाम सभास्थान सौ योजन लंबा है, पचास योजन चौड़ा है, पिचहत्तरि योजन ऊंचा है ॥ ५१५ ॥

आगैं आस्थान मंडपके द्वार अर तिसविषै तिष्टते पदार्थ तिनकौं गाथा तीनकरि कहैं हैं;—

**पुव्वुत्तरदक्खिणदिस तद्दारा अट्ठवास सोलुदया ।**
**मज्झे हरिसिंहासणमडदेवीणासणं पुरदो ॥ ५१६ ॥**

पूर्वोत्तरदक्षिणदिशि तद्वाराणि अष्टव्यासः षोडशोदयः ।
मध्ये हरिसिंहासनं अष्टदेवीनामासनानि पुरतः ॥ ५१६ ॥

**अर्थ**—तिस आस्थान मंडपके पूर्व उत्तर दक्षिण दिशानिविषै तीन द्वार हैं। तिस एक द्वारकी चौड़ाई आठ योजन है ऊँचाई सोलह योजन है। बहुरि तिस आस्थान मंडपनिविषै मध्य स्थान वीचि तौ इन्द्रका सिंहासन है। बहुरि तिस इन्द्र सिंहासनकै आगै आठ पट्टदेवीनिकै आठ आसन हैं ॥ ५१६ ॥

**तव्वाहिं पुव्वादिसु सलोयवालाण परिसतिदयस्स ।**
**अग्गिजमणेरिदीए तेत्तीसाणं तु णेरिदिए ॥ ५१७ ॥**

तद्वहिः पूर्वादिषु स्वर्लोकपालानां परिषत्रितयस्य ।
अग्नियमनैर्ऋत्यां त्रयस्त्रिंशतां तु नैर्ऋत्याम् ॥ ५१७ ॥

**अर्थ**—तिन पट्ट देवीनिके आसननितैं बारैं पूर्वादि दिशानिविषै सोम १ यम १ वरुण १ कुवेर १ इन च्यारि लोकपालनिके च्यारि आसन हैं। बहुरि तीन जातिके परिषदनिके आसन बारह चौदह सोलह हजार आदि ते इन्द्रके आसनतैं आग्नेय यम नैर्ऋति दिशानिविषै हैं। बहुरि त्रायस्त्रिंशत देवनिकै तेतीस आसन नैर्ऋतदिशा ही विषै हैं ॥ ५१७ ॥

**सेणावईणमवरे समाणियाणं तु पवणईसाणे ।**
**तणुरक्खाणं भद्दासणाणि चउदिसगयाणि वहिं ॥ ५१८ ॥**

सेनापतीनामपरस्यां सामानिकानां तु पवनैशाने ।
तनुरक्षाणां भद्रासनानि चतुर्दिशागतानि वहिः ॥ ५१८ ॥

**अर्थ**—सेनानायकनिके सात आसन पश्चिम दिशाविषै हैं। बहुरि सामानिक देवनिके आसन वायु अर ईशान दिशाविषै हैं तहां सौधर्म्मके चौरासी हजार सामानिकनिके आसननिविषै वियालीस हजार तौ वायुदिशाविषै अर वियालीस हजार ईशान दिशाविषै जाननें। बहुरि अंगरक्षक देवनिकै भद्रासन च्यार्यों दिशानिविषै हैं। तहां सौधर्म्मकै पूर्वादि एक एक दिशाविषै चौरासी हजार आसन जाननें इहां सुधर्मा सभाविषै ऐसैं आसन जाननें ॥ ५१८ ॥

आगैं तिस आस्थान मंडपकै आगैं तिष्टता मानस्तंभका स्वरूप कहैं हैं;—

**तस्सग्गे इगिवासो छत्तीसुदओ सवीढ वज्जमओ ।**
**माणत्थंभो गोरुदवित्थारय वारकोडिजुदो ॥ ५१९ ॥**

तस्याग्रे एकव्यासः षट्त्रिंशदुदयः सपीठः वज्रमयः ।
मानस्तंभः क्रोशविस्तारः द्वादशकोटियुतः ॥ ५१९ ॥

**अर्थ**—तिस आस्थान मंडपकै आगैं एक योजन चौड़ा छत्तीस योजन ऊँचा पीठकरि सहित वज्रमई एक एक कोशका विस्तार धरैं ऐसी वारह धारानिकरि संयुक्त मानस्तंभ हैं। इहां मानस्तंभ वारह कोण संयुक्त गोल जाननां। तहां वारह धारा पाईए हैं। सो एक योजन चौड़ा मानस्तंभ है ताकी

परिधि वारह कोश भया तिस परिधिविषै वारह धारा पाइए तातैं एक एक धारा एक एक कोश चौड़ी है ॥ ५१९ ॥

आगैं तिस मानस्तंभ विषै तिष्टते करंडकनिका स्वरूप गाथा तीन करि कहै हैं;—

**चिट्ठंति तत्थ गोरुदचउत्थवित्थार कोसदीहजुदा ।**
**तित्थयराभरणचिदा करंडया रयणसिक्कधिया ॥ ५२० ॥**

तिष्ठंति तत्र गव्यूतिचतुर्थविस्ताराः क्रोशदैर्घ्ययुताः ।
तीर्थकराभरणचिताः करंडका रत्नशिक्यधृताः ॥ ५२० ॥

**अर्थ**—तिस मानस्तंभविषै क्रोशका चौथा भाग प्रमाण चौड़े एक कोश लंबे तीर्थंकर देवके आभरणनिकरि भरे रत्ननिका शिक्य तिन करि धरे करंडक हैं। **भावार्थ**—तिन मानस्तंभनिविषै रत्ननिकी सांकल हैं तिनविषै लूंवते करंडक हैं। जिनमैं वस्तु धरिए ऐसे जे करंडे पिटारे तिनकों करंडक कहिए हैं। तिन करंडनिकविषै तीर्थंकर देवनिकै पहरनेंकौं योग्य ऐसे आभरण भरे हैं। इन्द्र तिनमैंस्यौं काढि करि आभरण तीर्थंकरकौं पहुंचावैं हैं ॥ ५२० ॥

**तुरियजुदविजुदछज्जोयणाणि उवरिं अधोवि ण करण्डा ।**
**सोहम्मदुगे भरहेरावदतित्थयरपडिवद्धा ॥ ५२१ ॥**

तुरीययुतवियुतषड्योजनानां उपरि अधोपि न करंडाः ।
सौधर्मद्विके भरतैरावततीर्थंकरप्रतिवद्धाः ॥ ५२१ ॥

**अर्थ**—तीह मानस्तंभकै चौथा भागकरि युक्त अर वियुक्त छह योजन प्रमाण उपरि अर नीचैं करंडक न पाईए हैं। भावार्थ—मानस्तंभ छत्तीस योजन ऊंचा है। तिहविषै नीचैं पौंणा छह योजनकी उंचाई विषै कारंडक न पाइए। वहुरि वीचिमैं चौईस योजन उंचाईविषै करंडक पाईए। वहुरि उपरि सवा छह योजनकी उंचाईविषैं करंडक न पाईए है। वहुरि सौधर्म्म द्विक विषै ते मानस्तंभ भरत ऐरावत तार्थंकर संवंधी हैं। भावार्थ—सौधर्म विषै जो मानस्थंभ है तहां करंडकनिविषै भरतक्षेत्र संवंधी तार्थंकरानिके आभरण हैं, वहुरि ईशानविषै जो मानस्तंभ है तहां करंडकनिविषै ऐरावत क्षेत्र संवंधी तीर्थंकरनिके आभरण पाईए हैं ॥ ५२१ ॥

**साणकुमारजुगले पुव्ववरविदेहतित्थयरभूसा ।**
**ठविदाचिदा सुरेहिं कोडीपरिणाह वारंसो ॥ ५२२ ॥**

सानत्कुमारयुगले पूर्वापरविदेहतीर्थंकरभूपाः ।
स्थापयित्वार्चिताः सुरैः कोटिपरिणाहः द्वादशांशः ॥ ५२२ ॥

**अर्थ**—सनत्कुमार युगलविषै जो मानस्थंभ है। तहां करंडकनि विषै पूर्व पश्चिम विदेहके तीर्थंकरनिके आभूपण स्थापि देवनि करि पूजनीक हैं। **भावार्थ**—सनत्कुमार विषै जो मानस्तंभ है तहां करंडकानिविषै पूर्वविदेह संवंधी तीर्थंकरानिके आभरण हैं॥ वहुरि माहेन्द्र विषै जो मानस्तंभ है तहां करंडनिविषै पश्चिम विदेह संवंधी तीर्थंकरनिके आभरण हैं। वहुरि तहां तीर्थंकरनिके आभरण पाईए हैं। तातैं ते देवनिंकरिं पूजनीक हैं। वहुरि तिन मानस्तंभनि-

विषै कोटि जो भाग कोणका अंतराल सो मानस्तंभकी परिधिके बारहैं भाग प्रमाण है । सो एक कोश प्रमाण जाननां इहां मानस्तंभनिविषै करंडक ऐसैं जाननें ॥ ५२२ ॥

आगैं इन्द्रकी उत्पत्तिके गृहका स्वरूप कहैं हैं;—

पासे उववादिगहं हरिस्स अडवास दीहरुदयजुदं ।
दुगरयणसयण मज्झं वरजिणगेहं च बहुकूडं ॥ ५२३ ॥
पार्श्वे उपपादगृहं हरेः अष्टव्यासदैर्घ्योदययुतम् ।
द्विकरत्नशयनं मध्यं वरजिनगेहं च बहुकूटम् ॥ ५२३ ॥

अर्थ—तिह मानस्तंभके पासि आठ योजन चौडा इतनां ही लंबा ऊंचा उपपाद ग्रह है । बहुरि तीह उपपाद ग्रहविषै दोय रत्नमई शय्या पाईए हैं । इहां इन्द्रका जन्मस्थान है । बहुरि इस उपपाद गृहकै पासि बहुत शिखरनिकरि संयुक्त उत्कृष्ट जिन मंदिर है ॥ ५२३ ॥

अब कल्पवासिनी स्त्रीनिके उत्पत्तिस्थान गाथा दोयकरि कहैं हैं;—

दक्खिणउत्तरदेवी सोहम्मीसाण एव जायंते ।
तहिं सुद्धदेविसहिया छच्चउलक्खं विमाणाणि ॥ ५२४ ॥
दक्षिणोत्तरदेव्यः सौधर्मैशान एव जायंते ।
तत्र शुद्धदेवीसहितानि षट्चतुर्लक्षं विमानानि ॥ ५२४ ॥

अर्थ—दक्षिण उत्तर देवांगना सौधर्म ईशानविषै ही उपजै हैं। तहां शुद्धदेवीसहित छह अर च्यारि लाख विमान हैं । भावार्थ—कल्पवासिनी देवांगना सर्व सौधर्मईशान स्वर्गहीविषै उपजें । ऊपरि नाहीं उपजै हैं तहां दक्षिण दिशाके कल्पसंबंधी देवांगनां तौ सौधर्मविषै उपजै हैं । बहुरि उत्तर दिशाके कल्पसंबंधी देवांगना ईशानविषै उपजै हैं । तहां जिन विमाननिविषै कोऊ देव न पाईए केवल देवांगना ही जहां उपजै ऐसे सौधर्मविषै छह लाख विमान हैं, अर ईशानविषै च्यारि लाख विमान हैं ॥ ५२४ ॥

तद्देवीओ पच्छा उवरिमदेवा णयंति सगठाणं ।
सेसविमाणा छच्चदुवीसलक्खा देवदेविसम्मिस्सा ॥ ५२५ ॥
तद्देव्यः पश्चादुपरिमदेवाः नयंति स्वकस्थानं ।
शेषविमानाः षट्चतुर्विंशलक्षाः देवदेविसंमिश्राः ॥ ५२५ ॥

अर्थ—ते देवी तहां सौधर्म वा ईशानविषै उपजें पीछैं जिनि देवनिकी नियोगनी होइ ते उपरिके स्वर्गवासी देव अपनें अपनें ठिकानें लेइ जाइ हैं । बहुरि अवशेष सौधर्मविषै छबीस लाख विमान अर ईशानविषै चौईस लाख विमान ते देवदेवी संमिश्र हैं। तहां देव भी उपजै हैं अर देवांगना भी उपजै हैं ॥ ५२५ ॥

अब कल्पवासीनिके प्रवीचारकों विचारै हैं;—

दुसु दुसु तिचउक्केसु य काये फासे य रूव सद्दे य ।
चित्तेवि य पडिचारा अप्पडिचारा हु अहमिंदा ॥ ५२६ ॥

द्वयोर्द्वयोः त्रिचतुष्केषु च काये स्पर्शे च रूपे शब्दे च।
चित्तेपि च प्रवीचारा अप्रवीचारा हि अहमिंद्राः ॥ ५२६ ॥

अर्थ—दोय दोय तीन चतुष्कानिविषै काय, स्पर्श, रूप, शब्द, मनविषै प्रवीचार है। बहुरि अहमिंद्र अप्रवीचार हैं। भावार्थ—प्रवीचार नाम कामसेवनका है सो सौधर्मादि दोय स्वर्गनिविषै तौ कायकरि प्रवीचार है। जैसैं मनुष्य काम सेवन करै है तैसैं देव देवांगना तहां कामसेवन करैं हैं। बहुरि उपरि दोय स्वर्गनिविषै स्पर्शकरि प्रवीचार है । देव देवांगनाकै परस्पर अंग स्पर्श करि तृप्ति हो है। बहुरि उपरि च्यारि स्वर्गनिविषै रूपकरि प्रवीचार है। देव देवांगनाकै परस्पर रूप देखने ही करि तृप्ति हो है। बहुरि उपरि च्यारि स्वर्गनिविषै शब्दकरि प्रवीचार है। देवदेवांगनाकै परस्पर शब्द सुननेंकरि ही तृप्ति हो हैं। बहुरि ऊपरि च्यारि स्वर्गनिविषै मनकरि प्रवीचार है। देव देवांगनाकै परस्पर मनका परिणमनहीतैं तृप्ति हो है। बहुरि उपरि ग्रैवेयकादि विषै अहमिंद्र हैं ते अप्रवीचार हैं-काम सेवन रहित हैं ॥ ५२६ ॥

अब इस कथनकै अनंतरि वैमानिक देवनिकै विक्रियाशक्ति अर अवधिज्ञानका विषय गाथा दोयकरि कहै हैं;—

**दुसु दुसु तिचउक्केसु य णवचोद्दसगे विगुव्वणा सत्ती।**
**पढमखिदीदो सत्तमखिदिपेरंतो त्ति अवही य ॥ ५२७ ॥**
द्वयोर्द्वयोः त्रिचतुष्केषु च नवचतुर्दशसु विकुर्वणा शक्तिः।
प्रथमक्षितितः सप्तमक्षितिपर्यंतं इति अवधिश्च ॥ ५२७ ॥

अर्थ—दोय दोय तीन चतुष्क अर नव चौदहनिविषै वैक्रियक शक्ति प्रथम पृथ्वीतैं सातवीं पृथ्वी पर्यंत है अर ऐसैंही अवधि ज्ञानका विषय है। भावार्थ—अधो दिशाविषै विक्रिया करि जहां पर्यंत गमनादि करनैंकी शक्ति है बहुरि अवधिज्ञान करि जहांपर्यंत पदार्थ जाननैंकी शक्ति है सो दोऊ क्षेत्र कल्पवासीनिकै समान है । तातैं दोऊनिका एकट्ठा वर्णन कीजिए हैं। सो विक्रियाशक्ति अर अवधिज्ञान सौधर्मादि दोय स्वर्गनिविषै तौ प्रथमनरकपृथ्वी पर्यंत है। दोय स्वर्गनिविषै दूसरी नरकपृथ्वी पर्यंत है। च्यारि स्वर्गनिविषै तीसरी पर्यंत, च्यारि स्वर्गनिविषै चौथी पर्यंत, च्यारि स्वर्गनिविषै पांचवीपर्यंत, नव ग्रैवेयकनिविषै छठी पर्यंत अनुदिश अनुत्तर चौदह विमाननिविषै सातवीं नरकपृथ्वी पर्यंत जाननां । बहुरि ऊपरि दिशाविषै अवधिज्ञान कैसैं है सो कहिए हैं । सौधर्म्मादिकदेव अपनैं अपनैं स्वर्गके विमानकौ जो ध्वजादंड तीह पर्यंत अवधिकरि देखै है ऊपरि न देखै हैं। बहुरि नव अनुदिशवासी देव ते अपनां अपनां विमानका शिखरतैं नीचे यावत् नीचला बाह्य तनुवात वलय है तहां पर्यंत किछू घाटि चौदह राजू लंबी एक राजू चौड़ी ऐसी सर्व लोक नालीकौं अवधि करि देखैं हैं ॥ ५२७ ॥

**सव्वं च लोयणालिं पस्संति अणुत्तरेसु जे देवा।**
**सगखेत्ते य सकम्मे रूवगदमणंतभागो य ॥ ५२८ ॥**
सर्वां च लोकनालिं पश्यंति अनुत्तरेषु ये देवाः।
स्वकक्षेत्रे च स्वकर्मे रूपगतमनंतभागं च ॥ ५२८ ॥

अर्थ—पंच अनुत्तर विमाननिविषै जे देव हैं ते सर्व लोकनाली कहिए त्रसनाली ताकौं अवधि करि देखें हैं। बहुरि अवधिके जाननेंका विधान कहिए हैं। अपने क्षेत्रविषै एक प्रदेश घटावनां तब अपनें कर्म्मविषै एक बार ध्रुवहारका भाग देनां यावत सर्व प्रदेश समाप्त होइ तावत ऐसें करनां। इस कथनकरि अवधिज्ञानका विषय भूत द्रव्यका भेद कह्या। इस अर्थकौं विषद करै हैं। वैमानिक देवनिकै अपनां अपनां जेता जेता अवधि ज्ञानका विषय भूत क्षेत्र कह्या ताके जेते जेते प्रदेश होंहि ते एकत्र स्थापन करनें। बहुरि अपनें अपने सत्तारूप कार्म्माण स्कंधके परमाणूनिविषै जे परमाणू कर्म्मरूप न परणए स्वभावही करि जे तिस कार्माण स्कंधविषै एक स्कंधरूप होइ परणए ऐसें एक एक कर्म्म परमाणूकी साथि अनंत अनंत परमाणू हैं। तिनका नाम विश्रसोपचय कहिए। तिनकरि रहित अवधिज्ञानावरणरूप जे परमाणु परणाए हुए सत्ताविषै जेते तिष्ठै हैं तिनकौं एकत्र स्थापन करनें। तहां तिस अवधिज्ञानावरण द्रव्यकौं एक वार सिद्ध राशिकै अनंतवें भाग प्रमाण ध्रुवहार है ताका भाग देनां। तब तिस क्षेत्रके प्रदेश प्रमाणमैं-सौं एक प्रदेश घटावनां बहुरि भाग दीएं जो लब्धराशि भया ताकौं दूसरीवार ध्रुवहारका भाग देनां तब दूसरा प्रदेश तिस क्षेत्र प्रदेश प्रमाणमैंसौं घटावनां। ऐसें जितनें तिस अवधिज्ञानके विषय-भूत क्षेत्रके जेते प्रदेश होंहि तितनी वार तिस अवधिज्ञानावरणके परमाणूनिके प्रमाणकौं भाग देतें देतें अंत विषै जेते परमाणूनिका प्रमाणरूप लब्धराशि होइ तितनें परमाणूनिका स्कंधकौं सो वैमानिक देव जानैं हैं। ताका उदाहरण-सौधर्म्म युगलविषै अवधि क्षेत्र ऐसा ३ इहां

३४३।२

घनलोककी सहनानी ऐसी ताकौं तीनसै तियालीसका भाग दिएं घनरूप एक राजू आया ताकौं ड्योढ गुणा करनेकौं आगैं सहनानी ३/२ बहुरि अवधि ज्ञानावरण द्रव्य ऐसा स १२ इहां उत्कृष्ट समय

७।४

प्रबद्धकी सहनानी ऐसी स ७ ताकौं किंचिदून ड्योढ गुण हानि करि गुणनेंकी सहनानी ऐसी १२-तामें सातकर्म्मनिका भाग करनेकौं सातका भाग अर एक ज्ञानावरणविषै सर्व घातियाका द्रव्य स्तोक जांणि न गिणिकरि देशघातियाविषै एक अवधिज्ञानावरणका ग्रहणकै अर्थि च्यारिका भाग जाननां। तहा अवधिक्षेत्रविषै एक प्रदेश घटाएं ऐसा ३ इहां उपरि एक घटावनांकी

३४३।२

सहनानी ऐसी १ बहुरि अवधि द्रव्यकौं एकवार ध्रुवहारका भाग दिएं ऐसा स ७१२-इहां

७।४।९

ध्रुवहारकी सहनानी नवका अंक है। ऐसें एक एक वार ध्रुवहारका भाग अवधि द्रव्यकौं देइ देइ एक एक प्रदेश अवधि क्षेत्रमेंस्यौं घटावतें जहां सर्व अवधि क्षेत्रके प्रदेश समाप्त होइ तहां जो अंतविषै अवधि द्रव्यकौं भाग देतें देतें जेते परमाणू लब्धराशि होइ तितनें परमाणूनिके स्कंधकौं सौधर्म युगल वासी देव जानैं हैं यातैं सूक्ष्म स्कंधकौं न जानैं, स्थूल स्कंध जाननेंका किछू विरोध नांहीं। ऐसें ही अन्य वैमानिक देवनिकै अवधिका विषयभूत द्रव्यका प्रमाण जाननां ॥ ५२८ ॥

आगैं वैमानिक देवनिके जनम मरणविषै अंतराल कहैं हैं;—

दुसुदुसु तिचउक्केसु य सेसे जणणंतरं तु चवणे य।
सत्तदिण पक्ख मासं दुगचदुछम्मासगं होदि ॥ ५२९ ॥
द्वयोर्द्वयोः त्रिचतुष्केषु च शेषे जननांतरं तु च्यवने च।
सप्तदिनानि पक्षं मासं द्विकचतुःषण्मासकं भवति ॥ ५२९ ॥

**अर्थ**—दोय दोय तीन चतुष्क शेष इनविषै जननांतर अर च्यवनैं कहिए मरणविषै अंतर सो सात दिन पक्ष मास दोय च्यारि छह मास प्रमाण है। **भावार्थ**—जेते कालि किसीहीका जन्म तहां न होइ ताकौं जननांतर कहिए। बहुरि जेते कालि किसीहीका तहां मरण न होइ ताकौं मरणांतर कहिए। सो ए दोऊ उत्कृष्टपनैं सौधर्मादि दोय स्वर्गनिविषै सात दिन, दोय स्वर्गनिविषै एक पक्ष, च्यारि स्वर्गनिविषै एक मास, च्यारि स्वर्गनिविषै दोय मास, च्यारि स्वर्गनिविषै च्यारि मास, अवशेष ग्रैवयादिकविषै छहमास प्रमाण जाननां ॥ ५२९ ॥

आगैं इंद्रादिकनिका उत्कृष्ट अंतर कहैं हैं;—

वरविरहं छम्मासं इंदमहादेविलोयवालाणं।
चउ तेत्तीससुराणं तणुरक्खसमाणपरिसाणं ॥ ५३० ॥
वरविरहं षण्मासं इंद्रमहादेविलोकपालानाम्।
चतुः त्रयस्त्रिंशसुराणां तनुरक्षसमानपारिषदानाम् ॥ ५३० ॥

**अर्थ**—वर विरह कहिए उत्कृष्टपनैं मरण भएं पीछैं तीहकी जायगा अन्य जीव आइ यावत काल न अवतरै तिसकालका प्रमाण सो इन्द्र अर इंद्रकी महादेवी अर लोकपाल इनका तौ विरहकाल छह मास जानि। बहुरि त्रायस्त्रिंशत देव अर अंगरक्षक अर सामानिक अर पारिषद इनका च्यारि मास विरहकाल जानि ॥ ५३० ॥

आगैं देवविशेषनिकै संभवस्थान प्रतिपादन करैं हैं;—

ईसाणलांतवच्चुदकप्पोत्ति कमेण होंति कंदप्पा।
किब्भिसिय आभिजोगा सगकप्पजहण्णठिदिसहिया ॥ ५३१ ॥
ईशानलांतवाच्युतकल्पांतं क्रमेण भवंति कंदर्पाः।
किल्बिषिका आभियोग्याः स्वककल्पजघन्यस्थितिसहिताः ॥ ५३१ ॥

**अर्थ**—इहां मनुक्ष पर्यायविषै जे जीव स्त्रीगमनादि काम परिणामरूप विटलक्षणकौं धरैं ऐसे कांदर्प परिणाम संयुक्त हैं ते जीव अपने योग्य शुभ कर्मके वशतैं उत्कृष्टपनै ईशान कल्पपर्यंत उपजैं। तहां भी कंदर्प जातिके देव ही उपजै हैं। तातैं उपरि नाहीं उपजैं हैं। बहुरि इहां मनुक्ष पर्यायविषै जे जीव गानादिक करि आजीविका जिनके पाइए ऐसे लक्षणकौं धरैं नटवे आदि कैल्विषिक परिणामनिकरि संयुक्त हैं ते जीव अपने योग्य शुभकर्मके वशतैं लांतव कल्पपर्यंत उपजैं हैं। तहां भी किल्विषिक देव ही हो हैं। तातैं उपरि नाहीं उपजै हैं। बहुरि इहां मनुक्ष पर्यायनिविषैं जे जीव सपाप क्रियानिविषै निजहस्तादिक करि दासत्वादिकरूप प्रवर्त्तैं ऐसे लक्षणकौं धरैं नांई आदि आभियोग्य भावना करि संयुक्त हैं ते जीव अच्युत कल्पपर्यंत उपजै

हैं। तहां भी अभियोग्य देव ही हो हैं। तातैं उपरि नाहीं उपजैं हैं। ए सर्व अपनें अपनें स्वर्ग-संबंधी जघन्य आयुकरि सहित उपजैं हैं ॥ ५३१ ॥

आगैं प्रथम युगलादिविषै स्थिति विशेष कहैं हैं;—

**सोहम्म वरं पल्लं वरमुवहिवि सत्त दस य चोद्दसयं।**
**वावीसोत्ति दुवड्ढी एक्केक्कं जाव तेत्तीसं ॥ ५३२ ॥**

सौधर्मे वरं पल्यं अवरं उदधिद्विकं सप्त दश च चतुर्दशकं।
द्वाविंशतिरिति द्विवृद्धिः एकैकं यावत्रयस्त्रिंशत् ॥ ५३२ ॥

अर्थ—सौधर्म युगल युगल विषै जघन्य आयु एक पल्य है। उत्कृष्ट आयु प्रत्येक दोय प्रमाण है यातैं उपरि उत्कृष्ट आयु ही कहैं हैं सनतकुमारविषै प्रत्येक सात सागर सागर प्रमाण आयु है। ब्रह्मयुगलविषै प्रत्येक दश सागर प्रमाण आयु है। लांतव युगलविषै प्रत्येक चौदह सागर प्रमाण आयु है। यातैं उपरि बाईस पर्यंत दोय दोयकी वृद्धि है। सो शुक्रयुगलविषै सोलह, सतार युगलविषै अठारह, आनत युगल-विषै वीस, आरण युगलविषै वावीस सागर प्रमाण आयु है। बहुरि यातैं उपरि तेतीस पर्यंत एक एककी वृद्धि है सो प्रथमादि नव ग्रैवेयकनिविषैं क्रमतैं तेईस चौवीस पचीस छव्वीस सत्ताईस अठाईस गुणतीस तीस इकतीस सागर प्रमाण आयु है, नव अनुदिशविषै बत्तीस सागर आयु है। पंच अनुत्तरविषै तेतीस सागर आयु है ॥ ५३२ ॥

आगैं घातायुष्कं सम्यकदृष्टीके पटल पटल प्रति उत्कृष्ट आयु कहैं हैं;—

**सम्मे घादेऊणं सायरदलमहियमा सहस्सारा।**
**जलहिदलमुडुवराऊ पडलं पडि जाण हाणिचयं ॥ ५३३ ॥**

समीचि घातायुषि सागरदलमधिकमा सहस्रारात्।
जलधिदलं ऋतुवरायुः पटलं प्रति जानीहि हानिचयम् ॥ ५३३ ॥

अर्थ—सम्यग्दृष्टी होइ अर घातायुष्क होइ तौ तिस जीवके अपनें अपनें स्वर्गके पूर्वोक्तउत्कृष्ट आयुतैं अंतरमुहूर्त घाटि आधा सागर प्रमाण अधिक आयु हो है। जैसैं सौधर्म युग्मविषै घातायुष्क सम्यग्दृष्टीका उत्कृष्ट आयु अंतरमुहूर्त्त घाटि अढ़ाई सागर प्रमाण होइ। ऐसैं सतार सहस्रार युगल पर्यंत जाननां। तीह सहस्रारतैं उपरि घातायुष्ककी उत्पति नाहीं है, **भावार्थ**—जिस जीवने पूर्व भवविषै पहलैं आयुका बंध अधिक किया था पीछैं परणामानिके वशतैं ताकों घटाइ थोड़ा अणि राख्या तिस जीवको घातायुष्क कहिए। तातैं आयुका घात दोय प्रकार है—एक अपवर्त्तन घात एक कदली घात। तहां वध्यमान आयुका घटावनां सो अपवर्त्तन घात है। बहुरि उदीयमान आयुका घटावनां सो कदली घात है। सो इहां कदली घात तौ संभवै नाहीं तातैं अपवर्त्तन घातहीका ग्रहण किया है। सो ऐसा घातायुष्क होय अर सम्यग्दृष्टी होय तौ तिस जीवकें पूर्वोक्तउत्कृष्ट आयुतैं आध सागर अधिक आयु सहस्रार पर्यंत होइ। बहुरि सौधर्मयुगलका प्रथम पटल ऋतुनामा इंद्रक तीहविषै उत्कृष्ट आयु आध सागर प्रमाण है। सो आदि जाननां। और अन्य युगलनिविषैं पूर्वयु-

गलका उत्कृष्ट आयु सो आदि जाननां। बहुरि अपनां अपनां उत्कृष्ट आयु सो अंत जाननां। बहुरि सौधर्म युगलविषै तौ अपनां अपनां पटलका प्रमाण सो गछ जाननां, अन्य युगलनिविषै पूर्वयुगलका उत्कृष्ट आयु ताकों आदि ग्रहण किया तातैं अपनें अपनें पटल प्रमाणतैं एक अधिक प्रमाण गछ जाननां। ऐसैं जांनि आदी अंते सुद्धे रूउणद्धो हिदम्मि हाणिचयं, इस सूत्र करि पटल प्रति हानिचय जानहु। सो कैसैं? घातायुष्क अपेक्षा सौधर्म युगलादि आठ युगलनिविषै क्रमतैं आध अढ़ाई साढ़ा सात दस साढ़ा चौदह साढ़ासोलह साढ़ा अढारह बीस सागर प्रमाण आदि है। बहुरि अढ़ाई साढ़ा सात साढ़ा दश साढ़ा चौदह साढ़ा सोलह साढ़ा अठारह बीस बाईस सागर प्रमाण अंत है। सो अंतमेंसौं आदि घटाइ शुद्ध किएं दोय पांच तीन च्यारि दोय दोय ड्योढ सागर शेष रहै। इनकौं एक घाटि गछका भाग देनां सो सौधर्म युग्मविषै तौ स्वपटल प्रमाणमेंस्यौं एक घटाएं तीस अर अन्य युगलनिविषै पूर्वयुगलका अंत पटलका उत्कृष्ट आदिका ग्रहण किया। तातैं स्वपटल प्रमाण सात च्यारि दोय एक एक तीन तीनका भाग दिएं हानिचय आवै है। पटल पटल प्रति इतनां इतनां आयु उपरिकी अपेक्षा घटती नीचांकी अपेक्षा वधती है। तातैं याका नाम हांनिचय है। सो सौधर्म युग्मविषै दोयका तीसवां भाग, सनत्कुमार युग्मविषै दसका चौदवां भाग, ब्रह्मयुग्मविषै तीनका चौथा भाग, लांतव युग्मविषै दोय, शुक्र युग्मविषै दोय, सतार युग्मविषै दोय, आनत युग्मविषै आध, आरण युग्मविषै दोयका तीसरा भाग प्रमाण हानिचय जानि तिस तिस पटल प्रति आयु प्रमाण ल्यावनां। सो सौधर्म युग्मका प्रथम पटलविषै आध सागर आयु है। यामैं हानिचय दोयका तीसवां भाग समान छेदि करि मिलाएं सतरह सागरका तीसवां भाग प्रमाण द्वितीय पटलविषै आयु हो है। यामें हानिचय मिलाएं उगणीस सागरका तीसवां भाग प्रमाण तृतीय पटलविषै आयु हो है। ऐसैंही क्रमतैं इकतीसवां अंतपटलविषै अढ़ाई सागर आयु हो है। यामें सनत्कुमार युगलका हानिचय दसका चौदहवां भाग मिलाएं सनत्कुमार युगलका प्रथम पटलविषै पैतालीस सागरका चौदवां भाग प्रमाण आयु हो है। ऐसैं क्रमतैं अंतपटलविषै साढा सात सागर प्रमाण आयु हो है। यामें ब्रह्मयुग्मका हानिचय मिलाएं ताहीका प्रथम पटलविषै आयु हो है। पूर्वोक्त क्रमतैं अंतपटलविषै साढ़ा दस सागर प्रमाण आयु हो है। याही प्रकार आरण युग्मका अंतपटलपर्यंत आयुका साधनि करनां। बहुरि अपघातायुष्ककी अपेक्षा आध सागर अधिकका ग्रहण करना। तहां सौधर्म युग्मविषै आदि आध सागर अंत दोय सागर शुद्ध किएं ड्योढ़ सागर एक घाटि गछ तीसका भाग दिएं एकका चौवीसवां भाग प्रमाण हानिचय आया सो आध सागरविषै मिलाएं द्वितीय पटलविषै आयु होइ ऐसैं ही अंतपटल प्रति जाननां बहुरि याही प्रकार सनत्कुमार युग्मादि सात युग्मनिविषै आदि दोय सात दस चौदह सोलह अठारह बीस सागर प्रमाण अर अंत सात दस चौदह सोलह अठारह बीस बावीस सागर प्रमाण स्थापि पूर्वोक्त प्रकार हानिचय ल्याइ पटल पटल प्रति आयुसाधन करनां ऐसैं उत्कृष्ट आयु कह्या। बहुरि जघन्य आयु प्रथम पटलविषै तो कह्या ही था अर उपरि सर्वत्र जो नीचले पटलका उत्कृष्ट आयु सोही एक समय अधिक ऊपरला पटलविषै जघन्य आयु जाननां ॥ ५३३ ॥

आगें लौकांतिक देवनिके अवस्थानका ठिकाना कहैं हैं;—

णिवसंति बह्मलोयस्संते लोयंतिया सुरा अट्ठ।
ईसाणादिसु अट्ठसु वट्टेसु पइण्णएसु कमा ॥ ५३४ ॥
निवसंति ब्रह्मलोकस्यांते लौकांतिकाः सुरा अष्ट।
ईशानादिषु अष्टसु वृत्तेषु प्रकीर्णकेषु क्रमात् ॥ ५३४ ॥

**अर्थ**—ब्रह्मलोकका अंतविषै आठ कुलभेद संयुक्त लौकांतिक देव वसैं हैं। **भावार्थ**—ब्रह्मयुगलका मंदिरविषै जो अंतस्थान तहां लौकांतिक देवनिकै विमान हैं। बहुरि तहां तै लौकांतिक देव ईशानादि आठ दिशानिविषै गोल जे प्रकीर्णक विमान तिनविषै यथाक्रम वसैं हैं ॥ ५३४॥

आगें तिन अष्ट कुलनिकी संज्ञा अर संख्या दोय गाथाकरि कहैं हैं;—

सारस्सद आइच्चा सत्तसया सगजुदा य वण्हरुणा।
सगसगसहस्समुवरिं दुसु दुसु दोदुगसहस्सवड्ढिकमा ॥५३५॥
सारस्वता आदित्याः सप्तशतानि सप्तयुतानि च वह्न्यरुणाः।
सप्तसप्तसहस्रमुपरि द्वयोर्द्वयोः द्विद्विसहस्रवृद्धिक्रमः ॥ ५३५ ॥

**अर्थ**—सारस्वत अर आदित्य तौ प्रत्येक सात युक्त सातसै प्रमाण हैं। बहुरि वह्नि अर अरुण प्रत्येक सात अधिक सात हजार प्रमाण हैं। तातैं ऊपरि दोय स्थान विषै दोय अधिक दोय हजार वृद्धिका अनुक्रम जाननां ॥ ५३५ ॥

तो गद्दतोयतुसिदा अव्वावाहा अरिट्ठसण्णा य।
सेढीवद्धे रिट्ठा विमाणणामं च तच्चेव ॥ ५३६ ॥
ततो गर्दतोयतुषिता अव्याबाधा अरिष्टसंज्ञाश्च।
श्रेणीबद्धे अरिष्टा विमाननामं च तदेव ॥ ५३६ ॥

**अर्थ**—तहां पीछैं गर्दतोय १ तुषित १ अव्याबाध १ अरिष्ट १ ऐसी संज्ञाधारक जाननें ॥ **भावार्थ**—लौकांतिक देव आठ कुल भेद संयुक्त हैं। सारस्वत १ आदित्य १ वह्नि १ अरुण १ गर्दतोय १ तुषित १ अव्याबाध १ अरिष्ट १ इन देवनिका अनुक्रमतैं प्रमाण सातसै सात सातसै सात, सात हजार सात, सात हजार सात, नव हजार नव, नव हजार नव, ग्यारह हजार ग्यारह, ग्यारह हजार ग्यारह ११०११ जाननां। इन विषै अरिष्ट हैं ते श्रेणी बद्ध विमान विषै तिष्टै हैं। इतनां विशेष जाननां। अवशेष गोल प्रकीर्णक विमाननिविषैही तिष्टै है। बहुरि जे कुलके नाम तेई तिनके विमाननिके नाम हैं ॥ ५३६ ॥

आगैं सारस्वत आदिकनिकैं दोय दोयका अंतराल विषै तिष्टते जे कुल तिनके नाम अर तिन देवनिकी संख्या गाथा दोयकरि कहैं हैं;—

सारस्सदआइच्चप्पहुदीणं अंतराल‍ए दो दो।
जाणग्गिसूरचंदयसच्चाभा सेयखेमकरा ॥ ५३७ ॥
सारस्वतादित्यप्रभृतीनां अंतरालके द्वे द्वे।

जानीहि अग्निसूर्यचंद्रकसत्याभाः श्रेयःक्षेमकराः ॥ ५३७ ॥

अर्थ—सारस्वत आदित्य आदिकनिके आठ अंतरालनिविषै दोय दोय कुल जानहु। तिन कुलस्थ कौन सो कहै हैं। अग्न्याभ १ सूर्याभ १ चंद्राभ १ सत्याभ १ श्रेयस्कर १ क्षेमंकर १ ॥ ५३७ ॥

वसहिट्ठकामधरणिम्माणरजा भिगंतअप्पसव्वादी ।
रक्खिदमरुवसुअस्सविसा ढमरुणसम पुव्वचयमुवरिं ॥ ५३८ ॥

वृषभेष्टकामधरनिर्माणरजोदिगंतात्मसर्वादिः ।
रक्षितमरुद्वस्वश्वविश्वाः प्रथमअरुणसभाः पूर्वचयमुपरि ५३८

अर्थ—वृष भेष्ट १ कामधर १ निर्माण रजा १ दिगंतरक्षित १ आत्मरक्षित १ सर्व रक्षित १ मरुत १ वसु १ अश्व १ ऐसे ए अपने अपने कुल नामकरि संयुक्त देव प्रथम अग्याभ तो अरुण समान संख्या धरै हैं सात हजार सात हैं। बहुरि इस प्रमाणकै उपरि पूर्वोक्त दोय अधिक दोय हजार प्रमाण चय मिलैं सूर्याभादि कनिकी संख्या हो है। भावार्थ—सारस्वत अर आदिभकै विमानिके वीचि अग्नाभ अर सूर्य्याभके विमान है। बहुरि आदित्य अर वन्हिके विमाननिके वीचि चंद्राभ सत्याभके विमान हैं। वहि अर अरुणके विमाननिके वीचि श्रेयस्कर क्षेमंकरके विमान हैं। ऐसैं ही अन्य अंतरालनिविषै दोय दोय कुलनिके विमान जाननें। सो आठ अंतरालनि विषै सोलह कुल भए। तहां अग्न्याभ देव सात हजार सात हैं सूर्य्याभनव हजार नव हैं। चंद्राभ ग्यारह हजार ग्यारह हैं। सत्याभ तेरह हजार तेरह हैं। इसही क्रमतैं आगैं विश्व पर्यंत दोय हजार दोय वधती प्रमाण क्रमतैं जाननां ॥ ५३८ ॥

आगैं कहे जु लौकांतिक देव तिनका विशेष स्वरूप गाथादोयकरि कहैं हैं;—

ते हीणाहियरहिया विसयविरत्ता य देवरिसिणामा ।
अणुपिक्खदत्तचित्ता सेससुराणच्चणिज्जा हु ॥ ५३९ ॥

ते हीनाधिकरहिता विषयविरक्ताश्च देवर्षिनामानः ।
अनुप्रेक्षादत्तचित्ताः शेषसुराणामर्चनीया हि ॥ ५३९ ॥

अर्थ—ते लौकांतिक देव परस्पर हीन अधिकता करि रहित हैं। सर्व समान हैं। वहुरि विषयनिविषै विरक्त हैं। वहुरि देवतानिविषै ऋषि समान हैं। तातैं देव ऋपि है नाम जिनका ऐसे हैं। वहुरि अनित्या दि अनुप्रेक्षानिका चिंतवनविषै दिया है चित्त जिननैं ऐसे हैं। वहुरि अवशेष इंद्रादिक देवनिकरि पूजनीक हैं ॥ ५३९ ॥

चोद्दसपुव्वधरा पडिवोहपरा तित्थयरविणिक्कमणे ।
एदेसिमट्ठजलहिट्ठिदी अरिट्ठस्स णव चेव ॥ ५४० ॥

चतुर्दशपूर्वधराः प्रतिवोधपराः तीर्थकरविनिःक्रमणे ।
एतेषामष्टजलधिः स्थितिः अरिष्टस्य नव चैव ॥ ५४० ॥

**अर्थ**—वहुरि चौदह पूर्वरूप श्रुतज्ञानके धारक हैं। वहुरि तीर्थंकरका निःक्रमण कल्याण विषैं संबोधन देनेंविषै तत्पर हैं। वहुरि इन लौकांतिकदेवनिका आयु आठ सागर प्रमाण है। विशेष इतनां अरिष्टनिका आयु नव सागर प्रमाण ही है ॥ ५४० ॥

आगैं घातायुष्क सम्यकदृष्टि अर मिथ्यादृष्टीकै आयु विशेष कहैं हैं;—

**उवहिदलं पल्लद्धं भवणे विंतरदुगे कमेणहियं।**
**सम्मे मिच्छे घादे पल्लासंखं तु सव्वत्थ ॥ ५४१ ॥**

उदधिदलं पल्यार्धं भवने व्यंतरद्विके क्रमेणाधिकं।
समीचि मिथ्ये घाते पल्यासंख्यं तु सर्वत्र ॥ ५४१ ॥

**अर्थ**—घातायुष्क होइ अर सम्यग्दृष्टी होइ तौ ताकै भवनवासीविषै तौ आध सागर अर व्यंतर ज्योतिषीविषै आध पल्य प्रमाण आयु पूर्वोक्त उत्कृष्ट आयुतैं अधिक होइ। वहुरि घातायुष्क होइ अर मिथ्यादृष्टी होइ तौ ताकै सर्वत्र भवनवासी व्यंतर ज्योतिषी कल्पवासीनिविषै पूर्वोक्त उत्कृष्ट आयुके प्रमाणतैं पल्यका असंख्यातवां भाग प्रमाण आयु अधिक होइ ॥ ५४१ ॥

आगैं कल्पवासिनी स्त्रीनिका आयु प्रमाण कहैं हैं;—

**साहियपल्लं अवरं कप्पदुगित्थीण पणग पढमवरं।**
**एक्कारसे चउक्के कप्पे दोसत्तपरिवड्ढी ॥५४२॥**

साधिकपल्यं अवरं कल्पद्विके स्त्रीणां पंचकं प्रथमवरं।
एकादशे चतुष्के कल्पे द्विसप्तपरिवृद्धिः ५४२ ॥

**अर्थ**—सौधर्म द्विकविषै स्त्रीनिका आयु जघन्य किछू अधिक पल्य प्रमाण है। वहुरि प्रथम स्वर्गविषै उत्कृष्ट आयु पंच पल्य प्रमाण है। उपरि ईशानादि ग्यारह स्वर्गनिविषै अर आनतादि च्यारि स्वर्गनिविषै दोय अर सातकी वृद्धि जाननी। **भावार्थ**—देवांगनांनिकी उत्कृष्ट आयु सौधर्मादि सोल्ह स्वर्गनिविषै अनुक्रमतैं पांच सात नव ग्यारह तेरह पंद्रह सतरह उनईस इकईस तेईस पचीस सत्ताईस चौतीस इकतालीस अठतालीस पचास नव पल्य प्रमाण जाननां॥५४२॥

अब देवनिके शरीरका उत्सेध कहैं हैं;—

**दुसु दुसु चदु दुसु दुसु चउ तित्तिसु सेसेसु देहउस्सेहो।**
**रयणीण सत्त छप्पणचत्तारि दलेण हीणकमा ॥ ५४३ ॥**

द्वयोर्द्वयोः चतुर्षु द्वयोर्द्वयोः चतुर्षु त्रिस्त्रिषु शेषेषु देहोत्सेधः।
रत्नीनां सप्त षट् पंचचत्वारः दलेन हीनक्रमः ॥ ५४३ ॥

**अर्थ**—दोय दोय च्यारि दोय दोय च्यारिविषैं तीन तीनविषै शेषविषै क्रमतैं देहका उत्सेध सात छह पांच च्यारि अर्ध अर्द्ध घाटि रत्नि कहिए हस्तप्रमाण जाननां। **भावार्थ**—देवनिके शरीरकी उचाईका प्रमाण सौधर्मादि दोय स्वर्गनिविषैं सात हाथ दोयविषैं छह हाथ च्यारिविषैं पांच हाथ दोयविषै च्यारि हाथ दोयविषै साढ़ा तीन हाथ च्यारिविषै तीन हाथ

अधो तीन ग्रैवेयकविषै अढ़ाई हाथ मध्य तीन ग्रैवेयकविषै दोय हाथ उपरिम तीन ग्रैवेयकविषै ड्योढ़ हाथ शेष अनुदिश अनुत्तरविषैं एक हाथ है ॥ ५४३ ॥

आगैं तिनकै उश्वास अर आहारका काल निरूपै हैं;—

पक्खं वाससहस्सं सगसगसायरसलाहि संगुणियं ।
उस्सासाहाराणं कमेण माणं विमाणेसु ॥ ५४४ ॥

पक्षो वर्षसहस्रं स्वकस्वकसागरशलाभिः संगुणितं ।
उच्छ्वासाहाराणां क्रमेण मानं विमानेषु ॥ ५४४ ॥

अर्थ—पक्ष कहिए पंद्रह दिन अर हजार वर्ष सोहम्मवरं पल्लं वरमुवहि वि सत्त इत्यादि पूर्वोक्त गाथाविषै जितनां जितनां सागर प्रमाण आयु कह्या तितनां प्रमाण सागर शलाकानिकरि गुण्या हुवा क्रम करि विमाननिविषै उश्वासका प्रमाण हो है । तहां उदाहरण—सौधर्मद्विकविषै आयु दोय सागर है। तहां दोय पक्षके अंतराल लिएं उश्वास अर दोय हजार वर्षके अंतराल लिएं आहार है । ऐसैं ही अन्यत्र भी जाननां ॥ ५४४ ॥

आगैं गुणस्थानकौं आश्रय करि देवगतिविषै जे उपजै हैं तिनका स्वरूप गाथा तीन करि कहैं हैं;—

णरतिरिय देसअयदा उक्कस्सेणच्चुदोत्ति णिग्गंथा ।
ण य अयद देसमिच्छा गेवेज्जंतोत्ति गच्छंति ॥ ५४५ ॥

नरतिर्यंचः देशायता उत्कृष्टेनाच्युतांतं निर्ग्रंथाः ।
न च अयता देशमिथ्या ग्रैवेयांतं इति गच्छंति ॥ ५४५ ॥

अर्थ—असंयत वा देश संयत मनुक्ष अर त्रियंच उत्कृष्टपनें अच्युत कल्पपर्यंत जाय हैं । तातैं उपरि नांहीं। वहुरि द्रव्य करि निर्ग्रंथ अर भाव करि असंयत वा देश संयत वा मिथ्यादृष्टी मनुक्ष ते उपरिमग्रैवेयकपर्यंत जाय हैं । तातैं ऊपरि नांहीं ॥ ५४५ ॥

सव्वट्ठोत्ति सुदिट्ठी महव्वई भोगभूमिजा सम्मा ।
सोहम्मदुगं मिच्छा भवणतियं तावसा य वरं ॥ ५४६ ॥

सर्वार्थांतं सुदृष्टिः महाव्रती भोगभूमिजा सम्यंचः ।
सौधर्मद्विकं मिथ्या भवनत्रयं तापसाः च वरं ॥ ५४६ ॥

अर्थ—सम्यग्दृष्टी द्रव्य वा भाव करि महाव्रती मनुक्ष सो सर्वार्थसिद्धिपर्यंत जाय है । वहुरि भोगभूमिया सम्यग्दृष्टी तौ सौधर्म युगलकौं प्राप्त हो हैं । तातैं ऊपरि नांहीं । अर भोगभूमियां मिथ्यादृष्टी भवनवासी व्यन्तर ज्योतिष्ककौं प्राप्त हो हैं। तातैं ऊपरि नांहीं। वहुरि पंचाग्नि आदिकके साधक जे तापसी ते उत्कृष्टपने भवनत्रिककौं प्राप्त हो हैं । तातैं उपरि नांहीं ॥ ५४६ ॥

चरया य परिव्वाजा वह्मोअच्चदपदोत्ति आजीवा ।
अणुदिसअणुत्तरादो चुदा ण केसवपदं जांति ॥ ५४७ ॥

चरकाश्च परिव्राजा ब्रह्मोच्युतपदांतं आजीवाः।
अनुदिशानुत्तरतः च्युता न केशवपदं न यान्ति ॥ ५४७ ॥

**अर्थ**—नग्न अंड है लक्षण जिनका ऐसे चरक ते अर एक दंडी त्रिदंडी आदि लक्षण धरें ऐसे परिव्राजक संन्यासी ते उत्कृष्टपनै ब्रह्मकल्पपर्यंत जाय हैं। तातैं उपरि नांहीं। बहुरि कांजी आदिकके भोजन करनहारे ऐसे आजीव ते उत्कृष्टपनैं अच्युत कल्पपर्यंत जाय हैं। तातैं उपरि नांहीं। अब देवगतितैं चय करि जे उपजै तिनका स्वरूप कहैं हैं। अनुदिश अर अनुत्तर विमानतैं चय कर केशव पद कहिए नारायण प्रतिनारायण पदकों प्राप्त न हो हैं ॥ ५४७ ॥

आगैं जे जीव देवगतितैं चय करि निर्वाण ही जाय तिनके नाम कहैं हैं;—

**सोहम्मो वरदेवी सलोगवाला य दक्खिणमरिंदा।**
**लोयंतिय सव्वट्ठा तदो चुदा णिव्वुदिं जंति ॥ ५४८ ॥**

सौधर्मो वरदेवी सलोकपालश्च दक्षिणामरेंद्राः।
लौकांतिकाः सर्वार्थाः ततश्च्युता निर्वृत्तिं यांति ॥ ५४८ ॥

**अर्थ**— सौधर्म नामा इन्द्र बहुरि ताही की शची नामा पट्ट देवी अर ताहीके सोम आदि च्यारि लोकपाल बहुरि सनत्कुमारादिक दक्षिण इन्द्र बहुरि सर्व लौकांतिक देव बहुरि सर्व सर्वार्थ सिद्धिविषै उपजे देव ए सर्व तहांस्यौं चय करि मनुक्ष होय नियमकरि निर्वाणकौं प्राप्त हो हैं ॥ ५४८ ॥

आगैं तेरसठि शलाका पुरुषनिकी पदवीकौं जे न प्राप्त होहिं तिनके नाम कहैं हैं;—

**णरतिरियगदीहिंतो भवणतियादो य णिग्गया जीवा।**
**ण लहंते ते पदविं तेवट्ठिसलागपुरिसाणं ॥ ५४९ ॥**

नरतिर्यग्गतिभ्यां भवनत्रयाच्च निर्गता जीवाः।
न लभते ते पदवीं त्रिषष्टिशलाकापुरुषाणाम् ॥ ५४९ ॥

**अर्थ**—मनुक्षगति अर तिर्यंच गतितैं अर भवनत्रिकतैं निकसिकरि आए जे जीव ते तरेसठि शलाका पुरुषनिकी, पदवीकों न पावैं हैं। चौवीस तीर्थंकर बारह चक्रवर्ती नव नारायण नव बलभद्र इनकौं तेरसठिशलाका पुरुष कहिए हैं ॥ ५४९ ॥

आगैं देवनिकी उत्पत्तिका स्वरूप कहैं हैं;—

**सुहसयणग्गे देवा जायंते दिणयरोव्व पुव्वणगे।**
**अंतोमुहुत्त पुण्णा सुगंधिसुहफाससुचिदेहा ॥ ५५० ॥**

सुखशयनाग्रे देवा जायंते दिनकर इव पूर्वनगे।
अंतर्मुहूर्ते पूर्णाः सुगंधिसुखस्पर्शशुचिदेहाः ॥ ५५० ॥

**अर्थ**—जैसैं पूर्वाचल विषै सूर्य उदय होय तैसैं अंतर मुहूर्त विषै छह पर्याप्तिनिकरि पूर्ण सुगंध सुखरूप स्पर्श धरैं पवित्र है शरीर जिनका ऐसे ते देव सुखरूप शय्याके ऊपरि जन्म धरैं हैं ॥ ५५० ॥

आगैं तहां उत्पन्न भए देव तिनकै उपजनैके अनंतरि कार्य विशेष हो हैं सो गाथा तीनि करि कहैं हैं;—

**आणंदतूरजयथुदिरवेण जम्मं विबुज्झ सं पत्तं ।**
**दट्ठूण सपरिवारं गयजम्मं ओहिणा णिव्वा ॥ ५५१ ॥**

आनंदतूर्यजयस्तुतिरवेण जन्म विबुध्य स्वं प्राप्तं ।
दृष्ट्वा सपरिवारं गतजन्म अवधिना ज्ञात्वा ॥ ५५१ ॥

**अर्थ**—जनम होतैं भया जे आनंदरूप वाजित्रनिका शब्द अर जयकारादिस्तुति रूप शब्द तिन करि यहु देवरूप जनम है ऐसा जांनि बहुरि प्राप्त भया जो विभव अर अपनां परिवार ताहि देखि बहुरि अवधि ज्ञान करि पूर्व गत पर्यायोंको जानि ॥ ५५१ ॥

कहा सो कहैं हैं;—

**धम्मं पसंसिदूण ण्हादूण दहे भिसेयलंकारं ।**
**लद्धा जिणाभिसेयं पूजं कुव्वंति सद्दिट्ठी ॥ ५५२ ॥**

धर्मं प्रशंस्य स्नात्वा ह्रदे अभिषेकालंकारं ।
लब्ध्वा जिनाभिषेकं पूजां कुर्वंति सद्दृष्टयः ॥ ५५२ ॥

**अर्थ**—धर्मनैं प्रशंसि करि जल भरे तद्द्रहविषै स्नान करि पट्टरूप अभिषेक अर अलंकारकौं पाइ सम्यग्दृष्टि जीव स्वयमेव जिनदेवका अभिषेक अर पूजा ताहि करै हैं ॥ ५५२ ।

**सुरवोहियावि मिच्छा पच्छा जिणपूजणं पकुव्वंति ।**
**सुहसायरमज्झगया देवा ण विदंति गयकालं ॥ ५५३ ॥**

सुरबोधिता अपि मिथ्या पश्चाज्जिनपूजनं प्रकुर्वंति ।
सुखसागरमध्यगता देवा न विदंति गतकालं ॥ ५५३ ॥

**अर्थ**—मिथ्यादृष्टी देव अन्य देवनिकरि संबोधे हुए भी पीछै जिन पूजनकौं करैं हैं। ते सर्व ही सुखसागरके मध्य प्राप्त हुवा थका गए-कालकों न जानैं हैं ॥ ५५३ ॥

आगैं तिन देवनिकै समीचीन कार्य कहैं हैं;—

**महपूजासु जिणाणं कल्लाणेसु य पजंति कप्पसुरा ।**
**अहमिंदा तत्थ ठिया णमंति मणिमउलिघडिदकरा ॥ ५५४ ॥**

महापूजासु जिनानां कल्याणेषु च प्रयांति कल्पसुराः ।
अहमिंद्राः तत्र स्थिता नमंति मणिमौलिघटितकराः ॥ ५५४ ॥

**अर्थ**—जिन तीर्थंकर देव तिनकी महा पूजा अर तिनका पंच महाकल्याण तिनविषैं कल्पवासी देव जावैं हैं। बहुरि अहमिंद्र देव तहां अपनैं स्थान ही विषै मणिमई मुकुटनितैं लगाए हैं हाथ जिनूंनैं ऐसे होत संते नमस्कार करैं हैं ॥ ५५४ ॥

आगैं देवादिककी संपदा किनकैं हो है सो कहैं हैं;—

विविहतवरयणभूसा णाणसुची सीलवत्थसोम्मंगा।
जे तेसिमेव वस्सा सुरलच्छी सिद्धिलच्छी य ॥ ५५५ ॥
विविधतपोरत्नभूषाः ज्ञानशुचयः शीलवस्त्रसौम्यांगाः।
ये तेषामेव वश्या सुरलक्ष्मीः सिद्धिलक्ष्मीश्च ॥ ५५५ ॥

**अर्थ**—जे जीव विविध तपश्चरण करि आभूषित हैं बहुरि ज्ञान करि पवित्र हैं। बहुरि शील रूप वस्त्र संयुक्त सौम्य है अंग जिनका ऐसे हैं। तिन ही जीवनिकैं देव लक्ष्मी अर मुक्ति लक्ष्मी वश्य हो है ॥ ५५५ ॥

अब अष्टम भूमिका स्वरूप कहैं हैं;—

तिहुवणमुड्ढारूढा ईसिपभारा धरट्ठमी रुंदा।
दिग्घा इगिसगरज्जू अडजोयणपमिदबाहल्ला ॥ ५५६ ॥
त्रिभुवनमूर्धारूढा ईषत् प्राग्भारा धराष्टमी रुंद्रा।
दीर्घा एकसप्तरज्जू अष्टयोजनप्रमितबाहल्या ॥ ५५६ ॥

**अर्थ**—तीन भुवनका मस्तक करि आरूढ अर ईषत्प्राग्भार है नाम जाका ऐसी आठवीं पृथ्वी है। ताकी चौड़ाई एक राजू लंबाई सात राजू मोटाई आठ योजन प्रमाण है। भाव यहु—लोकका अंतपर्यंत है अर आठ योजन मोटी है ॥ ५५६ ॥

आगैं तीह आठवीं पृथ्वीविषै तिष्टता सिद्धक्षेत्रका स्वरूपकों गाथा दोय करि कहैं हैं;—

तम्मज्झे रूप्पमयं छत्तायारं मणुस्समहिवासं।
सिद्धक्खेत्तं मज्झडवेहं कमहीण वेहुलियं ॥ ५५७ ॥
तन्मध्ये रूप्यमयं छत्राकारं मनुष्यमहीव्यासं।
सिद्धक्षेत्रं मध्येष्टवेधं क्रमहीनं बाहुल्यम् ॥ ५५७ ॥

**अर्थ**—तीह आठवीं पृथ्वीकै मध्य रूपमई श्वेत छत्रकै आकारि मनुक्ष क्षेत्र समान गोल पैंतालीस लाख योजन प्रमाण व्यासकौं धरैं सिद्ध क्षेत्र है। ताकी मोटाई मध्यविषै आठ योजन प्रमाण है। अन्यत्र सर्वत्र अंत पर्यंत क्रमतैं घटती घटती मोटाई है। भाव यहु—जैसैं पृथ्वीविषै शिला हो है तैसैं आठवीं पृथ्वीविषै वीचिमैं सिद्धक्षेत्र रूप सुपेद शिला है। सो वीचिमैं आठ योजन मोटी है क्रमतैं घटती घटती अंतविषै थोडी मोटी है। सो उपरि तल तौ समानरूप है नीचेतैं घाटि बाधि है ऐसा जानना ॥ ५५७ ॥

उत्ताणट्ठियमंते पत्तं व तणु तदुवरि तणुवादे।
अट्ठगुणड्ढा सिद्धा चिट्ठंति अणंतसुहतित्ता ॥ ५५८ ॥
उत्तानस्थितमंते पात्रमिव तनु तदुपरि तनुवाते।
अष्टगुणाढ्याः सिद्धाः तिष्ठंति अनंतसुखतृप्ताः ॥ ५५८ ॥

**अर्थ**—अंतविषै तनुरूप है थोड़ा मोटा है। जैसैं ऊंचा औंधातिष्टया पात्र कहिए कटोरा तीह समान है। बहुरि तीह सिद्धक्षेत्रकै उपरिवर्ती जो तनुवात तिहविषै सम्यक्त्वादि अष्ट गुणनि करि संपूर्ण अनंत सुख करि तृप्त ऐसे सिद्ध भगवान तिष्टैं हैं ॥ ५५८ ॥

आगैं अनंत सुख करि तृप्तपणांविषै दृष्टांत दोय गाथानि करि कहैं हैं;—

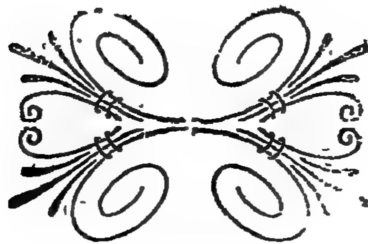
एयं सत्थं सव्वं सत्थं वा सम्ममेत्थ जाणंता ।
तिव्वं तुस्संति णरा किण्ण समत्थत्थतच्चण्हू ॥ ५५९ ॥
एकं शास्त्रं सर्वं शास्त्रं वा सम्यगत्र जानंतः ।
तीव्रं तुष्यंति नराः किं न समस्तार्थतत्त्वज्ञाः ५५९ ॥

**अर्थ**—एक शास्त्र वा सर्व शास्त्रकों सम्यक प्रकार इस लोकविषै जानते थके मनुक्ष तीव्र संतोष पावै हैं। तौ समस्त पदार्थनिका तत्वस्वरूपके ज्ञायक सिद्ध ते कैसैं संतोप न पावैं ? अपि तु पावैं ही पावैं। **भावार्थ**—सुख है सो सत्यज्ञानजनित है। इहां संसारविषै भी सत्यज्ञान होतैं ही सुख हो है। तौ सिद्ध अनंत ज्ञानवान हैं तिनकैं सुख होय ही होइ ॥ ५५९ ॥

चक्किकुरुफणिसुरिंदेसहमिंदे जं सुहं तिकालभवं ।
तत्तो अणंतगुणिदं सिद्धाणं खणसुहं होदि ॥ ५६० ॥
चक्रिकुरुफणिसुरेंद्रेषु अहमिंद्रे यत् सुखं त्रिकालभवं ।
ततो अनंतगुणितं सिद्धानां क्षणसुखं भवति ॥ ५६० ॥

**अर्थ**—चक्रवर्तीका सुखतैं भोगभूमियाके सुख अनंत गुणा है। तातैं धरणेन्द्रकै सुख अनंत गुणा है। तातैं देवेन्द्रकै सुख अनंतगुणा है। तातैं अहमिंद्रनिकैं सुख अनंत गुणा है। ऐसैं इनविषै जो अनंत अनंत गुणा सुख है। तीह अतीत अनागत वर्त्तमानकालसंबंधी सर्व सुखकों एकठा करिए तातैं सिद्धनिकैं क्षणमात्र करि उपज्या सुख अनंत गुणा है। सो यहु भी उपदेश मात्र कथन है। वहुरि औरनिकै सुख साकुल है सिद्धनिकै सुख निराकुल है। तातैं सो सुख वचन अगोचर ही जानना। इति वैमानिकदेवनिका अधिकार समाप्त भया ॥ ५६० ॥

इति श्रीनेमिचंद्राचार्यविरचित त्रिलोकसारमें पांचमां वैमानिकदेवनिके
लोकका अधिकार समाप्त भया: ॥ ५ ॥



# ॥ अथ नरतिर्यग्लोकाधिकार ॥ ६ ॥

अथ यातैं परै पाया है अवसर जानैं ऐसा मनुष्य लोक तिर्यक लोकका निरूपण करनेंका अभिलाप संयुक्त आचार्य सो प्रथम ही दोऊ लोकविषै तिष्ठते जिन मंदिर तिनकी स्तुतिपूर्वक संख्या कहै है;—

**णमह णरलोयजिणघर चत्तारि सयाणि दोविहीणाणि ।**
**बावण्णं चउ चउरो णंदीसुर कुंडले रुचगे ॥ ५६१ ॥**

नमत नरलोकजिनगृहाणि चत्वारि शतानि द्विविहीनानि ।
द्वापंचाशत् चत्वारि चत्वारि नंदीश्वरे कुंडले रुचके ॥ ५६१ ॥

**अर्थ**—मनुष्य लोकविषै दोय घाटि च्यारि सै जिनमंदिर हैं । बहुरि नंदीश्वरद्वीप कुंडलगिरि रुचकद्वीपविषै क्रमतैं तिर्यक् लोकसंबंधी बावन च्यारि च्यारि जिनमंदिर हैं। तिन सर्व जिनमंदिरनिकौं तुम नमस्कार करहु ॥ ५६१ ॥

आगैं मनुष्य लोकविषै जिनमंदिर कहां कहां हैं सो कहैं हैं;—

**मंदरकुलवक्खारिसुमणुसुत्तररुप्पजंबुसामलिसु ।**
**सीदी तीसं तु सयं चउ चउ सत्तरिसयं दुपणं ॥ ५६२ ॥**

मंदरकुलवक्षारेषुमानुषोत्तरजंबूशाल्मलिषु ।
अशीतिः त्रिंशत् तु शतं चत्वारि चत्वारि सप्ततिशतं द्विपंच ॥ ५६२ ॥

**अर्थ**—मेरु पांच कुलाचल तीस गजदंत सहित वक्षारगिरि एकसो इष्वाकार च्यारि मानुषोत्तर एक विजयार्द्धपर्वत एकसौ सत्तरि जंबूवृक्ष पांच शाल्मली वृक्ष पांच इनविषै अनुक्रमतैं असी तीस एकसौ च्यारि च्यारि एकसौ सत्तरि पांच पांच जिनमंदिर हैं ॥ ५६२ ॥

आगैं अब कहिए हैं अर्थ ते सर्व मेरुका कथनकै आश्रय है तातैं प्रथम ही तिन मेरुगिरिनिकौं प्रतिपादन करैं हैं;—

**जंबूदीवे एक्को इसुकयपुव्ववरचावदीवदुगे ।**
**दो दो मंदरसेला बहुमज्झगविजयबहुमज्झे ॥ ५६३ ॥**

जंबूद्वीपे एकः इषुकृतपूर्वापरचापद्वीपद्विके ।
द्वौ द्वौ मंदरशैलौ बहुमध्यगविजयबहुमध्ये ॥ ५६३ ॥

**अर्थ**—जंबूद्वीपविषै एक मेरुगिरि है, बहुरि धातुकी खंड अर पुष्करार्द्ध इन दोऊ द्वीपनिविषै दक्षिण उत्तर दिशानै दोय दोय इष्वाकार पर्वत हैं । तिनि करि दोय भाग होइ पूर्व पश्चिमविषै दोय दोय धनुषाकार क्षेत्रविषै दोय दोय मेरुगिरि हैं । तहां भी ते मेरु कहां तिष्टैं हैं । भरतादि क्षेत्रनिकै अतिशय करि मध्य तिष्टतो विदेहक्षेत्र ताहका अत्यंत मध्य प्रदेशविषै तिष्टै हैं ॥ ५६३ ॥

आगैं तिन मेरुनिका दोऊ पार्श्वनिविषै तिष्टते क्षेत्रनिके नाम कहैं हैं;—

**दक्खिणदिसादु भरहो हेमवदो हरिविदेहरम्मो य।**
**हइरण्णवदेरावदवस्सा कुलपव्वयंतरिया ॥ ५६४ ॥**

दक्षिणदिशातः भरतो हैमवतः हरिविदेहरम्यश्च।
हैरण्यवदैरावतवर्षाः कुलपर्वतांतरिताः ॥ ५६४ ॥

अर्थ—तिन मेरुनिकी दक्षिण दिशातैं लगाय क्रमतैं भरत १ हैमवत १ हरि १ विदेह १ रम्यक १ हैरण्यवत १ ऐरावत १ ऐसैं ए वर्ष क्षेत्र हैं। ते ए वीचि वीचि हिमवत आदि कुलाचलनिकरि अंतरालकौ धरै हैं। भरत हैमवतके वीचि हिमवत कुलाचल है, हैमवत हरिके वीचि महाहिमवत है। ऐसैं ही सात क्षेत्रनिकै वीचि छह कुलाचल जाननैं। जंबूद्वीपधातुकीखंड पुष्करार्धविषै मेरुक्षेत्र कुलाचल ऐसैं जाननें ॥ ५६४ ॥

आगैं तिन कुलाचलनिका नामादिक गाथा दोय करि कहैं हैं;—

**हिमवं महादिहिमवं णिसहो णीलो य रुम्मि सिहरी य।**
**मूलोवरि समवासा मणिपासा जलणिहिं पुट्ठा ॥ ५६५ ॥**

हिमवान् महादिहिमवान् निषधः नीलश्च रुक्मी शिखरी च।
/ मूलोपरि समव्यसा मणिपार्श्वा जलनिधिं स्पृष्टाः ॥ ५६५ ॥

अर्थ—हिमवत १ महाहिमवत १ निषध १ नील १ रूक्मी १ शिखरी १ ए छह कुलाचल हैं। ते ए सर्व मूलतैं उपरि पर्यंत सर्वत्र समान व्यासकौं धरैं हैं। भीति समान नीचै तैं उपरि-पर्यंत समान चौड़े हैं। वहुरि मणि पार्श्वाः कहिए जिनका अंत प्रदेशमणिमय हैं। बहुरि ते समुद्रकौं स्पर्शे हैं। जिनका दोऊ पार्श्व समुद्रकों स्पर्श करि रहे हैं। तहां जंबूद्वीपविषै कुलाचलनिके दोऊ पार्श्व लवण समुद्र हीकों स्पर्शैं हैं। धातुकी खंडविषै लवणोद कालोद समुद्रकौं स्पर्शे हैं। पुष्करार्द्धविषै कालोद समुद्र मानुषोत्तर पर्वतकौं स्पर्शे हैं इतनां जाननां ॥ ५६५ ॥

**हेमज्जुणतवणीया कमसो वेलुरियरजदहेममया।**
**इगिदुगचउचउदुगइगिसयतुंगा होंति हु कमेण ॥ ५६६ ॥**

हेमार्जुनतपनीयाः क्रमशः वैडूर्यरजतहेममयाः।
एकद्विकचतुश्चतुर्द्विकैकशततुंगा भवंति हि क्रमेण ॥ ५६६ ॥

अर्थ—हिमवत् आदि कुलाचल हेम कहिए सुवर्ण समान वर्ण धरै है महाहितवत् अर्जुन कहिए रूपासमान स्वेतवर्ण धरै है निषध तपनीय कहिए ताया सोनां समांन कूकड़ाकी किलंगी सदृश वर्ण धरै है। नील वैडूर्य कहिए पन्नां समान मोरका कंठ सदृश वर्ण धरै हैं। रुक्मी रजत कहिए रूपा समान श्वेतवर्ण धरै है। शिषरी हेम कहिए सोना समान वर्ण धरै है। ऐसैं ए पर्वतनिके क्रमतैं वर्ण हैं। वहुरि हे हिमवत् आदि पर्वतनिका क्रमतैं एकसौ दोयसै च्यारिसै दोयसै एकसौ योजन उचाईका प्रमाण है ॥ ५६६ ॥

अव हिमवत् आदि कुलाचलनिकै उपरि तिष्ठै है द्रह तिनके नाम कहैं हैं;—

पउमाय महापउमा तिगिंछ केसरिं महादिपुण्डरिया।
पुंडरिया य दहाओ उवरि अणुपव्वदायामा ॥ ५६७ ॥
पद्मो महापद्मः तिगिंछः केसरिः महादिपुंडरीकः।
पुंडरीकश्च ह्रदा उपरि अनुपर्वतायामाः ॥ ५६७ ॥

**अर्थ**—तिन हिमवत् आदि पर्वतनिकै उपरि क्रमतैं पद्म १ महापद्म १ तिगिंछ १ केसरि १ महा पुंडरीक १ पुंडरीक १ ए द्रह हैं ते पर्वत अनुसारि हीन अधिक लम्बाईका प्रमाण धरैं तिष्टै हैं ॥५६७॥

आगैं तिन द्रहनिका व्यासादिककौं प्रतिपादन करत संता तिन द्रहनिविषै तिष्टते कमल तिनका स्वरूपकौं निरूपैं हैं;—

वासायामोगाढं पणदसदसमहदपव्वदुदयं खु।
कमलस्सुदओ वासो दोविय गाहस्स दसभागो ॥ ५६८ ॥
व्यासायामागाधाः पंचदशदशमहत्पर्वतोदयाः खलु।
कमलस्योदयः व्यासः द्वावपि गाधस्य दशभागौ ॥ ५६८ ॥

**अर्थ**—तिन द्रहनिका व्यास अर आयाम अर अगाध क्रमतैं अपनें अपनें पर्वतकी उचाईतैं पांच गुणां दशगुणां दशवैं भाग प्रमाण जाननें। भावार्थ—हिमवत आदि पर्वतनिका उचाईका प्रमाण एक सौ दोयसै च्यारिसै च्यारिसै दोयसै एकसौ योजन प्रमाण है। तीहस्यौं पांच गुणा पद्मादि द्रहनिकी चौड़ाईका प्रमाण जाननां। सो क्रमतैं पांचसै हजार दोय हजार दोय हजार हजार पांचसै योजन प्रमाण चौड़े हैं। बहुरि दश गुणां लंबाईका प्रमाण जाननां। सो क्रमतैं एक हजार दोय हजार च्यारि हजार च्यारि हजार दोय हजार एक हजार योजन प्रमाण लंबे हैं। बहुरि दशवें भागि ऊंडाईका प्रमाण जाननां। सो क्रमतैं दश वीस चालीस चालीस वीस दश योजन प्रमाण ऊंडे हैं। बहुरि तिन द्रहनिविषै कमल हैं। तिनका उचाईका प्रमाण अर चौड़ाईका प्रमाणए दोऊ अपनैं अपनैं द्रहका अगाध प्रमाणकै दशवैं भाग प्रमाण है। सो पद्मादि द्रहनिविषै क्रमतैं एक दोय च्यारि च्यारि दोय एक योजन प्रमाण कमल ऊंचे अर इतनेंही चौड़े जाननें ॥ ५६८ ॥

आगैं तिन कमलनिका विशेषस्वरूप गाथा दोय करि कहैं हैं;—

णियगंधवासियदिसं वेलुरियविणिम्मिउच्चणालजुदं।
एकारसहस्सदलं णववियसियमत्थि दहमज्झे ॥ ५६९ ॥
निजगंधवासितदिशं वैडूर्यविनिर्मितोच्चनाल्युतम्।
एकादशसहस्रदलं नवविकासितमस्ति ह्रदमध्ये ॥ ५६९ ॥

**अर्थ**—निज सुगंध करि वासित करी है दिशा जानैं ऐसा बहुरि वैडूर्यमणि करि निर्मापित जो ऊंची नाली तीह करि संयुक्त बहुरि ग्यारह अधिक एक हजार पत्र जाकै पाईए बहुरि नवा-विकसायमान सारिखा ऐसा कमल तिन द्रहनिकै मध्य हैं। सो कमल पृथ्वी साररूप है वन-स्पतीरूप नांहीं हैं ॥ ५६९ ॥

आगैं इस ही अनुसारि गुण धरैं प्रक्षेप गाथा है;—

दहमज्झे अरविंदयणालं वादालकोसमुव्विद्धं ।
इगिकोसं वाहल्लं तस्स मुणालं तु रजदमयं ॥ ५७० ॥

ह्रदमध्ये अरविंदकनालं द्वाचत्वारिंशत्कोशोत्सेधम् ।
एककोशं वाहल्यं तस्य मृणालं त्रिः रजतमयम् ॥ ५७० ॥

अर्थ—पद्मद्रहके मध्य कमलकी नाली वियालीस कोश ऊंची है एक कोश मोटी है। वहुरि तिसका मृनाल तीन कोशका मोटा रूपामई श्वेतवर्ण है ॥ ५७० ॥

कमलदलजलविणिग्गयतुरियुदयं वास कण्णियं तत्थ ।
सिरिरयणगिहं दिग्घति कोसं तस्सद्धमुभयजोगदलं ॥ ५७१ ॥

कमलदलजलविनिर्गततुर्योदयः व्यासः कर्णिकायाः तत्र ।
श्रीरत्नगृहं दैर्घ्यत्रिकं क्रोशः तस्यार्धमुभययोगदलं ॥ ५७१ ॥

अर्थ—कमलका उत्सेधका अर्द्ध प्रमाण सोही नालीकी जल विनिर्गति है । भावार्थ—वियालीस कोश नाली ऊंची है ताके साढ़ा दश योजन भए। तहां दश योजन तौ नाली जलविषै मग्न है अर आध योजन नाली जलतैं उपरि है सोई कमलकी उचाई एक योजन कही थी। ताका आधा प्रमाण आध योजन है । वहुरि तिस कमलकी जो कर्णिका ताकी उचाई व चौड़ाई कमल चतुर्थांश प्रमाण है सो कमल एक योजन उदय व्यास धरै ताकी चौथाई एक कोश प्रमाण कर्णिकाका उदयवा व्यास जाननां । वहुरि तिस कार्णिका उपरि श्रीदेवीका रत्नमई मंदिर है । तिस मंदिरका दीर्घ त्रिक कोश ताका आधा उभय योगका आधा प्रमाण है । भावार्थ—श्रीदेवीका मंदिर एक कोस लंबा है । आध कोश चौड़ा है पौंण कोश ऊंचा है । ऐसैं पद्म द्रहविषै कथन किया, अन्य द्रहनिविषै ऐसैं ही कथन जाननें प्रमाण यथा संभव जाननां ॥ ५७१ ॥

आगैं तिन द्रहनिविषै जे कमल तिनविषै जे देवी वसै हैं तिनके नाम वा तिनका स्थितिपूर्वक तिनका परिवार कहैं हैं;—

सिरि हिरि धिदि कित्तीवि य वुद्धी लच्छी य पल्लठिदिगाओ ।
लक्खं चत्तसहस्सं सयदहपण पउमपरिवारा ॥ ५७२ ॥

श्रीः ह्रीः धृतिः कीर्तिः अपि च वुद्धिः लक्ष्मीः च पल्यस्थितिकाः ।
लक्षं चत्वारिंशत्सहस्रं शतदशपंच पद्मपरिवारः ॥ ५७२ ॥

अर्थ—पद्मादि द्रह संवंधी कमलनिकैविषै क्रमतैं श्री १ ह्री १ धृति १ कीर्ति १ वुद्धि १ लक्ष्मी १ ए हैं नाम जिनके ऐसी देवांगना वसै हैं । ते पल्य प्रमाण आयुकों धरैं हैं । वहुरि एक लाख चालीस हजार एकसो पंद्रह तिस एक कमलके परिवाररूप तिस ही द्रहविषै अन्य कमल हैं ॥ ५७२ ॥

आगैं तिन परिवार कमलनिविषै तिष्ठता श्रीदेवीका परिवार ताहि गाथा करि च्यारि कहैं हैं;—

आइच्चचंदजदुपहुदीओ तिप्परिसमग्गिजमणिरुदी ।
बत्तीस ताल अडदाल सहस्सा कमलममरसमं ॥ ५७३ ॥

आदित्यचंद्रजतुप्रभृतयः त्रिपारिषदाः अग्नियमनैर्ऋत्यां।
द्वात्रिंशत् चत्वारिंशत् अष्टचत्वारिंशत्सहस्राणि कमलानि अमरसमानि ॥ ५७३ ॥

**अर्थ**—आदित्य १ चन्द्र १ जतु इनकौं आदि दे करि जे तीन प्रकार परिषद देव हैं ते मूल कमलतैं अग्नि यमनैं ऋति दिशानिविषै तिष्ठै हैं। ते अभ्यन्तर परिषद देव बत्तीस हजार हैं। मध्य पारिषद देव चालीस हजार हैं। बाह्य पारिषद देव अठतालीस हजार हैं। बहुरि तिनके रहनेंके कमल तिन देवनिकै समान जाननें। एक एक कमल उपरि एक एक पारिषद देवका मंदिर है ५७३

**आणीयगेहकमला पच्छिमदिसि सग गयस्सरहवसहा।**
**गंधव्वणच्चपत्ती पत्तेयं दुगुण सत्तकक्खजुदा ॥ ५७४ ॥**

आनीकगेहकमलानि पश्चिमदिशि सप्त गजाश्वरथवृषभाः।
गंधर्वनृत्यपत्तयः प्रत्येकं द्विगुणसप्तकक्षयुताः ॥ ५७४ ॥

**अर्थ**—आनीक जातिके देवनिके मंदिर सहित सात कमल मूल कमलतैं पश्चिम दिशाविषै है ते आनीक हाथी १ घोड़ा १ रथ बैल १ गंधर्व १ नृत्यकी १ पयादा १ ऐसैं सात प्रकार हैं। तहां एक एक आनीकविषै सात सात कक्ष हैं। तहां प्रथम कक्षविषै अपनां सामानिकनिके समान च्यारि हजार हैं। बहुरि द्वितीयादि कक्षविषै दूणा दूणा प्रमाण जाननां ॥ ५७४ ॥

**उत्तरदिसि कोणदुगे सामाणियकमल चदुसहस्समदो।**
**अब्भंतरे दिसं पडि पुह तेत्तियमंगरक्खपासादा ॥ ५७५ ॥**

उत्तरदिशि कोणद्विके सामानिककमलानि चतुःसहस्रमतः।
अभ्यंतरे दिशं प्रति पृथक् तावन्मात्रांगरक्षप्रासादाः ॥ ५७५ ॥

**अर्थ**—उत्तर दिशाका भागविषै तिष्ठते दोऊ कोण तिनविषैं सामानिक देवनिके कमल च्यारि हजार हैं। बहुरि इन कमलनिकैं अभ्यन्तर मूल कमलकी तरफ एक एक दिशा प्रति तिनके ही च्यारि च्यारि हजार अंगरक्षकनिके कमलनि उपरि मंदिर हैं ॥ ५७५ ॥

**अब्भंतरदिसि विदिसे पडिहारमहत्तरट्ठसयकमलं।**
**मणिदलजलसमणालं परिवारं पउममाणद्धं ॥ ५७६ ॥**

अभ्यन्तरदिशि विदिशि प्रतिहारमहत्तराणामष्टशतकमलानि।
मणिदलजलसमनालं परिवारं पद्ममानार्धम् ॥ ५७६ ॥

**अर्थ**—तिन अंगरक्षक कमलनितैं अभ्यन्तर मूल कमलकै समीप दिशा वा विदिशानिविषै प्रतीहार महत्तरनिकैं एक सो आठ कमल हैं। **भावार्थ**—एक एक दिशाविषै चौदह चौदह अर एक एक विदिशाविषै तेरह तेरह मुख्य प्रतीहारनिके कमल हैं। इहां ए कमल ऐसैं जाननें। बहुरि ए सर्व परिवार कमल मणि मई रत्ननि करि संयुक्त हैं। अर जलकी उंडाई समान ऊंची हैं नाली जिनकी ऐसे हैं। जलतैं उपरि ऊंचे नांहीं हैं। बहुरि परिवार कमलनिका व्यासादिकरूप जो विशेष स्वरूप सो मुख्य कमलतैं अर्द्ध प्रमाण सर्व है ॥ ५७६ ॥

**सिरिगिहदलमिदरगिहं सोहम्मिदस्स सिरिहिरिधिदीओ ।**
**कित्ती बुद्धी लच्छी ईसाणहिवस्स देवीओ ॥ ५७७ ॥**

श्रीग्रहदलमितरगृहं सौधर्मेन्द्रस्य श्रीह्रीधृतयः ।
कीर्तिबुद्धिलक्ष्म्यः ईशानाधिपस्य देव्यः ॥ ५७७ ॥

**अर्थ**—श्रीदेवीका मंदिरका जो व्यासादिक प्रमाण ताका आधा परिवारके ग्रहनिका व्यासादिक प्रमाण है ऐसैं ही अन्यत्र जाननां । बहुरि श्री १ ह्री १ धृति १ ए तीन तौ सौधर्म इंद्रकी देवी हैं । कीर्ति १ बुद्धि १ लक्ष्मी १ ए तीन ईशान अधिपकी देवी हैं ॥ ५७७ ॥

आगैं तिन द्रहनिविषै उत्पन्न भई जे महानदी तिनके नाम गाथा दोय करि कहैं हैं;—

**सरजा गंगासिंधू रोहि तहा रोहिदास णाम णदी ।**
**हरि हरिकंता सीदा सीदोदा णारि णरकंता ॥ ५७८ ॥**

सरोजाः गंगासिंधू रोहित्तथा रोहितास्या नाम नदी ।
हरित् हरिकांता सीता सीतोदा नारी नरकाता ॥ ५७८ ॥

**अर्थ**—सरोवरनितैं उत्पन्न भई ऐसी नदी गंगा १ सिंधु १ रोहित १ रोहितास्या १ हरित १ हरिकांता १ सीता १ सीतोदा १ नारी १ नरकांता ॥ ५७८ ॥

**सरिदा सुवण्णरूप्पयकूला रत्ता तहेव रत्तोदा ।**
**पुव्वावरेण कमसो णाभिगिरिपदक्खणेण गया ॥ ५७९ ॥**

सरितः सुवर्णरूप्यकूला रक्ता तथैव रक्तोदा ।
पूर्वापरेण क्रमशो नाभिगिरिप्रदक्षिणेन गताः ॥ ५७९ ॥

**अर्थ**—सुवर्णकूला १ रूप्यकूला १ रक्ता १ रक्तोदा १ ए सरितः कहिए चौदह महानदी हैं ते क्रमतैं पूर्वैं कही गंगा रोहित सीता नारी सुवर्णकूला रक्ता ए तौ पूर्वदिशा मुख करि अर अवशेष पीछैं कही सात नदी ते पश्चिम मुख करि क्षेत्रनिके वीचि तिष्टते जे पर्वत तिनकी प्रदक्षिणा करि समुद्रकों प्राप्त भई हैं ॥ ५७९ ॥

आगैं तिन नदीके दोऊ तटनिका स्वरूप कहैं हैं;—

**पुण्णागणागपूगीकंकेल्लितमालकेलितंबूली ।**
**लवलीलवंगमल्लीपहुदी सयलणदिदुतडेसु ॥ ५८० ॥**

पुंनागनागपूगीकंकेल्लितमालकदलीतांबूली ।
लवलीलवंगमल्लिप्रभृतयः सकलनदीद्वितटेपु ॥ ५८० ॥

**अर्थ**—पुन्नाग नागकेशर सुपारी अशोक तमाल केलि तांबूली स्थूल डोडा लवंग मालती आदि वृक्ष समस्त नदीनिके दोऊ तटनिविषै पाइए हैं ॥ ५८० ॥

आगैं किस २ द्रहविषै ए नदी उत्पन्न भई हैं सो कहैं हैं;—

**गंगादु रोहिदस्सा पउमे रत्तदु सुवण्णमंतदहे ।**
**सेसे दो दो जोयणदलमंतरिदूण णाभिगिरिं ॥ ५८१ ॥**

गंगाद्वे रोहितास्या पद्मे रक्ताद्वे सुवर्णा अंतह्रदे।
शेषेषु द्वे द्वे योजनदलमंतरित्वा नाभिगिरिम्॥ ५८१॥

**अर्थ**—गंगा सिंधु रोहितास्या ए तीन नदी तौ पद्मद्रहविषै उपजी हैं। बहुरि रक्ता रक्तोदा सुवर्णकूला ए तीन नदी अंतका पुंडरीक द्रहविषै उत्पन्न भई हैं। अवशेष द्रहनिविषै दोय दोय नदी उत्पन्न भई हैं। तहां गंगा सिंधु रक्ता रक्तोदा इन च्यारि नदीविना अवशेष नदी क्षेत्रनिके बीचि तिष्टता जो नाभिगिरि ताकौं आध योजन छोडि समुद्रकौं गई हैं। इहां विदेहविषै मेरुगिरिका नाम इहां नाभिगिर जाननां। हैमवत हरि रम्यक हैरण्यवतविषै नाभिगिरि है ही सो द्रहनि सौ नदी निकसि नाभिगिरिके सन्मुख सूधी आइ आध योजन उरैतैं मुडि तीह नाभिगिरिकी अर्द्ध प्रदाक्षिणा करि समुद्रकौं प्राप्त हो हैं। बहुरि भरत ऐरावतविषै नाभिगिरि नांहीं तातैं गंगासिंधु रक्तारक्तोदा इनका वर्णन किया है॥५८१॥

आगैं तिनविषै गंगानदीकी उत्पत्ति अर ताके गमनका विधान गाथा तीन करि कहैं हैं;—

**वज्जमुहदो जणित्ता गंगा पंचसयमेत्थ पुव्वमुहं।**
**गत्ता गंगाकूडं अविपत्ता जोयणद्धेण॥ ५८२॥**

वज्रमुखतः जनित्वा गंगा पंचशतमत्र पूर्वमुखं।
गत्वा गंगाकूटं अप्राप्य योजनार्धेन॥ ५८२॥

**अर्थ**—पद्मनामा द्रहका पूर्वदिशाविषै जो वज्रद्वार तीहस्यौं गंगानदी उपजि-निकसि करि इस हिमवत् पर्वतकै ऊपरि पूर्व दिशा सनमुख पांचसै योजन जाइ हिमवत् पर्वत उपरि गंगा नामा जो कूट है ताकौं आध योजन अप्राप्त होइ गंगा कूटसौं आध योजन उरैं हीतैं मुडि करि॥ ५८२॥

कहा सो कहैं हैं;—

**दक्खिणमुहं चलित्ता जोयणतेवीससहियपंचसयं।**
**साहियकोसद्धजुदं गत्ता जा विविहमणिरूवा॥ ५८३॥**

दक्षिणमुखं चलित्वा योजनत्रयोविंशतिसहितपंचशतम्।
साधिकक्रोशार्धयुतं गत्वा या विविधमणिरूपा॥ ५८३॥

**अर्थ**—तहांसौं दक्षिण दिशाकै सनमुख तिस हिमवत पर्वत ही उपरि चालि करि तेईस अधिक पांचसै योजन अर साधिक आध कोश जाइ पर्वतकै तटि गई। याकी वासना कहिए हैं। भरतका प्रमाण पांचसै छवीस योजन अर छह उगणीसवां भाग ताकौं दूणा किएं हिमवत् पर्वतका व्यास एक हजार बावन योजन अर बारह उगणीसवां भाग तामैं नदीका व्यास छह योजन एक कोश घटाएं एक हजार छियालीस योजन रहे ताके तौ आधा किएं पांचसै तेईस तौ योजन भए अवशेष बारहका उगणीसवां भागकौं चौगुणा करि क्रोश किएं अठतालीस कोशका उगणीसवां भाग भया ताके दोय कोस अर दशका उगणीसवां भाग भया तामैं एक कोश तौ नदीका व्यासविषै दिया अवशेष एक कोश अर दशका उगणीसवां भाग रह्या ताका आधा आध कोश अर पांच उगणीसवां भाग भया। यातैं पांचसै तेईस योजन अर साधिक आध कोश रह्या। **भावार्थ**—जहां गंगानदी मुडी है तहां हिमवतका व्यासविषै गंगाका व्यास घटाइ अवशेष

थाधा तौ उत्तरनैं रह्या अर आधा दक्षिणनैं रह्या सो गंगा दक्षिणदिशाकों जाइ पर्वतका तटकों प्राप्त भई। तहां पर्वतका तटविषै जिह्विका नामा प्रणाली नानाप्रकार मणि मई है ॥ ५८३ ॥

कोसदुगदीहवहला वसहायारा य जिम्हिया रुंदा।
छज्जोयणं सकोसं तिस्से गंतूण पडिदा सा ॥ ५८४ ॥

क्रोशद्वयदीर्घबाहल्या वृषभाकारा च जिह्विका रुंद्रा।
पड्योजनं सक्रोशं तस्यां गत्वा पतिता सा ॥ ५८४ ॥

अर्थ—सो जिह्विका नामा प्रणाली दोय कोश लंबी है। अर दोय ही कोश बाहल्य कहिए ऊंची है। बहुरि वृषभाकारा कहिए गऊमुखकै आकार है। कोश सहित छह योजन चौड़ी है। तिह प्रणालीविषै जाइ सो गंगानदी तिस हिमवत पर्वततैं पड़ी है ॥ ५८४ ॥

आगैं प्रणालीका वृषभाकारकौं सार्थीक करैं हैं;—

केसरिमुहसुदिजिब्भादिट्ठी भूसीसपहुदिगोसारिसा।
तेणिह पणालिया सा वसहायारेत्ति णिद्दिट्ठा ॥ ५८५ ॥

केशरिमुखश्रुतिजिह्वादृष्टयः भूशीर्षप्रभृतयः गोसदृशाः।
तेनेह प्रणालिका सा वृषभाकारा इति निर्दिष्टा ॥ ५८५ ॥

अर्थ—प्रणालिकाकै मुख कान जीभ नेत्रनिका आकार तौ सिंहके समान है। अर भौंह मस्तक आदिका आकार गऊ समान है। तीह कारण करि इहां सो प्रणालिका मुख्यपनै वृषभाकार ऐसी कही है ॥ ५८५ ॥

आगैं पड़ी जो नदी ताके पड़नेंका स्वरूप गाथा पांच करि कहैं हैं;—

भरहे पणकदिमचलं मुच्चा काहलोवमा दहव्वासा।
गिरिमूले दहगाहं कुंडं वित्थारसट्ठिजुदं ॥ ५८६ ॥

भरते पंचकृतिमचलं मुक्त्वा काहलोपमा दशव्यासा।
गिरिमूले दशगाधं कुंडं विस्तारषष्ठियुतम् ॥ ५८६ ॥

अर्थ—भरत क्षेत्रविषै पंचकृति कहिए पचीस योजन हिमवत् पर्वतकों छोड़ि-उरैं काहलाकै आकारि होइ दश योजनकी चौड़ाई लिएं गंगानदी पड़ै है। कहां पड़ै है सो कहैं हैं। हिमवत पर्वतका मूलविषै दश योजन ऊंडा साठि योजन चौड़ा गोल कुंड है ॥ ५८६ ॥

मज्झे दीओ जलदो जोयणदलमुग्गओ दुघणवासो।
तम्मज्झे वज्जमओ गिरी दसुस्सेहओ तस्स ॥ ५८७ ॥

मध्ये द्वीपः जलतः योजनदलमुद्गतः द्विघनव्यासः।
तन्मध्ये वज्रमयः गिरिः दशोत्सेधः तस्य ॥ ५८७ ॥

अर्थ—तीह कुंडकै मध्य जलतैं उपरि आध योजन ऊंचा अर द्विघन कहिए आठ योजन चौड़ा ऐसा गोल द्वीप कहिए टापू है। तीह द्वीपकै मध्य वज्रमई दश योजन ऊंचा पर्वत है तिस पर्वतका ॥ ५८७ ॥

कहा सो कहैं हैं;—

भूमज्झग्गे वासो चदु दुगि सिरिगेहमुवरि तव्वासो।
चावाणं तिदुगेक्कं सहस्समुदओ दु दुसहस्सं॥ ५८८॥
भूमध्याग्रे व्यासः चतुः द्विकं एकं श्रीगेहमुपरि तद्व्यासः।
चापानां त्रिद्विकैकं सहस्रमुदयस्तु द्विसहस्रम्॥ ५८८॥

**अर्थ**—भूमध्य अग्रविषै व्यास च्यारि दोय एक योजनका व्यास है। **भावार्थ**—सो पर्वत नीचैं च्यारि योजन मध्यविषै दोय योजन उपरि एक योजन चौडा है। बहुरि तिह पर्वतकै उपरि श्री देवींका मंदिर है। तिस श्रीमंदिरका चापनिका तीन दोय एक सहस्र है उदय दोय सहस्र है। **भावार्थ**—श्रीमंदिर नीचैं तीन हजार मध्यविषै दोय हजार उपरि एक हजार धनुप प्रमाण चौडा है। अर दोय हजार धनुप ऊंचा है॥ ५८८॥

पणसयदलं तदंतो तद्दारं ताल वास दुगुणुदयं।
सव्वत्थ धणू णेयं दोण्णि कवाला य वज्जमया॥ ५८९॥
पंचशतदलं तदंतरं तद्द्वारं चत्वारिंशत् व्यासं द्विगुणोदयं।
सर्वत्र धनुः ज्ञेयं द्वौ कपाटौ च वज्रमयौ॥ ५८९॥

**अर्थ**—तिस श्रीमंदिरका अभ्यंतरविषै व्यास पांचसै अर ताका आधा प्रमाण है। **भावार्थ**—अभ्यंतर श्रीदेवीका मंदिर साढा सातसै धनुप प्रमाण चौडा है। बहुरि तिसका द्वार चालीस व्यास दूणा उदय संयुक्त है। **भावार्थ**—श्रीमंदिरका द्वार चालीस धनुप चौडा असी धनुप ऊंचा है। ऐसैं सर्वत्र श्रीमंदिरका प्रमाण धनुप प्रमित जाननां। तिंह द्वारकैं दोय वज्रमई कपाट है ५८९॥

सिरिगिहसीसठियंबुजकण्णियसिंहासणं जडामउलं।
जिणमभिसेत्तुमणा वा ओदिण्णा मत्थए गंगा॥ ५९०॥
श्रीगृहशीर्षस्थितांबुजकर्णिकासिंहासनं जटामकुटं।
जिनमभिषेक्तुमना वा अवतीर्णा मस्तके गंगा॥ ५९०॥

**अर्थ**—श्रीमंदिरका मस्तक उपरि तिष्टता कमलकी कणिकाविषै तिष्टता सिंहासन जटा मुकुट जिनबिंब ताहि अभिषेक करनेका मानौं याका मन है ऐसैं जिनबिंबके मस्तक उपरि गंग अवतरैं है। **भावार्थ**—श्रीमंदिरकै उपरि कमल है ताकी कर्णिका उपरि सिंहासन है। तहां जिन-बिंब विराजै है। ताकै उपरि सो गंगा नदी तिस पर्वतसौं पडै है॥ ५९०॥

आगैं कुंडसौं निकसि चाली जो गंगा ताका स्वरूपकौं वा तीहका स्थान स्वरूपकौं गाथा छह करि कहैं हैं;—

कुंडादो दक्खिणदो गत्ता खंडप्पवादणामगुहं।
अडजोयणवित्थिण्णा विणिग्गया कुदवाहिद्दादो॥ ५९१॥
कुंडात् दक्षिणतः गत्वा खंडप्रपातनामगुहाम्।
अष्टयोजनविस्तीर्णा विनिर्गता कुतपाधस्तात्॥ ५९१॥

अर्थ—कुंडसों निकसि दक्षिण दिशा सनमुख सूधी जाइ विजयार्द्ध नामा पर्वतकी खंड प्रपात नामा गुफा ताकी कुतप कहिए देहली ताकै नीचें होय तिस गुफाविषै प्रवेश करि आठ योजन चौडी होत संती गंगा तिस ही गुफाका उत्तर द्वारकी कुतप कहिए देहली तीहकै नीचै होइ करि ही सो गंगा तिस गुफातैं वारैं निकसै है ॥ ५९१ ॥

**दारगुहुच्छयवासा अड वारस पव्वदं व दीहत्तं ।**
**वज्जछवासकवाडदु वेयड्ढगुहा दुगुभयंते ॥ ५९२ ॥**

द्वारगुहोच्छ्रयव्यासौ अष्ट द्वादश पर्वत इव दीर्घत्वं ।
वज्रषट्व्यासकपाटद्वयं विजयार्धगुहा द्विकोभयांते ॥ ५९२ ॥

अर्थ—गुफाका द्वार अर गुफा ताकी उचाई तौ प्रत्येक आठ योजन है अर चौडाई बारह योजन है । बहुरि विजायार्ध पर्वतकी चौडाईका जो प्रमाण तितनां ही गुफाका लंबाईका प्रमाण पचास जोजन है । बहुरि विजयार्द्धकी गुफाके दोऊ अंत द्वारनिविषै प्रत्येक छह छह योजन चौडे दोय वज्र मई कपाट हैं ॥ ५९२ ॥

**उम्मग्गणिमग्गणदी गुहमज्झगकुंडजा दु पुव्ववरे ।**
**जोयणदुगदीहाओ पुसंति उभयंतदो गंगं ॥ ५९३ ॥**

उन्मग्ननिमग्ननद्यौ गुहामध्यगकुंडजे तु पूर्वापरस्याम् ।
योजनद्वयदैर्ध्ये स्पृशतः उभयांततः गंगाम् ॥ ५९३ ॥

अर्थ—उन्मग्न निमग्ननदी पूर्व पश्चिमविषै गुफा मध्यके कुंडतैं उपजि दोऊ तटतैं दोय योजन चौडी होत संती गंगाकौं स्पर्शै हैं । भावार्थ—गुफाकी पूर्व पश्चिमविषै भीतिकै निकटि दोय कुंड हैं । तिनतैं उनमग्न अर निमग्न नामा नदी उपजै हैं । सो तहांसौं चालि सूधी गंगाके दोऊ तटनिविषै आइ गंगाविषै प्रवेश करै हैं । ते नदी दोय योजन चौडी हैं ॥ ५९३ ॥

**णियजलपवाहपडिदं दव्वं गुरुगंपि णेदि उवरि तडं ।**
**जम्हा तम्हा भण्णदि उम्मग्गा वाहिणी एसा ॥ ५९४ ॥**

निजजलप्रवाहपतितं द्रव्यं गुरुकमपि नयति उपरि तटम् ।
यस्मात् तस्मात् भण्यते उन्मग्ना वाहिनी एषा ॥ ५९४ ॥

अर्थ—अपनां जलका प्रवाहविषै पड्या हुवा भारा भी द्रव्यकों जातैं उपरि तटहीकौं प्राप्त करै डूवनैं दे नांहीं तातैं यहु उन्मग्ननामा नदी कहिए हैं ॥ ५९४ ॥

**णियजलभरउवरि गदं दव्वं लहुगंपि णेदि हिट्ठम्मि ।**
**जेण्णं तेण्णं भण्णदि एसा सरिया णिमग्गंति ॥ ५९५ ॥**

निजजलभरोपरि गतं द्रव्यं लघुकमपि नयति अधस्तनं ।
येन तेन भण्यते एषा सरित् निमग्ना इति ॥ ५९५ ॥

अर्थ—अपनां जलका प्रवाहकै उपरि प्राप्त भया हलका भी द्रव्यकौं नीचै प्राप्त करै है । डबोवै है । जिह कारण करि तीहसों या नदी निमग्ना ऐसी कहिए है ॥ ५९५ ॥

तत्तो दक्खिणभरहस्सद्धं गंतूण पुव्वदिसवदणा।
मागहदारंतरदो लवणसमुद्दं पविट्ठा सा ॥ ५९६ ॥
ततो दक्षिणभरतस्यार्धं गत्वा पूर्वादिशावदना।
मागधद्वारांतरतः लवणसमुद्रं प्रविष्टा सा ॥ ५९६ ॥

अर्थ—तीह गुफासों निकासि करि दक्षिण भरतका अर्द्ध पर्यंत तौ सूधी दक्षिण सन्मुख ही गई सो एकसौ उगणीस योजन अर तीन अठ्तीसवां भाग प्रमाण गई। कैसैं ? भरतका प्रमाणमैं ५२६।६÷१९ सौं विजयार्द्धका व्यास५०घटाइ अवशेष ४७६।६÷१९ आधा किएं २३८।÷१९ दक्षिण भरतका प्रमाण हो है। ताका आधा किएं ११९।३÷१९ अर्ध दक्षिण भरतका प्रमाण हो है। बहुरि तीह अर्द्ध दक्षिण भरत ताई आय मुडि करि पूर्व दिशाकों सनमुख होइ द्वीपके कोटका मागध नामा द्वार ताकै मांहीं जाय सो गंगा लवण समुद्रकों प्रवेश करै है ॥ ५९६ ॥

अब सिन्धुनदीके स्वरूपकों निरूपै हैं;—

गंगसमा सिंधुणदी अवरमुहा सिंधुकूडविणिवित्ता।
तिमिसगुहादवरंबुहिमिया पभासक्खदारादो ॥ ५९७ ॥
गंगासमा सिंधुनदी अपरमुखा सिंधुकूटविनिवृत्ता।
तिमिस्रागुहादपरांबुधिमिता प्रभासाख्यद्वारतः ॥ ५९७ ॥

अर्थ—गंगाविषै जो वर्णन कह्या तीह समान ही सिंधु नदी है। सो सर्व वर्णन सिंधुविषै जाननां। इतनां विशेष, जो यहु सिंधु नदी पद्मद्रहके पश्चिम द्वारतैं निकासि पश्चिम सनमुख सिंधु कूटतैं उरैं मुडि करि पर्व्वत पर्यंत आइ कुंडविषै पडि तहांसों निकसि विजयार्ध पर्वतकी तिमिश्र नामा गुफाविषै प्रवेश करि तहांसों निकसि जंबूद्वीपके कोटका प्रभास नाम द्वारतैं पश्चिम समुद्रकों प्राप्त भई। और सर्व वर्णन गंगावत जाननां ॥ ५९७ ॥

आगैं अवशेष नदीनिका स्वरूप कहैं हैं;—

सेसा रुप्पंता दहविस्थारुणचलरुंददलमुवरि।
गंतूण दक्खिणुत्तरमणुपुट्ठा पुव्ववरजलहिं ॥ ५९८ ॥
शेषा रूप्यंता ह्रदविस्तारोनाचलरुंद्रदलमुपरि।
गत्वा दक्षिणोत्तरमनुस्पृष्टाः पूर्वापरजलधिम् ॥ ५९८ ॥

अर्थ—अवशेष रोहित आदि रूप्यकूलापर्यंत नदी अपनां अपनां द्रहका विस्तार करि ऊन जो पर्वतका विस्तार ताका आधा प्रमाण ताईं पर्वतकै ऊपरि दक्षिण उत्तर सनमुख जाइ पीछैं क्षेत्रविषै आधक्षेत्र ताई सूधी जाइ नाभिगिरिकै उरैंतैं मुड़िकरि पूर्व पश्चिम संमुख होइ पूर्व पश्चिम समुद्रकों प्रवेश करै है। तहां भरतक्षेत्रका जो प्रमाण ५२६।६÷१९ ताकों दोय आठ बत्तीस बत्तीस आठ दोय जो हिमवत् आदिकी शलाका तिन करि क्रमतैं गुणें हिमवत् १०५२।१२÷१९ महाहिमवत् ४२१०।१०÷१९ निषद्ध १६८४२।२÷१९ नील १६८४२।२÷१९ रुक्मी ४२१०।१०÷१९ शिपरी १०५२।१२÷१९ का विस्तार हो है यामें अपनें अपनें द्रहके विस्तारका प्रमाण

५००।१०००।२०००।२०००।१०००।५०० घटाएं जो अवशेष रहै ५५२।११÷१९ ३२१०।१०÷१९।१४८४।२÷१९।१४८४२।२÷१९।३२१०।१०÷१९।५५२।१२ ÷१९ ताका आधा किएं जो प्रमाण होय २७६।६÷१९।१६०५।५÷१९।७४२१।१÷१९ ७४२१।१÷१९।१६०५।५÷१९।२७६।६÷१९ तितनी दूर तो नदी पर्वत उपरि आवै है। पीछे अपनां अपनां क्षेत्रविषै होइ समुद्रकों प्रवेश करै है। भावार्थ–रोहित नदी महापद्म द्रहके दक्षिण द्वारतैं निकासि सूधी महा हिमवत्के तटपर्यंत सोल्हसै पांच योजन उगणीसवां भाग तांई आइ हैमवत क्षेत्रविषै कुंडविषै पडि तहांतैं निकासि सूधी नाभिगिरिके उरैं तांई आइ मुडि पूर्व सनमुख होइ समुद्रविषै प्रवेश करै है। बहुरि रोहितास्या नदी पद्मद्रहके उत्तर द्वारतैं निकसि सूधी हिमवत्के तट पर्यंत दोयसैं छिहंतरि योजन छह उगणीसवां भाग तांई आइ हैमवत क्षेत्रविषै कुंडविषै पडि निकासि सूधी नाभिगिरिके उरैं तांई जाइ मुडि करि पश्चिम सन्मुख होइ समुद्रविषै प्रवेश करै है। बहुरि हरित नदी तिगिंछ द्रहके दक्षिण द्वारतैं निकासि सूधी निषद्धके तटपर्यंत चहौत्तरिसै इकईस योजन एक उगणीसवां भाग तांई आइ हरि क्षेत्रविषै कुंडविषै पड़ि निकसि सूधी नाभिगिरिके उरैं तांई जाइ मुड़ि करि पूर्व सनमुख होइ समुद्रविषै प्रवेश करै है। बहुरि हरिकांता नदी महापद्म द्रहके उत्तर द्वारतैं निकसि सूधी महा हिमवतके तट पर्यंत सोल्हसै पांच योजन पांच उगणीसवां भाग तांई आइ हरिक्षेत्रविषै पड़ि निकासि सूधी नाभिगिरिके उरै तांई जाइ मुड़ि करि पश्चिम सन्मुख होइ समुद्रविषै प्रवेश करै है। बहुरि सीता नदी केसरि द्रहके दक्षिण द्वारतैं निकसि सूधी नील पर्वतके तटपर्यंत चहौत्तरिसै इकईस योजन एकका उगणीसवां भाग पर्यंत आइ विदेह क्षेत्रविषै कुंडविषैं पडि सूधी मेरुगिरिका उरां तांई आइ मुडि पूर्व सनमुख होइ इस समुद्रविषै प्रवेश करै है। बहुरि सीतोदा नदी तिगिंछ द्रहके उत्तर द्वारतै निकसि सूधी निषद्धका तटपर्यंत चहौत्तरिसै इकईस योजन एकका उगणीसवां भाग तांई आइ विदेह क्षेत्रविषै कुंडविषै पड़ि सूधी मेरुगिरिका उरां तांई जाइ मुड़ि पश्चिम सन्मुख होइ समुद्रविषै प्रवेश करै है। बहुरि नारी नदी महापुंडरीक द्रहके दक्षिण द्वारतैं निकासि सूधी रुक्मी पर्वतका तट पर्यंत सोल्हसै पांच योजन पांच उगणीसवां भाग पर्यंत आइ रम्यक क्षेत्रविषै पड़ि निकासि सूधी नाभिगिरिका उरां तांई जाइ मुड़ि पूर्व सन्मुख होइ समुद्रविषै प्रवेश करै है। बहुरि नरकांता नदी केसरी द्रहके उत्तर द्वारतैं निकासि सूधी नील पर्वतका तट पर्यंत चहौत्तिरसै इकईस योजन एकका उगणीसवां भाग तांई आइ रम्यक क्षेत्रविषै कुंडविषै पड़ि निकासि सूधी नाभिगिरिका उरां तांई मुड़ि पश्चिम सनमुख होइ समुद्रविषै प्रवेश करै है। बहुरि सुवर्ण कूला नदी पुंडरीक द्रहके दक्षिण द्वारतैं निकासि सूधी शिखरी पर्वतका तट पर्यंत दोयसै छिहंतरि योजन छह उगणीसवां भाग पर्यंत आइ हैरण्यवत क्षेत्रविषै कुंडविषै पड़ि निकासि सूधी नाभिगिरिका उरां तांई आइ मुड़ि करि पूर्व सनमुख होइ इस समुद्रविषै प्रवेश करै है। बहुरि रूप्य कूला नदी महापुंडरीक द्रहके उत्तर द्वारतैं निकासि सूधी रुक्मी पर्वतका तट पर्यंत सोल्हसै पांच योजन पांच उगणीसवां भाग तांई आइ हैरण्यवत क्षेत्रविषैं कुंडविषै पड़ि निकासि सूधी नाभिगिरिका उरां तांई जाइ मुड़ि करि पश्चिम

सनमुख होइ समुद्रविषै प्रवेश करै है। इहां पर्वत उपरि नदी आवनें आदिविषै योजननिका प्रमाण जंबूद्वीप अपेक्षा कह्या है अन्यत्र धातुकीखंड पुष्करार्धविषै प्रमाण भी ऐसै ही यथासंभव जाननां ॥ ५९८ ॥

आगैं रक्ता रक्तोदा आदि नदीनिका प्रणालिका आदिकका प्रमाण कहै हैं;—

गंगादुगं व रत्तारत्तोदा जिम्भियादिया सव्वे।
सेसाणं पि य णेया तेवि विदेहोत्ति दुगुणकमा ॥ ५९९ ॥
गंगाद्विकं व रक्तारक्तोदा जिह्विकादिका सर्वे।
शेषाणामपि च ज्ञेयाः तेपि विदेहांतं द्विगुणक्रमाः ॥ ५९९ ॥

अर्थ—गंगाद्विक जो गंगासिंधु तिनका जैसें वर्णन किया तैसे ही रक्ता रक्तोदाका वर्णन जाननां। विशेष इतना पद्मद्रहकी जायगा पुंडरीक द्रह कहनां हिमवत पर्वतकी जायगा शिखरी कहनां। बहुरि अवशेष जिह्विका आदि प्रमाण विशेष समान जाननें। बहुरि सर्व अवशेष नदीनिके भी प्रणालिका कुंड आदि विशेषनिका व्यासादिकका प्रमाण सो भरत ऐरावत संबंधी नदीनितैं अनुक्रमतै विदेह संबंधी नदीपर्यंत दूणा दूणा जाननां ॥ ५९९ ॥

आगैं तिन नदीनिके तीरनिका स्वरूप गाथा दोय करि कहैं हैं;—

गंगदु रत्तदु वासा सपादछण्णिग्गमे विदेहोत्ति।
दुगुणा दसगुणमंते गाहो वित्थार पण्णंसो ॥ ६०० ॥
गंगाद्वयोः रक्ताद्वयोः व्यासाः सपादषट् निर्गमे विदेहांतम्।
द्विगुणा दशगुणा अंते गाधः विस्तारः पंचाशदंशः ॥ ६०० ॥

अर्थ—आगैं तिन नदीनिका विस्तार कहैं हैं। गंगाद्विक कहिए गंगासिंधु अर रक्ताद्विक कहिए रक्तारक्तोदा इनका व्यास जो चौडाईका प्रमाण सो निर्गमे कहिए द्रहसौं निकसितैं सवा छह योजन है। अर अन्य नदीनिका विदेह संबंधी नदीनि पर्यंत दोय दोय नदीनिका दूणा दूणा क्रमतैं है। बहुरि सर्व नदीनिका अंते कहिए समुद्रविषै प्रवेश करनेंविषै द्रहतैं निकसनेतैं दशगुणा व्यास है। जैसें गंगाका साढा बासठियोजन बहुरि सर्व नदीका गाध कहिए उडाईका प्रमाण सो अपनें अपने व्यासके प्रमाणतैं पचासवैं भाग प्रमाण है जैसें गंगाका आधयोजन। ऐसैं ही अन्यनदीनिका जाननां ॥ ६०० ॥

णदिणिग्गमे पवेसे कुंडे अण्णत्थ चावि तोरणयं।
विंबजुदं उवरिं तु दिक्कण्णावाससंजुत्तं ॥ ६०१ ॥
नदीनिर्गमे प्रवेशे कुंडे अन्यत्र चापि तोरणकम्।
विंबयुतं उपरि तु दिक्कन्यावाससंयुक्तम् ॥ ६०१ ॥

अर्थ—नदीनिका निर्गमे कहिए निकसनेका द्रहका द्वार अर प्रवेश कहिए समुद्रविषै प्रवेश करनेंका द्वीपके कोटका बहुरि, कुंड कहिए कुंडतैं निकसनेंका द्वार बहुरि अन्यत्रापि कहिए और भी जायगां इनविषै उपरि जिन विंब करि संयुक्त अर दिक्कुमारीनिके मंदिरनि करि संयुक्त तोरण हैं ॥ ६०१ ॥

आगैं पूर्व कहे जे वर्ष अर वर्षधर पर्वत तिनके विस्तारका प्रमाण ल्यावनेविषैं करणसूत्र कहैं हैं;—

**तत्तोरणवित्थारो सगसगणदिवाससरिसगो उदओ।**
**वासादु दिवड्ढगुणो सव्वत्थ दलं हवे गाहो ॥ ६०२ ॥**

तत्तोरणविस्तारः स्वकस्वकनदीव्याससदृशकः उदयः।
व्यासात् द्व्यर्धगुण्यः सर्वत्र दलं भवेत् गाधः ॥ ६०२ ॥

**अर्थ**—तिन तोरणद्वारनिका विस्तार जो चौड़ाईका प्रमाण सो तौ अपनां अपनां नदीका व्यास समान है। बहुरि व्यासतैं ड्यौढ गुणां उदय कहिए उचाईका प्रमाण है। जैसे गंगादिकका निर्गम द्वारका तोरण सवा छह योजन चौड़ा अर नव योजन तीन आठवां भाग प्रमाण ऊंचा है। ऐसैं ही अन्यत्र जाननां। बहुरि सर्वत्र तोरणनिका गाध कहिए उड़ाई नीव ताका प्रमाण तौ आध योजन प्रमाण है। इन गंगा आदि नदीनिका ऐसैं गमनादि जाननां॥ ६०२ ॥

ऐसैं कह्या त्रैराशिक करि ल्याया हुवा भरत क्षेत्रविषै व्यासकों कहैं हैं;—

**विजयकुलद्दी दुगुणा उभयंतादो विदेहवस्सोत्ति।**
**गुणपिंडदीवसगगुणगारो हु पमाणफलइच्छा ॥ ६०३ ॥**

विजयकुलाद्रयः द्विगुणा उभयांततः विदेहवर्षान्तं।
गुणपिंडद्वीपस्वकगुणकारो हि प्रमाणफलेच्छाः ॥ ६०३ ॥

**अर्थ**—विजय कहिए क्षेत्र अर कुलाचल पर्व्वत ते दोऊ दक्षिण उत्तर दिशातैं क्रमतैं विदेह क्षेत्र पर्यंत दूणे दूणे हैं। तहां गुणकारका पिंड अर द्वीप अर स्वकीय गुणकार इनकौं प्रमाण फल इच्छा कीजिए इसतै त्रैराशिक करि तिस तिस क्षेत्र वा पर्वतनिका विस्तार जो चौड़ाईका प्रमाण सो ल्यावनां। **भावार्थ**—सर्व गुणकारनिकों जोड़ दिएं एकसौ निवै होइ सो तौ सर्वत्र प्रमाण राशि करिए। बहुरि जंबूद्वीपका व्यास लाख योजन सो सर्वत्र फलराशि करिए। बहुरि दोऊ तरफतैं विदेह पर्यंत दूणा दूणा गुणकार सो भरतका एक हिमवत्का दोय हैमवतका च्यारि महा हिमवत्का आठ हरिका सोलह निषद्धका बत्तीस विदेहका चौसठि नीलका बत्तीस रम्यकका सोलह रुक्मीकों आठ हैरण्यवतका च्यारि शिखरीका दोय ऐरावतका एक गुणकार है। सो इच्छाराशि करिए तहां फल राशिकों इच्छा करि गुणि प्रमाण राशिका भाग दिएं अपनां अपनां क्षेत्र वा कुलाचलका चौड़ाईका प्रमाण आवै है ॥ ६०३ ॥

आगैं तैसे ही त्रैराशिक करि सिद्ध भया विदेहके विष्कंभका अंक ताहि प्रतिपादन करता संता इहातैं उपरि कहिएगे जे विदेह क्षेत्रादिक तिनके प्रमाण ल्यावनेंका विधान कहैं हैं;—

**भरहस्स य विक्खंभो जंबूदीवस्स णउदिसदभागो।**
**पंचसया छव्वीसा छच्च कला ऊणवीसस्स ॥ ६०४ ॥**

भरतस्य च विष्कंभो जंबूद्वीपस्य नवतिशतभागः।
पंचशतानि षड्विंशानि षट् च कला एकोनविंशतेः ॥ ६०४ ॥

अर्थ—भरत क्षेत्रका विष्कंभ जो व्यास सो जंबूद्वीपके व्यासकै एकसौ निवैवां भाग प्रमाण है। सो कैसा है ? पांचसै छव्वीस योजन अर एक योजनका उगणीस भागविषै छह कला प्रमाण भरतका विष्कंभ है ॥ ६०४ ॥

चुलसीदि छतेत्तीसा चत्तारि कला विदेहविक्खंभो
णदिहीणदलं विजयावक्खारविभंगवणदीहा ॥ ६०५ ॥

चतुरशीतिः षट्त्रयस्त्रिंशत् चतस्रः कला विदेहविष्कंभः।
नदीहीनदलं विजयवक्षारविभंगवनदीर्घं ॥ ६०५ ॥

अर्थ—चौरासी छह तेतीस इन अंकनि करि तेतीस हजार छहसै चौरासी योजन ३३६८४ अर एक योजनकी उगणीस कलाविषै च्यारि कला इतना विदेह क्षेत्रका विष्कंभ कहिए चौड़ाईका प्रमाण है। तिहकै बीचि सीता वा सीतोदा नदीका प्रवाह है। तातै विदेह विष्कंभमैंसौं नदीका विष्कंभ घटाएं अवशेषका आधाका जो प्रमाण सोई बत्तीस विदेह क्षेत्र सोलह वक्षार गिरि बारह विभंगा नदी देवारण्यादि वन इनका लंबाईका प्रमाण है। सो विदेह विष्कंभ ३३६८४।४÷१९ मैंसों पांच सै योजन नदी व्यास घटाएं अवशेष ३३१८४।४÷१९ कौं आधा किएं सोलह हजार पांचसै बाणवै योजन दोय कला तहां दीर्घताका प्रमाण होइ ॥ ६०५ ॥

अब विदेह क्षेत्रके मध्य तिष्टता ऐसा जु मेरुगिरि ताका स्वरूपकूं कहैं हैं;—

मेरू विदेहमज्झे णवणउदिदहेक्कजोयणसहस्सा।
उदयं भूमुहवासं उवरुवरिगवणचउक्कजुदो ॥ ६०६ ॥

मेरुः विदेहमध्ये नवनवतिदशैकयोजनसहस्राणि।
उदयः भूमुखव्यासः उपर्युपरिगवनचतुष्कयुतः ॥ ६०६ ॥

अर्थ—विदेहका मध्य प्रदेशविषै मेरुगिरि है ताका निन्याणवै दश एक हजार योजन उदय भूमुख व्यास है। भावार्थ—मेरु निण्याणवै हजार योजनतौं ऊंचा है। मूलविषै दश हजार योजन चौड़ा है। ऊपरि एक हजार योजन चौड़ा है। बहुरि सो मेरु उपरि उपरि कटनीविषै प्राप्त ऐसे जो च्यारि वन तिन करि संयुक्त है ॥ ६०६ ॥

अब वन चतुष्टयके नाम अर तिनका अंतरालकौं प्रतिपादन करै हैं;—

भू भद्दसाल साणुग णंदणसोमणसपांडुगं च वणं।
इगिपणघणवावत्तरिहदपंचसयाणि गंतूणं ॥ ६०७ ॥

भुवि भद्रशालं सानुकं नंदनसौमनसपांडुकं च वनम्।
एक पंचघनद्वासप्ततिहतपंचशतानि गत्वा ॥ ६०७ ॥

अर्थ—भद्रसाल नामा वन तौ भूगत कहिए मेरुकै मूलि पृथ्वी ऊपरि है। बहुरि नंदन सौमनस पांडुक ए वन मेरुकी कटनीविषै प्राप्त हैं। बीचि बीचि मेरुका विष्कंभ घटि करि जो गिरदविषै कटनी हैं तहां पाईए है। सो एक पंच घन बहत्तरि करि गुण्या हुवा पांचसै योजन

जाइ तिष्टै है। भावार्थ—मेरुगिरिकै चौगिरद भद्रसाल नामा वन तौ पृथ्वी उपरि है। वहुरि तहांतैं एक गुणित पांचसै ताका पांचसै योजन उपरि जाइ नंदनवन है। वहुरि तहांतै पंच घन एकसौ पच्चीस तीह करि गुणित पांचसै ताका वासठि हजार पांचसै योजन उपरि जाइ सौमनस वन है। वहुरि तहांतैं वहत्तरि गुणित पांचसै ताका छत्तीस हजार योजन उपरि जाइ पांडुक वन है॥ ६०७॥

आगैं तिन वननिविषै तिष्ठते वृक्षनिकों कहैं हैं;—

मंदारचूदचंपयचंदणघणसारमोचचोचेहिं।
तंबूलिपूगजादीपहुदीसुरतरुहि कयसोहं॥ ६०८॥

मंदारचूतचंपकचंदनघनसारमोचचोचैः।
तांवूलीपूगजातिप्रभृतिसुरतरुभिः कृतशोभानि॥ ६०८॥

अर्थ—मंदार अर आंव चंपा चंदन घनसार नाल्यिर तांवूली सुपारी जाय इत्यादि देव संवंधी वृक्षनि करि कीनी है शोभा जिनिनैं ऐसे ते वन हैं॥ ६०८॥

अव और मेरुनिका वननिकै अंतराल निरूपणकरनेंके मिस करि उचाईका प्रमाण कहैं हैं;—

पणसय पणसयसहियं पणवण्णसहस्सयं सहस्साणं।
अट्ठावीसिदराणं सहस्सगाढं तु मेरूणं॥ ६०९॥

पंचशतं पंचशतसहितं पंचपंचाशतसहस्रकं सहस्राणां।
अष्टाविंशतिरितरेषां सहस्रगाधस्तु मेरूणाम्॥ ६०९॥

अर्थ—इतर जे धातुकी खंड पुष्करार्द्ध संवंधी च्यारि मेरु तिनकै पृथ्वी ऊपरि भद्रसाल वन है। तहांतै पांचसै योजन उपरि जाइ नंदन है। तहां पांचसै सहित पचावन हजार योजन ५५५०० उपरि जाइ सौमनस वन है। वहुरि तहांतैं अठाईस हजार योजन उपरि जाइ पांडुक वन है। ऐसैं वननिका अंतरालकै इनका जोड़ दिएं चौरासी हजार योजन भए सोई तिन मेरुनिकी उंचाईका प्रमाण जाननां। वहुरि पांचिही मेरुनिकैं गाध कहिए पृथ्वीविषै नीव सो हजार योजन प्रमाण जाननां॥ ६०९॥

आगैं तिन वननिका विस्तारकौं निरूपै हैं;—

वावीसं च सहस्सा पणपणछक्कोणपणसयं वासं।
पढमवणं वज्जित्ता सव्वणगाणं वणाणि सरिसाणि॥ ६१०॥

द्वाविंशतिः च सहस्रं पंचपंचषट्कोनपंचशतं व्यासं।
प्रथमवनं वर्जयित्वा सर्वनगानां वनानि सदृशानि॥ ६१०॥

अर्थ—सुदर्शन मेरुकै भद्रसाल वन तौ पूर्व पश्चिम दिशा करि वाईस हजार योजन चौड़ा है। वहुरि सर्व दिशानिविषै नंदन वन पांचसै योजन चौड़ा है सौमनस पांचसै योजन चौड़ा है। पांडुक छह घाटि पांचसै ४९४ योजन चौड़ा है। वहुरि सुदर्शन मेरुका भद्रसालकौं वर्ज्जि करि अन्य नंदनादि तीन वन सर्व मेरुनिकै चौड़ाई अपेक्षा समान प्रमाणकौं धरैं हैं॥ ६१०॥

आगैं तिस वन चतुष्टयविषै तिष्ठते जे चैत्यालय तिनकी संख्या कहैं हैं;—

**एक्केक्कवणे पडिदिसमेक्केक्कजिणालया सुसोहंति।**
**पडिमेरुमुवरि तेसिं वण्णणमणुवण्णइस्सामि॥ ६११॥**

एकैकवने प्रतिदिशमेकैकजिनालयाः सुशोभंते।
प्रतिमेरुमुपरि तेषां वर्णनमनुवर्णयिष्यामि॥ ६११॥

**अर्थ**—मेरु मेरु प्रति एक एक वनविषैं एक एक दिशा प्रति एक एक चैत्यालय है। ते एक मेरु प्रति सोलह चैत्यालय सोभैं हैं। तिन चैत्यालयनिका वर्णन उपरि पीछैं नंदीश्वर द्वीपका वर्णनका अवसरविषै वर्णन करौंगा॥ ६११॥

आगैं सुदर्शन मेरुकै दक्षिण उत्तर भद्रसाल वनका प्रमाण कहैं हैं;—

**पढमवणडसीदंसो दक्खिणउत्तरगभद्दसालवणं।**
**विसदं पण्णासहियं खुल्लयमंदरणगेवि तहा॥ ६१२॥**

प्रथमवनाष्टाशीत्यंशः दक्षिणोत्तरगभद्रशालवनम्।
द्विशतं पंचाशदधिकं क्षुल्लकमंदरनगेपि तथा॥ ६१२॥

**अर्थ**—सुदर्शन मेरुकै पूर्व पश्चिम भद्रसाल वनका प्रमाण बाईस हजार योजन कह्या ताका अठ्यासीवां भाग प्रमाण दक्षिण उत्तर भद्रसाल वनका प्रमाण है। सो पचास सहित दोयसै योजन है। **भावार्थ**—सुदर्शन मेरुकै चारयौं गजदंतनिके बीचि च्यारौं दिशानिविषै भद्रसाल वन है सो पूर्व पश्चिमविषै तो बाईस हजार योजन चौड़ा है। दक्षिण उत्तरविषै अढ़ाईसै योजन चौड़ा है। बहुरि क्षुल्लक मंदर नग कहिए छोटे च्यारि मेरुगिरि तिनविषै भी तथा कहिए तैसैं ही आगै कहिए हैं। पूर्व पश्चिम भद्रसालका विष्कंभ ताकै अठ्यासीवैं भाग प्रमाण ही दक्षिण उत्तर भद्रसालका विष्कंभ है॥ ६१२॥

**वेदी वणुभयपासे इगिदलचरणुदयवित्थरोगाढो।**
**हेमी सघंटघंटाजालसुतोरणग बहुदारा॥ ६१३॥**

वेदी वनोभयपार्श्वे एकदलचरणोदयविस्तारावगाधाः।
हैमी सघंटघंटाजालसुतोरणका बहुद्वारा॥ ६१३॥

**अर्थ**—भद्रसालादि वननिकै बाह्य अभ्यन्तर दोऊ पार्श्वनिविषै वेदी हैं। जैसें बागकै कांगुरा विनां भींति हो है तैसैं जो होइ ताका नाम वेदी है। सो वेदी एक योजन ऊंची आध योजन चौड़ी पाव योजन जाकी नीव ऐसी है। बहुरि सुवर्णमई है। बहुरि महा घंटा अर छोटी घंटानिकर सोभित है ऐसे भले तोरणनि करि संयुक्त जे बहुत द्वार जाकै पाईए हैं ऐसी वेदी है। आगैं मेरुका चित्रा पृथ्वीकै तलविषै व्यास ल्यावनैंविषै बहुरि नंदन सौमनस वनका व्यासादिक वा तिनकै निकटि मेरुका व्यास उच्चत्वादि ल्यावनैंविषै हानिचय ल्यावनेकौं गाथा दोय करि कहैं हैं। तहां प्रथम ऐसा त्रैराशिक जानना। मेरुका उपरि मुख व्यास हजार योजन सो तिसकौं मूलविषै भूमि व्यास दश हजार योजन तामैं घटाएं नव हजार रहे। सो निन्याणवै

हजार योजनकी उचाईविषै नव हजार योजन प्रमाण हानि चय होइ तौ एक योजनकी उचाईविषै केता हानि चय होइ ऐसैं करि नव करि अपवर्त्तन किएं एक योजनका ग्यारह्वां भाग हानिचयका प्रमाण आया। एक योजनकी उंचाई भएं व्यासविषै इतनां घटै ॥ ६१३ ॥

बहुरि याकौं धरि और त्रैराशिकका विधान कहिए है;—

**इगिजोयण एगारहभागो जदि वड्ढदे पहायदि वा।**
**तलणंदणसोमणसे किमिदि चयं हाणिमाणिज्जो ॥ ६१४ ॥**

एक योजनस्य एकादशभागः यदि वर्धते प्रहीयते वा।
तलनंदनसौमनसे किमिति चयं हानिरानेतव्यम् ॥ ६१४ ॥

**अर्थ**—एक योजनकी उचाईविषै एक योजनका ग्यारह्वां भाग जो नीचैकी अपेक्षा उपरि घटै वा उपरि अपेक्षा नीचै वधै तौ मेरुका तलकी उचाई हजार योजन नंदनवनकी उचाई पांचसै योजन समरुन्द्रतैं ऊपरि सौमनसकी उचाई साढा इकावन हजार योजन तीहविषै कितनां वधै वा घटै ऐसैं त्रैराशिक करि हानिचय ल्यावनां। उपरि अपेक्षा घटनैंका नाम हानि नीचैकी अपेक्षा वधनैंका नाम चय तातैं हानिचय ऐसा नाम कह्या सो तीनों जायगा प्रमाण राशि एक योजन फलराशि एकका ग्यारह्वां भाग इच्छा राशी पांचसै हजार साढा इकावन हजार किएं तल व्यासनिविषै वृद्धि निवै योजन अर दश ग्यारह्वां भाग हो है। नंदनविषै हानि पैंतालीस योजन पांच ग्यारह्वां भाग हो है। सौमनसविषै हानि च्यारि हजार छसै इक्यासी योजन नव ग्यारह्वां भाग हो है ॥ ६१४ ॥

**सगसगहाणिविहीणे भूवासे चयजुदे मुहव्वासे।**
**गिरिवणवाहिरब्भंतरतलवित्थारप्पमा होदि ॥ ६१५ ॥**

स्वकस्वकहानिविहीने भूव्यासे चययुते मुखव्यासे।
गिरिवनबाह्याभ्यन्तरतलविस्तारप्रमा भवति ॥ ६१५ ॥

**अर्थ**—मेरु गिरिकै तीह तीह कटनीका भू व्यास कहिए नीचला चौड़ाईका प्रमाण तिहविषै अपनी अपनी हानिका प्रमाणकौं घटाएं। बहुरि तीह तीह कटनीका मुख व्यास कहिए उपरिका चौड़ाईका प्रमाण तिह तीहविषैं अपनां अपनां चयका प्रमाण मिलाएं मेरुगिरिका तल विस्तार हो है। वा वनका बाह्य अभ्यन्तर विस्तारका प्रमाण हो है। सोई कहिए हैं। पूर्वैं ल्याया जो मेरुतलविषै हानिचय निवै योजन अर दश ग्यारह्वां भाग याकौं मेरुका पृथ्वीविषै व्यास दश हजार योजन तामैं मिलाएं दश हजार निवै योजन अर दश ग्यारह्वां भाग प्रमाण चित्रा पृथ्वीका अंत जहां है तहां नीचै मूलविषै मेरुका तल व्यास है। यामैं तिसही निवै योजनका दश ग्यारह्वां भाग प्रमाण हानि घटाएं दश हजार योजन प्रमाण इस सम पृथ्वीकै निकटि मेरुका भू व्यास है। बहुरि एक योजनका ग्यारह्वां भाग घटनैंविषै एक योजन उचाई होइ तो निवै योजन दश ग्यारह्वां भाग घटनेंविषै केती उचाई होइ ऐसैं त्रैराशिक करि समच्छेद करि अंश हारनिकौं मिलाइ ९९० ÷ ११।१० ÷ ११ ग्यारहका अपवर्तन किएं मेरु तलतैं लगाय इस पृथ्वी पर्यंत मेरुकी उंचाई एक हजार योजन प्रमाण

हो है। बहुरि नंदनवनका हानिचय पैंतालीस योजन पांच ग्यारव्हां भाग सो मेरुका भू व्यास १०००० मैंसौं घटाएं नव हजार नवसै चौवन योजन अर छह ग्यारव्हां भाग प्रमाण वन सहित मेरुका व्यासरूप नंदनका बाह्य वास हो है। बहुरि तीह हानिचयका अंश ५÷११ अंशी ४५ निकौं समच्छेद करि मिलाएं पांचसैका ग्यारव्हां भाग भया तहां एकका ग्यारव्हां भाग घटनेंविषै एक योजनकी उचाई होइ तौ पांचसै ग्यारव्हां भागके घटनेंविषै केती उचाई होइ ऐसैं त्रैराशिक करि अपवर्त्तन किएं भद्रशालतैं पांचसै योजन नंदनवनकी उचाईका प्रमाण हो है। बहुरि नंदनवनका बाह्य व्यासविषै नंदन वनका पांचसै योजन ताकौं दोऊ पार्श्वनिका ग्रहण अर्थि दूणा किएं हजार योजन होइ सो घटाएं आठ हजार नवसै चौवन योजन छह ग्यारव्हां भाग प्रमाण नंदनवनकै अभ्यन्तर वन विना मेरुका व्यास प्रमाण है। सो समरुंद्र है। नंदनवनतैं उपरि केतीक उंचाई तांई मेरुगिरि समान चौड़ाईका प्रमाण धरै हैं ॥ ६१५ ॥

आगैं समरुंद्रकी उचाई ल्यावनेका विधान कहैं हैं;—

**एयारंसोसरणे एगुदओ दससएसु किं लद्धं ।**
**णंदणसोमणसुवरिं सुदंसणे सरिसरुंदुदओ ॥ ६१६ ॥**

एकादशांशापसरणे एकोदयः दशशतेषु किं लब्धं ।
नंदनसौमनसोपरि सुदर्शने सदृशरुंद्रोदयः ॥ ६१६ ॥

**अर्थ—**एकका ग्यारव्हां भाग घटनेंविषै एक योजन उचाई होइ तौ दशसै १००० का घटनेंविषै केती उचाई होइ ऐसैं त्रैराशिक किएं ग्यारह हजार योजन लब्ध राशि भया सोई सुदर्शन मेरुकै उपरि नंदन सौमनसविषै सम रुंद्रकी उचाईका प्रमाण है। **भावार्थ—**मेरुतलतैं लगाय नंदन पर्यंत तौ क्रमतैं घटता चौड़ा है। बहुरि इहां सर्वत्र गिरदविषै पांचसै योजन चौड़ी कटनी छूटी है तीहविषै नंदन वन है। तिस वनकै मध्य मेरु ग्यारह हजार योजनकी उचाई पर्यंत समान चौड़ा है। सो नंदन वनका दोऊ पार्श्वनिका हजार योजन एकैं साथि मेरुका व्यासविषै घट्या सो क्रमतैं जितनी उचाईविषै हजार योजनका व्यास घटता तितनी उचाई तांई किछू भी घट्या नांहीं समान चौडा चल्या गया है। उपरि क्रमतैं बहुरि घटता है। बहुरि सौमनसपर्यंत हानिचयका पूर्वोक्त प्रमाण च्यारि हजार छसै इक्यासी योजन नव ग्यारव्हां भाग ताकौं नंदनवनकै अभ्यन्तर मेरु व्यास ८९५४।६÷११ विषै घटाएं च्यारि हजार दोयसै बहत्तरि योजन अर आठ ग्यारव्हां भाग प्रमाण सौमनस वन सहित मेरु व्यासरूप सौमनसविषै बाह्य व्यास हो है। बहुरि सौमनसका हानिचय ४६८।१९÷११ के अंश अंशी मिलाइ ५१५००÷११ एकका ग्यारव्हां भाग घटनेंविषैं एक योजन उदय होय तौ साढा इकावन हजारका ग्यारव्हां भाग घटनेंविषै केता उदय होइ। ऐसैं त्रैराशिक करि ग्यारहका अपवर्त्तन किएं नंदन वनका समरुंद्र उत्सेधतै उपरि सौमनस वन पर्यंत उचाईका प्रमाण साढा इकावन हजार योजन हो है। बहुरि सौमनसका बाह्य ४२७२।८÷११ विषै सौमनसका व्यास पांचसै योजन ताकौं दोऊ पार्श्वनिका ग्रहण अर्थि दूणा करि १००० घटाएं तीन हजार दोयसै बहत्तरि योजन आठ ग्यारव्हां भाग प्रमाण सौमनस वनकै अभ्यंतर मेरुका व्यास हो है। इहां भी पूर्वोक्त

प्रकार ल्याया हुवा समान चौड़ाईका प्रमाण धरैं सौमनसतैं लगाय ग्यारह हजार योजन मेरुकी उचाईका प्रमाण जाननां। ताकै उपरि बहुरि क्रमतैं घटता है। बहुरि एक योजनका ग्यारह्वां भाग घटै तौ समरुद्रतैं उपरि पच्चीस हजार योजनकी उचाईविषै कितनां घटै ऐसैं त्रैराशिक किएं दोय हजार दोयसै बहत्तरि योजन आठ ग्यारह्वां भाग प्रमाण पांडुक वनविषै हानिचय हो है। इनकौं सौ-२२७२।८÷११ मनसके अभ्यन्तर मेरु व्यास ३२७२।८÷११ विषै घटाएं वनसहित मेरु व्यासरूप पांडुकवनका बाह्य व्यास एक हजार योजन प्रमाण हो है। बहुरि पांडुकवनका हानिचयका अंश ८÷११ अंशी २२७२ कौं मिलाइ २५००८÷११ पूर्वोक्त प्रकार एकका ग्यारह्वां भाग इत्यादि विधान करि त्रैराशिक किएं सौमनसके समरुंद्रतैं ऊपरि पांडुकवन पर्यंत व्यास लिएं क्रमतैं घटता मेरुका उचाईका प्रमाण पच्चीस हजार योजन प्रमाण हो है ॥ ६१६ ॥

आगैं क्षुल्लक च्यारि मेरुनिका हानिचय ल्यावनेंकौं सूत्र कहैं हैं;—

भूमीदो दसभागो हायदि खुल्लेसु णंदणादुवरिं।
सयवग्गं समरुंदो सोमणसुवरिंपि एमेव ॥ ६१७ ॥

भूमितः दशमभागः हीयते क्षुल्लकेषु नंदनादुपरि।
शतवर्गः समरुंद्रःसौमनसोपरि अपि एवमेव ॥ ६१७ ॥

**अर्थ**—भूमितः कहिए नीचैतैं एक योजनका दशवां भाग प्रमाण विष्कंभ घटनैंविषै एक योजन उचाई होइ तौ दोऊ पार्श्वनिका वन व्यास एक हजार योजन विष्कंभ घटनैंविषै केती उचाई चाहिए। ऐसैं त्रैराशिक कीएं सौका वर्ग जो दश हजार तीहरूप उचाईका प्रमाण पाया। सो क्षुल्लक छोटे च्यारि मेरुनिविषै नंदन वनतैं उपरि समान चौड़ाईका प्रमाण लिएं दश हजार योजन उचाई है। ऐसैं ही सौमनस वनके उपरि भी समान विष्कंभ लिएं उचाई दश हजार योजन प्रमाण ही है। इन क्षुल्लक च्यारि मेरुनिविषै उपरि व्यास हजार योजन सो तौ मुख अर समभूमिविषै व्यास नव हजार च्यारिसै योजन सो भूमि तहां भूमिमैंसौं मुख घटाएं चौरासीसौ होइ। बहुरि क्षुल्लक मेरुनिकी चौरासी हजार योजन उचाईविषै चौरासीसै योजन विष्कंभ घटै तौ एक योजनकी उचाईविषै कितनां घटै। ऐसैं त्रैराशिक करि चौरासी करि अपवर्त्तन किएं एक योजनकी उचाईविषै एक योजनका दशवां भाग प्रमाण हानिचय हो है। याकौं धरि एक योजनकी उचाईविषै एक योजनका दशवां भाग घटै तौ एक हजार योजनकी उचाईविषै कितना घटै ऐसैं त्रैराशिक किएं सौ पाए सो क्षुल्लक मेरुनिका आगैं कहिए है। जो चौराणवैसै योजन भू व्यास तामैं मिलाएं नव हजार पांचसै योजन प्रमाण चित्रा पृथ्वी तलविषै मेरुनिका नीचैं ही नीचैं विष्कंभ है। बहुरि यामैं सोई सौ योजन घटाएं चौराणवैसै योजन समभूमिविषै व्यास हो है। बहुरि एक योजनका दशवां भाग घटनेंविषै एक योजनकी उंचाई होइ तौ सौ योजन घटनैविषै केती उचाई होइ ऐसैं त्रैराशिक करि मेरुतलतैं समभूमि पर्यंत उंचाई हजार योजन प्रमाण आवै है। बहुरि एक योजनकी उचाईविषै एक योजनका दशवां भाग घटै तौ पांचसै योजनकी उचाईविषै कितनां घटै ऐसैं त्रैराशिक करि अपवर्त्तन किएं पचास योजन आए सो

भू व्यासमैंसौं घटाएं नंदनवनके बाह्य मेरु व्यास तेरणंवसै पचास योचन हो है । बहुरि एकका दशवां भाग घटनेंविषैं एक योजन उचाई होइ तौ पचास घटनेंविषैं केती होइ ऐसें त्रैराशिक करि पांचसै योजन पाए सो भद्रसालतैं नंदनवन इतनां ऊंचा है । बहुरि नंदनवनका दोऊ पार्श्वसंबंधी हजार योजन व्यास नंदनवनके बाह्य मेरु व्यासमैंसौं घटाएं तियासीसै पचास योजन प्रमाण नंदनवनकै अभ्यन्तर मेरु व्यास है सो इहां भी एककी उचाईविषै एकका दशवां भाग घटै तौ दश हजारकी उचाईविषै केता घटै । ऐसैं त्रैराशिक किएं हजार योजन पाए सो ए हजार योजन एकैं साथि घटे तातैं नंदनवनतैं लगाइ दश हजार योजन पर्यंत समान उंचाई साढा तियासीसै योजन प्रमाण व्यास है। बहुरि एकका उदयविषै एकका दशवां भाग घटै तौ साढा पैंतालीस हजार योजन उचाईविषै केता घटै ऐसैं त्रैराशिक करि अपवर्त्तन किएं साढा पैंतालीस योजन आए सो इतने तिस सम विष्कंभ व्यास ८३५० मैंसौं घटाएं अडतीससै योजन सौमनस वनकै बाह्य व्यास हो है । बहुरि एकका दशवां भाग घटनेंविषैं एक योजन उंचाई होइ तौ साढा पैंतालीससै योजन घटनेविषैं केती होइ। ऐसें त्रैराशिक किएं साढा पैंतालीस हजार पाए सो इतनां नंदनसंबंधी समरुंद्रतैं उपरि सौमनस ऊंचा है। बहुरि एककी उंचाईविषै एक दशवां भाग घटै तौ दश हजार योजनकी उचाईविषै केता घटै ऐसैं त्रैराशिक कीएं हजार योजन होइ सोई सौमनसवनका दोऊ पार्श्वसंबंधी हजार योजन व्यास एकैं साथि सौमनसकै बाह्य व्यास ३८०० मैंसौं घटैं अठाईसै योजन प्रमाण सौमनसकै अभ्यन्तर मेरु व्यास हो है । सो इतनैं ही प्रमाण समान व्यास लिएं उंचाईका प्रमाण दश हजार योजन पूर्वैं ल्याये ही थे । बहुरि एककी उंचाईविषै एकका दशवां भाग घटै तौ अठारह हजार योजन उचाईविषै केता घटै ऐसैं त्रैराशिक करि अपवर्त्तन किएं अठारहसै पाए सो सौमनसका अभ्यन्तर व्यासमैंसौं घटाएं हजार योजन प्रमाण मेरुका उपरि व्यास हो है। बहुरि एकका दशवां भाग घटनैंविषै एककी उचाई होइ तौ अठारहसै घटनेंविषै केती होइ। ऐसैं त्रैराशिक करि अठारह हजार पाए सो इतनां सौमनस संबंधी समव्यासतैं उपरि पांडुकवन है। बहुरि सर्व मेरुनिका पांडुकवनकै मध्य चूलिका है। ताकी उंचाई वा नीचैं ऊपरि व्यास सो आगैं कहैंगे ॥ ६१७ ॥

आगैं मेरुनिका वर्ण विशेषकौं निरूपै हैं;—

**णाणारयणविचित्तो इगिसट्ठिसहस्सगेसु पढमादो ।**
**तत्तो उवरिं मेरू सुवण्णवण्णण्णिदो होदि ॥ ६१८ ॥**

नानारत्नविचित्रः एकषष्टिसहस्रकेषु प्रथमतः ।
तत उपरि मेरुः सुवर्णवर्णान्वितः भवति ॥ ६१८ ॥

**अर्थ**—मेरु प्रथम नीचैतैं लगाय इकसठि हजार योजन उचाई पर्यंत तौ नानाप्रकार अनेक वर्ण रत्ननि करि विचित्र है। बहुरि तातैं उपरि मेरु केवल सुवर्ण सदृश वर्ण करि संयुक्त है ॥ ६१८ ॥

आगैं नंदनादि वनानिविषै तिष्ठते जो भवन तिनके नामादिक गाथा दोयकरि कहैं हैं;—

माणीचारणगंधव्वचित्तणामाणिं वट्टभवणाणि ।
णंदणचउदिसमुदओ पण्णासं तीस वित्थारो ॥ ६१९ ॥
मानीचारणगंधर्वचित्रनामानि वृत्तभवनानि ।
नंदनचतुर्दिक्षु उदयः पंचाशत् त्रिंशत् विस्तारः ॥ ६१९ ॥

अर्थ—मानी १ चारण १ गंधर्व १ चित्र १ ए हैं नाम जिनके ऐसे गोल मंदिर नंदनवन-विषै पूर्वादि च्यारि दिशानिविषै हैं । तिनकी उंचाई पचास योजन चौड़ाई तीस योजन प्रमाण है ६१९.

सोमणसदुगे वज्जं वज्जादिप्पह सुवण्ण तप्पहयं ।
लोहिदअंजणहारिद्दपांडुरा दलिददलमाणा ॥ ६२० ॥
सौमनसाद्विके वज्रं वज्रादिप्रभं सुवर्ण तत्प्रभं ।
लोहितांजनहारिद्रपांडुरा दलितदलमानाः ॥ ६२० ॥

अर्थ—सौमनस पांडुक इन दोऊ वननिविषै भी पूर्वादि दिशानिविषै च्यारि च्यारि गोल भवन हैं। ते कौन? वज्र १ वज्रप्रभ १ सुवर्ण १ सुवर्णप्रभ १ ए सौमनसविषै मंदिरनिके नाम हैं। लोहित १ अंजन १ हरिद्र १ पांडुर १ ए पांडुकविषै मंदिरनिके नाम हैं । तहां नंदनविषै मंदिर-निका जो उचाई चौड़ाईका प्रमाण कह्या तातैं सौमनसविषै आधा अर तीहसौं भी पांडुकविषै आधा प्रमाण जाननां ॥ ६२० ॥

आगैं तिन भवननिके स्वामी अर तिनकी स्त्री तिनकौं कहैं हैं;—

तब्भवणवदी सोमो यमवरुणकुवेरलोयवालक्खा ।
पुव्वादी तेसिं पुह गिरिकण्णा साद्धकोडितियं ॥ ६२१ ॥
तद्भवनपतयः सोमः यमवरुणकुवेराः लोकपालाख्याः ।
पूर्वादिषु तेषां पृथक् गिरिकन्यकाः सार्धकोटित्रयम् ॥ ६२१ ॥

अर्थ—तिन भवनिके अधिपति स्वामी सोम १ यम १ वरुण १ कुवेर १ नाम धारक सौधर्म इंद्रके लोकपाल पूर्वादि दिशानिविषै तिष्ठै हैं । ये मंदिर लोकपालनिकेहैं तिन एक एक लोकपालकैं साढा तीन कोड़ि गिरि कन्या कहिये व्यंतरी देवांगना पाईए हैं ॥ ६२१ ॥

आगैं तिनका आयु आदि कहैं हैं;—

सोमदु वरुणदुगाऊ सदलदु पल्लत्तयं च देसूणं ।
ते रत्तकिण्हकंचणसिदणेवत्थंकिया कमसो ॥ ६२२ ॥
सोमद्वयोः वरुणद्विकायुः सदलद्वि पल्यत्रयं च देशोनम् ।
ते रक्तकृष्णकांचनासितनेपथ्यांकिताः क्रमशः ॥ ६२२ ॥

अर्थ—सोम यम इन दोयका आयु अर्द्धसहित दोय पल्य प्रमाण है। बहुरि वरुण कुवेर इन दोयका आयु किछू घाटि तीन पल्य प्रमाण है । बहुरि ते सोमादिक क्रमतैं लालवर्ण श्यामवर्ण कांचनवर्ण श्वेतवर्ण आभूषणादिकनिकरि संयुक्त हैं ॥ ६२२ ॥

आगैं तिनके कल्पविमान संबंधीपणांकौं कहैं हैं;—

ते य सयंपहरिट्ठजलप्पहवग्गुप्पहा विमाणीसा ।
कप्पेसु लोयवाला पहुणो वहुसयविमाणाणं ॥ ६२३ ॥
ते च स्वयंप्रभारिष्टजलप्रभवल्गुप्रभा विमानेशाः ।
कल्पेषु लोकपाला प्रभवः बहुशतविमानानाम् ॥ ६२३ ॥

अर्थ—ते सौधर्मके लोकपाल स्वर्गविषै स्वयंप्रभ १ अरिष्ट १ जलप्रभ १ वल्गुप्रभ १ विमाननिके क्रमतें ईस-स्वामी हैं । भावार्थ—लोकपालनिका स्वर्गविषै वसनेके विमान है । अर इहां मेरु उपरि भी तिनके भवन पाइए हैं । बहुरि ते लोकपाल बहुत सैंकड़ां विमाननिके प्रभु हैं । छह लाख छ्यासठि हजार छहसै छ्यासठि विमाननिके स्वर्गविषै अधिपति हैं ॥ ६२३ ॥

आगैं नंदनवनविषै तिष्ठता व्यंतरदेवकों परिवारसहित कहैं हैं;—

वलभद्दणामकूडे णंदणगे मेरुपव्वदीसाणे ।
उदयमहियसयदलगो तण्णामो वेंतरो वसई ॥ ६२४ ॥
वलभद्रनामकूटे नंदनगे मेरुपर्वतैशान्याम् ।
उदयमहीकशतदलकः तन्नामा व्यंतरो वसति ॥ ६२४ ॥

अर्थ—मेरु पर्वतकी ईशान विदिशाविषै नंदनविषै पाइए ऐसा सौ योजन नीचै चौडा ताका आधा पचास योजन उपरि चौंड़ा जो वलभद्र नामा कूट है । तीह उपरि वलभद्र नामा व्यन्तर देव वसै हैं ॥ ६२४ ॥

आगैं नंदनवनविषै तिष्ठते जो भवन तिनके दोऊ पार्श्वनिविषै तिष्ठते जे कूटादिक तिनकों गाथा तीन करि कहैं हैं;—

णंदण मंदर णिसहा हिमवं रजदो य रुजयसायरया ।
वज्जो कूडा कमसो णंदणवसईण पासदुगे ॥ ६२५ ॥
नंदनो मंदरः निषधः हिमवान् रजतश्च रुचकसागरकौ ।
वज्रः कूटाः क्रमशः नंदनवसतीनां पार्श्वद्विके ॥ ६२५ ॥

अर्थ—नंदन १ मंदर १ अर निषध १ हिमवन अर रजत १ रुचक १ अर सागर १ वज्र निए आठ कूट क्रमतें नंदनवनविषै तिष्ठते जु वसती कहिए पूर्वोक्त च्यारि भवन तिनके दोऊ पार्श्व-१ विषै पाईए हैं ॥ ६२५ ॥

हेममया तुंगधरा पंचसयं तद्दलं मुहस्स पमा ।
सिहिरिगहे दिक्कण्णा वसंति तासिं च णामामिणं ॥ ६२६ ॥
हेममयाः तुंगधराः पंचशतं तद्दलं मुखस्य प्रमा ।
शिखरगृहे दिक्कन्याः वसंति तासां च नामानीमानि ॥ ६२६ ॥

अर्थ—ते कूट सुवर्ण मई हैं । बहुरि तिनकी उचाई पांचसै योजन हैं । नीचैं भू व्यास पांचसै योजन है । ताका आधा अढ़ाईसै योजन उपरि मुख व्यास है । तिन कूटनिकै शिखर मंदरनिविषै दिक्कुमारी वसै हैं ॥ ६२६ ॥

तिनके ए नाम आगैं कहिए हैं;—

**मेहंकर मेहवदी सुमेह मेहादिमालिणी तत्तो ।**
**तोयंधरा विचित्ता पुप्फादिममालिणिंदिदया ॥ ६२७ ॥**

मेघंकरा मेघवती १ सुमेघा मेघादिमालिनी ततः ।
तोयंधरा विचित्रा पुष्पादिममाला अनिंदितका ॥ ६२७ ॥

**अर्थ**—मेघंकरा १ मेघवती १ सुमेघा १ मेघमालिनी १ तोयंधरा १ विचित्रा १ पुष्पमाला १ अनंदिता ए नाम हैं ॥ ६२७ ॥

आगैं नंदनविषै जे वावड़ी हैं तिनका स्वरूप गाथा तीन करि कहैं हैं;—

**अग्गिदिसादो चउ चउ उप्पलगुम्मा य णलिणि उप्पलिया ।**
**वावीओ उप्पलुज्जल भिंगा छट्ठी दु भिंगणिभा ॥ ६२८ ॥**

अग्निदिशः चतस्रः चतस्रः उत्पलगुल्मा च नलिनी उत्पलिका ।
वाप्यः उत्पलोज्ज्वला भृंगा षष्ठी तु भृंगनिभा ॥ ६२८ ॥

**अर्थ**—अग्निदिशातैं लगाय च्यारौं विदिशानिविषै च्यारि च्यारि वावड़ी हैं । तिनके नाम क्रमतैं कहिए हैं । उत्पल गुल्मा १ नलिनी १ उत्पला १ उत्पलोद्वकला १ वहुरि भृंगा १ छठी भृंगनिभा १ ॥ ६२८ ॥

**कज्जल कज्जलपह सिरिभूदा सिरिकंद सिरिजुदा महिदा ।**
**सिरिणिलय णलिणि णलिणादिमगुम्मिय कुमुद कुमुदपहा ॥ ६२९ ॥**

कज्जला कज्जलप्रभा श्रीभूता श्रीकांता श्रीयुता महिता ।
श्रीनिलया नलिनी नलिनादिमगुल्मी कुमुदा कुमुदप्रभा ॥ ६२९ ॥

**अर्थ**—कज्जला १ कज्जल प्रभा १ वहुरि श्रीभूता १ श्रीकांता १ श्रीमहिता १ श्रीनिल्या १ वहुरि नलिनी १ नलिनगुल्मा १ कुमुदा १ कुमुदप्रभा १ ए वावड़ीके नाम हैं ॥ ६२९ ॥

**मणितोरणरयणुब्भवसोवाणा हंसमोरजंतजुदा ।**
**पण्णदलदीहवासा दसगाहा सोलवावीओ ॥ ६३० ॥**

मणितोरणरत्नोद्भवसोपानाः हंसमयूरयंत्रयुताः ।
पंचाशद्दलदीर्घव्यासाः दशगाधाः षोडशवाप्यः ॥ ६३० ॥

**अर्थ**—ते सोलह वावड़ी मणिमई तोरण द्वार अर रत्नमई सिवाणनिकरि संयुक्त हैं । वहुरि हंस मोर आदिनिके यंत्र करि संयुक्त हैं । वहुरि ते पचास योजन लंवी ताकी आधी पचीस योजन चौड़ी दश योजन उंडी वावड़ी हैं ॥ ६३० ॥

आगैं तिनके मध्य प्रासाद हैं तिनका स्वरूप गाथा दोय करि कहैं हैं;—

**दक्खिणउत्तरवावीमज्झे सोहम्मजुगलपासादा ।**
**पणघणदलचरणुच्छयवासा दलगाढचउरस्सा ॥ ६३१ ॥**

दक्षिणोत्तरवापीमध्ये सौधर्मयुगलप्रासादाः।
पंचघनदलचरणोच्छ्रयव्यासाः दल्गाढचतुरस्राः ६३१॥

अर्थ—मेरुकी अपेक्षा दक्षिण उत्तर वावड़ीनिके मध्य सौधर्म अर ईशान इंद्रके प्रासाद मंदिर हैं। तहां अग्नि नैऋति दिशानिविषै आठ वावडी हैं तिनविषै सौधर्मके मंदिर हैं। अर वायु ऐसानवि दिशानिविषै आठ वावडी हैं तिनिविषै ईसानके मंदिर हैं। ते प्रासाद पांचके घनका आधा साढा वासठि योजन तौ ऊंचे हैं। अर ताहीका चौथा भाग सवा इकतीस योजन चौड़े हैं। अर आध योजन जिनकी नींव है। ऐसे चौकोर मंदिर हैं॥६३१॥

**सोचिदठाणासिदपरिवारेणिंदो ठिदो सपासादे।**
**सव्वमिणं कहियव्वं सोमणसवणेवि सविसेणं॥ ६३२॥**
स्वोचितस्थानसितपरिवारेणेंद्रः स्थितः स्वप्रसादे।
सर्वमिदं कथितव्यं सौमसवनेपि सविशेषं॥ ६३२॥

अर्थ—स्वर्गविषै सुधर्मा नाम सभाविषै जैसें तिष्ठै हैं। तैसें अपनां अपनां योग्य आस्थानविषै तिष्ठता अपनां परिवारसहित अपनां प्रसादविषै इहां इंद्र आवै है तत्र तिष्ठै हैं। बहुरि जो भवननिके पार्श्वनिविषै कूटादिक व अग्न्यादि दिशानिविषै वावड़ी वा तिनकै मध्य प्रासाद जैसें नंदनवनविषै कहे तैसें ही सर्व विशेप सहित सौमनस वनविषै भी जाननें॥ ६३२॥

अब याकै अनंतरि मेरुका शिखर ऊपरि तिष्ठती जे शिला तिनका नाम स्थान वर्णं है;—

**पांडुकपांडुकंवलरत्ता तह रत्तकंवलक्ख सिला।**
**ईसाणादो कंचणरुप्पयतवणीयरुहिरणिहा॥ ६३३॥**
पांडुकपांडुकंवलरक्ता तथा रक्तकंवलाख्याः शिलाः।
ईशानात् कांचनरूप्यतपनीयरुधिरनिभाः॥ ६३३॥

अर्थ—ईशानतैं लगाय च्यारयौं विदिशानिविषै क्रमतैं कांचन कहिए सोनों रूप्य कहिए रूपो तपनीय कहिए तायो सोनों रुधिर कहिए लोही तीह समान वर्ण धरैं ऐसी पांडुक १ पांडुकवला १ रक्ता १ रक्तकंवला १ हैं नाम जिनके ऐसी च्यारि शिला मेरुकै मस्ताकै पांडुक वन है तहां पाइए हैं॥ ६३३॥

आगैं ते शिला कौंन संवंधी हैं कैसें तिनकी स्थिति है सो कहैं हैं;—

**भरहवरविदेहेरावदपुव्वविदेहजिणणिवद्धाओ।**
**पुव्ववरदक्खिणुत्तरदीहा अथिरथिरभूमिमुहा॥॥ ६३४॥**
भरतापरविदेहैरावतपूर्वविदेहजिननिवद्धाः।
पूर्वापरदक्षिणोत्तरदीर्घा अस्थिरास्थिरभूमिमुखाः॥ ६३४॥

अर्थ—ते पांडुकादि शिला क्रमतैं भरतक्षेत्र पश्चिम विदेह ऐरावत क्षेत्र पूर्व विदेहविषै जे तीर्थंकर उपजैं हैं तिन संवंधी हैं। तहां तिनका जन्माभिषेक हो है। बहुरि ते शिला क्रमतैं पूर्व

पश्चिम दक्षिण उत्तर दिशानि प्रतिलंबी हैं। बहुरि अस्थिर स्थिर भूमि मुख संयुक्त हैं। इस विशेपणका अर्थ मेरे समझनेमें न आया तातैं नांहीं लिखा है ॥ ६३४ ॥

आगैं दृष्टांत करि तिन शिलातलनिका आकार कहत संता तिनकी लंबाई कहैं हैं;—

**अद्धिंदुणिहा सव्वे सयपण्णासट्ठदीहवासुदया ।**
**आसणतियं तदुवरिं जिणसोहम्मदुगपडिवद्धं ॥ ६३५ ॥**

अर्धेंदुनिभाः सर्वाः शतपंचाशदष्टदीर्घव्यासोदयाः ।
आसनत्रयं तदुपरि जिनसौधर्मद्वयप्रतिबद्धं ॥ ६३५ ॥

**अर्थ**—ते सर्व शिला अर्द्ध चन्द्रमाके आकार हैं। बहुरि सौ योजन लंबी हैं। वीचिमैं पचास योजन चौड़ी हैं। आठ योजन मोटी हैं। तिन शिलानिकै उपरि तीर्थंकर सौधर्म ईशान संबंधी तीन सिंहासन हैं ॥ ६३५ ॥

आगैं तिन उपरि तीन सिंहासननिके स्वामी इत्यादिक विशेप कहैं हैं;—

**मज्झे सिंहासणयं जिणस्स दक्खिणगयं तु सोहम्मे ।**
**उत्तरमसाणिंदे भद्दासणमिह तयं वट्टं ॥ ६३६ ॥**

मध्ये सिंहासनं जिनस्य दक्षिणगतं तु सौधर्मे ।
उत्तरमीशानेंद्रे भद्रासनमिह त्रयं वृत्तम् ॥ ६३६ ॥

**अर्थ**—तिन तीन सिंहासननिविपै मध्य वीचि तौ जिनेन्द्र देवका सिंहासन है। ताकी दक्षिण दिशाकौं प्राप्त सौधर्म इंद्रका भद्रासन है। उत्तर दिशाकौं प्राप्त ईशान इंद्रका भद्रासन है। इहां ए तीन आसन हैं ते गोल हैं ॥ ६३६ ॥

आगैं तिन आसननिका उदयादिक अर मेरुकी चूलिकाका स्वरूप कहैं हैं;—

**उदयं भूमुहवासं धणु पणपणसय तदद्धपुव्वमुहा ।**
**वेलुरिय चूलियस्स य जोयण चत्तं तु वार चउ ॥ ६३७ ॥**

उदयं भूमुखव्यासं धनुः पंचपंचशतं तदर्धपूर्वमुखानि ।
वैडूर्यचूलिकायाश्च योजनं चत्वारिंशत् तु द्वादश चत्वारि ॥ ६३७ ॥

**अर्थ**—तिन आसननिकी उचाई पांचसै धनुष अर नीचैं चौडाई पांचसै धनुष उपरि चौड़ाई अढ़ाईसै धनुष प्रमाण है। वहुरि ते आसन पूर्वदिशाकौं सनमुख हैं। वहुरि पांडुकवनकै मध्य मेरुकी वैडूर्य्य रत्नमई चूलिका है ताकी उचाई चालीस योजन नीचै चौड़ाई वारा योजन उपरि चौड़ाई च्यारि योजन प्रमाण है ॥ ६३७ ॥

आगैं कहे जु ए सर्व तिनका किछू विशेप कहैं हैं;—

**पव्वदवावीकूडा सव्वाओ पंडुगादिय सिलाओ**
**वणवेदितोरणेहिं णाणामणिणिम्मिएहिं जुदा ॥ ६३८ ॥**

पर्वतवापीकूटाः सर्वे पांडुकादिकाः शिलाः ।
वनवेदीतोरणैः नानामणिनिर्मितैः युताः ॥ ६३८ ॥

अर्थ—पर्वत भावड़ी कूट पांडुक आदि शिला ए सर्व ही नाना प्रकार मणि कर निर्मापित ऐसे जु वन अर वेदी अर तोरण तिन करि संयुक्त जानने। पर्वतादिकके चौगिरद वन हैं तिनकै वेदी है। तीह वेदीकै तोरणसहित द्वार पाइए हैं ॥ ६३८ ॥

आगैं जंबूवृक्षका स्थानादिक परिवारसहित ग्यारह गाथानिकरि कहैं हैं;—

णीलसमीवे सीदापुव्वतडे मंदराचलीसाणे।
उत्तरकुरुम्हि जंबूथली सपंचसयतलवासा ॥ ६३९ ॥

नीलसमीपे सीतापूर्वतटे मंदराचलैशान्यां।
उत्तरकुरौ जंबूस्थली सपंचशततलव्यासा ॥ ६३९ ॥

अर्थ—नील नामा कुलाचल पर्वतके समीपि दक्षिण सन्मुख जाती सीतानदीका पूर्व दिशासंबंधी तट मेरु पर्वततैं ईशान नामा विदिशा तहां उत्तरकुर नामा भोगभूमिका क्षेत्रविषैं जंबूनामा वृक्षकी स्थली है। जैसैं वृक्षकै थांवला इहां हो है तैसैं तहां स्थली जाननी सो वह स्थली पांचसै योजन प्रमाण है। तलव्यास कहिए नीचैं चौड़ाई जाकी ऐसी है ॥ ६३९ ॥

अंते दलवाहल्ला मज्झे अट्ठुदय वट्ट हेममया
मज्झे थलिस्स पीढीमुदयतियं अट्ठवारचऊ ॥ ६४० ॥

अंते दलवाहल्या मध्ये अष्टोदया वृत्ता हेममया।
मध्ये स्थल्याः पीठमुदयत्रयं अष्टद्वादशचतुः ॥ ६४० ॥

अर्थ—बहुरि सो स्थली अंतविषैं छेहडै तौ आध योजन प्रमाण मोटी है। बहुरि मध्यविषैं बीचि आठ योजन ऊंची है गोल आकार लिए है अर सुवर्णमई है। बहुरि तीह स्थलीकै मध्य बीचि आठ योजन ऊंचा बारह योजन नीचै चौड़ा च्यारि योजन ऊपरि चौड़ा ऐसा पीठ है पीठ नाम पीढका है ॥ ६४० ॥

तत्थलिउवरिमभागे बाहिं बाहिं पवेढिऊण ठिया।
कंचणवलयसमाणा बारंवुजवेदिया णेया ॥ ६४१ ॥

तत्स्थल्युपरिमभागे बहिर्बहिः प्रवेष्ट्य स्थिताः।
कांचनवलयसमानाः द्वादशांबुजवेदिकाः ज्ञेयाः ॥ ६४१ ॥

अर्थ—तीह स्थलीका ऊपरला भागविषैं बाह्य वेढि करि सुवर्णका वलय समान आध योजन ऊंची ताकै आठवें भाग चौड़ी नाना रत्ननिकरि व्याप्त ऐसी बारह अंबुज वेदिका जाननी। भावार्थ—स्थलीकै ऊपरि प्रथम वेदीकों वेढि दूसरी वेदी है। दूसरीकौं वेढि तीसरी है। ऐसैं बारह वेदी जाननी। ते सर्व वेदी सुवर्णमई रत्नजड़ित हैं आध योजन ऊंची हैं। एक योजनकै सोल्हां भाग प्रमाण चौड़ी हैं ॥ ६४१ ॥

चउगोउरवं वेदीवाहिरदो पडमावेदियगे मुण्णं
तदिए सुरुत्तमाणं अट्ठदिसे अट्ठसयरुक्खा ॥ ६४२ ॥

चतुर्गोपुरका वेदीवाह्यतः प्रथमद्वितीयके शून्यं ।
तृतीये सुरोत्तमानां अष्टदिशासु अष्टशतवृक्षाः ॥ ६४२ ॥

**अर्थ—**ते बारह वेदी प्रत्येक च्यारि द्वारनिकरि संयुक्त हैं। बहुरि इन वेदीनिविषै सर्वतैं बाह्य वेदीतैं लगाय अभ्यन्तर वेदीनिकै बीचि अंतराल है। तहां बाह्य वेदी अर ताकै अभ्यन्तर वेदीकै बीचि जो अंतराल ताकौं प्रथम अंतराल कहिए। ऐसैं क्रमतैं माहीं माहिं द्वितीयादि अंतराल जानने। तहां प्रथम अंतराल अर द्वितीय अंतरालविषै तौ सून्य है। तहां जंबूवृक्ष आदि नाहीं हैं। बहुरि तीसरा अंतरालविषै उत्कृष्ट यक्षदेवनिके आठौं दिशानिविषै मिलि करि एकसो आठ वृक्ष हैं ॥ ६४२ ॥

**तुरिए पुव्वदिसाए देवीणं चारि पंचमे दु वणं**
**वावीय वट्टचउरस्सादी छट्ठे हवे गयणं ॥ ६४३ ॥**

तुर्ये पूर्वदिशि देवीनां चत्वारः पंचमे तु वनं ।
वाप्यः वृत्तचतुरस्रादयः षष्ठे भवेत् गगनं ॥ ६४३ ॥

**अर्थ—**चौथा अंतरालविषै पूर्व दिशाविषै यक्षनिकी देवांगनानिके च्यारि जंबूवृक्ष हैं। बहुरि पांचवां अंतरालविषै वन है। तहां वनविषै गोल चौकोर आदि बावड़ी हैं। बहुरि छठा अंतरालविषै शून्य है। जंबूवृक्ष आदि रचना तहां नांहीं है ॥ ६४३ ॥

**चउदिस सोलसहस्सं तणुरक्खे सत्तमम्हि अट्ठमगे ।**
**ईसाणुत्तरवादे चदुस्सहस्सं समाणाणं ॥ ६४४ ॥**

चतुर्दिक्षु षोडशसहस्रं तनुरक्षाणां सप्तमे अष्टमके ।
ऐशान्युत्तरवातासु चतुःसहस्रं समानानाम् ॥ ६४४ ॥

**अर्थ—**सातवां अंतरालविषै च्यारयौं दिशानिविषै मिलि करि सोलह हजार तिनही यक्षनिके अंगरक्षक देवनिके वृक्ष हैं। बहुरि आठवां अंतरालविषै ईशान दिशा अर उत्तर दिशा अर वायवी दिशानिविषै मिलि करि च्यारि हजार सामानिक देवनिके वृक्ष हैं ॥ ६४४ ॥

**णवमतिए जलणजमे णेरिदि अब्भंतरत्तिपरिसाणं ।**
**बत्तीस ताल अडदालसहस्सा पायवा कमसो ॥ ६४५ ॥**

नवमत्रिके ज्वलनयाम्ययोः नैर्ऋत्यां अभ्यन्तरत्रिपरिषदां ।
द्वात्रिंशत् चत्वारिंशत् अष्टचत्वारिंशत् सहस्राणि पादपाः क्रमशः ॥ ६४५ ॥

**अर्थ—**नवमत्रिके कहिए नवां दशवां ग्यारव्हां अंतरालविषै क्रमतैं अग्नि यम नैऋति दिशानिविषैं अभ्यंन्तर मध्य बाह्य परिषद् देवनिके बत्तीस हजार चालीस हजार अठतालीस हजार पादप कहिए जंबूवृक्ष क्रमतैं हैं ॥ ६४५ ॥

**सेणामहत्तराणं बारसमे पच्छिमम्हि सत्तेव**
**मुक्खजुदा परिवारा पउमादो पंचयज्झाहिया ॥ ६४६ ॥**

सेनामहत्तराणां द्वादशे पश्चिमायां सप्तैव ।
मुख्ययुताः परिवाराः पद्मेभ्यः पंचाभ्यधिकाः ॥ ६४६ ॥

अर्थ—बारन्हां अंतरालविषै पश्चिम दिशाविषै सात प्रकार सेनाका जु महत्तर प्रधान तिनके सात जंबूवृक्ष हैं। ऐसैं एक मुख्य वृक्ष संयुक्त सर्व परिवारके वृक्ष पद्म नामा द्रहविषै जो श्री-देवीकैं कमलनिका प्रमाण कह्या था तातैं पांच अधिक जाननें। इहां चौथा अंतरालविषै च्यारि देवांगनानिके वृक्ष अर एक मुख्य वृक्ष ऐसैं पांच अधिक जाननें। १०८।४।१६०००।४०००।३२०००। ४००००।४८०००।७।१ ए सर्व जंबूवृक्ष एक लाख चालीस हजार एकसौ वीस भए ॥ ६४६ ॥

**दलगाढवासमरगय जोयणदुगतुंग सुत्थिरक्खंधो**
**पीढिय उवरिं जंबू वज्जदलड्ढवासदीह चउसाहा ॥ ६४७ ॥**

दलगाढव्यासमरकतः योजनद्विकतुंगः सुस्थिरस्कंधः ।
पीठादुपरि जंबू वज्रदलाष्टव्यासदीर्घः चतुःशाखः ॥ ६४७ ॥

अर्थ—आध योजन है गाध कहिए पृथ्वीविषै जड़ जाकी बहुरि मरकत मणिमई बहुरि पीठतैं उपरि दोय योजन ऊंचा बहुरि भलै प्रकार स्थिर है पेड जाका ऐसा मुख्य जंबूवृक्ष है। बहुरि स्कंध जो पेड ताकै उपरि वज्रमई आध योजन चौड़ी आठ योजन लंबी च्यारि शाखा कहिए डाहली हैं ॥ ६४७ ॥

**णाणारयणुवसाहा पवालसुमणा मिदिंगसरिसफला ।**
**पुढविमया दसतुंगा मज्झग्गे छच्चदुव्वासा ॥ ६४८ ॥**

नानारत्नोपशाखः प्रवालसुमनाः मृदंगसदृशफलः ।
पृथ्वीमयः दशतुंगः मध्येग्रे पट्चतुर्व्यासः ॥ ६४८ ॥

अर्थ—बहुरि सो जंबूवृक्ष नाना प्रकार रत्नमई उपशाखाः कहिए छोटी डाहली ते हैं जाके पाइए ऐसा है। बहुरि प्रवाल कहिए मूंगा तीह समान वर्णन धरै है सुमन कहिए फूल जाकै ऐसा है। बहुरि मृदंग समान है फल जाके ऐसा है। बहुरि पृथ्वीकायमई है वनस्पतीरूप नाहीं है। जांमूणिके वृक्षकासा आकार है। तातैं जंबूवृक्ष नाम है। बहुरि दश योजन ऊंचा है मध्यविषै छह योजन चौड़ा है। ऊपरि च्यारि योजन चौडा है। इस जंबूवृक्षकी वेदीका अर स्थली पीठ वृक्षका ऐसैं अवस्थान जाननां ॥ ६४८ ॥

**उत्तरकुलगिरिसाहे जिणगेहो सेससाहतिदयम्हि ।**
**आदरअणादराणं जक्खकुलुत्थाणमावासा ॥ ६४९ ॥**

उत्तरकुलगिरिशाखायां जिनगेहः शेपशाखात्रितये ।
आदरानादरयोः यक्षकुलोत्थयोरावासाः ॥ ६४९ ॥

अर्थ—तीह मुख्य जंबूवृक्षकी उत्तर दिशा संबंधी नील कुलाचलकी तरफ जो शाखा तीह उपरि तौ श्री जिनमंदिर है। बहुरि अवशेष तीन शाखानिकै उपरि यक्षकुलविषै उपजे ऐसे आदर अर अनादर नामा व्यंतर देव तिनके मंदिर हैं ॥ ६४९ ॥

आगैं परिवार वृक्षनिका प्रमाण अर तिनका स्वामित्वकौं कहैं हैं;—

जंबूतरुदलमाणा जंबूरुक्खस्स कहिदपरिवारा।
आदरअणादराणं परिवारावासभूदा ते ॥ ६५० ॥

जंबूतरुदलमाना जंबूवृक्षस्य कथितपरिवाराः।
आदरानादरयोः परिवारावासभूतास्ते ॥ ६५० ॥

**अर्थ**—मुख्य जंबूद्वीपका जो उचाई आदि प्रमाण कह्या तीहसौं परिवाररूप अन्य जंबूवृक्षनिका आधा प्रमाण है बहुरि ते आदर अनादरनिका परिवारके आवास रूप हैं। **भावार्थ**—परिवाररूप जंबूवृक्षनिकी शाखानिकै उपरि आदर अनादर देवनिका जो परिवार तिनके मंदिर पाईए हैं ॥ ६५० ॥

आगैं शाल्मली वृक्षका स्वरूपकौं गाथा दोय करि कहैं हैं;—

सीतोदाव्वरतीरे णिसहसमीवे सुरद्दिणेरदिए।
देवकुरुम्हि मणोहररुप्पथले सामली सपरिवारो ॥ ६५१ ॥

सीतोदापरतीरे निषधसमीपे सुराद्रिनैर्ऋत्यां।
देवकुरौ मनोहररूप्यस्थले शाल्मली सपरिवारः ॥ ६५१ ॥

**अर्थ**—उत्तर सनमुख जाती सीतोदा नदीका पश्चिम दिशा संबंधी तटविषै निषद्ध कुलाचलकै समीप मेरुपर्वततैं नैऋत दिशाविषै देवकुरु भोगभूमिका जो क्षेत्र तहां मनोहर रूपामई शाल्मली वृक्षनिकी स्थली है। तहां अपनां परिवार वृक्षनिकरि संयुक्त शाल्मली वृक्ष हैं ॥ ६५१ ॥

जंबुसमवण्णणो सो दक्खिणसाहम्हि जिणगिहं सेसे।
दिससाहतिए गरुडवइवेणूवेणादिधारिगिहं ॥ ६५२ ॥

जंबूसमवर्णनः स दक्षिणशाखायां जिनगृहं शेषे।
दिशाशाखात्रये गरुडपतिवेणुवेण्वादिधारिगृहम् ॥ ६५२ ॥

**अर्थ**—यहु शाल्मली वृक्ष जंबूवृक्ष समान है वर्णन जाका ऐसा है सो वर्णन जंबूवृक्षका किया सोई सर्व याका जाननां। विशेष इतनां याकी दक्षिण शाखा उपरि जिनमंदिर है। अवशेष दिशा संबंधी तीन शाखानिकै उपरि गरुड कुमारनिके स्वामी ऐसे वेणु अर वेणुधारीदेव तिनके मंदिर हैं। परिवार वृक्षनिकी शाखानिके उपरि इनहीके परिवाररूप देवादिकानिके मंदिर जानने ॥६५२॥

आगैं भोगभूमिकर्मभूमिका विभाग कहैं हैं;—

कुरुओ हरिरम्मगभू हेमवदेरण्णवदखिदी कमसो।
भोगधरा वरमज्झिमवराय कम्मावणी सेसा ॥ ६५३ ॥

कुरू हरिरम्यकभुवौ हैमवतैरण्यवतक्षिती क्रमशः।
भोगधराः वरमध्यमावराः कर्मावनयः शेषाः ॥ ६५३ ॥

**अर्थ**—देवकुरु अर उत्तर कुरुक्षेत्रविषै दोय उत्तम भोगभूमि हैं। बहुरि हरि अर रम्यक क्षेत्रविषै दोय मध्यम भोगभूमि हैं। बहुरि हैमवत अर हैरण्यवत क्षेत्रविषै दोय जघन्य भोग भूमि हैं। अवशेष सर्व भरत एरावत विदेह क्षेत्रविषै कर्मभूमि है ॥ ६५३ ॥

आगैं यमकगिरिका स्वरूप गाथा दोय करि कहैं हैं;--

णीलणिसहादु गत्ता सहस्समुभए तडे वरणईणं।
दुगदुगसेला पुव्वो चित्तो अवरो विचित्तक्खो ॥ ६५४ ॥
नीलनिपधतो गत्वा सहस्रमुभये तटे वरनद्योः।
द्विकद्विकशैलौ पूर्वः चित्रः अपरः विचित्राख्यः ॥ ६५४ ॥

अर्थ—नील निषद्ध कुलाचलतैं मेरुकी तरफ आगैं हजार योजन जाइ उत्कृष्ट सीता सीतोदा नदीनिका पूर्व पश्चिम दोऊ तटनिविपै दोय पर्वत हैं। तिनविषैं सीताका पूर्वतटविपै प्राप्त चित्र नामा पर्वत है। पश्चिम तटविपै प्राप्त विचित्र नामा पर्वत है ॥ ६५४ ॥

जमगो मेघो वट्टा पंचसयंतरठिया तदुदयधरा।
वदणं सहस्समद्धं गिरिणामसुरा वसंति गिरिकूडे ॥ ६५५ ॥
यमकः मेघः वृत्ताः पंचशतांतरस्थिताः तदुदयधराः।
वदनं सहस्रमर्धं गिरिनामसुरा वसंति गिरिकूटे ॥ ६५५ ॥

अर्थ—सीतोदाका पूर्व तटविपै यमक अर पश्चिम तटविपै मेघनामा पर्वत है। ऐसैं ए च्यारि यमकगिरि गोल हैं। बहुरि चित्रविचित्रकै बीचि अर यमक मेवकै बीचि पांचसै योजनका अंतराल है तीह अंतरालविपै सीता वा सीतोदा नदी जाननी। बहुरि तिन च्यारयौं पर्वतनिकी उचाई हजार योजन नीचैं चौंड़ाई हजार योजन उपरि चौड़ाई पांचसै योजन प्रमाण हैं। बहुरि तिन पर्वत कूटानिकै उपरि अपनां अपनां जो पर्वतका नाम तिस ही नाम धारक देव वसै हैं ६५५

आगैं मेरुकी पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर दिशानिविपै स्थित जे द्रह तिनका प्रमाण बहुरि एक एक द्रहके दोऊ तटनिविपै तिष्टते ऐसे कांचन पर्वत तिनकी संख्या ताकौं तिनका उत्सेध सहित गाथा चारि करि कहैं हैं;—

गमिय तदो पंचसयं पंचसरा पंचसयमिदंतरिया।
कुरुभद्दसालमज्झे अणुणदिदीहा हु पउमदहसरिसा ॥ ६५६ ॥
गत्वा तत पंचशतं पंच सरांसि पंचशतमितांतरिताः।
कुरुभद्रशालमध्ये अनुनदिदीर्वाणि हि पद्मह्रदसदृशानि ॥ ६५६ ॥

अर्थ—यमक गिरि जहां पाईए तीहस्यौं पांचसै योजन जाइ सीता अर सीतोदा नदीविपै देवकुरु उत्तरकुरु भोगभूमिके दोय क्षेत्र अर पूर्व पश्चिम भद्रशालके दोय क्षेत्र तिनविपैं पांच पांच द्रह हैं। ते द्रह पांचसै पांचसै योजन प्रमाण परस्पर अंतराल धरैं हैं। बहुरि ते द्रह नदीके अनु-सारि यथायोग्य दीर्घ हैं। आयाम कमलादिक करि पद्मद्रह समान हैं। भावार्थ—यमक गिरि जहां नदीनिकै तटि पाईए थे तीह क्षेत्रस्यौं पांचसै योजन परैं मेरुकी तरफ सीता वा सीतोदा नदीविपै एक एक द्रह है। तीह द्रहस्यौं पांचसै योजन परैं जाय और एक द्रह है। ऐसे पांच पांच द्रह देवकुरु अर उत्तर क्षेत्रविपै जाननें। बहुरि तिनही सीता सीतोदा नदीविपै पांच पांच द्रह पूर्व पश्चिम भद्रसालविपैं जाननें। ऐसैं ए बीस द्रह

सीता सीतोदा नदीकै वीचि वीचि जाननें। तहां जितनां नदीका चौड़ाईका प्रमाण तितना ही द्रहनिका चौड़ाईका प्रमाण जाननां। वहुरि पद्म द्रह समान हजार योजन तिन द्रहनिकी लंवाईका प्रमाण जाननां। सो इन द्रहनिकी चौड़ाई तौ नदीनिकी चौड़ाईविषै अर लंवाई नदीनिका प्रवाहविषै जाननी। वहुरि जैसैं पद्मद्रहविषै कमलादिक कहे हैं तैसैं इन द्रहनिविषै भी कमलादिक जाननें॥ ६५६॥

णीलुत्तरकुरुचंदा एरावदमल्लवंत णिसहा य।
देवकुरुसूरसुलसाविज्जू सीददुगदहणामा॥ ६५७॥
नीलोत्तरकुरुचंद्रा ऐरावतमाल्यवंतौ निषधश्च।
देवकुरुसूरसुलसविद्युतः सीताद्विकह्रदनामानि॥ ६५७॥

**अर्थ**—नील १ उत्तर कुरु १ चन्द्र १ ऐरावत १ माल्यवत १ ए पंच वहुरि निषद्र १ देवकुरु १ सूर १ सुलस १ विद्युत १ ए पंच सीता अर सीतोदा नदीनिविषै जे द्रह हैं तिनके नाम जाननें॥ ६५७॥

णइणिग्गमदारजुदा ते तप्परिवारवण्णणं चेसिं।
पउमव्व कमलगेहे णागकुमारीउ णिवसंति॥ ६५८॥
नदीनिर्गमद्वारयुतानि तानि तत्परिवारवर्णनं चैषां।
पद्ममिव कमलगेहेषु नागकुमार्यो निवसंति॥ ६५८॥

**अर्थ**—ते सर्व द्रह नदीके प्रवेश करनेंका अर निकसनेंका द्वारनि करि संयुक्त हैं। **भावार्थ**—नदीनिका प्रवाहकै वीचि द्रह हैं अर तिन द्रहनिकै वेदिका है। सो वेदिका नदीके प्रवेश करनेंके अर निकसनेंके द्वारनि करि संयुक्त है। वहुरि इन द्रहनिका कमलादिकरूप सर्व परिवार वर्णन पद्म नामा द्रह समान जाननां। इतना विशेष, इन द्रहनिविषै जे कमल हैं तिनकै ऊपरि जे मन्दिर हैं तिनविषै अपनां अपनां परिवार सहित नागकुमारी वसै हैं॥ ६५८॥

दुतडे पण पण कंचणसेला सयसयतदद्धमुदयतियं।
ते दहमुहा णगक्खा सुरा वसंतीह सुगवण्णा॥ ६५९॥
द्वितटे पंच पंच कांचनशैलाः शतशततदर्धमुदयत्रयम्।
ते ह्रदमुखा नगाख्याः सुरा वसंति इह शुकवर्णाः॥ ६५९॥

**अर्थ**—तिन द्रहनिके दोऊ तटनिविषै पंक्तिरूप पांच पांच कांचन पर्वत हैं। तिन पर्वतनिकी उचाई सौ योजन है। नीचैं भू व्यास सौ योजन है उपरि मुखव्यास ताका आधा पचास योजन है। वहुरि ते सर्व पर्वत अपने अपने द्रहके सनमुख हैं। इहां प्रश्न—पर्वतानिकै सनमुखपणौं कैसैं होइ? ताका समाधान—इन पर्वतानिकै उपरि जे देवानिके नगर हैं। तिनके द्वार प्रवाहानिके सनमुख हैं। तातैं इन पर्वतनिकों द्रह सनमुख कहे। वहुरि तिन पर्वतानिके उपरि अपनां अपनां पर्वतका जो नाम तिस नामके धारक देव वसै हैं। ते देव शुकवर्ण हैं। सूवाकासा वर्ण संयुक्त हैं।॥६५९॥

आगैं तहांतैं ऊपरि नदीनिका गमनस्वरूप कहैं हैं;—

दहदो गंतूणग्गे सहस्सदुगणउदिदोणि वे च कला।
णदिदारजुदा वेदी दक्खिणउत्तरगभद्दसालस्स ॥ ६६० ॥
हृदतः गत्वाग्रे सहस्रद्विकनवतिद्वि द्वे च कले।
नदीद्वारयुता वेदी दक्षिणोत्तरगभद्रशालस्य ॥ ६६० ॥

अर्थ—द्रहतै आगैं दोय हजार वाणवै योजन अर एक योजनका उगणीस भागनिविषै दोय कला प्रमाण जाइ नदीका प्रवेश करनेके जो द्वार तीह करि संयुक्त दक्षिण भद्रसाल अर उत्तर भद्रसालकी वेदी तिष्टै हैं। कैसैं सो याकी वासना कहिए है। दक्षिण भद्रसाल अढ़ाईसै योजन उत्तर भद्रसाल अढ़ाईसै योजन मेरु व्यास दश हजार योजन इनकों जोड़ें दश हजार पांचसै योजन भए। सो इनकों विदेहका व्यास तेतीस हजार छसै चौरासी योजन च्यारि कला तीहमैंसों घटाइ २३१८४।४÷१९ ताका आधा करिए तब ग्यारह हजार पांचसै वाणवै योजन दोय कला होइ। बहुरि यामैं यमकगिरि कुलाचलका अंतराल हजार योजन अर यमक गिरिका व्यास हजार योजन अर यमक गिरि द्रहकै अंतराल पांचसै योजन अर पाचौं द्रहनिकी लंबाई पांच हजार योजन अर पांचौं द्रहनिके वीचि च्यारि अंतराल तिनके दोय हजार योजन इस सबनिकों जोडें नव हजार पांचसै योजन होइ सो घटाएं दोय हजार वाणवै योजन दोय कला प्रमाण अंतका द्रह अर भद्रसालकी वेदीकै वीचि अंतराल जाननां ॥ ६६० ॥

आगैं दिग्गज पर्वतनिका स्वरूप गाथा दोय करि कहैं हैं;—

कुरुभद्दसालमज्झे महाणदीणं च दोसु पासेसु।
दो दो दिसागइंदा सयतत्तियतद्दलुदयतिया ॥ ६६१ ॥
कुरुभद्रशालमध्ये महानद्योश्च द्वयोः पार्श्वयोः।
द्वौ द्वौ दिशागजेंद्रौ शततावत्तद्दलमुदयत्रयाणि ॥ ६६१ ॥

अर्थ—देवकुरु उत्तर कुरु भोगभूमिनिविषै बहुरि पूर्व पश्चिम भद्रसालनिविषै महानदी सीता सीतोदा तिनके दोऊ तटनिविषै दोय दोय दिग्गजेन्द्र पर्वत हैं। ते ए सर्व आठ भए सो तिन आठौं दिग्गज पर्वतनिकी उंचाई सौ योजन अर नीचैं चौडाई सौ योजन ऊपरि चौडाई पचास योजन प्रमाण है ॥ ६६१ ॥

तण्णामा पुव्वादी पउमुत्तरणीलसोत्थियंजणया।
कुमुदपलासवतंसयरोचणमिह दिग्गजिंदसुरा ॥ ६६२ ॥
तन्नामानि पूर्वादि. पद्मोत्तरनीलस्वस्तिकांजनकाः।
कुमुदपलाशावतंसरोचनमिह दिग्गजेंद्रसुराः ॥ ६६२ ॥

अर्थ—पूर्वादि दिशानिविषैं तिनके नाम कहिए है। पूर्व भद्रसालविषै पद्मोत्तर १ नील १ देवकुरुविषै स्वस्तिक १ अंजन १ पश्चिम भद्रसालविषैं कुमुद १ पलाश १ उत्तर कुरुविषै अवतंश १ रोचन १ तिन दिग्गजनिके नाम हैं। तिन पर्वतनिकैं उपरि दिग्गजेन्द्र देव तिष्टै हैं ॥ ६६२ ॥

आगैं गजदंत पर्वतनिका नामादिक गाथा दोय करि कहैं हैं;—

मल्लव महसोमणसो विज्जुप्पह गंधमादणिभदंता।
ईसाणादो वेलुरियरुप्पतवणीयहेममया ॥ ६६३ ॥
माल्यवान् महासौमनसः विद्युत्प्रभः गंधमादन इभदंताः।
ईशानतः वैडूर्यरूप्यतपनीयहेममयाः ॥ ६६३ ॥

**अर्थ**—माल्यवान १ महासौमनस १ विद्युप्रभ १ गंधमादन १ ऐसैं नामधारक गजदंत पर्वत हैं। ते क्रमतैं वैडूर्य मणि अर रूपो अर तायो सोनों अर सोनों तींह समान वर्ण धरैं हैं। बहुरि ते क्रमतैं मेरुकी ईशानतैं लगाय च्यारयौं विदिशानिविषै तिष्ठैं हैं ॥ ६६३ ॥

णीलणिसहे सुरद्दिं पुट्ठा मल्लवगुहादु सीदा सा।
विज्जुप्पहगिरिगुहदो सीदोदा णिस्सरित्तु गया ॥ ६६४ ॥
नीलनिषधौ सुराद्रिं स्पृष्टाः माल्यवद्गुहायाः सीता सा।
विद्युत्प्रभगिरिगुहातः सीतोदा निसृत्य गता ॥ ६६४ ॥

**अर्थ**—ते गजदंत पर्वत नील वा निषद्ध कुलाचल अर मेरुगिरिकौं स्पर्शैं हैं। **भावार्थ**—मेरुकी च्यारयौं विदिशानिविषै मेरुपर्वतसौं लगाय नील वा निषध कुलाचलपर्यंत लंबे गजदंत पर्वत हैं। बहुरि तहां सीता नामा नदी मुडि करि माल्यवत नामा गजदंत पर्वतकै नदी निकसनैंकी गुफा है तामैं होइ मेरुकी अर्द्ध प्रदक्षिणा देइ पूर्व भद्रसालादिविषै गमन करै है। बहुरि सीतोदा नदी मुडि करि विद्युत्प्रभ नामा गजदंतकै नदी निकसनेंकी गुफा है। तामैं होइ मेरुकी अर्द्ध प्रदक्षिणा देइ पश्चिम भद्रसालादिविषै गमन करै है ॥ ६६४ ॥

अब विदेह देसनिका विभागकौं कहैं हैं;—

उभयंतगवणवेदियमज्झगवेभंगणादितियाणं च।
मज्झगवक्खारचऊ पुव्ववरविदेहविजयद्धा ॥ ६६५ ॥
उभयांतगवनवेदिकामध्यगविभंगनदीत्रयाणां च।
मध्यगवक्षारचतुर्भिः पूर्वापरविदेहविजयार्धाः ॥ ६६५ ॥

**अर्थ**—दोऊ अंतविषै तौ वन वेदिका अर मध्यविषै प्राप्त तीन विभंगा नदी अर मध्यविषै प्राप्त च्यारि वक्षारगिरि पर्वत तिन करि पूर्व पश्चिम विदेहके देश सीता सीतोदा नदीनिके दोऊ तटनिविषै आधे आधे हैं। **भावार्थ**—मेरुकी पूर्व दिशाविषै पूर्व विदेह है। पश्चिम दिशाविषै पश्चिम विदेह है। बहुरि पूर्व विदेहविषै वीचि सीता नदी है। अर पश्चिम विदेहकै वीचि सीतोदा नदी है। सो इन दोऊ नदीनिके दक्षिण उत्तर तट करि च्यारि विभाग हो है। बहुरि एक एक विभागविषै आठ आठ विदेह देश हैं। तहां पूर्व वा पश्चिम भद्रसालकी वेदी ताकै आगैं वक्षार ताकै आगैं विभंगा ताकै आगैं वक्षार ताकै आगैं विभंगा ताकै आगैं वक्षार ताकै आगैं विभंगा ताकै आगैं वक्षार ताकै आगैं देवारण्य वा भूतारण्यत्रनकी वेदी ऐसैं ए नव भए। सो इन नवनिकै वीचि वीचि आठ विदेह देश हैं। या प्रकार बत्तीस विदेह देश जाननें ॥ ६६५ ॥

आगैं वक्षार पर्वत अर विभंगा नदीनिका नामादिक गाथा छह करि कहैं हैं;—

तण्णामा सीदुत्तरतीरादो पढमदो पदक्खिणदो।
चेत्तादिकूडपउमादिमकूडा णलिण एगसेलगगो॥ ६६६॥
तन्नामानि सीतोत्तरतीरात् प्रथमतः प्रदक्षिणतः।
चित्रादिकूटपद्मादिमकूटौ नलिनः एकशैलकगः॥ ६६६॥

अर्थ—सीता नदीका उत्तर तट ताकौं प्रथम करि प्रदक्षिणातैं तिन वक्षार पर्वत वा विभंगा नदीनिके नाम ऐसैं हैं। तहां सीता नदीका उत्तर तटविषै भद्रसालकी वेदीतैं आगैं लगाय क्रमतैं चित्रकूट १ पद्मकूट १ नलिन १ एकशैल १ नाम धारक च्यारि वक्षार पर्वत हैं॥ ६६६॥

गाहदहपंकवदिणादि तिकूडवेसवणअंजणप्पादि।
अंजणगो तत्तजला मत्तजलुम्मत्तजल सिंधू॥ ६६७॥
गाधद्रहपंकवतीनद्यः त्रिकूटवैश्रवणाञ्जनात्मादिः।
अंजनकाः तप्तजला मत्तजला उन्मत्तजला सिंधुः॥ ६६७॥

अर्थ—गाधवती १ द्रहवती १ पंकवती १ नाम धारक तीन विभंगा हैं। बहुरि सीताका दक्षिण तटविषै देवारण्य वेदीतैं आगैं लगाय क्रमतैं त्रिकूट १ वैश्रवण १ अंजनात्मा १ अंजन १ नाम धारक च्यारि वक्षार पर्वत हैं। बहुरि तप्तजला १ मत्तजला १ उनमत्तजला १ नाम तीन विभंगा नदी हैं॥ ६६७॥

सद्धावं विजडावं आसीविस सुहवहा य वक्खारा।
खारोदा सीदोदा सोदोवाहिणि णदी मज्झे॥ ६६८॥
श्रद्धावान् विजटावान् आशीविषः सुखावहश्च वक्षाराः।
क्षारोदा सीतोदा श्रोतोवाहिनी नद्यः मध्ये॥ ६६८॥

अर्थ—पश्चिम विदेह सीतोदा नदीका दक्षिण तटविषै भद्रसाल वेदीतैं आगैं लगाय क्रमतैं श्रद्धावान १ विजटावान १ आशीविष १ सुखावह १ नाम धारक च्यारि वक्षार पर्वत हैं। बहुरि क्षारोदा १ सीतोदा १ स्रोतोवाहिनी १ नाम धारक तीन विभंगा नदी वक्षारनिकै बीचि बीचि हैं॥ ६६८॥

तो चंदसूरणागादिममाला देवमाल वक्खारा।
गंभीरमालिणी फेणमालिणी उम्मिमालिणी सरिदा॥ ६६९॥
ततः चंद्रसूर्यनागादिममालदेवमालाः वक्षाराः।
गंभीरमालिनी फेनमालिनी ऊर्मिमालिनी सरितः॥ ६६९॥

अर्थ—तहां पीछैं पश्चिम विदेह सीतोदा नदीका उत्तर तटविषै देवारण्य वेदीतैं आगैं लगाय क्रमतैं चंद्रमाल १ सूर्यमाल १ नागमाल १ देवमाल १ ए च्यारि वक्षार पर्वत हैं। बहुरि गंभीरमालिनी १ फेनमालिनी १ ऊर्मिमालनी १ ए तीन विभंगा नदी हैं॥ ६६९॥

हेममया वक्खारा वेभंगा रोहिसरिसवण्णणगा।
ताहिं पवेसतोरणगेहे णिवसंति दिक्कण्णा॥ ६७०॥

हेममया वक्षाराः विभंगा रोहितसदृशवर्णनकाः।
तासां प्रवेशतोरणगेहे निवसंति दिक्कन्याः ॥ ६७० ॥

**अर्थ**—ते सर्व वक्षार पर्वत सुवर्णमय हैं। बहुरि ते विभंगा नदी सर्व रोहित नदी समान वर्णन लिए हैं। जैसैं रोहित नदीका निर्गमादिविषै व्यासादिकका प्रमाण है सोई विभंगा नदीनिविषै है। सो ए विभंगा नदी निषद्ध वा नील कुलाचलनिकै निकटि कुंड हैं तिनमैंसौं निकसी है। तहां निकसतैं साढ़ा बारा योजन चौड़ी हैं। बहुरि निकासि सूधी जाइ सीता वा सीतोदाविषै प्रवेश करै हैं। तहां प्रवेश करतै एकसौ पच्चीस योजन चौड़ी हैं। बहुरि इन एक एककी परिवार नदी अठाईस हजार है। बहुरि निकसनैंका कुंडकी वेदीका तोरण द्वार अठारह योजन अर तीन चौथा भाग प्रमाण ऊंचा है। अर प्रवेश करनैंका सीता वा सीतोदाकी वेदीका तोरण द्वारण एकसौ साढ़ा सित्यासी योजन ऊंचा है। ऐसैं रोहित समान वर्णन जाननां। बहुरि तिनका निकसनैंका प्रवेश करनेका तोरण द्वारनकै उपरि मंदिर हैं। तहां दिक्कुमारी वसै हैं ॥ ६७० ॥

आगैं तिन वक्षारनिकै उपरि तिष्ठते देवनिकौं कहैं हैं;—

**वीसदिवक्खाराणं सिहरे तत्तव्विसेसणामसुरा।**
**चिट्ठंति तण्णगाणं पुह कंचणवेदियावणेहिं जुदा ॥ ६७१ ॥**

विंशतिवक्षाराणां शिखरे तत्तद्विशेषनामसुराः।
तिष्ठंति तन्नगानां पृथक् कांचनवेदिकावनैः युताः ॥ ६७१ ॥

**अर्थ**—च्यारि गजदंत सोलह वक्षार मिलि वीस वक्षार पर्वत भए तिनका शिखरि अपनें अपनें वक्षार पर्वतका जो नाम तिसही नामके धारक देव तिष्टै हैं। बहुरि ते पर्वत जुदे जुदे सुवर्ण मय वेदी अर वननि करि संयुक्त हैं ॥ ६७१ ॥

अब देवारण्य वननिका स्थान कहैं हैं;—

**पुव्ववरविदेहंते सीतदु दुतडेसु देवरण्णाणि।**
**चारि लवणुवहिपासे तव्वेदी भद्दसालसमा ॥ ६७२ ॥**

पूर्वापरविदेहांते सीताद्वयोः द्वितटेषु देवारण्यानि।
चत्वारि लवणोदधिपार्श्वे तद्वेदी भद्रसालसमा ॥ ६७२ ॥

**अर्थ**—पूर्व पश्चिम विदेहकै अंति सीता अर सीतोदा नदीका दक्षिण उत्तर दोऊ तटनिविषै च्यारि देवारण्य नामा वन हैं। जैसैं पूर्व पश्चिम भद्रसालकी वेदी निषद्ध नीलकौं स्पर्शि करि तिष्टै है। तैसैं लवणसमुद्रकै निकटि देवारण्यकी वेदी निषद्ध नीलकौं स्पर्शि करि तिष्टै है। **भावार्थ**— विदेहकै अंति समुद्रकै निकटि देवारण्य नामा वन हैं ॥ ६७२ ॥

अब तिन वननिके वृक्षादिक कहैं हैं;—

**जंबीरजंबुकेलीकंकिल्लीमलिवल्लिपहुदीहिं।**
**बहुदेवसरीवावीपासादगिहेहिं जुत्ताणि ॥ ६७३ ॥**

जंबीरजंबूकदलीकंकेल्लिमल्लिवल्लिप्रभृतिभिः।
बहुदेवसरोवापीप्रासादगृहैः युक्तानि ॥ ६७३ ॥

अर्थ—ते देवारण्य वन जंभीरी जामूणि केलि कंकेली माल्ती वेलि आदि वृक्षनि करि संयुक्त हैं। बहुरि बहुत देव सरोवर अर बावड़ी अर प्रासाद मंदिरनि करि संयुक्त हैं ॥ ६७३ ॥

आगैं विदेह देशनिका ग्रामादिकका लक्षण तीन गाथानि करि कहैं हैं;—

**देसे पुह पुह गामा छण्णउदीकोडि णयरखेडा य।**
**खव्वड मडंब पट्टण दोणा संवाह दुग्गडवी ॥ ६७४ ॥**

देशे पृथक् पृथक् ग्रामाः षण्णवतिकोट्यः नगरखेटाः च।
खर्वडा मडंवाः पट्टनानि द्रोणाः संवाहा दुर्गाटव्यः ॥ ६७४ ॥

अर्थ—विदेह क्षेत्रविषै तिष्टते जे बत्तीस देश तिन एक एक विषै पृथक पृथक छिनवै कोड़ि ग्राम हैं। बहुरि नगर खेट खर्वड मडंब पत्तन द्रोण संवाह ए दुर्गाटवी हैं ॥ ६७४ ॥

**छव्वीसमदो सोलं चउवीसचउक्कमेव अडदालं।**
**णवणउदी चोद्दस अडवीसं कमसो सहस्सगुणा ॥ ६७५ ॥**

षड्विंशमतः षोडशः चतुर्विंशं चतुष्कमेव अष्टचत्वारिंशत्।
नवनवतिः चतुर्दश अष्टाविंशं क्रमशः सहस्रगुणानि ॥ ६७५ ॥

अर्थ—छव्वीस सोल्ह चौवीस च्यारि अठतालीस निन्याणवै चौदह अठाईस क्रमतैं हजार गुणे हैं। भावार्थ—एक एक विदेह देशविषै छवीस हजार नगर है। सोल्ह हजार खेट हैं। चौवीस हजार खर्वड हैं। च्यारि हजार मडंब हैं। अठतालीस हजार पतन हैं। निन्याणवै हजार द्रोण हैं। चौदह हजार संवाह हैं। अठाईस हजार दुर्गाटवी हैं ॥ ६७५ ॥

**वइ चउगोउरसालं णदिगिरिणगवेढि सपणसयगामं।**
**रयणपदसिंधुवेलावलइय णगुवरि ट्ठियं कमसो ॥ ६७६ ॥**

वृतिः चतुर्गोपुरशालः नदीगिरिनगवेष्टयं सपंचशतग्रामं।
रत्नपदसिंधुवेलावलयितः नगोपरि स्थितं क्रमशः ॥ ६७६ ॥

अर्थ—वृति जो वाड़ि तीह करि वेष्टित सो ग्राम हैं। बहुरि च्यारि दरवाजे कोट संयुक्त नगर हैं। बहुरि नदी अर पर्वत दोऊनि करि वेष्टित खेट हैं। बहुरि पर्वत करि वेष्टित खर्वड है। पांचसै ग्रामनि करि संयुक्त अडंब है। जहां रत्न वस्तु निपजै सो पत्तन हैं। नदी करि वेष्टित द्रोण है। बहुरि उप समुद्रकी वेला करि वेष्टित जो होइ सो संवाह है। पर्वतकै उपरि जो होइ सो दुर्गाटवी है। ऐसैं क्रमतैं ग्रामादिकका स्वरूप जाननां ॥ ६७६ ॥

आगैं विदेह देशविषैं जो उपसमुद्र हैं ताकै अभ्यतर जे द्वीप हैं तिनका स्वरूप कहैं हैं;—

**छप्पण्णंतरदीवा छव्वीससहस्स रयणआयरया।**
**रयणाण कुक्खिवासा सत्तसयं उवसमुद्दम्हि ॥ ६७७ ॥**

षट्पंचाशदंतरद्वीपाः षड्विंशसहस्रं रत्नाकराः ।

रत्नानां कुक्षिवासाः सप्तशतानि उपसमुद्रे ॥ ६७७ ॥

अर्थ--एक एक विदेह देशविषैं एक एक उपसमुद्र है सो मुख्य नगरी अर महानंदीकै बीचि आर्यखंडविषै पाईए है । तीह उपसमुद्रकैविषै टापू है । तहां छप्पन तौ अंतरद्वीप हैं । बहुरि छवीस हजार रत्नाकर हैं तहां रत्न उपजै हैं । रत्ननिके वेचने लैंनेंके स्थानभूत कुक्षिवास सातसै हैं ॥ ६७७ ॥

आगैं मागधादि तीन देवनिका स्थान कहैं हैं;—

**सीतासीतोदाणदितीरसमीवे जलम्हि दीवतियं ।**

**पुव्वादी मागहवरतणुप्पभासामराण हवे ॥ ६७८ ॥**

सीतासीतोदानदीतीरसमीपे जले द्वीपत्रयं ।

पूर्वादिना मागधवरतनुप्रभासामराणां भवेत् ॥ ६७८ ॥

अर्थ—सीता सीतोदा नदीकै तीर समीप जलविषै पूर्व पश्चिम करि मागध १ वरतनु १ प्रभास १ देवनिके तीन द्वीप हैं । **भावार्थ**—चक्रवर्ती करि साधने योग्य मागध वरतनु प्रभास देव तिनके स्थान जैसैं भरत ऐरावतके समुद्रविषै हैं । तैसे विदेह देशनिके सीता सीतोदा नदीविषै है । पूर्व विदेहके सीता नदीके तीर जलविषै है। पश्चिम विदेहके सीतोदा नदीकै तीर समीप जलविषै है । तहां एक एक देशसंबंधी दोय दोय नदी जिन द्वारनि करि सीता सीतोदाविषै प्रवेश करैं हैं। तिन द्वारनिकै अर तिन द्वारनिकै बीचि द्वार है ताकै समीप जलविषैं तिन देवनिके द्वीप जाननें॥६७८॥

आगैं विदेह क्षेत्रविषै प्राप्त वर्षादिकका स्वरूप गाथा दोय करि कहैं हैं;—

**वरिसंति कालमेहा सत्तविहा सत्त सत्त दिवसवही ।**

**वरिसाकाले धवला बारस दोणाभिहाणब्भा ॥ ६७९ ॥**

वर्षंति कालमेघाः सप्तविधाः सप्त सप्त दिवसावधीन् ।

वर्षाकाले धवला द्वादश द्रोणाभिधाना अभ्राः ॥ ६७९ ॥

अर्थ—सात प्रकार काल मेघ हैं । ते सात सात दिन मर्याद लिएं वर्षाकालविषै वर्षै हैं । बहुरि स्वेतवर्ण द्रोण नामा बारह अभ्र कहिए बादले ते तैसैंही सात सात दिन मर्याद लिएं वर्षै हैं। ऐसैं वर्षाकालविषै एकसौ तेतीस दिन वर्षा हो है ॥ ६७९ ॥

**देसा दुब्भिक्खीदीमारिकुदेववण्णलिंगिमदहीणा ।**

**भरिदा सदावि केवलिसलागपुरिसिड्ढिसाहूहिं ॥ ६८० ॥**

देशा दुर्भिक्षेतिमारिकुदेववर्णलिंगिमतहीनाः ।

भृताः सदापि केवलिशलाकापुरुषर्धिसाधुभिः ॥ ६८० ॥

अर्थ—विदेह क्षेत्रविषै तिष्ठते देश ते अतिवृष्टि १ अनावृष्टि १ मूसा १ टीडी १ सुवा १ अपनी फौज १ अन्य वैरीकी फौज १ ऐसैं सात प्रकार ईति करि रहित हैं । बहुरि गाय मनुष्या- दिक जातैं अधिक मरैं ऐसी मरी तिन करि रहित हैं । बहुरि जिनदेवतैं अन्य कुदेव जिनलिं-

गीतैं अन्य कुलिंगी जिनमततैं अन्य कुमत तिन करि रहित हैं। बहुरि ते देश सदा ही केवलज्ञानी बहुरि तीर्थंकरादि शलाका पुरुष बहुरि ऋद्धिधारी साधु तिन करि भरे हैं॥ ६८० ॥

आगैं तीर्थंकर सकल चक्री अर्द्धचक्रीनिकी पंचमेरु अपेक्षा करि जघन्य उत्कृष्ट संख्या करि प्रवर्तन कहैं हैं;—

तित्थद्धसयलचक्की सट्ठिसयं पुह वरेण अवरेण।
वीसं वीसं सयले खेत्ते सत्तरिसयं वरदो॥ ६८१ ॥
तीर्थार्धसकलचक्रिणः षष्टिशतं पृथक् वरेण अवरेण।
विंशं विंशं सकले क्षेत्रे सप्ततिशतं वरतः॥ ६८१ ॥

**अर्थ—**तीर्थंकर अर अर्द्धचक्री नारायण प्रतिनारायण अर सकल चक्री चक्रवर्ती ए प्रथक प्रथक एक एक विदेह देशविषैं एक एक होइ तब उत्कृष्टपनैं करि एकसौ साठि होंइ। बहुरि जघन्यपनै करि सीता सीतोदाका दक्षिण उत्तर तटविषै एक एक होइ ऐसैं एक मेरु अपेक्षा च्यारि होहिं मिलि करि पंच मेरुके विदेह अपेक्षा करि वीस हो है। बहुरि ते उत्कृष्टपनैंथकी पांच भरत पांच ऐरावतसम्बन्धी मिलाएं तीर्थंकरादिक एकसौ सत्तरि हो हैं॥ ६८१ ॥

अब चक्रवर्तीकी संपदाका स्वरूप कहैं हैं;—

चुलसीदिलक्खभद्दिभ रहा हया विगुणणवयकोडीओ।
णवणिहि चोद्दसरयणं चक्कित्थीओ सहस्सछण्णउदी॥ ६८२ ॥
चतुरशीतिलक्षभद्रेभाः रथा हया द्विगुणनवकोट्यः।
नवनिधयः चतुर्दशरत्नानि चक्रिस्त्रियः सहस्रं षण्णवतिः॥ ६८२ ॥

**अर्थ—**चौरासी लाख कल्याणरूप हाथी हैं। तितनेंही चौरासी लाख रथ हैं। घोडे दुगुणा नव कोडि ताके अठारह कोडि हैं। बहुरि छह ऋतु योग्य वस्तुका देनेवाला कालनिधि है भाजनपात्रका दायक महाकालनिधि है। अन्नका दायक पांडुनिधि है। आयुधका दायक माणवकनिधि हैं। वाजित्रका दायक शंखनिधि है। मंदिरका दायक नैसर्पनिधि है। वस्त्रका दायक पद्मनिधि है। आभूषणका दायक पिंगलनिधि है। नानाप्रकार रत्नसमूहका दायक नाना रत्ननिधि है। ऐसैं नवनिधि हैं। गाडाके आकारिनिधि है तामैं ऐसैं वस्तु निकस्या करै है। बहुरि चक्र १ असि १ छत्र १ दंड १ मणि १ चर्म १ काकिणी १ ए सात अचेतन अर ग्रहपति १ सेनापति १ हाथी १ घोडो १ सिलप १ स्त्री १ पुरोहित १ ए सात सचेतन ऐसैं चौदह रत्न हैं। बहुरि छिनवें हजार स्त्री हैं। ऐसैं चक्रवर्तीके संपदा हैं॥ ६८२ ॥

अब राजाधिराजादिकनिका लक्षण गाथा तीन करि कहैं हैं;—

अण्णे सगपदविठिया सेणागणवणिजदंडवइ मंती।
महयर तलयर वण्णा चउरंगपुरोहमच्चमहमच्चा॥ ६८३ ॥
अन्ये स्वकपदवीस्थिताः सेनागणवणिग्दंडपतिः मंत्री।
महत्तरः तलवरः वर्णाः चतुरंगपुरोहितामात्यमहामात्यः॥ ६८३ ॥

अर्थ—अन्य राजादिक हैं ते अपनी अपनी पदवीविषै स्थित हैं। तहां सेनापति कहिए सेनाका नायक वहुरि गणक पती कहिए ज्योतिषी आदिकका नायक वहुरि वणिक्पति कहिए व्यापारीनिका नायक वहुरि दंडपति कहिए समस्त सेनाका नायक वहुरि मंत्री कहिए पंचांग मंत्रविषै प्रवीण वहुरि महत्तर कहिए कुलविषै वड़ा वहुरि तलवर कहिए कोटवाल वहुरि वर्ण कहिए क्षत्रियादिक च्यारि प्रकार वर्ण वहुरि चतुरंग कहिए च्यारि प्रकार सेना वहुरि पुरोहित कहिए हितकार्यका अधिकारी वहुरि आमात्य कहिए देशका अधिकारी वहुरि महामात्य कहिए सर्व राज्य-कार्यका अधिकारी ॥ ६८३ ॥

इदि अट्ठारसेढीणहिओ राजो हवेज्जमउडधरो।
पंचसयरायसामी अहिराजो तो महाराजो ॥ ६८४ ॥

इति अष्टादशश्रेणीनामधिपो राजा भवेत् मकुटधरः।
पंचशतराजस्वामी अधिराजः ततः महाराजः॥ ६८४ ॥

अर्थ—ऐसैं अठारह श्रेणीनिका जो स्वामी सो राजा कहिए सोई मुकुटधारी हो है। वहुरि ऐसैं पांचसै राजानिका स्वामी सो अधिराजा हो है। वहुरि हजार राजनिका स्वामी महाराजा हो है ॥ ६८४ ॥

तह अद्धमंडलीओ मंडलिओ तो महादिमंडलिओ।
तियछक्खंडाणहिवा पहुणो राजाण दुगुणदुगुणाणं ॥ ६८५ ॥

तथा अर्धमंडलिकः मंडलिकः ततो महादिमंडलिकः।
त्रिकपट्खंडानामधिपाः प्रभवः राज्ञां द्विगुणद्विगुणानाम् ॥ ६८५ ॥

अर्थ—तैसैं दोय हजार राजानिका स्वामी अर्द्धमंडलीक हो है। वहुरि च्यारि हजार राजानिका स्वामी मंडलीक हो है। वहुरि आठ हजार राजानिका स्वामी महामंडलीक हो है। वहुरि सोलह हजार राजानिका स्वामी तीन खंडका अधिपति नारायण वा प्रतिनारायण हो है। वहुरि वत्तीस हजार राजानिका स्वामी छह खंडका अधिपति चक्रवर्ती हो है। ऐसैं अधिराजादिक सर्व राजातैं दूणे दूणे क्रमतैं जाननें ॥ ६८५ ॥

अव तीर्थंकरका विशेष स्वरूप कहैं हैं;—

सयलभुवणेकणाहो तित्थयरो कोमुदीव कुंदं वा।
धवलेहिं चामरेहिं चउसट्ठिहिं विज्जमाणो सो ॥ ६८६ ॥

सकलभुवनैकनाथः तीर्थंकरः कौमुदीव कुंदं वा।
धवलैः चामरैः चतुःषष्टिभिः वीज्यमानः सः ॥ ६८६ ॥

अर्थ—जो सकल लोकका एक अद्वितीय नाथ है। वहुरि गङ्गलनी समान वा कुंदेका फूल समान स्वेत चौसठि चमरनि करि वीज्यमान है सो तीर्थंकर जाननां ॥ ६८६ ॥

आगैं विदेह देशनिके नाम गाथा श्लोक च्यारि करि कहैं हैं;—

**कच्छा सुकच्छा महाकच्छा चउत्थी कच्छकावदी।**
**आवत्ता लांगलावत्ता पोक्खला पोक्खलावदी ॥ ६८७ ॥**

कच्छा सुकच्छा महाकच्छा चतुर्थी कच्छकावती।
आवर्ता लांगलावर्ता पुष्कला पुष्कलावती ॥ ६८७ ॥

**अर्थ**—कछा १ सुकछा १ महाकछा १ चौथी कछकावती १ आवर्त्ता १ लांगलावर्त्ता १ पुष्कला १ पुष्कलावती १ ए आठ देश सीता नदीका उत्तर तटविषै भद्रसाल वेदीतैं आगैं लगाय करि क्रमतैं जाननें ॥ ६८७ ॥

**वच्छा सुवच्छा महावच्छा चउत्थी वच्छकावदी।**
**रम्मा सुरम्मगा चेव रमणेज्जा मंगलावदी ॥ ६८८ ॥**

वत्सा सुवत्सा महावत्सा चतुर्थी वत्सकावती।
रम्या सुरम्यका चैव रमणीया मंगलावती ॥ ६८८ ॥

**अर्थ**—वत्सा १ सुवत्सा १ महावत्सा १ चौथी वत्सकावती १ रम्या १ सुरम्यका १ रमणीया १ मंगलावती १ ए आठ देश सीता नदीका दक्षिण तटविषै देवारण्यकी वेदीतैं उरैं लगाय करि क्रमतैं जाननें ॥ ६८८ ॥

**पम्मा सुपम्मा महापम्मा चउत्थी पम्मकावदी।**
**संखा च णलिणी चेव कुमुदा सरिदा तहा ॥ ६८९ ॥**

पद्मा सुपद्मा महापद्मा चतुर्थी पद्मकावती।
शंखा च नलिनी चैव कुमुदा सरित्तथा ॥ ६८९ ॥

**अर्थ**—पद्मा १ सुपद्मा १ महापद्मा १ चौथी पद्मकावती १ शंखा १ नलिनी १ कुमुद १ सरित १ ए आठ देश सीतोदा नदीका दक्षिण तटविषै भद्रसाल वेदीतैं आगै लगाय क्रमतैं जाननें ॥ ६८९ ॥

**वप्पा सुवप्पा महावप्पा चउत्थी वप्पकावदी।**
**गंधा खलु सुगंधा च गंधिला गंधमालिणी ॥ ६९० ॥**

वप्रा सुवप्रा महावप्रा चतुर्थी वप्रकावती।
गंधा खलु सुगंधा च गंधिला गंधमालिनी ॥ ६९० ॥

**अर्थ**—वप्रा १ सुवप्रा १ महावप्रा १ चौथी वप्रकावती १ गंधा १ सुगंधा १ गंधिला १ गंधमालिनी १ ए आठ देश सीतोदा नदीका उत्तर तटविषै देवारण्य वेदीतैं उरैं लगाय क्रमतैं जाननें ॥ ६९० ॥

आगैं इन देशनिविषै खंड कैसैं जांनिए ऐसैं प्रश्न कहतैं उत्तर कहैं हैं;—

**विजयं पडि वेयड्ढो गंगासिंधुसम दोण्णि दोण्णि णई।**
**तेहिं कया छक्खंडा विदेह बत्तीस विजयाणं ॥ ६९१ ॥**

विजयं प्रति विजयार्धः गंगासिंधुसमे द्वे द्वे नद्यौ।
तैः कृतानि षट्खंडानि विदेहे द्वात्रिंशत् विजयानाम् ॥ ६९१ ॥

अर्थ—देश देश प्रति एक एक विजयार्द्ध पर्वत है । कुलाचलतैं लगाय महानदी पर्यंत जो देशनिकी लंबाई तीहकै मध्य प्रदेशविषै विजयार्द्ध पर्वत जाननां । सो विजय कहिए देश सो इस करि आधा किया तातैं याका विजयार्द्ध ऐसा सार्थक नाम है । बहुरि तिनही देशनिविषै गंगा सिंधुसमान निकसतैं सवा छह योजन चौड़ी प्रवेश करतैं साढ़ा वासठि योजन चौड़ी इत्यादि गंगासिंधुका जो प्रमाण तीह सदृश दोय दोय नदी हैं । तिन नदी अर विजयार्द्धनि करि विदेह संबंधी वत्तीस देशनिविषै प्रत्येक छह छह खंड किए हैं ॥ ६९१ ॥

आगैं तहां तिष्ठते विजयार्द्धनिका वा नदीनिका व्यास गाथा दोय करि कहैं हैं;—

ते पुव्वावरदीहा जणवयमज्झे गुहादु पुव्वं वा ।
गंगादु णीलमूलगकुंडा रत्तदुग णिसहणिस्सरिदा ॥ ६९२ ॥
ते पूर्वापरदीर्घा जनपदमध्ये गुहाद्वयं पूर्वं वा ।
गंगाद्वयं नीलमूलगकुंडा रक्ताद्विकं निषधनिःसृताः ॥ ६९२ ॥

अर्थ—ते विजयार्द्ध पूर्व पश्चिम लंबे हैं । बहुरि जनपद जो देश तीहकै मध्यभागविषै हैं । बहुरि तहां विजयार्द्धविषै दोय गुफा हैं सो गुफा पूर्वैं भरतका विजयार्द्धविषै कही तैसैं ही इहां जाननी । बहुरि एक एक देशविषै दोय दोय नदी हैं । तहां सीता वा सीतोदाका दक्षिण तटविषै जे देश हैं तिनविषै जे दोय दोय नदी हैं तिनका नाम गंगा सिंधु है । बहुरि उत्तर तटविषै जे देश हैं तिनविषै जे दोय दोय नदी हैं तिनका नाम रक्ता रक्तोदा है । तहां गंगासिंधु दोय नदी नील पर्वतकै निकटि मूलविषै स्थित जो कुंड तीहसौं उत्तर सनमुख निकसि सूधी आइ विजयार्द्धकी गुफामें होइ सीता वा सीतोदाविषै तिसकी वेदीका तोरण द्वारविषै प्राप्त होइ प्रवेश करै है । बहुरि रक्ता रक्तोदा दोय नदी निषध पर्वतकै निकटि मूलविषै स्थित जो कुंड तीहसौं दक्षिण सनमुख निकसि सूधी आइ विजयार्धकी गुफामें होइ सीता वा सीतोदाविषै तिसकी वेदीका तोरण द्वारविषै प्राप्त होइ प्रवेश करै है ॥ ६९२ ॥

दसदसपणोत्ति पण्णं तीसं दसयं च रुप्पगिरिवासा ।
खयराभिजोग सेढी सिहरे सिद्धादिकूडं तु ॥ ६९३ ॥
दश दश पंचांतं पंचाशत् त्रिशत् दशकं च रूप्यगिरिव्यासा ।
खचराभियोग्या श्रेणी शिखरे सिद्धादिकूटं तु ॥ ६९३ ॥

अर्थ—तीह विजयार्द्धकै दश योजन ऊंची प्रथम श्रेणी है । पचास योजन प्रमाण नीचैं उपरि समान व्यास धरै है । बहुरि तातैं उपरि दस योजन ऊंची दूसरी श्रेणी है । तीस योजन समान व्यास धरैं है । ताकै उपरि पांच योजन ऊंचा उपरिका शिखर है । दश योजन समान व्यास धरैं है । भावार्थ—विजयार्द्ध पर्वत नीचैतैं लगाय दश योजनकी उचाई पर्यंत पचास योजन चौड़ा है । बहुरि उपरि दक्षिण उत्तरविषै दश दश योजनकी चौड़ी कटनी छूटि वीचिमैं दश योजन उचाई पर्यंत तीस योजन चौड़ा है । बहुरि उपरि दक्षिण उत्तरविषै दश दश योजन कटनी छूटि वीचिमें पांच योजन उचाई पर्यंत दश योजन चौड़ा है । बहुरि तहां दक्षिण उत्तर दोऊ तट-

विषै प्राप्त प्रथम श्रेणीविषै विद्याधर वसै हैं। बहुरि द्वितीय श्रेणी जो कटनी तिह विषै आभियोग्य देव वसै हैं। बहुरि शिखरविषै सिद्धायतन आदि नवकूट हैं॥ ६९३॥

आगैं तहां ही द्वितीयादि श्रेणीविषै विशेष कहैं हैं;—

**सोहम्मआभिजोग्गगमणिचित्तपुराणि विदियसेढिम्हि।**
**वेयड्ढकुमारवई सिहरतले पुण्णभद्दक्खे॥ ६९४॥**

सौधर्माभियोग्यगमणिचित्रपुराणि द्वितीयश्रेण्याम्।
विजयार्धकुमारपतिः शिखरतले पूर्णभद्राख्ये॥ ६९४॥

**अर्थ—**तहां ही द्वितीय श्रेणीविषै सौधर्म संबंधी आभियोग्य देवनिके मणिमई नानाप्रकार नगर हैं। बहुरि तिस विजयार्द्धका शिखरविषै पूर्णभद्र नामा कूट तीह उपरि विजयार्द्ध कुमार पति देव वसै हैं॥ ६९४॥

आगैं तहां प्रथम दोऊ श्रेणिनिविषै तिष्ठते विद्याधरनिके नगर तिनकी संख्या वा तिनके नाम पंद्रह गाथानि करि कहैं हैं;—

**पणवण्णं पणवण्णं विदेहवेयड्ढपढमभूमिम्हि।**
**णयराणि पण्णसट्ठी जंबूउभयंतवेयड्ढे॥ ६९५॥**

पंचपंचाशत् पंचपंचाशत् विदेहविजयार्धप्रथमभूमौ।
नगराणि पंचाशत् षष्टिः जंबूभयांतविजयार्धे॥ ६९५॥

**अर्थ—**विदेह संबंधी विजयार्द्धनिकी दक्षिण उत्तररूप प्रथम दोऊ श्रेणी तीहविषै पचावन पचावन नगर विद्याधरनिके हैं। बहुरि जंबूद्वीपका दोऊ अंत जे भरत ऐरावत तिनि संबंधी विजयार्द्ध तहां प्रथम दोऊ श्रेणीविषै पचास साठि नगर हैं॥ ६९५॥

**सेलायामे दक्खिणसेढीए पण्णमुत्तरे सट्ठी।**
**तण्णामा पुव्वादी किंणामिद किंणरंगीदं॥ ६९६॥**

शैलायामे दक्षिणश्रेण्यां पंचाशदुत्तरस्यां षष्ठिः।
तन्नामानि पूर्वादितः किंनामितं किन्नरगीतं॥ ६९६॥

**अर्थ—**भरत ऐरावत संबंधी विजयार्द्ध तीहंकी पूर्व पश्चिम लंबाईविषै दक्षिण श्रेणीविषै तौ पचास नगर हैं। उत्तर श्रेणीविषै साठि नगर हैं तिन नगरनिके नाम पूर्व दिशातैं लगाय अनुक्रमतैं कहिए हैं। किंनामित १ किंनरगीत १॥ ६९६॥

**णरगीदं बहुकेदू पुंडरियं सीहसेदगरुडधजं।**
**सिरिपहधर लोहग्गलमरिंजयं वज्जअग्गलड्ढपुरं॥ ६९७॥**

नरगीतः बहुकेतुः पुंडरीकं सिंहश्वेतगरुडध्वजं।
श्रीप्रभधरं लोहार्गलमरिंजयं वज्रार्गलाढ्यपुरं॥ ६९७॥

**अर्थ—**नरगीत १ बहुकेतु १ पुंडरीक १ सिंहध्वज १ श्वेतध्वज १ गरुडध्वज १ श्रीप्रभ १ श्रीधर १ लोहार्गल १ अरिंजय १ वज्रार्गल १ वज्राढ्यपुर १॥ ६९७॥

होइ विमोइ पुरं जय सयडचदुव्वहुमुही य अरजक्खा ।
विरजक्खा रहणूपुर मेहलअग्गपुर खेमचरी ॥ ६९८ ॥
भवति विमोचि पुरंजयं शकटचतुर्वहुमुखी च अरजस्का ।
विरजस्का रथनूपुरं मेखलाग्रपुरं क्षेमचरी ॥ ६९८ ॥

**अर्थ**—भवति कहिए नगर है । विमोचिपुर १ जय १ शकटमुखी १ चतुर्मुखी १ बहुमुखी १ अरजस्का १ विरजस्का १ रथनूपुर १ मेखलाग्रपुर १ क्षेमचरी १ ॥ ६९८ ॥

अवराजिद कामादीपुप्फं गगणचरि विणयचरि सुक्कं ।
तो सजयंतिणगरं जयंति विजया वइजयती य ॥ ६९९ ॥
अपराजितं कामादिपुष्पं गगनचरी विनयचरी शुक्रं ।
ततः संज तिनगरं जयंति विजया वैजयंती च ॥ ६९९ ॥

**अर्थ**—अपराजित १ ामपुष्प १ गगनचरी १ विनयचरी १ शुक्र १ संजयंतिनगर १ जयंती १ विजया १ वैजयंती १ ॥ ६९९ ॥

खेमंकर चंदाहं सूराहं चित्तकूड महकूडं ।
हेमतिमेहविचित्तयकूडं वेसवणकूडमदो ॥ ७०० ॥
क्षेमकरं चंद्राभं सूर्याभं चित्रकूटं महाकूटं ।
हेमत्रिमेघविचित्रकूटं वैश्रवणकूटमतः ॥ ७०० ॥

**अर्थ**—क्षेमंकर १ चंद्राभ १ सूर्याभ १ चित्रकूट १ महाकूट १ हेमकूट १ त्रिकूट १ मेघकूट १ विचित्रकूट १ वैश्रवणकूट १ ॥ ७०० ॥

सूरपुर चंदपुर णि ज्जोदिणि विमुहि णिच्चवाहिणियो ।
सुमुही चरिमा पच्छिमभागादो अज्जुणी अरुणी ॥ ७०१ ॥
सूर्यपुरं चंद्रपुरं नित्योद्योतिनी विमुखी नित्यवाहिनी ।
सुमुखी चरमा पश्चिमभागात् अर्जुनी अरुणी ॥ ७०१ ॥

**अर्थ**—सूर्यपुर १ चन्द्रपुर १ नित्योद्योतिनी १ विमुखी १ नित्यवाहिनी १ सुमुखी १ अंतकी नगरी १ ऐसैं दक्षिण श्रेणीविषै पचास नगरी हैं । अब उत्तर श्रेणीविषै पश्चिम भागतैं लगाय क्रमतैं नगरीनिके नाम कहिए हैं । अर्ज्जुनी १ अरुणी १ ॥ ७०१ ॥

कैलास वारुणीपुरि विज्जुप्पह किलिकिलं च चूडादी ।
मणि सासिपह वंसालं पुप्फादी चूलमिह दसमं ॥ ७०२ ॥
कैलाशो वारुणी पुरी विद्युत्प्रभं किलिकिलं च चूडादिः ।
मणिः शशिप्रभं वंशालं पुष्पादिः चूलमिह दशमं ॥ ७०२ ॥

**अर्थ**—कैलाश १ वारुणीपुरी १ विद्युत्प्रभ १ किलिकिल १ चूड़ामणि १ शशिप्रभ १ वंशाल १ पुष्पचूलनामा दशवां नगर है ॥ ७०२ ॥

तत्तोवि हंसगब्भं वलाहगं तेरसं सिवंकरयं।
सिरिसोध चमर सिवमंदिर वसुमक्का वसुमदी य ॥ ७०३ ॥
ततोपि हंसगर्भं वलाहकं त्रयोदशं शिवंकरं।
श्रीसौधं चमरं शिवमंदिरं वस्तुमत्का वसुमती च ॥ ७०३ ॥

**अर्थ**—तहां पीछै हंसगर्भ १ वलाहक १ शिवंकर १ तेरव्हां है श्रीसौध १ चमर १ शिवमंदिर १ वसुमत्का १ वसुमती १ ॥ ७०३ ॥

सिद्धत्थं सत्तुंजय धयमाल सुरिंदकंत गयणादि।
णंदणमवि वीदादिमसोगो अलगा तदो तिलगा ॥ ७०४ ॥
सिद्धार्थं शत्रुंजयं ध्वजमालं सुरेंद्रकांतं गगनादिः।
नंदनमपि वीतादिमशोकः अलका ततस्तिलका ॥ ७०४ ॥

**अर्थ**—सिद्धार्थ १ शत्रुंजय १ ध्वजमाल १ सुरेन्द्रकांत १ गगननंदन १ अशोका १ विशोका १ वीतशोका १ अलका १ तहां पीछै तिलका १ ॥ ७०४ ॥

अंवरतिलगं मंदर कुमुदं कुंदं च गयणवल्लभयं।
तो दिव्वतिलय भूमीतिलयं गंधव्वणयरमदो ॥ ७०५ ॥
अंवरतिलकं मंदरं कुमुदं कुंदं च गगनवल्लभं।
ततो दिव्यतिलकं भूमीतिलकं गंधर्वनगरमतः ॥ ७०५ ॥

**अर्थ**—अंवरतिलक १ मंदर १ कुमुद १ कुंद १ गगनवल्लभ १ तहां पीछै दिव्यतिलक १ भूमितिलक १ गंधर्वनगर १ इहांतैं आगैं ॥ ७०५ ॥

मुत्ताहारं णेमिसमग्गिमहज्जालसिरिणिकेदवुरं।
जयवह सिरिवासं मणिवज्जं भद्दस्सपुरं धणंजययं ॥ ७०६ ॥
मुक्ताहारं नैमिपमग्निमहाज्वालं श्रीनिकेतपुरं।
जयावहं श्रीवासं मणिवज्रं भद्राश्वपुरं धनंजयं ॥ ७०६ ॥

**अर्थ**—मुक्ताहार १ नैमिप १ अग्निज्वाल १ महाज्वाल १ श्रीनिकेतपुर १ जयावह १ श्रीनिवास १ मणिवज्र १ भद्राश्वपुर १ धनंजय १ ॥ ७०६ ॥

गोखीरफेणमक्खोभं गिरिसिहरं च धरणि धारिणियं।
दुग्गं दुद्धरणयरं सुदंसणं तो महिंदविजयपुरं ॥ ७०७ ॥
गोक्षीरफेनमक्षोभं गिरिशिखरं च धराणि धारिणिकं।
दुर्गं दुर्धरनगरं सुदर्शनं ततो महेंद्रविजयपुरं ॥ ७०७ ॥

**अर्थ**—गोक्षीरफेन १ अक्षोभ १ गिरिशिखर १ धरणिपुर १ धारणीपुर १ दुर्ग १ दुर्द्धरनगर १ सुदर्शन १ तहां पीछे महेन्द्रपुर १ विजयपुर ॥ ७०७ ॥

णगरी सुगंधिणी वज्जद्धतरं रयणपुव्वआयरयं।
रयणपुरं चरिमं ते रयणमया राजधाणीओ ॥ ७०८ ॥

नगरी सुगंधिनी वज्रार्धतरं रत्नपूर्वमाकरं ।
रत्नपुरं चरमं ताः रत्नमया राजधान्यः ॥ ७०८ ॥

अर्थ—सुगंधिनी नगरी १ वज्रार्द्धतर २ रत्नाकर १ रत्नपुर १ अंतका नगर है । ऐसैं साठि नगरी उत्तर श्रेणीविषै हैं । ते ए सर्व नगरी रत्नमई हैं । बहुरि राजानिका जहां वास पाइए ऐसी राजधानी हैं ॥ ७०८ ॥

**पायारगोउरट्टलचरियासरवण विराजिया तत्थ ।**
**विज्जाहरा तिविज्जा वसंति छक्कम्मसंजुत्ता ॥ ७०९ ॥**

प्राकारगोपुराट्टालचर्यासरोवनैः विराजिता तत्र ।
विद्याधरा त्रिविद्या वसंति षट्कर्मसंयुक्ताः ॥ ७०९ ॥

अर्थ—कोट दरवाजा मंदिर मार्ग सरोवर वन इनकरि ते नगरी विराजित हैं । तहां तिन नगरीनिविषै विद्याधर वसै हैं । ते विद्याधर साधित कुल जातिविद्यानि करि त्रिविध हैं । जाकौं आप साधिए सो साधित विद्या १ बहुरि पितृपक्ष कुलक्रमतैं चली आई सो कुलविद्या १ बहुरि मातृपक्ष जातिविषै चली आई सो जाति विद्या १ ऐसी तीन विद्यानि करि संयुक्त हैं । बहुरि इज्या वार्त्ता दत्ति स्वाध्याय संयम तप इन षट कर्मनि करि संयुक्त हैं । तहां पूज्यका पूजना सो इज्या, असि मषि आदि जीवनैंका उपायरूप व्यापार सो वार्त्ता १ दान दैनां सो दत्ति १ पठन पाठन करनां सो स्वाध्याय १ अविरति त्याग करनां सो संयम १ तपश्चरण करना सो तप जाननां॥७०९॥

आगैं विजयार्द्ध कर किया षट खंडविषै म्लेच्छखंडविषैं तिष्टता जो वृषभाचल ताका स्वरूपकौं निरूपै हैं;—

**सत्तरिसयवसहगिरी मज्झगयमिलेच्छखंडबहुमज्झे ।**
**कणयमणिकंचणुदयाति भरिया गयचक्किणामेहिं ॥ ७१० ॥**

सप्ततिशतं वृषभगिरयः मध्यगतम्लेच्छखंडबहुमध्ये ।
कनकमणिकांचनोदयत्रिकं भृता गतचक्रिनामभिः ॥ ७१० ॥

अर्थ—कुलाचल विजयार्द्ध दोय नदीनिकै वीचि मध्यका जो म्लेछ खंड तीहका बहुत मध्य प्रदेशविषै वृषभाचल है सो एक एक देशविषै एक एक है । सो पांचौ मेरुसंबंधी विदेह देश अर भरत ऐरावतविषै एकसौ सत्तरि वृषभाचल हैं । ते सुवर्णवर्ण हैं मणिमई हैं । कांचन पर्वत समान उदयादि तीन तिनके हैं । सो उचाई सौयोजन, नीचैं भूव्यास सौ योजन, उपरि मुख व्यास पचास योजन जाननां । बहुरि अतीत कालविषै भए चक्रवर्ती तिनके नामनि करि भरया है । जो चक्रवर्ती होइ सो तिस पर्वतविषै अपनां नाम अक्षर लिखै है ॥ ७१० ॥

आगैं तैसैंही आर्यखंडकै मध्य तिष्टै है जो राजधानी नगरी तीहविषै व्यास आयाम कहैं हैं;—

**सत्तरिसयणयराणि य उवजलधिगअज्जखंडमज्झम्हि ।**
**चक्कीण णवय बारस वासायामेण होंति कमे ॥ ७११ ॥**

सप्ततिशतनगराणि च उपजलधिगार्यखंडमध्ये।
चक्रिणां नव द्वादश व्यासायामाभ्यां भवंति क्रमेण ॥ ७११ ॥

**अर्थ**—उप समुद्र कहिए खाड़ी समुद्र ताकौं प्राप्त जो आर्यखंड तीहके मध्य व्यास जो चौड़ाई अर आयम जो लंबाई तिनकरि क्रमतें नव बारह योजन प्रमाण पंच मेरुसंबंधी विदेह देश अर भरत ऐरावतनिविषै एकसौ सत्तरि चक्रवर्तीनिके व्यास योग्य मुख्य नगर हैं ॥ ७११ ॥

आगैं तिन नगरनिके नाम गाथा वा श्लोक च्यारि करि कहैं हैं;—

**खेमा खेमपुरी चेव रिट्ठापुरी तहा।**
**खग्गा य मंजुसा चेव ओसही पुंडरीकिणी ॥ ७१२ ॥**

क्षेमा क्षेमपुरी चैव अरिष्टा अरिष्टपुरी तथा।
खड्गा च मजूषा चैव औषधी पुंडरिकिणी ॥ ७१२ ॥

**अर्थ**—पूर्वोक्त कच्छादि विदेह देशनिविषै मुख्य राजधानी नगरीनिके क्रमतें नाम कहिए हैं। क्षेमा १ क्षेमपुरी १ अरिष्टा १ अरिष्टपुरी १ खड्गा १ मंजूषा १ औषधी १ पुंडरीकिणी १ ॥ ७१२ ॥

**सुसीमा कुंडला चेवापराजिद पहंकरा।**
**अंका पउमावदी चेव सुभा रयणसंचया ॥ ७१३ ॥**

सुसीमा कुंडला चैवं अपराजिता प्रभंकरा।
अंका पद्मावती चैव शुभा रत्नसंचया ॥ ७१३ ॥

**अर्थ**—सुसीमा १ कुंडला १ अपराजिता १ प्रभंकरा १ अंका १ पद्मावती १ शुभा १ रत्नसंचया १ ॥ ७१३ ॥

**अस्सपुरी सीहपुरी महापुरी तह य होदि विजयपुरी।**
**अरया विरया चेव असोगया वीदसोगा य ॥ ७१४ ॥**

अश्वपुरी सिंहपुरी महापुरी तथा च भवति विजयपुरी।
अरजा विरजा चैव अशोका वीतशोका च ॥ ७१४

**अर्थ**—अश्वपुरी १ सिंहपुरी १ महापुरी १ तैसैं ही विजयपुरी १ अरजा १ विरजा १ अशोका १ वीतशोका १ ॥ ७१४ ॥

**विजया च वइजयती जयंत अवराजिदा य वोधव्वा।**
**चक्कपुरी खग्गपुरी होदि अयोज्झा अवज्झा य ॥ ७१५ ॥**

विजया च वैजयंती जयंता अपराजिता च वोद्धव्या।
चक्रपुरी खड्गपुरी भवति अयोध्या अवध्या च ॥ ७१५ ॥

**अर्थ**—विजया १ वैजयंती १ जयंता १ अपराजिता १ जाननी १ चक्रपुरी १ खड्गपुरी १ अयोध्या १ अवध्या १ ऐसैं ए बत्तीस नाम जाननें। बहुरि भरत ऐरावत विषै चक्रवर्तीके नगरनिका नाम कोई एक नियमरूप नांहीं तातैं इनि पूर्वोक्त नामनिविषै कोई एक नाम हो है। तातैं जुदा नाम न कह्या ॥ ७१५ ॥

आगैं तिन नगरनिका विशेष स्वरूप गाथा दोय करि कहैं हैं;—

रयणकवाडवरावर सहस्सदलदार हेमपायारा ।
वारसहस्सा वीही तत्थ चउप्पह सहस्सेकं ॥ ७१६ ॥

रत्नकपाटवरावराः सहस्रदलद्वारा हेमप्राकाराः ।
द्वादशसहस्राणि वीथ्यः तत्र चतुष्पथानि सहस्रैकम् ॥ ७१६ ॥

अर्थ—तिन नगरनिकै द्वारनिविषै रत्नमई किवाड़ हैं । उत्कृष्ट वड़े हजार द्वार हैं । जघन्य छोटे ताके आधे पांचसै द्वार हैं सुवर्ण मई कोट है तीह नगरकै अभ्यंतर बारह हजार वीथी गली हैं । तहां एक हजार चतुष्पथ चोपटा मार्ग हैं ॥ ७१६ ॥

णयराण वहिं परिदो वणाणि तिसदंससट्ठि पुरमज्झे ।
जिणभवणा णरवइजणगेहा सोहंति रयणमया ॥ ७१७ ॥

नगराणां वहिः परितः वनानि त्रिशतं सषष्ठिः पुरमध्ये ।
जिनभवनानि नरपतिजनगेहानि शोभंते रत्नमयानि ॥ ७१७ ॥

अर्थ—नगरनिकै बाह्य चौगिरद साठि सहित तीनसै वन कहिए बाग हैं । बहुरि नगरकै मध्य जिन मंदिर अर नरपति राजाका मंदिर अर अन्य जननिके मंदिर रत्नमई सोभै हैं । इहां विदेह क्षेत्रविषै मेरु आदिका अवस्थान ऐसैं जांननां ॥ ७१७ ॥

अब नाभि गिरिनिका अवस्थान अर तिनका उत्सेध आदिक गाथा दोयकरि कहैं हैं;—

थिरभोगावणिमज्झे णाभिगिरीओ हवंति वीसाणि ।
वट्टा सहस्सतुंगा मूलुवरिं त्तत्तिया रुंदा ॥ ७१८ ॥

स्थिरभोगावनिमध्ये नाभिगिरयः भवंति विंशतिः ।
वृत्ताः सहस्रतुंगा मूलोपरि तावंतः रुंद्राः ॥ ७१८ ॥

अर्थ—स्थिर भोग भूमि हैमवत हरि रम्यक हैरण्यवत क्षेत्र तिनके मध्य प्रदेशविषै एक एक नाभि गिरि गोल हैं । बहुरि हजार योजन ऊंचे हैं । बहुरि नीचैं वा उपरि तितनेंही हजार योजन चौड़े हैं । भाव यहु ऊभा ढोलके आकारि हैं ते पंचमेरु संबंधी वीस नाभि गिरि हैं ॥७१८॥

सद्दावं विजडावं पउमगंधवण्णाम सुकिला सिहरे ।
सक्कदुगणुचर सादीचारणपउमप्पहास वाणसुरा ॥ ७१९ ॥

श्रद्धावान् विजटावान् पद्मगंधवन्नामानि शुक्लाः शिखरे ।
शक्रद्विकानुचराः स्वातिचारणपद्मप्रभासाः वानसुराः ॥ ७१९ ॥

अर्थ—हैमवतादि विषै श्रद्धावान् १ विजटावान् १ पद्मवान् १ गंधवान् १ ऐसैं पंचमेरु संबंधी च्यारि नाभि गिरिनिके नाम हैं । बहुरि ते नाभिगिरि स्वेतवर्ण हैं । बहुरि तिनि नाभि गिरिनिकै शिखरि सौधर्म ईशान इन्द्रके अनुचर चाकर स्वाति १ चारण १ पद्म १ प्रभासनामा व्यंतर देव वसैं हैं ॥ ७१९ ॥

अब हिमवत् आदि कुलाचल अर विजयार्द्ध पर्वत तिनकै उपरि तिष्टते जे कूट तिनकी संख्यादिक कहैं हैं;—

**एक्कारसट्ठणवणव अट्ठेक्कारस हिमादिकूलाणि।**
**वेयड्ढाणं णव णव पुव्वगकूलम्हि जिणभवणं॥ ७२०॥**

एकादशाष्ट नव नव अष्टैकादश हिमादिकूटानि।
विजयार्धानां नव नव पूर्वकूटे जिनभवनानि॥ ७२०॥

**अर्थ**—ग्यारह ११ आठ ८ नव ९ नव ९ आठ ८ ग्यारह ११ प्रमाण क्रमतैं हिमवत् आदि कुलाचलनि उपरि कूट हैं। बहुरि विजयार्ध पर्वतनिकै उपरि नव नव कूट हैं। नीचैंतैं बहुत चौडे उपरि थोडे चौडे गोल आकार पर्वतनिकै उपरि ए कूट जाननें। तहां पूर्वदिशाविषै प्राप्त सिद्धायतन नामा कूट तिन उपरि जिन मंदिर हैं॥ ७२०॥

आगैं कहे कूट तिनके नाम आदिक गाथा दश करि कहैं हैं;—

**कमसो सिद्धायदणं हिमवं भरहं इला य गंगा य।**
**सिरिकूडरोहिदस्सा सिंधु सुरा हेमवदय वेसवणं॥ ७२१॥**

क्रमशः सिद्धायतनं हिमवान् भरतं इला च गंगा च।
श्रीकूटं रोहितास्या सिंधुः सुरा हैमवतकं वैश्रवणं॥ ७२१॥

**अर्थ**—क्रमकरि तिनके नाम कहिए हैं। सिद्धायतन १ हिमवत १ भरत १ इला १ गंगा १ श्रीकूट १ रोहितास्या १ सिंधु १ सुराकूट १ हैमवतक १ वैश्रवण १ ऐसैं हिमवत् कुलाचल उपरि ग्यारह कूट हैं॥ ७२१॥

**पढमे जिणिंदगेहं देवीओ जुवदिणावकूडेसु।**
**सेसेसु कूडणामा वेंतरदेवावि णिवसंति॥ ७२२॥**

प्रथमे जिनेंद्रगेहं देव्यो युवतीनामकूटेषु।
शेषेषु कूटनामानः व्यंतरदेवा अपि निवसंति॥ ७२२॥

**अर्थ**—तहां प्रथम सिद्धायतन कूट उपरि जिनेंद्र मंदिर है। बहुरि स्त्रीलिंग रूप नाम धारक जे कूट हैं जैसैं हिमवत उपरि इला गंगा श्री रोहितास्या सिंधु सुराकूट है तिन उपरि व्यंतर देवी वसैं हैं। बहुरि अवशेष कूटनिके उपरि अपनें अपनें कूटके नाम धारक व्यंतर देव वसैं हैं॥ ७२२॥

**वट्टा सव्वे कूडा रयणमया सगणगस्स तुरियुदया।**
**तत्तिय भूवित्थारा तदद्धवदणा हु सव्वत्थ॥ ७२३॥**

वृत्ताः सर्वे कूटा रत्नमयाः स्वकनगस्य तुर्योदयाः।
तावद्भूविस्ताराः तदर्धवदना हि सर्वत्र॥ ७२३॥

**अर्थ**—ते सर्व कूट वृत्ताः कहिए गोल हैं। बहुरि रत्नमई हैं। बहुरि जितनी अपनें अपनें पर्वतकी उचाई ताकै चौथे भाग प्रमाण ऊंचे हैं। बहुरि नीचैं भूव्यास तितना ही उचाईकै समान

जाननें। तिस भूमिविस्तारतें आधा उपरि मुख व्यास है। ऐसें इन दोय गाथानिकरि कह्या विशेष सो सर्वत्र महाहिमवदादिकनिके कूटनिविषै भी जाननां ॥ ७२३ ॥

तो सिद्ध महाहिमवं हेमवदं रोहिदा हिरीकूडं।
हरिकंता हरिवरिसं वेलुरियं पच्छिमं कूडं ॥ ७२४ ॥
ततः सिद्धं महाहिमवान् हैमवतं रोहिता ह्रीकूटं।
हरिकांता हरिवर्षं वैडूर्यं पश्चिमं कूटं ॥ ७२४ ॥

अर्थ—तहां पीछें सिद्धकूट १ महा हिमवत् १ हैमवत् १ रोहिता १ ह्रीकूट १ हरिकांता हीरवर्ष १ वैडूर्य अंतका कूट १ ऐसें महा हिमवत् उपरि आठ कूट हैं ॥ ७२४ ॥

सिद्धं णिसहं च हरिवरिसं पुव्वविदेह हरिधिदीकूडं।
सीतोदा णाममदो अवरविदेहं च रुजगंतं ॥ ७२५ ॥
सिद्धं निषधं च हरिवर्षं पूर्वविदेहं हरिधृतिकूटं।
सीतोदा नाम अतः अपरविदेहं च रुचकांतम् ॥ ७२५ ॥

अर्थ—सिद्धकूट १ निषध १ हरिवर्ष १ पूर्वविदेह १ हरिकूट १ धृतिकूट १ सीतोदा नाम कूट १ यातें परें अपर विदेह कूट अंतविषै रुचक कूट ऐसें निषद्ध पर्वत उपरि नवकूट हैं॥७२५॥

सिद्धं णीलं पुव्वविदेहं सीदा य कित्ति णरकंता।
अवरविदेहं रम्मगमपदंसणमंतिमं णीले ॥ ७२६ ॥
सिद्धं नीलं पूर्वविदेहं सीता च कीर्तिः नरकांता।
अपरविदेहं रम्यकं अपदर्शनं अंतिमं नीले ॥ ७२६ ॥

अर्थ—सिद्ध १ नील १ पूर्व विदेह १ सीती १ कीर्ति १ नरकांता १ अपरविदेह १ रम्यक १ अंतका अपदर्शन १ ए नील पर्वत उपरि नवकूट हैं ॥ ७२६ ॥

सिद्धं रुम्मी रम्मग णारी बुद्धी य रुप्पकूलक्खा।
हेरण्णं कूडमदो मणिकंचणमट्ठमं होदि ॥ ७२७ ॥
सिद्धं रुक्मी रम्यकं नारी बुद्धिश्च रूप्यकूलाख्या।
हैरण्यं कूटमतो मणिकांचनमष्टमं भवति ॥ ७२७ ॥

अर्थ—सिद्ध १ रुक्मी १ रम्यक १ नारी १ बुद्धि १ रूप्यकूला नाम १ हैरण्य कूट १ यातैं मणिकांचन आठवां कूट हो है। ए रुक्मी उपरि आठ कूट हैं ॥ ७२७ ॥

सिद्धं सिहरि य हेरण्णं रसदेवी तदो य रत्तक्खा।
लच्छी सुवण्ण रत्तवदी गंधवदीय कूडमदो ॥ ७२८ ॥
सिद्धं शिखरी च हैरण्यं रसदेवी ततश्च रक्ताख्या।
लक्ष्मीः सुवर्ण रक्तवती गंधवती कूटमतः ॥ ७२८ ॥

अर्थ—सिद्धायतन १ शिखरी १ हैरण्य १ रसदेवी १ तहां पीछे रक्तानाम १ लक्ष्मी १ सुवर्ण १ रक्तवती. १ गंधवती कूट १ यातैं परैं ॥ ७२८ ॥

एरावदमणिकंचणकूडं सिहरिम्हि सव्वसेलाणं ।
मूले सिहरेवि हवे दहेवि वणखंडमेदस्स ॥ ७२९ ॥
ऐरावतमणिकांचनकूटं शिखरे सर्वशैलानाम् ।
मूले शिखरेपि भवेत् ह्रदेपि वनखंडमेतस्य ॥ ७२९ ॥

अर्थ—ऐरावत १ मणि कांचन १ कूट १ ए शिखरी पर्वत उपरि ग्यारह कूट हैं । ऐसें ए कूट कहे इन कूटनिका ऐसा आकार जानना । बहुरि सर्व ही पर्वतनिकै मूलविषै नीचे अर शिखरिविषैं ऊपरि अर द्रहनिविषै चौगिरद वन खंड हैं ॥ ७२९ ॥

याका कहा सो कहैं हैं;—

गिरिदीहो जोयणदलवासो वेदी दुकोसतुंगजुदा ।
धणुपणसयवासा णगवणणदिदहपहुदिएसु समा ॥ ७३० ॥
गिरिदैर्घ्यं योजनदलव्यासं वेदी द्विक्रोशतुंगयुता ।
धनुःपंचशतव्यासा नगवननदीह्रदप्रभृतिषु समा ॥ ७३० ॥

अर्थ—इस वनखंडका जितनां अपनें अपनें पर्वतका लंबाईका प्रमाण है तितनां लंबाईका प्रमाण है । बहुरि आध योजन चौड़ाईका प्रमाण है । बहुरि तिस वन खंडकी वेदी सो पांचसै धनुष चौड़ी दोय कोस ऊंची हैं । सो ए वेदी पर्वत वन नदी द्रह आदिविषै ऊंचाई चौड़ाईका प्रमाण करि समान है । जैसे बागकै चौगिरद विनां कांगुरां भीति हो है ताका नाम वेदी जाननां ॥७३०॥

अब पर्वतादिकनिविषै सर्वत्र वेदिकानिकी संख्या कहैं हैं;—

तिसदेक्कारससेले णउदीकुंडे दहाण छव्वीसे ।
तावदिया मणिवेदी णदीसु सगमाणदो दुगुणा ॥ ७३१ ॥
त्रिशतैकादशशैलेषु नवतिकुंडेषु ह्रदानां षड्विंशतौ ।
तावंत्यः मणिवेद्यः नदीषु स्वकमानतः द्विगुणाः ॥ ७३१ ॥

अर्थ—जंबूद्वीपविषै तीनसै ग्यारह पर्वत हैं तहां तितनी ही मणिमई वेदी हैं । बहुरि निवै कुंड हैं तहां तितनी ही मणिमई वेदी हैं । बहुरि छवीस द्रह हैं । तहां तितनी ही मणिमई वेदी हैं । बहुरि जे नदी हैं तहां दोऊ पार्श्वनिविषै वेदी पाईए है । तातैं अपनें नदीनिका प्रमाणतैं दूणी मणिमई वेदी हैं । यातै इस कहे अर्थकों विशेष वर्णै हैं । जंबूद्वीपविषै एक तौ मेरु १ छह कुलाचल ६ च्यारि यमक पर्वत ४ दोयसै कांचनगिरि २०० आठ दिग्गज पर्वत हैं ८ सोल्ह वक्षार हैं १६ च्यारि गजदंत हैं ४ चौंतीस विजयार्द्ध हैं ३४ चौंतीस वृषभाचल हैं ४ च्यारि नाभि गिरि हैं ४ इनकों मिलाएं तीनसै ग्यारह पर्वतनिकी संख्या हो है । बहुरि गंगादि महानदी जहां कुलाचलतैं पड़ैं हैं ते कुंड चौदह १४ विभंगानदी जिनतैं उपजै हैं ते कुंड बारह १२ गंगा सिंधु समान विदेह देशनिविषै दोय दोय नदी जिनतैं उपजै हैं ते कुंड चौसठि ए मिलैं निवै कुंड हो हैं । बहुरि कुलाचलनिकै उपरि द्रह छह ६ सीतानदीविषै द्रह दश १० सीतोदा नदीविषै द्रह दश १० ए सर्व मिलैं छवीस द्रह हो हैं । बहुरि गंगा सिंधु रक्ता रक्तोदा इन एक एककै परिवार नदी चौदह हजार

हैं। सो अपनां गुणकार नदीनिका प्रमाण च्यारि करि गुणें छप्पन हजार भई। रोहित रोहितास्या सुवर्णकूला इन एक एककै परिवार नदी अठाईस हजार हैं सो अपनां गुणकार च्यारिकरि गुणें एक लाख बारह हजार हो है। हरित हरिकांता नारी नरकांता इन एक एककै परिवार नदी छप्पन हजार हैं। सो अपना गुणकार च्यारि करि गुणें दोय लाख चौईस हजार हो हैं। देव कुरु उत्तर कुरुविषै तिष्ठती सीता सीतोदा इन एक एक कै परिवार नदी चौरासी हजार हैं। सो अपनां गुणकार प्रमाग दोयकरि गुणें एक लाख अडसठि हजार हो है। बहुरि बारह विभंगा नदी इन एक एककै परिवार नदी अठाईस हजार हैं सो अपनां गुणकार बारह करि गुणें तीन लाख छत्तीस हजार हो है। बहुरि गंगा सिंधु वा रक्ता रक्तोदा नाम धारक विदेह देशनिविषै तिष्ठती चौसठि नदी तिन एक एकके परिवार नदी चौदह हजार हैं सो अपनां गुणकार चौंसठि करि गुणें आठ लाख छिनवै हजार हो है। इन सर्व अंकनिकौं मिलाएं सतरह लाख बाणवै हजार परिवार नदी हो हैं। बहुरि गुणकाररूप अंकनिकौं जोड़ैं मुख्य नदी निवै हो हैं। सर्व मिलाएं जंबूद्वीपविषै सतरह लाख बाणवैं हजार निवै नदी हो हैं। इनके दोऊ पार्श्वनिविषै वेदी है। तातै दूणा किएं पैतीस लाख चौरासी हजार एकसै असी नदीनिकै मणिमई वेदी जाननी ॥ ७३१ ॥

आगैं भरत ऐरावत विषै तिष्ठते विजयार्द्ध तिनके कूटनिकौं अर तहां तिष्टते देवनिकौं गाथा च्यारि करि कहैं हैं;—

**सिद्धं दक्खिणअद्धादिमभरहं खंडयप्पवादमदो ।**
**तो पुण्णभद्द वेयड्ढकुमारं माणिभद्दक्खं ॥ ७३२ ॥**

सिद्धं दक्षिणार्धादिमभरतं खंडप्रपातमतः ।
ततः पूर्णभद्रं विजयार्धकुमारं माणिभद्राख्यं ॥ ७३२ ॥

**अर्थ**—सिद्धकूट १ दक्षिणार्द्धभरतकूट १ खंडप्रपात १ पूर्णभद्र १ विजयार्द्ध कुमार १ माणिभद्रनामा कूट १ ॥ ७३२ ॥

**तामिस्सगुहगमुत्तरभारहकूडं च चरिमं वेसवणं ।**
**सिद्धुत्तरद्धतामिस्सादिमगुहगं च माणिभद्दमदो ॥ ७३३ ॥**

तामिश्रगुहमुत्तरभरतकूटं च चरमं वैश्रवणं ।
सिद्धोत्तरार्धतामिश्रादिमगुहं च माणिभद्रमतः ॥ ७३३ ॥

**अर्थ**—तामिश्रगुहकूट १ उत्तर भरतकूट १ अंतका वैश्रवणकूट १ ए भरतसंबंधी विजयार्द्ध ऊपरि नवकूट हैं। यातैं परैं ऐरावतसंबंधी विजयार्द्ध उपरि कूट कहिये हैं। सिद्धकूट १ उत्तरार्द्ध ऐरावत कूट १ तामिश्रगुह १ मणिभद्र १ यातैं परैं ॥ ७३३ ॥

**तो वेयड्ढकुमारं पुण्णादीभद्द खंडयपवादं ।**
**दक्खिणरेवतअद्धं वेसवणं पुव्वदो दुवेयड्ढे ॥ ७३४ ॥**

ततो विजयार्धकुमारं पूर्णादिभद्रं खंडप्रपातं ।
दक्षिणैरावतार्धं वैश्रवणं पूर्वतः द्विविजयार्धे ॥ ७३४ ॥

**अर्थ**—तहां पीछैं विजयार्द्धकुमार कूट १ पूर्णभद्र १ खंडप्रपात १ दक्षिणैरावतार्द्ध १ वैश्रवण १ ए नव कूट हैं। ए अठारह कूट भरत ऐरावत संबंधी विजयार्द्धनिकै उपरि पूर्व दिशातैं लगाय क्रमतैं हैं ॥ ७३४ ॥

**कंचणमयाणि खंडप्पवादए णट्टमाल तामिस्से।**
**कदमालो छक्कडे वसंति सगणामवाणसुरा ॥ ७३५ ॥**

कंचनमयानि खंडप्रपाते नृत्यमालः तामिश्रे।
कृतमालः षट्कूटेषु वसंति स्वकनामवानसुराः ॥ ७३५ ॥

**अर्थ**—ते सर्वकूट सुवर्ण मय हैं। तहां खंड प्रपात नामा कूट उपरि नृत्य माल नामा व्यंतर देव वसै है। वहुरि तामिश्र कूट उपरि कृतमाल नामा व्यंतर देव वसै हैं। वहुरि अन्य छह कूटनिकै उपरि अपनें अपनें कूट हीके नाम धारक व्यंतर देव वसै हैं ॥ ७३६ ॥

आगैं कहे विजयार्द्ध तिनके सिद्ध कूट उपरि जिन मंदिर हैं तिनका उत्सेधादिक तीन गाथाकरि कहैं हैं;—

**कोसायामं तद्दलवित्थारं तुरियहीणकोसुदयं।**
**जिणगेहं कूडुवरिं पुव्वमुहं संठियं रम्मं ॥ ७३६ ॥**

क्रोशायामं तद्दलविस्तारं तुरीयहीनक्रोशोदयं।
जिनगेहं कूटोपरि पूर्वमुखं संस्थितं रम्यं ॥ ७३६ ॥

**अर्थ**—सिद्ध कूटकै उपरि एक कोश लंबा ताका आधा चौड़ा चौथाई घाटि ऊंचा पूर्व दिशा सनमुख रमणीक जिनमंदिर तिष्ठै हैं। **भावार्थ**—विजयार्द्धनिके सिद्धकूट उपरि जो चैत्यालय हैं सो दोय हजार धनुष लंबा हजार धनुष चौडा पंद्रहसै धनुष ऊंचा जाननां ॥ ७३६ ॥

आगैं गजदन्त है नाम जिनका ऐसे च्यारि वक्षार अर और सोलह वक्षार तिनके कूटनिकी संख्या अर तिन कूटनके नामादिक गाथा आठ करि कहैं हैं;—

**णव सत्त य णव सत्त य ईसाणदिसा दुदंतसेलाणं।**
**वक्खाराणं चउचउकूडं तण्णाममणुकमसो ॥ ७३७ ॥**

नव सप्त च नव सप्त च ईशानदिशः द्विदंतशैलानां।
वक्षाराणां चत्वारि चत्वारि कूटानि तन्नामानि अनुक्रमशः ॥ ७३७ ॥

**अर्थ**—ईशान दिशातैं लगाय च्यारि गजदंत पर्वतनिके क्रमकरि नव सात नव सात कूटनिकी संख्या है। वहुरि अन्य सोलह वक्षार तिनके च्यारि च्यारि कूट हैं तिन कूटनिके नाम अनुक्रम करि कहैं हैं ॥७३७ ॥

**सिद्धं मल्लवमुत्तरकउरव कच्छं च सागरं रजदं।**
**पुण्णादिभद्द सीदा हरिसहकूडं हवे णवमं ॥ ७३८ ॥**

सिद्धं माल्यवान उत्तरकौरवं कच्छं च सागरं रजतं।
पूर्णादिभद्रं सीता हरिसहकूटं भवेत् नवमं ॥ ७३८ ॥

अर्थ—सिद्ध कूट १ माल्यवत १ उत्तर कौरव १ कछ १ सागर १ रजत १ पूर्णभद्र १ सीता १ हरिसह कट नवमां हो है। ए माल्यवत गजदंत उपरि नव कूट हैं ॥ ७३८ ॥

तो सिद्धं सोमणस कूडं देवकुरु मंगलं विमलं।
कंचण वसिहमंते सिद्धं विज्जुप्पहं तत्तो ॥ ७३९ ॥
ततः सिद्धं सौमनसं कूटं देवकुरु मंगलं विमलं।
कांचनं अवशिष्टमंते सिद्धं विद्युत्प्रभं ततः ॥ ७३९ ॥

अर्थ—तहां पीछैं सिद्धकूट १ सौमनस कूट १ देव कुरु कूट १ मंगल १ विमल १ कांचन १ अंत विषै वशिष्ट कूट ऐसें ए सौमनस गजदंत उपरि सातकूट हैं। वहुरि तहां पीछैं सिद्ध कूट १ विद्युत्प्रभ ॥ ७३९ ॥

देवकुरु पउम तवणं सोत्थियकूडं सदज्जलं तत्तो।
सीतोदा हरि चरिमं तो सिद्धं गंधमादणयं ॥ ७४० ॥
देवकुरुः पद्मं तपनं स्वस्तिककूटं शतज्वालं ततः।
सीतोदा हरि चरमं ततः सिद्धं गंधमादनकं ॥ ७४० ॥

अर्थ—देव कुरु १ पद्म १ तपन १ स्वस्तिककूट १ शतज्वालं १ तहां पीछैं सीतोदा १ अंतका हरिकूट १ ऐसैं ए विद्युत प्रभ गजदंत उपरि नव कूट हैं। वहुरि तहां पीछैं सिद्धकूट १ गंधमादन ॥ ७४० ॥

उत्तरकुरु गंधादीमालिणि तो लोहिदक्ख फलिहंते।
आणंदं सायरदुग तिया सुभोगा य भोगमालिणिया ॥ ७४१ ॥
उत्तरकुरुः गंधादिमालिनी ततो लोहिताक्षं स्फटिकमंते।
आनंदं सागरद्विके स्त्रियौ सुभोगा च भोगमालिनी ॥ ७४१ ॥

अर्थ—उत्तरकुरु १ गंध मालिनी १ तहां पीछैं लोहितनामा कूट. १ स्फटिक १ अंत विषै आनंदकूट १ ए गंधमादन गजदंत उपरि सात कूट हैं। ए कहे गजदंत संबंधीकूट तिनविषै सागर अर रजत नामा कूटनि विषै सुभोगा अर भोगमालिनी नामा व्यंतर देवी वसै हैं ॥ ७४१ ॥

विमलदुगे वच्छादीमित्त सुमित्ता य वारिसेण वला।
तवणदुगे भोगंकर भोगवदी फलिहलोहिदे देवी ॥ ७४२ ॥
विमलद्विके वत्सादिमित्रा सुमित्रा च वारिषेणा वला।
तपनद्विके भोगंकरी भोगवती स्फटिकलोहितयोः देव्यौ ॥ ७४२ ॥

अर्थ—विमल अर कांचन कूटनिविषै वत्समित्रा अर सुमित्रा नामा व्यंतर देवी वसैं हैं। वहुरि तपन अर स्वस्तिक नाम कूटनि विषै वारिषेणा अर अवला नामा व्यंतर देवी वसै हैं। वहुरि स्फटिक अर लोहित कूटनिकै उपरि भोगंकरा भोगवती नामा व्यंतर देवी वसै हैं ॥ ७४२ ॥

सिद्धं वक्खारक्खं हेट्ठुवरिमदेसणामकूडदुगं।
दुगणव पण सोलं दुगकला य वक्खारदीहत्तं ॥ ७४३ ॥

सिद्धं वक्षाराख्यं अधस्तनोपरिमदेशनामकूटद्वयं ।
द्विनव पंच पोडश द्विककला च वक्षारदीर्घत्वम् ॥ ७४३ ॥

अर्थ—यातैं उपरि सोलह वक्षार गिरिनि उपरि च्यारि च्यारि कूट हैं । तहां एक तौ सिद्ध कूट है । बहुरि एक जो जो अपनें अपनें वक्षारका नाम तीह नामका धारक कूट है । बहुरि दोय जो जो अपनें अपनें वक्षारकै पूर्व पश्चिम पार्श्वविषैं दोय विदेह देशनिका जे नाम तिन नामनिके धारक कूट हैं । ऐसैं च्यारि च्यारि कूट जाननें । जैसैं चित्रकूट वक्षार उपरि सिद्धायतन १ चित्रकूट १ कछा १ सुकछा ए च्यारि कूट हैं । ऐसैं ही अन्यत्र जाननें । बहुरि बक्षार पर्वतनिकी लंबाई दोय नव पांच सोलह ताके सोलह हजार पांचसै बाणवै योजन अर एकका उगणीसवां भाग विषै दोय कला इतने प्रमाण जाननीं । यहु कैसैं ? तेतीस हजार छसै चौरासी योजन च्यारि कला विदेहका विष्कंभ है । तामैं सीता सीतोदानदीका विवक्षित व्यास पांचसै योजन ५०० घटाइ अवशेष ३३१८४।४÷१९ कों आधा किएं १६५९२।२÷१९ वक्षार गिरिनिकी लंबाईका प्रमाण आवै है ॥ ७४३ ॥

**कुलगिरिसमीवकूडे दिक्कण्णाओ वसंति सेसेसु ।**
**वाणा कूडपमाहिद णगदीहो कूडअंतरयं ॥ ७४४ ॥**

कुलगिरिसमीपकूटे दिक्कन्याः वसंति शेषेषु ।
वानाः कूटप्रमाहितं नगदैर्घ्यं कूटांतरं ॥ ७४४ ॥

अर्थ—कुलगिरि कहिए कुलाचल तिनके समीप जे वक्षारक हिए गजदंत वा वक्षार पर्वत तिनके ऊपरि जो कूट हैं तहां दिक्कुमारी वसै हैं । अवशेष दोय गजदंतनिके सात सात कूट दोय गजदंतनिके पांच पांच कूट वक्षार गिरिनिके दोय दोय कूट तिन उपरि व्यंतर देव वसै हैं । सिद्धकूट उपरि जिन मंदिर है ही । बहुरि अपनां अपनां कूटके प्रमाणका भाग अपनां अपनां पर्वतकी लंबाईका प्रमाणकों दीएं जो जो प्रमाण आवै तितनां तितनां कूट कूटनिकैं बीचि अंतराल है । तहां दोय गजदंतनिकै नव नवकूट दोय गजदंतनिके सात सात कूट वक्षार गिरिनिकै च्यारि च्यारि कूट जाननें । बहुरि गज दंतनिकी लंबाई तीस हजार दोयसै नव योजन छह कला है । वक्षार गिरिनिकी लंबाई सोलह हजार पांचसै बाणवै योजन दोय कला है । तहां नव कूटनिका अंतरालकै तीस हजार दोयसै नव योजन छह कला प्रमाण गजदंत क्षेत्र होय तौ एक कूटका अंतरालका कितनां क्षेत्र होय । ऐसैं त्रैराशिक किएं तीन हजार तीनसै छप्पन योजन पाए अर अवशेष पांच योजनका नवां भाग अर छहकलाका नवां भागकौं समछेद करि मिलाएं ९५÷१७१६÷१७१ एकसौ एकका एकसौ इकहत्तरिवां भाग प्रमाण एक कूटका अंतराल होइ यहु ही नव कूटनिकै बीचि अंतराल जाननां । बहुरि ऐसैंही सात कूटनिका अंतरालका त्रैराशिक विधान जाननां । इहां प्रमाण राशि सात सात फल राशि गजदंत क्षेत्र ३०२०९।६÷१९ इछा राशि एक १ लब्धिराशि च्यारि हजार तीनसै पंद्रह योजन अर बियासीका एकसौ तेतीसवां भाग प्रमाण सात कूटनिकै बीचि बीचि अंतराल जाननां । बहुरि च्यारि कूटनिका अंतरालका सोलह हजार पांचसै बाणवै योजन दोय कला प्रमाण वक्षार

गिरिका क्षेत्र होइ तौ एक कूटके अंतरालका केता क्षेत्र होइ ऐसैं त्रैराशिक करि अंश अंशीकौं भाग देइ मिलाएं च्यारि हजार एकसौ अठतालीस योजन अर एकका अठतालीसवां भाग प्रमाण च्यारि कूटनिके वीचि अंतराल हो है ॥ ७४४ ॥

आगैं वक्षारनिकी उचाई तहां तिष्टते अकृत्रिम चैत्यालयनिका स्थान ताहि निर्देश करै है;—

वक्खारसयाणुदओ कुलगिरिपासम्हि चउसयाणुड्ढा ।
णइमेरुस्स य पासे पंचसया तत्थ जिणगेहा ॥ ७४५ ॥

वक्षारशतानामुदयः कुलगिरिपार्श्वे चतुःशतं वृद्धया ।
नदीमेरोश्च पार्श्वे पंचशतानि तत्र जिनगेहाः ॥ ७४५ ॥

अर्थ—पांचमेरुसंबंधी गजदंतसहित वक्षारगिरि एकसौ है । तिनकी उचाई कुलाचलनिकै निकटि तौ च्यारिसै योजन प्रमाण है । वहुरि तातैं परैं अनुक्रमकरि वधते वधते विदेहविषै प्राप्त जे वक्षारगिरि तेतौ सीता वा सीतोदा नदीकै निकटि अर गजदंत मेरु गिरिकैं निकटि पांचसै योजन ऊंचे हैं । तहां पांचसै योजन उचाई जहां पाईए तहां सिद्धकूट जाननां । तीह उपरि जिन मंदिर हैं ॥ ७४५ ॥

आगैं नव आदि कूटनिकी उंचाई ल्यावनैंकौं करणसूत्र कहैं हैं;—

गिरितुरियं पढमंतिमकूडुदओ उभयसेसमवहरिदं ।
वेगपदेण चयो सो इट्ठगुणो मुहजुदो इट्ठं ॥ ७४६ ॥

गिरितुरीयं प्रथमांतिमकूटोदयः उभयशेषमपहृतं ।
व्येकपदेन चयः स इष्टगुणः मुखयुतः इष्टः ॥ ७४६ ॥

अर्थ—वक्षार गिरिनिकी उंचाईका चौथा भाग प्रमाण तौ तहां उपरि तिष्टता प्रथम अर अंतकूटकी उचाईका प्रमाण जाननां । वहुरि इनविषै प्रथम कूटकी उंचाईका प्रमाण अंतकूटकी उंचाईका प्रमाणमैंसौं घटाएं जो अवशेष रहै ताकौं प्रथम हानिवृद्धिका अभाव है । तातैं एक घाटि अपनां अपनां कूट प्रमाण गच्छका भाग दिएं हानिचयका प्रमाण आवै है । सो हानिचय एक घाटि अपनां इष्ट जेथवां कूट होइ तीह प्रमाण गछकरि गुण्या हुवा अर प्रथम कूटकी उचाईका प्रमाण रूप जो मुख तीह करि संयुक्त किया हुवा द्वितीयादि इष्ट कूटकी उचाईका प्रमाण आवै है । तहां वक्षार गिरिनिकी उचाई आदि अंतविषै च्यारिसै पांचसै योजन तिनका चौथा भाग प्रथम कूटकी उचाई सौ योजन अंतकूटकी उचाई एकसौ पचीस योजन इन दोऊनका अवशेष रहैं पचीस योजन याकौं एक घाटि गछ दोय गजदंतनिविषै आठ दोय गजदंतनिविषै छह वक्षार गिरिनिविषैं तीन ताका भाग दिएं जो जो प्रमाण आवै सो सो दोय गजदंतनिविषै तीन योजन एकका आठवां भाग दोय गजदंतनिविषै च्यारि योजन एकका छठा भाग वक्षारनिविषै आठ योजन एकका तीसरा भाग प्रमाण हांनिचय हो है । याकौं एक घाटि गछकरि गुणें मुख युक्त किएं द्वितीयादि कूटनिकी उचाईका प्र ाण आवै है । तहां नवकूट वाला गजदंतनिविषै जेथवां दूसरा तीसरा आदि कूटविषैं विवक्षित होइ तीह प्रमाण गछमै सौं एक घटाइ अवशेष एक दो आदि रहे तीह करि हानि

चयकौं गुणैं द्वितियादि कूटविषै जो जो प्रमाण होइ ३।१÷८६।१÷४।९।३÷८।१२।१÷२।१५ ५÷८।१८।३÷४।२१।७÷८।२५ ताकौं मुख जो आदि कूटकी उचाई सौ योजन तीह करि जोडैं द्विती-यादि कूटनिकी उचाईका प्रमाण आवै है १०३।१÷८।१०६।१÷४।१०९।३÷८।११२।१÷२। ११५।५÷८।११८।३÷४।१२१।७÷८।१२५। ऐसैंही सात कूट च्यारि कूटनिकी उचाईका प्रमाण ल्यावना ॥ ७४६ ॥

अब भरत आदि क्षेत्रनिका आश्रयकरि परिवार रूप नदीनिका प्रमाण गाथा च्यारि करि कहैं हैं;—

**भरहइरावदसरिदा विदेहजुगले च चोद्दससहस्सा।**
**णइपरिवारा तत्तो दुगुणा हरिरम्मगखिदित्ति ॥ ७४७ ॥**

भरतैरावतसरितः विदेहयुगले च चतुर्दशसहस्राणि।
नदीपरिवाराः ततः द्विगुणा हरिरम्यकक्षेत्रांतं ॥ ७४७ ॥

**अर्थ**—भरत ऐरावतविषै च्यारि नदी अर पूर्व पश्चिम विदेह युगलविषै गंगादि चौसठि नदी तिन एक एक नदीकी चौदह हजार परिवार नदी हैं। तातैं परैं भरततैं हरिक्षेत्रपर्यंत ऐरावततैं रम्यकपर्यंत दूणा दूणा अनुक्रम जानना। **भावार्थ**—हैमवत हैरण्यवत संबंधी च्यारि नदीनिकै एक एककै अठाईस हजार परिवार नदी हैं। अर हरि रम्यक क्षेत्रसंबंधी च्यारि नदीनिकै एक एककै छप्पन हजार परिवार नदी हैं ॥ ७४७ ॥

**बादालसहस्सं पुह कुरुदुणदी दुगदुपासजादणदी।**
**चोद्दसलक्खडसदरी विदेहदुगसव्वणइसंखा ॥ ७४८ ॥**

द्वाचत्वारिंशत्सहस्राणि पृथक् कुरुद्वयनद्यः द्विकद्विपार्श्वजातनद्यः।
चतुर्दशलक्षाष्टसप्ततिः विदेहद्विकसर्वनदीसंख्या ॥ ७४८ ॥

**अर्थ**—देवकुरु उत्तर कुरुविषै नदीनिका दोय पार्श्वनितैं उपजी प्रथक प्रथक वियालीस हजार नदी हैं। **भावार्थ**—देव कुरुविषै सीतोदा नदीका पूर्व पार्श्वविषै वियालीस हजार पश्चिम पार्श्वविषै वियालीस हजार परिवार नदी हैं। ऐसैं देव कुरुविषै निपजी चौरासी हजार नदी हैं। बहुरि उत्तर कुरुविषै सीता नदीका पूर्व पार्श्वविषै वियालीस हजार पश्चिम पार्श्वविषै वियालीस हजार परिवार नदी हैं। ऐसैं उत्तर कुरुविषै निपजी चौरासी हजार नदी है। बहुरि विदेह क्षेत्रविषै प्राप्त सर्व नदीनिकी संख्या अठहत्तरि अधिक चौदह लाख है। सो कैसैं? विदेहविषै प्राप्त गंगासिंधु समान चौसठि नदी तिनकी प्रत्येक परिवार नदी चौदह हजार हैं। बहुरि विभंगा नदी बारह तिनकी प्रत्येक परिवार नदी अठाईस हजार। देव कुरु उत्तर कुरुविषै सीता सीतोदाकी प्रत्येक परिवार नदी चौरासी हजार इन परिवार नदीनिका प्रमाणकौं मूल नदीनिका प्रमाणरूप अपनां अपनां गुणकार गुणें तहां मूलनदी अठहत्तरि मिलाएं सर्व मिली हुई विदेहविषै चौदह लाख अठहत्तरि नदी हो हैं ॥ ७४८ ॥

**लक्खतियं बाणउदीसहस्स बारं च सव्वणइसंखा।**
**भरहेरावदपहुदी हरिरम्मगखेत्तओत्ति णादव्वा ॥ ७४९ ॥**

लक्षत्रयं द्वानवतिसहस्रं द्वादश च सर्वनदीसंख्या।
भरतैरावतप्रभृति हरिरम्यकक्षेत्रांतं ज्ञातव्या॥ ७४९॥

अर्थ—तीन लाख वाणवै हजार वारह सर्व नदीनिकी संख्या भरत ऐरावत आदि हरि रम्यकपर्यंत जाननी। सो कैसें? भरतविषै गंगासिंधुकी प्रत्येक परिवार नदी चौदह हजार हैं। हैमवतविषै रोहितास्याकी प्रत्येक परिवार नदी अठाईस हजार, हरि क्षेत्रविषै हरित हरिकांताकी प्रत्येक परिवार नदी छप्पन हजार। ऐसेंही ऐरावतविषै रक्ता रक्तोदाकी प्रत्येक परिवार नदी चौदह हजार हैरण्यवतविषै सुवर्ण कूला रूप्यकूलाकी प्रत्येक परिवार नदी अठाईस हजार, रम्यक क्षेत्रविषै नारी नरकांताकी प्रत्येक परिवार नदी छप्पन हजार। इन परिवार नदीनिका प्रमाणकौं अपनां अपनां मुख्य नदीका प्रमाणरूप गुणकार करि गुणें वारह मुख्य नदी मिलाएं तीन लाख वाणवै हजार वारह नदी हो हैं॥ ७४९॥

**सत्तरसं वाणउदी णभणवसुण्णं णईण परिमाणं।**
**गंगासिंधुमुहाणं जंबूदीवप्पभूदाणं॥ ७५०॥**

सप्तदश द्वानवतिः नभोनवशून्यं नदीनां परिमाणं।
गंगासिंधुमुखानां जंबूद्वीपप्रभूतानाम्॥ ७५०॥

अर्थ—सतरह वाणवे विंदी नव विंदी इन अंकनिकरि भए सतरह लाख वाणवै हजारनि- जंबूद्वीपविषै उत्पन्न गंगासिंधु प्रमुख सर्व नदीनिका प्रमाण है। सो यहु प्रमाण विदेह नदी अर अन्य क्षेत्रनदीनिका पूर्वै दोय गाथानि करि जो प्रमाण कह्या ताकौं मिलाएं संतें हो है॥ ७५०॥

आगें जंबूद्वीपविषै तिष्टते मेरु आदि तिनका पूर्व पश्चिम अपेक्षा करि व्यास निरूपै हैं;—

**गिरिभद्दसालविजयावक्खारविभंगदेवरण्णाणं।**
**पुव्वावरेण वासा एवं जंबूविदेहम्हि॥ ७५१॥**

गिरिभद्रशालविजयवक्षारविभंगदेवारण्यानाम्।
पूर्वापरेण व्यासा एवं जंबूविदेहे॥ ७५१॥

अर्थ—मेरु भद्रसाल विदेह देश वक्षारगिरि विभंगा नदी देवारण्य इनका जंबूद्वीपसंबंधी विदेह क्षेत्रविषै पूर्व पश्चिम अपेक्षा व्यास ऐसैं आगैं कहिए हैं तीह प्रकार जाननां॥ ७५१॥

**गिरिपहुदीणं वासं इट्ठूणं सगगुणेहिं गुणिय जुदं।**
**अवणिय दीवे सेसं इट्ठगुणोवट्टिदे दु तव्वासं॥ ७५२॥**

गिरिप्रभृतीनां व्यासं इष्टोनं स्वकगुणैः गुणयित्वा युतं।
अपनीय द्वीपे शेषं इष्टगुणापवर्तिते तु तद्व्यासं॥ ७५२॥

अर्थ—जो व्यास जाननां होइ तिस मेरु आदिक कोईका व्यासकौं छोडि अन्य सर्वगिरि आदिनिका वक्ष्यमाण व्यासकौं अपनां अपनां गुणकारकरि गुणि सर्वकूं मिलाइ जो प्रमाण होइ सो जंबूद्वीपका व्यासमैंसौं घटाइ अवशेष रहै तिनकौं जाका व्यास जाननां होइ ताका जो प्रमाण ताका भाग दिएं जाननेंकौं इष्टरूप गिरि आदिकका व्यास प्रमाण आवै है। ताका

उदाहरण—मेरुका व्यास जाननां होइ तौ मेरु विना औरनिका व्यास भद्रसालका बाईस हजार योजन विदेहदेसका बाईसै बारह योजन सात आठवां भाग, वक्षारका पांचसै योजन, विभंगाका एकसौ पचीस योजन, देवारण्यका दोय हजार नवसै बाईस योजन। इनकौं अपनां अपनां प्रमाण पूर्व पश्चिम भद्रसाल दोय विदेह देश एक तटसंबंधी सोलह वक्षार, एक तटसंबंधी आठ विभंगा, एक तटसंबंधी छह देवारण्य एक तटसंबंधी दोय इन प्रमाणरूप गुणकार करि गुणें भद्रसालक्षेत्र चवालीस हजार विदेह देश क्षेत्र पैंतीस हजार च्यारिसै छह, वक्षारक्षेत्र च्यारि हजार, विभंगाक्षेत्र साढा सातसै, देवारण्य क्षेत्र पांच हजार आठसै चवालीस योजन होइ। इन सबकौं मिलाए निवै हजार होइ सो जंबूद्वीपका व्यास लाख योजनमैंसौं घटाएं दश हजार अवशेष रहे। इनकों इष्ट मेरुका प्रमाण एक ताका भाग दिएं भी दश हजार ही रहे सोई मेरु गिरिका व्यास जाननां। ऐसैंही औरनिका व्यास जाननां ॥ ७५२ ॥

ऐसैं ल्याया हुवा व्यासका प्रमाणके सिद्ध भए अंक कहै हैं;—

**दसबावीससहस्सा बारसबावीस सत्तअट्ठकला।**
**कमसो पणसय पणघण बावीसुगुतीसमंककमो ॥ ७५३ ॥**

दशद्वाविंशसहस्राणि द्वादशद्वाविंशतिः सप्ताष्टकला।
क्रमशः पंचशतानि पंचघनः द्वाविंशैकोनत्रिंशदंकक्रमः ॥ ७५३ ॥

**अर्थ**— मेरुका दश हजार योजन बहुरि भद्रसालका बाईस हजार योजन बहुरि विदेह देशका बारह बावीस अंकनि करि दोय हजार दोय सै बारा योजन अर सप्ताष्ट कला कहिए सात आठवां भाग बहुरि वक्षारका पांचसैं योजन बहुरि विभंगाका पंचका घन एकसौ पचीस योजन बहुरि देवारण्यका बाईस गुणतीस अंकनि करि दोय हजार नवसै बाईस योजन अनुक्रमतैं पूर्व पश्चिम करि व्यासका प्रमाण है ॥ ७५३ ॥

अब धातुकी खंड पुष्करार्द्ध विषै तिष्ठते मेरु तिनका अर तिन संबंधी दोय भद्रसालनिका व्यास निरूपै हैं;—

**चउणउदिसयं णवसत्तडसत्तिगिलक्खट्ठमपणसत्तं।**
**पण्णरसं वे लक्खा खुल्ले तं भद्दसालदुगे ॥ ७५४ ॥**

चतुर्नवतिशतानि नवसप्ताष्टसप्तैकलक्षमष्टपंचसप्त।
पंचदशे द्वे लक्षे क्षुल्लके ते भद्रशालद्वये ॥ ७५४ ॥

**अर्थ**—चौराणवैसै योजन क्षुल्लक च्यारि मेरुनिका व्यास है। बहुरि नव सात आठ सात अंकनि करि उत्तर एक लाख ताके एक लाख सात हजार आठसै गुण्यासी योजन धातुकी खंड संबंधी मेरुनिका पूर्व पश्चिम भद्रसालका व्यास हैं। बहुरि आठ पांच सात पंद्रह अंकनि करि उत्तर दोय लाख ताके दोय लाख पंद्रह हजार सातसै अठावन योजन पुष्करार्द्ध संबंधी मेरुनिकै पूर्व पश्चिम भद्र सालका व्यास है॥ ऐसैं क्षुल्लक मेरु तिनके दोऊ भद्र साल विषै व्यास जाननां। बहुरि पढम वणडसीदंसो दक्खिण उत्तरग भद्दसालवणे इत्यादि पूर्वोक्त गाथा करि धातुकीखंडका पूर्व

पश्चिम भद्रसालका अंक १०७८७९ बहुरि पुष्करार्द्ध संबंधी पूर्व पश्चिम भद्र सालका अंक। २१५७५८ तिनकों अठयासीका भाग दिएं तिनके दक्षिण उत्तर भद्रसाल वनका व्यास हो है। सो धातुकी खंड विषै बारहसै पचीस योजन अर गुण्यासी अठ्यासीवां भाग अर पुष्करार्द्ध विषै दोय हजार च्यारिसै इकावन योजन अर पैंतीस चवालीसवां भाग प्रमाण दक्षिण उत्तर भद्रसालका व्यास जाननां ॥ ७५४ ॥

आगैं दोय द्वीप संबंधी विदेह देशनिका व्यासकी संख्या कहैं हैं;—

**तियणभछण्णव तिण्णट्ठमं तु चउणउदिसत्तणउदेकं ।**
**जोयण चउत्थभागं दुदीवविजयाण विक्खंभो ॥ ७५५ ॥**

त्रिनभःषण्णव त्र्यष्टमं तु चतुर्णवतिसप्तनवत्येकं ।
योजनं चतुर्थभागं द्विद्वीपविजयानां विष्कंभः ॥ ७५५ ॥

**अर्थ**—तीन विन्दी छह नव अंकनि करि नव हजार छसै तीन योजन अर तीन आठवां भाग प्रमाण धातुकी खंड संबंधी विदेह देशनिका व्यास है। बहुरि चौराणवे सित्याणवे एक अंकनि करि उगणीस हजार सातसै चौराणवै योजन अर योजनका चौथा भाग प्रमाण पुष्करार्द्ध संबंधी विदेह देशनिका व्यास है। ऐसैं दोय द्वीपके विदेह देशनिका पूर्व पश्चिम अपेक्षा व्यास है ॥ ७५५ ॥

अब तीन द्वीपनिविषै तिष्ठते गजदंतनिका आयाम गाथा दोय करि कहैं हैं;—

**सरिसायदगजदंता णवणभदुगसुण्णतिण्णि छच्चकला ।**
**तिघणदुगछक्कपणतिय णवपणकदिणवयछप्पण्णं ॥ ७५६ ॥**

सदृशायतगजदंता नवनभोद्विकशून्यत्रीणि षट्कलाः ।
त्रिघनद्विकषट्पंचत्रीणि नवपंचकृतिनवकषट्पंचाशत् ॥ ७५६ ॥

**अर्थ**—जंबूद्वीपविषै तिष्ठते समान लंबाई धरैं च्यारि गजदंत तिनका नव विन्दी दोय विन्दी तीन अंकनि करि तीस हजार दोय सै नव योजन अर एकका उगणीस भागविषै छह कला लंबाईका प्रमाण है। बहुरि धातुकी खंडविषै जे दोय गजदंत लवण समुद्रकी तरफ हैं तिनकी लंबाईका थोड़ी है। तातैं ते अल्प गजदंत कहिए। बहुरि जे दोय गजदंत कालोदधिकी तरफ हैं तिनकी लंबाई बहुत है। तातैं ते महागजदंत कहिए। तहां तीनका घन दोय छह पांच तीन अंकनि करि तीन लाख छप्पन हजार दोयसै सत्ताईस योजन अल्प गजदंतनिका आयाम है। बहुरि नव पांचका वर्ग नव छह पांच इन अंकनि करि पांच लाख गुणहत्तरि हजार दोयसै गुणसठि योजन महागजदंतनिका आयाम है ॥ ७५६ ॥

**सोलेक्कट्ठिविसट्ठिगि णवेक्कदुगदोणिदुकदिणभदोण्णि ।**
**देउत्तरकुरुचावं जीवा बाणं च जाणेज्जो ॥ ७५७ ॥**

षोडशैकषष्टिद्विषष्ठ्येकं नवैकद्विकद्वयद्विकृतिनभोद्वे ।
देवोत्तरकुरुचापं जीवा बाणं च ज्ञातव्याः ॥ ७५७ ॥

**अर्थ**—पुष्करार्द्धविषै कालोद समुद्रकी तरफ दोय गजदंत स्तोक लंबाई धरै हैं। ते अल्प गजदंत कहिए। अर मानुषोत्तरकी तरफ दोय गजदंत बहुत लंबाई धरै हैं ते महागजदंत कहिए। तहां सोलह इकसठि बासठि एक इन अंकनि करि सोलह लाख छब्बीस हजार एकसौ सोलह योजन अल्प गजदंतनिका आयाम है। बहुरि नव एक दोय दोय दोयका वर्ग बिन्दी दोय इन अंकनि करि बीस लाख बियासी हजार दोयसै उगणीस २०८२२१९ योजन महागजदंतनिका आयाम है। इहां प्रसंग पाइ धातुकीखंड पुष्करार्धसंबंधी किछू वर्णन किया है सो तिनकी रचनादिक आगैं लिखेंगे तैसैं जाननी। बहुरि देव कुरु उत्तर कुरु नामधारक भोगभूमि क्षेत्रकी जीवा चाप वाण आगैं कहिए है तिस प्रकार करि जाननें। **भावार्थ**—देवकुरु उत्तर कुरुका क्षेत्र धनुषाकार है ऐसैं जांननां। तहां धनुषकै जो चिल्ला ताकौं जीवा कहिए चिल्ला अर धनुषकै बीचि मध्यविषै जेता वाणका क्षेत्र सो वाण कहिए। धनुषका जो पीठ ताकौं चाप कहिए है। सो इहां दोऊ गजदंतनिकै बीचि जितनां कुलाचलनिकी लंबाईका प्रमाण सो तो जीवा जाननी। अर जीवा अर मेरु गिरि बीचि मध्यविषै जो क्षेत्र सो वाण जाननां। अर दोऊ गजदंतनिकी लंबाई मिलि चाप हो है। सो इनका विधान कहिए है॥ ७५७॥

आगैं चापादिकके ल्यावनेका विधान गाथा नव करि कहैं हैं;—

**वक्खारवास विरहिय पढमवणे दुगुणिदे जुदे मेरुं।**
**जीवा कुरुस्स चावं गजदंतायाममेलिदे होदि॥ ७५८॥**

वक्षारव्यासं विरहितं प्रथमवने द्विगुणिते युते मेरौ।
जीवा कुरोः चापो गजदंतायाममेलिते भवति॥ ७५८॥

**अर्थ**—वक्षार जो गंजदंत ताका व्यास प्रथम भद्रसालवनमैंसौं घटाइ दूणां करि मेरु मेरु व्यास जोड़ें कुरु क्षेत्रकी जीवाका प्रमाण हो है। तहां जंबूद्वीप विषै वक्षार व्यास पांचसैं योजन भद्रसाल नव बाईस हजार योजनमैंसौं घटाइ अवशेष २१५०० दूणा करि ४३००० मेरुका व्यास दश हजार योजन जोड़ें देव कुरु वा उत्तर कुरु क्षेत्रकी जीवाका प्रमाण तरेपन हजार योजन हो है। पूर्व पश्चिम भद्रसालकी वेदीके निकटि गजदंत कुलाचलनिस्यौं जाइ अडे है तातैं दोऊ गजदंतानिके बीचि इतनीं कुलाचलकी लंबाई जाननी। बहुरि दोऊ गजदंतनिका आयाम मिलाएं कुरु क्षेत्रका चाप हो है। सो जंबूद्वीप विषै तीस हजार दोयसै नव योजन छह कला गजदंतका आयाम है ताकौं दूणा किएं देवकुरु वा उत्तर कुरुका चाप साठि हजार च्यारिसै अठारह योजन बारह कला प्रमाण हो है॥ ७५८॥

**मेरुगिरिभूमिवासं अवणीय विदेहवस्सवासादो।**
**दलिदे कुरुविक्खंभो सो चेव कुरुस्स वाणं च॥ ७५९॥**

मेरुगिरिभूमिव्यासं अपनीय विदेहवर्षव्यासतः।
दलिते कुरुविष्कंभः स चैवं कुरोः वाणः च॥ ७५९॥

**अर्थ**—मेरु गिरिका भूव्यास विदेह क्षेत्रका व्यासमैं घटाइ आधा किएं कुरु क्षेत्रका विष्कंभ हो है। सो जंबूद्वीप विषै एकसौ निवै शलाकानिका एक लाख योजन होइ; तौ विदेह-

की चौसठि शलाकानिका केता क्षेत्र होइ अैसैं त्रैराशिक करि दश करि अपवर्त्तन किएं छह लाख चालीस हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण विदेह क्षेत्रका व्यास हो है। यामैं मेरु गिरिका भूव्यास दशहजार योजन समछेद करि घटाएं साढा च्यारि लाखका उगणीसवां भाग होइ याकौं आधा किएं दोय लाख पच्चीस हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण कुरु क्षेत्रका व्यास हो है। कुलाचल अरु मेरुविषै इतनां अंतराल है सोई यहु कुरु क्षेत्रका बाण जाननां ॥ ७५९ ॥

अब याकौं धरि जीवाकी कृति अर चापकी कृति कौं ल्यावैं हैं;—

**इसुहीणं विक्खंभं चउगुणिदिसुणा हदे दु जीवकदी।**
**बाणकदिं छहिं गुणिदे तत्थ जुदे धणुकदी होदि ॥ ७६० ॥**

इषुहीनं विष्कंभं चतुर्गुणितेषुणा हते तु जीवाकृतिः।
बाणकृतिं षड्भिः गुणिते तत्र युते धनुःकृतिः भवति ॥ ७६० ॥

अर्थ—बाण करि हीन जो वृत्त विष्कंभ ताकौं चौगुणा बाण करि गुणें जीवाकी कृति हो है। बहुरि बाणकी कृतिकौं छह गुणी करि तिस जीवाकी कृति विषै मिलाएं धनुषकी कृति हो है। जिस राशिका वर्गमूल ग्रहण करनां होइ अैसा जो वर्गरूप राशि ताका नाम कृति है। सो जंबूद्वीप विषै देव कुरु वा उत्तर कुरुका आगैं कहिए हैं जो वृत्त विष्कंभका प्रमाण एक कोड़ि इकईस लाख पैंसठि हजार च्यारिसै निवै योजनका एकसौ इकहत्तरिवां भाग१२१६५४९०÷१७१तामैं-सौं बाणका जो प्रमाण दोय लाख पच्चीस हजार योजनका उगणीसवां भाग २२५००÷१९ ताकौं भाज्य भाजक नव गुणांकरि समछेद करि २०२५०००÷१७१ घटाइ अवशेष एक कोड़ि एक लाख चालीस हजार च्यारिसै निवैका एकसौ इकहत्तरिवां भाग रह्या १०१४०४९०÷१७१ ताकौं चौगुणा बाणका प्रमाण नव लाखका उगणीसवां भाग करि गुणिए तहां गुणकारकी पांच बिंदी गुण्यकै आगैं स्थापिए १०१४०४९००००००÷१७१। बहुरि गुण्यका भागहार एकसौ इकहत्तरिकौं चौगुणा बाणविषै नवका अंक था तीह सहित अपवर्त्तन किएं उगणीस भए। बहुरि चौगुणा बाण गुण्यविषै उगणीसका भागहार था तिसकरि याकौं गुणें तीनसौ इकसठि भए। अैसैं एक लाख एक हजार च्यारिसे च्यारि कोडि निवै लाखका तीनसै इकसठिवां भाग प्रमाण कुरुक्षेत्रकी जीवाकी कृति भई। याका वर्गमूल ग्रहण किएं दशलाख सात हजारका उगणीसवां भाग भया सो अपनां भागहारका भाग दिएं तरेपन हजार योजन प्रमाण देवकुरु वा उत्तर कुरुकी जीवा हो है। बहुरि दोय लाख पच्चीस हजार योजनका उगणीसवां भाग प्रमाण जो बाण २२५०००÷१८ ताकी कृति करिए ५०६२५०००-०००÷३६१ बहुरि ताकौं छह गुणा करि याकौं ३०३७५०००००÷३६१ पूर्वैं कही थी जो जीवाकी कृति १०१४०४९००००००÷३६१ तामैं जोडिए १३१७७९९००००००÷३६१ तब धनुषकी कृति हो है। याका वर्गमूल ग्रहण करि ११४७९५४÷१९ अपनां भागहारका भाग दिएं साठि हजार च्यारिसै अठारह योजन अर बारह उगणीसवां भाग ६०४१८। १२÷१९ प्रमाण देवकुरु वा उत्तर कुरुका चाप हो है। बहुरि पूर्वैं कही जो बाणकी कृति ५०६२५००००००÷३६१ ताका वर्ग मूल ग्रहणकरि २२५०००÷१९ अपनां भाग

हारका भाग दिएं ग्यारह हजार आठसै वियालीस योजन अर दोय उगणीसवां भाग प्रमाण देव कुरु वा उत्तर कुरुका वाण हो है ॥ ७६० ॥

अव याके अनंतरि कुरु आदि क्षेत्रनिका वृत्त विष्कंभ ल्यावनैंकौं करण सूत्र कहैं हैं;—

**इसुवग्गं चउगुणिदं जीवावग्गम्हि पक्खिवित्ताणं ।**
**चउगुणिदिसुणा भजिदे णियमा वट्टस्स विक्खंभो ॥ ७६१ ॥**

इषुवर्गं चतुर्गुणितं जीवावर्गे प्रक्षिप्य ।
चतुर्गुणितेषुणा भक्ते नियमात् वृत्तस्य विष्कंभः ॥ ७६१ ॥

**अर्थ**—इषु जो वाण ताका जो वर्ग ताकौं चौगुणा करिए वहुरि याकौं जीवा वर्गविषै मिलाइए जो प्रमाण होइ ताकौं चौगुणा वाणका भाग दीजिए असैं करतैं नियमतैं वृत्तक्षेत्रका विष्कंभका प्रमाण आवै है । सो जंवूद्वीपविषै कुरुक्षेत्रका वाण दोयलाख पचीस हजारका उगणीसवां भागका वर्ग करि ५०६२५०००००००÷३६१ याकौं चौगुणा करिए २०२५००००००००÷३६१ वहुरि इसकौं पूर्वं कही थी जीवाकी कृति १०१४०४९०००००००÷३६१ तामैं मिलाइए तव एक लाख इकईस हजार छसै चौवन कोडि निवै लाखका तीनसै इकसठिवां भाग होइ १२१६५४९००००००÷३६१ वहुरि जो प्रमाण भया ताकौं चौगुणां वाण नव लाखका उगणीसवां भाग ९०००००÷१९ ताका भाग दीजिए तहां इस भागहारकी पंचविंदी अर भाज्यकी पंचविंदीका अपवर्तन करिए १२१६५४९०÷३६१।९ वहुरि हारस्य हारो गुणकोंइ राशेः इस वचनतैं भागहारका भागहार भाज्यका गुणकार होइ सो इहां भागहारका भागहार उगणीस है सो भाज्यके गुणकार भया । वहुरि इहां भागहार तीनसै इकसठि थे ताकौं भाज्यका गुणकार उगणीस करि अपवर्तन किएं उगणीस भए १२१६५४९०÷१९।९ वहुरि उगणीस अर नव भाग हारके अंकनिकौं परस्पर गुणें एक कोडि इकईस लाख पैंसठि हजार च्यारिसै निवैका एकसौ इकहत्तरिवां भाग भया सो अपनां भागहारका भाग दिएं इकहत्तरि हजार एकसौ तियालीस योजन अर सैंतास एकसौ इकहत्तरिवां भाग प्रमाण कुरुक्षेत्रका वृत्त विष्कंभ हो है । वृत विष्कंभका स्वरूप कहा सो कहिए है । गोल क्षेत्रके व्यासकौं वृत्त विष्कंभ जाननां सो इहां कुरु क्षेत्रविषै गोल क्षेत्र तौ है नांहीं परंतु जीवादिकका ज्ञान होनैंके अर्थि वृत्त विष्कंभ क्षेत्रका प्रमाण कल्पना करि कह्या है । सो याका असा अभिप्राय जाननां । इकहत्तरि हजार सौ तियालीस योजन अर सैंतीस एकसौ इकहत्तरिवां भाग प्रमाण व्यासकौं धरै जो गोल क्षेत्र होइ तिस विषै जहां तरेपन हजार योजन व्यासका प्रमाणरूप जीवा होइ तहांतै अंतपर्यंत ग्यारह हजार आठसै वियालीस योजन अर दोय उगणीसवां भाग प्रमाण वाण हो है । ऐसैंही अन्यत्र साधन करनां ॥७६१॥

आगैं कुरु आदि क्षेत्रनिका स्थूल सूक्ष्म क्षेत्रफल ल्यावनैंकौं करण सूत्र कहैं हैं;—

**जीवाहदइसुपादं जीवाइसुजुददलं च पत्तेयं ।**
**दसकरणिवाणगुणिदे सुहुमिदरफलं च चणुखेत्ते ॥ ७६२ ॥**

जीवाहतेपुपादं जीवाइपुयुतदलं च प्रत्येकं।

दशकरणिवाणगुणिते सूक्ष्मेतरफलं च धनुःक्षेत्रे ॥ ७६२ ॥

अर्थ—जीवा करि गुण्या हुवा वाणका चौथा भागकौं जुदा स्थापिए। बहुरि जीवा अर वाणकौं जोड़ि ताका आधाकौं जुदा स्थापिए। तहां पहलैं स्थापन किया ताका विष्कंभ वग्ग इत्यादि सूत्रतैं वर्ग करि दश गुणां करि मूल ग्रहण योग्य राशि रूप करिए ताका वर्ग मूल ग्रहण किएं धनुषाकार क्षेत्रका सूक्ष्म क्षेत्रफल हो है। बहुरि पीछै स्थापन कीया ताकौं वाण करि गुणें वादर क्षेत्र फल हो है। सो जंबू द्वीपके कुरु क्षेत्रनिविषै दोय लाख पचीस हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण वाण है ताका चौथा भाग ५६२५०÷१९ कौं जीवा तरेपन हजार करि गुणिए है २९८१२५००००÷१९ बहुरि विष्कंभ वग्गदह गुण इत्यादि सूत्रतैं याका वर्ग करि दश गुणां करि करणि करिए है। ८८८७८५१५६२५००००००००÷३६१ याका वर्ग मूल ग्रहण किएं नवसै वियालीस कोड़ि पिचहत्तरि लाख चालीस हजार दोयसै चौहत्तरि योजनका उगणीसवां भाग प्रमाण कुरु क्षेत्रका सूक्ष्म फल हो है। तार तम्य करि एक योजनके लंबे चौड़े खंड कल्पें इतनें हो हैं। बहुरि जीवा तरेपन हजार योजन ताकौं उगणीस करि समछेद करि १००७०००÷१९ वाणका प्रमाण दोय लाख पचीस हजारका उगणीसवां भागमें जोड़ि १२३२०००÷१९ ताकौं आधाकरि ६१६०००÷१९ बहुरि याकौं वाण २२५०००÷१९ करि गुणें तेरह हजार आठसै साठि कोड़िका तीनसै इकसठिवां भाग प्रमाण कुरु क्षेत्रका स्थूल क्षेत्र फल हो है। स्थूल पनैं करि एक एक योजन लंबे चौड़े खंड कल्पें इतनें हो हैं॥ ७६२ ॥

आगें अन्य प्रकार करि वृत्त विष्कंभ अर वाणके ल्यावनेंकौं करण सूत्र कहै हैं;—

दुगुणिसु कदिजुद जीवावग्गं चउवाणभाजिए वट्टं।

जीवा धणुकदिसेसो छब्भत्तो तप्पदं वाणं ॥ ७६३ ॥

द्विगुण्येषुं कृतियुतं जीवावर्गं चतुर्बाणभक्ते वृत्तं।

जीवा धनुःकृतिशेषः षड्भक्तः तत्पदं वाणम् ॥ ७६३ ॥

अर्थ—दुगुण वाणका वर्ग करि जोड्या हुवा जीवाका वर्गकौं चौगुणा वाणका भाग दिएं वृत्त विष्कंभ हो है। बहुरि जीवाकी कृति चापिकी कृतिमैंसौं घटाइ अवशेषकौं छहका भाग दिएं जो प्रमाण होइ ताका पद कहिए वर्गमूल सो वाण हो है। सो जंबूद्वीपके कुरु क्षेत्रनि विषै दोय लाख पचीस हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण वाणकौं दूणा करि ४५००००÷१९ ताका वर्गकरि २०२५०००००००÷३६१ याभैं जीवा तरेपन हजार प्रमाण ताका वर्ग २८०९००००० सम छेद करि १०१४०४९०००००० जोडिए १२१६५४९०००००००÷३६१ बहुरि याकौं चौगुणा वाणका प्रमाण ९०००००÷१९ का पूर्वोक्त अपवर्तन विधान करि भाग दीएं एक कोडि इकईस लाख पैंसठि हजार च्यारिसै निवैका एकसौ इकहत्तरिवां भाग प्रमाण कुरुक्षेत्रका वृत्त विष्कंभ हो है। बहुरि पूर्वोक्त जीवाका वर्गकौं ४ समछेद करि १०१४०४९०००००० धनुषकी कृति १३१७७९९००००००÷३६१ मैंसौं घटाइ ३०३७५००००००÷३६१ अवशेषका छहका

भाग दिएं जो प्रमाण ५०६२५००००००÷३६१ होइ ताका वर्ग मूल ग्रहण किएं दोय लाख पच्चीस हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण कुरु क्षेत्रका वाण हो है ॥ ७६३ ॥

आगैं अन्य प्रकारका करि वाण ल्यावनेकों करण सूत्र कहैं हैं;—

**जीवाविक्खंभाणं वग्गविसेसस्स होदि जम्मूलं ।**
**तं विक्खंभा सोहय सेसद्धामिसुं विजाणाहि ॥ ७६४ ॥**

जीवाविष्कंभयोः वर्गविशेषस्य भवति यन्मूलं ।
तत् विष्कंभात् शोधय शेषार्धमिषुं विजानीहि ॥ ७६४ ॥

**अर्थ**—जीवाका वर्ग वृत्त विष्कंभका वर्गमैंसौं घटाएं अवशेप जो रहै ताका जो वर्गमूल ताकौं वृत्त विष्कंभका प्रमाणमैंसौं घटाएं अवशेप रहै ताका आधा वाणका प्रमाण जानहु । सो जंबूद्वीपके कुरु क्षेत्रविपै जीवा तरेपन हजार ताका वर्ग २८०९००००००० कौं वृत्त विष्कंभ एक कोड़ि इक ईस लाख पैंसठि हजार च्यारिसैं निवैका एक सौ इकहत्तरिवां भाग प्रमाण ताका वर्ग १४७९९९१४६९४०१०० मैसौं जीवाका वर्गका समछेद करि ८२१३७९६९००००००÷२९२४१ घटाएं अवशेप जो रहे ६५८६११९७ ९४०१००÷२९२४१ ताका वर्गमूल का जो प्रमाण ८११५४९०÷१७१ ताकों पूर्वोक्त वृत्त विष्कंभका प्रमाण १२१६५४-९०÷१७१ मैसौं घटाएं अवशेप जो रहै ४०५०००६÷१७१ ताका आधा वीस लाख पचीस हजारका एकसौ इकहत्तरिवां भाग मात्र होइ सो इहां भाग हार एकसौ इकहत्तरिकों नव गुणा उगणीस रहे सो स्थापि पूर्वोक्त अर्द्ध प्रमाणके भाज्यकों २०२५००० नवका भाग दिएं दोय लाख पचीस हजार भाज्य होइ अर अवशेष उगणीस भागहार रहे सो इतनां कुरुक्षेत्रका वाण जाननां ॥ ७६४ ॥

आगैं अन्य प्रकार करि वृत्त विष्कंभ अर वाणके ल्यावनेकौं करण सूत्र कहैं हैं;—

**दुगुणिसुहिदधणुवग्गो वाणोणो अद्धिदो हवे वासो ।**
**वासकदिसहिदधणुकदिदलस्स मूलेवि वासमिसुसेसं ॥ ७६५ ॥**

द्विगुणेपुहितधनुर्वर्गो वाणोनः अर्धितो भवेत् व्यासः ।
व्यासकृतिसहितधनुष्कृतिदलस्य मूलेपि व्यासमिपुशेपं ॥ ७६५ ॥

**अर्थ**—दूणा वाणका भाग धनुपका वर्गकों दिएं जो प्रमाण होइ तामैं वाणका प्रमाण घटाइ अवशेपकों आधा किए वृत्त विष्कंभका प्रमाण हो है । वहुरि वृत्त व्यासका वर्ग करि जोड्या हुवा ऐसा जो धनुषके वर्गका आधा प्रमाणका वर्ग मूल तामैंसौं वृत्त विष्कंभका प्रमाण घटाए वाणका प्रमाण हो है । सो जंवूद्वीपके कुरु क्षेत्रविपै वाण दोय लाख पचीस हजारका उगणीसवां भाग ताकौं दूणा करि ४५००००÷१९ याका भाग पूर्वोक्त धनुपका वर्गकौं १३१७७९९००००००÷ ३६१ पूर्वोक्त प्रकार अपवर्तन विधान करि दीएं एक लाख चौवन हजार एकसौ अठाईस अर अवशेप च्यारिसै साठका आठसे पचावनवां भाग होइ सो अवशेषके भाज्य भाणककौं पंचकरि अपवर्तन किएं वाणवैका एकसौ इकहत्तरिवां भाग होइ सो इनकों समछेद करि मिलाइ २६३५५९८०÷१७१ यामैं समछेद विधानकरि वाणका प्रमाण २०२५०००÷१७१ घटाएं अवशेप २४३३०९८०÷१७१

कौं आधाकरि १२१६५४९०÷१७१ अपनां भाग हारका भाग दिएं ७११४३३७÷१७१ कुरुक्षेत्रका वृत्त विष्कंभ हो है। वहुरि समछेद करि अपनें अंशकरि जोड्या हुवा जो वृत्त विष्कंभका प्रमाण १२१६५४९०÷१७१ ताका वर्ग करि १४७९९९१४६९४०१००÷२९२४१ यामैं पूर्वोक्त धनुषकी कृति १३१७७९९००००००÷३६१ ताका अर्द्धप्रमाण ६५८८९९५०००-००÷३६१ कों भाज्य भाजककों इक्यासी गुणां करि समछेद करि ५३३७०८५९५०००००-÷२९२४१ जोड़िए २०१३७०००६४४०१००÷२९२४१ याका वर्गमूलका जो प्रमाण १४१९०४९०÷१७१ तामैं वृत्त विष्कंभ १२१६५४९०÷१७१ कों घटाइ अवशेष वीस लाख पचीस हजारकौं एकसौ इकहत्तरिवां भाग होइ सो इहां भाग हार उगणीस नवरूप स्थापि नव करि तिस भाज्यकौं भाग दिएं दोय लाख पचीस हजारका उगणीसवां भाग होइ सो वाणका प्रमाण है॥ ७६५॥

आगैं अन्य प्रकार करि धनुषकी कृति अर जीवाकी कृति ल्यावनैंकौं करण सूत्र कहैं हैं;—

**इसुदलजुदविक्खंभो चउगुणिदिसुणा हदे दु धणुकरणी।**
**वाणकदिं छहिं गुणिदं तत्थूणे होदि जीवकदी॥ ७६६॥**

इषुदलयुतविष्कंभः चतुर्गुणितेषुणा हते तु धनुःकरणी।
वाणकृतिं षड्भिः गुणितं तत्रोने भवति जीवकृतिः॥ ७६६॥

**अर्थ**—वाणका अर्द्ध प्रमाण करि 'जोड्या हुवा विष्कंभ ताकौं चौगुणा वाणका प्रमाण करि गुणें धनुषकी कृति हो है। वहुरि वाणकी कृतिकौं छह गुणी करि ताकौं तिस धनुषकी कृतिमैं स्यों घटाएं जीवाकी कृति हो है। सो इस जंवूद्वीपके कुरु क्षेत्रविषै वाण दोय लाख पचीस हजारका उगणीसवां भाग ताकौं आधा करि ११२५००÷१९ याकौं नव करि समछेद करि १०१२५००÷१७१ पूर्वोक्त वृत्त विष्कंभका प्रमाण १२१६५४९०÷१७१ विषै जोड़ि याकौं १३१७९९९०÷१७१ चौगुणा वाण ९०००००÷१९ करि गुणिए तहां गुण्य राशिका भागहार एकसौ इकहत्तरिकौं उगणीस नव गुणाकरि दोय जायगा स्थापिए १९।९ वहुरि गुणकारकी पांच विंदी गुण्य राशिकै आगैं स्थापिए १३१७७९९००००० वहुरि गुणकारका नवका अंक करि गुण्यका भागहार दोय जायगा स्थापन किया था तामैं नवका अंककरि अपवर्त्तन करिए अवशेष गुण्यका भाग हार उगणीस अर गुणकारका भागहार परस्पर गुणें तीनसै इकसठि भागहार होइ ऐसें करतैं धनुषकी कृतिका प्रमाण १३१७७९९००००००÷३६१ हो है। वहुरि वाणका वर्ग करि ५०६२५००००००÷३६१ ताकों छह गुणाकरि ३०३७५००००००÷३६१ तिस धनुषकी कृति १३१७७९९००००००÷३६१ मैंसौं घटाएं अवशेष १०१४०४९०००-०००÷३६१ प्रमाण जीवाकी कृति हो है। ऐसैं इसुहीणं विष्कंभ इत्यादि सात गाथानि करि कह्या जु विधान सो भरतादि क्षेत्रनि विषै अर हिमवन आदि कुलाचलनिविषै भी करना। जातैं जंवूद्वीपविषै इनका भी धनुषाकार क्षेत्र हो है। सो कैसैं सो कहिए हैं। पूर्व पश्चिमकी तरफ क्षेत्र वा पर्वतनिका जो लंवाईका आदिविषै प्रमाण सोतौ जीवा जाननी। सो विजयार्द्धके समीप भरतकी

प्रमाण सो दक्षिण भरतकी जीवा है। विजयार्धकी उत्तर दिसाका तटका प्रमाण विजयार्धकी जीवा है। हिमवतके समीप भरतका प्रमाण संपूर्ण भरतकी जीवा है। हिमवत्का उत्तर तटका प्रमाण हिमवत्की जीवा है। महाहिमवतके समीप हैमवतका प्रमाण हैमवतकी जीवा है। महाहिमवतके उत्तर तटका प्रमाण महाहिमवतपर्यंतकी जीवा है। निषधके समीप हरिका प्रमाण हरिकी जीवा है। निषधके उत्तर ताटका प्रमाण सो निषधकी जीवा है। विदेह क्षेत्रका मध्यविषै विदेहका प्रमाण विदेहकी जीवा है। ऐसैं पूर्व पश्चिम लंबाईका प्रमाण तो जैसैं धनुषकी चिल्ला हो है तैसैं जीवा जाननी। अर जैसैं धनुष हो है तैसैं जीवाका एक पार्श्वतैं लगाय दूसरे पार्श्व पर्यंत जंबूद्वीपका जो तट परिधिरूप पाइए सो चाप जाननां। वा याकौं धनुष वा धनुः पृष्ट भी कहिए। बहुरि जैसैं चिल्ला धनुषके बीचि बाणका क्षेत्र हो है तैसैं तिस जीवाका मध्यतैं लगाय सनमुख जंबूद्वीपका अंतपर्यंत जो प्रमाण सो बाण जाननां। ऐसैंही उत्तर ऐरावत आदि क्षेत्र इपरी आदि कुलाचलनिका कथन जाननां। विशेष इतना जहां उत्तर ताटका कह्या है तहां दक्षिण तट जाननां। क्षेत्र. कुलाचलनिका जो नाम है सो तही नाम जाननां ॥ ७६६ ॥

आगैं अब दक्षिण भरत अर विजयार्द्ध अर उत्तर भरत क्षेत्रके बाण ल्यावनैंकौं सूत्र कहैं हैं;—

**रूप्पगिरिहीणभरहव्वासदलं दक्खिणड्ढभरहइसू।**
**णगजुद णगसरमुत्तरभरहजुदं भरहखिदिवाणो ॥ ७६७ ॥**

रूप्यगिरिहीनभरतव्यासदलं दक्षिणार्धभरतेषुः।
नगयुते नगशरः उत्तरभरतयुतं भरतक्षेत्रबाणः ॥ ७६७ ॥

**अर्थ**—रूप्य गिरि जो विजयार्द्ध ताका व्यास योजन पचास सो भरतका व्यास पांचसै छवीस छह कलामैंसौं घटाइ अवशेष ४७६६÷१९ कौं आधा किएं दोयसै अठतीस योजन तीन कला प्रमाण दक्षिण आधा भरतका बाण हो है। यामैं विजयार्द्ध पर्वतका व्यास पचास योजन जोड़े दोयसै अठ्यासी योजन तीन कला प्रमाण विजयर्द्धका बाण हो है। यामै उत्तर भरतका व्यास दोयसै अठतीस योजन तीन कला जोड़े पांचसै छवीस योजन छह कला संपूर्ण भरतका बाण हो है। इन तीनों बाणनिके समछेद करि अपनां अपना अंश मिलाएं दक्षिण भरतका च्यारि हजार पांचसै पचीसका उगणीसवां भाग विजयार्द्ध पांच हजार च्यारिसै पिचहत्तरिका उगणीसवांभाग संपूर्ण भरतका दश हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण जाननां ॥ ७६७ ॥

आगैं हिमवत आदि पर्वतनिका अर हैमवत आदि क्षेत्रनिका बाण ल्यावनैंकौं करण सूत्र कहैं हैं;—

**हिमणगपहुदीवासो दुगुणो भरहूणिदो य णिसहोत्ति।**
**ससबाणा णिसहसरो सविदेहदलो विदेहस्स ॥ ७६८ ॥**

हिमनगप्रभृतिव्यासः द्विगुणः भरतोनितश्च निषधांतम्।
स्वस्वबाणा निषधशरः सविदेहदलः विदेहस्य ॥ ७६८ ॥

अर्थ—हिमवत पर्वत आदिका व्यास दूणा करि भरतका व्यास घटाएं निषध पर्यंत स्वकीय स्वकीय वाण हो हैं। सो एकसौ निवै शलाकानिका एक लाख योजन क्षेत्र होइ तौ हिमतव आदिकी दोय च्यारि आठ सोलह बत्तीस शलाकानिका कीत क्षेत्र होइ ऐसैं त्रैराशिक करि अपवर्तन किएं हिमवत आदिका व्यास हो है। सो हिमवतका वीस हजारका हैमवतका चालीस हजारका महा हिमवतका असी हजारका हरिका एक लाख साठि हजारका निपधका तीन लाख वीस हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण व्यास है। सो याकों दूणा करि यामैं सर्वत्र भरतका वाण दश हजारका उगणीसवां भाग घटाएं हिमवत आदिका क्रमतैं तीस हजार एक लाख ४००००÷१९। ८००००÷१९। १६००००÷१९। ३२००००÷१९। ६४००००÷१९। पचास हजार तीन लाख दश हजार छह लाख तीस हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण वाण जाननां। बहुरि निपधका वाण छह लाख तीस हजारका उगणीसवां भाग तामैं विदेहके व्यास छह लाख चालीस हजारका उगणीसवां भाग ताका आधा तीन लाख वीस हजारका उगणीसवां भाग जोड़े अर्द्ध विदेहका वाण नव लाख पचास हजारका उगणीसवां भाग प्रमाण हो है। अब इन वाणनकों धरि तिन क्षेत्र वा पर्वतनिकी जीवा कृति अर धनुः कृतिकौं इसुहीणं विष्कंभं इत्यादि करण सूत्र करि ल्याईए सो कहिए हैं। दक्षिण भरत विषै समछेदरूप वाण च्यारि हजार पांचसै पचीसका उगणीसवां भाग ताकौं जंबूद्वीपका व्यास लाख योजन सो इहां वृत्त विष्कंभ जाननां। ताकों उगणीसकरि समछेद करि १९-०००००÷१९ यामैंसों घटाइए १८९५४७५÷१९ अब शेपकौं चौगुणा वाण १८१००÷१९ करि गुणें ३४३०८०९७५००÷३१ जीवाकी कृति हो है। याका वर्ग भूल ग्रहण करि १८-५२२४÷१९ अपनां भाग हारका भाग दीएं नव हजार सातसै अठतालीस योजन बारह उगणीसवां भाग प्रमाण दक्षिण भरत क्षेत्रकी शुद्ध जीवा हो है। बहुरि वाण ४५२५÷१९ का वर्ग करि २०४७५६२५÷३६१ याकौं छह गुणा करि १२२८५३७५०÷३६१ यामैं तीह जीवाकी कृति ३४३०८०९७५०० कों जोड़े ३४४३०९५१२५०÷३६१ धनुपकी कृति हो है। याका वर्ग मूल ग्रहण करि १८५५५५÷१९ अपनां भागहारका भाग दिएं नव हजार सात सै छयासठि योजन एक उगणीसवां भाग प्रमाण दक्षिण भरतका धनुष हो है। बहुरि विजयार्द्ध विपै समछेदरूप वांण पांच हजार च्यारिसै पिचहत्तरिका उगणीसवां भाग प्रमाण ताहि समच्छेदरूप वृत्त विष्कंभ उगणीस लाखका उगणीसवां भाग प्रमाणमैंसौं घटाइ अवशेष १८९४५२५÷१९ कौं चौगुणा वाणका प्रमाण २१९००÷१९ करि गुणें ४१४९००९७५००÷३६१ विजयार्द्धकी जीवाकी कृति हो है। याका वर्ग मूल ग्रहण करि २०३६९१÷१९ अपनां भागहारका भाग दीएं दश हजार सातसै वीस योजन अर ग्यारह उगणीसवां भाग प्रमाण विजयार्द्ध पर्वतकी जीवा हो है। बहुरि वाण ५४७५÷१९ का वर्ग करि २९९७५६२५÷३६१ ताकौ छह गुणा करि १७९८५३७५०÷३६१ तीह विषै पूर्वोक्त जीवाकी कृति ४१४९००९-७५००÷३६१ जोड़ें ४१६६९९५१२५०÷३६१ धनुषकी कृति हो है। याका वर्ग मूल ग्रहण करि २०४१३२÷१९ अपनां भाग हार १९ का भाग दिएं दश हजार सात सै तियालीस योजन

अर पंद्रह उगणीसवां भाग प्रमाण विजयार्द्ध पर्वतका धनुप हो है । बहुरि उत्तर भरतका समच्छेद रूप वांण दश हजारका उगणीसवां भाग ताकौं समच्छेदरूप वृत्त विष्कंभ उगणीस लाखका उगणीसवां भाग प्रमाणमैंसौं घटाइ अवशेष १८९००००÷१९ कौं चौगुणा वाण ४००००÷१९ करि गुणें ७५६०००००००÷३६१ जीवाकी कृति हो है। याका वर्ग मूल ग्रहण करि २७४९-५४÷१९ अपनां भाग हार १९ का भाग दिएं चौदह हजार च्यारिसैं इकहत्तरि योजन पांच उगणीसवां प्रमाण उत्तर भरत क्षेत्रकी जीवा हो है । बहुरि वाण १००००÷१९ का वर्ग करि १०००००००÷३६१ ताकौं छह गुणा करि ६०००००००÷३६१ याविषै जीवाकी कृति ७५६००००००००÷३६१ जोड़ें ७६२००००००००÷३६१ धनुपकी कृति हो है । याका वर्ग मूल ग्रहण करि २७६०४३÷१९ अपना भाग हार १९ का भाग दिएं चौदह हजार पांचसै अठाईस योजन अर ग्यारह उगणीसवां भाग प्रमाण उत्तर भरत क्षेत्रका धनुप हो है । बहुरि हिमवत पर्वतका वाण तीस हज़ारका उगणीसवां भाग ताकौं वृत्त विष्कंभ उगणीस लक्षका उगणीसवां भाग मैं सौं घटाइ अवशेष १८७००००÷१९ कौं चौगुणावाण १२००००÷१९ करि गुणें २२४४००००००००÷३६१ जीवाकी कृति हो है। याका वर्ग मूल ग्रहण करि ४७३७०९÷१९ अपना भाग हार १९ का भाग दिएं चौईस हजार नवसै वत्तीस योजन अर किछू वाटि एक उगणीसवां भाग प्रमाण हिमवतकी जीवा हो है। बहुरि वाण ३००००÷१९ का वर्ग करि ९०००००००÷३६१ याकौं छह गुणां करि ५४००००००÷३६१ तीह विषै जीवाकी कृति २२४४००००००००÷३६१ जोडें धनुपकी कृति हो है । याका वर्ग मूल ग्रहण करैं ४७९३७४÷१९ अपनां भाग हार उगणीस १९ का भाग दिएं पचीस हजार दोय सै तीस योजन अर च्यारि उगणीसवां भाग प्रमाण हिमवत पर्वतका धनुपहो है। बहुरि हैमवत क्षेत्रका वाण हजारका उगणीसवां भाग ताकौं वृत्त विष्कंभ उगणीसवां भागमैंसौं घटाइ अवशेष १८३००००÷१९ कौं चौगुणा वाण २८००००÷१९ करि गुणें ५१२४०००००००००÷३६१ जीवांकी कृति हो है। याका वर्ग मूल ग्रहण करि ७१५८२२÷१९ अपना भाग हार १९ का भाग दिएं सैंतीस हजार छसै वहतरि योजनां अर किंचिदून सोल्ह उगणीसवां भाग प्रमाण हैमवत क्षेत्रकी जीवा हो है। बहुरि ७००००÷१९ वर्ग करि ४९००००००००÷३६१ ताकौं छह गुणां करि २९४०००००००००÷३६१ यामैं जीवाकी कृति ५१२४००००००००÷३६१ जोड़ें ५४१८००००००००÷३६१ धनुपकी कृति हो है। याका वर्ग मूल ग्रहण करि ७३६०७०÷१९ अपनां भाग हार १९ का भाग दिएं अठतीस हजार सातसै चालीस योजन अर दश उगणीसवां भाग प्रमाण हैमवत क्षेत्रका धनुप हो हैं । बहुरि महा हिमवत पर्वतका वाण एक लाख पचास हजारका उगणीसवां भाग ताकौं वृत्त विष्कंभ उगणीस लाखका उगणीसवां भागमैंसौं घटाइ अवशेष १७५००००÷१९ कौं चौगुणा वाण ६०००००÷१९ करि गुणें १०५००००००००००÷३६१ जीवाकी कृति हो है। याका वर्ग मूल ग्रहण करि १०२४६९५÷१९ अपना भाग हारका

भाग दिएं तरेपन हजार नवसै इकतीस योजन अर छह उगणीसवां भाग प्रमाण महा हिमवत पर्वतकी जीवा हो है। बहुरि वाण १५००००÷१९ का वर्गकरि २२५०००००००० याकों छह गुणाकरि १३५००००००००÷३६१ याविषै जीवाकृति १०५००००००००÷३६१ जोड़ें ११८५००००००००÷३६१ धनुपकी कृति हो है। या वर्ग मूल ग्रहण करि १०८८-५७७÷१९ अपनां भाग हार १९ का भाग दिएं सत्तावन हजार दोयसै तरेणवै योजन अर दश उगणीसवां भाग प्रमाण महा हिमवत पर्वतका धनुप हो है। बहुरि हरि क्षेत्रका वाण तीनलाख दश हजारका उगणीसवां भाग ताकों वृत्त विष्कंभ उगणीस लाखका उगणीसवां भागमैसैं घटाइ अवशेप कौं १५९००००÷१९ चौगुणा वाण १२४००००÷१९ करि गुणें १९७१६००००००००÷३६१ जीवाकी कृति हो है। याका वर्ग मूल ग्रहण करि १४०४१३६÷१९ अपनां भाग-हार उगणीस १९ का भाग दिएं तिहेत्तरि हजार नवसै एक योजन अर सतरह उगणीसवां भाग प्रमाण हरि क्षेत्रकी जीवा हो है। बहुरि वाण ३१००.००÷१९ का वर्गकरि ९६१००००००-०००÷३६१ ताकौं छह गुणांकरि ५७६६ विंदी ८÷३६१ यामैं जीवाकी कृति १९७१६ विंदी ८÷३६१ जोड़ें २५४८२ विंदी ८÷३६१ धनुपकी कृति हो हैं। याका वर्ग मूल ग्रहण करि १५९६३०८÷१९ अपनां भाग हार उन्नीसका भाग दिएं चौरासी हजार सोलह योजन च्यारि उग-णीसवां भाग प्रमाण हरिवर्प क्षेत्रका धनुप हो है। बहुरि निपध पर्वतका वाण छह लाख तीस हजारका उगणीसवां भाग ताकौं वृत्त विष्कंभ उगणीस लाखका उगणीसवां भागमैंसों घटाइ अवशेप १२७००००÷१९ कौ चौगुणा वाण २५२००००÷१९ करि गुणें ३२००४ विंदी ८÷३६१ जीवाकी कृति हो है। याका वर्गमूल ग्रहण करि १७८८९६६÷१९ अपनां भागहारका भाग दिएं चौराणवै हजार एकसौ छप्पन योजन अर दोय उगणीसवां भाग प्रमाण निपध पर्वतकी जीवा हो है। बहुरि वाण ६३००००÷१९ का वर्ग करि ३९६९ विंदी ८÷३६१ ताकों छह गुणा करि २३८१४ विंदी ८÷३६१ तामैं जीवाकी कृति ३२००४ विंदी ८÷३६१ जोड़े ५५८१८ विंदी ८÷३६१ धनुषकी कृति हो है। याका वर्गमूल ग्रहण करि २३६२५८३÷१९ अपनां भाग हार १९ का भाग दिएं एकलाख चौईस हजार तीनसै छियालीस हजार योजन अर नव उगणीसवां भाग प्रमाण निषध पर्वतका धनुष हो है। बहुरि अर्द्ध विदेहका वाण नवलाख पचास हजार योजनका उगणीसवां भाग ताकौं वृत्त विष्कंभ उगणीस लाखका उगणीसवां भागमैं-सौं घटाइ अबशेष ९५००००÷१९ कौ चौगुणा वाण ३८०००००÷१९ करि गुणें ३६१ विंदी १०÷३६१ जीवाकी कृति होइ याका वर्गमूल ग्रहण करि १९÷१९ विंदी ५ अपनां भागहार १९ का भाग दिएं एक लक्ष योजन प्रमाण अर्द्ध विदेहकी जीवा हो है। बहुरि वाण ९५०००० ÷१९ का वर्ग करि ९०२५÷३६१ विंदी ८ याकों छह गुणा करि ५४१५÷३६१ विंदी आठ यामैं जीवा कृति ३६१÷३६१ विंदी १० जोड़े ९०२५÷३६१ विंदी ९ धनुषकी कृति हो है। याका वर्गमूल ग्रहण करि ३००४१६४÷१९ अपनां भागहारका भाग दिएं एक लाख अठावन हजार एकसौ चौदह योजन विदेह क्षेत्रका अर्द्ध मध्यविषै धनुप हो है। बहुरि ऐसैं

ही दक्षिण भरतवत् उत्तर ऐरावतका विजयार्द्धवत् विजयार्द्धका संपूर्ण भरतवत् संपूर्ण ऐरावतका हिमवत शिखरी पर्वतका हैमवत हैरण्यवत्क्षेत्रका महाहिमवत् रुक्मी पर्वतका हरिवत् रम्यकक्षेत्रका निषधवत् नील पर्वतका अर्धविदेह वत् अर्द्ध विदेहका बाण जीवा धनुः पृष्ठका कथन जाननां ॥ ७६८ ॥

आगें दक्षिण भरतादि क्षेत्र या पर्वतनिका जीवा धनुपनिके पूर्वं ल्याए अंक नव गाथानि करि कहैं हैं;—

**दक्खिणभरहे जीवा अडचउसगणवय होंति बारकला ।**
**चापं छछक्कसगसयणवयसहस्सं च एक्ककला ॥ ७६९ ॥**

दक्षिणभरते जीवा अष्टचतुःसप्तनव भवंति द्वादशकलाः ।
चापं षट्षट्सप्तशतनवसहस्रं च एककला ॥ ७६९ ॥

**अर्थ**—दक्षिण भरत क्षेत्रविषै जीवा आठ च्यारि सात नव इन अंकनि करि नव हजार सातसै अठतालीस योजन अर बारह कला प्रमाण है । बहुरि तिसहीका चाप जो धनुप सो छ्यासठि अधिक सातसै करि सहित नव हजार योजन अर एक कला प्रमाण है ॥ ७६९ ॥

**वेयड्ढंते जीवा णभदुगसगदहसहस्सेगारकला ।**
**तेदालसगणभेक्कं पण्णरसकला य तच्चावं ॥ ७७० ॥**

विजयार्धांते जीवा नभोद्विकसप्तदशसहस्रैकादशकला ।
त्रिचत्वारिंशत् सप्त नभःएकं पंचदशकलाश्च तच्चापं ॥ ७७० ॥

**अर्थ**—विजयार्द्धका अंत विषै जीवा बिंदी दोइ सात इन अंकनि करि सातसै वीस सहित दश हजार योजन अर ग्यारह कला प्रमाण है । बहुरि ताका चाप तियालीस सात बिंदी इन अंकनि करि दश हजार सातसै तियालीस योजन अर पंद्रह कला प्रमाण है ॥ ७७० ॥

**भरहस्संते जीवा इगिसगचउचोद्दसं च पंचकला ।**
**चावं अडदुगपणचउरेक्कं एक्कारसकला य ॥ ७७१ ॥**

भरतस्यांते जीवा एक सप्त चतुश्चतुर्दश च पंचकलाः ।
चापं अष्टद्विकपंचचतुरेके एकादशकलाः च ॥ ७७१ ॥

**अर्थ**—भरत क्षेत्रका अंत विषै एक सात च्यारि चौदह इन अंकनि करि चौदह हजार च्यारिसैं इकहत्तरि योजन अर पांचकला प्रमाण है । बहुरि ताका चाप आठ दोय पांच च्यारि एक इन अंकनि करि चौदह हजार पांचसैं अठाईस योजन अर ग्यारह कला प्रमाण है ॥ ७७१ ॥

**हिमवण्णगंत जीवा दुगतिगणवचउदुगं कला चूणा ।**
**चावं णभतियदुगपणवीससहस्सं च चारिकला ॥ ७७२ ॥**

हिमवन्नगांते जीवा द्विकत्रिकनवचतुर्द्वयं कला चोना ।
चापं नभस्त्रिद्विपंचाविंशतिसहस्रं च चतुःकला ॥ ७७२ ॥

**अर्थ**—हिमवत पर्वतका अंतविषै जीवा दोय तीन नव च्यारि दोय इन अंकनि करि चौईस हजार नवसैं बत्तीस योजन अर किंचिदून एक कला प्रमाण है । बहुरि ताका चाप बिंदी

तीन दोय पांच इन अंकनि करि पांच हजार दोयसै तीस तीह करि अधिक वीस हजार योजन अर च्यारि कला प्रमाण है ॥ ७७२ ॥

**हेमवदंतिमजीवा चउसगछस्सगाति उणसोलकला ।**
**धणुहं णभचउसगअडतिण्णि विसेसहियदसयकला ॥ ७७३ ॥**

हेमवतांतिमजीवा चतुःसप्तषट्सप्तत्रयः ऊनषोडशकला ।
धनुः नभश्चतुःसप्ताष्टत्रीणि विशेषाधिकदशकला ॥ ७७३ ॥

**अर्थ**—हैमवत क्षेत्रका अंत विषै जीवा च्यारि सात छह सात तीन इन अंकनि करि सैंतीस हजार छसै चहौत्तरि योजन अर किछू घाटि सोल्ह कला प्रमाण हैं। बहुरि ताका धनुष विंदी च्यारि सात आठ तीन इन अंकनि करि अठतीस हजार सातसै चालीस योजन अर किछू अधिक दश कला प्रमाण है ॥ ७७३ ॥

**महहिमवचरिमजीवा इगतिणवत्तिदयपंच छक्कला ।**
**तच्चावं तियणवदुगसगवण्णसहस्स दसयकला ॥ ७७४ ॥**

महाहिमवच्चरमजीवा एकत्रिनवत्रितयपंच षट्कलाः ।
तच्चापं त्रिनवद्विसप्तपंचाशत्सहस्रं दशकलाः ॥ ७७४ ॥

**अर्थ**—महाहिमवत पर्वतका अंत विषै जीवा एक तीन नव तीन पंच इन अंकनि करि तरेपन हजार नवसै इकतीस योजन अर छह कला प्रमाण है। बहुरि ताका चाप तीन नव दोय इन अंकनि करि दोयसै तेरणवै तिन करि सहित सत्तावन हजार योजन अर दश कला प्रमाण है ॥ ७७४ ॥

**हरिजीवा इगिणभणवतियसत्तयमिह कलावि सत्तरसा ।**
**चावं सोलसणभचउसीदिसहस्सं च चारि कला ॥ ७७५ ॥**

हरिजीवा एकनभोनवत्रिसप्तक इह कला अपि सप्तदश ।
चापं षोडशनभश्चतुरशीतिसहस्रं च चतस्रः कलाः ॥ ७७५ ॥

**अर्थ**—हरिक्षेत्र विषै जीवा एक विंदी नव तीन सात इन अंकनि करि तेहत्तरि हजार नवसै एक योजन अर सत्तरह कला प्रमाण है। बहुरि ताका चाप सोल्ह विन्दी इन अंकनि करि सोल्ह तिन करि अधिक चौरासी हजार योजन अर च्यारि कला प्रमाण है ॥ ७७५ ॥

**णिसहावसाणजीवा छप्पणइगिचारिणवय दोण्णि कला ।**
**धणुपुट्ठं छादालतिचउवीसेक्कं च णवय कला ॥ ७७६ ॥**

निषधावसानजीवा षट्पंचकचतुर्नवकं द्वे कले ।
धनुःपृष्ठं षट्चत्वारिंशत् त्रिचतुर्विंशत्येकं च नव कलाः ॥ ७७६ ॥

**अर्थ**—निषद्ध पर्वतका अंतविषै जीवा छह पांच एक च्यारि नव इन अंकनि करि चौराणवै हजार एकसौ छप्पन योजन अर दोय कला प्रमाण है। बहुरि धनुःपृष्ट छियालीस तीन चौवीस एक इन अंकनि करि एक लाख चौईस हजार तीनसै छियालीस योजन अर नव कला प्रमाण है ॥ ७७६ ॥

जीवदु विदेहमज्झे लक्खा परिहिदलमेवमवरद्धे।
माहवचंदुद्धरिया गुणधम्मपसिद्ध सव्वकला॥ ७७७॥
जीवाद्वयं विदेहमध्ये लक्षं परिधिदलं एवमपरार्धे।
माधवचंद्रोद्धृताः गुणधर्मप्रसिद्धाः सर्वकलाः॥ ७७७॥

**अर्थ—**विदेहकै मध्य जीवा अर धनुप ए दोऊ क्रमतैं जीवा तौ लक्ष योजन प्रमाण अर धनुष्य जंबूद्वीपकी परिधिका जो प्रमाण ३१६२२७ क्रोश ३ दंड १२८ अंगुल १३$\frac{१}{२}$ ताकै अर्द्ध प्रमाण किछू घाटि एक लाख अठावन हजार एक सौ चौदह योजन प्रमाण है। ऐसैं ही ऐरावतादिक क्षेत्र वा पर्वतनिका कथन अर दूसरी तरफका आधा जंबूद्वीप विपै जाननां। बहुरि गुण कहिए चिला जीवा अर धंर्म कहिए धनुप तिनविपै प्रसिद्ध कहिए पूर्वैं कही ऐसी जु सर्वकला कहिए योजनका अंश ते माधव कहिए नारायण नव अर चंद्र कहिए चंद्रमा एक इन अंकनि करि उगणीस भए तिनकरि उद्धृत कहिए भागरूप जाननी। **भावार्थ—**पूर्वैं जो जीवा अर धनुपका कथन विपै कला कही है सो एक कलाका प्रमाण एक योजनका उगणीसवां भाग जाननां। बहुरि गुण धर्म्म इत्यादि पदका दूसरा अर्थ कहिए हैं—गुण ज्ञानादिक धर्म्म अहिंसादिक विपै प्रसिद्ध ऐसी जु सर्व कला चातुर्य तातैं माधवचंद्र नाम त्रैविद्य देव ताकरि उद्धृत कहिए प्रकाशित हैं। **भावार्थ—**माधव चंद्र आचार्यने गुण धर्म संबंधी सर्वकला प्रगट करी हैं ऐसा दूसरा अर्थ भी जाननां॥ ७७७॥

आगैं जीवानिकी चूलिका अर धनुपनकी पार्श्वभुजाकौं कहैं हैं;—

पुव्ववरजीवसेसे दलिदे इह चूलियात्ति णाम हवे।
धणुदुगसेसे दलिदे पासभुजा दक्खिणुत्तरदो॥ ७७८॥
पूर्वापरजीवाशेषे दलिते इह चूलिका इति नाम भवेत्।
धनुर्द्विकशेषे दलिते पार्श्वभुजः दक्षिणोत्तरतः॥ ७७८॥

**अर्थ—**दक्षिणविपै तौ भरतादिक विपै अर उत्तरविपै ऐरावतादिविपै जो पूर्वापर जीवा कहिए पहलै अर पीछै कही जे जीवा तिनविपै अधिक प्रमाणमैं सौं हीन प्रमाण घटाइ अवशेष रहै ताका आधा किएं जो प्रमाण होइ ताका चूलिका ऐसा नाम हो है। बहुरि पूर्व अपर धनुपनिविपै अधिकमैंसौं हीन घटाइ अवशेषकौं आधा किएं जो प्रमाण होइ ताका नाम पार्श्वभुजा है सो इसहीकौं कहैं हैं। पहलैं कहा दक्षिण भरत ताकी जीवा नव हजार सातसै अठतालीस योजन बारह कला अर ताकै पीछैं कहा विजयार्द्ध ताकी जीवा दश हजार सातसै बीस योजन ग्यारह कला इन दोऊनिविपै अधिक प्रमाण विजयार्द्धकी जीवा तामैं हीन प्रमाण दक्षिण भरतकी जीवा घटाइए तब अवशेष नवसै बहत्तरि योजन रहे अर ग्यारह कलामैं बारह कला घटै नाहीं तातैं एक योजन घटाइ ताकी उगणीस कलामैंसौं बारह कला घटाइ अवशेष सात कला ग्यारह कलाविपै मिलाएं नवसै इकहत्तरि योजन अर अठारह कला होइ ताका आधा करनां सो विपम राशिका आधा न होइ तातैं योजन प्रमाणमैंसौं एक घटाइ अवशेष नवसै सत्तरिका आधा किएं च्यारिसै पिच्यासी तौ योजन होइ अर घटाया एकका आधा $\frac{१}{२}$ अर अठारह कलाका आधा $\frac{९}{१९}$ तिनका समछेद करि $\frac{१९}{३८}$ $\frac{१८}{३८}$ मिलाएं

सैंतीस अठतीसवां भाग होइ सो विजयार्द्ध पर्वतकी चूलिका च्यारिसै पिच्यासी योजन अर सैंतीस अठतीसवां भाग प्रमाण है। विजयार्द्धका उत्तर तटकी सूधितैं दक्षिण तट एक तरफ इतनां घटि है। बहुरि दक्षिण भरतका चाप नव हजार सातसै छयासठि योजन एक कला अर विजयार्द्धका चाप दश हजार सातसै तियालीस योजन पंद्रह कला सो अधिकमेंसौं हीन घटाइ अवशेष नवसै सतहत्तरि योजन चौदह कला होइ ताका पूर्ववत आधा किएं च्यारिसै अठयासी योजन अर तेतीस अठतीसवां भाग प्रमाण विजयार्द्धकी पार्श्वभुजा हो है। विजयार्द्धका उत्तर तटतैं लगाय चापके प्रमाणतैं विजयार्द्धका दक्षिण तटतैं लगाय चाप एक तरफ इतनां घाटि जाननां। ऐसैंही विजयार्द्धकी जीवावा चाप संपूर्ण भरतकी जीवा चापविषै घटाइ अवशेषकों आधा किएं संपूर्ण भरतकी चूलिका वा पार्श्वभुजा हो है। संपूर्ण भरतकी जीवा चाप हिमवत पर्वतकी जीवा चापविषै घटाइ अवशेषकों आधा किएं हिमवत पर्वतकी चूलिका वा पार्श्वभुजा हो है। सो हिमवतकी चूलिका पांच हजार दोयसै तीस योजन पंद्रह अठतीसवां भाग अर पार्श्वभुजा पांच हजार तीनसै पचास योजन इकतीस अठतीसवां भाग प्रमाण है। महा हिमवतकी चूलिका आठ हजार एकसौ अठाईस योजन नव अठतीसवां भाग अर पार्श्वभुजा नव हजार दोयसै छिहंतरि योजन उगणीस अठतीसवां भाग प्रमाण है। निषधकी चूलिका दश हजार एकसौ सत्ताईस योजन दोय उगणीसवां भाग अर पार्श्वभुजा वीस हजार एकसौ पैंसठि योजन पांच अठतीसवां भाग प्रमाण है। अर्धविदेहकी चूलिका दोय हजार नवसै इकईस योजन अठारह उगणीसवां भाग अर पार्श्वभुजा सोलह हजार आठसै तियासी योजन उगणीस अडतीसवां भाग प्रमाण हो हैं। ऐसैं ही अन्यत्र चूलिका वा पार्श्वभुजाका प्रमाण ल्यावनां ॥ ७७८ ॥

आगैं भरत ऐरावत क्षेत्रनिविषै कालके वर्त्तनेका अनुक्रमकौं प्रतिपादन करै हैं;—

**भरहेसुरेवदेसु य ओसप्पुस्सप्पिणित्ति कालदुगा।**
**उस्सेधाउवलाणं हाणीवड्ढी य होंतित्ति ॥ ७७९ ॥**

भरतेषु ऐरावतेषु च अवसर्पिण्युत्सर्पिणीति कालद्वयं।
उत्सेधायुर्बलानां हानिवृद्धी च भवत इति ॥ ७७९ ॥

**अर्थ**—पांचमेरु संबंधी पांच भरत क्षेत्र पांच ऐरावतक्षेत्रनिविषै अवसर्पिणी अर उत्सर्पिणी ए दोयकाल वर्तैं हैं। तिन कालनिविषै तिष्ठते जीवनिकै क्रमतैं शरीरकी उचाई आयु शरीरका वल तिनकी हानि वा वृद्धि हो है। अवसर्प्पिणीकालविषै हानि हो है, उत्सर्प्पिणीविषै वृद्धि हो है। ऐसा जाननां ॥ ७७९ ॥

आगैं इन दोय कालनिके भेदनिका नाम कहैं हैं;—

**सुसमसुसमं च सुसमं सुसमादी अंतदुस्समं कमसो।**
**दुस्समअतिदुस्समिदि पढमो विदियो दु विवरीयो ॥ ७८० ॥**

सुषमसुषमः च सुषमः सुषमादिः अंतदुःषमः क्रमशः।
दुःषमः अतिदुःषम इति प्रथमः द्वितीयस्तु विपरीतः ॥ ७८० ॥

**अर्थ**—सुषम सुषम १ अर सुषम १ अर सुषम दुःषम १ अर दुःषमसुषम १ अर दुःषम अर अतिदुःषम १ ऐसैं क्रमकरि पहला अवसर्पिणीकाल छह भेद संयुक्त है। बहुरि दूसरा उत्सर्पिणी काल इसतैं विपरीत अनुक्रम करि छह भेद संयुक्त है। तहां अति दुःषम १ दुषम १ दुःषम सुषम १ सुषम दुःषम १ सुषम १ सुषम सुषम ऐसा क्रम जांननां ॥ ७८० ॥

आगैं प्रथमादि कालनिका स्थिति प्रमाण कहैं हैं;—

**चदुतिदुगकोडकोडी बादालसहस्सवासहीणेक्कं।**
**उदधीणं हीणदलं तत्तियमेत्तट्ठिदी ताणं॥ ७८१ ॥**

चतुस्त्रिद्विककोटिकोटिः द्वाचत्वारिंशत्सहस्रवर्षहीनैकम्।
उदधीनां हीनदलं तावन्मात्रा स्थितिः तेषां॥ ७८१ ॥

**अर्थ**—तिन छहौं कालनिकी क्रमतैं स्थिति सुषम सुषमकी च्यारि कोड़ा कोड़ी सागर, सुषमकी तीन कोड़ाकोड़ी सागर सुषम दुःषमकी दोय कोड़ा कोड़ी सागर दुःषम सुषमकी च्यारि कोडाकोडी सागर सुषमकी तीन कोडाकोडी सागर, सुषम दुषमकी दोय कोडाकोडी सागर दुःषम सुषमकी बियालीस हजार वर्ष घाटि एक कोडाकोडी सागर, दुषमकी घटाया प्रमाण ४२००० का आधा इकईस हजार वर्ष, अतिदुःषमकी भी इकईस हजार वर्ष प्रमाण जाननी ॥ ७८१ ॥

आगैं छह काल संबंधी जीवनिका आयु प्रमाण कहैं हैं;—

**तत्थादि अंत आऊ तिदुगेक्कं पल्लपुव्वकोडी य।**
**वीसहियसयं वीसं पण्णरसा होंति वासाणं॥ ७८२ ॥**

तत्रादौ अंते आयुः त्रिद्विकैकं पल्यं पूर्वकोटिः।
विंशाधिकशतं विंशं पंचदश भवंति वर्षाणां॥ ७८२ ॥

**अर्थ**—तहां इन कालनि विषै प्रथम कालके आदि विषै जीवनिका आयु तीन पल्य है। ताके अंत विषै दोय पल्य है। बहुरि सोई दोय पल्य आयु द्वितीय कालके आदि विषै है ताके अंत विषै एक पल्य है। बहुरि सोई एक पल्य आयु तृतीयकालके आदि विषै है ताके अंत विषै कोटि पूर्व वर्ष प्रमाण है। बहुरि सोई कोटि पूर्व वर्षका आयु चतुर्थ कालका आदि विषै है ताके अंत विषै एक सौ वीस वर्ष प्रमाण है। बहुरि सोई एकसौ वीस वर्षका आयु पंचम कालके आदि विषै है ताके अंत विषै वीस वर्षका आयु है। बहुरि सोई वीसवर्षका आयु षष्ठम कालका आदि विषै है ताके अंत विषै पंद्रह वर्ष प्रमाण आयु है॥ ७८२ ॥

तैसैंही मनुष्यनिकी उचाईका प्रमाण कहैं हैं;—

**तिदुगेक्ककोसमुदयं पणसयचावं तु सत्तरदणी य।**
**दुगमेक्कं चय रदणी छक्कालादिम्हि अंतम्हि॥ ७८३ ॥**

त्रिद्विकैकक्रोशमुदयः पंचशतचापं तु सप्तरत्नयः च।
द्विकमेकं च रत्निः षट्कालादौ अंते॥ ७८३ ॥

अर्थ—मनुक्षनिके शरीरकी उचाई प्रथम कालकी आदि विषै तीनकोश ताके अंत विषै दोय कोश सोई दूसरा कालकी आदि विषै दोय कोश ताके अंत विषै एक कोश सोई तृतीय कालकी आदि विषै एक कोश ताके अंत विषै पांचसै धनुष सोई चतुर्थ कालकी आदि विषै पांचसै धनुष अंत विषै सात हाथ सोई पंचम कालकी आदि विषै सात हाथ अंतविषै दोय हाथ सोई षष्ठम कालकी आदि विषै दोय हाथ अर अंत विषै एक हाथ प्रमाण है। ऐसैं छह कालनिका आदि अंत विषै मनुक्षनिका उत्सेध जाननां ॥ ७८३ ॥

आगैं छह काल वर्त्ती मनुक्षनिका वर्णका अनुक्रम कहैं हैं;—

उदयरवी पुण्णिदू पियंगुसामा य पंचवण्णा य।
लुक्खसरीरावण्णे धूमसियामा य छक्काले ॥ ७८४ ॥
उदयरवयः पूर्णेंदवः प्रियंगुश्यामाश्च पंचवर्णाश्च।
रूक्षशरीरावर्णाः धूमश्यामाः च षट्काले ॥ ७८४

अर्थ—प्रथम काल विषै मनुक्ष उदय होता सूर्यकै समान वर्ण युक्त हैं। दूसरे काल विषै संपूर्ण चंद्रमा समान वर्ण युक्त है। तीसरे काल विषै हरित श्याम वर्ण संयुक्त हैं। चौथा काल विषै पांचौ वर्ण संयुक्त हैं। पांचवां काल विषै कांति करि हीन रूखा मिश्र रूप पांच वर्ण संयुक्त हैं। छठा काल विषै धुवांवत् श्याम वर्ण संयुक्त हैं। ऐसैं छह कालनि विषै वर्णका अनुक्रम जाननां ॥ ७८४ ॥

आगैं तिनके आहारका अनुक्रम कहैं हैं;—

अट्ठमछट्ठचउत्थेणाहारो पडिदिणेण पायेण।
अतिपायेण य कमसो छक्कालणरा हवंतीत्ति ॥ ७८५ ॥
अष्टमषष्टचतुर्थेनाहारः प्रतिदिनेन प्रायेण।
अतिप्राचुर्येण च क्रमशः षट्कालनरा भवंतीति ॥ ७८५ ॥

अर्थ—पहला काल विषै अष्टम वेलायां कहिए तीन दिनके आंतिरे आहार करै हैं। बहुरि दूसरा काल विषै षष्ठम वेलायां कहिए दोयदिनकै आंतिरै आहार करै है। बहुरि तीसरा काल विषै चतुर्थ वेलायां कहिए एक दिनकै आंतिरै आहार करै है। बहुरि चौथा काल विषै प्रति दिन कहिए दिन प्रति एक वार आहार करै है। बहुरि पांचवां काल विषै प्रायेण कहिए बहुतवार आहार करै है। बहुरि छठा काल विषै अतिपाएण कहिए अति प्रचुर वृत्ति करि वारंवार आहार करै हैं। ऐसैं छह कालनि विषै मनुक्षनिके आहारका अनुक्रम है ॥ ७८५ ॥

आगैं भोग भूमियांनिकै आहारका प्रमाण कहै हैं;—

वदरक्खामलयप्पमकप्पद्दुमदिण्णदिव्वआहारा।
वरपहुदितिभोगभुमा मंदकसाया विणीहारा ॥ ७८६ ॥
वदराक्षामलकप्रमकल्पद्रुमदत्तदिव्याहाराः।
वरप्रभृतित्रिभोगभूमानः मंदकषाया विनीहाराः ॥ ७८६ ॥

**अर्थ**—सुपम सुपमादि तीन कालनि विषै उत्कृष्टादि तीन भोग भूमिके उपजे मनुक्ष क्रमतैं वदरीफल अर अक्षफल अर आंवला प्रमाण कल्पवृक्षनिकरि दीया दिव्य आहार ग्रहण करै हैं। वहुरि ते मंद कषायी हैं। वहुरि मल मूलादि नीहार करि रहित हैं ॥ ७८६ ॥

आगै तिन भोगभूमियांनिकै कल्पवृक्षनिका प्रमाण कहैं हैं;—

**तूरंगपत्तभूसणपाणाहारंगपुप्फजोइतरू ।**
**गेहंगा वत्थंगा दीवंगेहिं दुमा दसहा ॥ ७८७ ॥**

तूर्यांगपात्रभूपणपानाहारांगपुष्पज्योतितरवः ।
गेहांगा वस्त्रांगा दीपांगैः द्रुमा दशधा ॥ ७८७ ॥

**अर्थ**—वाजित्रनिके दाता तूर्यांग अर पात्रनिके दाता पात्रांग अर आभूपणनिके दाता भूपणांग अर पीवनेकी वस्तुके दाता पानांग अर आहारके दाता आहारांग अर फूलनिके दाता पुष्पांग अर उद्योतमई ज्योतिरंग अर मंदिरनिके दाता गृहांग अर वस्त्रनिके दाता वस्त्रांग अर दीपकनिके दाता दीपांग कल्प वृक्ष हैं। ऐसैं कल्प वृक्ष दश प्रकार हैं ॥ ७८७ ॥

आगैं भोगभूमिका स्वरूप कहैं हैं;—

**दप्पणसम मणिभूमी चउरंगुलसुरसगंधमउगतणा ।**
**खीरेच्छुतोयमहुघदपूरिदवावीदहाइण्णा ॥ ७८८ ॥**

दर्पणसमा मणिभूमिः चतुरंगुलसुरसगंधमृदुतृणा ।
क्षीरेक्षुतोयमधुघृतपूरितवापीन्हदाकीर्णा ॥ ७८८ ॥

**अर्थ**—दर्प्पण जो आरसा तीह समान मणिमई भोगभूमि जाननी। वहुरि सो च्यारि अंगुल ऊंचे भला रस गंधसहित कोमल तिणानि करि संयुक्त हैं। अर दुग्ध वा मिष्ट रस वा जल वा मधु समान रस वा घृतकरि पूर्ण ऐसी वावड़ी वा द्रह तिन करि व्याप्त हैं ॥ ७८८ ॥

आगैं भोगभूमियानिकै उपजनें मरणेंका विधान गाथा तीन करि कहैं हैं;—

**जादजुगलेसु दिवसा सगसग अंगुट्ठलेह रंगिदए ।**
**अथिरथिरगदि कलागुणजोवणदंसणगहे जंति ॥ ७८९ ॥**

जातयुगलेपु दिवसाः सप्तसप्त अंगुष्ठलेहे रंगिते।
अस्थिरस्थिरगत्योः कलागुणयौवनदर्शनग्रहे यांति ॥ ७८९ ॥

**अर्थ**—माताके गर्भतैं जुगपत स्त्री पुरुष युगल उपजै हैं। तिनकै उत्पत्ति दिनसौं लगाय सात दिन पर्यंत अनुक्रमतैं अंगूठाका चाटनां वहुरि ऊंचा वा नीचा होना वहुरि डिगता चलनां वहुरि स्थिर रूप नीकैं चलनां वहुरि कला गुणका ग्रहण होनां वहुरि यौवनका ग्रहण होनां वहुरि परस्पर दर्शनका ग्रहण होनां हो है। ऐसैं गुणचास दिननि करि संपूर्णता हो है ॥ ७८९ ॥

**तदंपदीणमादिमसंहदिसंठाणमज्जणामजुदा ।**
**सुलहेसुवि णो तित्ती तेसिं पंचक्खविसएसु ॥ ७९० ॥**

तद्दंपतीनामादिमसंहतिसंस्थानं आर्यनामयुताः ।
सुलभेषु अपि नो तृप्तिः तेषां पंचाक्षविषयेषु ॥ ७९० ॥

**अर्थ**—तिन दंपति कहिए स्त्री पुरुष जुगलनिकै आदिका संहनन संस्थान हो है। वज्र वृषभ नाराच संहनन हो है समचतुरस्र संस्थान हो है। बहुरि ते मंद कषायी हैं तातैं आर्य ऐसे नाम संयुक्त हैं। बहुरि तिनकै सुलभ पाए हैं पंच इन्द्रीनिकै विषय तौभी तिन विषै तृप्ति न हो है। भावार्थ यहु जो विषयनिस्यौं अरुचि न हो है ॥ ७९० ॥

**चरिमे खुदजंभवसा णरणारि विलीय सरदमेघं वा ।**
**भवणतिगामी मिच्छा सोहम्मदुजाइणो सम्मा ॥ ७९१ ॥**

चरमे क्षुतजृंभवशात् नरनार्यो विलीय शरन्मेघं वा ।
भवनत्रिगामिनः मिथ्याः सौधर्मद्वियायिनः सम्यंचः ॥ ७९१ ॥

**अर्थ**—आयुका अंत विषै पुरुष तौ छींक करि, स्त्री जंभाई करि मरण पाइ शरद कालका मेघवत विलय हो हैं। तिनके शरीरका अंश भी पड़ा न रहै। बहुरि ते मरिकरि मिथ्यादृष्टि तौ भवन वासी व्यंतर ज्योतिष्क विषै उपजै हैं। अर सम्यग्दृष्टी सौधर्म्म ईशान विषै उपजैं हैं अन्यत्र नाहीं उपजैं हैं। ऐसे प्रथम कालकी आदि विषै उत्कृष्ट भोग भूमि है। बहुरि क्रमतैं घटि द्वितीय कालकी आदि विषै मध्य भोगभूमि है। बहुरि क्रमतैं घटि तृतीय कालकी आदि विषै जघन्य भोग भूमि है। क्रमतैं घटि अंत विषै कुलकरादि होइ कर्मभूमि हो है। ॥ ७९१ ॥

सो कर्म्मभूमिके प्रवेशका अनुक्रम अर तहां तिष्टते कुलकरनिका स्वरूप तीन गाथानि करि प्रतिपादन करैं हैं;—

**पल्लट्ठमं तु सिट्ठे तदिए कुलकरणरा पडिस्सुदिओ ।**
**सम्मदि खेमंकरधर सीमंकरधर विमलादिवाहणओ ॥ ७९२ ॥**

पल्याष्टमे तु शिष्टे तृतीये कुलकरनराः प्रतिश्रुतिः ।
सम्मतिः क्षेमंकरधरः सीमंकरधरः विमलादिवाहनः ॥ ७९२ ॥

**अर्थ**—तृतीय काल विषै पल्यका आठवां भाग अवशेष रहै कुलकर मनुष्य उपजैं हैं। ते कौन ? प्रतिश्रुति १ सन्मति १ क्षेमंकर १ क्षेमंधर १ सीमंकर १ सीमंधर १ विमलवाहन १ ॥ ७९२ ॥

**चक्खुम्म जससी अहिचंदो चंदाहओ मरुदेओ ।**
**होदि पसेणजिदंको णाभी तण्णंदणो वसहो ॥ ७९३ ॥**

चक्षुष्मान् यशस्वी अभिचंद्रः चंद्राभः मरुदेवः ।
भवति प्रसेनजितांकः नाभिस्तन्नंदनो वृषभः ॥ ७९३ ॥

**अर्थ**—चक्षुष्मान १ यशस्वी १ अभिचंद्र १ चंद्राभ १ मरुदेव १ प्रसेनजित १ नाभि १ ऐसैं चौदह कुलकर हो हैं। तिस नाभिकुलकरका नंदन वृषभनाथ प्रथम तीर्थंकर है ॥ ७९३ ॥

**वरदाणदो विदेहे बद्धणराऊय खइयसंदिट्ठी।**
**इह खत्तियकुलजादा केइज्जाइब्भरा ओही॥ ७९४॥**

वरदानतो विदेहे बद्धनरायुषः क्षायिकसंदृष्टयः।
इह क्षत्रियकुलजाताः केचिज्जातिस्मरा अवधयः॥ ७९४॥

अर्थ—समीचीन पात्रके दान देनेके फलतैं वांधी है मनुष्यायु जिनि अर पीछै क्षायिक सम्यग्दृष्टी भए ऐसे जीव आइ कुलकर उपजैं हैं। ते इहां क्षत्रिय कुल विषै उपजै हैं। यद्यपि कुलादिककी प्रवृत्ति अब हीन भई पर होनहार विषै हुएका उपचार करि इनके कुलके क्षत्रिय हों, हिगे तातैं इनकों क्षत्रिय कुल विषै उपजे कहे। बहुरि ते कुलकर केई तौ जातिस्मरण संयुक्त हैं, केंई अवधिज्ञान संयुक्त हैं॥ ७९४॥

आगैं कुलकरनिका शरीरका उत्सेध कहैं हैं;—

**अट्ठारस तेरस अडसदाणि पणुवीसहीणयाणि तदो।**
**चावाणि कुलयराणं सरीरतुंगत्तणं कमसो॥ ७९५॥**

अष्टादश त्रयोदश अष्टशतानि पंचविंशतिहीनानि ततः।
चापानि कुलकराणां शरीरतुंगत्वं क्रमशः॥ ७९५॥

अर्थ—अठारहसै धनुष १८०० तेरह सैं धनुष १३०० धनुष्य आठसैं धनुष ८०० तहां पीछैं पचीस पचीस घाटि धनुष ७७५।७५०।७२५।७००।६७५।६५०।६२५।६००।५७५।५५०। ५२५। प्रमाण प्रतिश्रुत आदि कुलकरनिके शरीरका उच्चत्व अनुक्रमतैं जाननां॥ ७९५॥

आगैं तिनका आयु कहैं हैं;—

**आऊ पल्लदसंसो पढमे सेसेसु दसहि भजिदकमं।**
**चरिमे दु पुव्वकोडी जोगे किंचूण तण्णवमं॥ ७९६॥**

आयुः पल्यदशांशः प्रथमे शेषेषु दशभिः भक्तक्रमः।
चरमे तु पूर्वकोटिः योगे किंचिदूनं तन्नवमं॥ ७९६॥

अर्थ—पहला कुलकरका आयु पल्यका दशवां भाग प्रमाण है। द्वितीयादि कुलकरनिका आयु क्रमतैं दश दश गुणां भाग पल्यकों दीजिए तीह प्रमाण है। प१÷१००। प१०÷१०००। प१÷१०००० प१÷१ ला० प१÷१ ला० प१÷१ को० प१÷१० कोड़ि। प१÷१०० को०। प१÷१००० को० प१÷१००००० को०। प१÷लक्ष को० प१÷१० ल० को०। बहुरि अंतका नाभिकुल करका आयु पूर्व कोड़ि वर्ष प्रमाण है सो पूर्व कोडि वर्षका आयु विनां और कुलकरनिका आयुकौं समछेद विधान करि मिलाइए तव पल्यके दशलाख कोडिका भाग दीजिये ऐसा होइ प१११११११११११११÷१०००००००००००००। बहुरि सुगम अपवर्तन करनेंके अर्थि यामें पल्यका निवै लाख कोडिवां भाग प्रमाण ऋण मिलाइए पल्य १।९ बिंदी १३ सो समछेद करनेके अर्थि पूर्वराशिके भाज्य भागहारकौं नव गुणां किएं ऐसा होइ प९९९९९९-९९९९९९९÷९ बिंदी १३ या विषै ऋण प्रमाण जोड़े ऐसा होइ। प÷९ बिंदी १३ बहुरि

भाज्यकों तेरह विर्रलनि करि भाग हारकौ तेरह विर्रलनिका अपवर्त्तन किएं एक पल्यका नवमां भाग आया प १ विर्र १३÷९ विर्र १३। बहुरि यामैं पूर्वै जो ऋण मिलाया था ताकूं ल्यूंका त्यूं घटाइ दिएं एक पल्यका नवमां भागमैं पल्यका निवै लाख कोड़िवां भाग घट्या ऐसैं सबनिका जोड किंचिदून पल्यका नवमां भाग प्रमाण हो है। अब याका जोड़का विधान करण सूत्र करि साधै है। अंत धणं गुण गुणियं आदि विहीणं रूऊणुत्तर भजियं। अंतका धन पल्यका दशवां भाग ताकौं गुणकार दशकरि गुणें पल्य भया। यातैं आदिका प्रमाण पल्य दशका लक्ष कोडिवां भाग समछेद करि घटाएं ऐसा होइ प ९९९९९९९९९९९९९÷१ विर्र १३ याकौं एक घाटि गुणकारका प्रमाण नवका भाग दीजिये तब ऐसा होइ प१११११११११११११÷१ विर्र १३ इहां पूर्वोक्त प्रमाण ऋण मिलाएं ऐसा होइ प१ विर्र १३÷९ विर्र १३ याका अपवर्तन किएं पल्य प१÷९ विर्र १३ का नवमां भाग भया यामैं। पूर्वै मिलाया था ऋण सो घटाएं किंचिदून पल्य हो है। अब याका विधान अंक संदृष्टिविषै दिखावै हैं। राशिविषै ऋण घटाइ अवशेषकौं भाग दिएं जो पावै सोई तिस राशिविषै भागहारकौं अधिक करि भाग दिएं पावै। सो इहां राशि साठिका चौथा भाग ६०/४ तातैं बीसका चौथा भाग प्रमाण ऋण घटाएं चालीसका चौथा भाग है ताकौं अपनां भागहारका भाग दिएं जो दश पाए सोई तिस राशि साठिका चौथा भाग विषै भागहारविषै दोय अधिक करि भाग दिएं साठिका छठा भाग होइ सो इहां भी भाग दिए दश ही पाए। भागहार विषै अधिकका प्रमाण कैसें जानिएं? ऋण राशिकौं पाया राशिका भाग दिएं जानिएं सो इहां ऋण राशि बीसकौं पाया राशि दशका भाग दिएं दोय पाए सोई भागहारविषै अधिकका प्रमाण जानिएं। बहुरि जो ऋणका प्रमाण न जानिएं तौ भागहारविषै जेता अधिक होइ तीह करि लब्ध राशिकौं गुणें ऋणका प्रमाण जानिएं। इहां अधिक दोयकौं लब्ध दश करि गुणें ऋण राशि बीस जानना। सो इहां राशि पल्यका नवमां भागनैंतौं पूर्वोक्त ऋण घटाइ अवशेषकौं भाग दिएं जो पावै सोई पाया राशिका भाग ऋण राशिकौं देइ जो पावै तितना अधिक भागहारका भाग राशिकौं दिएं पावै ऐसा प्रयोजन जानना ॥ ७९६ ॥

आगें तिन कुलकरनिका अंतरालका काल कहै हैं;—

पल्लासीदिमभंतरमादिममवसेसमेत्थ दसभजिदा।
जोगे बावत्तरिसं सयलजुदे अट्ठमं हीणं ॥ ७९७ ॥

पल्याशीतिमंतरमादिममवशेषमत्र दशभक्तं।
योगे द्वासप्ततिः सकलयुते अष्टमो हीनः ॥ ७९७ ॥

**अर्थ**—पूर्व कुलकरका मरण भएं पीछैं पिछला कुलकर जितनें काल गएं जनम धरै सो इहां अंतर काल जानना। सो चौदह कुलकरनिके तेरह अंतराल हैं। तिन विषै पहला अंतर पल्यका अस्सीवां भाग प्रमाण है। प्रथम कुलकर भएं पीछैं पल्यका अस्सीवां भाग भएं दूसरा कुलकर उपज्या है। ऐसैंही अवशेष बारह अंतर दश दश गुणा भागहार करि भाजित पल्य प्रमाण जाननें। प १÷८०० । प १÷८००० । प १÷८०००० । प १÷८ ल प १÷८० ल ।

प १÷८ को। प १÷८० को। प १÷८०० को। प १÷८००० को। प १÷८ लको। प १÷८० लको। इनकों पूर्वोक्त प्रकार समछेद करि मिलाएं प १११११११११११११÷८०००-०००००००००० होइ यविषै सुगमता आवनेकैअर्थि पल्या का वहत्तरि लाखकोडिवां भाग मिलावनां तहां समछेद करनेके अर्थि पूर्वराशिके भाज्य भागहारकौं नव गुणां किएं ऐसा प ९९९९९९९९९९९९९÷१ विंदी. १३ यामैं ऋणराशि मिलाइए प १ विंदी १३÷७२ विंदी १३ वहुरि तेरह विंदीनिका अपवर्त्तन करिए तव पल्यका वहत्तीरवां भाग होइ यामैंसों पूर्वं मिलाया था ऋण सो ज्यूंका त्यूं घटाएं सर्व अंतरनिका जोड़ किंचिदून पल्यका वहत्तरिवां भाग प्रमाण हो है। अब इस हीकौं अंत धणं गुणगुणियं आदिविहीणं रुऊणुत्तरभजियं इस कारण सूत्र करि साधैं हैं। अंतका धन पल्यका असीवां भाग ताकौं गुणकार दश करि गुणि प १०÷८० तामैं आदि धन पल्यका असी लाख कोडिवां भाग प १ ÷ ८ विंदी १३ समछेद करि प १ विंदी १३ ÷ ८ विंदी १३ तामैं घटाइए। प ९९९९९९९९९९९९९÷८ विंदी १३। वहुरि याकों एक घाटि गुणकार नव ताका भाग दीजिएं प ९९९९९९९९९९९९९ ÷ ७२ विंदी १३ यामैं पूर्वोक्त प्रमाण ऋण प १÷७२ विंदी १३ मिलाइ अपवर्तन किएं पल्यका वहत्तीरवां भाग होइ यामें तिस ऋणकौं ज्यूंका त्यूं घटाएं किंचिदून पल्यका प १ विंदी १३÷७२ विंदी १३ वहत्तरिवां भाग होइ वहुरि सर्व आयुका जोड़ किंचिदून पल्यका नवमां भाग प १÷९ अर सर्व अंतरनिका जोड़ किंचिदून पल्यका वहत्तरिवां भाग प १÷७२ इनकों आठका समछेद करिनेके अर्थि आयुके जोड़का भाज्य भागहारनिकौं अठ गुणां किएं ऐसा प ८÷७२ ताकौं जोड़ि प ९÷७२ नव करि अपवर्तन किएं किछु घाटि पल्यका आठवां भाग प्रमाण काल हो है ॥ ७९७ ॥

आगै कुलकरनि करि किया हुवा दंड वा तिनके शरीरका वर्णकौं कहैं हैं;—

**हा हामा हामाधिक्कारा पण पंच पण सियामलया।**
**चक्खुम्मदुग पसेणाचंदाहो धवल सेस कणयणिहा ॥ ७९८ ॥**

हा हामा हामाधिक्काराः पंच पंच पंच श्यामलौ।
चक्षुष्मद्विकं प्रसेनचंद्राभौ धवलौ शेषाः कनकनिभा ॥ ७९८ ॥

अर्थ—आदिके पांच कुलकर अपराधीनिकों हा ऐसा वचन कहि करि दंडै है याका अर्थ यहु हाय बुरा किया इतनीं उलाहनां मात्र दंड दे हैं। वहुरि तहां पीछैं पांच कुलकर हामा ऐसा वचन कहि दंडै है। याका अर्थ यहु हाय मति करै इतनां उलाहना वा वर्ज्जना मात्र दंड देहैं। वहुरि तहां पीछैं वृषभ देव सहित पांच कुलकर हामा धिक ऐसा वचन कहि दंडै हैं। याका अर्थ यहु हाय मति करै तोकौं धिक्कार हो हु इतनां उलाहनां वर्जना खिजनां मात्र दंड दे हैं। वहुरि चक्षुष्मान १ यशस्वी १ ए दोय कुलकर श्याम वर्ण हैं। वहुरि प्रसेन जित १ चंद्राभ १ ए दोय धवल वर्ण हैं। अवशेष कुलकर सुवर्ण समान वर्ण धरै हैं ॥ ७९८ ॥

आगै तिन तिनके काल विषै तिन कुलकरनि करि किया कार्यकौं गाथा च्यारि करि कहैं हैं;—

**इणससितारासावदविभयं दंडादिसीमचिण्हकदिं।**
**तुरगादिवाहणं सिसुमुहदंसणणिब्भयं वेंति ॥ ७९९ ॥**

इनशशिताराश्वापदविभयं दंडादिसीमाचिह्नकृतिं ।
तुरगादिवाहनं शिशुमुखदर्शननिर्भयं ब्रुवंति ॥ ७९९ ॥

**अर्थ**—पहला कुलकर है सो प्रजानिकै ज्योतिरंग जातिके कल्प वृक्ष मंद होतैं सूर्य चंद्रमा दीखनें लागा तातैं उपजा जो भय ताकूं निवारै है। बहुरि दूसरा कुलकर तारा दीखनैंतैं उपज्या भयकौं निवारै है। बहुरि तीसरा कुलकर जे मृग आदि जीव क्रूर भए तिनका वेरनेंका उपाय करि भयकौं निवारै है। बहुरि चौथा कुलकर मृग आदि जीव अति क्रूर भए तिनका दंडादिक उपाय करि भयकौं निवारै है। बहुरि पांचवां कुलकर कल्प वृक्ष थोड़ा फल दैनैं लगे तहां प्रजानिकै परस्पर झगड़ा देखि सीमा जो अपनी अपनी मर्यादा ताकौं करै है। बहुरि छठा कुलकर कल्प वृक्ष बहुत मंद फल दैनैं लगे तहां प्रजानिकै तिस मर्यादा भएं भी झगड़ा होतैं ते तिससीमा विषै चिह्न जो सहनानी ताकौं करै हैं। बहुरि सातवां कुलकर गमन करनेंविषै घोड़ा आदि वाहनकौ करै है। बहुरि आठवां कुलकर बालकका जन्म भएं पीछैं भी किछू काल माता पिता जीवनैं लगे तहां बालकनिका मुख देखनेंतैं भया जो भय तातैं निर्भयपणांकौं कहै हैं ॥ ७९९ ॥

**आसीवादादिं ससिपहुदिहिं केलिं च कदिंचिदिणओत्ति ।**
**पुत्तेहिं चिरं जीवण सेदुवहित्तादि तरणविहिं ॥ ८०० ॥**

आशीर्वादादिं शशिप्रभृतिभिः केलिं च कतिचिद्दिनांतम् ।
पुत्रैः चिरं जीवनं सेतुवहित्रादिभिः तरणविधिम् ॥ ८०० ॥

**अर्थ**—नवमां कुलकर बालक जनम भएं पीछैं माता पिता बहुत काल जीवनें लगे तहां बालनिकै तांई आशीर्वादादिक देनां शिखावै हैं। बहुरि दशवां कुलकर बालक जनम भएं पीछैं केतेइक दिन पर्यंत माता पिता जीवनें लगे तहां बालकनि सहित चंद्रमा दिखावनां आदि केलि क्रीड़ाकौं सिखावै हैं। बहुरि ग्यारहवां कुलकर बालक जन्म भएं पीछैं माता पिता बहुत घनें काल जीवनें लगे ताका प्रजानिकैं भय भया ताकौं निवारै हैं। बहुरि बारहां कुलकर मेघवृष्टि होनेतैं नदी आदि जल स्थान भएं तिनके तरणेका विधान जिहाज नाव आदि बतावै हैं ॥ ८०० ॥

**सिक्खंति जराउछिदिं णाभिविणासिंदचावतडिदादिं ।**
**चरिमो फलअकदोसहिभुत्तिं कम्मावणी तत्तो ॥ ८०१ ॥**

शिक्षयति जरायुछिदिं नाभिविनाशं इंद्रचापतडिदादिं ।
चरमः फलाकृतौषधिभुक्ति कर्मावनिस्ततः ॥ ८०१ ॥

**अर्थ**—तेरहां कुलक जरा सहित बालकनिका जनम होनें लगा तहां जरायुके छेदनेकौं सिखावै हैं। बहुरि अंतका कुलकर नाल सहित बालकनिका जनम होनें लगा तहां नाभि छेदनेंकौं शिखावै है। अर इन्द्र धनुप बीजुरी इत्यादि होनैं लगे तिनके देखनेतैं प्रजानिका उपज्या भयकौं निवारै हैं। अर वृक्षानिके फलनिकी आकृति विषै यहु औषध है, यहु भोजन योग्य है, इत्यादि सिखावै है। बहुरि इहांतैं परैं कर्म्मभूमि प्रवर्तै है ॥ ८०१ ॥

**पुरगामपट्टणादी लोयियसत्थं च लोयववहारो।**
**धम्मो वि दयामूलो विणिम्मियो आदिवम्हेण ॥ ८०२ ॥**

पुरग्रामपट्टनादिः लौकिकशास्त्रः लोकव्यवहारः।
धर्मोपि दयामूलः विनिर्मितः आदिब्रह्मणा ॥ ८०२ ॥

**अर्थ**—नगर ग्राम पत्तन आदि रचना अर लौकिक कार्य संबंधी शास्त्र अर असि मसि आदि लौकीक व्यवहार अर दया है मूल जाका ऐसा धर्म्म सो आदि ब्रह्मा श्री वृषम तीर्थंकर देव स्थापन कीया है ॥ ८०२ ॥

आगैं चौथा काल विषै उपजे जे शलाका पुरुष तिनकौं निरूपै हैं;—

**चउवीसवारतिघणं तित्थयरा छत्तिखंडभरहवई।**
**तुरिए काले होंति हु तेवट्ठिसलागपुरिसा ते ॥ ८०३ ॥**

चतुर्विंशतिः द्वादश त्रिघनः तीर्थकराः पट्त्रिखंडभरतपतयः।
तुर्ये काले भवंति हि त्रिपष्टिशलाकापुरुपास्ते ॥ ८०३ ॥

**अर्थ**—चौवीस तीर्थंकर अर बारह पट्खंड भरतका पति चक्रवर्ती अर तीनका घन सत्ताईस त्रिखंड भरतका पति तहां नव नारायण नव प्रतिनारायण नव बलभद्र ऐसैं ए तरेसठि शलाका पुरुष चौथे काल विषै हो हैं ॥ ८०३ ॥

आगैं तीर्थंकरनिका शरीरका उत्सेध कहै हैं;—

**धणु तणुतुंगो तित्थे पंचसयं पण्ण दसपणूणकमं।**
**अट्ठसु पंचसु अट्ठसु पासदुगे णवयसत्तकरा ॥ ८०४ ॥**

धनूंषि तनुतुंगः तीर्थे पंचशतं पंचाशद्दशपंचोनक्रमः।
अष्टसु पंचसु अष्टसु पार्श्वद्विकयोः नव सप्तकराः ॥ ८०४ ॥

**अर्थ**—तीर्थंकरनिके शरीरकी उचाई क्रमतैं ऐसैं धनुप प्रमाण है। पहला तीर्थंकरकै पांचसै बहुरि द्वितीयादि आठ कै पचास पचास घाटि ४५० । ४०० । ३५० । ३०० । २५० । २०० १५० । १०० । बहुरि दशवां आदि पांचकै दश दश घाटि ९० । ८० । ७० । ६० । ५० । बहुरि पंद्रहां आदि आठकै पांच पांच घाटि ४५ । ४० । ३५ । ३० । २५ । २० । १५ । १० । धनुप प्रमाण शरीर ऊंचा है। बहुरि पार्श्वद्विक विषै पार्श्व जिनका नव हाथ वर्द्धमान जिनका सात हाथ शरीर ऊंचा है ॥ ८०४ ॥

आगैं तीर्थंकरनिका आयु गाथा दोय करि कहैं हैं;—

**तिथाऊ चुलसीदीविहत्तरीसट्ठि पणसु दसहीणं।**
**विगि पुव्वलक्खमेत्तो चुलसीदि विहत्तरी सट्ठी ॥ ८०५ ॥**

तीर्थायुः चतुरशीतिद्वासप्ततिपष्टिः पंचसु दशहीनं।
द्व्येकं पूर्वलक्षमात्रं चतुरशीतिः द्वासप्ततिः पष्ठिः ॥ ८०५ ॥

**अर्थ**—तीर्थंकरनिका आयु क्रमतैं चौरासीलाख पूर्व बहत्तरि लाख पूर्व साठि लाख पूर्व यातैं उपरि पांच तीर्थंकरनिका दश दश घाटि लाख पूर्व सो पचास चालीस तीस वीस दश लाख पूर्व बहुरि दोय लाख पूर्व एक लाख पूर्व बहुरि यातैं उपरि चौरासी लाख बहत्तर लाख साठि लाख ॥ ८०५॥

**तीसदसएक्कलक्खा पणणवदीचदुरसीदिपणवण्णं ।**
**तीसं दसिगिसहस्सं सय वावत्तरिसमा कमसो ॥ ८०६ ॥**

त्रिंशद्दशैकलक्षाणि पंचनवतिचतुरशीतिपंचपंचाशत् ।
त्रिंशत् दशैकसहस्रं शतं द्वासप्ततिसमाः क्रमशः ॥ ८०६ ॥

**अर्थ**—तीस लाख दस लाख एक लाख तातैं उपरि पिच्याणवै हजार चौरासी हजार पचावन हजार तीस हजार दस हजार एक हजार बहुरि एक सौ अर बहत्तरि इतनें वर्ष प्रमाण वृषभादि तीर्थंकरनिका क्रमकरि आयु है ॥ ८०६ ॥

अब तीर्थंकरनिका अंतराल गाथा सातकरि कहैं हैं;—

**उवहीण पण्णकोडी सतिवासडमासपक्खया पढमं ।**
**अंतरमेत्तो तीसं दस णव कोडी य लक्खगुणा ॥ ८०७ ॥**

उदधीनां पंचाशत्कोटिः सत्रिवर्षाष्टमासपक्षकः प्रथमं ।
अंतरमितः त्रिंशत् दश नव कोटिश्च लक्षगुणाः ॥ ८०७ ॥

**अर्थ**—पूर्व तीर्थंकर पीछैं पिछला तीर्थंकर जेते काल पीछैं होइ ताका नाम अंतरकाल है । सो पहला अंतर पचास कोड़िसागर तीन वर्ष आठ महिना एक पक्ष प्रमाण है । इतनें काल भएं वृषभ देव पीछैं अजित नाथ भए ऐसैं ही यातैं उपरि क्रमतैं तीस लाख कोडि सागर दश लाख कोड़ि सागर नव लाख कोड़ि सागर अंतर जाननां ॥ ८०७ ॥

**दसदसभजिदा पंचसु तो कोडी सायराण सदहीणा ।**
**छव्वीससहस्ससमा छावट्ठीलक्खएणावि॥ ८०८ ॥**

दश दश भक्तानि पंचसु ततः कोटिः सागराणां शतहीना ।
षड्विंशसहस्रसमा षट्षष्टिलक्षकेनापि ॥ ८०८ ॥

**अर्थ**—तातैं उपरि पांचवां अंतरकौं आदि देकरि पंच अंतरनि विषै नव लाख कोड़ि सागर दश दश करि भाजित तिनका निवै हजार कोड़ि नव हजार कोड़ि नव हजार कोड़ि नवसै कोड़ि निवै कोड़ि नव कोडि सागर प्रमाण जानना । तातैं उपरि दशवां अंतर एकसौ सागर अर छयासठि लाख छबीसहजार वर्षकरि हीन एक कोड़ि सागर प्रमाण जाननां ॥ ८०८ ॥

**चउवण्णतीसणवचउजलहितियं पल्लतिण्णिपादूणं ।**
**पल्लस्स दलं पादो सहस्सकोडीसमाहीणो ॥ ८०९ ॥**

चतुःपंचाशत् त्रिंशन्नवचतुर्जलधित्रयं पल्यत्रयपादोनं ।
पल्यस्य दलं पादः सहस्रकोटिसमाहीनः ॥ ८०९ ॥

अर्थ—तातैं उपरि ग्यारह्वां अंतर आदिक चौवन सागर तीस सागर नव सागर च्यारि सागर प्रमाण है। बहुरि पंद्रह्वां अंतर पौंण पल्य घाटि तीन सागर प्रमाण है। सोल्हां आधपल्य है। सत्तरह्वां हजार कोडि वर्ष घाटि चौथाई पल्य प्रमाण अंतर है॥ ८०९॥

**वस्सा कोडिसहस्सा चउवण्णछपंचलक्खवस्साणि ।**
**तेसीदिसहस्समदो सगसयपण्णाससंजुत्तं ॥ ८१० ॥**

वर्षाणि कोटिसहस्राणि चतुष्पंचाशत् षट् पंचलक्षवर्षाणि ।
त्र्यशीतिसहस्रमतःसप्तशतपंचाशत्संयुक्तं ॥ ८१० ॥

अर्थ—तातैं उपरि अठारह्वां आदि अंतर हजार कोडि वर्ष चौवन लाख वर्ष छह लाख वर्ष पांच लाख वर्ष तियासी हजार सातसै पचास वर्ष प्रमाण है॥ ८१०॥

**सदलविसदं समातिय पक्खडमासूणमंतिमं तंतु ।**
**मोक्खंतरं सगाउगहीणं तमिणं जिणंतरयं ॥ ८११ ॥**

सदलद्विशतं समात्रयं पक्षाष्टमासोनमंतिमं तत्तु ।
मोक्षांतरं स्वकायुष्कहीनं तदिदं जिनांतरं ॥ ८११ ॥

अर्थ—बहुरि अंतका तेइसवां अंतर तीन वर्ष आठ मास एक पक्ष हीन दोयसै पचास वर्ष ताका दोयसै छियालीस वर्ष तीन मास एक पक्ष प्रमाण है। ऐसैं यह चौवीस तीर्थंकरनिकै बीचि तेईस अंतराल कहे ते ए सर्व मोक्षतैं मोक्षांतर जाननां। वृषभ देवके मोक्ष जानां अर अजितदेवके मोक्ष जानां इन दोऊनकै बीचि जितनां काल भया सो प्रथम अंतर जाननां। ऐसैं ही अन्य मोक्षतैं मोक्षांतर जाननैं। बहुरि यह ही अंतर अपनां अपनां आयु करि हीन किएं जिनतैं जिनका अंतर जाननां। प्रथम अंतरका प्रमाण विषै अजित देवका आयुका प्रमाण घटाएं प्रथम तीर्थंकरका मुक्ति जाननां अर द्वितीय तीर्थंकरका जनम होनां तिनकै बीचि कालका प्रमाण होइ। ऐसैं ही अन्य जिनतैं जिनांतर जाननैं॥ ८११॥

**वीरजिणतित्थकालो इगिवीससहस्सवास दुस्समगो ।**
**इह सो तेत्तियमेत्तो अइदुस्समगोवि मिलिदव्वो ॥ ८१२ ॥**

वीरजिनतीर्थकालः एकविंशतिसहस्रवर्षाणि दुःषमः ।
इह स तावन्मात्रः अतिदुःषमकोपि मेलयितव्यः ॥ ८१२ ॥

अर्थ—दुःखम नामा काल वीर तीर्थंकरका तीर्थकाल है। सो इकईस हजार वर्ष प्रमाण है। बहुरि इहां अति दुःखम काल सो प्रसिद्ध रूप तितनाहीं इकईस हजार वर्ष मात्र है। सोभी मिलावना॥ ८१२॥

**तदिय तुरिए काले तिवासअडमासपक्खपरिसेसे ।**
**वसहो वीरो सिद्धो पुव्वे तित्थेयराउस्सं ॥ ८१३ ॥**

तृतीय तुर्ये काले त्रिवर्षअष्टमासपक्षपरिशेषे ।
वृषभो वीरः सिद्धः पूर्वे तीर्थकरायुष्यं ॥ ८१३ ॥

**अर्थ—**तीसरा कालका तीन वर्ष आठ महीनां एक पक्ष अवशेष रहें वृषभ देव सिद्ध भए। बहुरि चौथा कालका सोई तीन वर्ष आठ मास एक पक्ष अवशेष रहें वीर जिन सिद्धभए बहुरि पहला पहला तीर्थंकरका अंतर विषै उत्तर उत्तर तीर्थंकरका आयु प्रमाण तिष्टै है ऐसा जाननां। पहला अंतर वृषभ देवका तीर्थकाल है। तामैं उत्तर अजित जिनका आयु प्रमाणका संयुक्तपना जाननां। ऐसैं ही अन्य जाननां। वीर जिन मुक्ति होनैंका कालतैं चतुर्थ कालका अवशेष तीन वर्ष आठ मास एक पक्ष सो पार्श्व तिनका अंतर विषै मिलाएं अढ़ाईसै वर्ष होइ अर और सर्व अंतर मिलाएं संतै एक कोड़ा कोड़ि सागर प्रमाण हो है ॥ ८१३ ॥

अब जिनधर्म उछेद होनेका काल कहैं हैं;—

**पल्लतुरियादि चय पल्लंतचउत्थूण पाद परकालं।**
**ण हि सद्धम्मो सुविहीदु संतिअंते सगंतरए ॥ ८१४ ॥**

पल्यतुर्यादिः चयः पल्यमंतं चतुर्थोनं पादपरकालं।
न हि सद्धर्मः सुविधितः शांत्यंते सतांतरे ॥ ८१४ ॥

**अर्थ—**पल्यका चौथा भाग आदि अर तितनांही चय प्रतिस्थान बधनेंका प्रमाण अर अंत विषै एक पल्य तातैं परैं चौथाई चौथाई पल्य घाटि यावत चौथाई पल्य अंतविषै होइ इन प्रमाण कालनिविषै सुबुधि जो पुष्पदंत तातैं लगाय शांतिनाथपर्यंत सात अंतरनिविषै वक्ता श्रोता आचरन-करनेंवालेनिकै अभावतैं समीचीन जैनधर्म्म नास्तिरूप हो है। **भावार्थ—**नवमां पुष्पदंत शीतलका अंतरविषै पाव पल्य शीतल श्रेयोका अंतरविषै आध पल्य श्रेयो वासपूज्यका अंतरविषै पौंण पल्य वासुपूज्य विमलका अंतरविषै एक पल्य विमल अनंतका अंतरविषै पौण पल्य अनंत धर्मका अंतर-विषै आधिपल्य धर्म्मशांतिका अंतरविषै पाव पल्यप्रमाण कालविषै जिनधर्म्मका अभाव चतुर्थकालमैं भया है ॥ ८१४ ॥

**चक्की भरहो सगरो मघव सणक्कुमार संतिकुंथुजिणा।**
**अरजिण सुभोममहपउमा हरिसेणजयब्रह्मदत्तक्खा ॥ ८१५ ॥**

चक्रिणः भरतः सगरः मघवा सनत्कुमारः शांतिकुंथुजिनौ।
अरजिनः सुभौममहापद्मौ हरिषेणजयब्रह्मदत्ताख्याः ॥ ८१५ ॥

**अर्थ—**भरत १ सगर १ मघवान् १ सनत्कुमार १ शांति जिन १ कुंथुजिन १ अर जिन १ सुभौम १ महापद्म १ हरिषेण १ जय १ ब्रह्मदत्त १ ए बारह चक्रवर्ती हैं ॥ ८१५ ॥

इनका वर्तनाकालकौं गाथा दोय करि कहै हैं;—

**भरहदु वसहदुकाले मघवदु धम्मदुगअंतरे जादा।**
**तिजिणा सुभोमचक्की अरमल्लीणंतरे होदि ॥ ८१६ ॥**

भरतद्वयं वृषभद्वयकाले मघवद्वौ धर्मद्वयांतरे जातौ।
त्रिजिनाः सुभौमचक्री अरमल्ल्योरंतरे भवति ॥ ८१६ ॥

अर्थ—भरत सगर ए दोय तौ क्रमतैं वृषभ अर अजित जिनके कालविषै भए। बहुरि मघवान् अर सनत्कुमार ए दोय धर्म्म शांति जिनकै बीचि अंतर कालविषै भए। बहुरि शांति कुंथु अर ए तीन आप ही तीर्थंकर भी भए तातैं जिनांतर कहना न आवै। बहुरि सुभौमचक्री अर मल्लि जिनकै बीचि अंतर कालविषै भए ॥ ८१६ ॥

मल्लिदुमज्झे णवमो मुणिसुव्वयणमिजिणंतरे दसमो।
णमिदुविरहे जयक्खो बह्मो णेमिदुगअंतरगो ॥ ८१७ ॥

मल्लिद्वयमध्ये नवमो मुनिसुव्रतनमिजिनांतरे दशमः।
नमिद्विविरहे जयाख्यो ब्रह्मो नेमिद्वयांतरगः ॥ ८१७ ॥

अर्थ—मल्लि मुनिसुव्रतके मध्य अंतरविषै नवमां महापद्मचक्री भया। बहुरि मुनिसुव्रत नमि जिनका अंतरविषै दशवां हरिषेण चक्री भया। बहुरि नमि नेमि जिनका अंतरविषै जयनामा चक्री भया नेमि पार्श्वका अंतरविषै ब्रह्मदत्त चक्री भया है ॥ ८१७ ॥

आगैं चक्रवर्तिनिका शरीरका वर्ण उचाई तिनका आयु गाथा तीन करि कहैं हैं;—

सव्वे सुवण्णवण्णा तद्देहुदआ धणूण पंचसयं।
पण्णासूणं सदलं वादालिगिदालयं तालं ॥ ८१८ ॥

सर्वे सुवर्णवर्णा तद्देहोदयो धनुषां पंचशतं।
पंचाशदूनं सदलं द्वाचत्वारिंशदेकचत्वारिंशत् चत्वारिंशत् ॥ ८१८ ॥

अर्थ—सर्व्व ही चक्रवर्ती सुवर्ण समान वर्ण संयुक्त हैं। बहुरि तिन भरतादि चक्रीनिके शरीरकी उचाई क्रमकरि पांचसै अर पचास घटी ताका साढा च्यारिसै अर आधा सहित बियालीस अर आधा सहित इकतालीस अर चालीस अर ॥ ८१८ ॥

पणतीस तीस अडदुवीसं पण्णरसगाउ चुलसीदि।
बावत्तरिपुव्वाणं पणतिगिवासाणमिह लक्खा ॥ ८१९ ॥

पंचत्रिंशत् त्रिंशदष्ट द्विःखत्रिंशतिः पंचदशकमायुः चतुरशीतिः।
द्वासप्ततिपूर्वाणां पंचत्रिकैकवर्षाणामिह लक्षाणि ॥ ८१९ ॥

अर्थ—पैंतीस अर तीस अर अठाईस अर बाईस अर बीस अर पंद्रह अर सात धनुषप्रमाण है। यातैं परैं तिनका आयु क्रमतैं कहिए है। चौरासी लाख पूर्व अर बहत्तिर लाख पूर्व अर पांच लाख अर तीन लाख अर एक लाख वर्ष प्रमाण। बहुरि ॥ ८१९ ॥

संवच्छरा सहस्सा पणणउदी चउरसीदि सट्ठी य।
तीसं दसयं तिदयं सत्तसया बम्हदत्तस्स ॥ ८२० ॥

संवत्सराः सहस्राः पंचनवतिः चतुरशीतिः षष्टिश्च।
त्रिंशत् दशकं त्रितयं सप्तशतानि ब्रह्मदत्तस्य ॥ ८२० ॥

अर्थ—पिच्याणवै हजार अर चौरासी हजार अर साठि हजार अर तीस हजार अर दश हजार हजार अर तीन हजार वर्ष अर ब्रह्मदत्तका सातसै वर्ष प्रमाण आयु है ॥ ८२० ॥

आगैं तिन चक्रवर्तीनिकै नवनिधि हो हैं तिनके नाम कहैं;—

**कालमहकालमाणवपिंगलणेसप्पपउमपांडु तदो ।**
**संखो णाणारयणं णवणिहिओ देंति फलभेदं ॥ ८२१ ॥**

कालमहाकालमाणवकपिंगलनैसर्पपद्मपांडुस्ततः ।
शंखः नानारत्नः नवनिधयः ददति फलमेतत् ॥ ८२१ ॥

**अर्थ**—काल १ महाकाल १ माणवक १ पिंगल १ नैसर्प्प १५ पद्म १ पांडु १ शंख नाना रत्न १ ए नव निधि हैं। ते ए आगैं कहिए है फल ताकौं देवै हैं ॥ ८२१ ॥

आगैं नवनिधिनिकरि दिया हुवा फलकौं कहै हैं;—

**उडु जोग्गकुसुमदामप्पहुदिं भाजणयमाउहाभरणं ।**
**गेहं वत्थं धण्णं तूरं वहुरयणमणुकमसो ॥ ८२२ ॥**

ऋतुयोग्यकुसुमदामप्रभृति भाजनायुधाभरणं ।
गेहं वस्त्रं धान्यं तूर्यं वहुरत्नमनुक्रमशः ॥ ८२२ ॥

**अर्थ**—ते कालादिक निधि अनुक्रमतैं ऋतु योग्य पुष्पमाल आदि वस्तुकों वहुरि भाजनकौं वहुरि आयुधकौं वहुरि आभरणकों वहुरि मंदिरकों वहुरि वस्त्रकों वहुरि धान्यकौं वहुरि वाजित्रकौं वहुरि वहुत प्रकार रत्नकौं देवैं हैं। **भावार्थ**—निधि आठ पह्या सहित गाडाकै आकारि हैं इनमैंसौं ए वस्तु निकासिए हैं ॥ ८२२ ॥

आगैं तिनके चौदह रत्ननिका संज्ञा पूर्वक उपजनेका स्थान कहै हैं;—

**सेणगिहथवदि पुरहो गयहयजुवई हवंति वेयड्ढे ।**
**सिरिगेहे कागिणिमणिचम्माउहगेसिदंडछत्तमरो ॥ ८२३ ॥**

सेनागृहस्थपतिः पुरोधा गजो हयो युवतिः भवंति विजयार्धे ।
श्रीगेहे काकिणीमणिचर्मायुधके असिदंडछत्रमरः ॥ ८२३ ॥

**अर्थ**—सेनापति सेनाका नायक अर ग्रहपति भंडारी अर स्थपति कारीगर अर पुरोधाः पुरोहित अर गज हाथी अर हय घोड़ो अर युवति स्त्री ए रत्न विजयार्ध पर्वत विषै उपजै हैं। वहुरि वृषभाचलनि विपै नाम लिखनें आदिकों कारण काकिणी रत्न अर गुफा विषै उज्जास आदिकों कारण चूड़ामणि रत्न अर सेनाकौं म्लेछराज कृत जलवाधानिवारण आदिकों कारण चर्म्म रत्न ए तीन श्रीदेवीका मंदिरविपै उपजै हैं। वहुरि असि खड्ग अर दंड गुफा द्वार उद्घाटन आदिकों कारण अर छत्र उपरिम वाधा निवारण आदिकौं कारण अर चक्र रत्न वैरीनिका अभावकों कारण ए च्यारि रत्न आयुधशालाविषै उपजै हैं ॥ ८२३ ॥

आगैं तिनकै गतिविशेप कहै हैं;—

**मघवं सणक्कुमारो सणक्कुमारं सुभोम वम्हा य ।**
**सत्तमपुढविं पत्ता मोक्खं सेसट्ठचक्कहरा ॥ ८२४ ॥**

मघवान् सनत्कुमारः सनत्कुमारं सुभौमो ब्रह्मश्च ।

सप्तमपृथिवीं प्राप्तौ मोक्षं शेषाष्टचक्रधराः ॥ ८२४ ॥

**अर्थ**—मघवान् सनतकुमार ए दोय तौ सनतकुमार नामा स्वर्गकों प्राप्त भए। बहुरि सुभौम ब्रह्मदत्त ए दोय सातवीं नरक पृथ्वीकौं प्राप्त भए। बहुरि अवशेष आठ चक्री मोक्ष पदकों प्राप्त भए ॥ ८२४ ॥

अब अर्द्ध चक्री नारायण तिनके नाम कहैं हैं;—

**तिविट्ठदुविट्ठसयंभू पुरिसुत्तमपुरिससिंहपुरिसादी ।**

**पुंडरियदत्त णारायण किण्हो अद्धचक्कहरा ॥ ८२५ ॥**

त्रिपृष्टद्विपृष्टस्वयंभूः पुरुषोत्तमः पुरुषसिंहः पुरुषादिः ।

पुंडरीकदत्तः नारायणः कृष्णः अर्धचक्रधराः ॥ ८२५ ॥

**अर्थ**—त्रिपृष्ट १ द्विपृष्ट १ स्वयंभू १ पुरुषोत्तम १ पुरुषसिंह १ पुरुष पुंडरीक १ पुरुष दत्त १ नारायण (लिछमन) १ कृष्ण १ ए नव अर्द्ध चक्री हैं। इहां प्रसंग पाइ वलभद्र नारायणनिके आयुध रत्न कहिए हैं। असि १ शंख १ धनुष १ चक्र १ मणि १ शक्ति १ गदा १ ए सात नारायणके आयुध रत्न हैं। बहुरि रत्ननिकी माला १ हल १ मुसील १ गदा १ ए च्यारि वलभद्रके आयुध रत्न हैं ॥ ८२५ ॥

आगैं तिन नारायणनिका वर्त्तनाकाल कहैं है। जो नारायणनिका वर्त्तनाकाल सोई वलभद्र वा प्रतिनारायणका वर्त्तना काल क्रमतैं जाननां;—

**सेयादिपणसु हरिपण छट्टरदुगविरह मल्लिदुगमज्झे ।**

**दत्तो अट्ठम सुव्वयदुगविरहे णेमिकालजो किण्हो ॥ ८२६ ॥**

श्रेयोआदिपंचसु हरिपंच षष्टः अरद्विकविरहे मल्लिद्विकमध्ये ।

दत्तः अष्टमः सुव्रतद्वयविरहे नेमिकालजः कृष्णः ॥ ८२६ ॥

**अर्थ**—श्रेयो जिन आदि पांच तीर्थंकरनिविषै क्रमतैं त्रिपृष्ट आदि पांच नारायण भए हैं। बहुरि छठा पुरुष पुंडरीक नारायण अरहमल्ल तीर्थंकरनिका अंतरविषै भया है। बहुरि पुरुषदत्त है सो मल्लि मुनिसुव्रतकै मध्य अंतरविषै भया है। बहुरि आठवें नारायण मुनिसुव्रत नमि जिनका विरहकाल जे अंतर तीहविषै भया है। बहुरि कृष्ण है सो नेमीश्वर जिनका कालविषै उपज्या है ॥८२६॥

आगैं वलभद्र प्रतिनारायणनिका नाम गाथा दोय करि कहैं हैं;—

**वलदेवा विजयाचलसुधम्मसुप्पहसुदंसणा णंदी ।**

**तो णंदिमित्त रामा पउमा उवरिं तु पडिसत्तू ॥ ८२७ ॥**

वलदेवाः विजयाचलसुधर्मसुप्रभसुदर्शना नंदी ।

ततो नंदिमित्रः रामः पद्मः उपरि तु प्रतिशत्रवः ॥ ८२७ ॥

**अर्थ**—विजय १ अचल १ सुधर्म्म १ सुप्रभ १ सुदर्शन १ नंदी १ नंदिमित्र १ राम १ पद्म १ औसैं ए नव वलदेव हैं ॥ ८२७ ॥

बहुरि यातैं उपरि तिन नारायण बलिभद्रनिके प्रतिशत्रु जे प्रति नारायण ते कहिए हैं;—

**अस्सग्गीओ तारय मेरयय णिसुंभ कइडहंत महू ।**
**वलि पहरण रावणया खचरा भूचर जरासंधो ॥ ८२८ ॥**

अश्वग्रीवः तारकः मेरकश्च निशुंभः कैटभांतो मधुः ।
बलिः प्रहरणः रावणः खचराः भूचरो जरासंधः ॥ ८२८ ॥

**अर्थ**—अश्वग्रीव १ तारक १ मेरक १ निशुंभ १ मधुकैटभ १ वलि १ प्रहरण १ रावण १ ए आठ तौ विद्याधर हैं। अर जरासिंध भूमि गोचरी है। ऐसैं ए नव प्रतिनारायण हैं ॥८२८॥

आगैं बलदेव आदि तीनोंका उत्सेध समान है सो कहैं हैं;—

**देहुदओ चापाणं सीदी तिसु दसयहीण पणदालं ।**
**णवदुगवीसं सोलं दस वलकेसव ससत्तूणं ॥ ८२९ ॥**

देहोदयः चापानां अशीतिः त्रिषु दशहीनं पंचचत्वारिंशत् ।
नवद्विकविंशतिः षोडश दश वलकेशवानां सशत्रूणां ॥ ८२९ ॥

**अर्थ**—शत्रु जो प्रतिनारायण तिन सहित बलिभद्र अर नारायण तिनका समान शरीरका उच्चत्व प्रथमादिकका क्रमतें असी धनुष वहुरि तीन विषैं दश दश घाटि ताके सत्तरि साठि पचास धनुष बहुरि पैंतालीस गुणतीस वाईस सोला दश धनुष प्रमाण है ॥ ८२९ ॥

आगैं नारायण वा प्रतिनारायणनिका समान आयु हैं ताकौं कहैं हैं;—

**सम चुलसीदि वहत्तरि सट्ठी तीस दस लक्ख पणसट्ठी ।**
**वत्तीसं वारेकं सहस्समाउस्मसद्धचक्कीणं ॥ ८३० ॥**

समा चतुरशीतिः द्वासप्ततिः षष्टिः त्रिंशत् दश लक्षाणि पंचषष्टिः ।
द्वात्रिंशत् द्वादशैकं सहस्रं आयुष्यमर्धचक्रिणाम् ॥ ८३० ॥

**अर्थ**—अर्ध चक्री जे नारायण वा प्रतिनारायण तिन प्रथमादिकका आयु क्रमतैं चौरासी लाख वर्ष वहत्तर लाख वर्ष साठि लाख वर्ष तीस लाख वर्ष दश लाख वर्ष पैंसठि हजार वर्ष वत्तीस हजार वर्ष बारह हजार वर्ष एक हजार वर्ष प्रमाण है ॥ ८३० ॥

आगैं बलदेवनिका आयु कहैं हैं;—

**सगसीदि दुसु दसूणं सगतीसं सत्तरससमा लक्खा ।**
**सगसट्ठीतीस सत्तर सहस्स वारसयमाउ वले ॥ ८३१ ॥**

सप्ताशीतिः द्वयोः दशोनं सप्तत्रिंशत् सप्तदश समा लक्षाणि ।
सप्त सष्ठिः त्रिंशत् सप्तदश सहस्रं द्वादशशतमायुः वले॥ ८३१ ॥

**अर्थ**—बलदेवनिका आयु प्रथमादिकके क्रमतैं सित्यासी लाख वहुरि दोयविषै दश दश घाटि ताके सत्तहत्तरि लाख अर सतसठि लाख वहुरि सैंतीसलाख सतरह लाख सतसठि हजार सैंतीस हजार सतरह हजार बारहसै वर्ष प्रमाण है ॥ ८३१ ॥

आगैं नारायणादि तीन जिस गतिकों प्राप्त भए ताहि गाथा दोय करि कहैं हैं;—

पढमो सत्तमिमण्णे पण छट्ठी पंचमिं गदो दत्तो।
णारायणो चउत्थीं कसिणो तदियं गुरुयपावा ॥ ८३२ ॥

प्रथमः सप्तमीमन्ये पंच षष्ठीं पंचमीं गतो दत्तः।
नारायणः चतुर्थीं कृष्णः तृतीयां गुरूपापात् ॥ ८३२ ॥

अर्थ—पहला त्रिपृष्ट सातवीं नरक पृथ्वीकौं प्राप्त भया द्वितीयादि पांच नारायण छठी पृथ्वीकौं प्राप्त भए। पुरुषदत्त पांचवीं पृथ्वीकौं प्राप्त भया नारायण चौथी पृथ्वीकौं प्राप्त भया। कृष्ण तीसरी पृथ्वीकौं प्राप्त भए। ऐसें ए नारायण महत पापतैं नरक पृथ्वीकौं प्राप्त भए हैं ॥ ८३२ ॥

णिरयं गया पडिरिवो बलदेवा मोक्खमट्ठ चरिमो दु।
वह्मं कप्पं किण्हे तित्थयरे सोवि सिज्झेदि ॥ ८३३ ॥

निरयं गताः प्रतिरिपवो बलदेवा मोक्षं अष्ट चरमस्तु।
ब्रह्म कल्पं कृष्णे तीर्थंकरे सोपि सेत्स्यति ॥ ८३३ ॥

अर्थ—इनके प्रतिवैरी प्रतिनारायण तेऊ तिस नारायणकौं प्राप्त भई जो जो नरक पृथ्वताकौं प्राप्त भए हैं। बहुरि बलदेव आदिके आठ तौ मोक्ष पदकौं प्राप्त भए है। अंतका नौमा पद्म नामा बलिभद्र ब्रह्म स्वर्गकौं प्राप्त भया। सोभी कृष्ण नारायणका जीव तीर्थंकर होसी तिस समय सिद्ध पदकौं पासी ॥ ८३३ ॥

आगैं नारदनिके नामादिक गाथा दोय करि कहैं हैं;—

भीम महभीम रुद्दा महरुद्दो कालओ महाकालो।
तो दुम्मुह णिरयमुहा अहोमुहो णारदा एदे ॥ ८३४ ॥

भीमो महाभीमः रुद्रो महारुद्रो कालो महाकालः।
ततो दुर्मुखो निरयमुखः अधोमुखो नारदा एते ॥ ८३४ ॥

अर्थ—भीम १ महाभीम १ रुद्र १ महारुद्र १ काल १ महाकाल १ दुर्मुख १ नरक मुख १ अधोमुख १ ऐसैं ए नव नारद हैं ॥ ८३४ ॥

कलहप्पिया कदाइं धम्मरदा वासुदेवसमकाला।
भव्वा णिरयगदिं ते हिंसादोसेण गच्छंति ॥ ८३५ ॥

कलहप्रियाः कदाचिद्धर्मरताः वासुदेवसमकालाः।
भव्याः नरकगतिं ते हिंसादोषेण गच्छंति ॥ ८३५ ॥

अर्थ—ए नारद कलह जिनकौं प्यारा ऐसे हैं। बहुरि कदाचित धर्म्मविषैं भी रत हैं। बहुरि नारायणादि होतैं ए हो हैं। तातैं नारायण समान है वर्तनाकाल जिनका ऐसे हैं। बहुरि भव्य हैं। परंपरा मुक्तिगामी हैं। बहुरि ते नारद हिंसादोष करि नरक गति ही कौं प्राप्त हो हैं ॥ ८३५ ॥

अब रुद्रनिकी संज्ञा पूर्वक संख्या कहैं हैं;—

भीमावलि जिदस रुद्द विसालणयण सुप्पदिट्ठचला ।
तो पुंडरीय अजिदंधर जिदणाभीय पीढ सच्चइजो ॥ ८३६ ॥

भीमावलिः जितशत्रुः रुद्रः विशालनयनः सुप्रतिष्ठोऽचलः ।
ततः पुंडरीकः अजितंधरो जितनाभिः पीठः सत्यकिजः ॥ ८३६ ॥

**अर्थ**—भीमावलि १ जितशत्रु १ रुद्र १ विशाल नयन १ सुप्रतिष्ट १ वल १ पुंडरीक १ अजितं धर १ जित नाभि १ पीठ १ सत्यक्यतनय ऐसैं ए ग्यारह रुद्र हैं ॥ ८३६ ॥

आगैं तिनका वर्त्तनाकाल कहैं हैं;—

उसहद्दुकाले पढमदु सत्तण्णे सत्तसुविहिपहुदीसु ।
पीढो संतिजिणिंदे वीरे सच्चइसुदो जादो ॥ ८३७ ॥

वृषभाद्विकाले प्रथमद्वौ सप्तान्ये सप्तसुविधिप्रभृतिषु ।
पीठः शांतिजिनेंद्रे वीरे सत्यकिसुतो जातः ॥ ८३७ ॥

**अर्थ**—वृषभ अजित जिननिके कालनि विषै क्रमतैं पहला अर दूसरा रुद्र भया। बहुरि तातैं परैं अन्य तृतीयादि सात रुद्र ते पुष्पदंतादि सात तीर्थंकरनिका कालनिविषै क्रमतैं भए । बहुरि पीठ रुद्र शांति जिनेंद्रका काल विषै भया ॥ ८३७ ॥

आगैं तिनके शरीरका उत्सेध कहैं हैं;—

पण्णसय पण्णुणसयं पंचसु दसहीणमट्ठ चउवीसं ।
तक्कायधणुस्सेहो सच्चइतणयस्स सत्तकरा ॥ ८३८ ॥

पंचशतं पंचाशदूनशतं पंचसु दशहीनं अष्ट चतुर्विंशतिः
तत्कायधनुरुत्सेधः सत्यकितनयस्य सप्तकरः ॥ ८३८ ॥

**अर्थ**—तिन रुद्रनिके शरीरका उच्चत्व क्रमतैं पांचसै धनुप अर ते पचास घाटि ताके च्यारि सै पचास धनुष बहुरि सौ धनुष बहुरि पांच विषैं दश दश घाटि ताके निवै असी सत्तरि साठि पचास धनुष बहुरि अठाईस धनुष चौवीस धनुप, बहुरि सत्यकितनयका सात हाथ प्रमाण है ॥ ८३८ ॥

आगैं तिन रुद्रनिका आयु कहैं हैं;—

तेसीदिगिसत्तरि विगि लक्खापुव्वाणि वासलक्खाओ ।
चुलसीदि सट्ठि दसु दसहीणदलिगि वस्सणवसट्ठी ॥ ८३९ ॥

त्र्यशीतिरेकसप्ततिः द्व्येकं लक्षपूर्वाणि वर्षलक्षानि ।
चतुरशीतिः षष्ठिः द्वयोः दशहीनदलैकं वर्षनवषष्टिः ॥ ८३९ ॥

**अर्थ**—तिन रुद्रनिका आयु क्रमकरि तियासी लाख पूर्व इकहत्तरि लाख पूर्व, दोय लाख पूर्व, एक लाख पूर्व, चौरासी लाख, साठि लाख अर दोय विषै दश दश घाटि ताके पचास लाख चालीस लाख बहुरि ताके आधे बीस लाख बहुरि एक लाख बहुरि गुणहत्तरि वर्ष प्रमाण है ॥ ८३९ ॥

आगैं तिन रुद्रनि करि प्राप्त भई गतिकों कहै हैं;—

पढमदु माघविमण्णे पण मघविं अट्ठमो दु रिट्ठमहिं ।
दो अंजणं पवण्णा मेघं सच्चइतणु जादो ॥ ८४० ॥
प्रथमद्वौ माघवीमन्ये पंच मघवीमष्टमस्तु अरिष्टमहीं ।
द्वौ अंजनां प्रपन्नौ मेघां सत्यकितनुर्जातः ॥ ८४० ॥

अर्थ—तिन रुद्रनि विषै पहला दूसरा तौ माघवी नामा सप्तम नरक पृथ्वीकौं प्राप्त भय अन्य तृतीयादि पांच मघवी छठीं पृथ्वीकों प्राप्त भए। आठवां अरिष्टा पांचवीं पृथ्वीकौं प्राप्त भया। तातैं परैं नवमां दशवां ए दोय अंजना चौथी पृथ्वीकौं प्राप्त भए। सत्यकितनय मेघा तीसरी पृथ्वीकों प्राप्त भया है ॥ ८४० ॥

आगैं तिन रुद्रनिका विशेष स्वरूप कहैं हैं;—

विज्जाणुवादपढणे दिट्ठफला णट्ठसंजमा भव्वा ।
कदिचि भवे सिज्झंति हु गहिदुज्झियसम्ममाहिमादो ॥ ८४१ ॥
विद्यानुवादपठने दृष्टफला नष्टसंयमा भव्याः ।
कतिचिद्भवेषु सिध्यंति हि गृहीतोज्झितसम्यमहिम्नः ॥ ८४१ ॥

अर्थ—ते रुद्र विद्यानुवाद नामा पूर्वका पठन होतैं इह लोक संबंधी फलके भोक्ता भए। बहुरि नष्ट भया हैं अंगीकार किया हुवा संजम जिनका ऐसे हैं। बहुरि भव्य हैं ते ग्रहि करि छोड्या जो सम्यक्त्व ताके महात्म्यतै केते इक पर्याय भएं सिद्ध पद पावहिंगे ॥ ८४१ ॥

आगैं चक्री अर्द्ध चक्री रुद्र इनका वर्त्तना कालकौं बहुरि रचना विशेष करि युगपत पांच गाथानि करि कहैं हैं;—

जिणसमकोट्ठट्ठविदा समकाले सुण्णहेट्ठिमे रचिदा ।
उहयजिणंतरजादा सण्णेया चक्किहरिरुद्दा ॥ ८४२ ॥
जिनसमकोष्टस्थापिताः समकाले शून्याधस्तते रचिताः ।
उभयजिनांतरजाता संज्ञेया चक्रिहरिरुद्राः ॥ ८४२ ॥

अर्थ—जिनदेवनिका समान कोठानि विषै स्थापित किए चक्री अर्द्ध चक्री रुद्र ते तिनके समान काल विषै भए जाननें। बहुरि शून्यके नीचैं स्थापे ते दोय जिननिके अंतर विषै भए जाननें। भावार्थ—च्यारि पंक्ति करि एक एक पंक्ति विषै चौतीस चौतीस कोठे करिए। तहां प्रथम पंक्ति विषै आगैं जैसैं कहिए हैं तैसैं क्रमतैं; जिनका वा शून्यका स्थापन करनां सो जिस कोष्ट विषै जिन स्थापन किया ताकै नीचैं तीन पंक्ति कोठानि विषै जो चक्री अर्द्ध चक्री रुद्र स्थापन किए तेतौ चक्री आदि तिन जिननिके काल विषै भए जाननें। बहुरि जो नीचले कोठानि विषै शून्य स्थापन करी तो आदिका चक्री तहां अभाव जाननां बहुरि जिस ऊपरला कोठा विषै शून्य स्थापन किया ताकै नीचैं जो चक्री आदि स्थापे तो तिन पिछला आगिला दोय जिननिका बीचि अंतर काल विषै ते चक्री आदि भए जाननें। बहुरि जो शून्य स्थापन किया तौ जहां तिनका अभाव जाननां ॥ ८४२ ॥

आगैं तिन कोष्ठनिके स्थापनेका क्रम कैसे है सो कहैं हैं;—

**पण्णर जिण खदु तिजिणा सुण्णदु जिण गगणजुगल जिण खदुगं।**
**जिण खं जिण खं दुजिणा इदि चोत्तीसालया णेया ॥ ८४३ ॥**

पंचदश जिनाः खद्वयं त्रिजिनाः शून्यद्वयं जिनाः गगनयुगलं जिनः खद्वयं।
जिनः खंजिनः खं द्विजिनौ इति चतुस्त्रिंशदाल्या ज्ञेयाः ॥ ८४३ ॥

**अर्थ—**वृषभादि पंद्रह जिन तातैं आगैं दोय शून्य तातैं आगैं तीन जिन आगै शून्य दोय आगै जिन आगैं शून्य दोय आगैं जिन आगै शून्य आगैं जिन आगैं शून्य आगैं दोय जिन ऐसैं क्रम करि चौंतीस कोठे प्रथम पंक्ति विषै जाननां ॥ ८४३ ॥

ताके नीचे दूसरी पंक्ति विषै कहा सो कहैं हैं।

**चक्किदु तेरस सुण्णा छच्चक्की गयणतिदय चक्की खं।**
**चक्की णभदुग चक्की गयणं चक्कहर सुण्णदुगं ॥ ८४४ ॥**

चक्रिद्वौ त्रयोदश शून्यानि षट्चाक्रिणः गगनत्रितयं चक्री खं।
चक्री नभोद्विकं चक्री गगनं चक्रधरः शून्यद्वयं ॥ ८४४ ॥

**अर्थ—**चक्री दोय तातैं आगै तेरह शून्य तातैं आगैं छह चक्री आगैं शून्य तीन आगैं चक्री आगैं शून्य आगैं चक्री आगैं शून्य दोय आगैं चक्री आगैं शून्य आगैं चक्री आगैं शून्य दोय ऐसैं क्रम करि द्वितीय पंक्ति विषै कोष्ट जाननें ॥ ८४४ ॥

**दसगयणपंचकेसवछस्सुण्णा पउमणाभणभविण्हू।**
**गयणति केसव सुण्णदु मुरारि सुण्णत्तियं कमसो ॥ ८४५ ॥**

दशगगनं पंचकेशवाः षट्शून्यानि पद्मनाभनभोविष्णुः।
गगनत्रयं केशवः शून्यद्वयं मुरारिः शून्यत्रयं क्रमशः ॥ ८४५ ॥

**अर्थ—**तीसरी पंक्तिविषैं दशशून्य तातैं आगैं पांच नारायण आगैं छह शून्य आगैं एक नारायण आगैं शून्य आगैं नारायण आगैं शून्यतीन आगैं नारायण आगैं शून्यदोय आगैं नारायण आगैं शून्य तीन ऐसैं क्रमकरि कोष्ट स्थापन करनें ॥ ८४५ ॥

**रुद्ददुगं छस्सुण्णा सत्त हरा गयणजुगलमीसाणो।**
**पण्णर णभाणि तत्तो सच्चइतणओ महावीरे ॥ ८४६ ॥**

रुद्रद्विकं षट्शून्यानि सप्तहराः गगनयुगलमीशानः।
पंचदशनभांसि ततः सत्यकीतनयः महावीरे ॥ ८४६ ॥

**अर्थ—**चौथी पंक्तिविषै रुद्र दोय तातैं आगैं छह शून्य तातैं आगैं सात रुद्र आगैं शून्य दोय आगैं रुद्र आगैं पंद्रह शून्य आगैं सत्यकितनय नामा रुद्र श्री महावीर जिनका काल चौतीसवां कोठाविषै हैं। ऐसैं क्रम करि स्थापन करनें। आगैं च्यारि पंक्तिके कोष्ठनि करि वर्तना काल जाननां ॥ ८४६ ॥

आगैं तीर्थंकरनिके शरीरका वर्णादिक अर तिनका वंश गाथा तीन करि कहैं है;—

पउमप्पहवसुपुज्जा रत्ता धवला हु चंदपहसुविही।
णीला सुपासपासा णेमीमुणिसुव्वया किण्हा ॥ ८४७ ॥

पद्मप्रभवासुपूज्यौ रक्तौ धवलौ हि चंद्रप्रभसुविधी।
नीलौ सुपार्श्वपार्श्वौ नेमिमुनिसुव्रतौ कृष्णौ ॥ ८४७ ॥

अर्थ—पद्मप्रभ वासुपूज्य ए दोय रक्त वर्ण हैं। बहुरि चंद्रप्रभ पुष्पदंत ए दोय श्वेत वर्ण हैं। बहुरि सुपार्श्व पार्श्व ए दोय नील वर्ण हैं। बहुरि नेमि मुनिसुव्रत ए दोय कृष्ण वर्ण हैं ॥८४७॥

सेसा सोलस हेमा वसुपुज्जो मल्लिणेमिपासजिणा।
वीरो कुमारसवणा महवीरो णाहकुलतिलओ ॥ ८४८ ॥

शेषाः षोडश हेमा वासुपूज्यो मल्लिनेमिपार्श्वजिनाः।
वीरः कुमारश्रमणा महावीरो नाथकुलतिलकः ॥ ८४८ ॥

अर्थ—अवशेष सोलह तीर्थंकर सुवर्ण समान वर्ण धरै हैं। बहुरि वासुपूज्य मल्लि नेमि पार्श्व वर्द्धमान ए पांच तीर्थंकर कुमार श्रमण हैं। विना विवाह किएं दीक्षा ग्रहण किया हैं। अवशेष उगणीस तीर्थंकर विवाह राज भएं पीछें दीक्षा ग्रहण किया है। बहुरि महावीर तौ नाथ वंशके तिलक हैं ॥ ८४८ ॥

पासो दु उग्गवंसो हरिवंसो सुव्वओ विं णेमीसो।
धम्मजिणो कुंथु अरा कुरुजा इक्खाउया सेसा ॥ ८४९ ॥

पार्श्वस्तु उग्रवंशः हरिवंश सुव्रतोपि नेमीशः।
धर्मजिनः कुंथुः अरः कुरुजाः इक्ष्वाकवः शेषाः ॥ ८४९ ॥

अर्थ—बहुरि पार्श्वजिन उग्रवंशी हैं। मुनिसुव्रत नेमि हरिवंशी हैं। धर्म्म कुंथु अर जिन कुरुवंशविषै उपजे हैं। अवशेष सतरह तीर्थंकर इक्ष्वाकु वंशविषै उत्पन्न हैं ॥ ८४९ ॥

अब शक अर कल्कीकी उत्पत्ति कहैं हैं;—

पणछस्सयवस्सं पणमासजुदं गमिय वीरणिव्वुइदो।
सगराजो तो कक्की चदुणवतियमहियसगमासं ॥ ८५० ॥

पंचषट्शतवर्षं पंचमासयुतं गत्वा वीरनिर्वृतेः।
शकराजो ततः कल्की चतुर्णवत्रिकमधिकसप्तमासं ॥ ८५० ॥

अर्थ—श्री वीरनाथ चौवीसवां तीर्थंकरकों मोक्ष प्राप्त होनेतैं पीछैं छसै पांच बरष पांच मास सहित गएं विक्रम नाम शक राजा हो है। बहुरि तातैं उपरि च्यारि नव तीन इन अंकनि करि तीनसै चौराणवै वर्ष अर सात मास अधिक गएं कल्की हो है ॥ ८५० ॥

अब कल्कीका कार्य गाथा छह करि कहैं हैं;—

सो उम्मग्गाहिमुहो चउम्मुहो सदरिवासपरमाऊ।
चालीस रज्जओ जिदभूमी पुच्छइ समंतिगणं ॥ ८५१ ॥

स उन्मार्गाभिमुखः चतुर्मुखः सप्ततिवर्षपरमायुष्यः ।
चत्वारिंशत् राज्यः जितभूमिः पृच्छति स्वमंत्रिगणं ॥ ८५१ ॥

अर्थ—सो कल्की उन्मार्ग जो विपरीत आचरण तीह विषै सन्मुख है। बहुरि चतुर्मुख जाका नाम है। बहुरि सत्तरि वर्ष प्रमाण जाका परम आयु है। तीह विषै चालीस वर्ष प्रमाण राज्य करै है। बहुरि सो कल्की जीता है पृथ्वी जानैं ऐसा होत संता अपनें मंत्रीके समूहकों ऐसैं पूछे है ॥ ८५१ ॥

अम्हाणं के अवसा णिग्गंथा अत्थि केरिसायारा ।
णिद्धणवत्था भिक्खाभोजी जहसत्थमिदिवयणे ॥ ८५२ ॥

अस्माकं के अवशा निर्ग्रंथाः संति कीदृशाकाराः ।
निर्धनवस्त्रा भिक्षाभोजिनः यथाशास्त्रमिति वचने ॥ ८५२ ॥

अर्थ—हमारे वश नाहीं ऐसा कौन है? तब मंत्री कहै हैं। निर्ग्रंथ जैन गुरु अवश हैं। तब बहुरि कल्की पूछै है। ते कैसे आकारि हैं? तब मंत्री कहै है धन वस्त्र रहित हैं। शास्त्र अनुसारि भिक्षा वृत्ति करि भोजन करै हैं। ऐसा मंत्रीका प्रतिवचन सुणि ॥ ८५२ ॥

कहा सो कहै हैं;—

तप्पाणिउडे णिवडिद पढमं पिंडं तु सुक्कमिदि गेज्झं ।
इदि णियमे सचिवकदे चत्ताहारा गया मुणिणो ॥ ८५३ ॥

तत्पाणिपुटे निपतितं प्रथमं पिंडं तु शुल्कमिति ग्राह्यं ।
इति नियमे सचिवकृते त्यक्ताहारा गताः मुनयः ॥ ८५३ ॥

अर्थ—तिन निरग्रंथनिका पाणिपात्र विषै स्थापित किया पहला पिंड ग्रास सो शुल्क है हांसिल है। ऐसैं करि सो प्रथम पिंड ग्रहण करनां ऐसैं राजाकै मंत्रिनि सहित नियम किएं संतें आहार समय तैसैं हीं करनें करि छोड्या है आहार जिनिनैं ऐसैं होते संते मुनि वनादि विषै गए हैं ॥ ८५३ ॥

तं सोढुमक्खमो तं णिहणदि वज्जाउहेण असुरवई ।
सो भुंजदि रयणपहे दुक्खग्गाहेक्कजलरासिं ॥ ८५४ ॥

तं सोढुमक्षमः तं निहंति वज्रायुधेन असुरपतिः ।
स भुंक्ते रत्नप्रभायां दुःखग्राहैकजलराशिं ॥ ८५४ ॥

अर्थ—तिस अपराध सहनेंकों समर्थ न भया ऐसा असुर कुमारनिका स्वामी चमर नामा इन्द्र सो वज्र आयुध करि तिस कल्की राजाकौं हनै है। सो कल्की मरि रत्नप्रभा नाम नरक भूमि विषै दुःख करि ग्रहण रूप एक सागर प्रमाण आयुकौं भोगवै है ॥ ८५४ ॥

तब्भयदो तस्स सुदो अजिदंजयसण्णिदो सुरारिं तं ।
सरणं गच्छइ चेलयसण्णाए सह समहिलाए ॥ ८५५ ॥

तद्भयतः तस्य सुतः अजितंजयसंज्ञितः सुरारिं तं ।

शरणं गच्छति चेलकासंज्ञया सह स्वमहिलया ॥ ८५५ ॥

**अर्थ**—तीह असुरपतिके भयतैं तिस कल्की राजाका अजितंजय नामा पुत्र सो चेलका नामा अपनी स्त्री सहित तिस अपनें पिताका वैरी चमर देवेन्द्रनकै शरण प्राप्त हो है ॥ ८५५ ॥

**सम्मदंसणरयणं हिययाभरणं च कुणदि सो सिग्घं ।**

**पच्चक्खं दट्ठूणिह सुरकयजिणधम्ममाहप्पं ॥ ८५६ ॥**

सम्यग्दर्शनरत्नं हृदयाभरणं च करोति स शीघ्रं ।

प्रत्यक्षं दृष्ट्वा इह सुरकृतजिनधर्ममाहात्म्यं ॥ ८५६ ॥

**अर्थ**—बहुरि सो अजितंजय प्रत्यक्ष जिनधर्मका माहात्म्यकों देखि शीघ्र ही जैनश्रद्धानरूप सम्यग्दर्शनकौं अपनें हृदयका आभरण करै है ॥ ८५६ ॥

आगैं अंतके कल्कीका स्वरूप गाथा पांच करि कहैं हैं;—

**इदि पडिसहस्सवस्सं वीसे कक्कीणदिक्कमे चरिमो ।**

**जलमंथणो भविस्सदि कक्की सम्मग्गमत्थणओ ॥ ८५७ ॥**

इति प्रतिसहस्रवर्षं विंशतौ कल्कीनामतिक्रमे चरमः ।

जलमंथनो भविष्यति कल्की सन्मार्गमंथनः ॥ ८५७ ॥

**अर्थ**—ऐसैं हजार हजार वर्ष प्रति एक एक कल्की होइ । कल्कीनिकै वीचि वीचि एक एक उपकल्की होइ इतनां विशेष अन्य ग्रंथतैं जाननां सो वीस कल्की अतिक्रम भएं अंतका इकईसवां जलमंथन नामा कल्की भले मार्गका मथनेंवाला विनासनेंवाला होसी ॥ ८५७ ॥

**इह इंदरायसिस्सो वीरंगद साहु चरिम सव्वासिरी ।**

**अज्जा अग्गिल सावय वरसाविय पंगुसेणावि ॥ ८५८ ॥**

इह इंद्रराजशिष्यो वीरांगदः साधुश्चरमः सर्वश्री. ।

आर्या अग्गिलः श्रावकः वरश्राविका पंगुसेनापि ॥ ८५८ ॥

**अर्थ**—तींह कालविषै इन्द्रराजा नामा आचार्यका शिष्य वीरांगद नामा अंतका साधु होसी। बहुरि सर्वश्री नामा अर्जिका होसी। बहुरि अग्गिल नामा श्रावक होसी। बहुरि पंगुसेना नामा उत्कृष्ट श्राविका होसी ॥ ८५८ ॥

**पंचमचरिमे पक्खडमासतिवासावसेसए तेण ।**

**मुणिपढमपिंडगहणे सण्णसणं करिय दिवसतियं ॥ ८५९ ॥**

पंचमचरमे पक्षाष्टमासत्रिवर्षे अवशेषे तेन ।

मुनिप्रथमपिंडग्रहणे संन्यसनं कृत्वा दिवसत्रयं ॥ ८५९ ॥

**अर्थ**—ते मुनि आदि च्यारयों पंचमाकालकै अंति एक पक्ष आठ मास तीनं वर्ष अवशेष रहें तीह कल्की राजाकरि पूर्वोक्त प्रकार मुनिका पहला ग्रास ग्रहण करत संतैं तीन दिन पर्यंत संन्यास मरण करि ॥ ८५९ ॥

कहा सो कहैं हैं;—

**सोहम्मे जायंते कत्तियअमवास सादि पुव्वण्हे ।**
**इगिजलहिठिदी मुणिणो सेसतिए साहियं पल्लं ॥ ८६० ॥**

सौधर्मे जायंते कार्तिकामावस्यायां स्वातौ पूर्वाह्णे ।
एकजलधिस्थितयो मुनयः शेषत्रयः साधिकं पल्यं ॥ ८६० ॥

अर्थ—तहां मुनि तौ कार्तिक मास अमावास्या तिथि स्वाति नक्षत्र पूर्वाह्ण समयविषै मरिकरि एक सागर आयुके धारी सौधर्म स्वर्गविषै उपजैं हैं। बहुरि अवशेष अर्जिका श्रावक श्राविका ए तीन तहां ही सौधर्म स्वर्गविषै साधिक पल्य आयुके धारी उपजै हैं ॥ ८६० ॥

**तव्वासरस्स आदीमज्झंते धम्मरायअग्गीणं ।**
**णासो तत्तो मणुसा णग्गा मच्छादिआहारा ॥ ८६१ ॥**

तद्वासरस्य आदिमध्यांते धर्मराजाग्नीनां ।
नाशः ततो मनुष्या नग्ना मत्स्याद्याहाराः ॥ ८६१ ॥

अर्थ—तीह दिनका आदि मध्य अंतविषै क्रमतैं धर्मका अर राजाका अर अग्निका नाश हो है। तातैं परैं मनुक्ष हैं सो नग्न वस्त्रादि रहित अर मछली आदिका है आहार जिनकै ऐसे होंगे ॥ ८६१ ॥

आगैं धर्मादिकका नाशका कारण कहैं हैं;—

**पोग्गलअइरुक्खादो जलणे धम्मे णिरासएण हदे ।**
**असुरवइणा णरिंदे सयलो लोओ हवे अंधो ॥ ८६२ ॥**

पुद्गलातिरौक्ष्यात् ज्वलने धर्मे निराश्रयेण हते ।
असुरपतिना नरेंद्रे सकलो लोको भवेत् अंधः ॥ ८६२ ॥

अर्थ—काल निमित्ततैं पुदगल द्रव्य अतिरूखा भावरूप परणया तातैं अग्निका नाश भया बहुरि मुनिआदिका अभाव भएं धर्मके आश्रयके अभावतैं धर्मका नाश भया। बहुरि असुर कुमारका इन्द्र करि मार्या हुवा राजाका नाश भया। ऐसैं नाश होतैं पीछैं समस्त लोक आंधा हो है॥ ८६२ ॥

आगैं तिस काल विषै तिष्ठते जीवनिकै गति विषै गमन अर गतितैं आगमनका स्वरूप कहैं हैं;—

**एत्थ मुदा णिरयदुगं णिरयतिरक्खादु जणणमेत्थ हवे ।**
**थोवजलदाइ मेहा भू णिस्सारा णरा तिव्वा ॥ ८६३ ॥**

अत्र मृता निरयद्वयं नरकातिर्यग्भ्यां जननमत्र भवेत् ।
स्तोकजलदायिनो मेघा भूः निस्सारा नरास्तीव्राः ॥ ८६३ ॥

अर्थ—इस अति दुःषम काल विषै जीव मरे हुए नरक तिर्यंच दोय गतिकों प्राप्त हो हैं। अन्यत्र न प्राप्त हो हैं। बहुरि नरक तिर्यंच गतितैं आये हुए जीवनिहीका इहां जनम हो है

अन्यका न हो है। बहुरि इस काल विषैं मेघ हैं ते स्तोक जलके देनें वाले हो हैं। पृथ्वी रत्नादि सारवस्तु रहित हो है। मनुक्ष तीव्र कषायादि युक्त हो हैं॥ ८६३॥

अब अति दुःषम कालका अंत विषै जो वर्तै है ताका अनुक्रम गाथा च्यारि करि कहैं हैं;—

संवत्तयणामणिलो गिरितरुभूपहुदि चुण्णणं करिय।
भमदि दिसंतं जीवा मरंति मुच्छंति छट्टंते॥ ८६४॥

संवर्तकनामानिलः गिरितरुभूप्रभृतीनां चूर्णनं कृत्वा।
भ्रमति दिशांतं जीवा म्रियंते मूर्छंति षष्टांते॥ ८६४॥

**अर्थ**—छठाकालका अंत विषै संवर्तक नामा पवन सो पर्वत वृक्ष पृथ्वी आदिकका चूर्णकौं करि स्वक्षेत्र अपेक्षा दिशानिका अंत प्रति भ्रमण करै है। बहुरि तहां तिष्टते जीव तीह पवन करि मूर्छाकौं पावै हैं बहुरि मरै हैं॥ ८६४॥

खगगिरिगंगदुवेदी खुद्दविलादिं विसंति आसण्णा।
णेंति दया खचरसुरा मणुस्सजुगलादिबहुजीवे॥ ८६५॥

खगगिरिगंगाद्वयवेदीं क्षुद्रविलादिं विशंति आसन्नाः।
नयंति दयाः खचराः सुरा मनुष्ययुगलादिबहुजीवान्॥ ८६५॥

**अर्थ**—विजयार्द्ध पर्वत अर गंगा सिंधुनदी अर इनकी वेदी अर तिनकै क्षुद्र विल आदिक तिन प्रति तिनहीके निकट वर्ती प्राणी प्रवेश स्वयमेव करै हैं। बहुरि दयावान विद्याधर वा देव हैं ते मनुक्ष युगल आदि दैकरि बहुत जीवनिकौं तिस बाधा रहित स्थानकौं प्राप्त करै हैं॥ ८६५॥

छट्ठमचरिमे होंति मरुदादी सत्तसत्त दिवसवही।
अदिसीदखारविसपरुसग्गीरजधूमवरिसाओ॥ ८६६॥

षष्टचरमे भवंति मरुदादयः सप्तसप्त दिवसावधि।
अतिशीतक्षारविषपरुषाग्निरजोधूमवर्षाः॥ ८६६॥

**अर्थ**—छठा कालका अंत विषैं पवन आदि सात वर्षा सात सात दिन पर्यंत हो हैं। ते कौंन? पवन १ अत्यंत शीत १ क्षार रस १ विष १ कठोर अग्नि १ धूलि १ धुआं १ इन सातरूप परिणए पुद्गलनिकी वर्षा गुणचास दिन विषै हो है॥ ८६६॥

तेहिंतो सेसजणा णस्संति विसग्गिवरिसदड्ढमही।
इगिजोयणमेत्तमधो चुण्णीकिज्जदि हु कालवसा॥ ८६७॥

तेभ्यः शेषजनाः नश्यंति विषाग्निवर्षदग्धमही।
एकयोजनमात्रमधः चूर्णीक्रियते हि कालवशात्॥ ८६७॥

**अर्थ**—तिन वर्षानितैं अवशेष रहे मनुक्षादिक ते भी नष्ट हो हैं। बहुरि विष अर अग्निकी वर्षानि करि दग्ध भई पृथ्वी सो एक योजन मात्र नीचा तांई कालकै वशतैं चूर्ण हो है॥ ८६७॥

अब उत्सर्पणी कालके प्रवेशका अनुक्रम गाथा तीन करि कहै हैं;—

उस्सप्पिणीयपढमे पुक्खरखीरघदमिदरसा मेघा ।
सत्ताहं वरसंति य णग्गा मत्तादिआहारा ॥ ८६८ ॥
उत्सर्पिणीप्रथमें पुष्करक्षीरघृतामृतरसान् मेघाः ।
सप्ताहं वर्षंति च नग्ना मृताद्याहाराः ॥ ८६८ ॥

अर्थ—उत्सर्पिणीका अति दुःषम नामा प्रथमकाल विषै आदि ही मेघ हैं ते जल १ दुग्ध १ घीव १ अमृत १ रसानिकों क्रमतैं सात सात दिन पर्यंत वर्षै है। बहुरि तिसकाल विषै तिष्टते जीव ते वस्त्रादि रहित नग्न हैं। बहुरि मृतिका आदिका आहार जिनिकै ऐसे हो हैं ॥ ८६८ ॥

उण्हं छंडदि भूमी छविं सणिद्धत्तमोसहिं धरादि ।
वल्लिलदागुम्मतरू वड्ढादि जलादिवरसेहिं ॥ ८६९ ॥
उष्णं त्यजति भूमिः छविं सस्निग्धत्वमौषधिं धरति ।
वल्लिलतागुल्मतरवो वर्धंते जलादिवर्षैः ॥ ८६९ ॥

अर्थ—जलादिकनिकी वर्षानिकरि पृथ्वी है सो पूर्वैं भया था जो अग्नि आदिकी वर्षा करि उष्णपणा ताकौं छांडै है। बहुरि छवि जो शोभा ताकौं धारै है। बहुरि सचिकण पणांकौं धारै है। बहुरि अन्न आदि औषधिकौं धारै है। बहुरि वेलि आदि वधै हैं। तहां पृथ्वी विषैं जड़विना फैलै ताकौं वेलि कहिए। वृक्षका आश्रय करि जो फैलै ताकों लता कहिए। कदाचित भी स्थूल पेडकौं जे न प्राप्त होइं तिनकों गुल्म कहिए। स्थूल पेड़ रूप होने योग्य जो होइ तिनकौं वृक्ष कहिए। जलादिकनिकी वर्षानि करि ए वधै हैं ॥ ८६९ ॥

णदितीरगुहादिठिया भूसीयलगंधगुणसमाहूया ।
णिग्गमिय तदो जीवा सव्वे भूमिं भरंति कमे ॥ ८७० ॥
नदीतीरगुहादिस्थिता भूशीतलगंधगुणसमाहूताः ।
निर्गत्य ततो जीवाः सर्वे भूमिं भरंति क्रमेण ॥ ८७० ॥

अर्थ—गंगासिंधु नदीके तीर वा विजयार्धकी गुफा आदि विषै पूर्वैं प्राप्त भए थे जे जीव ते अवै भया जो पृथ्वी विषै शीतल सुगंध गुण तीह करि बुलाए हुए सर्व ही तहांतैं निकासि अनुक्रम करि पृथ्वीकौं भरैं हैं। बहुरि इहांतैं क्रमसौं आयुकायादिक जीवनिकै क्रमतैं वधै हैं ॥ ८७० ॥

अव उत्सर्पिणीका दूसरा काल आदि विषै वर्त्तनाका अनुक्रम कहैं हैं;—

उस्सप्पिणीयविदिए सहस्ससेसेसु कुलयरा कणयं ।
कणयप्पहरायद्धयपुंगव तह णलिण पउम महपउमा ॥ ८७१ ॥
उत्सर्पिणीद्वितीये सहस्रशेषेषु कुलकराः कनकः ।
कनकप्रभराजध्वजपुंगवाः तथा नलिनः पद्मः महापद्मः ॥ ८७१ ॥

अर्थ—अति दुःषम प्रथम काल पूर्ण भएं पीछें दूसरा दुःषम नामा काल प्रवर्तै है। तामैं एक हजार वर्ष अवशेष रहैं सोलह कुलकर हो हैं। बहुरि ते कनक १ कनकप्रभ १ कनक राज १ कनक ध्वज १ कनक पुंगव १ नलिन १ नलिन प्रभ १ नलिन राज १ नालिनध्वज १ नलिन

पुंगव १ पद्म १ पद्म प्रभ १ पद्म राज १ पद्म ध्वज १ पद्म पुंगव १ महा पद्म १ औसे नाम धारक सोलह कुलकर हो हैं ॥ ८७१ ॥

आगैं तिनका कार्य वा तृतीय काल विषै तिष्ठते तेरसठि शलाका पुरुष तिनकों गाथा च्यारि करि कहैं हैं;—

तस्सोलसमणुहिं कुलायाराणलपक्कपहुदिया होंति।
तेवट्ठिणरा तदिए सेणियचर पढमतित्थयरो ॥ ८७२ ॥

तत्षोडशमनुभिः कुलाचारानलपक्वप्रभृतयो भवंति।
त्रिषष्टिनरास्तृतीये श्रेणिकचरः प्रथमतीर्थंकरः ॥ ८७२ ॥

अर्थ—तिन सोलह मनुभिः कहिए कुलकरनि करि क्षत्रियादि कुलके आचार अग्नि करि अन्नादि पचावनेका विधान इत्यादि कार्य शिखाए हुए प्रवर्तै हैं। वहुरि तहां पीछैं तीसरा दुःखम सुखमा नामा काल प्रवर्त्तै है। तीह विषै तेरसठि शलाका पुरुष हो हैं। तहां श्रेणिक नामा राजाका जीव तौ प्रथम तीर्थंकर देव हो है ॥ ८७२ ॥

महपउमो सुरदेवो सुपासणामो सयंपहो तुरियो।
सव्वप्पभूद देवादीपुत्तो होदि कुलपुत्तो ॥ ८७३ ॥

महापद्मः सुरदेवः सुपार्श्वनामा स्वयंप्रभः तुर्यः।
सर्वात्मभूतो देवादिपुत्रो भवति कुलपुत्रः ॥ ८७३ ॥

अर्थ—महापद्म १ सुरदेव १ सुपार्श्व १ स्वयंप्रभ चौथौ १ सर्वात्मभूत १ देव पुत्र १ कुल पुत्र ॥ ८७३ ॥

तित्थयरुदंक पोट्ठिल जयकित्ती मुणिपदादिसुव्वदओ।
अरणिप्पावकसाया विउलो किण्हचरणिम्मलओ ॥ ८७४ ॥

तीर्थंकर उदंकः प्रोष्ठिलः जयकीर्तिः मुनिपदादिसुव्रतः।
अरनिष्पापकषाया विपुलः कृष्णचरो निर्मलः ॥ ८७४ ॥

अर्थ—उदंक तीर्थंकर १ प्रौष्ठिल १ जयकीर्ति १ मुनिसुव्रत १ अर १ निःपाप १ निःकषाय १ विपुल १ कृष्ण नारायणका जीव निर्म्मल तीर्थंकर १ ॥ ८७४ ॥

चित्तसमाहीगुत्तो सयंभु अणिवट्टओ य जय विमलो।
तो देवपाल सच्चइपुत्तयरोऽणंतविरियंतो ॥ ८७५ ॥

चित्रसमाधिगुप्तः स्वयंभूरनिवर्तकश्च जयो विमलः।
ततो देवपालः सत्यकिपुत्रचरोऽनंतवीर्योन्तः ॥ ८७५ ॥

अर्थ—चित्र गुप्त १ समाधि गुप्त १ स्वयंभू १ अनिवर्तक १ जय १ विमल १ देवपाल १ सत्यकितनय रुद्रका जीव अंतका अनंत वीर्य १ औसैं नाम धारक चौवीस तीर्थंकर हो हैं ॥ ८७५ ॥

आगैं तहां प्रथम अंत तीर्थंकरनिका आयु उत्सेध कहैं हैं;—

पढमजिणो सोलससयवस्साऊ सत्तहत्थदेहुदओ ।
चरिमो दु पुव्वकोडीआउ पंचसयधणुतुंगो ॥ ८७६ ॥

प्रथमजिनः षोडशशतवर्षायुः सप्तहस्तदेहोदयः ।
चरमः तु पूर्वकोट्यायुः पंचशतधनुस्तुंगः ॥ ८७६ ॥

**अर्थ**—पहला महापद्म जिन एकसौ सोलह वर्ष प्रमाण आयु सात हाथ शरीरका उच्चत्व धरै है । बहुरि अंतका अनंत वीर्य जिन कोडि पूर्व वर्ष प्रमाण आयु पांचसै धनुष शरीरका उच्चत्व धरै है ॥ ८७६ ॥

आगैं चक्री अर्द्धचक्री बलिभद्रनिके नाम गाथा च्यारि करि कहैं हैं;—

चक्की भरहो दीहादिमदंतो मुत्तगूढदंता य ।
सिरिपुव्वसेणभूदी सिरिकंतो पउम महपउमा ॥ ८७७ ॥

चक्रिणः भरतः दीर्घादिमदंतो मुक्तगूढदंतौ च ।
श्रीपूर्वसेनभूती श्रीकांतः पद्मो महापद्मः ॥ ८७७ ॥

**अर्थ**—प्रथमही चक्रवर्ती कहिए हैं । भरत १ दीर्घ दंत १ मुक्त दंत १ गूढ दंत १ श्रीषेण १ श्रीभूति १ श्रीकांत १ पद्म १ महापद्म १ ॥ ८७७ ॥

तो चित्तविमलवाहण अरिट्ठसेणो बलो तदो चंदो ।
महचंद चंदहर हरिचंदा सीहादिचंद वरचंदा ॥ ८७८ ॥

ततः चित्रविमलवाहनौ अरिष्टसेनः बलाः ततः चंद्रः ।
महाचंद्रः चंद्रधरः हरिचंद्रः सिंहादिचंद्रो वरचंद्रः ॥ ८७८ ॥

**अर्थ**—तहां पीछैं चित्र वाहन १ विमल वाहन १ अरिष्ट सेन १ ए बारह चक्रवर्ति हो हैं । तहां पीछैं अब बलिभद्र कहिए हैं । चंद्र १ महाचंद्र १ चंद्रधर १ हरिचंद्र १ सिंहचंद्र १ वरचंद्र ॥ ८७८ ॥

तो पुण्णचंदसुहचंदा सिरिचंदो य केसवा णंदी ।
तप्पुव्वमित्तसेणा णंदी भूदी यचलणामा ॥ ८७९ ॥

ततः पूर्णचंद्रः शुभचंद्रः श्रीचंद्रः च केशवाः नंदी ।
तत्पूर्वमित्रसेनौ नंदिभूतिश्चाचलनामा ॥ ८७९ ॥

**अर्थ**—तहां पीछैं पूर्ण चंद्र १ शुभचंद्र १ श्रीचंद्र १ ऐसैं ए नव बलदेव हो हैं । यातैं परैं केशव जे नारायण ते कहिए हैं । नंदी १ नंदिमित्र १ नंदिषेण १ नंदिभूति १ अचल ॥ ८७९ ॥

महअइबला तिविट्ठो दुविट्ठ पडिसत्तुणो य सिरिकंठो ।
हरिणीलअस्ससुसिहिकंठा अस्सहयमोरगीवा य ॥ ८८० ॥

महातिबलौ त्रिपृष्ठः द्विपृष्ठः प्रतिशत्रवः च श्रीकंठः ।
हरिनीलाश्वसुशिखिकंठाः अश्वहयमयूरग्रीवाश्च ॥ ८८० ॥

अर्थ—महाबल १ अतिबल १ त्रिपृष्ट १ द्विपृष्ट १ ऐसैं ए नव वासुदेव हो हैं। यातैं परैं तिनके प्रतिशत्र जे प्रतिनारायण ते कहिए हैं। श्रीकंठ १ हरिकंठ १ अश्वकंठ १ सुकंठ १ शिखिकंठ १ अश्वग्रीव १ हयग्रीव १ मयूर ग्रीव ऐसैं ए नव प्रतिवासुदेव हो हैं॥ ८८०॥

अब कहे जु ए अर्थ तिनका उपसंहार कहै हैं;—

**एसो सव्वो भेओ परूविदो विदियतदियकालेसु।**
**पुव्वं व गहीदव्वो सेसो तुरियादिभोगमही॥ ८८१॥**

एषः सर्वो भेदः प्ररूपितः द्वितीयतृतीयकालयोः।
पूर्वमिव गृहीतव्यः शेषः तुर्यादिभोगमही॥ ८८१॥

अर्थ—यहु सर्व ही भेद उत्सर्पिणीके दूसरे तीसरे कालनिका प्ररूपण किया बहुरि अवशेष चतुर्थ आदि कालनि विषै भोगभूमि हैं ऐसा पूर्वोक्त प्रकार ग्रहण करना। तहां अनुक्रमतें आयु कायादि करि वृद्धि रूप चतुर्थ सुषम दुःषमकाल विषै जघन्य भोगभूमि है। पंचम सुषम काल विषै मध्य भोगभूमि है। षष्टम सुषम सुषम काल विषै उत्कृष्ट भोग भूमि है॥ ८८१॥

ऐसैं भरत ऐरावत क्षेत्रनि विषै कहे जे छह काल तिनकों अन्य क्षेत्र विषै जोड़नेंकों गाथा तीन कहैं हैं;—

**पढमादो तुरियोत्ति य पढमो कालो अवट्ठिदो कुरवे।**
**हरिरम्मगे य हेमवदेरण्णवदे विदेहे य॥ ८८२॥**

प्रथमतः तुर्यांतं च प्रथमः कालः अवस्थितः कुर्वोः।
हरिरम्यके च हैमवद्धैरण्यवतयोः विदेहे च॥ ८८२॥

अर्थ—पहला कालतैं लगाय चौथा काल पर्यंत नियम कहिए हैं। तहां पहला काल तौ देव-कुरु उत्तर कुरु विषै अवस्थित है। भावार्थ—पहला सुषम सुषम कालकी आदि विषै जो वर्तना है सो वर्त्तना देव कुरु उत्तर कुरु विषै सदा काल पाइए है। बहुरि ऐसैं ही दूसरा काल हरि अर रम्यक क्षेत्र विषै अवस्थित है। बहुरि तीसरा काल हैमवत अर हैरण्यवत क्षेत्र विषै अवस्थित है। बहुरि चौथा काल विदेह क्षेत्र विषै अवस्थित ही है॥ ८८२॥

**भरह इरावद पण पण मिलेच्छखंडेसु खयरसेढीसु।**
**दुस्समसुसमादीदो अंतोत्ति य हाणिवड्ढी य॥ ८८३॥**

भरतः ऐरावतः पंच पंच म्लेच्छखंडेषु खचरश्रेणिषु।
दुःषमसुषमादितः अंत इति च हानिवृद्धी च॥ ८८३॥

अर्थ—भरत ऐरावत संबंधी पांच पांच मलेच्छ खंड अर विजयार्द्धकी विद्याधर रहनेंकी श्रेणी तिन विषै दुःखम सुषम कालका आदितैं लगाय ताहीका अंत पर्यंत हानि वृद्धि हो है। सो अवसर्पिणी विषै तौ चौथा कालकी आदितैं लगाय अंत पर्यंत आर्य खंडवत् अनुक्रमतैं आयु आदि-ककी हानि हो है। तहां पांचवा छठा काल नांहीं प्रवर्त्तै है। भावार्थ—जो आर्य खंड विषै अव सर्प्पिणीका चौथा कालका अंतविषै वर्तना है सोई आर्यखंडविषै अवसर्पिणीका पांचवां छठा अर

उत्सर्प्पिणीका पहला दूसरा काल प्रवर्तते भी तहां एकरूप वर्तना है। बहुरि उत्सर्प्पिणीका तीसरा कालका आदि तैं लगाय ताहीका अंत पर्यंत आयु आदिककी वृद्धि हो है । तहां चौथा पांचवां छठा काल नांहीं वर्त्तै है । भावार्थ-इहां आर्य खंड विषैं उत्सर्प्पिणीका चौथा पांचवां छठा अव-सार्प्पिणीका पहला दूसरा तीसरा काल प्रवर्ततैं भी उत्सार्प्पिणीके तीसरा कालका अंत विषै जो वर्त्तना पाइए सो तहां एकरूप वर्तना है ॥ ८८३ ॥

**पढमो देवे चरिमो णिरए तिरिए णरेवि छक्काला ।**
**तदिशो कुणरे दुस्समसरिसो चरिमुवहिदीवद्धे ॥ ८८४ ॥**

प्रथमः देवे चरमः निरये तिरश्चि नरेपि षट्कालाः ।
तृतीयः कुनरे दुःषमसदृशः चरमोदधिद्वीपार्धे ॥ ८८४ ॥

**अर्थ**—देव गतिविषै प्रथम काल वर्त्तै है । नरक गतिविषै अंतका छठा काल वर्त्तै है। **भावार्थ**—इहां अति सुख अति दुखकी अपेक्षा पहला छठा कालका वर्त्तना कह्या है । आयु आदि अपेक्षा न कह्या है । बहुरि ऐसैं ही तिर्यंच गति अर मनुक्ष गतिविषै छहौं काल वर्त्तै है । बहुरि कु-मनुष्य भोगभूमि समुद्रनिविषै हैं । तहां तीसरा काल वर्त्तै है । बहुरि आधा स्वयंभू रमण द्वीप अर सर्व स्वयंभूरमण समुद्रविषै दुःखम समान सर्वकाल वर्त्तै है ॥ ८८४ ॥

ऐसैं जंबूद्वीपके वर्णनकौं समाप्त करि लवण समुद्रके वर्णनकौं आरंभ करत संता तिन दोऊनिकै वीचि तिष्ठता जो कोट ताका स्वरूप निरूपणके मिस करि समस्त द्वीप समुद्रनिके अंत विषै पाईए हैं जे प्रकार तिनकौं गाथा दोयकरि प्ररूपै हैं;—

**चउगोउरसंजुत्ता भूमिमुहे बार चारि अट्ठुदया ।**
**सयलरयणप्पया ते वेकोसवगाढया भूमिं ॥ ८८५ ॥**

चतुर्गोपुरसंयुक्ता भूमौ मुखे द्वादश चत्वारः अष्टोदयाः ।
सकलरत्नात्मकास्ते द्विक्रोशावगाढा भूमिं ॥ ८८५ ॥

**अर्थ**—च्यारि गोपुर जे द्वार तिन करि संयुक्त हैं । बहुरि भूमौ कहिए नीचैं बारह योजन चौड़े हैं । मुखे कहिए उपरि च्यारि योजन चौडे हैं । बहुरि आठ योजन ऊंचे हैं । बहुरि सकल नाना प्रकार रत्नमई हैं ऐसैं ते प्राकार हैं। बहुरि ते दोय कोश भूमिकौं अवगाहि करि तिष्ठै हैं । **भावार्थ**—पृथ्वी विषै दोय कोश इनकौं नीव हैं ॥ ८८५ ॥

**वज्जमयमूलभागा वेलुरियकयाइरम्मासिहरजुदा ।**
**दीवोवहीणमंते पायारा होंति सव्वत्थ ॥ ८८६ ॥**

वज्रमयमूलभागा वैडूर्यकृतातिरम्यशिखरयुताः ।
द्वीपोदधीनामंते प्राकारा भवंति सर्वत्र ॥ ८८६ ॥

**अर्थ**—वज्रमई तिनका मूल भाग कहिए नीव है। बहुरि वैडूर्य्य रत्न करि निर्म्मापित अति रमणीक शिखरनि करि संयुक्त हैं । ऐसे प्राकार कहिए वेदिका दिवाल सो द्वीपनिका वा समुद्र-निका अंत विषै परिधिरूप सर्वत्र है ॥ ८८६ ॥

आगैं तिन प्राकारानिकें उपरि तिष्टती जु वेदिका ताकौं निरूपै हैं;—

पायाराणं उवरिं पुह मज्झे पउमवेदिया हेमी।
वेकोसपंचसयधणुतुंगा वित्थारया कमसो ॥ ८८७ ॥
प्राकाराणामुपरि पृथक् मध्ये पद्मवेदिका हैमी।
द्विक्रोशपंचशतधनुस्तुंगविस्तारा क्रमशः ॥ ८८७ ॥

**अर्थ**—तिन प्राकानिकै उपरि मध्य विषै पृथक पृथक पद्म वेदिका कांगुरेनिकी पंक्ति हैं। सो सुवर्ण मई हैं दोय कोश उंची हैं पांचसै धनुष चौडी हैं ॥ ८८७ ॥

आगैं तिस पद्म वेदिकाकै माहीं अर वारैं दोऊ तरफां तिष्ठते जु वनादिक तिनकों गाथा च्यारि करि कहैं हैं;—

तिस्से अंतो वाहिं हेमसिलातलजुदं वणं रम्मं।
वावी पासादोवि य चित्ता अत्थंति तहिं वाणा ॥ ८८८ ॥
तस्याः अंतर्बहिः हेमशिलातलयुतं वनं रम्यं।
वाप्यः प्रासादा अपि च चित्रा आसते तत्र वानाः ॥ ८८८ ॥

**अर्थ**—तिन वेदिकानिकै मांही वारै पैली वा वैली दोऊ तरफां सुवर्णमय शिलातल करि संयुक्त रमणीक वन हैं। तहां चित्र नाना प्रकार वावड़ी वा प्रासाद कहिए मंदिर हैं। तहां मंदिरनि विषै वान व्यंतर देव तिष्टै हैं ॥ ८८८ ॥

वरमज्झजहण्णाणं वावीणं चाव विसद वित्थारा।
पण्णासूणं कमसो गाढा सगवासदसभागो ॥ ८८९ ॥
वरमध्यजघन्यानां वापीनां चापाः द्विशतं विस्ताराः।
पंचाशदूनं क्रमशो गाधः स्वकव्यासदशमभागः ॥ ८८९ ॥

**अर्थ**—उत्कृष्ट मध्य जघन्य वावड़ीनिका विस्तार जो चौंड़ाईका प्रमाण दोयसै अर पचास घाटि क्रमतैं है सो दोयसै ड्यौढसै एकसौ योजन प्रमाण है। वहुरि तिनका गाध जो औंडाईका प्रमाण सो अपने व्यासकै दशवैं भाग है। से क्रमतैं वीस पंद्रह दश योजन प्रमाण जानना ॥८८९॥

वासुदयादीहत्तं जहण्णपासादयस्स चावाणं।
पण्णपणसदरिसयमिह दारे छव्वार चउ गाढो ॥ ८९० ॥
व्यासोदयदीर्घत्वं जघन्यप्रासादस्य चापानां।
पंचाशत्पंचसप्ततिशतं इह द्वारे षट् द्वादश चतुर्गाढः ॥ ८९० ॥

**अर्थ**—जघन्य प्रासादनिकी चौड़ाई उचाई लंबाईका प्रमाण क्रमतैं पचास पिचहत्तरि एकसौ धनुष प्रमाण है। वहुरि इनके द्वारनिविषै चौड़ाई उंचाई छह अर बारह धनुप प्रमाण है अर गाध जो अवकाश रूप इनकी नींव सो च्यारि धनुप प्रमाण है ॥ ८९० ॥

मज्झिमवक्कस्साणं विगुणा तिगुणा कमेण वासादी।
दोदोदारा मणिमय णट्टणकीडादिगेहावि ॥ ८९१ ॥

मध्यमोत्कृष्टानां द्विगुणा त्रिगुणाः क्रमेण व्यासादिः ।

द्विद्विद्वाराः मणिमया नर्तनक्रीडादिगेहा अपि ॥ ८९१ ॥

**अर्थ**—मध्यम अर उत्कृष्ट प्रासादनिका व्यासादिक जघन्य प्रासादनिके व्यासादिकतैं क्रमतै दूणें अर तिगुणे हैं। अर तिनके द्वारनिके भी तैसें ही जघन्य प्रासादनिके द्वारनितैं दूणे अर तिगुणे व्यासादिक हैं। बहुरि ते जघन्य व्यासादिक धरैं प्रासाद दोय दोय द्वारनि करि संयुक्त हैं। तहां मणिमई नर्त्तन गेह क्रीडा गेह आदि रचना पाइए है। तहां मध्य प्रसादनिकी चौड़ाई उंचाई लंबाई सौ ड्योढसै दोयसै योजन, उत्कृष्ट प्रासादनिकी ड्योढसै सवादोसै तीनसै योजन प्रमाण हैं। बहुरि मध्य प्रासादनिके द्वारनिकी चौड़ाई उचाई गाध बारह चौईस आठ धनुष है, उत्कृष्ट प्रसादनिके द्वारनिकी चौईस छत्तीस बारह धनुष प्रमाण है ॥ ८९१ ॥

अब अधिकार भूत प्राकारनिके द्वारनिके नाम वा तिनके व्यासादिक कहैं हैं;—

**विजयं च वैजयंत जयंतमपराजियं च पुव्वादी ।**

**दारचउक्काणुदओ अडजोयणमद्धवित्थारो ॥ ८९२ ॥**

विजयं च वैजयंतं जयंतमपराजितं च पूर्वादि ।

द्वारचतुष्काणामुदयः अष्टयोजनानि अर्धविस्ताराः ॥ ८९२ ॥

**अर्थ**—विजय १ वैजयंत १ जयंत १ अपराजित १ ऐसें नाम धारक तिन प्राकारनिकै पूर्वादि दिशानि विषै द्वार हैं। तिन च्यारि द्वारनिका उच्चत्व आठ योजन है, विस्तार तातैं आधा च्यारि योजन है ॥ ८९२ ॥

आगैं तिन द्वारनिकै ऊपरि रचनाका स्वरूपकौं आदि दे करि वर्णन गाथा तीन करि कहै हैं;—

**तोरणजुददारुवरिं दुगवास चउक्कतुंग पासादो ।**

**बारसहस्सायददलवासं विजयपुरमुवरि गयणतले ॥ ८९३ ॥**

तोरणयुतद्वारोपरि द्विव्यासः चतुष्कतुंगः प्रासादः ।

द्वादशसहस्रायतदलव्यासं विजयपुरमुपरि गगनतले ॥ ८९३ ॥

**अर्थ**—तिन तोरण संयुक्त द्वारनिकै उपरि दोय योजन चौड़ा च्यारि योजन ऊंचा प्रासाद है। तिसकै उपरि आकाश तल विषै बारह हजार योजन लंबा तातैं आधा छह हजार योजन चौड़ा विजय नामा नगर है ॥ ८९३ ॥

**एवं सेसतिदारे विजयादिठिदी दु साहियं पल्लं ।**

**जगदीमूले बारस दाराणि णदीण णिग्गम्मणे ॥ ८९४ ॥**

एवं शेषत्रिद्वारे विजयादिस्थितिस्तु साधिकं पल्यं ।

जगतीमूल्ये द्वादश द्वाराणि नदीनां निर्गमने ॥ ८९४ ॥

**अर्थ**—अवशेष तीन द्वारनि विषै भी ऐसैं ही प्रासाद वा वैजयंतादि नगर जाननें। बहुरि तिनि नगरनि विषै तिष्ठते विजयादि व्यंतर देवनिका आयु साधिक पल्य प्रमाण है। बहुरि

जगती जो जंबूद्वीपकी वेदी ताके मूल विषै सीता सीतोदा विना अवशेष बारह नदी निकसनेंके बारह द्वार हैं। सीता सीतोदा पूर्व पश्चिम द्वार करि ही समुद्र विषै प्रवेश करै है। तातैं इनके जुदे द्वारनिका अभाव है॥ ८९४॥

पायारंतब्भागे वेदिजुदं जोयणद्धवास वणं।
दारूणपरिहितुरियो विजयादीदारअंतरयं॥ ८९५॥
प्राकारांतर्भागे वेदीयुतं योजनार्धव्यासं वनं।
द्वारोनपरिधितुर्यो विजयादिद्वारांतरं॥ ८९५॥

अर्थ—तिस प्राकारके मांहिली तरफ वेदिका सहित आध योजन चौड़ा पृथ्वी ऊपरि वन है। बहुरि तिस प्राकारके चार्‌यौं द्वारनिका व्यास सोलह योजन सो जंबूद्वीपका सूक्ष्म परिधि प्रमाण ३१६२२८ विषै घटाइ अवशेष ३१६२१२ के च्यारि भाग किएं गुण्यासी हजार तेरपन योजन प्रमाण विजयादिक द्वारनिकौ परस्पर अंतराल है। ऐसैं ही अन्यत्र जानना। ऐसैं द्वीप अर समुद्रके बीचि तिष्ठता जो प्राकार ताका वर्णन सहित जंबूद्वीपका वर्णन समाप्त भया॥ ८९५॥

आगैं लवण समुद्रके अभ्यंतरवर्ती जे पाताल तिनका स्थान वा तिनकी संख्या वा तिनके व्यासादिकका परिमाण कहै हैं;—

लवणे दिसविदिसंतरदिसासु चउ चउ सहस्स पायाला।
मज्झुदयं तलवदणं लक्खं दसमं तु दसमकमं॥ ८९६॥
लवणे दिशाविदिशांतरदिशासु चत्वारि सहस्रं पातालानि।
मध्योदयः तलवदनं लक्षं दशमं तु दशमक्रमं॥ ८९६॥

अर्थ—लवण समुद्रके मध्यभाग परिधिविषै च्यारि दिशानिविषै अर च्यारि विदिशानिविषै अर इन आठनिके बीचि आठ अंतर दिशा विषै अनुक्रमतैं च्यारि च्यारि एक हजार पाताल हैं। गर्त खाड़ा ताका नाम पाताल है। तहां दिशासंबंधी च्यारि पाताल तिनका उदयका मध्य भागविषै व्यास एक लाख योजन है। बहुरि उदय जो ऊचाई ताका प्रमाण तैसैंही एक लाख योजन है। नीचे ही नीचे तल व्यास ताका दशवां भाग दश हजार योजन है। ऊपरि मुख व्यास तैसैं ही दश हजार योजन है। भावार्थ—ए पाताल ऊभा मृदंगके आकारि हैं। सो समभूमितैं नीचेका जो ऊंडाईका प्रमाण सौ ऊचाई जाननी। ताका मध्यविषै तौ व्यास अधिक है। अर ताकै ऊपरि वा नीचैं क्रमतैं घटता घटता नीचैं ही नीचैं अर ऊपरि समभूमिविषै समान व्यास है। इहां प्रश्न जो लक्ष योजन पर्यंत ऊंडाई कैसैं संभवै? ताका समाधान—रत्नप्रभा पृथ्वी एक लाख असी हजार योजन मोटी है। तहां खरभाग पंकभाग पर्यंत ते पाताल ऊंडे जाननें। बहुरि विदिशासंबंधी च्यारि पातालनिकै दिशासंबंधी पातालनितैं दशवां भागका अनुक्रम जाननां सो मध्य व्यास दश हजार उदय दश हजार तल व्यास एक हजार मुख व्यास एक हजार योजन प्रमाण है। बहुरि अंतर दिशा संबंधी हजार पातालनिका विदिशा संबंधी पातालनितैं दशवां भागका अनुक्रम जाननां। सो मध्य व्यास हजार तल व्यास एकसौ मुख व्यास एकसौ योजन प्रमाण है॥ ८९६॥

आगैं दिशा संबंधी पातालनिका नामादिक कहैं हैं;—

वडवामुहं कदंवगपायालं जूवकेसरं वट्टा ।
पुव्वादिवज्जकुड्डा पणसयबाहल्लं दसम कमा ॥ ८९७ ॥
वडवामुखं कदंवकं पातालं यूपकेशरं वृत्तानि ।
पूर्वादिवज्रकुड्यानि पंचशतबाहल्यं दशमं क्रमात् ॥ ८९७ ॥

अर्थ—वड़वामुख १ कदंवक १ पाताल १ यूपकेसर १ ऐसें पूर्वादि दिशा संबंधी पातालनिके नाम हैं। वहुरि ते सर्व पाताल वृत्त कहिए गोल हैं। वहुरि वज्रमई कुड्यकरि संयुक्त है। तहां दिशा संबंधी पातालनिके कुड्यका वाहुल्य जो मोटाईका प्रमाण सो पांचसैं योजन है। वहुरि याका दशवां अंश पचास योजन विदिशा संबंधी पातालनिका कुड्य वाहुल्य हैं ॥ ८९७ ॥

आगैं तिन पातालनिकैं अभ्यंतर वर्ती जल अर पवन तिनके प्रवर्तनेंका क्रम कहैं हैं;—

हेट्ठुवरिमतियभागे णियदं वादं जलं तु मज्झम्हि ।
जलवादं जलवड्ढी किण्हे सुक्के य वादस्स ॥ ८९८ ॥
अधस्तनोपरिमत्रिभागे नियतः वातो जलं तु मध्ये ।
जलवातः जलवृद्धिः कृष्णे शुक्ले च वातस्य ॥ ८९८ ॥

अर्थ—तिन पातालनिकी ऊंचाईका तीन भाग करिए तहां दिशा संबंधी पातालनिका तीसरा भाग तेतीस हजार तीनसैं तेतीस योजन अर एक योजनका तीसरा भाग प्रमाण है। विदिशा संबंधीनिका तीन हजार तीनसैं तेतीस योजन एक योजनका तीसरा भाग प्रमाण है। अंतर दिशा संबंधीनिका तीनसैं तेतीस योजन एक योजनका तीसरा भाग प्रमाण है। तहां नीचला तीसरा भाग विषै तौ केवल पवन ही पाइए है। वहुरि ऊपरिका तीसरा भाग विषै केवल जल ही पाईए है। वहुरि मध्यका तीसरा भाग विषै जल पवन मिश्ररूप पाईए है। तहां कृष्णपक्ष विषै तीह मध्यका तृतीय भाग विषै तिष्टता जलकी हानि हो है। वहुरि शुक्ल पक्ष विषै तहां ही तिष्टता पवनकी वृद्धि हो है ॥ ८९८ ॥

अब तिस हानि वृद्धिके प्रमाण कों कहैं हैं;—

तम्मज्झिमतियभागे लवणसिहा चरिमपणसहस्से य ।
पण्णरदिणेहिं भजिदे इगिदिण जलवादवड्ढी जलवड्ढी ॥ ८९९ ॥
तन्मध्यमत्रिभागे लवणशिखा चरमपंचसहस्रे च ।
पंचदशदिनैः भक्ते एकदिने जलवातवृद्धिः जलवृद्धिः ॥ ८९९ ॥

अर्थ—तिन पातालनिका मध्य तृतीय भागका पूर्वोक्त प्रमाण ताकों पंद्रहदिननिका भाग दिएं जो प्रमाण होइ। दिशा ३३३३३। १÷३ विदिशा ३३३३। १÷३ अंतर दिशा ३३३। १÷२ तितना मध्य तृतीय भाग विषै एक एक दिन प्रति। दिशा २२२२। १÷९ विदिशा २२२$\frac{2}{9}$ अंतर दिशा २२। $\frac{2}{9}$ कृष्णपक्ष विषै जलकी वृद्धि अर शुक्ल पक्ष विषै पवनकी वृद्धिका प्रमाण हो है। पातालनिका मध्य तृतीय भाग विषै नीचैं पवन ऊपरि जल है सो दिन दिन प्रति कृष्णपक्ष विषै

पवनकी जायगा जल होता जाय है। अर शुक्ल पक्ष विषै जलकी जायगा पवन होता जाय है ऐसा भाव जाननां। बहुरि लवण समुद्रकी जो शिखा समभूमितैं ऊंचा जलका प्रमाण ताका अंतका जो पांच हजार योजन ताकूं पंद्रह दिननिका भाग दिएं तीनसै तेतीस योजन एक तृतीय भाग आया सो लवण समुद्रकी शिखा विषै दिन दिन प्रति जल वधनेंका प्रमाण हो है। समभूमितैं ग्यारह हजार योजन ऊंचा जल है ताके ऊपरि शुक्ल पक्ष विषै इतनां इतनां जल ऊंचा चढि पूर्णिमाके दिनि सोलह हजार योजन ऊंचा जल हो है। कृष्णपक्ष विषै तैसैं ही घटि तितनां हीं आनि रहै है ऐसा भाव जाननां। अव इस ही अर्थकों वर्नैं हैं। पंद्रह दिननिकों तेतीस हजार तीन सै तेतीस योजन एक तृतीय भाग घटनें वधनें रूप हानिचय होय तौ एक दिन कै केता होइ। ऐसैं त्रैराशिक करि समछेद विधानतैं अंशी ९९९९९÷३ अंश $\frac{1}{3}$ निकों मिलाय १००००÷३ भागहार तीनकों प्रमाण राशि रूप पंद्रहका भाग हार करि गुणें पैंतालीस होइ १०००००÷४५ इस भागहारका भाग दिएं दोय हजार दोय सै वाईस योजन भए अर अवशेष १०÷४५ कों पांचकरि अपवर्त्तन किएं दोय नवमां भाग भया सो इतनां मध्य तृतीय भाग विषै दिन दिन प्रति जल पवन घटै वधै है। ऐसें ही लवण समुद्रकी शिखा विषै वा विदिशा अंतर दिशा संबंधी पातालनि विषै क्रमकरि मध्य जलवातका शिखाका हानि वृद्धिका अनुक्रम जाननां॥ ८९९॥

ऐसैं हानि वृद्धि युक्त जो लवण समुद्र ताकौ भूमुख व्यास कहै है;—

**पुण्णदिणे अमवासे सोलेक्कारससहस्स जलुदओ।**
**वासं मुहभूमीए दसयसहस्सा य वेलक्खा॥ ९००॥**

पूर्णदिने अमावास्यायां षोडशैकादशसहस्रं जलोदयः।
व्यासः मुखभूम्योः दशसहस्रं च द्विलक्षं॥ ९००॥

**अर्थ**—पूर्णिमाकै दिन तौ सोलह हजार योजन लवण समुद्र विषै जल ऊंचा हो है। बहुरि अमावस्याकै दिन ग्यारह हजार योजन जल ऊंचा हो है। भावार्थ—लवण समुद्रका मध्य भाग विषै अमावस्याकै दिन समभूमितैं ग्यारह हजार योजन जल ऊंचा रहै है। बहुरि दिन दिन प्रति तीन सै तेतीस योजन अर एक तृतीय भाग प्रमाण जलकी उचाई वधै सो पूर्णिमासीकै दिन सोलह हजार योजन होइ तहां पीछैं दिन प्रति तितनी ही घटै ऐसैं जलकी उंचाईकी हानि वृद्धि है। बहुरि सोलह हजार योजनकी उचाई विषै मुख व्यास दश हजार योजन है। अर भूव्यास दोय लाख योजन है। **भावार्थ**—समभूमितैं उपरि सोलह हजार योजन जल उंचा है। तहां तिस जलकी चौड़ाईका प्रमाण दश हजार योजन है सो मुख व्यास जाननां। बहुरि समभूमि विषै दोय लाख योजन समुद्रकी चौड़ाई है सो भूव्यास जाननां। बहुरि सोलह हजार योजनकी उचाई विषै एक लाख निवै हजार योजन चौड़ाईका प्रमाण घट्या तौ पांच हजार योजनकी उचाई विषै कितनां घट्या ऐसैं अपवर्तन करि गुणें ९५०००० अपनां भागहारका भाग दिएं गुणसठि हजार तीनसै पिचहत्तरि योजन भए। या विषै मुख व्यास दस हजार जोडें ग्यारह हजारकी उंचाई विषै मुख व्यास हो है। **भावार्थ**—समभूमितैं ग्यारह हजार योजन ऊंचा जल है। तहां तिसकी

चौड़ाई गुणहत्तरि हजार तीनसै पिचहत्तरि योजन है । बहुरि भूव्यास समुद्रकी चौड़ाई प्रमाण दोय लाख योजन है ही ॥ ९०० ॥

अब जंबूद्वीप संबंधी चंद्रमा सूर्यकै अर लवण समुद्रका जलकै तिर्यग रूप अंतरालका कहै हैं;—

**मुरवायारो जलही हाणिदलं सोदयेण संगुणियं ।**
**विसमुद्दचारमंवुहिजंवूचंदरविअंतरयं ॥ ९०१ ॥**

मुरजाकारः जलधिः हानिदलं स्वोदयेन संगुण्य ।
विसमुद्रचारमंवुधिजंवूचंद्ररव्यंतरं ॥ ९०१ ॥

**अर्थ**—लवण समुद्र है सो मृदंगकै आकारि है । जैसे मृदंग है सो मध्यतैं उपरि वा नीचैं क्रम हानिरूप है । तैसैं लवण समुद्रके जलका व्यास है । सो भूमिकी वरोवरि स्थानतैं ऊपरि उचाईविषै अर नीचैं ओंड़ाईविषै क्रमतैं हानि रूप है । सो भूमितैं लगाय जो उचाईविषै हानिका आधा प्रमाण उचाई करि भाजित ताकों चंद्रमा सूर्यकी उचाई करि गुणिए तामैं समुद्र संबंधी चार क्षेत्र घटाइए जो होइ तीह प्रमाण समुद्रकै अर जंबूद्वीप संबंधी चंद्रमा सूर्यकै तिर्य्यग्रूप अंतराल है। इसही अर्थकौं कहैं हैं । जलका मुख व्यास दश हजार योजन ताकौं भूमिव्यास दोय लाख योजन विषै घटाएं अवशेष १९०००० हानिका प्रमाण हो है । याकौं एक पार्श्वका ग्रहण करनैंकौं आधा किएं पिच्याणवै हजार योजन हो हैं । पीछैं सोलह हजार योजनकी उंचाईके पिच्याणवै हजार योजन हानि होइ तौ एक योजनकी उचाईकै केती होइ अैसैं त्रैराशिक करि हजारका अपवर्तन किएं पिच्याणैवका सोलह्वां भाग आवै है । बहुरि एक योजनकी उचाईकै पिच्याणवैका सोलह्वां भाग हानिचय होय तौ आठसै असी योजन उचाईकै कितनां होइ अैसैं त्रैराशिक किएं अैसा ९५।८८०÷१६ भया इहां आठसै असीका गुणकारकों सोलह करि अपवर्त्तन किएं पचावन गुणां पिच्याणवै भया इनकों परस्पर गुणें पांच हजार दोयसै पचीस योजन तहां चंद्रकी वरोवरि हानिका प्रमाण आया। **भावार्थ**—समभूमितैं जहां आठसै असी योजन ऊंचा जल है तहां समुद्र तटतैं बावनसै पचीस योजन परैं सो जल पाइए हैं । अैसा जाननां। बहुरि चंद्रमाका विमान वाह्य परिधि अपेक्षा समुद्र तटतैं समुद्र चार क्षेत्र प्रमाण परैं पाइए हैं । तातैं तामैं समुद्रका चार क्षेत्र तीनसै तीस योजन अर योजनका 'अठतालीस इकसठिवां भाग प्रमाण घटावनां सो तीनसै तीस घटाएं अठतालीससै पिच्याणवै रहे । अर इनमैं एक ग्रहण करि तामैं अठतालीस इकसठिवां भाग घटावनेंकों इकसठि करि समछेद करि ६१÷६१ तामैं विंव प्रमाण ४८÷६१ घटाएं तेरह इकसठि भाग रहै हैं । **भावार्थ**—चंद्रमाका विमानकी वरोबरि जो जल ऊंचा है ताकै अर याकै तिर्यग्रूप बीचि अंतराल अठतालीससै चौराणवै योजन अर योजनके तेरह इकसठिवां भाग मात्र जाननां । बहुरि समुद्रकै तटतैं पिच्याणवै योजनका सोलह्वां भाग परैं जाइ एक योजन मात्र समभूमितैं जल उंचा होइ तौ तीनसै तीस योजन अर अठतालीस इकसठिवां भाग परैं जाइ जल कितनां ऊंचा होइ । अैसैं त्रैराशिक करिए। तहां चारक्षेत्र तीनसै तीस योजनकों अर सूर्यविंव प्रमाण अठतालीस इकसठिवां भागकौं समछेद करि परस्पर

मिलाएं वीस हजार एकसौ अठहत्तरिका इकसठिवां भाग भया २०१७८÷६१ याकौं पिच्याणवैका सोल्हां भागका भाग देनां सो मिन्न गणित करि छेदल्वकौं पलटि करि भाज्यकौं सोलह करि अर भागहारकौं पिच्याणवै करि गुणें ऐसा ३२२८४८÷५७९५ भया। इहां भाग दिएं पचावन योजन अर इकतालीससै तेईस योजनका सतावनसै पिच्याणवां भाग मात्र लब्ध प्रमाण आया। सो इतना चंद्र विमानकै नीचैं समभूमितैं जलकी उचाईका प्रमाण है। वहुरि याकौं चंद्रमाकी उचाई आठसै असी योजन तामैं घटाएं आठसै चौईस योजन अर सोलहसै वहत्तरि योजनका सत्तावनसैं पिच्याणवां भाग मात्र प्रमाण भया सो चंद्रमाकै अर ताकै नीचैं समुद्र जल है ताकैं ऊर्द्धरूप वीचिमैं अंतराल जाननां। अव सूर्यका तिर्यग अंतर आदि ल्याइए है। समभूमितैं एक योजनकी उचाईकै समुद्र तटतैं परैं पिच्याणवै योजनका सोल्हां भाग मात्र क्षेत्र होइ तौ आठसै योजनकी उचाई विषै केता होइ? ऐसैं त्रैराशिक करि सोल्ह करि आठसैं गुणकारका अपवर्त्तन किएं पचास गुणां पिच्याणवै भया। परस्पर गुणें साढा सैंतालीससै भए। इहां समुद्र चारक्षेत्र तीनसैं तीस योजन अर अठतालीस इकसठिवां भाग घटाएं चवालीससैं उगणीस योजन अर तेरह इकसठिवां भाग मात्र भया सोई सूर्यकै अर ताकी वरोवरि ऊंचा जल ताकै वीचिमैं तिर्यगरूप अंतराल जाननां। वहुरि चंद्रमा अर समुद्रकै जो ऊर्धरूप अंतराल कह्या ८२४। १६७२÷५७९५ तामैं असी योजन घटाएं अवशेष ७४४। १६७२÷५७९५ सूर्यकै अर ताकै नीचैं समुद्र जल ताकै वीचि ऊर्द्धरूप अंतराल जाननां। अव प्रसंग पाइ करि लवण समुद्र संवंधी सूर्यनिकैं निकटि जल कितनां ऊंचा है सो साधिए है—लवण समुद्र विषै च्यारि सूर्य हैं। सो एक एक परिधि विषै दोय दोय हैं। तातैं दोय परिधिनिकैं दोय सूर्य तिनके व्यास ग्रहण करनैंकौं सूर्यका व्यास योजनका अठतालीस इकसठिवां भाग मात्र ताकौं दूणां करि ९६÷६१ याकौं इकसठि करि समछेद किया हूवा लवण समुद्रका व्यास ऐसा १२२०००००÷६१ तामैं घटाएं ऐसा १२१९९९०४÷६१ सर्व अंतराल क्षेत्र हो है। वहुरि दोय अंतरालनिका इतनां १२१९९९०४÷६१ क्षेत्र होइ तौ एक अंतरालका कितनां होइ ऐसैं त्रैराशिक करि दोयकरि अपवर्त्तन किएं ऐसा ६०९९९५२ ÷६१ भया इहां भाग दिएं एक घाटि एक लाख योजन अर योजनका तेरह इकसठिवां भाग मात्र प्रमाण ९९९९९।१३÷६१ आया। सो यहु लवण समुद्र संवंधी दोय परिधिवर्ती दोय सूर्यनिकै वीचि अंतराल जाननां। वहुरि याकौं आधा किएं ४९९९९।३७÷६१ लवण समुद्र संवंधी सूर्य अर वेदिकानि वीचि अंतराल हो हैं। भावार्थ—जंवूद्वीपकी वेदीतैं परैं गुणचास हजार नवसै निन्याणवै योजन अर सैंतीस इकसठिवां भाग जाइ लवण समुद्र संवंधी प्रथम परिधि विषै सूर्य है। अर लवण समुद्रकी वेदीतैं इतनैंही योजन उरैं द्वितीय परिधि विषै सूर्य है। दोऊनिकै वीचि अंतराल निन्याणवै हजार नवसै निन्याणवै योजन अर तेरह इकसठिवां भाग मात्र है। दोऊ सूर्यनिका व्यास योजनका छिनवै इकसठिवां भाग मात्र है। इन सवनिकौं जोड़ैं लवण समुद्रका व्यास दोय लाख योजन प्रमाण हो है। वहुरि सूर्य अर वेदिकाके वीचि ऐसा ४९९९९।३७÷६१ अंतरालकौं इकसठि करि समछेद करि अपने अंश सहित जोड़ैं ऐसा ३०४९९७६÷६१ भया।

पीछैं जो पिच्याणवै योजनका सोलह्वां भागमात्र तटतैं परैं जल एक योजन ऊंचा होइ तौ सूर्य वेदिकाका अंतराल ३०४९७६÷६१ मात्र तटतैं परैं जल केता ऊंचा होइ ऐसैं त्रैराशिक करि प्रमाण राशिरूप भागहारके छेद लवनिकौं पलटि परस्पर गुणैं ऐसा ४८७९९६१६÷५७९५ भया। इहां भागहारका भाग दिएं चौरासीसै वीस योजन अर सत्तावनसै सोलहका सत्तावनसै पिच्याणवैवां भाग ८४२०।५७१६÷५७९५ मात्र लवण समुद्रसंबंधी सूर्यानिकै निकटि लवण समुद्रका जल ऊंचा है इहां जलके वीचि सूर्यादिक विचरै हैं ऐसा जाननां ॥ ९०१ ॥

अब पातालनिका अंतरालकौं निरूपै हैं;—

**मज्झिमपरिधिचउत्थं विवरमुहं तंवि मज्झमुहमद्धं।**
**सयगुणपणघणहीणं तं सयछव्वीसभाजिदे विरहं ॥ ९०२ ॥**

मध्यमपरिधिचतुर्थं विवरमुखं तदपि मध्यमुखमर्धं।
शतगुणपंचघनहीनं तत् शतषड्विंशभाजिते विरहं ॥ ९०२ ॥

**अर्थ**—लवण समुद्रका मध्यम सूची व्यास तीन लाख योजन ताका स्थूल परिधि नवलाख येजनि ताका चौथा भाग दोय लाख पचीस हजार योजन मात्र दिशा संबंधी एक पातालके मुखका अंततैं लगाय दूसरे पातालके मुखका अंत पर्यंत क्षेत्र है। यामैं पातालका मध्य व्यास एक लाख योजन घटाएं तौ तिन पातालनिकी उचाईका मध्य विषै परस्पर अंतराल एक लाख पचीस हजार योजन मात्र हो है। अर ताहीमैं पातालका मुख व्यास दश हजार योजन घटाएं तिन पातालनिकै मुखनिका वीचि अंतराल दोय लाख पंद्रह योजन मात्र हो है। वहुरि यामैं विदिशा संबंधी पातालका मुखव्यास हजार योजन घटाइ अवशेष २१४००० का आधा किएं दिशा संबंधी पाताल अर विदिशा संबंधी पातालनिका मुखानिकै वीचि अंतराल एक लाख सात हजार योजन हो है। वहुरि यामैंसौ गुणां पांचका घन वारह हजार पांचसै तिनकौं घटाइ अवशेष ९४५०० कौं एकसौ छवीसका भाग दिएं दिशा विदिशा संबंधी पातालनिकै वीचि जे पाताल हैं तिनका मुखनिकै वीचि परस्पर अंतराल सातसै पचास योजन मात्र हो है॥ ९०२ ॥

अब लवणोदक समुद्रके पालक जे नागकुमार देव तिनके विमाननिकी संख्याकौं तीन स्थाननिका आश्रयकरि कहैं हैं;—

**वेलंधर भुजगविमाणाण सहस्साणि वाहिरे सिहरे।**
**अंते वावत्तरि अडवीसं वादालयं लवणे ॥ ९०३ ॥**

बेलंधरभुजगविमानानां सहस्राणि बाह्ये शिखरे।
अंते द्वासप्ततिः अष्टविंशतिः द्वाचत्वारिंशत् लवणे ॥ ९०३ ॥

**अर्थ**—जंवूद्वीपकी अपेक्षा लवण समुद्रका वाह्यविषै शिखरविषै वेलंधर जातिके भुजग जे नागकुमार देव तिनके विमान क्रमतैं बहत्तरि हजार अठाईस हजार वियालीस हजार हैं॥ ९०३ ॥

आगैं तिन विमाननिका जहां अवस्थान है तिस स्थान विशेषकों अर विमाननिके व्यासकौं कहैं हैं;—

दुतडादो सत्तसयं दुकोसअहियं च होइ सिहरादो।
णयराणि हु गयणतले जोयणदसगुणसहस्सवासाणि ॥ ९०४ ॥
द्वितटात् सप्तशतं द्विक्रोशाधिकं च भवति शिखरात्।
नगराणि हि गगनतले योजनदशगुणसहस्रव्यासानि ॥ ९०४ ॥

अर्थ—लवण समुद्रके दोऊ तटतें सातसैं योजन अर ताके शिखरतें दोयकोस अधिक सातसैं योजन छोडि ऊपरि जाइ आकाशविषैं दश हजार योजन व्यास लीएं नगर हैं। भावार्थ—लवण समुद्रका बाह्य अर अभ्यंतर जो तट ताकैं ऊपरि सातसैं योजन जाइ अर लवण समुद्रकैं मध्य जल ऊंचा है ताके ऊपरि सातसैं योजन अर दोय कोश जाइ वेलंधर जातिके नागकुमार देवनिके नगर हैं। ए नगर आकाशविषैं जलतें ऊपरि जाननें। तिनका प्रत्येक व्यास दश हजार योजन मात्र जाननां ॥ ९०४ ॥

आगैं दिशा संबंधी पातालनिकै दोऊ पार्श्वनिविषैं तिष्ठते पर्वतनिकों अर तहां वास करते जे देवादिक तिनकों गाथा च्यारि करि कहैं हैं;—

वडवामुहपहुदीणं पासदुगे पव्वदा हु एक्केका।
पुव्वे कोत्थुभसेलो इय विदियो कोत्थुभासो दु ॥ ९०५ ॥
वडवामुखप्रभृतीनां पार्श्वद्वये पर्वता हि एकैकाः।
पूर्वस्यां कौस्तुभशैलः इह द्वितीयः कौस्तुभासस्तु ॥ ९०५ ॥

अर्थ—वडवा मुख आदि जे दिशा संबंधी पाताल तिनके दोऊ पार्श्वनिविषैं एक एक पर्वत है। तहां पूर्वदिशा संबंधी पातालकी पूर्व दिशाविषैं कौस्तुभ नामा पर्वत है बहुरि इहां दूसरा पश्चिमदिसा विषैं कौस्तुभास नामा पर्वत है ॥ ९०५ ॥

तहिं तण्णामदुवाणा दक्खिणदो उदगउदगवासणगा।
इह सिवसिवदेवसुरा संखमहासंख गिरिदु पच्छिमदो ॥ ९०६ ॥
तत्र तन्नामद्विवानौ दक्षिणद्वये उदकउदकवासनगौ।
इह शिवशिवदेवसुरौ शंखमहाशंखौ गिरिद्वयौ पश्चिमद्वये ॥ ९०६ ॥

अर्थ—तिन पर्वतनिकै ऊपरि तिन पर्वतनिकै समान नामके धारक दोय व्यंतर देव वसैं हैं। बहुरि दक्षिण दिशासंबंधी पातालके दोऊ पार्श्वनिविषैं उदग अर उदक वास नामा पर्वत हैं। इनकै ऊपरि शिव अर शिवदेवनामा व्यंतर देव वसैं हैं। बहुरि पश्चिम दिशासंबंधी पातालके दोऊ पार्श्वनिविषैं शंख अर महाशंख नामा पर्वत हैं ॥ ९०६ ॥

तत्थुदयुदवासमरा दगदगवासद्दिजुगलमुत्तरदो।
लोहिदलोहिदअंका तहिं वाणा विविहवण्णणया ॥ ९०७ ॥
तत्रोदकोदवासामरौ दकदकवासाद्रियुगलमुत्तरद्वये।
लोहितलोहितांकौ तत्र वाणा विविधवर्णनकाः ॥ ९०७ ॥

अर्थ—तिन पर्वतनिकै ऊपरि उदक अर उदकवास नामा व्यंतर देव वसै हैं। बहुरि उत्तर दिशासंबंधी पातालके दोऊ पार्श्वनिविषैं दक अर दकवास नामा पर्वत युगल है। तिनकैं ऊपरि

लोहित अर लोहतांक नामा व्यंतर वसैं हैं। ते सर्व व्यंतर विविध नाना प्रकार वर्णना जो विभूत्या-दिक ताकरि संयुक्त हैं ॥ ९०७ ॥

धवला सहस्समुग्गय सव्वणगा अद्धघडसमायारा।
उभयतडादो गत्ता बादालसहस्समत्थंति ॥ ९०८ ॥
धवलाः सहस्रमुद्गताः सर्वनगाः अर्धघटसमाकाराः।
उभयतटात् गत्वा द्वाचत्वारिंशत्सहस्रमासते ॥ ९०८ ॥

**अर्थ**—ते सर्व पर्वत धवल वर्ण हैं। अर जलतैं हजार योजन ऊंचे हैं। अर आधा घड़ाकै समान इनका आकार है। बहुरि बाह्य तटतैं उरैं अर अभ्यंतर तटतैं परैं ऐसैं उभय तटतैं वियालीस हजार योजन जाइ तिष्ठै हैं ॥ ९०८ ॥

आगैं लवण समुद्रके अभ्यंतर जे द्वीप हैं तिनकौं अर तिनके व्यासादिककौं गाथा च्यारि करि कहैं हैं;—

तडदो गत्ता तेत्तियमेत्तियवासा हु विदिस अंतरगा।
अडसोलस ते दीवा वट्टा सूरक्खचंदक्खा ॥ ९०९ ॥
तडतः गत्वा तावन्मात्रव्यासा हि विदिक्षु अंतरकाः।
अष्टषोडश ते द्वीपा वृत्ताः सूर्याख्यचंद्राख्याः ॥ ९०९ ॥

**अर्थ**—उभय तटनितैं तितनैं ही योजन जाइ तितनैंही व्यासके धारक विदिशा अर अंतर दिशानिविषै आठ अर सोलह सूर्य नामा अर चंद्रनामा द्वीप वृत्ताकार हैं। **भावार्थ**—अभ्यंतर तटतैं परैं अर बाह्य तटतैं उरैं वियालीस हजार योजन जाइ वियालीस हजार योजन मात्र व्यास करि संयुक्त विदिशा अर अंतर दिशानिविषै द्वीप। हैं। तहां च्यारयौं विदिशानिके दोऊ पार्श्वनि-विषै आठ सूर्यनामा द्वीप हैं। अर दिशा विदिशानिकै वीचि जे आठ अंतर दिशा तिनके दोऊ पार्श्वनिविषै सोलह चंद्रनामा द्वीप हैं। ते सर्व द्वीप गोल आकार हैं। इहां द्वीपनाम टापूका जाननां ॥ ९०९ ॥

तडदो वारसहस्सं गंतूणिह तेत्तियुदयवित्थारो।
गोदमदीओ चिट्ठदि वायव्वदिसम्हि वट्टुलओ ॥ ९१० ॥
तटतो द्वादशसहस्रं गत्वेह तावदुदयविस्तारः।
गौतमद्वीपः तिष्ठति वायव्यादिशि वर्तुलः ॥ ९१० ॥

**अर्थ**—इहां लवण समुद्रके अभ्यंतर तटतैं परैं बारह हजार योजन जाइ तितनांही ऊंचा १२००० अर तितनांही १२००० व्यासका धारक गोल आकार लिएं वायु विदिशाविषै गौतम नामा द्वीप तिष्ठै है ॥ ९१० ॥

बहुवण्णणपासादा वणवेदीसहिय तेसु दीवेसु।
तस्सामी वेलंधरणागा सगदीवणामा ते ॥ ९११ ॥
बहुवर्णनप्रासादाः वनवेदीसहितेषु तेषु द्वीपेषु।
तत्स्वामिनो वेलंधरनागाः स्वकद्वीपनामानस्ते ॥ ९११ ॥

अर्थ—ते ए सर्व द्वीप वन अर वेदिकानि करि सहित हैं। तिनविषै बहुत वर्णना करि संयुक्त मंदिर हैं। बहुरि तिनही द्वीपनिके स्वामी वेलंधर जातिके नागकुमार हैं। ते अपनें अपनें द्वीपके नाम समान नामके धारक हैं॥ ९११॥

**मागहतिदेवदीवत्तिदयं संखेज्जजोयणं गत्ता।**
**तीरादो दक्खिणदो उत्तरभागेवि होदित्ति॥ ९१२॥**

मागधत्रिदेवद्वीपत्रितयं संख्यातयोजनं गत्वा।
तीरात् दक्षिणतः उत्तरभागेपि भवतीति॥ ९१२॥

अर्थ—भरत क्षेत्रविषै जो समुद्रका दक्षिण तट तातैं परैं संख्यात योजन परैं जाइ मागध अर वरतनु अर प्रभास नाम धारक जे तीन देव तिनके तिनही नाम धारक तीन द्वीप हैं। **भावार्थ**—भरत क्षेत्रकी दोय नदीके प्रवेश द्वार अर एक जंबूद्वीपका द्वार इन तीनौं द्वारनिकै सनमुख केते इक योजन जाइ मागधादिक देवनिके द्वीप हैं। इनकौं चक्रवर्ति सावै है। बहुरि तैसैंही ऐरावत क्षेत्रका उत्तर भागविषै भी तीन द्वीप हैं॥ ९१२॥

अब लवणोदक समुद्र कालोदक समुद्रकै अभ्यंतर तिष्टते छिनवै कुमनुष्यनिके द्वीप तिनकौं कहैं हैं;—

**दिसिविदिसंतरगा हिमरजदाचलसिहरिरजदपणिधिगया।**
**लवणदुगे पल्लठिदी कुमणुसदीवा हु छण्णउदी॥ ९१३॥**

दिशाविदिशांतरकाः हिमरजताचलशिखरिरजतप्रणिधिगताः।
लवणद्विके पल्यस्थितयः कुमनुष्यद्वीपा हि षण्णवतिः॥ ९१३॥

अर्थ—लवण समुद्रकी दिशानि विषै च्यारि अर विदिशानि विषै च्यारि अर दिशा विदिशानिकै बीचि जे अंतर दिशा तिन विषै आठ अर हिमवन कुलाचल भरत संबंधी वैताढ्यशिखरी कुलाचल ऐरावत संबंधी वैताढ्य इन पर्वतनिके दोऊ अंतनिकै निकटि दोय तिनके मिले हुए आठ ऐसैं सर्व मिलि लवण समुद्रका अभ्यंतर तट विषै चौईस द्वीप हैं। बहुरि बाह्य तट विषै भी ऐसैं ही चौईस हैं। मिलिकरि अठतालीस भए। ऐसैंही कालोदक समुद्रके दोऊ तटनि विषै अठतालीस द्वीप हैं। ऐसे सर्व मिलि छिनवै कुमनुष्यनिके द्वीप जाननें। बहुरि तहां तिष्टते मनुष्य एक पल्य प्रमाण आयुके धारक हैं॥ ९१३॥

आगैं दोऊ तटनि विषै तिनका अंतराल अर तिनका विस्तारकौं क्रम करिकहैं हैं;—

**दसगुण पण्णं पण्णं पणवण्णं सट्ठिमुवहिमहिगम्म।**
**सय पणवण्णं वण्णं पणुवीसं वित्थडा कमसो॥ ९१४॥**

दशगुणं पंचाशत् पंचाशत् पंचपंचाशत् षष्टिरुदधिमाधिगम्य।
शतं पंचपंचाशत् पंचाशत् पंचविंशतिः विस्तारः क्रमशः॥ ९१४॥

अर्थ—ते द्वीप क्रमतैं दस गुणा पचास अर पचास अर पचावन अर साठि योजन तटिनतैं समुद्र विषै जाइ सौ पचावन पचावन पचीस योजन विस्तार संयुक्त क्रमतैं जाननें। **भावार्थ**—अभ्यंतर

तटतैं परैं अर वाह्य तटतैं उरैं दिशा संवंधी द्वीप पांचसै योजन विदिशा संबंधी द्वीप पांचसैं योजन अंतर दिसा संवंधी पांचसै पचास योजन पर्वत निकटवर्त्ती छसै योजन जाय समुद्र विषै द्वीप हैं। तहां दिशा संवंधी सौ योजन विदिशा संवंधी पचावन योजन अंतर दिशा संवंधी पचास योजन पर्वत निकटवर्त्ती पचीस योजन प्रमाण विस्तार धरैं गोल आकार द्वीप जानने॥ ९१४॥

आगैं तिन द्वीप रूप पर्वतनिका जलतैं उपरि वा नीचैं उच्चत्व कहैं हैं;—

इगिगमणे पणणउदिमतुंगो सोलगुणमुवरि किं पयदे।
दुगजोगे दीउदओ सवेदिया जोयणुग्गया जलदो॥ ९१५॥

एकगमने पंचनवतितुंगः पोडशगुणमुपरि किं प्रकृते।
द्विकयोगे द्वीपोदयः सवेदिका योजनोद्गता जलतः॥ ९१५॥

अर्थ—इहां ऐसा जाननां सम भूमिकी वरोवरि तौ लवण समुद्रके जलका व्यास दोय लाख योजन है। अर क्रमतैं घटता घटता सम भूमितैं नीचैं एक हजार योजन ऊंडा जल है। तहां जलका व्यास दश हजार योजन है अर सम भूमितैं उपरि सोलह हजार योजन ऊंचा जल है। तहां जलका व्यास दश हजार योजन है सो हानिचयका प्रमाण ल्याइ जहां ए द्वीप हैं तहां सन भूमितैं नीचैंकों जो जलकी ऊंडाईका प्रमाण होइ सो तौ जलका नीचैं उच्चत्व जाननां। अर सम भूमितैं उपरि जो जलकी ऊंचाईका प्रमाण होइ सो जलका उपरि उच्चत्व जाननां सो कहिए है। सम भूमिकी वरोवरि जल व्यास दोय लाख योजन सो तो भूमि अर घटता घटता नीचैं जलव्यास दश हजार योजन सो मुख भूमिमैं मुखकों घटाइ अवशेष १९०००० कौं एक पार्श्व ग्रहण करनैकौं आधा किएं पिच्याणवै हजार योजन भए। वहुरि पिच्याणवै हजार योजनकी जलव्यास विषै हांनि होतैं हजार योजन जलकी नीचैंतैं उचाई होइ तौ एक योजनकी हांनि विषै केती होइ ऐसैं त्रैराशिक किएं तटतैं एक योजन गएं सम भूमितैं नीचैं जलकी उंचाईका प्रमाण एक योजनका पिच्याणवैवां भाग आया १÷९५ वहुरि तटतैं एक योजन गएं जो एक योजनका पिच्याणवैवां भाग मात्र जलकी उचाई होइ तौ पांचसै वा साढा पांचसै वा छहसै योजन तटतैं गएं केती उचाई होइ। ऐसैं त्रैराशिक किएं तहां प्रमाण राशिरूप भागहारका भाग दिएं अर अवशेष छेदलब्ध रहे तिनका पांच करि अपवर्तन किएं तटतैं पांचसै आदि योजन गएं तहां सम भूमितैं नीचैं जलका उदय क्रमतैं पांच योजन पांच उगणीसवां भाग अर पांच योजन पांच उगणीसवां भाग अर पांच योजन पंद्रह उगणीसवां भाग अर छह योजन छह उगणीसवां भाग प्रमाण आवै है। सो दिशा संवंधी आदि द्वीपनिकै निकटि इतनां तौ सम भूमितैं नीचैं जलका उच्चत्व जाननां। भाव यहु तहां इतनां ऊंडा जल है। अव सम भूमितैं उपरि जलका उदय ल्याईए हैं—समभूमिकी वरोवरि जल व्यास दोय लाख योजन सो भूमि अर उपरि जल व्यास दश दश हजार योजन सो मुख भूमिमैं मुख घटाइ अवशेषकौं आधा किएं पिच्याणवै हजार योजन भए। सो समभूमितैं उपरि सोलह हजार योजन उंचाई विषै पिच्याणवै हजार योजन जल व्यास विषै हांनि होइ तौ एक योजनकी उचाई विषै केती होइ ऐसैं त्रैराशिक

किएं पिच्याणवैका सोलह्वां भाग प्रमाण आया। बहुरि तटतैं पिच्याणवैका सोलह्वां भाग मात्र जल परैं भएं एक योजन जल ऊंचा होइ तौ तटतैं एक योजन परैं भएं जल केता होइ ऐसैं त्रैराशिक किएं तटतैं एक योजन परैं जल है सो सोलहका पिच्याणवैवां भाग मात्र ऊंचा जलका प्रमाण आया। बहुरि तटतैं एक योजन परैं जल भएं सोलह गुणां पिच्याणवैवां भाग जल ऊंचा होइ तौ पांचैसै वा साढा पांचसै वा छसै योजन तटतैं परैं जल केता ऊंचा होइ ऐसैं त्रैराशिक किएं अर पांच करि अपवर्तन किएं ऐसा। १६००÷१९ १६००÷१९ १७६०÷१९ १९२०÷ १९ इहां भागहारका भाग दिएं पांचसै आदि योजन तटतैं परैं जलकी उचाई क्रमतैं चौरासी योजन च्यारि उगणीसवां भाग अर चौरासी योजन चार उगणीसवां भाग अर बाणवै योजन बारह उगणीसवां भाग अर एकसौ एक योजन एक उगणीसवां भाग मात्र जाननीं। दिशा विदिसा संबंधी द्वीपनिकै निकटि समभूमितैं जल इतनां ऊंचा है। बहुरि समभूमितैं नीचैं अर उपरि जो जलकी उंचाई ताकों मिलाएं जलका अवगाह प्रमाण तिस तिस द्वीपकी उचाई जाननी अर वेदिका करि सहित ते द्वीप जलतैं उपरि एक योजन ऊंचे हैं। तटतैं एक योजन भी जल विषै प्राप्त उचाई विषै मिलाएं। भूमि तलतैं दिशा संबंधी द्वीपनिका निवै योजन नव उगणीसवां भाग अर विदिशा संबंधीनिका निवै योजन नव उगणीसवां भाग अर अंतर दिशा संबंधीनिका निन्याणवै योजन आठ उगणीसवां भाग अर पर्वत सनमुखनिका एक सौ आठ योजन सात उगणीसवां भाग मात्र उच्चत्व जाननां ऐसैं कह्या सर्व विधान सो कौस्तुभ आदि पर्वत द्वीपनि विषै भी जाननां। तटतैं जितनैं योजन दूर कहे हैं ताकै अनुसारि यथा संभवतैं उंचाईका वा जलतैं उंचाईका प्रमाण ल्यावनां ॥ ९१५ ॥

अब तिन कुभोगभूमिनि विषै उत्पन्न मनुक्षनिकी आकृतिनका स्थान पांच गाथानि करि कहैं हैं;—

**एगुरुगा लंगलिगा वेसणगाऽभासगा य पुव्वादी।**
**सक्कुलिकण्णा कण्णप्पावरणा लंवकण्ण ससकण्णा ॥ ९१६ ॥**

एकोरुकाः लांगलिकाः वैपाणिकाः अभाषकाः च पूर्वादिषु।
शष्कुलिकर्णाः कर्णप्रावरणाः लंवकर्णाः शशकर्णाः ॥ ९१६ ॥

**अर्थ—**एकोरुका कहिए एक ही जांघवाले अर लांगुलिका कहिए पूंछ संयुक्त अर वैषाणिका कहिए सींग युक्त अर अभाषका कहिए न बोलने वाले गूंगे ऐसैं ए च्यारि तौ पूर्वादिक दिशा संबंधी द्वीपनि विषै वसै हैं। बहुरि शष्कुलिकर्णाः कहिए शकुलि समान हैं कान जिनकैं अर कर्णप्रावरणा कहिए कांन है वस्त्र समान शरीर आच्छादनकौं कारण जिनकौं अर लंवकर्णा कहिए लांबा है कान जिनकै अर शशकर्णा कहिए सुसाका समान हैं कान जिनकैं ऐसैं ए च्यारि विदिशानि विषै वसै हैं ॥ ९१६ ॥

**सिंहस्ससाणमहिसवराहमुहा वग्घघूयकपिवदणा।**
**झसकालमेसगोमुहमेघमुहा विज्जुदप्पणिभवदणा ॥ ९१७ ॥**

सिंहाश्वश्वामहिषवराहमुखाः व्याघ्रघूककपिवदनाः ।
झषकालमेषगोमुखमेघमुखाः विद्युद्दर्पणेभवदनाः ॥ ९१७ ॥

अर्थ—नाहर घोड़ा कुत्ता भैंसा सूर वघेरा घूघू वांदरा समान है मुख जिनका अैसे सिंह मुख अर अश्व मुख अर सुनक मुख अर महिप मुख अर वराह मुख अर व्याघ्र वदन अर घूघू वदन अर कपि वदन हैं। ते ए आठ भए। वहुरि मीन काळ मीढा गऊ मेघ वीजुरी आरसा हाथी समान है मुख जिनका अैसे झप मुख अर गोमुख अर मेघ मुख अर विद्युद्वदन अर दर्पण वदन अर इभ वदन हैं तेस आठ भए। इहां विशेप कह्या आकारतै अन्य सर्व आकार मनुष्यका जाननां ॥ ९१७ ॥

**अग्गिदिसादी सक्कुलिकण्णादी सिंहवदणणरपमुहा ।**
**एगूरुगसक्कुलिसुदिपहुदीणं अंतरे णेया ॥ ९१८ ॥**

अग्निदिशादिपु शष्कुलिकर्णादयः सिंहवदननरप्रमुखाः ।
एकोरुशष्कुलिश्रुतिप्रभृतीनां अंतरे ज्ञेयाः ॥ ९१८ ॥

अर्थ—अग्निदिशादिक जे विदिशा तिन विपै क्रमतैं शष्कुलि कर्ण आदि वसै हैं। वहुरि सिंह वदन युक्त मनुष्य आदि आठ क्रमतैं एको रूक शष्कुलिकर्णनिका अंतरालादि आठ अंतरालनिविषै वसैं हैं ऐसैं जाननें ॥ ९१८ ॥

**गिरिमत्थयत्थदीवा पुव्वुत्ता सगणगस्स पुव्वदिसे ।**
**पच्छा भणिदा पच्छिमभागे अत्थंति ते कमसो ॥ ९१९ ॥**

*गिरिमस्तकस्थद्वीपाः पूर्वोक्ताः स्वकनगस्य पूर्वदिशि ।*
पश्चात् भणिताः पश्चिमभागे आसते ते क्रमशः ॥ ९१९ ॥

अर्थ—हिमाचल अर भरत वैताढ्य अर शिखरी अर ऐरावत वैताढ्य इन च्यारि पर्वतनिका मस्तक विषै तिष्ठते द्वीपनिकेवासी झपमुख आदि जाननें। तहां झपमुख काळ मुख आदि च्यारि युगलनि विषै जिनकौं पहलैं कहे ते तौ अपनें अपनें पर्वतकी पूर्वदिशा विषै तिष्ठै हैं। पीछैं कहे ते तिस पर्वतका पश्चिम भाग विपै तिष्ठे हैं ॥ ९१९ ॥

**एगोरुगा गुहाए वसंति जेमंति मिट्ठतरमट्टिं ।**
**सेसा तरुतलवासा कप्पदुमदिण्णफलभोजी ॥ ९२० ॥**

एकोरुका गुहायां वसंति जेमंति मृष्टतरमृत्तिकां ।
शेषाः तरुतलवासाः कल्पद्रुमदत्तफलभोजिनः ॥ ९२० ॥

अर्थ—पूर्वं कहे कुमनुष्य तिन विपै एकोरूक तौ गुफा विपै वसै हैं अर तहांकी अधिक मीठी मृतिकाकौं जीमैं हैं भखै हैं। वहुरि अवशेप सर्व वृक्षनिकै नीचैं वसै हैं। अर कल्पवृक्षनिकरि दिए फलनिकौं भखै हैं। तहां जन्मादिककी जघन्य भोग भूमिवत् प्रवृति जाननी ॥ ९२० ॥

आगैं तिन छिनवै द्वीपनिकी संख्याका विशेप वर्णन कहै हैं;—

**चउवीसं चउवीसं लवणदुतीरेसु कालदुतडेवि ।**
**दीवा तावदियंतरवासा कुणरा वि तण्णामा ॥ ९२१ ॥**

चतुर्विंशं चतुर्विंशं लवणद्वितीरयोः कालद्वितटयोरपि।
द्वीपाः तावदंतरव्यासाः कुनरा अपि तन्नामानः॥ ९२१॥

अर्थ—लवण समुद्रके दोय तीरनि विषै चौवीस चौवीस द्वीप हैं। बहुरि कालोदक समुद्रके दोय तटनि विषै भी चौवीस चौवीस द्वीप हैं। इहां दिशा विदिशा अंतर दिशा संबंधी द्वीप तौ सर्वत्र तीरनिकी दिशा विदिशा अंतरदिशानि विषै हैं ही। बहुरि पर्वत संबंधी द्वीप लवण समुद्रके अभ्यंतर तट विषै तौ जंबूद्वीप संबंधी पर्वतानिके दोऊ अंतनिविषै स्थित हैं। अर लवण समुद्रके बाह्य तट विषै अर कालोदकके अभ्यंतर तट विषै धातुकी खंड संबंधी पर्वतनिका एक एक अंत विषै स्थित हैं असा जाननां। बहुरि द्वीपनिका तटतैं अंतराल अर व्यास लवण समुद्रवत तितनें ही पूर्वोक्त प्रमाण जाननें। बहुरि तिन द्वीपनि विषै वसते कुमनुक्ष भी तिस तिस द्वीप नाम समान हैं नाम जिनका ऐसे हैं॥ ९२१॥

आगैं तिन कुभोग भूमि रूप कुमनुक्षनिके द्वीपनि विषै जे उपजै हैं तिनकौं गाथा तीन करि कहैं हैं;—

**जिणलिंगे मायावी जोइसमंतोवजीवि धणकंखा।**
**अइगवरवसण्णजुदा करेंति जे परविवाहंपि॥ ९२२॥**

जिनलिंगे मायाविनो ज्योतिर्मंत्रोपजीविनः धनकांक्षिणः।
अतिगारवसंज्ञायुताः कुर्वंति ये परविवाहमपि॥ ९२२॥

अर्थ—जे जीव जिन लिंग धारि तीह जिन लिंग विषै कपट संयुक्त मायावी हैं। वा जिन लिंग विषै ज्योतिष मंत्र वैद्य आदि करि आहारादिरूप कपट आजीविका करै हैं। वा जिन लिंग विषै धन चाहैं हैं। वा जिन लिंग विषै ऋधि यश साता रूप गारव करि उपयुक्त हैं। वा जिन लिंग विषै आहार भय मैथुन परिग्रहरूप संज्ञानि करि संयुक्त हैं। वा जिन लिंग विषै अन्य ग्रहस्थनिका परस्पर विधि मिलाइ विवाह करै हैं॥ ९२२॥

**दंसणविराहिया जे दोसं णालोचयंति दूसणगा।**
**पंचग्गितवा मिच्छा मोणं परिहरिय भुंजंति॥ ९२३॥**

दर्शनविराधका ये दोषं नालोचयंति दूषणकाः।
पंचाग्नितपसः मिथ्याः मौनं परिहृत्य भुंजते॥ ९२३॥

अर्थ—जे जिन लिंग विषै सम्यग्दर्शनके विराधक हैं। जे जिन लिंग विषै अपनैं किए हुए दोषकौं श्री गुरुनिकै निकटि आलोचना न करै हैं। जे जिन लिंग विषै अन्य जीवनिकौं दोष लगावै हैं। जे मिथ्यादृष्टी पंचाग्नि साधन आदि तप करै हैं। जे मौनकौं छोड़ि भोजन करै हैं॥ ९२३॥

**दुब्भावअसुचिसूदगपुप्फवईजाइसंकरादीहिं।**
**कयदाणा वि कुवत्ते जीवा कुणरेसु जायंते॥ ९२४॥**

दुर्भावाशुचिसूतकपुष्पवतीजातिसंकरादिभिः।
कृतदाना अपि कुपात्रेषु जीवाः कुनरेषु जायंते॥ ९२४॥

**अर्थ**—खोटे भावकरि वा अपवित्रताकरि वा मृतादिकका सूतक करि वा पुष्पवती स्त्रीका संसर्ग करि वा परस्पर विपरीत कुलनिका मिलनें रूप जो जातिसंकर ताकों आदि दैकरि संयुक्त जे दान करै हैं। बहुरि जे कुपात्रनि विषै दान करै हैं ते ए जीव कुमनुक्षनि विषै उपजै हैं जातैं ए जीव मिथ्यात्व पाप सहित किंचित पुण्य उपार्जन करैं हैं॥ ९२४॥

अथ धातुकी खंड अर पुष्करार्ध द्वीपनि विषै रचना विषैका एक विधान है तातैं आगैं करिए हैं जे क्षेत्र तिनके विभागकौं कारण भूत ऐसे जे तिन द्वीपनिके दोऊ पार्श्वनि विषै तिष्ठते इष्वाकार पर्वतनिकौं कहे हैं;—

**चउरिसुगारा हेमा चउकूड सहस्सवास णिसहुदया।**
**सगदीववासदीहा इगिइगिवसदी हु दक्खिणुत्तरदो॥ ९२५॥**

चतुरिष्वाकारा हेमाः चतुःकूटाः सहस्रव्यासा निषधोदयाः।
स्वकद्वीपव्यासदीर्घा एकैकवसतयः हि दक्षिणोत्तरतः॥ ९२५॥

**अर्थ**—धातकी अर पुष्करार्ध विषै मिलाए हुए चारि इष्वाकार पर्वत हैं ते सुवर्ण मय हैं। अर च्यारि च्यारि कूटनि करि युक्त हैं पूर्व पश्चिम विषै हजार योजन चौडे हैं। निषध कुलाचल समान च्यारिसै योजन ऊंचे हैं। दक्षिण उत्तर विषै अपनें अपनें द्वीपका व्यास समान च्यारि व आठ लाख योजन लंबे हैं। एक एक क्षेत्रादि रचना रूप वसती लीएं हैं। ऐसैं इष्वाकार तिन दोऊ द्वीपनिकी दक्षिण अर उत्तर दिसानि विषै तिष्ठै हैं॥ ९२५॥

आगैं तिन दोऊ द्वीपनि विषै तिष्ठते कुलाचल आदि तिनका स्वरूप निरूपैं हैं;—

**कुलगिरिवक्खारणदीदहवणकुंडाणि पुक्खरदलोत्ति।**
**ओवेहुस्सेहसमा दुगुणा दुगुणा दु वित्थिण्णा॥ ९२६॥**

कुलगिरिवक्षारनदीद्रहवनकुंडानि पुष्करदल इति।
अवगाधोत्सेधसमा द्विगुणा द्विगुणाः तु विस्तीर्णाः॥ ९२६॥

**अर्थ**—धातकी खंडतैं लगाय पुष्करार्ध पर्यंत तिस एक एक द्वीप विषै तिष्ठते दोऊ मेरु संबंधी कुलाचल बारह बहुरि गजदंतानि करि सहित वक्षार चालीस बहुरि गंगा सिंधु आदि अर विभंगा अर कच्छादि विदेह संबंधी दोय दोय मिलाई हुई नदी एकसौ असी। बहुरि कुलाचलनिके उपरि तिष्ठते अर भोग भूमि भद्रसालनिके मध्य तिष्ठते मिले हुए द्रह बावन बहुरि पर्वत नदी आदिनिके पार्श्व विषै तिष्ठते वन संख्याते अर गंगादिकानिके पडनेके अर विभंगा विदेह नदीनिके उपजनेके मिले हुए कुंड एकसौ असी ए सर्व उंडाई उंचाई इत्यादि करि तौ जंबू द्वीप विषै तिष्ठते कुलाचल आदिकनिकै समान जाननें। अर इनका विस्तार जो चौड़ाईका प्रमाण सो जंबूद्वीप संबंधीनितैं दूणे दूणे हैं। जंबूद्वीप संबंधी कुलाचलादिकनिका विस्तार तौं धातुकी खंडसंबंधीनिका दूणा है। धातकी खंड संबंधीनिकातैं पुष्करार्द्ध संबंधीनिका दूणा है॥ ९२६॥

आगैं ड्यौढ द्वीप विषै तिष्ठते क्षेत्र अर कुलाचलनिके आकारकौं निरूपै हैं;—

**सयलुद्धिणिभा वस्सा दिवड्ढदीवम्हि तत्थ सेलाओ।**
**अंते अंकमुहाओ खुरप्पसंठाणया बाहिं॥ ९२७॥**

शकटोर्धनिभा वर्षाः द्व्यर्धद्वीपे तत्र शैलाः ।
अंतः अंकमुखाः क्षुरप्रसंस्थानका बहिः ॥ ९२७ ॥

**अर्थ**—एक तौ धातकी खंड अर आधा पुष्कर ऐसें ड्योढ़ द्वीपविषै जे क्षेत्र ते तौ शकटोर्द्धिका जो गाड़ाकी ऊर्धिका तीह समान जाननें अर तहां शैल जे कुलाचल ते अभ्यंतरविषै तौ अंकमुख हैं अर बाह्यविषै क्षुरप्रसंस्थान कहिए हैं। सो इनका आकार ऐसा जांननां। इहां धातकी खंडकी पुष्करार्द्धकी रचना ऐसी जाननी ॥ ९२७ ॥

आगैं धातकी खंड पुष्करार्द्धनि विषै पर्वतनिके क्षेत्रादिकका आकारकी रचना करि रोक्या हुवा क्षेत्रकौं कहता तिनकी परिधिनिकौं ल्यावै हैं;—

**दुगचउरट्ठडसगइगि दुकला चउरडछपंचपणतिण्णि ।**
**चउक्कलमगरुद्धधरा जाणादिममज्झचरिमपरिहिं च ॥ ९२८ ॥**

द्विकचतुरष्टाष्टसप्तैकं द्विकले चतुरष्टषट्पंचपंचत्रीणि ।
चतुष्कलमगरुद्धधरा जानीहि आदिममध्यचरमपरिधीन् च ॥ ९२८ ॥

**अर्थ**—दोय च्यारि आठ आठ सात एक इनके अंकनि करि एक लाख अठहत्तरि हजार आठसै बियालीस योजन अर एक योजनके उगणीस भागनिविषै दोय कला इतनां तौ धातकी खंडका पर्वतनिकरि रोक्या हुवा क्षेत्र है। बहुरि च्यारि आठ छह पांच पांच तीन इनके अंकनि करि पैंतीस लाख पचावन हजार छसै चौरासी योजन अर उगणीस भागनिविषै च्यारि कला इतनां पुष्करार्द्धका पर्वतनिकरि रोक्या हुवा क्षेत्र है। बहुरि तिन द्वीपनिविषै भरतादि क्षेत्रनिका व्यास जाननैंके अर्थि तिनकी आदि परिधि मध्य परिधि बाह्य परिधि हे शिष्य तू जांनि। इहां पर्वतनि करि रोक्या हुवा क्षेत्र ल्यावनेंका विधानकौं प्रगट करै है। धातकी खंडविषै क्षेत्रनिका विस्तार तौ विषमरूप है। अर पर्वतनिका विस्तार जंबूद्वीप संबंधीनितैं दूणा ही है। तातैं जंबूद्वीप संबंधी पर्वतनि करि रोक्या हुवा क्षेत्र कहि इन द्वीपसंबंधी पर्वतनि करि रोक्या हुवा क्षेत्र कहिए है। भरत आदि क्षेत्रनिकी शलाका तौ क्रमतैं एक च्यारि सोलह चौसठि सोलह च्यारि एक सो मिलाई हुई एकसौ छह भई अर हिमवत आदि पर्वतनिकी शलाका क्रमतैं दोय आठ बत्तीस आठ दोय सो मिलाई हुई चौरासी हुई ए सर्व पर्वत सर्व क्षेत्रनिकी शलाका मिलाइए सो मिश्र शलाका कहिए है। सो मिश्र शलाका एकसौ निवै भई। प्रवृत्तिविषै शलाकाका नाम विसवा है। ऐसैं इन एकसौ निवै मिश्र शलाकानिका क्षेत्रपर्वतनिका मिल्या हुवा क्षेत्र एक लाख योजन होइ तौ क्षेत्र रहित शुद्ध पर्वत शलाका चौरासी तिनका केता क्षेत्र होइ ऐसैं त्रैराशिक किएं जंबूद्वीपविषै पर्वतनिकरि रोक्या हुवा क्षेत्र चौरासी गुणां एक लाखकौं एकसौ निवैका भाग दीजिए इतनां भया १ ल ८४÷१९० बहुरि एक शलाका क्षेत्रका धातकी खंडविषै दूणां विस्तार होइ तौ इतनें १ ल ८४÷१९० शलाका क्षेत्रका कितनां होइ ऐसैं त्रैराशिक किएं तातैं दूणां धातकी खंडका एक मेरु संबंधी एक भागविषै पर्वतनि करि रोक्या हुवा क्षेत्र ऐसा २ ल ८४÷१९० आया। बहुरि एक भागविषै इतनां २ ल ८४÷१९० क्षेत्र है तौ दोय मेरु संबंधी दोय भागनि विषै केता होइ ऐसैं त्रैराशिक किएं तातैं दूणा ऐसा

४ ल ८४÷१९० धातकी खंड विषै कुलाचलनिकरि रोक्या हुवा क्षेत्र प्रमाण आया। अब याहीका अन्य विधान कहैं हैं। धातकी खंड विषै जंवूद्वीपतैं पर्वत वा क्षेत्रनिका दूणा प्रमाण है तातैं शलाकाका प्रमाण भी तहां दूणां भया। सो पर्वतनिकी शुद्ध शलाका एकसौ अडसठि तिनका पूर्वोक्त इतनां ४ ल ८४÷१९० क्षेत्र होइ तौ मिश्र शलाका जंवूद्वीप शलाकातैं दूणी तीनसै असी तिनका केता क्षेत्र होइ ऐसैं त्रैराशिक किएं इतनां भया ४ ल ८४।३८०÷१९०।१६८ इहां इछा तीनसै असीका दोय करि संभेदन किएं अर दोय करि चौरासीकों गुणें ऐसा ४ ल १६८।१९०÷१९०।१६८ भया अपवर्त्तन किएं घातकी खंडका मिश्र क्षेत्र च्यारि लाख योजन भया। इहां मिश्र क्षेत्र वा मिश्र शलाका ऐसैं हैं नांहीं जातैं जंवूद्वीपवत क्षेत्रनिका पर्वतनितैं दूणां अनुक्रमका इहां अभाव है। तथापि जंवूद्वीप अपेक्षा कथन दिखावनैंकों कल्पना करि कह्या है। बहुरि तीनसै असी मिश्र शलाकानिका क्षेत्र च्यारि लाख योजन होइ तौ एकसौ अडसठि शुद्ध पर्वत शलाकानिका केता होइ ऐसैं त्रैराशिक किएं ऐसा ४ ल १६८÷३८० भया। इहां दोय करि अपवर्तन किएं पूर्वोक्त प्रमाण ही चौरासी गुणा च्यारि लाख एक सौ निवै करि भाजित क्षेत्र आया ४ ल ८४÷१९० इहां इछा चौरासी करि गुणें ऐसा ३३६०००००÷१९० भागहारका भाग दिएं एक लाख छिहंतर हजार आठसै वियालीस योजन अर दोय उगणीसवां भाग मात्र १७६८४२।२÷१९ कुलाचलनि करि रोक्या हुवा क्षेत्र जाननां। यामैं दोऊं इष्वाकारनिका व्यास दोय हजार योजन जोड़ें पूर्वोक्त प्रमाण १७८८४२।२÷१९ धातकी खंडका पर्वतनिकरि रोक्या हुवा क्षेत्र प्रमाण हो है। बहुरि धातुकी खंडके कुलाचलनिका व्यासतैं पुष्करार्द्धके कुलाचलनिका दूणा व्यास है। तातैं पूर्वोक्त कुलाचलनिका रोक्या हुवा क्षेत्र प्रमाण ऐसा १७८४२।२÷१९ ताकों दूणा करि ३५३६८४।४÷१९ यामैं दोय इष्वाकारनिका व्यास दोय हजार योजन जोड़ें पूर्वोक्त प्रमाण ३५५६८४।४÷१९ पुष्करार्द्धका पर्वतनिकरि रोक्या हुवा क्षेत्रप्रमाण हो है। अब क्षेत्र व्यास ल्यावनेकों कहिए हैं। धातकी खंडका व्यास च्यारि लाख योजन ताकों आदि मध्य अंत करि तीन जायगा स्थापि बहुरि लवणादीणं वासं इत्यादि पूर्वोक्त सूत्र करि ताकी लवण समुद्रकै निकटि आदि सूची पांचलाख योजन अर मध्य विषै मध्य सूची नव लाख योजन अर कालोदक समुद्रकै निकटि बाह्यसूची तेरह लाख योजन आवै है। ताकौं ल्याइ विक्खंभवग्गदह गुणकरिणी वट्टस्स परिहियं होदि इस करण सूत्र करि मूल ग्रहण योग्य करिणीरूप परिधि ऐसा आवै है। आदि २५ विंदी ११ मध्य ८१ विंदी ११ बाह्य १६९ विंदी ११ इनका वर्गमूल ग्रहण किएं धातकी खंडका अभ्यंतर परिधि पंद्रह लाख इक्यासी हजार एकसौं गुणतालीस योजन मध्य परिधि अठाईस लाख छियासी हजार नवसै इकसठि योजन बाह्य परिधि इकतालीस लाख दश हजार नवसै इकसठि योजन प्रमाण हो है। इन तीनों परिधिनि विषै पूर्वोक्त धातुकीखंडका पर्वतनिकरि रोक्या हुवा क्षेत्र १७८८४२।२÷१९ घटाएं क्रमतैं पर्वत रहित क्षेत्र अभ्यंतर परिधि विषै चौदह लाख दोय हजार दोयसै सित्याणवै योजन मध्य परिधि विषै छवीस लाख सडसठि हजार दोयसै आठ योजन बाह्य परिधि विषै गुणतालीस लाख बत्तीस हजार एकसौ उगणीस योजन प्रमाण हो है। इहां योजननिके अंश अधिक हीन है तिनकों नांहीं गिने हैं। स्थूल रूप वर्णन किया है ॥९२८॥

इन तीन पर्वत रहित क्षेत्रनिकों धारि अब भरतादि क्षेत्रनिका अभ्यंतर आदि विष्कंभ कहैं हैं;—

भरहइरावदवस्सा विदेहवस्सोत्ति चउविगुण वस्सा ।
गिरिविरहियपरिहीणं हारो विण्णिसयवारं च ॥ ९२९ ॥

भरतैरावतवर्षात् विदेहवर्षांतं चतुःद्विगुणा वर्षाः ।
गिरिविरहितपरिधीनां हारः द्विशतं द्वादश च ॥ ९२९ ॥

अर्थ—भरत क्षेत्रतैं वा ऐरावत क्षेत्रतैं लगाइ विदेह क्षेत्र पर्यंत क्षेत्रनिका विष्कंभ क्रमतैं चौगुणां है। तातैं भरतकी एक हैमवतकी चारि हरिकी सोल्ह विदेहकी चौसठि ऐरावतकी एक हैरण्यवतकी च्यारि रम्यककी सोल्ह शलाका जाननी। सब मिलाएं एक सौ छह शलाका भई दोय मेरु संबंधी दोऊ भागनिके ग्रहण करनेंकों दूणी किएं दोयसै वारह शलाका भई तातैं पर्वत राहित परिधि प्रमाणकों दोयसै वारहका भागहार जाननां। कैसैं सो कहिए हैं। दोयसै वारह शलाकानिका अभ्यंतर परिधि विषै पर्वत रहित क्षेत्र इतनां १०।२२९७ होइ तौ भरतादिकनिकी एक आदि १।४।१६।६४।१।४।१६ शलाकानिका केता होइ ऐसैं त्रैराशिक करि भरतकी एक शलाका अपेक्षा पर्वत रहित क्षेत्रकों भागहार दोयसै वारहका भाग दिएं भरतका अभ्यंतर विष्कंभ छह हजार छहसै चौदह योजन अर एक योजनके दोयसै वारह अंशनि विषै एकसौ गुणतीस अंश प्रमाण हो है। ऐसैं ही विधानकरि तिस भरतका मध्य विष्कंभ वारह हजार पांचसै इक्यासी योजन अर छत्तीस अंश प्रमाण हो है। वाह्य विष्कंभ अठारह हजार पांचसैं सैंतालीस योजन अर एकसौ पचावन अंश प्रमाण हो हैं। ऐसैंही हैमवत आदि विषैं भी विधान करनां। अथवा भरतके अभ्यंतर आदि विष्कंभनिकों क्रमतैं च्यारि च्यारि गुणें हैमवत हरि विदेह क्षेत्रके अभ्यंतर आदि विष्कंभ हो हैं। ऐसैंही ऐरावत पर्यंत जानना। वहुरि पुष्करार्द्धकी कालोदक समुद्रकें निकटि अभ्यंतर सूची गुणतीस लाख योजन अर व्यासका मध्य विषै मध्य सूची सैंतीस लाख योजन अर मानुषोत्तरकै निकटि वाह्य सूची पैंतालीस लाख योजन प्रमाण है। इनका पूर्वोक्त विधान किएं पुष्करार्धका अभ्यंतर परिधि इक्याणवै लाख सत्तरि हजार छसै पांच योजन, मध्य परिधि एक कोडि वियालीस लाख तीस हजार दोयसै गुणचास योजन प्रमाण हो है। इन विषैं पर्वतनि करि रोक्या हुआ क्षेत्र तीन लाख पचावन हजार छसै चौरासी योजन घटाएं पर्वतनिकरि रहित क्षेत्र अभ्यंतर परिधिविषै अठ्यासी लाख चौदह हजार नवसै इकईस योजन अर मध्य परिधिविषै एक कोडि तेरह लाख चवालीस हजार सातसै तियासी योजन, अर वाह्य परिधिविषै एक कोडि अडतीस लाख चहोत्तरि हजार पांचसै पैंसठि योजन प्रमाण है। इनकौं भरतकी शलाका एक ताकरि गुणें अर दोयसै वारहका भाग दिएं पुष्करार्धके भरतका अभ्यंतर विष्कंभ इकतालीस हजार पांचसै गुण्यासी योजन अर योजनके दोयसै वारा अंशनिविषै एकसौ तहेत्तरि अंश प्रमाण हैं। मध्य विष्कंभ तरेपन हजार पांचसै वारह योजन अर एक सो निन्याणवै अंश प्रमाण है। वाह्य विष्कंभ पैंसठि हजार च्यारिसै छियालीस योजन अर तेरह अंश प्रमाण है। वहुरि याकौं चौगुणा किएं हैमवतके वहुरि याकौं चौगुणां किएं हरिके वहुरि याकौं चौगुणा किएं

विदेहके अभ्यंतर मध्य बाह्य विष्कंभनिका प्रमाण हो है। ऐसैं ही भरत हैमवत हरि ऐरावत हैरण्यवत रम्यक क्षेत्रनिके विष्कंभ जाननें ॥ ९२९ ॥

| नाम | अभ्यंतर विष्कंभ | | मध्य विष्कंभ | | बाह्य विकंभ | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| भरत | ६६१४ | १२९÷२१२ | १२५८१ | ३६÷२१२ | १८५४७ | १५५÷२१२ |
| हैमवत | २६४५८ | ९२÷२१२ | ५०३२४ | १४४÷२१२ | ७४१९० | १९६÷२१२ |
| हरि | १०५८३३ | १५६÷२१२ | २०१२९८ | १५२÷२१२ | २९६७६३ | १४८÷२१२ |
| विदेह | ४२३३३४ | २००÷२१२ | ८०५१९४ | १८४÷२१२ | ११८७०५४ | १६८÷२१२ |
| ऐरावत | ६६१४ | १२९÷२१२ | १२५८१ | ३६÷२१२ | १८५४७ | १५५÷२१२ |
| हैरण्यवत् | २६४५८ | ९२÷२१२ | ५०३२४ | १४४÷२१२ | ७४१९० | १९६÷२१२ |
| रम्यक | १०५८३३ | १५६÷२१२ | २०१२९८ | १५२÷२१२ | २९६७६३ | १४८÷२१२ |

| नाम | अभ्यंतर | विष्कंभ | मध्य | विष्कंभ | बाह्य | विष्कंभ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| भरत | ४१५७९ | १७३÷२१२ | ५३५१२ | १९९÷२१२ | ६५४४६ | १३÷२१२ |
| हैमवत | १६६३१९ | ५६÷२१२ | २१४०५१ | १६०÷२१२ | २६१७८४ | ५२÷२१२ |
| हरि | ६६५२७७ | १२÷२१२ | ८५६२०७ | ४÷२१२ | १०४७१३६ | २०८÷२१२ |
| विदेह | २६६५११०५ | ३५÷२१२ | ३४२४८२८ | १६÷२१२ | ४१८८५४७ | १९६÷२१२ |
| ऐरावत | ४१५७९ | १७३÷२१२ | ५३५१२ | १९९÷२१२ | ६५४४६ | १३÷२१२ |
| हैरण्यवत् | १६६३१९ | ५६÷२१२ | २१४०५१ | १६०÷२१२ | २६१७८४ | ५२÷२१२ |
| रम्यक | ६६५२७७ | १२÷२१२ | ८५६२०७ | ४÷२१२ | १०४७१३६ | २०८÷२१२ |

अब धातकी खंडका विदेह क्षेत्र विषै तिष्ठते कच्छादिक देस तिनका आयामकौं गाथा तीन करि कहै हैं;—

**गिरिजुद् दुभद्दसालं मज्झिमसूइम्हि धणरिणे सूई।**
**पुव्ववरमेरुबाहिरअब्भंतरभद्दसालअंतस्स ॥ ९३० ॥**

गिरियुतं द्विभद्रशालं मध्यमसूचौ धनर्णे सूची।
पूर्वापरमेरुबाह्याभ्यंतरभद्रशालांतस्य ॥ ९३० ॥

**अर्थ**—इहां विदेहके कच्छादिक देशनिका दक्षिण उत्तर विषै व्यास है सो परिधिविषै है तातैं तहांकी परिधि कहिए हैं। धातकी खंडकी मध्यविषै मध्यसूची भई। बहुरि याविषै इतनां सूची व्यास और जोडैं वा घटाएं जहां जेता सूची व्यास होइ सो कहिए हैं। पूर्व पश्चिम मेरुनिका आधा आधा व्यास ग्रहण किएं एक मेरुका व्यास समान चौराणवैसौ योजन भए। अर तिन दोऊ मेरुनिके कालोदकी तरफ जे दोय बाह्य भद्रसाल तिनका व्यास दोयलाख पंद्रह हजार सातसै अठावन योजन इनकौं जोडि २२५१५८ मध्य सूची नव लाख योजन विषै धन किएं जोडें

पूर्व पश्चिम मेरुके जे दोय भद्रसाल तिनकी कालोदकी तरफ अंत विषैं वाह्य सूची ग्यारह लाख पचीस हजार एकसौ अठावन योजन प्रमाण हो हैं। वहुरि तिस मध्य सूची नवलाख योजन विषै दोय मेरुनिका आधा आधा व्यास अर दोय अभ्यंतर भद्र शालनिका व्यास जोड़ि २१५१५८ ऋण किएं घटाएं लवण समुद्रकी तरफ जो अंत तहां अभ्यंतर सूची व्यास छह लाख चहौत्तरि हजार आठसै वियालीस योजन हो है ऐसैं सूची व्यास ल्याइ अत्र इनकी परिधि कहिए हैं। वहुरि इस अभ्यंतर सूचीव्यासका ६७४८४२ विष्कंभवग्गदहगुण इत्यादि करण सूत्र करि कारणि रूपपरिधि किएं ऐसा ४५५४११७२४९६४० भया याका वर्गमूल ग्रहें इकईस लाख चौंतीस हजार सैंतीस योजन तिस अभ्यंतर भद्रसालकी सूचीका परिधि हो हैं। वहुरि यामैं धातकी खंडका पर्वतनिकरि रोक्या हुवा क्षेत्र एक लाख अठहत्तरि हजार आठसै वियालीस योजन घटाएं पर्वत रहित परिधि उगणीस लाख पचावन हजार एकसै पिच्याणवै योजन मात्र हो है ॥ ९३० ॥

गिरिरहिदपरिहिगुणिदं अडकदिणा विसयवारसेहिं हिदं।
णादिहीणदलं दीहं कच्छादिमगंधमालिणी अंते ॥ ९३१ ॥

गिरिरहितपरिधिगुणितं अष्टकृतिना द्विशतद्वादशैः हितं।
नदीहीनदलं दीर्घं कच्छादिमं गंधमालिनी अंते ॥ ९३१ ॥

अर्थ—दोयसै वारह शलाकानिका पर्वत रहित परिधि प्रमाण क्षेत्र १९५५१९५ होइ तौ चौसठि विदेहकी शलाकानिका केता होइ ऐसैं त्रैराशिक करि पर्वत रहित परिधिकौं आठकी कृति चौसठि ताकरि गुणिए १२५१३२४८० अर प्रमाण राशी दोयसै वाराका भाग दीजिए तव लवण्य समुद्रकी तरफ जो अभ्यंतर भद्रशालकी अभ्यंतर सूची स्थानविषै विदेह क्षेत्रका विष्कंभ पांच लाख निवै हजार दोयसै सैंतालीस योजन अर योजनके दोयसै वारह अंशनिविषै एकसौ सोलह अंश प्रमाण हो है। इहां सीतोदा नदीका व्यास एक हजार योजन ताकौं घटाइ अवशेष ५८९२४७।११६÷२१२ का आधा किएं दोय लाख चौराणवै हजार छसै तेईस योजन अर योजनके दोयसै वारह अंशनिविषै एकसौ चौसठि अंश प्रमाण अभ्यंतर भद्रशालकी वेदीकै निकटि गंधमालिनी नामा देशका अंतविषै दक्षिण उत्तरकी लंबाईका प्रमाण है। पूर्व ल्याया हुवा धातकी खंडके वाह्य भद्रसालका सूची व्यास ११२५१५८ ताकी करणि रूप परिधि किएं ऐसा १२६-५९८०५२४९६४० भया याका मूल ग्रहें ताका परिधिका प्रमाण पैंतीस लाख अठावन हजार वासठि योजन प्रमाण हो है। यामैं पर्वतनि करि रोक्या हुवा क्षेत्र १७८८४२ घटाएं तेतीस लाख गुण्यासी हजार दोयसै वीस रहे तिनकौं पूर्वोक्त प्रकार त्रैराशिक करि आठकी कृति जो चौसठि ताकरि गुणें ऐसा २१६२७००८० याकौं दोयसै वारहका भाग दिएं कालोद समुद्रकी तरफ जो वाह्य भद्र सालकी सूचीका स्थान विषै तिस भद्रसालकी वेदीके निकटि विदेह क्षेत्रका विस्तार दश लाख वीस हजार एकसौ इकतालीस योजन अर योजनके दोयसैं वारह अंशनि विषै एकसौ अठ्यासी अंश प्रमाण हो है। यामैं सीता नदीका व्यास एक हजार योजन घटाइ अवशेष १०१९१४१।१८८÷२१२ का आधा किएं वाह्य भद्रसालकी वेदीके निकटि कछा देशका

अभ्यंतर आयाम पांच लाख नव हजार पांचसै सत्तरि योजन अर योजनके दोयसै वारह अंशनि विषै दोयसै अंश प्रमाण हो है ॥ ९३१ ॥

अब कछादिक देशनिका मध्यविषै आयाम अर अंतविषै आयाम ल्यावनेंकों व्याख्यान गाथा दोय करि कहैं हैं;—

विजयावक्खाराणं विभंगणदिदेवरण्ण परिहीओ ।
विण्णिसयवारभजिदा वत्तीसगुणा तहिं वड्ढी ॥ ९३२ ॥
विजयवक्षाराणां विभंगनदीदेवारण्यानां परिधयः ।
द्विशतद्वादशभक्ता द्वात्रिंशद्गुणा तस्मिन् वृद्धयः ॥ ९३२ ॥

अर्थ—विदेहनिके देश अर वक्षार पर्वत अर विभंगा नदी अर देवारण्य वन इन च्यारिनिके जे परिधि तिनकों वत्तीस करि गुणें दोयसै वारहका भाग दिएं तहां तहां आयामविषै वृद्धिका प्रमाण हो है ॥ ९३२ ॥

सगसगवड्ढी णियणियपढमायामम्हि संजुदा मज्झे ।
दीहो पुणरवि सहिदो तिरिए णियचरिमदीहत्तं ॥ ९३३ ॥
स्वस्वकवृद्धयः निजनिजप्रथमायामे संयुता मध्ये ।
दीर्घः पुनरपि सहितः तिर्यक् निजचरमदीर्घत्वम् ॥ ९३३ ॥

अर्थ—देश आदि कहे जे च्यारि तिनका अपनां अपनां आयामविषै जो जो वृद्धिका प्रमाण ताकों आप आपके पहलैं जो था ताका आयामविषै जोड़ें अपना अपना मध्यविषै आयाम प्रमाण हो है। बहुरि तिस तिस मध्य आयामविषै वृद्धिप्रमाण जोड़ें तहां तहां अपनां अंतविषै आयाम प्रमाण हो है। सो इन दोऊ गाथानिके अर्थकों वर्णै हैं। धातकी खंडका व्यास च्यारि लाख योजन तामैं मेरु अर दोय भद्रसालनिका व्यास दोय लाख पचीस हजार एकसो अठावन योजन घटाएं विदेहका भद्रशालनिकै परै पूर्व पश्चिम विषै अंतका क्षेत्र एक लाख चहौत्तरि हजार आठसै वियालीस योजन प्रमाण हो है। याकों आधा किएं एक तरफका आधा अंतक्षेत्र सित्यासी हजार च्यारिसै इकईस योजन प्रमाण हो है। पूर्व पश्चिम विषै भद्रशालकी वेदीतैं परैं समुद्र पर्यंत लंबा विदेहनिका इतनां क्षेत्र है यामैं च्यारि वक्षारनिका व्यास च्यारि हजार योजन अर तीन विभंगा नदीनिका व्यास साढा सातसै योजन अर देवारण्यका व्यास अठावनसै चवालीस योजन इनकों मिलाइ १०५९४ घटाएं अवशेष छिहतरि हजार आठसै सत्ताईस योजन प्रमाण विदेहका एक तरफ पर्वतादि रहित देश संबंधी शुद्ध क्षेत्रका व्यास हो है। याकों धारि बहुरि आठ देशनिका शुद्ध क्षेत्र इतनां ७६८२७ भया तौ एक देशका कितनां होइ। ऐसैं त्रैराशिक किएं कछ नामा देशका पूर्व पश्चिमविषै व्यास नव हजार छसै तीस योजन अर योजनके तीन आठवां भाग प्रमाण हो है। इहां समछेद करि अंश अंशी मिलाएं छिहत्तरि हजार आठसै सताईसका आठवां भाग भया। याका विष्कंभवग्गदहगुण इत्यादि करण सूत्र करि करणि रूप परिधि किएं ऐसा ५९०२३८७९२९०÷६४ भया। याका वर्गमूल ग्रहैं ऐसा २४२९४८÷८ भया।

इहां भागहारका भाग दिएं कछा देशके व्यासका परिधि तीस हजार तीनसै अडसठि योजन अर आधा योजन प्रमाण भया। इहां अंश अंशीनिकों समछेद करि मिलाएं साठि हजार सातसै सैंतीसका आधा ६०७३७÷२ भया। बहुरि धातकी खंडका एक भाग विषै कछा देशका व्यासकी इतनां ६०७३७÷२ परिधि भया तौ दोय मेरु संबंधी दोऊ भागनिका केता होइ ऐसैं ताकों दोय करि गुणें ऐसा ६०७-३७।२÷२ भया। बहुरि पीछैं पर्वतनिका तौ समान व्यास है तातैं वृद्धिका अभाव जानि पर्वतनिकी एकसौ अड़सठि शलाकानिकों धातकी खंडकी सर्व मिश्र शलाका तीनसै असीनिमैं घटाइ अवशेष क्षेत्र शलाका दोयसै बारह रहीं सो दोयसै बारह शलाकानिका पूर्वोक्त ऐसा ६०७३७।२ वृद्धि क्षेत्र होइ तौ चौसठि विदेहकी शलाकानिका केता होइ ऐसैं त्रैराशिक करि चौसठि करि गुणें दोयसै बारहका भाग दिएं ऐसा ६०७३७।२।६४÷२।२१२ विदेहका सर्व वृद्धि क्षेत्र प्रमाण भया। बहुरि नदीनिका दक्षिण उत्तर तट रूप दोय प्रांतनिविषै इतनां ६०७३७।२।६४÷२१२।२ वृद्धिक्षेत्र होइ तौ एक प्रांत विषै कितनां होइ ऐसैं त्रैराशिककरि ताकों दोयका भाग दिएं भद्रशालकी वेदीका आया-मतैं कछा देशका अंत विषै आयामका वृद्धि प्रमाण क्षेत्र ऐसा ६०७३७।२।६४÷२१२।२।२।२ भया। बहुरि मुखभूमिसमासार्द्धं मध्यफलं इस न्यायकरि आदितैं अंत विषै वृद्धिका जो यहु प्रमाण भया ताकों आधा करनेंकों दोयका भाग दिएं ऐसा ६०७३७।२।६४÷२१२।२।२।२ भया। इहां यथा योग्य अपवर्त्तन किएं साठि हजार सातसै सैंतीसका आधा प्रमाण जो कछा देशके व्यासका परिधि ताकों बत्तीस करि गुणिए अर दोयसै बारहका भाग दीजिए इतनां ६०७३७।३२÷२१२।२ वृद्धिका प्रमाण आया याप्रकार गाथा विषै कह्याथा जो देशके व्यासका परिधिकों बत्तीस गुणा करैं दोयसै बारहका भाग दिएं वृद्धि प्रमाण होइ सो सिद्ध भया। बहुरि इस कछा देशका वृद्धिप्रमाणके बत्तीसका गुणकारकौं दोयका भागहारकरि अपवर्त्तन किएं सोलहका गुणकार भया ताकरि गुणें ऐसा ९७१७९२÷२१२ इहां भागहारका भाग दिएं देश संबंधी वृद्धि क्षेत्र पैंतालीससै तियासी योजन अर दोयसै बारह अंशनि विषै एकसौ छिनवै अंश प्रमाण आया। याकौं भद्रसालका अंत आयाम समान जो पूर्वोक्त कछा देशका अभ्यंतर आयाम ऐसा ५०९५७०।२००÷२१२ तामैं जोड़ें कछा देशका मध्य विषै आयाम पांचलाख चौदह हजार एकसौ चौवन योजन अर एकसौ चौरासी अंश प्रमाण हो है। बहुरि याविषै पूर्वोक्त देश संबंधी क्षेत्र वृद्धि प्रमाण जोड़े पांचलाख अठारह हजार सातसै अड़तीस योजन अर एकसौ अडसठि अंश प्रमाण कछा देशका अंत विषै आयाम हो है। बहुरि अब वक्षार पर्वतका व्यास हजार योजन याका विष्कंभवग्गदहगुण इत्यादि सूत्र करि करणिरूप परिधि किएं ऐसा १०००००० याका वर्गमूल ग्रहें वक्षार व्यासका परिधि इकतीससै बासठि योजन भया। बहुरि एक भाग विषै इतनां ३१६२ परिधि भया तौ दोय भाग विषै कितनां होइ ऐसैं ताका दूणां भया ३१६२।२ बहुरि दोयसै बारह शलाकानिका ऐसा ३१६२।२ वृद्धिक्षेत्र होइ तौ विदेहकी चौसठि शलाकानिका केता होइ ऐसैं विदेह विषै प्राप्त परिधिका वृद्धि क्षेत्र ऐसा ३१६२।२।६४÷२१२ भया। बहुरि नदीके तट रूप दोय प्रांत क्षेत्र विषै इतनां ३१६२।२।६४÷२१२ क्षेत्र भया तौ एक प्रांत विषै केता होइ ऐसैं किएं ऐसा

३१६२।२।६४÷२१२।२ वक्षारका अंत विषै परिधिका वृद्धि प्रमाण भया। बहुरि मुख भूमि समासार्द्धं मध्यफलं इस न्याय करि ताका आधा करनेंकों ताकों दोय भाग दिएं ऐसा भया ३१६२।२।६४÷२१२।२।२ इहां यथायोग्य अपवर्तन किएं वक्षारका परिधि प्रमाण इकतीससै बासठि योजनकौं बतीस करि गुणें दोयसै बारहका भाग दिएं परिधि विषै क्षेत्र वृद्धिका प्रमाण हो है। ऐसें गाथा विषै कह्या था वक्षार परिधिकौं बत्तीस करि गुणें दोयसै बारहका भाग दिएं वृद्धि प्रमाण हो है सो कथन सिद्ध भया। इहां गुणकार बत्तीस करि गुणें ऐसा १०११८४÷२१२ भागहारका भाग दिएं च्यारिसै सतहत्तरि योजनके दोयसै बारह अंशनि विषै साठि अंश प्रमाण वक्षारका आदि आयामतैं मध्य आयाम विषै वृद्धि प्रमाण हो है। सो जो पूर्वोक्त कछा देशका बाह्य आयाम प्रमाण सोई वक्षार पर्वतका आदि आयाम प्रमाण ऐसा ५१८७३८।१६८÷२१२ यामैं पूर्वैं ल्याया हुवा वक्षार वृद्धिक्षेत्र ४७७।६०÷१२ जोडें वक्षारका मध्य विषै आयाम ५१९२१६।१६ ÷ २१२ ऐसा हो है। बहुरि यामैं तिस ही वक्षारका वृद्धि क्षेत्र जोडैं वक्षारका अंत विषै आयाम प्रमाण ऐसा ५१९६९३।७६÷२१२ बहुरि जो यहु वक्षारका बाह्य आयाम सोही सुकछा देशका आद्य आयाम ऐसा ५१९६९३।७६÷२१२ यामैं पूर्वैंल्याया हुवा देश संबंधी वृद्धिक्षेत्र प्रमाण ऐसा ४५८३।१९६÷२१२ ताकों जोडें सुकछाका मध्य आयाम ऐसा ५२४२-७७।६० ÷ २१२ यामैं तिस ही देश संबंधी वृद्धिक्षेत्र प्रमाणकौं ४५८३।१९६ ÷ २१२ जोडें सुकछाका अंत विषै आयाम ऐसा ५२८६१।४४÷२१२ भया। बहुरि इहां विभंगा नदीका व्यास अढाईसै योजन ताका बिष्कंभवग्गदहगुण इत्यादि सूत्र करि करणि रूप परिधि ऐसा ६२५०० याका वर्गमूल ग्रहैं विभंगा व्यासका परिधि सातसै निवै योजन प्रमाण आया। बहुरि एक भाग विषै इतनां ७९० क्षेत्र होइ तौ द्वीपके दोऊ भागनि विषै केता होइ ऐसैं ताकौं दूणां करना ७९०।२ बहुरि दोयसै बारह शलाकानिका इतनां ७९०।२ वृद्धि क्षेत्र होइ तौ चौसठि शलानिका केता होइ ऐसैं ताकौं चौसठि करि गुणें दोयसै बारहका भाग दिएं विदेह संबंधी वृद्धि क्षेत्र प्रमाण ऐसा ७९०।२।६४ ÷ २१२ बहुरि नदीके तट रूप दोय प्रांतनि विषै एता ७९०।२।६४÷२१२ वृद्धि क्षेत्र भया तौ एक प्रांत विषै केता होइ ऐसैं ताकौं दोयका भाग दिएं ऐसा ७९०।२।६४÷२१२।२ विभंगाका अंत विषै वृद्धि प्रमाण आया। बहुरि मुख भूमि समासार्धं मध्यफलं इस न्याय करि ताका आधा करनेंकों दोयका भाग दिएं मध्य विषै वृद्धि प्रमाण ऐसा ७९०।२।६४÷२१२।२।२। आया। यहां यथायोग्य अपवर्तन किएं विभंगा नदीके व्यासका परिधि सातसै निवै योजन ताकों बत्तीस करि गुणें दोयसै बारहका भाग दिएं विभंगा नदी संबंधी वृद्धि प्रमाण गाथा करि उक्त सिद्ध भया। इहां बत्तीस गुणकार करि गुणें ऐसा २५२८०÷२१२ भागहारका भाग दिएं एकसौ उगणीस योजन अर योजनके दोयसै बारह अंशनि विषै बावन अंश प्रमाण विभंगा संबंधी वृद्धि प्रमाण आया। बहुरि जो सुकछा देशका बाह्य आयाम प्रमाण सोई विभंगा नदीका आदि आयाम प्रमाण ऐसा ५२८८६१ । ४४÷२१२ यामै विभंगा संबंधी वृद्धि क्षेत्र प्रमाण ११९ । ५२÷२१२ जोडैं विभंगाका मध्य विषै आयाम

ऐसा ५२८९८०।९६÷२१२ यामैं विभंगाका वृद्धि प्रमाण जोड़े विभंगाका अंत विषै आयाम ऐसा ५२९०९९।१४८÷२१२ यातैं परैं महा कछा आदि देशनिका आयाम अर वक्षारनिका आयाम अर विभंगानिका आयाम पूर्व पूर्व विषै अपनां अपनां वृद्धि क्षेत्र जोड़नें करि ल्यावनें। बहुरि देवारण्यका व्यास अठावनसै चवालीस योजन ताका विष्कंभ वग्गदहगुण इत्यादि सूत्र करि कराणि रूप परिधि ऐसा ३४१५२३३६० याका वर्गमूल ग्रहें देवारण्यका परिधि अठारह हजार च्यारिसै असी योजन प्रमाण हो है। बहुरि द्वीपका एक भाग विषै इतनां १८४८० क्षेत्र भया तौ दोऊ भागनि विषै केता होइ ऐसैं ताकौं दूणां करनां १८४८०।२ बहुरि दोयसै बारह शलाकानिका इतनां १८४८०।२ क्षेत्र होइ तौ चौसठि शलाकानिका केता होइ ऐसैं ताकैं चौसठि करि गुणें दोयसै बारहका भाग दिएं विदेह क्षेत्र विषै प्राप्त देवारण्यका वृद्धि क्षेत्र प्रमाण ऐसा १८४८०।२।६४÷२१२ बहुरि नदीके तट रूप दोऊ प्रांतनिविषै इतनां १८४८०।२।६४÷२१२ वृद्धि क्षेत्र प्रमाण आया तौ एक प्रांत विषै केता होइ ऐसैं ताकौं दोयका भाग दिएं ऐसा १८४८०।२।६४÷२१२।२ देवारण्यका आदितैं अंत विषै वृद्धि प्रमाण आया। बहुरि मुखभूमिसमासार्द्धं मध्यफलं इस न्यायकरि ताका आधा किएं ऐसा १८४८०।२।६४÷२१२।२।२ इहां यथायोग्य अपवर्तन किएं देवारण्यका परिधि अठारह हजार च्यारिसै असी योजनकौं बत्तीस करि गुणें दोयसै बारहका भाग दिएं देवारण्य संबंधी वृद्धि क्षेत्र प्रमाण गाथोक्त सिद्ध भया। इहां गुणकार बतीस करि गुणें ऐसा ५९१३६०÷२१२ भागहारका भाग दिएं सताईससै निवासी योजन अर योजनके दोयसै बारह अंशनि विषै बाणवै अंश प्रमाण देवारण्य संबंधी वृद्धि क्षेत्र प्रमाण आया। बहुरि पुष्कलावती नामा देशका जो बाह्य आयाम सोई देवारण्यवनका आदि आयाम पांच लाख सित्यासी हजार च्यारिसै सैंतालीस योजन अर योजनके दोयसै बारह अंशनि विषै सौ। अंश प्रमाण है। इस प्रमाण ल्यावनैंका विधान कहैं हैं। नदीका एक तट विषै आठ देश च्यारि वक्षार तीन विभंगा हैं। बहुरि आदितैं मध्य विषै अर मध्यतैं अंत विषै ऐसैं एक एक विषै दोय दोय बार अपनां अपनां वृद्धि प्रमाण वधै है तातैं देश वृद्धिका प्रमाण ऐसा ४५८३।१९६÷२१२ याकौं सोलह करि गुणें ऐसा ७३३२८।३१३६÷२१२। बहुरि वक्षार वृद्धिका प्रमाण ऐसा ४७७।६०÷२१२ याकौं आठ करि गुणें ऐसा १८१६।४८०÷२१२ बहुरि विभंगा वृद्धि प्रमाण ऐसा ११९।५२÷२१२ याकौं छह करि गुणें ऐसा ७१४।३१२÷२१२ इहां जे अंश हैं तिन सर्व अंशनिकौं जोड़ि तिनमैं कछा देशका आदि आयाम विषै जे दोयसै अंश कहे थे तिनको जोड़ें सर्व अंश इकतालीससै अठाईस भए इनकौं दोयसै बारहका भाग दिएं उगणीस योजन पाए अर अब शेष सौ अंश रहे। तातैं देवारण्यका आदि आयाम विषै सौ तौ अंश जाननें। बहुरि उगणीस तौ ए योजन अर वृद्धिनिके योजन अर कछा देशका आदि आयामके पांच लाख पिच्याणवैसै सत्तरि योजन इन सबनिकौं जोड़ें देवारण्यका आदि आयाम विषै पांच लाख सित्यासी हजार च्यारिसै सैंतालीस योजन जाननें। बहुरि इस देवारण्यका आदि आयाम विषै ५८७४४७।१००÷२१२ देवारण्य संबंधी वृद्धि क्षेत्र ऐसा २७८९।९२÷२१२ जोड़ें देवारण्यका मध्य

आयाम ऐसा ५९०२३६।१९२÷२१२ यामैं बहुरि तिस देवारण्य संबंधी वृद्धि क्षेत्र जोड़ें कालोद समुद्रकै निकटि देवारण्यका बाह्य आयाम ऐसा ५९३०२६।७२ ÷ २१२ हो है। या प्रकार जैसैं सीता नदीका उत्तर तट विषै वर्णन किया तैसैं ही सीताका दक्षिण तट विषै भी देश वक्षार विभंगा देवारण्यनिका व्यास अर परिधि अर वृद्धिक्षेत्र अर आयाम तहां तहां ल्यावनें। बहुरि जैसैं यहु मेरुकी पूर्व दिशा विषै अधिक अधिक अनुक्रम करि कथन किया है तैसैं मेरुकी पश्चिम दिशा विषै भद्रसालतैं हीन हीन अनुक्रमकरि वर्णन जाननां। तहां हानि प्रमाण वृद्धि प्रमाणवत् जाननां। बहुरि याही प्रकार पुष्करार्ध विषै भी देश वक्षार विभंगा देवारण्यनिके यथासंभव व्यासनिका परिधि ल्याइ द्वीपका दोऊ भागनिके ग्रहण निमित्ति गुणकार दोय करि गुणि दोयसै बारह क्षेत्र शलाकाका भाग देइ चौसठि विदेह शलाकाका भाग देइ लब्ध प्रमाण जो विदेह वृद्धि क्षेत्र ताकौं दोयका भाग दिएं जो एक प्रांत संबंधी वृद्धि क्षेत्र भया ताकौं मुखभूमिसमासार्धे इस न्याय करि आधाकरि अपवर्त्तनकरि तहां तहां लब्ध मात्र वृद्धि क्षेत्रका प्रमाण जाननां। ताकौं अपनां अपनां आदि आयाम विषै जोड़ें अपनां अपनां मध्य आयाम हो है। बहुरि अपनां अपनां मध्य आयाम विषैं अपनां अपनां वृद्धि क्षेत्र जोड़ें अपनां अपनां बाह्य आयाम हो है। बहुरि पूर्व पूर्वका बाह्य आयाम सोई उत्तर उत्तरका आदि आयाम जाननां। मेरुकी पश्चिम दिशा विषै हीन क्रम जाननां॥ ९३३॥

आगैं धातुकी खंड पुष्कर द्वीपनि विषै किछू विशेष स्वरूप गाथा दोयकरि कहैं हैं;—

**धादइपुक्खरदीवा धादइपुक्खरतरूहिं संजुत्ता।**
**तेसिं च वण्णणा पुण जंबूदुमवण्णणं व हवे॥ ९३४॥**

धातकीखंडपुष्करद्वीपौ धातकीपुष्करतरुभ्यां संयुक्तौ।
तयोः च वर्णना पुनः जंबूद्रुमवर्णना इव भवेत्॥ ९३४॥

**अर्थ**—धातकी खंड द्वीप अर पुष्कर द्वीप क्रमतैं धातकी वृक्ष अर पुष्कर वृक्ष करि संयुक्त हैं। बहुरि तिन वृक्षनिका वर्णन जंबूद्वीप विषै जैसैं जंबू वृक्षका कह्या तैसैं जांननां॥ ९३४॥

**धादइगंगारत्तदु हिमसिहरिणगोवरिं उज्जुं जादि।**
**णवणभतिणविगि चलणं जंबू वा पुक्खरे दुगुणं॥ ९३५॥**

धातकीगंगारक्ताद्वे हिमशिखरिनगोपरि ऋजुं यातः।
नवनभस्त्रिनवैकं चलनं जंबू वा पुष्करे द्विगुणं॥ ९३५॥

**अर्थ**—धातकी खंड संबंधी गंगा सिंधु दोय नदी अर रक्ता रक्तोदा दोय नदी क्रमतैं हिमवत पर्वत उपरि अर शिखरी पर्वत उपरि पूर्व वा पश्चिम दिशाकौं नवबिंदी तीन नव एक इन अंक रूप उगणीस हजार तीनसै नव योजन सूधी जाइ है। पीछैं मुड़नां आदि वर्णन जंबूद्वीप संबंधीवत् जाननां। बहुरि पुष्कर द्वीप विषै पर्वत उपरि नदीनिका सूधा गमन तातैं दूणां अठतीस हजार छसै अठारह योजन प्रमाण जाननां॥ ९३५॥

ऐसें पुष्करार्द्ध पर्यंत जो मनुक्षलोक ताका व्याख्यान करि यातैं बाह्य जो तिर्यग्लोक ताकों प्रतिपादन करत संता ही प्रथम ही मनुक्षलोक वा तिर्यगलोक विषै तिष्ठते पर्वत अर समुद्र तिनका अवगाहकों जनावै है;—

**मेरुणरलोयबाहिरसेलोगाढं सहस्सपरिमाणं ।**
**सेसाणं सगतुरियं सव्वुवहीणं सहस्सं तु ॥ ९३६ ॥**

मेरुनरलोकबाह्यशैलावगाधं सहस्रपरिमाणं ।
शेषाणां स्वकतुर्यं सर्वोदधीनां सहस्रं तु ॥ ९३६ ॥

**अर्थ**—मेरु गिरिनिका अर मानुषोत्तर विना सर्व मनुक्ष लोककै बाह्य तिष्ठते जे पर्वत तिनका तौ अवगाध हजार योजन प्रमाण जाननां । बहुरि मनुक्ष लोककै अभ्यंतर तिष्ठते जे अवशेष हिमवत आदि पर्वत तिनका अवगाध अपनें अपनें उचाईका प्रमाणकै चौथा भाग प्रमाण जाननां। इहां जैसैं मंदिरकैं नींव हो है तैसैं पृथ्वीकै मध्य जो उंडाई ताका नाम अवगाध जाननां । बहुरि सर्व जे समुद्र तिनका अवगाध जो उंडाईका प्रमाण सो हजार योजन जानहु । तहां लवण समुद्र विषै आदि मध्य अंत विषै विशेष पूर्वै कह्या है सो जाननां । अन्य समुद्र सर्वत्र समान अवगाह युक्त हैं ॥ ९३६ ॥

अब मानुषोत्तर पर्वतका स्वरूप गाथा तीन करि कहैं हैं;—

**अंते टंकच्छिण्णो बाहिं कमवड्ढिहाणि कणयणिहो ।**
**णदिणिग्गमपहचोद्दसगुहाजुदो माणुसुत्तरगो ॥ ९३७ ॥**

अंतः टंकच्छिन्नो बाह्ये क्रमवृद्धिहानिकः कनकनिभः ।
नदीनिर्गमपथचतुर्दशगुहायुतः मानुषोत्तरः ॥ ९३७ ॥

**अर्थ**—पुष्कर द्वीपकै मध्य मानुषोत्तर नामा पर्वत तिष्ठै है । सो अभ्यंतर मनुक्ष लोककी तरफ तौ टंकछिन्न है । नीचैंतैं लगाय उपरि पर्यंत भी तिस समान एकसा है । बहुरि बाह्य तिर्यक लोककी तरफ शिखरतैं लगाय क्रमतैं वधता अर मूलतैं लगाय क्रमतैं घटता है । ताका आकार ऐसा जाननां । बहुरि सो मानुषोत्तर पर्वत सुवर्ण सारिखा वर्णयुक्त है । बहुरि नदी निकसनेंके मार्ग ऐसे चौदह गुहा द्वार तिन करि युक्त हैं । **भावार्थ**—मानुषोत्तरकै चौदह गुफारूप द्वार हैं । तिन द्वारनि करि चौदह महा नदी निकसि बाह्य जाय हैं । ऐसा मानुषोत्तर जाननां ॥ ९३७ ॥

**मणुसुत्तरुदयभूमुहमिगिवीसं सगसयं सहस्सं च ।**
**बावीसहियसहस्सं चउवीसं चउसयं कमसो ॥ ९३८ ॥**

मानुषोत्तरोदयभूमुखमेकाविंशं सप्तशतं सहस्रं च ।
द्वाविंशाधिकसहस्रं चतुर्विंशतिः चतुःशतं क्रमशः ॥ ९३८ ॥

**अर्थ**—मानुषोत्तर पर्वतका उदय जो उचांई सो इकईस अधिक सातसै युक्त एक हजार योजन प्रमाण है । १७२१ । बहुरि भू व्यास जो मूल विषै चौड़ाई सो बाईस अधिक एक हजार योजन प्रमाण है ।१०२२। बहुरि मुख व्यास जो शिखर विषै चौड़ाई सो चौईस अधिक च्यारिसै योजन प्रमाण है ४२४ ॥ ९३८ ॥

तण्णगसिहरे वेदी चावाणं चदुस्सहस्सतुंगजुदा ।
सोहइ वलयायारा चरणण्णिदकोसवित्थारा ॥ ९३९ ॥
तन्नगशिखरे वेदी चापानां चतुःसहस्रतुंगयुता ।
शोभते वलयाकारा चरणान्वितक्रोशविस्तारा ॥ ९३९ ॥

अर्थ—तिस मानुषोत्तरका शिखर विषै उपरि च्यारि हजार धनुष उचाई करि युक्त अर सवा कोस चौडी ऐसी जैसैं पर्वत वलयाकार हैं तैसैं ताके उपरि वलयाकार वेदी सोभै हैं॥९३९॥

आगैं इस पर्वत उपरि तिष्टते कूटनिकौं कहैं हैं;—

णइरिदिवायव्वदिसं वज्जिय छस्सुवि दिसासु कूडाणि ।
तियतियमावलियाए ताणब्भंतरदिसासु चउवसई ॥ ९४० ॥
नैऋतिवायव्यदिशं वर्जयित्वा षट्स्वपि दिशासु कूटानि ।
त्रिकत्रिकमावल्या तेषामभ्यंतरदिशासु चतुष्कवसत्यः ॥ ९४० ॥

अर्थ—नैऋती अर वायवी इन दोय दिशानिकौं वर्जि करि अवशेष छह दिशानि विषै पंक्ति रूप तीन तीन कूट हैं। पर्वतकी परिधि विषै तिनकी पंक्ति जाननी। बहुरि तिन कूटनिकैं अभ्यंतर मनुष्य लोककी तरफ च्यारि दिशानि विषै जिन मंदिररूप च्यारि वसतिका हैं ॥ ९४० ॥

आगैं तिन कूटनि विषै वसते जे देव तिनकौं कहैं हैं;—

अग्गीसाणछकूडे गरुडकुमारा वसंति सेसे दु ।
दिग्गयबारसकूडे सुवण्णकुलदिक्कुमारीओ ॥ ९४१ ॥
अग्नीशानषट्कूटे गरुडकुमारा वसंति शेषेषु तु ।
दिग्गतद्वादशकूटेषु सुवर्णकुलदिक्कुमार्यः ॥ ९४१ ॥

अर्थ—आग्नेय दिशा अर ईशान दिशा संबंधी जे छह कूट तिन विषै तौ गरुड कुमार देव वसै हैं। बहुरि अवशेष दिशा संबंधी बारह कूट तिन विषै सुपर्ण कुमार देव अर दिक्कुमारी देवांगना वसैं हैं ॥ ९४१ ॥

आगैं मानुषोत्तरका स्थानादिक कहैं हैं;—

पणदाललक्खमाणुसखेत्तं परिवेढिऊण सो होदि ।
उदयचउत्थोगाढो पुक्खरविदियद्धपढमम्हि ॥ ९४२ ॥
पंचचत्वारिंशल्लक्षमानुषक्षेत्रं परिवेष्ट्य स भवति ।
उदयचतुर्थावगाधः पुष्करद्वितीयार्धप्रथमे ॥ ९४२

अर्थ—पैंतालीस लक्ष योजन व्यास प्रमाण जो मनुष्य क्षेत्र ताकौं वेढि करि पुष्कर द्वीपका दूसरा आधा ताका प्रथम भाग जो आदि क्षेत्र तीह विषै मानुषोत्तर है। ताका अवगाध जो पृथ्वी विषै उंडाईका प्रमाण सो उचाईका चौथा भाग मात्र हो है। सो च्यारेसै तीस योजन अर चौथाई योजन प्रमाण जाननां ॥ ९४२ ॥

आगैं कुंडल गिरि अर रुचक गिरि तिनका उदय भूव्यास मुखव्यास कहैं हैं;—

**कुंडलगो दसगुणिओ पणसदरिसहस्स तुंगओ रुजगे।**
**चउरासीदिसहस्सा सव्वत्थुभयं सुवण्णमयं ॥ ९४३ ॥**
कुंडलगौ दशगुणितौ पंचसप्ततिसहस्रं तुंगो रुचके।
चतुरशीतिसहस्राणि सर्वत्रोभयौ सुवर्णमयौ ॥ ९४३ ॥

**अर्थ**—मानुषोत्तरका भू व्यास मुख व्यासतैं कुंडल पर्वतका भू व्यास मुख व्यास दस गुणां है। **भावार्थ**—कुंडल गिरि मूल विषै दस हजार दोयसै वीस योजन चौड़ा है। शिखर विषै च्यारि हजार दोयसै चालीस योजन चौड़ा है। वहुरि तिस कुंडल गिरिका उच्चत्व प्रमाण पचहत्तरि हजार योजन है। वहुरि रुचक पर्वत सर्वत्र उचाई विषै वा भूव्यास मुखव्यास विषै समानरूप चौरासी हजार योजन प्रमाण है। वहुरि ए दोऊ कुंडल गिरि अर रुचक गिरि सुवर्णमय हैं ॥ ९४३ ॥

अव कुंडल गिरिकै उपरि जे कूट तिनकौं गाथा तीन करि कहै हैं;—

**चउ चउ कूडा पडिदिसमिह कुंडलपव्वदस्स सिहरंम्हि।**
**ताणब्भंतरदिग्गय चत्तारि जिणिंदकूडाणि ॥ ९४४ ॥**
चत्वारि चत्वारि कूटानि प्रतिदिशमिह कुंडलपर्वतस्य शिखरे।
तेपामभ्यंतरदिग्गतानि चत्वारि जिनेंद्रकूटानि ॥ ९४४ ॥

**अर्थ**—इस कुंडल पर्वतका शिखरविषै एक एक दिशा प्रति च्यारि च्यारि कूट परिधिविषै पंक्तिरूप हैं। तिनके अभ्यंतर मनुक्ष लोककी तरफ दिशानिविषैं प्राप्त च्यारि जिनेन्द्र कूट हैं। ऐसें वीस कूट हैं ॥ ९४४ ॥

**वज्जं तप्पह कणयं कणयप्पह रजदकूड रजदाहं।**
**सुमहप्पह अंकंकप्पह मणिकूडं च मणिपहयं ॥ ९४५ ॥**
वज्रं तत्प्रभं कनकं कनकप्रभं रजतकूटं रजताभं।
सुमहप्रभं अंकमंकप्रभं मणिकूटं च मणिप्रभं ॥ ९४५ ॥

**अर्थ**—वहुरि वज्र १ वज्रप्रभ १ कनक १ कनक प्रभ १ रजतकूट १ रजताभ १ सुप्रभ १ महाप्रभ १ अंक १ अंकप्रभ १ मणिकूट १ मणिप्रभ १ ॥ ९४५ ॥

**रुजगरुजगाह हिमवं मंदरमिह चारि सिद्धकूडाणि।**
**अत्थंति सेसि कूडे कूडक्खसुरा कदावासा ॥ ९४६ ॥**
रुचकरुचकाभे हिमवत् मंदिरमिह चत्वारि सिद्धकूटानि।
आसते शेषेषु कूटेषु कूटाख्यसुराः कृतावासाः ॥ ९४६ ॥

**अर्थ**—रुचक १ रुचकाभ १ हिमवत १ मंदर १ ए सोलह कूट जाननें। इनतैं अन्य च्यारि सिद्धकूट हैं। तिनविषै चैत्यालय हैं। अर अवशेष सोलह कूट तिनविषै कूट समान नामके धारक देव वास करते संते तिष्टै हैं ॥ ९४६ ॥

अव रुचक पर्वतकै उपरि जे कूट तिनकौं अर तहां वास करती देवांगना तिनकौं अर तिनके देवांगनानिका कार्यकौ तेरह गाथानि करि कहैं हैं;—

पुव्वादिसु पुह अड अड अंते चउ चारि चारि कूडाणि।
रुजगे सव्वब्भंतरचत्तारि जिणिंदकूडाणि ॥ ९४७ ॥
पूर्वादिषु पृथक् अष्टौ अष्टौ अंतः चतसृषु चत्वारि चत्वारि कूटानि ।
रुचके सर्वाभ्यंतरचत्वारि जिनेंद्रकूटानि ॥ ९४७ ॥

**अर्थ**—रुचक गिरिविषै पूर्व आदि च्यारि दिशानिविषै प्रथक् प्रथक् परिधिविषै पंक्तिरूप आठ आठ कूट हैं। बहुरि तिनकै अभ्यंतर मनुक्ष लोककी तरफ च्यारि दिशानिविषै एक वार च्यारि कूट हैं। बहुरि तिनकै अभ्यंतर एक वार च्यारि कूट हैं। बहुरि तिनकै भी अभ्यंतर एक वार च्यारिकूट हैं। ऐसैं एक एक दिशा विषै तीन तीन कूट ए भए ऐसैं चवालीस कूट भए। बहुरि तिन सबनिकै अभ्यंतर वर्ती जे च्यारि कूट कहे ते जिनेन्द्र कूट हैं। चैत्यालय युक्त हैं। इनिका ऐसैं स्थान जाननां ॥ ९४७ ॥

कणयं कंचण तवणं सोत्थियकूडं सुभद्दमंजणयं ।
अंजणमूलं वज्जं तत्थेदा दिक्कुमारीओ ॥ ९४८ ॥
कनकं कांचनं तपनं स्वस्तिककूटं सुभद्रमंजनकं ।
अंजनमूलं वज्रं तत्रैता दिक्कुमार्यः ॥ ९४८ ॥

**अर्थ**—कनक १ कांचन १ तपन १ स्वस्तिककूट १ सुभद्र १ अंजनक १ अंजन मूल १ वज्र १ ए पूर्व दिशाविषै आठ कूट हैं। तहां ए आगैं कहिए हैं दिक्कुमारी ते बसै हैं॥ ९४८ ॥

विजयाय वइजयंती जयंति अवराजिदाय णंदेति ।
णंदवदी णंदुत्तर णामातो णंदिसेणेत्ति ॥ ९४९ ॥
विजया वैजयंती जयंती अपराजिता नंदा इति ।
नंदवती नंदोत्तरा नाम्न्यतो नंदिषेणा इति ॥ ९४९ ॥

**अर्थ**—विजया १ वैजयंती १ जयंती १ अपराजिता १ नंदा १ नंदावती १ नंदोत्तरा १ नंदिषेणा ए आठ दिक्कुमारनिकी देवांगना वसैं हैं ॥ ९४९ ॥

फलिह रजदं व कुमुदं णलिणं पउमं ससीय वेसवणं।
वेलुरियं देवीओ इच्छापढमा समाहारा ॥ ९५० ॥
स्फटिकं रजतं वा कुमुदं नलिनं पद्मं शशी वैश्रवणं ।
वैडूर्यं देव्यः इच्छाप्रथमा समाहारा ॥ ९५० ॥

**अर्थ**—स्फटिक १ रजत १ कुमुद १ नलिन १ पद्म १ शशि १ वैश्रवण १ वैडूर्य १ ए आठ दक्षिण दिशाविषै कूट हैं। इनविषै वास करती देवांगना कहिए है। इछा १ समाहारा १ ॥९५०॥

सुपइण्णाय जसोहर लच्छी सेसवदि चित्तगुत्तेत्ति ।
चरिम वसुंधरदेवी अमोहमह सोत्थियं कूडं ॥ ९५१ ॥
सुप्रकीर्णा यशोधरा लक्ष्मीः शेषवती चित्रगुप्ता इति ।
चरमा वसुंधरा देव्यः अमोघमथ स्वस्तिकं कूटं ॥ ९५१ ॥

अर्थ—सुप्रकीर्णा १ यशोधरा १ लक्ष्मी १ शेषवती १ चित्रगुप्ता १ वसुंधरा १ ऐसें ए आठ देवी वसै हैं। बहुरि अमोघ १ स्वस्तिक कूट १॥ ९५१॥

तो मंदर हेमवदं रज्जं रज्जुत्तमं च चंदमवि।
पच्छिम सुदंसणं पुण इलादियाय सुरादेवी॥ ९५२॥

ततो मंदरं हैमवतं राज्यं राज्योत्तमं च चंद्रमपि।
पश्चिमं सुदर्शनं पुनः इलादिका सुरादेवी॥ ९५२॥

अर्थ—तहां पीछैं मंदर १ हैमवत् १ राज्य १ राज्योत्तम १ चंद्र १ सुदर्शन १ ए आठ पश्चिम दिशा विषै कूट हैं। इहां तिष्टती देवी कहिए हैं। इलादेवी सुरादेवी॥ ९५२॥

पुढवी पउमवदी इगिणासो देवी य णवमिया सीदा।
भद्दा तो विजयादीचउक्कूडं कुंडलं रुजगं॥ ९५३॥

पृथ्वी पद्मावती एकनासा देवी च नवमिका सीता।
भद्रा ततो विजयादिचतुष्कूटानि कुंडलं रुचकं॥ ९५३॥

अर्थ—पृथ्वी १ पद्मावती १ एकनासा देवी १ नवमिका १ सीता १ भद्रा १ ए आठ देवी वसै हैं। बहुरि तहां पीछैं विजय १ वैजयंत १ जयंत १ अपराजित ए च्यारि कूट अर कुंडल १ रुचक १॥ ९५३॥

तो रयणवंत सव्वादीरयणं उत्तरे अलंबूसा।
विदिया दु मिस्सकेसी देवी पुण पुंडरीगिणि सा॥ ९५४॥

ततो रत्नवत् सर्वादिरत्नं उत्तरे अलंभूपा।
द्वितीया तु मिश्रकेशी देवी पुनः पुंडरीकिनी सा॥ ९५४॥

अर्थ—तहां पीछैं रत्नवत् १ सर्व रत्न १ ए आठ उत्तर दिशा विषै कूट हैं। इन विषै तिष्टती देवी कहिए हैं। अलंभूपा १ मिश्रकेशी देवी १ पुंडरीकिणी १॥ ९५४॥

वारुणि आसा सच्चा हिरि सिरि पुव्वगयदिक्कुमारीओ।
भिंगारं धरिदूणिह दक्खिणदेवीओ मुकुरंदं॥ ९५५॥

वारुणी आशा सत्या ह्रीः श्रीः पूर्वगतदिक्कुमार्यः।
भृंगारं धृत्वा इह दक्षिणदेव्यो मुकुरंदं॥ ९५५॥

अर्थ—वारुणी १ आशा १ सत्या १ ह्री १ श्री १ ए आठ देवी वसै हैं इन विषै पूर्व-दिशा संबंधी दिक्कुमारी हैं। ते भृंगार जो झारी ताकौं धारिकरि अर दक्षिण दिशा संबंधी दिक्कुमारी मुकुंरुद जो आरसो ताकौं धारि करि॥ ९५५॥

पच्छिमगा छत्ततयं उत्तरगा चामरं पमोदजुदा।
तित्थयरजणणिसेवं जिणजणिकाले पकुव्वंति॥ ९५६॥

पश्चिमगाः छत्रत्रयं उत्तरगाः चामरं प्रमोदयुताः।
तीर्थकरजननीसेवां जिनजनिकाले प्रकुर्वंति॥ ९५६॥

**अर्थ**—पश्चिमदिशा संबंधी देवी तीन छत्रनिकौं धारि करि अर उत्तर दिशा संबंधी देवी चामरनिकौं धारि करि महा प्रमोद करि संयुक्त होती ते सर्व देवी तीर्थंकरका उत्पत्ति काल विषै तीर्थंकरकी जो माता ताकी सेवा करै हैं ॥ ९५६ ॥

**पुव्वे विमलं कूलं णिच्चालोयं सयंपहं अवरे ।**
**णिच्चुज्जोदं देवी कमसो कणया सदादिदहा ॥ ९५७ ॥**

पूर्वयोः विमलं कूटं नित्यालोकं अपरयोः ।
नित्योद्योतं देव्यः क्रमशः कनका शतादिह्रदा ॥ ९५७ ॥

**अर्थ**—रुचक पर्वतके अभ्यंतर कूटनि विषै पूर्व दिशा विषै तो विमलकूट दक्षिण दिशा विषै नित्यालोककूट पश्चिम दिशा विषै स्वयंप्रभकूट उत्तर दिशा विषै नित्योद्योत कूट ऐसैं च्यारि कूट हैं । इहां तिष्ठती देवी क्रमतैं कनका १ शतह्रदा १ ॥ ९५७ ॥

**कणयादिचित्त सोदामणि सव्वदिसप्पसण्णदं देंति ।**
**तित्थयरजम्मकाले कूलं वेलुरियरुजगमदो ॥ ९५८ ॥**

कनकादिचित्रा सौदामिनी सर्वदिशाप्रसन्नतां दधते ।
तीर्थंकरजन्मकाले कूटं वैडूर्यं रुचकमतः ॥ ९५८ ॥

**अर्थ**—कनकचित्रा १ सौदामिनी १ ऐसैं ए च्यारि देवी वसै हैं ते तीर्थंकरका जनम काल विषै सर्व दिशानिकौं प्रसन्न धारै हैं निर्मल करैं हैं । बहुरि इनतैं अभ्यंतर पूर्वादि दिशानि विषै वैडूर्य १ रुचक १ ॥ ९५८ ॥

**मणिकूडं रज्जुत्तममिह रुजगा रुजगकीत्ति रुजगादी ।**
**कंता रुजगादिपहा जिणजादयकम्मकादिकुसला ॥ ९५९ ॥**

मणिकूटं राज्योत्तममिह रुचका रुचककीर्तिः रुचकादिः ।
कांता रुचकादिप्रभा जिनजातककर्मकृतिकुशलाः ॥ ९५९ ॥

**अर्थ**—मणिकूट १ राज्योत्तम १ ए च्यारि कूट हैं । इहां तिष्ठती रुचका १ रुचक कीर्ति १ रुचक कांता १ रुचक प्रभा १ ए च्यारि देवी हैं । ते तीर्थंकरका जन्म विषै जात कर्म करनेंविषै कुशल हैं ॥ ९५९ ॥

आगैं कुंडल रुचक संबंधी कूटनिका व्यासादिक कहैं हैं;—

**सव्वेसिं कूडाणं जोयणपंचसय भूमिवित्थारो ।**
**पणसयमुदओ तद्दलमुहवासो कुंडले रुजगे ॥ ९६० ॥**

सर्वेषां कूटानां योजनपंचशतं भूमिविस्तारः ।
पंचशतमुदयः तद्दलमुखव्यासः कुंडले रुचके ॥ ९६० ॥

**अर्थ**—कुंडल गिरि अर रुचक गिरिविषै कहे जे ए कूट तिन सबनिका पांचसै योजन ता भूमि विस्तार कहिए मूलविषै चौड़ाईका प्रमाण है । अर उदय जो उंचाईका प्रमाण सोभी पांचसै योजन है । अर तिनका मुख व्यास जो उपरि चौड़ाईका प्रमाण सो ताका आधा अढ़ाईसै योजन है ।

इहां जैसैं पुष्कर दीपकै मध्य वलयाकार मानुषोतर पर्वत है तैसैं ही कुंडल द्वीपकै मध्य कुंडलगिरि अर रुचक द्वीपकै मध्य रुचक गिरि वलयाकार जाननां ॥ ९६० ॥

आगैं द्वीप समुद्रनिके जे देव स्वामी हैं तिनकौं पांच गाथानि करि कहैं हैं;—

**जंबूदीवे वाणो अणादरो सुट्ठिदो य लवणेवि।**
**धादइखंडे सामी प्रभासपियदंसणा देवा ॥ ९६१ ॥**

जंबूद्वीपे वानौ अनादरः सुस्थितश्च लवणेपि।
धातकीखंडे स्वामिनौ प्रभासप्रियदर्शनौ देवौ ॥ ९६१ ॥

**अर्थ**—जंबू द्वीप अर लवण समुद्रविषै तौ स्वामी अनादर अर सुस्थित नामा व्यंतर देव हैं। धातकी खंडविषै स्वामी प्रभास अर प्रियदर्शन देव हैं ॥ ९६१ ॥

**कालमहकाल पउमा पुंडरियो माणुसुत्तरे सेले।**
**चक्खुमसुचक्खुम्मा सिरिपहधर पुक्खरुवाहिम्हि ॥ ९६२ ॥**

कालमहाकालौ पद्मः पुंडरीकः मानुषोत्तरे शैले।
चक्षुष्मसुचक्षुष्माणौ श्रीप्रभधरौ पुष्करोदधौ ॥ ९६२ ॥

**अर्थ**—कालोदक समुद्रविषै स्वामी काल महाकाल देव हैं। पुष्करार्द्ध अर मानुषोतरविषै स्वामी पद्म अर पुंडरीक देव हैं। पुष्कर द्वीपका बाह्य दूसरा अर्धविषै स्वामी चक्षुष्मान अर सुचक्षुष्मान हैं। पुष्कर समुद्रविषै स्वामी श्रीप्रभ अर श्रीधर हैं ॥ ९६२ ॥

**वरुणो वरुणादिपहो मज्झो मज्झिमसुरो य पंडुरओ।**
**पुप्फादिदंत विमला विमलप्पह सुप्पहा महप्पहओ ॥ ९६३ ॥**

वरुणो वरुणदिप्रभो मध्यः मध्यमसुरः च पांडुरः।
पुष्पादिदंतः विमलो विमलप्रभः सुप्रभः महाप्रभ ॥ ९६३ ॥

**अर्थ**—वारुणी द्वीपविषै स्वामी वरुण अर वरुणप्रभ हैं। वारुणी समुद्रविषै स्वामी मध्य अर मध्यम देव हैं। क्षीर द्वीपविषै स्वामी पांडुर अर पुष्पदंत हैं। क्षीर समुद्रविषै स्वामी विमल अर विमलप्रभ हैं। घृत द्वीपविषै स्वामी सुप्रभ अर महाप्रभ हैं ॥ ९६३ ॥

**कणय कणयाह पुण्णा पुण्णप्पह देवगंधमहगंधा।**
**तो णंदी णंदिपहो भद्दसुभद्दा य अरुण अरुणपहा ॥ ९६४ ॥**

कनकः कनकाभः पुण्यप्रभो देवगंधमहागंधौ।
ततो नंदी नंदिप्रभः भद्रसुभद्रौ च अरुणः अरुणप्रभः ॥ ९६४ ॥

**अर्थ**—घृत समुद्र विषै स्वामी कनक अर कनकप्रभ हैं। क्षौद्र द्वीप विषै स्वामी पुण्य अर पुण्य प्रभ हैं। क्षौद्र समुद्र विषै स्वामी देव गंध अर महागंध हैं। तहां पीछैं नंदीश्वर द्वीप विषै स्वामी नंदि अर नंदिप्रभ हैं। नंदीश्वर समुद्र विषै स्वामी भद्र अर सुभद्र हैं। अरुण द्वीप विषै स्वामी अर अरुण अरुणप्रभ हैं ॥ ९६४ ॥

**सगसुगंध सव्वगंधो अरुणसमुद्दम्हि इदि पहू दो दो।**
**दीवसमुद्दे पढमो दक्खिणभागम्हि उत्तरे विदियो ॥ ९६५ ॥**

ससुगंधः सर्वगंधः अरुणसमुद्रे इति प्रभू द्वौ द्वौ ।
द्वीपसमुद्रे प्रथमः दक्षिणभागे उत्तरे द्वितीयः ॥ ९६५ ॥

**अर्थ**—अरुण समुद्र विषै नायक ससुगंध अर सर्वगंध देव हैं। ऐसैं ही द्वीप अर समुद्र विषै दोय दोय स्वामी व्यंतर देव हैं। तहां दोय दोय विषै जाका नाम पहलैं कह्या सो दक्षिण भाग विषै अर जाका पीछैं नाम लिया सो उत्तर भाग विषै स्थित जाननां ॥ ९६५ ॥

अब नंदीश्वर द्वीपकों विशेष रूप प्रतिपादन करत संता आचार्य प्रथम ताका वलय व्यास कहै है;—

**आदीदो खलु अट्ठमणंदीसरदीववलयविक्खंभो ।**
**सयसमहियतेवट्ठीकोडी चुलसीदिलक्खा य ॥ ९६६ ॥**

आदितः खलु अष्टमनंदीश्वरद्वीपवलयविष्कंभः ।
शतसमधिकत्रिषष्टिकोटिः चतुरशीतिलक्षश्च ॥ ९६६ ॥

**अर्थ**—आदिका जंबूद्वीपतैं लगाय आठवां नंदीश्वर द्वीप है। ताका विलय विष्कंभ जो वल्याकार विषै चौड़ाई सो सौ अधिक तेरसठि कोडि चौरासी लाख योजन प्रमाण है। कैसैं सो कहिए हैं। नंदीश्वर द्वीप सहित यातैं पहलै द्वीप वा समुद्रनिकी संख्या पंद्रह है सो पंद्रहका गछ करि रुऊणाहियपदं इत्यादि पूर्वोक्त सूत्र करि एकसौ तेरसठि कोड़ि चौरासी लाख योजन प्रमाण व्यास आवै है ॥ ९६६ ॥

आगैं इस द्वीप विषै च्यारयौं दिशानि विषैं तिष्टते पर्वत तिनके नाम अर संख्या अर स्थानकौं निरूपैं हैं;—

**एक्कचउक्कट्ठंजणदहिमुहरइयरणगा पडिदिसम्हि ।**
**मज्झे चउदिसवावीमज्झे तव्वाहिरदुकोणे ॥ ९६७ ॥**

एकचतुष्काष्टांजनदधिमुखरतिकरनगाः प्रतिदिशं ।
मध्ये चतुर्दिग्वापीमध्ये तद्बाह्यद्विकोणे ॥ ९६७ ॥

**अर्थ**—एक एक दिशा प्रति मध्य विषै अर च्यारि दिशा संबंधी वावड़ीनिकै मध्य अर तिन वावड़ीनिका बाह्य दोय दोय कोणादि विषै क्रमतैं एक च्यारि आठ संख्या लिएं अंजन दधिमुख रतिकर नामा पर्वत नंदीश्वर द्वीप विषै जाननैं। **भावार्थ**—नंदीश्वरकी चारों दिशा तहां एक एक दिशा विषै बीचि तौ एक अंजन गिरि है। तिस अंजन गिरकी च्यारों दिशानि विषै च्यारि वावडी हैं। तिन वावडीनिकै बीचि च्यारि दधिमुख पर्वत हैं। बहुरि तिन वावडीनिके दोय कोण तौ अंजन गिरिकी तरफ अर दोय कोण दूसरी तरफ तहां दूसरी तरफ जे दोय दोय बाह्य कौंण तिनकै निकटि आठ रतिकर पर्वत हैं। ऐसैं एक दिशा विषै तेरह पर्वत च्यारि वावड़ी भई। च्यारों दिशानि विषै वावन पर्वत सोलह वावड़ी जाननी ॥ ९६७ ॥

आगैं तिन पर्वनिका वर्ण वा परिमाणकों कहैं हैं;—

**अंजणदहिकणयणिहा चुलसीदिदहेक्कजोयणसहस्सा ।**
**वट्टा वासुदएणय सरिसा बावण्णसेलाओ ॥ ९६८ ॥**

अंजनदधिकनकनिभाः चतुरशीतिदशैकयोजनसहस्राः।
वृत्ताः व्यासोदयेन सदृशाः द्वापंचाशच्छैलाः॥ ९६८॥

**अर्थ**—अंजन गिरि तौ अंजन जो कज्जल तीह समान स्याम वर्ण हैं। दधिमुख दही समान स्वेत वर्ण है। रतिकर ताया सुवर्ण समान रक्तता लिएं पीत वर्ण है। वहुरि अंजन गिरिका प्रमाण चौरासी हजार योजन दधिमुखका दश हजार योजन रतिकरका एक हजार योजन है। वहुरि ते सर्व वृत्त हैं। गोल आकारि हैं। व्यास उदयकरि समान हैं। अंजनादिक चौरासी दश एक हजार योजन क्रमतें ऊंचे हैं। अर इतनां ही मूल विषै वा उपरि समान चौड़े हैं। ऊंभा ढोलकै आकार सम व्यास रूप हैं। ऐसे सर्व मिले हुए वावन पर्वत हैं॥ ९६८॥

आगैं तिन वावडीनिके नाम गाथा दोय करि कहैं हैं;—

**णंदा णंदवदी पुण णंदुत्तर णंदिसेण अरविरया।**
**गयवीदसोगविजया वइजयंती जयंती य॥ ९६९॥**

नंदा नंदवती पुनः नंदोत्तरा नंदिषेणा अरविरजे।
गतवीतशोकाविजयाः वैजयंती जयंती च॥ ९६९॥

**अर्थ**—नंदा १ नंदवती १ वहुरि नंदोत्तरा १ नंदिषेणा १ ए च्यारि पूर्व दिशाविषै हैं। वहुरि अरजा १ विरजा १ गतशोका १ वीतशोका ए च्यारि दक्षिणविषै हैं। वहुरि विजया १ वैजयंती १ जयंती १॥ ९६९॥

**अवराजिदा य रम्मा रमणीया सुप्पभा य पुव्वादी।**
**रयणतडा लक्खपमा चरिमा पुण सव्वदोभद्दा॥ ९७०॥**

अपराजिता च रम्या रमणीया सुप्रभा च पूर्वादितः।
रत्नतट्यः लक्षप्रमाः चरमा पुनः सर्वतोभद्रा॥ ९७०॥

**अर्थ**—अपराजिता १ ए च्यारि पश्चिमदिशा विषै हैं। वहुरि रम्या १ रमणीया १ सुप्रभा १ अंत विषै यशोभद्रा १ ए च्यारि उत्तरविषै हैं। ऐसैं ए सर्व वावड़ी रत्नमय तट युक्त हैं लक्ष योजन प्रमाण हैं। ते पूर्वादिक दिशानिविषै क्रमतें जाननी॥ ९७०॥

अव तिन वावडीनिका स्वरूप कहैं हैं;—

**सव्वे समचउरस्सा टंकुक्किण्णा सहस्समोगाढा।**
**वेदियचउवणजुत्ता जलयरउम्मुक्कजलपुण्णा॥ ९७१॥**

सर्वाः समचतुरस्राः टंकोत्कीर्णाः सहस्रमवगाधाः।
वेदिकाचतुर्वनयुक्ता जलचरोन्मुक्तजलपूर्णाः॥ ९७१॥

**अर्थ**—ते सर्व वापी समचतुरस्र हैं। लाख योजन ही लंवी अर इतनी ही चौड़ी समचौकोर आकार युक्त हैं। वहुरि टंकोत्कीर्ण हैं। उपरि नीचैं एकरूप हैं। वहुरि एक हजार योजन ऊंडी हैं। वहुरि वेदिका अर च्यार्यों दिशानिविषै च्यारि वन तिन करि संयुक्त हैं। वहुरि जलचर जीवनि करि रहित जल करि संपूर्ण भरी हैं॥ ९७१॥

आगैं तिन वावडीनिके वननिका स्वरूप कहैं हैं;—

**वावीणं पुव्वादिसु असोयसत्तच्छदं च चंपवणं ।**
**चूदवणं च कमेण य सगवावीदीहदलवासा ॥ ९७२ ॥**

वापीनां पूर्वादिषु अशोकसप्तच्छदं च चंपवनं ।
चूतवनं च क्रमेण च स्वकवापीदीर्घदलव्यासानि ॥ ९७२ ॥

**अर्थ**—तिन एक एक वापीनिकी पूर्वादिक दिशानिविषै अनुक्रम करि अपनी अपनी वावड़ी समान एक लाख योजन लंबे अर तातैं आधे पचास हजार योजन चौड़े ऐसे अशोक अर सप्तछद अर चंपक अर आम्र बन हैं । ऐसैं नंदीश्वर द्वीपविषै सर्व चौंसठि बन जाननें ॥ ९७२ ॥

अब अंजनादि पर्वतनिकै उपरि प्रत्येक एक एक चैत्यालयकौं कहत संता आचार्य सो तिन चैत्यालयनिविषै चतुर्णिकाय देवनि करि काल विशेष विषै किया हुवा पूजा विशेष ताकौं कहनैंकै अर्थि पांच गाथानिकरि कहैं हैं;—

**तव्वावण्णणगेसुवि वावण्णजिणालया हवंति तहिं ।**
**सोहम्मादी वारसकप्पिंदा ससुरभवणतिया ॥ ९७३ ॥**

तद्द्वापंचाशन्नगेष्वपि द्वापंचाशज्जिनालया भवंति तेषु ।
सौधर्मादयो द्वादशकल्पेंद्राः ससुरभवनत्रिकाः ॥ ९७३ ॥

**अर्थ**—तिन वावन पर्वतनिविषै उपरि वावन जिन मंदिर हैं । तिनविषै अन्य कल्पवासी देव अर भवनत्रिक देव तिन करि सहित सौधर्म आदि वारह स्वर्गनिके इन्द्र हैं ॥ ९७३ ॥

ते कहा करैं हैं ते कैसे हैं सो कहैं हैं;—

**गयहयकेसरिवसहे सारसपिकहंसकोकगरुडे य ।**
**मयरसिहिकमलपुप्फयविमाणपहुदिं समारूढा ॥ ९७४ ॥**

गजहयकेसरिवृषभान् सारसपिकहंसकोकगरुडान् च ।
मकरशिखिकमलपुष्पकविमानप्रभृतिं समारूढाः ॥ ९७४ ॥

**अर्थ**—हस्ती १ घोटक १ सिंह १ वृषभ १ सारस १ कोकिला १ हंस १ चकवो १ गरुड १ माछलौं १ मोर १ कमल १ पुष्पक विमान इत्यादिकनि ऊपरि समारूढ हैं । **भावार्थ**—सौधर्मादिक वारह इंद्रनिके हस्ती आदि मुख्य वाहन हैं । तिन उपरि चढें हैं ॥ ९७४ ॥

बहुरि कैसे हैं;—

**दिव्वफलपुप्फहत्था सत्थाभरणा सचामराणीया ।**
**बहुधयतूराराचा गत्ता कुव्वंति कल्लाणं ॥ ९७५ ॥**

दिव्यफलपुष्पहस्ता शस्ताभरणाः सचामरानीकाः ।
बहुध्वजतूर्यारावाः गत्वा कुर्वंति कल्याणं ॥ ९७५ ॥

**अर्थ**—दिव्य फल पुष्प आदि पूजन द्रव्य हस्त विषै धारैं हैं । बहुरि प्रशस्त आभरण पहरैं हैं । चामरनि करि सहित सेनायुक्त हैं । बहुत ध्वजा अर वाजित्रनिके शब्द करि संयुक्त हैं । ऐसे

होत संतें अपनें स्थाननितें तहां नंदीश्वर द्वीपविषै जाइ ऐंद्रध्वज आदि जो जिन पूजनरूप कल्याण ताहि करै हैं ॥ ९७५ ॥

पडिवरिसं आसाढे तह कत्तियफग्गुणे य अट्टमिदो।
पुण्णदिणोत्ति यभिक्खं दो दो पहरं तु ससुरेहिं ॥ ९७६ ॥
प्रतिवर्षमाषाढे तथा कार्तिके फाल्गुने च अष्टमीतः।
पूर्णदिनांतं चाभीक्ष्णं द्वौ द्वौ प्रहरौ तु स्वसुरैः ॥ ९७६ ॥

अर्थ—वर्ष वर्ष प्रति आषाढ मास विषै अर तैसें ही कार्तिक मास विषै अर फाल्गुन मास विषै अष्टमी तिथितैं ल्याय पूर्णिमा दिन पर्यंत अभीक्ष्ण कहिए निरंतर दोय दोय पहर अपनें अपनें देवनि करि सहित ॥ ९७६ ॥

कौन कहा करै हैं सो कहै हैं;—

सोहम्मो ईसाणो चमरो वइरोयणो पदक्खिणदो।
पुव्ववरदक्खिणुत्तरदिसासु कुव्वंति कल्लाणं ॥ ९७७ ॥
सौधर्म ईशानः चमरो वैरोचनः प्रदक्षिणतः।
पूर्वापरदक्षिणोत्तरदिशासु कुर्वंति कल्याणं ॥ ९७७ ॥

अर्थ—प्रथम स्वर्ग युगलके इन्द्र सौधर्म्म अर ईशान बहुरि असुर कुमारनिके इन्द्र चमर अर वैरोचन ए च्यार्यौं प्रदक्षिणा रूप पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर दिशानि विषै कल्याण जो जिन पूजन ताहि करैं हैं। पूर्ववाला दक्षिण जाइ तब उत्तरवाला पूर्वकौं आवै ऐसें प्रदक्षिणारूप महोत्सव युक्त पूजन करै हैं ॥ ९७७ ॥

अब तीन लोक विषै तिष्टते जु अकृत्रिम चैत्यालय तिनका सामान्य करि व्यासादिक कहै हैं;—

आयामदलं वासं उभयदलं जिणघराणमुच्चत्तं।
दारुदयदलं वासं आणिदाराणि तस्सद्धं ॥ ९७८ ॥
आयामदलं व्यासं उभयदलं जिनगृहाणामुच्चत्वं।
द्वारोदयदलं व्यासः आणुद्वाराणि तस्यार्धं ॥ ९७८ ॥

अर्थ—उत्कृष्ट आदि चैत्यालयनिका जो आयाम ताका आधा तौ तिनका व्यास है। बहुरि आयाम अर व्यास दोउनिका मिलाइ ताका आधा जिन मंदिरनिका उच्चत्व है। भावार्थ—उत्कृष्ट मध्य जघन्य चैत्यालयनिकी लंबाई क्रमतैं सौ पचास पचीस योजन प्रमाण आगैं कहैंगे ताका आधा पचास पचीस साढा बारह योजन प्रमाण तिनकी चौडाईका प्रमाण जाननां। बहुरि लंबाई चौडाईकौं मिलाइ १५०।७५।७५ ÷ २ आधा किएं पिचहत्तरि साढासैंतीस पौंणा उगणीस योजन प्रमाण तिनकी उचाईका प्रमाण हो है। बहुरि तिन चैत्यालयनिके जे द्वार तिनकी उचाईतैं आधा द्वारनिका व्यास प्रमाण है। भावार्थ—उत्कृष्ट मध्य जघन्य चैत्यालयनिके बड़े द्वारनिकी उचाई सोलह आठ च्यारि योजन कहैंगे ताका आधा आठ च्यारि दोय योजन तिनकी चौडाईका प्रमाण

जाननां। बहुरि अन्य छोटे द्वार ते तिस बड़े द्वारतैं आधा प्रमाण उदय व्यास संयुक्त हैं। **भावार्थ**— उत्कृष्ट मध्य जघन्य चैत्यालयनिके छोटे द्वारनिकी उचाई आठ च्यारि दोय योजन है। चौड़ाई च्यारि दोय एक योजन है ॥ ९७८ ॥

इस ही कहे अर्थकों विषेशतैं गाथा दोयकरि कहैं हैं;—

**वरमज्झिमअवराणं दलकमं भद्दसालणंदणगा।**
**णंदीसरगविमाणगजिणालया होंति जेट्ठा हु ॥ ९७९ ॥**
वरमध्यमावराणां दलक्रमं भद्रशालनंदनकाः।
नंदीश्वरकविमानगजिनालया भवंति ज्येष्ठा हि ॥ ९७९ ॥

**अर्थ**—उत्कृष्ट मध्य जघन्य चैत्यालयनिका व्यासादिक क्रमतैं आधा आधा जानहु। तहां भद्रशाल अर नंदनवन अर नंदीश्वर अर दीप वैमानिकनिके विमान इन विषै प्राप्त जे जिनालय हैं ते तौ व्यासादिक करि उत्कृष्ट हैं ॥ ९७९ ॥

**सोमणसरुजगकुंडलवक्खारिसुगारमाणुसुत्तरगा।**
**कुलगिरिजा वि य मज्झिम जिणालया पांडुगा अवरा ॥ ९८० ॥**
सौमनसरुचककुंडलवक्षारेष्वाकारमानुषोत्तरगाः।
कुलगिरिजा अपि च मध्यमा जिनालया पांडुगा अवराः ॥ ९८० ॥

**अर्थ**—सौमनस वन अर रुचक कुंडल वक्षार इष्वाकार मानुषोत्तर पर्वत अर कुलाचल इन विषै प्राप्त जिनालय हैं ते मध्यम हैं। पांडुक वन विषै प्राप्त जिनालय हैं ते जघन्य हैं ॥ ९८० ॥

याकै अनंतरि उत्कृष्ट जिनालयनिका आयाम अवगाध द्वारनिका उच्चत्व कहैं हैं;—

**जोयणसय आयामं दलगाढं सोलसं तु दारुदयं।**
**जेट्ठाणं गिहपासे आणिद्दाराणि दो द्दो दु ॥ ९८१ ॥**
योजनशतमायामः दलगाधः षोडश तु द्वारोदयः।
ज्येष्ठानां गृहपार्श्वे आणुद्वारे द्वे द्वे तु ॥ ९८१ ॥

**अर्थ**—उत्कृष्ट जिनालयनिका आयाम सौ योजन प्रमाण है। अर आध योजन अवगाध कहिए पृथ्वी मांहीं नींव है। बहुरि सोलह योजन तिनके द्वारनिका उच्चत्व है। बहुरि यहु बड़ा द्वार तौ सनमुख दिशा विषै है। अर जिन मंदिरनिके दोऊ पार्श्वनि विषै दोय दोय छोटे द्वार हैं। पीछैकों द्वार हैं नाहीं ॥ ९८१ ॥

आगैं उत्कृष्ट आदि विशेष रहित जे वसतिका कहिए जिनालय तिनका आयाम कितनां है सो कहैं हैं;—

**वेयड्ढजंबुसामलिजिणभवणाणं तु कोस आयामं।**
**सेसाणं सगजोग्गं आयामं होदि जिणदिट्ठं ॥ ९८२ ॥**
विजयार्धजंबूशाल्मलिजिनभवनानां तु क्रोश आयामः।
शेषाणां स्वकयोग्यः आयामो भवति जिनदृष्टः ॥ ९८२ ॥

**अर्थ**—विजयार्द्ध पर्वत जंबूवृक्ष शालमली वृक्ष इन विषै जिन मंदिरनिका आयाम जो लंबाई सो एक कोश प्रमाण है। अवशेष भवनवासीनिके भवन व्यंतरनिके आवास इत्यादिकनि विषै प्राप्त जे जिनभवन तिनका अपना अपना यथा योग्य आयाम जिन देव देखै हैं। बहुत प्रकार है तातैं इहां न कह्या है ॥ ९८२ ॥

आगैं कहे जे जिन भवन तिनका परिवार गाथा सात करि कहैं हैं;—

**चउगोउरमणिसालति वीहिं पडि माणथंभ णवथूहा।**
**वणधयचेदियभूमी जिणभवणाणं च सव्वेसिं ॥ ९८३ ॥**

चतुर्गोपुरमणिशालत्रयं वीथीं प्रति मानस्तंभा नवस्तूपाः।
वनध्वजाचैत्यभूमयः जिनभवनानां च सर्वेषां ॥ ९८३ ॥

**अर्थ**—सर्व जिन भवननिके च्यारि द्वारनि करि संयुक्त मणिमई तीन कोट हैं। बहुरि वीथी जो द्वार होइ करि जानेंकी गली तिन एक एक वीथी प्रति एक एक मानस्तंभ है। अर नव नव स्तूप हैं। बहुरि तिन तीन कोटनिकैं बीचि बीचि अंतराल तिन विषै बाह्यतैं लगाय पहला दूसरा कोटकै बीचि वन हैं, दूसरा तीसरा कोटकै बीचि ध्वजा हैं। तीसरा कोटकै बीचि चैत्यालय चैत्यभूमि है ॥ ९८३ ॥

**जिणभवणे अट्ठसया गब्भगिहा रयणथंभवं तत्थ।**
**देवच्छंदो हेमो दुगअडचउवासदीहुदओ ॥ ९८४ ॥**

जिनभवनेषु अष्टशतानि गर्भगृहाणि रत्नस्तंभवान् तत्र।
देवच्छंदो हैमः द्विकाष्टचतुर्व्यासदीर्घोदयः ॥ ९८४ ॥

**अर्थ**—तिन जिन भवननि विषै एकसौ आठ गर्भ ग्रह हैं। जैसैं वास करनेंके कोठा आदिस्थान तैसैं गर्भ ग्रह जाननें। बहुरि तहां जिन मंदिरकै मध्यविषैं रत्ननिका स्तंभनि करि युक्त सुवर्ण मई दोय योजन चौड़ा आठ योजन लंबा च्यारि योजन ऊंचा देवछंद कहिए छप्पर मंडप है ॥ ९८४ ॥

**सिंहासणादिसहिया विणीलकुंतल सुवज्जमयदंता।**
**विद्दुमअहरा किसलयसोहायरहत्थपायतला ॥ ९८५ ॥**

सिंहासनादिसहिता विनीलकुंतलाः सुवज्रमयदंताः।
विद्रुमाधराः किसलयशोभाकरहस्तपादतलाः ॥ ९८५ ॥

**अर्थ**—सिंहासन छत्रादिक करि संयुक्त बहुरि विशेषपनैं नील हैं मस्तकादिविषै केश जिनकै अर भले वज्रमई दंत जिनकै अर विद्रुम जो मूंगा तिस सारिखे रक्त होठ हैं जिनकै अर किसलय जो नवीन कूंपल तिस सारिखे हैं रक्तता लिएं शोभा युक्त हस्त तल अर पाद तल जिनकै ऐसी जिन प्रतिमा हैं। इहां केशादिककासा आकार रूप पुद्गल परणए हैं ऐसा जाननां ॥ ९८५ ॥

**दसतालमाणलक्खणभरिया पेक्खंत इव वदंता वा।**
**पुरुजिणतुंगा पडिमा रयणमया अट्ठअहियसया ॥ ९८६ ॥**

दशतालमानलक्षणभरिताः प्रेक्ष्यमाणा इव वदंत इव ।
पुरुजिनतुंगाः प्रतिमाः रत्नमया अष्टाधिकशताः ॥ ९८६ ॥

अर्थ—दश ताल प्रमाण लक्षणनिकरि भरी हैं। तालका प्रमाण वारह अंगुल जाननां। बहुरि ते प्रतिमा तीर्थंकर वत जानों कि चोवैं हैं जानों बोलें हैं। बहुरि पुरुजिन जो पहला वृषभ तीर्थंकर तीह समान पांचसै धनुप ऊंची हैं। बहुरि रत्न मय हैं। ऐसी एकसौ आठ जिन प्रतिमा तिन गर्भ ग्रहनि विषै एक एक विराज मान हैं ॥ ९८६ ॥

**चमरकरणागजक्खगवत्तीसंमिहुणगेहि पुह जुत्ता ।**
**सरिसीए पंतीए गब्भगिहे सुट्ठु सोहंति ॥ ९८७ ॥**

चमरकरनागयक्षगद्वात्रिंशन्मिथुनैः पृथक् युक्ताः ।
सदृश्या पंक्त्या गर्भगृहे सुष्टु शोभंते ॥ ९८७ ॥

अर्थ—बहुरि ते प्रतिमा कैसी हैं ? चमर है हाथ विषै जिनकै ऐसे जु नागकुमारनिके वा यक्षनिके वत्तीस युगल तिनकरि संयुक्त जुदे जुदे एक एक गर्भ गृह विषै सदृश रूप वरोवरि पंक्ति करि भले प्रकार सोभैं हैं। भावार्थ—वत्तीस नाग कुमार वा यक्षनिके युगल तिनके हस्त विषै चौसठि चमर हैं तिन करि वीज्यमान हैं ॥ ९८७ ॥

**सिरिदेवी सुददेवी सव्वाण्हसणक्कुमारजक्खाणं ।**
**रूवाणि य जिणपासे मंगलमट्ठविहमावि होदि ॥ ९८८ ॥**

श्रीदेवी श्रुतदेवी सर्वाह्णसनत्कुमारयक्षाणां ।
रूपाणि च जिनपार्श्वे मंगलमष्टविधमपि भवति ॥ ९८८ ॥

अर्थ—तिन जिन प्रतिमानिके पार्श्व विषै श्री देवी अर सरस्वती देवी अर सर्वाह्ण यक्ष अर सनत्कुमार यक्ष इनके रूप जे आकार ते तिष्टै हैं। भावार्थ—जिनप्रतिमाके निकटि इन च्यारनिका प्रतिबिंब हो है। इहां प्रश्न—जो श्री तौ धनादिक रूप है अर सरस्वती जिनवानी है। इनका प्रतिबिंब कैसैं हो है। ताका समाधान—श्री अर सरस्वती दोऊ लोक विषै उत्कृष्ट हैं। तातैं इनका देवांगनाका आकार रूप प्रतिबिंब हो है। बहुरि दोऊ यक्ष विशेप भक्त हैं। तातैं तिनके आकार हो हैं। बहुरि आठ प्रकार मंगल द्रव्य जिनप्रतिमानिकै निकटि सोभै हैं ॥ ९८८ ॥

**भिंगारकलसदप्पणवीयणधयचामरादवत्तमह ।**
**सुवइट्ठ मंगलाणि य अट्ठहियसयाणि पत्तेयं ॥ ९८९ ॥**

भृंगारकलशदर्पणवीजनध्वजचामरातपत्रमथ ।
सुप्रतिष्ठं मंगलानि च अष्टाधिकशतानि प्रत्येकम् ॥ ९८९ ॥

अर्थ—झारी १ कलश १ आरसा १ वीजनां १ ध्वजा १ चामर १ छत्र १ अर ठौंना १ ए आठ मंगल द्रव्य हैं। ते एक एक मंगल द्रव्य एकसौ आठ प्रमाण तहां हो हैं ॥ ९८९ ॥

आगैं गर्भ ग्रहतैं बाह्य स्वरूपकौं गाथा च्यारि करि कहैं हैं;—

**मणिकणयपुप्फसोहियदेवच्छंदस्स पुव्वदो मज्झे ।**
**वसईए रूप्पकंचणघडासहस्साणि बत्तीसं ॥ ९९० ॥**

मणिकनकपुष्पशोभितदेवच्छंदस्य पूर्वतो मध्ये ।
वसत्यां रूप्यकांचनघटसहस्राणि द्वात्रिंशत् ॥ ९९० ॥

**अर्थ—**मणि अर सुवर्ण मय पुष्पनिकरि सोभित ऐसा जु देवछंद ताकै पूर्व विषै आगैं वसती जो जिन मंदिर ताका मध्य विषै रूपा अर सोनामई वत्तीस हजार घडे हैं ॥ ९९० ॥

**महदारस्स दुपासे चउवीससहस्समत्थि धूवघडा ।**
**दारवहिं पासदुगे अट्ठसहस्साणि मणिमाला ॥ ९९१ ॥**

महाद्वारस्य द्विपार्श्वे चतुर्विंशसहस्रं संति धूपघटाः ।
द्वारवहिः पार्श्वद्वये अष्टसहस्राणि मणिमालाः ॥ ९९१ ॥

**अर्थ—**महा द्वार जो वड़ा द्वार ताके दोऊ पार्श्वनि विषैं दाहिणी वांई तरफ चौईस हजार धूपके घड़े हैं। वहुरि तिस महा द्वारके वाह्य दोऊ पार्श्वनि विषै आठ हजार मणिमय माला हैं ॥ ९९१ ॥

**तम्मज्झ हेममाला चउवीसं वदणमंडवे हेमा ।**
**कलसामाला सोलस सोलसहस्साणि धूवघडा ॥ ९९२ ॥**

तन्मध्ये हेममाला चतुर्विंशतिः वदनमंडपे हेमाः ।
कलशमालाः षोडश षोडशसहस्राणि धूपघटाः ॥ ९९२ ॥

**अर्थ—**तिन मणिमय मालानिके वीचि चौईस हजार सुवर्णमय माला हैं। वहुरि तिस महाद्वारकें आगैं सन्मुख मुख मंडप है तिस विषै सुवर्णमय कलश अर सुवर्ण मय माला सोलह सोलह हजार हैं। वहुरि तिसही विषै सोलह हजार धूपके घड़े हैं ॥ ९९२ ॥

**महुरझणझणणिणादा मोत्तियमणिणिम्मिया सकिंकिणिया ।**
**वहुविहघंटाजाला रइदा सोहंति तम्मज्झे ॥ ९९३ ॥**

मधुरझनझननिनादाः मौक्तिकमणिनिर्मिताः सकिंकिणिकाः ।
वहुविधघंटाजाला रचिताः शोभंते तन्मध्ये ॥ ९९३ ॥

**अर्थ—**तिस ही मुख मंडपका मध्य विषै मीठा है झण झण शब्द जिनका अर मोती माणिनि करि निपजी किंकणी जे छोटी घंटा तिन करि सहित नाना प्रकार घंटानिके समूह अनेक रचना करि युक्त सोभैं हैं ॥ ९९३ ॥

वहुरि तिम मंदिरके क्षुल्लक द्वारादिकका स्वरूप कहैं हैं;—

**वसईमज्झगदक्खिणउत्तरतणुदारगे तदद्धं तु ।**
**तप्पुट्ठे मणिकंचणमालडचउवीसगसहस्सं ॥ ९९४ ॥**

वसतिमध्यगदक्षिणोत्तरतनुद्वारे तदर्धं तु ।
तत्पृष्टे मणिकांचनमाला अष्टचतुर्विंशकसहस्राणि ॥ ९९४ ॥

**अर्थ—**वसती जो जिन मंदिर ताका दक्षिण उत्तर पार्श्वका मध्यविषै प्राप्त छोटा द्वार है। तिसविषै मुख्य महा द्वारविषै कह्या जो सर्व विधान तातैं आधा आधा है। इहां मणिमाला आदिका

प्रमाण पूर्वोक्ततैं आधा है। बहुरि तिस मंदिरका पृष्ठ भाग जो पीछैका भाग तहां मणिमाला अर सुवर्ण माला क्रमतैं आठ हजार अर चौईस हजार जाननी। माला तौ चौगिरद भीतिकैं लंबती जाननी। घड़े पृथ्वीविषै तिष्ठते जाननैं। घंटा मंडपके माहीं लंबती जाननी॥ ९९४॥

बहुरि कह्या जो मुख मंडपादिक ताका व्यासादिक अर ताकै आगैं स्थित जे सर्व तिनका स्वरूप गाथा पंद्रह करि कहैं हैं;—

**जिणगिहवासयामो तप्पुरदो सोलसोच्छिओ होदि।**
**मुहमंडओ तदग्गे पेक्खण चउरस्स मंडवओ॥ ९९५॥**

जिनगृहव्यासायामः तत्पुरतः षोडशोच्छ्रितो भवति।
मुखमंडपः तदग्रे प्रेक्षणः चतुरस्रः मंडपः॥ ९९५॥

**अर्थ**—जिन मंदिरकै समान पचास अर सौ योजन जाका व्यास अर आयाम है अर सोलह योजन ऊंचा है ऐसा मुख मंडप तिस जिनमंदिरके आगैं जाननां। बहुरि तिस मुख मंडपकै आगैं चौकोर प्रेक्षण मंडप है॥ ९९५॥

**सदवित्थारो साहियसोलुदओ हेमपीडियं पुरदो।**
**चउरस्सं जोयणदुगसमुच्छयं सीदिवित्थारं॥ ९९६॥**

शतविस्तारः साधिकषोडशोदयः हेमपीठं पुरतः।
चतुरस्रं योजनद्विकसमुच्छ्रयं अशीतिविस्तारं॥ ९९६॥

**अर्थ**—सो प्रेक्षण मंडप सौ योजन चौड़ा है साधिक सोलह योजन ऊंचा है। बहुरि तिस प्रेक्षण मंडपकै आगैं दोय योजन ऊंचा असी योजन चौड़ा चौकोर सुवर्ण मई पीठ है। पीठ नाम चौंतराका जाननां॥ ९९६॥

**तम्मज्झे चउरस्सो मणिमय चउविंदवास सोलुदओ।**
**अट्ठाणमंडओ तप्पुरदो तालुदयथूवमणिपीढं॥ ९९७॥**

तन्मध्ये चतुरस्रः मणिमयः चतुर्वृंदव्यासः षोडशोदयः।
आस्थानमंडपः तत्पुरतः चत्वारिंशदुदयस्तूपमणिपीठं॥ ९९७॥

**अर्थ**—तिस पीठका मध्य विषै चौकोर मणिमय च्यारिका घन चौसठि योजन प्रमाण चौड़ा सोलह योजन ऊंचा आस्थान मंडप कहिये सभामंडप है। बहुरि ताकै आगैं चालीस योजन ऊंचा स्तूपनिका मणिमय पीठ है॥ ९९७॥

**तं पुण चउगोउरजुदबारंबुजवेदियाहिं संजुत्तं।**
**मज्झे मेहलतियजुद चउघणदीहुदयवास बहुरयणो॥ ९९८॥**

तत् पुनः चतुर्गोपुरयुतद्वादशांबुजवेदिकाभिः संयुक्तः।
मध्ये मेखलात्रययुतः चतुर्घनदीर्घोदयव्यासः बहुरत्नः॥ ९९८॥

**अर्थ**—बहुरि सो पीठ च्यारि द्वारनि करि संयुक्त जो बारह अंबुज वेदी तिन करि संयुक्त है। बहुरि तिस पीठिकै मध्य तीन मेखला जो कटनी तिन करि संयुक्त च्यारिका घन चौसठि योजन तिंह प्रमाण लंबा वा ऊंचा वा चौड़ा ऐसा बहुत रत्नमय॥ ९९८॥

कहा सो कहैं हैं;—

थूहो जिणविंबचिदो णवण्हमेवं कमेण तप्पुरदो।
वासायामसहस्सं वारसवेदिजुद हेममयपीठं ॥ ९९९ ॥

स्तूपः जिनविंबचितः नवानामेवं क्रमेण तत्पुरतः।
व्यासायामसहस्रं द्वादशवेदीयुतं हेममयपीठं ॥ ९९९ ॥

**अर्थ**—जिन विंव करि संचित स्तूप है तीन कटनी लिएं जो रत्न राशि ताका नाम स्तूप है। ताकै ऊपरि जिनविंव विराजै हैं। सो नव स्तूप हैं। तिनका ऐसैं ही क्रमकरि स्वरूप है। वहुरि तिस स्तूपकै आगैं हजार योजन लंवा वा चौड़ा गिरद विषै वारहवेदीनि करि संयुक्त सुवर्ण मय पीठ है ॥ ९९९ ॥

तहिं चउदीहिगिवासक्खंधा वहुमणिमया ससालतिया।
वारहजोयणआयदचउमहसाहा अणेयतणुसाहा ॥ १००० ॥

तस्मिन् चतुर्दीर्घकव्यासस्कंधौ वहुमणिमयौ सशालत्रयौ।
द्वादशयोजनायतचतुर्महाशाखौ अनेकतनुशाखौ ॥ १००० ॥

**अर्थ**—तिस पीठ उपरि च्यारि योजन लंवा अर एक योजन चौड़ा है स्कंध पेंड़ जिनका अर वहुत मणि मय अर गिरद विषै तिन कोटनि करि संयुक्त अर वारह योजन लंवी हैं च्यारि महा शाखा जिनकै अर छोटी शाखा अनेक हैं जिनकै ऐसे हैं ॥ १००० ॥

वारहजोयणवित्थडसिहरा सिद्धत्थचेत्तणामतरू।
णाणादलपुप्फफला पंचाहियपउमपरिवारा ॥ १००१ ॥

द्वादशयोजनविस्तृतशिखरौ सिद्धार्थचैत्यनामतरू।
नानादलपुष्पफलौ पंचाधिकपद्मपरिवारौ ॥ १००१ ॥

**अर्थ**—वहुरि वारह योजन चौड़ा है शिखर कहिए उपरिम भाग जिनका वहुरि नाना प्रकार पांन फूल फल युक्त हैं। वहुरि पद्मादि द्रहनि विषै जो मुख्य कमलके परिवार कमलनिका प्रमाण कह्या तातैं पांच अधिक हैं परिवारके वृक्ष जिनिकै ऐसे सिद्धार्थ नामा अर चैत्यनामा दोय वृक्ष हैं ॥ १००१ ॥

मूलगपीठणिसण्णा चउदिसं चारि सिद्धजिणपडिमा।
तप्पुरदो महकेदू पीठे चिट्ठंति विविहवण्णणगा ॥ १००२ ॥

मूलगपीठनिषण्णा चतुर्दिक्षु चतस्रः सिद्धजिनप्रतिमाः।
तत्पुरतः महाकेतवः पीठे तिष्ठंति विविधवर्णनकाः ॥ १००२ ॥

**अर्थ**—तिन वृक्षनिका मूल विषै प्राप्त जो पीठ ताकै उपरि तिष्ठते ऐसे च्यारों दिशानि विषै च्यारि सिद्धार्थ वृक्षका मूल विषै तौ सिद्ध प्रतिमा अर चैत्य वृक्षका मूल विषै अरहंत प्रतिमा विराजमान है। इहां ऐसा जांनिए है जो सिद्धि प्रतिमानिकै छत्रादिक नांहीं हैं। अरहंत प्रतिमाकैं है। विशेष जैसा होइ तैसा सिद्धांततैं जांनि लेनां। वहुरि तिस वृक्षके आगैं पीठ है ताविषै नाना प्रकार वर्णन करि युक्त महा ध्वजा तिष्टै हैं ॥ १००२ ॥

सोलुदय कोसवित्थड कणयत्थंभग्गंगा हु रयणमया ।
चित्तवडछत्ततिदया बहुगा जणणयणमणरमणा ॥ १००३ ॥
षोडशोदयाः क्रोशविस्ताराः कनकस्तंभाग्रगा हि रत्नमयाः ।
चित्रपटछत्रत्रितया बहुका जननयनमनोरमणाः ॥ १००३ ॥

अर्थ—सोलह योजन ऊंचे अर एक कोश चौड़े ऐसे ध्वजानिके सुवर्ण मय स्तंभ हैं । तिन स्तंभनिका अग्र भाग विषै प्राप्त अर रत्न मय अर बहुत अर मनुक्षनिके नेत्र मनकों रमणीक ऐसे नाना प्रकारके ध्वजाकार रूप वस्त्र अर तीन छत्र सोभैं हैं । इहां वस्त्रकासा आकार वर्णकोमलता ललितता लिएं रत्नरूप पुद्गल परिणए हैं तातैं वस्त्र भी रत्नमय जाननें ॥ १००३ ॥

तत्पुरदो जिणभवणं तच्चउदिस विविहकुसुम चउ दहगा ।
दसगाढसयदलायदवासा मणिकणयवेदिजुदा ॥ १००४ ॥
तत्पुरतः जिनभवनं तच्चतुर्दिशं विविधकुसुमाः चत्वारो ह्रदाः ।
दशावगाधशतदलायतव्यासाः मणिकनकवेदीयुताः ॥ १००४ ॥

अर्थ—तिस ध्वजा पीठकै आगैं जिन मंदिर हैं ताकी च्यारयौं दिशानि विषै नाना प्रकारका फूलनि करि संयुक्त दश योजन ऊंडे सौ योजन लंबे ताके आधे पचास योजन चौड़े माणि सुवर्णमय वेदीनिकरि संयुक्त च्यारि द्रह हैं ॥ १००४ ॥

पुरदो सुरकीडणमणिपासाददु होंति वीहिपासदुगे ।
पण्णुदयं दलवासा तप्पुरदो तोरणं होदि ॥ १००५ ॥
पुरस्तात् सुरक्रीडनमणिमयप्रासादद्वयं भवंति वीथिपार्श्वद्वये ।
पंचाशदुदयं दलव्यासं तत्पुरतस्तोरणं भवति ॥ १००५ ॥

अर्थ—ताकै आगैं जो मार्ग रूप वीथी है । ताके दोऊ पार्श्वनि विषै पचास योजन ऊंचे ताका आधा पचीस योजन चौड़े देवनिके क्रीड़ा करनेंके स्थान मणिमय दोय मंदिर हैं । बहुरि ताकै आगैं तोरण हैं ॥ १००५ ॥

तं मणिथंभग्गठियं मुत्ताघंटासुजाल पण्णुदयं ।
तद्दलजोयणवासं जिणबिंबकदंबरमणिज्जं ॥ १००६ ॥
तत् मणिस्तंभाग्रस्थितं मुक्ताघंटासुजालं पंचाशदुदयम् ।
तद्दलयोजनव्यासं जिनबिंबकदंबरमणीयं ॥ १००६ ॥

अर्थ—सो तोरण मणिमय स्तंभनिका अग्र भाग विषै स्थित हैं । दोय स्तंभनिकै वीचि भींति रहित मरगोलकासा आकार ताका ही नाम तोरण है । बहुरि सो तोरण मोतीमाल अर घंटा समूह करि युक्त हैं । ए जाकैं ढंवै हैं । बहुरि सो तोरण पचास योजन ऊंचा ताका आधा पचीस योजन चौड़ा है । बहुरि सो तोरण जिनबिंबनिकै समूह करि रमणीक हैं । जिनबिंबनिका आकार जा विषै पाईए हैं ॥ १००६ ॥

पुरदो पासाददुगं फलिहादिमसालदारपासदुगे ।
अब्भंतरं सदुदयं दलवासं रयणसंघडियं ॥ १००७ ॥

पुरतः प्रासादद्वयं स्फटिकादिमशालद्वारपार्श्वद्वये ।
अभ्यंतरं शतोदयं दलव्यासं रत्नसंघटितम् ॥ १००७ ॥

अर्थ—तिस तोरणके आगैं स्फटिकमय जो प्रथम कोट ताकै अभ्यंतर कोटके द्वारका दोऊ पार्श्वनि विषैं सो योजन ऊंचे ताका आधा पचास योजन चौड़े रत्न निर्म्मापित दोय मंदिर हैं। ऐसें प्रथम कोट पर्यंत वर्णन किया ॥ १००७ ॥

जं परिमाणं भणिदं पुव्वगदारम्हि मंडवादीणं ।
दक्खिणउत्तरदारे तदद्धमाणं गहीदव्वं ॥ १००८ ॥
यत् परिमाणं भणितं पूर्वद्वारे मंडपादीनाम् ।
दक्षिणोत्तरद्वारे तदर्धमानं ग्रहीतव्यं ॥ १००८ ॥

अर्थ—पूर्व द्वार विषैं मंडपादिकनिका जो परिमाण कह्या तातैं आधा प्रमाण दक्षिण द्वार अर उत्तरद्वार विषैं ग्रहण करनां। अन्य वर्णन तीनों तरफां समान है ॥ १००८ ॥

वंदणभिसेयणच्चणसंगीयवलोयमंडवेहिं जुदा ।
कीडणगुणणगिहेहि य विसालवरवट्टसालेहिं ॥ १००९ ॥
वंदनाभिषेकनर्तनसंगीतावलोकमंडपैः युतानि ।
क्रीडनगुणनगृहैश्च विशालवरपट्टशालैः ॥ १००९ ॥

अर्थ—बहुरि ते चैत्यालय सामायिकादि क्रिया करनेंके स्थान वंदना मंडप अर स्नान करनेंके स्थान अभिषेक मंडप अर नृत्य करनेंके स्थान नर्तन मंडप अर सांगीत साधन करनेंके स्थान सांगीत मंडप अर अवलोकन करनेंके स्थान अवलोकन मंडप तिन करि संयुक्त हैं। बहुरि क्रीडा करनेंके स्थान क्रीडन गृह शास्त्रादिक अभ्यासनेंके स्थान गुणनग्रह तिन करि अर विस्तीर्ण उत्कृष्ट पट्ट चित्राम आदि दिखावनेंके स्थान पट्टशाला तिनकरि संयुक्त हैं ॥ १००९ ॥

अब पहला अर दूसरा कोटकै बीचि जो अंतराल ताका स्वरूपकौं कहैं हैं;—

सिंहगयवसहगरुडसिहिंदिणहंसारविंदचक्कधया ।
पुह अट्ठसया चउदिसमेक्केक्के अट्ठसय खुल्ला ॥ १०१० ॥
सिंहगजवृषभगरुडशिखींद्विनहंसारविंदचक्रध्वजाः ।
पृथक् अष्टशतानि चतुर्दिशमेकैकस्मिन् अष्टशतं क्षुल्लाः ॥ १०१० ॥

अर्थ—सिंह १ हस्ती १ वृषभ १ गरुड़ १ मयूर १ चंद्रमा १ सूर्य १ हंस १ कमल १ चक्र इन दशनिका आकार करि संयुक्त ध्वजा हैं ते पृथक् पृथक् एकसौ आठ हैं। अर प्रत्येक जिन मंदिरकी च्यारों दिशानि विषैं हैं। ऐसें मुख्य ध्वजा च्यारि हजार तीनसै वीस भई। बहुरि इहां एक एक मुख्य ध्वजा विषै एकसौ आठ क्षुल्लक छोटी ध्वजा हैं ॥ १०१० ॥

आगैं दूसरा अर तीसरा कोटकै बीचि जो अंतराल ताका स्वरूपकौं गाथा तीन करि कहैं हैं;—

चउवणमसोयसत्तच्छदचंपयचूदमेत्थ कप्पतरू ।
कणयमयकुसुमसोहा मरगयमयविविहपत्तड्ढा ॥ १०११ ॥

चतुर्वनमशोकसप्तच्छदचंपकचूतमत्र कल्पतरवः ।

कनकमयकुसुमशोभाः मरकतमयविविधपत्राढ्याः ॥ १०११ ॥

**अर्थ**—अशोक अर सप्तछद अर चंपक अर आम्र इन मई च्यारि वन हैं। बहुरि इहां सुवर्ण मई फूलनि करि शोभित अर मरकत मणिमय नाना प्रकार यंत्रनिकरि पूर्ण ऐसे कल्प वृक्ष हैं ॥ १०११ ॥

**वेलुरियफला विद्दुमविसालसाहा दसप्पयारा ते ।**

**पल्लंकपाडिहेरग चउदिसमूलगय जिणपडिमा ॥ १०१२ ॥**

वैडूर्यफला विद्रुमविशालशाखाः दशप्रकारास्ते ।

पल्यंकप्रातिहार्यगाः चतुर्दिशामूलगता जिनप्रतिमाः ॥ १०१२ ॥

**अर्थ**—बहुरि ते वैडूर्य्य रत्न मय फल संयुक्त हैं। बहुरि विद्रुम मूंगा मय डाली युक्त है। ऐसे कल्प वृक्ष भोजनांग आदि भेद लीएं दश प्रकार तिन वननि विषै हैं। बहुरि तिन वननिविषै चैत्यवृक्षानिकै निकटि पल्यंक आसन छत्रादि प्रातिहार्य संयुक्त च्यारों दिशानि विषै वृक्षनिका मूलकै निकटि प्राप्त ऐसी जिन प्रतिमा हैं ॥ १०१२ ॥

**सालत्तयपीढत्तयजुत्ता मणिसाहपत्तपुप्फफला ।**

**तच्चउवणमज्झगया चेदिगरुक्खा सुसोहंति ॥ १०१३ ॥**

शालत्रयपीठत्रययुक्ताः मणिशाखापत्रपुष्पफलाः ।

तच्चतुर्वनमध्यगताः चैत्यवृक्षाः सुशोभंते ॥ १०१३ ॥

**अर्थ**—तीन कोट तीन पीठ करि संयुक्त अर मणिमय डाली पांन फूल फल युक्त ऐसे च्यारयों वननिकै मध्य प्राप्त जिन विंव सहित चैत्य वृक्ष भले प्रकार सोभै हैं ॥ १०१३ ॥

आगैं नंदादिक वापी अर मान स्तंभ तिनका विशेष स्वरूप कहैं हैं;—

**णंदादीय तिमेहल तिवीढया भंति धम्मविहवावि ।**

**पडिमाधिट्ठियमुड्ढा वणभूचउवीहिमज्झम्हि ॥ १०१४ ॥**

नंदादिकाः त्रिमेखलाः त्रिपीठका भांति धर्मविभवा अपि ।

प्रतिमाधिष्ठितमूर्धानः वनभूचतुर्वीथीमध्ये ॥ १०१४ ॥

**अर्थ**—पूर्वै कही जे नंदादिक सोलह वावड़ी ते तीन कटनीनि करि संयुक्त सोभैं हैं। बहुरि वननिकी जु भूमि ताकै निकटि द्वारनितैं आवनेंका मार्गरूप जो वीथी तिनका मध्य विषै जिन प्रतिमाका स्थान भूत है मस्तक भाग जिनका ऐसे धर्म्म विभवा अपि कहिए धर्म्म रूप विभव संजुक्त मानस्तंभ हैं तेऊ तीन पीठ युक्त सोभैं हैं। ऐसैं जिनालयका वर्णन जाननां ॥ १०१४ ॥

इतिश्री **नेमिचंद्राचार्यविरचित त्रिलोकसारमें** छठा

नरतिर्यग्लोकका अधिकार **समाप्त भया** ॥ ६ ॥



# मूलग्रंथकारका वक्तव्य।



आगैं ग्रंथका अंत विषै मंगल करनैंकौं सर्व जे सर्वज्ञके प्रतिविंब तिनकौं वंदना करै हैं;-

**जिणसिद्धाणं पडिमा अकिट्टिमा किट्टिमा दु अदिसोहा।**
**रयणमया हेममया रुप्पमया ताणि वंदामि ॥ १०१५ ॥**

जिनसिद्धानां प्रतिमा अकृत्रिमाः कृत्रिमास्तु अतिशोभाः।
रत्नमया हेममया रूप्यमया ताः वंदे ॥ १०१५ ॥

**अर्थ**—अकृत्रिम तौ अनादि निधन अर कृत्रिम करी हुई ऐसी रत्नमय वा सुवर्णमय रूपामय जे अरहंतनिकी अर सिद्धनिकी प्रतिमा तिन विंवनिकौं मैं वंदौं हौं ॥ १०१५ ॥

वहुरि अंत संवंधी मंगलकै ही आर्थि संख्या करि संयुक्त जे समुदायरूप जिन मंदिर तिनकौं नमस्कार करत संता सूत्र कहैं हैं;—

**कोडी लक्खं सहस्सं अट्ठय छप्पण्ण सत्तणउदी य।**
**चउसदमेगासीदी गगणगए चेदिए वंदे ॥ १०१६ ॥**

कोट्यः लक्ष्याणि सहस्राणि अष्ट षट्पंचाशत् सप्तनवतिः च।
चतुःशतमेकाशीतिः गगनगतानि चैत्यानि वंदे ॥ १०१६ ॥

**अर्थ**—आठ कोडि छप्पन लाख सत्याणवै हजार च्यारिसै इक्यासी लोकाकाशविषै प्राप्त जे चैत्यालय तिनकौं मैं वंदौं हौं। यहु भवनवासी वैमानिक देव अर मेरु आदि मध्य लोकसंवंधी चैत्यालयनिकी संख्या जाननी। ज्योतिष्क व्यंतरसंवंधी चैत्यालय असंख्यात हैं तातैं गणना विषै न कहे ॥ १०१६ ॥

अव इस शास्त्रकौं समाप्त करता संता आचार्य अंतसंवंधी मंगलकै ही आर्थि त्रिलोकविषै प्राप्त जे अकृत्रिम वा कृत्रिम जिन मंदिर संवंधी वंदना करत संता गाथा सूत्र कहैं हैं;——

**तिहुयणजिणिंदगेहे अकिट्टिमे किट्टिमे तिकालभवे।**
**वणकुमरविडंगामरणरखेचरवंदिए वंदे ॥ १०१७ ॥**

त्रिभुवनजिनेंद्रगेहान् अकृत्रिमान् कृत्रिमान् त्रिकालभवान्।
वानकुमारविद्युतांगामरनरखेचरवंदितान् वंदे ॥ १०१७ ॥

**अर्थ**—अकृत्रिम अर कृत्रिम अतीत अनागत वर्तमान त्रिकाल संवंधी जे व्यंतर भवनवासी ज्योतिष्क कल्पवासी मनुष्य विद्याधरनि करि वंदित त्रिभुवन स्थित जिनेन्द्र मंदिर तिनकौं मैं वंदौं हौं ॥ १०१७ ॥

अंतसंवंधी मंगलकै अनंतरि ग्रंथकर्त्ता है सो अपनी उद्धतताकौं परिहरै है;—

**इदि णेमिचंदमुणिणा अप्पसुदेणभयणंदिवच्छेण।**
**रइयो तिलोयसारो खमंतु तं वहुसुदाइरिया ॥ १०१८ ॥**

इति नेमिचंद्रमुनिना अल्पश्रुतेनाभयनंदिवत्सेन ।
रचितस्त्रिलोकसारः क्षमंतु तं बहुश्रुताचार्याः ॥ १०१८ ॥

अर्थ—इस प्रकार करि अल्प श्रुतज्ञानका धारी अर अभयनंदि नामा सिद्धांत चक्रवर्तीका वत्स शिष्य ऐसा **नेमिचंद्र** सिद्धांत चक्रवर्ती आचार्य ताकरि यहु त्रिलोकसार नामा ग्रंथ रच्या है। ताकौं बहुश्रुत धारक आचार्य हैं ते कहीं चूक भई होइ तहां क्षमा करौ ॥ १०१८ ॥

---

## संस्कृत टीकाकारका वक्तव्य।

अब तिस त्रिलोकसारकौं अलंकार रूप जानैं किया ऐसा माधवचंद्र त्रैविद्य देव सो भी अपनी उद्धतताकों त्यागै हैं;—

**गुरुणेमिचंदसम्मदकादिवयगाहा तहिं तहिं रइदा ।**
**माहवचंदतिविज्जेणिणमणुसरणिज्जमज्जेहिं ॥ १ ॥**

गुरुनेमिचंद्रसंमतकतिपयगाथाः तत्र तत्र रचिताः ।
माधवचंद्रत्रैविद्येनेदमनुसरणीयमार्यैः ॥ १ ॥

अर्थ—अपना गुरु नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती तिनके सम्मत लिएं उपदेश लिएं अथवा ग्रंथकरता नेमिचंद्र सिद्धांती देव तिनके अभिप्रायका अनुसार लिएं केती एक गाथा इस ग्रंथविषै माधवचंद्र त्रैविद्य देव करि भी तहां तहां रची हैं। ऐसा भी आर्य जे प्रधान आचार्य तिन करि अनुसारि जाननां ॥ १ ॥

अब ग्रंथका अलंकार रूप सोधनादि रूप कर्त्ता श्री माधवचंद त्रैविद्य देव सो भी अंतसंबंधी मंगल करतसंता अपनां अभीष्ट फलकी यांचा करै है;—

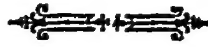
**अरहंतसिद्धआइरियुवज्झयासाहु पंचपरमेट्ठी ।**
**इय पंचणमोकारो भवे भवे मम सुहं दिंतु ॥ २ ॥**

अरहंतसिद्धाचार्योपाध्यायसाधवः पंचपरमेष्ठिनः ।
इति पंचनमस्कारः भवे भवे मम सुखं ददतु ॥ २ ॥

अर्थ—च्यारि घाति कर्म रहित अनंत चतुष्टय युक्त अरहंत, अर सर्व कर्म रहित कृतकृत्य दशाकौं प्राप्त सिद्ध, अर मुनि संघ विषै प्रधान आचार्य, अर ग्रंथाभ्यास आधिकारी उपाध्याय, अर सामान्यमुनि साधु ए पंच परमेष्ठी हैं। आत्माके सर्व प्रकार हितसाधक परम इष्ट हैं तातैं इनकौं परमेष्ठी कहिए। इस प्रकार इन पंच परमेष्ठिनिका नमस्काररूप जो पंच नमस्कार मंत्र है सो भव भव विषै मोकहुं सुख देहु। सुख नाम निराकुलताका है निराकुलता वीतरागभावनितैं हो है। तातैं परमवीतराग भावरूप शुद्धात्मस्वरूप जनित परम आनंदकी प्राप्ति करहु ॥ २ ॥

---

## भाषाटीकाकारका वक्तव्य ।



कवित्त—ग्रंथ त्रिलोकसारकी भाषाटीका पूरन भई प्रमान,
याके जानें जानतु है सब नानारूप लोक संस्थान ।
तातैं ध्यावैं धर्म ध्यानकौं पावै सकल प्रकाशक ज्ञान,
पाय त्रिलोकसार गुनमहिमा अविचल पद पईए निरवान ॥ १ ॥

चौपाई—वाचक शव्द वाच्य है अर्थ, इनिकै यहु संवंध समर्थ ।
इनिका कर्ता नांही कोय, जानैं इनिको ज्ञाता होय ॥ २ ॥

### सवैया इकतीसा ।

पृथ्वी शव्द पृथ्वी अर्थ इनकै संवंध ऐसौ पृथ्वी शव्द जाननेंतैं पृथ्वी अर्थ जानिए,
ऐसैं सांचे शव्द अर सांचे अर्थ जगमांहि तिनिकै संवंध सो स्वभाव ही तैं मानिए ।
तातैं इस ग्रंथ मांहि जेते शव्द जेते अर्थ तिनको नवीन कर्ता कोऊ नांहि मांनिए,
तिनकौं जो जानैं अर भाषै जोरि शव्दनिकौं व्यवहारमात्र सो तौ कर्ता पहिचांनिए ॥ ३ ॥
ऐसी परिपाटी मांहिं इहां वर्धमान जिन भए तिनिहूनैं तिनिको स्वरूप जांन्यौं है,
इच्छा विन दिव्यध्वनि तिनकैं प्रगट भयी ताकरि स्वरूप किछू तैसो ही वखान्यौं है ।
गोतम गणेश मुनि ऐसो उपकार कीनौं ताकौ अनुसार सब ग्रंथनिमैं आन्यौं है,
तिनिकरि ज्ञानवंत होइ छोटे ग्रंथ जोरि किनिहूनैं नाना भांति अर्थ प्रमान्यौं है ॥ ४ ॥

---

इति श्रीपंडितवर टोडरमल्लजीकृत त्रिलोकसारकी भाषावचनिका समाप्त हुई ॥

